सर्वश्रेष्ठ
रूसी और सोवियत
पुस्तकमाला

लेव तोलस्तोय

पुनरुत्थान

सर्वश्रेष्ठ रूसी और सोवियत पुस्तकमाला

लेव तोलस्तोय

पुनरुत्थान

उपन्यास

प्रगति प्रकाशन

मास्को

Лев Толстой
ВОСКРЕСЕНИЕ
На языке хинди

हिन्दी अनुवाद • प्रगति प्रकाशन • १९७७

सोवियत संघ में मुद्रित

$Т\frac{70301-175}{014(01)-77}679-77$

अनुक्रम

अनुवादक भीष्म साहनी

Лев Толстой

ВОСКРЕСЕНИЕ

На языке хинди

© हिन्दी अनुवाद • प्रगति प्रकाशन • १९७७

सोवियत संघ में मुद्रित

$T\frac{70301-175}{014(01)-77}679-75$

अनुक्रम

पहला भाग

मत्ती, अध्याय १८, पद २१।

तब पतरस ने पास आ कर, उससे कहा, हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करू, क्या सात बार तक? २२ यीशु ने उससे कहा, मैं तुझसे यह नही कहता, कि सात बार, वरन सात बार के सत्तर गुने तक।

मत्ती, अध्याय ७, पद ३।

तू क्यो
अपने भाई की आख के तिनके को देखता है, और अपनी आख का लट्ठा तुझे नही सूझता?

यूहन्ना, अध्याय ८, पद ७।

तुममे
जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे।

लूका, अध्याय ६, पद ४०।

चेला
अपने गुरु से बडा नही, परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुरु के समान होगा।

धरती के एक छोटे से टुकडे पर रहने वाले लाखों इनसानों ने उसे कलुषित करने मे कोई कसर नही छोडी थी। पत्थरो से उस पर फर्श बाधे, कही हरियाली की कोपल भी फूटती हुई देखी तो उसे उखाड फेंका, पेडो की शाखे काट डाली, पशु-पक्षियो को मार भगाया, और वातावरण को कोयले और तेल के विषैले धुए से भर दिया। फिर भी शहर मे भी वसन्त तो आखिर वसन्त ही था। धूप खिली थी, जगह जगह घास उगने लगी थी। हरी हरी घास सडको के किनारे वन लॉनो पर ही नही, पटरी की सिला के बीच बीच भी दिख रही थी। बर्च, पॉप्लर तथा बर्ड चेरी के वृक्षो पर चिपचिपी, महक भरी कोपले फटने लगी, लाइम वृक्षो पर कलिया चिटकने लगी। वसन्त की हिलार मे चहचहाते पक्षी—चिडिया, कबूतर, कौवे—तिनके बटोर बटोर कर अपने नीड बनाने लगे। और सूरज की सुहावनी धूप मे अलसाई मक्खिया दीवारो पर भनभनाने लगी। सभी खुश थे पेड-पौधे, पक्षी, कीट पतग बच्चे। परन्तु लोगो ने, वयस्क पुरुषो और स्त्रियो ने, अपने को तथा एक दूसरे को ठगना और यातनाए पहुचाना नही छोडा। उनकी नजरो म वसन्त की इस प्रात का कोई महत्व न था, उसकी पवित्रता का वे अनुभव नही कर रहे थे। भगवान की सृष्टि का सौन्दय वे नही देख रहे थे। यह सौन्दय सभी जीवो के लिए आनन्द का स्रोत है, इससे हृदय मे शान्ति, प्रेम तथा सदभावना का सचार होता है। परन्तु लोगो के लिए अगर किसी चीज का महत्व था, अगर कुछ पवित्र था, तो ये थी वे तरकीबें, जो उन्होंने एक दूसरे पर हुक्म चलाने की निकाल रखी थी।

इसी तरह, प्रादेशिक जेल के दफ्तर मे भी वसन्त के पुण्यागमन को कोई महत्व नही मिला। किसी ने यह नही सोचा कि यह मनुष्य तथा

पशु पक्षियों के लिए वरदान है, ग्रानद का स्रोत है। उनकी नजरो म यदि किसी चीज का महत्व था तो उस कागज का जो इस जेल मे एक दिन पहले भेजा गया था। कागज पर वाकायदा सरकारी मोहर लगी थी, और उसे रजिस्टर मे दज कर लिया गया था। उसमे लिखा था कि आज २८ अप्रैल के दिन प्रात ६ बजे तीन कैदियो को अदालत-सुपुर्द कर दिया जाय। इन तीन कैदियो मे एक आदमी और दो स्त्रिया थी। हुक्म था कि इन दो म से एक स्त्री को—जो सबस वडी मुजरिम करार दी गई थी—औरो से अलग पहुचाया जाय। इसी लिए आज २८ अप्रैल के दिन, प्रात ८ बजे जेल का बडा जमादार जेल मे औरतो की वैरक मे दाखिल हुआ। अधेरे गलियारे मे वदवू से नाक फटती थी। उसके पीछे पीछे एक औरत चली आ रही थी, चेहरे पर यातना के चिह्न और सिर पर सफेद, घुघराले बाल। उसने वर्दी पहन रखी थी जिसकी आस्तीनो पर सुनहरी डोरी और पेटी पर नीले रग की मगजी लगी थी। यह औरतो की वैरक की जमादारिन थी।

'मास्लोवा को ले जाना है?" उसने पूछा। वडा जमादार और वह एक कोठरी के पास पहुच गये थे, जिसका दरवाजा अधेरे गलियारे मे खुलता था।

जमादार न लोहे के ताले को खडकाते हुए कोठरी का दरवाजा खोला और चिल्लाकर बोला—

'मास्लोवा, अदालत के लिए तैयार हो!"

कोठरी के अदर से गदी हवा का झोका आया जो गलियारे की वदव से भी ज्यादा तीखी थी। पुकार लगाने के बाद जमादार ने दरवाजा वद कर दिया।

जेल के आगन तक म हवा मे ताजगी थी। प्रात समीर के स्वच्छ, जीवनदायी झोके खेतो की ओर से बहते चले आय थे। परन्तु गलियारे मे दम घुटता था। यहा की हवा तपेदिक की कीटाणुओ से, मल मूत्र, कोलतार तथा सडन की गध से भरी थी। जो कोई नया आदमी यहा आता, खिन्न और हताश हो जाता था। यह जमादारिन भी, जो रोज इस वदवू म काम करती थी, यहा आकर थकी-थकी और उनीदी महसूस करने लगी थी। कोठरी के अदर हलचल हुई। औरतो के वतियाने और फ़र्श पर नगे पैर पडने की आवाजें आने लगी।

"जल्दी करो!" बडा जमादार चिल्लाया।

मिनट, दो मिनट बाद एक मझले कद की युवा स्त्री जल्दी से दरवाज़े म से निकली और जमादार के पास जा खडी हुई। उसका वक्ष उभरा हुआ था। वह सफेद रग की जाकेट और घाघरा पहने थी और ऊपर भूरे रग का चोगा डाले थी। पैरो मे सूती मोज़े और जेल के जूते थे। सिर पर उसने सफेद रूमाल बाध रखा था जिसके नीचे से काले काले बालो की कुछेक कुडलिया निकल आयी थी। जान पडता था जैसे जान बूझ कर उन्ह माथे पर सजाया गया हो। युवा स्त्री का चेहरा पीला था। यह वह पीलापन था, जो लम्बे समय तक अधेरी काठरी मे बद पडे रहने के कारण लोगो के चेहरे पर आ जाता है और जिसे देख कर अनजाने मे ही उन आलुओ की याद हो आती है जिन पर तहखाने मे ही पडे पडे कल्ले फूट आते हैं। हाथो और गरदन का रग भी सफेद पड गया था। हाथ छोटे छोटे मगर चौडे थे। गरदन सुडौल थी, जो चोगे के चौडे कॉलर के नीचे से दिख रही थी। पीले चेहरे पर गहरी काली चमकदार, थोडी सूजी हुई, किंतु चचल आखें आकर्षित और विस्मित करती थी। एक आख कुछ तिरछे देखती थी। वह चलती तो तन कर, सीधी, जिससे उसकी छातिया और भी उभर आती। सिर को ज़रा सा पीछे किये हुए, वह गलियारे म जमादार के ऐन सामने आ खडी हुई और सीधे उसकी आखो मे देखने लगी, मानो हुक्म बजा लाने के लिए तैयार हो। जमादार कोठरी के दरवाज़े को ताला लगान जा ही रहा था कि पीछे से एक बुढिया ने अपना सिर बाहर निकाल दिया। उसका कठोर पीला चेहरा झुर्रियो से भरा था और बाल सफेद थे। बुढिया मास्लोवा से कुछ कहने लगी। लेकिन जमादार ने दरवाज़ा उसके सिर पर दबाया और बुढिया का सिर पीछे हट गया। कोठरी मे से किसी औरत के ज़ोर से हसने की आवाज़ आई। मास्लोवा भी मुस्करा दी और दरवाज़े मे बने सीखचो के झरोखे की तरफ मुड गयी। बुढिया इस झरोखे से सिर लगा कर खडी थी और फटी आवाज़ मे कह रही थी

"मेरी बात गाठ बाध लो। जब वे सवाल पूछें तो एक ही बात कहना और उसी को दोहराती रहना। इधर-उधर की बात कोई नही कहना।"

"इससे बदतर हालत और क्या होगी। इधर या उधर, कुछ तो फैसला हो जाय," सिर झटकते हुए मास्लोवा ने कहा।

"फैसला तो होगा ही, और एक ही होगा। फैसले दो नहीं होते," बड़े जमादार ने अफसरों के लहजे में चुहल करते हुए कहा, "चलो, मर पीछे पीछे।"

बुढ़िया झरोखे में से हट गई और मास्लोवा गलियारे के ऐन बीच आ कर बड़े जमादार के पीछे छोटे कदम बढ़ाती हुई तेज़ तेज़ चलने लगी। वे पत्थर की बनी सीढ़ियों पर से नीचे उतर कर जाने लगे। यह जेल का वह हिस्सा था जहां पुरुष कैंदी रखे जाते थे। यहां पर शोर मचा हुआ था और हवा औरतों की बैरक से भी ज्यादा गंदी थी। कैंदी झरोखों में से झांक झांक कर देखने लगे। मर्दों की बैरक पार कर ये लोग दफ्तर में पहुंचे जहां दो सिपाही मास्लोवा को साथ ले जाने के लिए पहले से खड़े थे। दफ्तर के बाबू ने जो वहां बैठा काम कर रहा था एक सिपाही के हाथ में तम्बाकू की गंध से भरा कागज़ दिया और कैंदी की ओर इशारा करते हुए बोला

"ले जा।'

सिपाही ने कागज को अपने कोट की आस्तीन में खोंस लिया, और कैंदी की ओर कनखियों से देख कर अपने जोड़ीदार को आंख मारी। यह सिपाही नीज्नी नावगोरोद का रहने वाला कोई किसान था। उसका चेहरा लाल और चेचक के दागों से भरा था। दूसरा सिपाही कोई चुवाश था और उसके गालों की हड्डियां उभरी हुई थी। दोनों सिपाही कैंदी को साथ लिये बाहर के दरवाजे की ओर बढ़ गये, और जेल का आंगन पार कर के सड़क पर आ गये, जिस पर सड़क के बीचोबीच चलते हुए वे शहर में से जाने लगे।

राह जाते लोग—गाड़ीबान, दूकानदार, रसोइये मजदूर, सरकारी दफ्तरों के बाबू—सभी रुक रुक कर कुतूहल के साथ कैंदी की ओर देखते। कुछ तो सिर हिला कर मन ही मन कहते 'बुरे कामों का यही फल होता है। अगर इसका आचरण अच्छा होता—जैसा कि मेरा है—तो इसे यह दिन न देखना पड़ता।" बच्चे उसे डाकू समझ कर सहमी हुई नजरों से घूर घूर कर देखते। पर कैंदी के साथ सिपाहियों को देख कर उनका डर दूर हो जाता, वे आश्वस्त हो जाते कि कैंदी उनको कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता। एक किसान शहर में कोयला बेचने आया था, कोयला बेच कर, और चाय पी कर अपने गांव लौट रहा था। कैंदी को देख कर

उसके पास जा पहुचा, छाती पर सलीब का निशान बनाया और एक कोपक निकाल कर बंदी के हाथ मे दिया। मास्लोवा शर्म से लाल हो गई, सिर झुका लिया और कुछ बुदबुदा दी।

सब लोग बंदी की ओर देख रहे थे। उसे इस बात से प्रसन्नता हुई कि लोग उससे आकर्षित हो रहे हैं। सिर उठाये बिना वह भी कनखियो से हर देखने वाले को देख लेती। जेल के बाद यहा हवा साफ थी। इससे भी उसका दिल खुश हुआ। परन्तु उसके पैर चलने के आदी नही थे। जेल के रद्दी जूतो मे नुकीले पत्थरो पर पाव रखते हुए उसे दर्द होता था। जहा तक बन पडता वह रुक रुक कर, हल्के हल्के पाव रखती। अनाज की एक दुकान के सामने कुछ कबूतर गुटरगू गुटरगू करते घूम फुदक रहे थे। कोई उनसे छेड नही कर रहा था। उनके पास से गुजरते हुए बंदी का पाव एक भूरे-नीले रंग के कबूतर को छू गया। कबूतर फर से उडा और पर फडफडाता हुआ उसके कान के पास से निकल गया। वह मुस्करायी, पर फिर अपनी स्थिति का ख्याल कर के उसने गहरी सास ली।

२

बंदी मास्लोवा की जीवन-कहानी बडी साधारण सी है। उसकी मा एक जागीर मे नौकरानी थी और उसी जागीर की गोशाला मे ग्वालिन का काम करने वाली स्त्री की बेटी थी। शादी-ब्याह नही हुआ था। यह जमीदारी दो बुढिया बहिनो की मिलकियत थी। इन बुढिया बहिनो ने भी उम्र भर शादी नही की थी। मास्लोवा की मा के हर साल एक बच्चा हो जाता था। और जैसा कि गाव-गवई के लोगो मे अक्सर होता है, जब इस तरह का अवांछित बच्चा पैदा होता तो मा उसका बपतिस्मा तो करवा देती, पर बाद मे उसकी कोई सुध-बुध न लेती। जिस औरत की गोद मे बच्चा हो वह काम क्या करेगी? नतीजा यह होता कि बच्चा घूरे पर पडा रहता। एक एक कर के पाच बच्चे इसी तरह परलोक सिधार चुके थे।

पाचो का बपतिस्मा हुआ, पाचो मे से किसी को भी खाना नही मिला, और पाचो ही घूरे पर मरने के लिए छोड दिये गये। छठे बच्चे

का बाप कोई आवारा जिप्सी था। यह बच्चा भी परलोक की राह लेता, लेकिन भाग्य बली है। एक दिन वही बुढ़िया जमींदारिन गोशाला में आ निकली। ग्वालिनों को डाटने लगी कि क्रीम में से गोबर की बदबू आ रही है। मास्लोवा की मां उस वक्त गोशाला के एक कोने में पड़ी थी, और पास में एक खूबसूरत, स्वस्थ, नव-जात बच्चा लेटा था। बुढ़िया ने जच्चा को यों गोशाला में लेटे देखा तो उसका पारा और चढ़ गया। ग्वालिनों को डाटने लगी कि इसे क्यों यहां लेटने की इजाजत दी गई है। इसके बाद वह वहां से जाने को हुई, जब बच्चे पर नजर पड़ते ही उसे रहम आ गया, और उसी वक्त बच्चे को अपनी सरपरस्ती में लेने के लिए तैयार हो गई। बस, छोटी बच्ची के प्रति दयाभाव से प्रेरित होकर उसने उसका बपतिस्मा करवाया, मां के लिए कुछ नकदी और थोड़े से दूध का इन्तजाम करवा दिया ताकि बच्ची की परवरिश होती रहे। बच्ची बच निकली। दोनों बुढ़िया बहिनें उसे "रक्षिता" कहा करती थीं।

जब बच्ची तीन बरस की हुई तो एक दिन उसकी मा बीमार पड गई और आनन फानन म मर गई। बच्ची को उसकी नानी ने पालना शुरू किया। लेकिन वृद्ध महिलाओं न बच्ची को बुढिया नानी से ले लिया। नानी उसे क्या पालती, वह तो उस पर बोझ बनी हुई थी। लडकी बला की खूबसूरत निकली। आखें काली काली और स्वभाव चचल और हसमुख। दोना बुढिया बहिना का मनबहलाव का एक साधन मिल गया।

दोनो बहिना म से छोटी बहिन अधिक दयालु स्वभाव की थी, उसका नाम सोफिया इवानोव्ना था और उसी ने बच्ची का बपतिस्मा करवाया और उसकी धर्ममाता बनी थी। बडी बहिन जिसका नाम मारीया इवानोव्ना था, दिल की जरा कठोर थी। सोफिया इवानोव्ना बच्ची को अच्छे अच्छे कपडे पहनाती, उसे पढना लिखना सिखाती। वह चाहती थी कि कुलीन लडकियो की तरह यह भी पढ लिख जाय। परन्तु बडी बहिन मारीया इवानोव्ना को यह पसन्द न था। वह चाहती थी कि लडकी घर का कामकाज सीखे, बडी हो कर अच्छी नौकरानी बने। वह सख्ती से काम लेती, सजाए देती, और कभी कभी जब पारा तेज होता तो बच्ची को पीट भी देती। इस तरह यह छोटी लडकी दो भिन्न भिन्न प्रभावो के नीचे पलने लगी। नतीजा यह हुआ कि वह आधी नौकरानी और आधी कुलीन-बाला बन कर रह गई। दोना बहिने उसे कात्यूशा कह कर बुलाती।

यह नाम इतना परिष्कृत नही था जितना कि कातेन्का, पर साथ ही इतना भद्दा भी नही था जितना कि कात्का। वह कमरा की झाड-पोछ करती, सीने पिरोने का काम करती, देव चित्रा के चौखटो को खडिया मिट्टी से पालिश करती, और इसी तरह के छोटे मोटे ऊपर के काम करती। कभी कभी कोई किताब लेकर बैठ जाती और बुढिया बहिना को पढ कर सुनाती।

यद्यपि कई लोगा ने उसके सामने शादी के प्रस्ताव रखे, परन्तु वह नही मानी। कात्यूशा जानती थी कि इनमे से किसी के साथ व्याह करने का मतलब होगा उम्र भर चक्की पीसना। कुलीनो के घर मे रह कर वह आराम तलब हो गई थी।

दिन बीतते गये और कात्यूशा सोलह बरस की हुई। एक दिन दोना बहिनो का जवान भतीजा कुछ दिन उनके पास ठहरने के लिए आया। वह बेहद अमीर था, और विश्वविद्यालय मे पढता था। कात्यूशा, मन मे ना ना करती हुई भी, उससे प्रेम करने लगी। दो साल बाद यही भतीजा अपनी रजिमेट मे दाखिल होने जा रहा था। रास्ते म चार दिन के लिए अपनी फूफिया का मिलने के लिए रुक गया। रवाना हाने से एक रात पहले उसने कात्यूशा की अस्मत लूटी, उसे सौ रूबल का नोट दिया और चलता बना। पाच महीने बाद कात्यूशा को यकीन हो गया कि उसे गभ हो गया है।

इसके बाद हर चीज उसे बुरी लगने लगी। एक ही बात रह रह कर उसके मन म उठती कि किसी तरह आने वाली लाछना स बच सके, अब इन महिलाओ की सेवा म उसका मन नही लगता था और वह काम म लापरवाही करने लगी थी। एक बार तो ऐसा हुआ कि वह दोना मालकिना के सामन किसी बात पर गुस्ताखी कर बैठी। उसकी समझ म नही आया कि बात कैसे हा गई। बाद मे उसे बडा पछतावा भी हुआ। उसन मालकिना को बुरा भला सुनाया और कहा कि वे उसे रुखसत कर दें। दोना बहिनें उससे काफी नाराज थी, इसलिए रुखसत पाने मे देर नही लगी। इसके बाद उसे किसी पुलिस अफसर के घर मे नौकरानी की जगह मिल गई। यहा वह केवल तीन महीन तक टिक पायी। पुलिस-अफसर पचास साल का बढा कात्यूशा से छेड छाड करने लगा। एक दिन तो उसके पीछे ही पड गया। कात्यूशा आपे से बाहर हो गई। उसने उसे "गधा' और "शैतान" कह कर इस जोर से धक्का दिया कि पुलिस-

अफसर के पाव लडखडा गये और वह फश पर जा गिरा। इस "गुस्ताखी" के लिए कात्यूशा को नौकरी से हाथ धोना पडा। अब नई नौकरी ढूढना फिजूल था क्योकि प्रसव का समय नजदीक आ रहा था और वह गाव की एक दायी के घर जा पहुची। यह दायी लुक छिप कर कच्ची शराब भी बेचा करती थी। प्रसव मे कोई कठिनाई न हुई। कात्यूशा के बेटा हुआ। लेकिन कात्यूशा को दायी से कोई छूत की बीमारी लग गई—दायी गाव मे किसी दूसरे घर मे जाया करती थी जहा से वह रोग ले आयी थी। मजबूर हो कर कात्यूशा को अपना बच्चा अनाथालय मे भेजना पडा। एक बुढिया उसे वहा पहुचाने गयी, लेकिन बच्चे ने वहा पहुचते ही दम तोड दिया। यह खबर बुढिया ने लौट कर बतायी।

जब कात्यूशा दायी के घर आयी थी तो उसके पास कुल मिलाकर एक सौ सत्ताईस रूबल थे। इनमे से सत्ताईस रूबल तो उसकी अपनी कमाई के थे और सौ रूबल उस शख्स ने दिये थे जिसने उसकी अस्मत लूटी थी। जिस दिन कात्यूशा ने दायी का घर छोडा उस दिन उसके पास केवल छ रूबल बाकी बच रहे थे। सोच समझ कर पैसे खच करना कात्यूशा के स्वभाव के प्रतिकूल था। वह अपने आप पर भी खच करती और जो कोई मागता उसे देने म भी हाथ न रोकती। चालीस रूबल तो दायी न इस बात के लिए ले लिये कि दो महीने तक उसन कात्यूशा को घर में रखा था और उसकी देख रेख की थी। पच्चीस रूबल बच्चे को अनाथालय म भेजने म लग गय। चालीस रूबल दायी ने उधार माग लिये—वह अपने लिये एक गाय खरीदना चाहती थी। इसके अलावा बीस रूबल कपडे-लत्ते, खाने पीने और अन्य छोटी-मोटी चीजो पर खच हो गय। जब जेब मे पैसे न रहे तो कात्यूशा को फिर नौकरी की तालाश करनी पडी, और अब की बार उस जगलात के एक अफसर के घर जगह मिल गयी। यह अफसर शादी शुदा आदमी था, परन्तु वह पहले दिन से ही कात्यूशा के पीछे पड गया। कात्यूशा को वह बुरा लगता था, और उससे बचने की उसन भरसक कोशिश की। लेकिन वह मालिक था और कात्यूशा नौकरानी थी। जिस काम पर जहा भी वह उसे भेजता उसे जाना पडता। इसके अलावा वह बडा धूत था, कई घाट का पानी पी चुका था। आखिर वह कात्यूशा को भ्रष्ट करने म सफल हो गया। पर उसकी पत्नी को पता चल गया। एक दिन उसन कात्यूशा और अपने पति

को एक कमरे मे अकेले पाया तो वह कात्यूशा को पकड कर पीटने लगी। कात्यूशा ने भी अपना बचाव करने के लिए हाथ उठाया, जिससे दोनो आपस मे भिड गई। कात्यूशा को निकाल बाहर किया गया, और उसे तनख्वाह का एक पैसा भी नही दिया गया। कात्यूशा की एक मौसी शहर मे रहती थी। कात्यूशा उसके पास चली गई। उसका पति जिल्दसाज़ी का काम करता था और किसी ज़माने मे अच्छा खाता-पीता आदमी था। लेकिन एक एक कर के उसके सब ग्राहक टूट गये थे, और उसे शराब पीने की लत पड गई थी। अब जो पैसे हाथ लगते वह जेब म डाल कर शराबखान मे जा पहुचता था।

मौसी ने एक छोटी सी लॉन्ड्री खोल रखी थी। जा थोडी बहुत आमदनी होती उससे वह घर चलाती, बच्चो का पालन करती तथा अपनी और अपने उजाड़ पति की ज़रूरते पूरी करती। कात्यूशा को उसने लॉड्री मे धोबिन का काम करने की सलाह दी। पर कात्यूशा सोच म पड गई। मौसी की लॉड्री मे और भी धोबिनें काम करती थी, उनकी कडी और यातनापूर्ण जिन्दगी को देख कर कात्यूशा का मन नही माना, और उसने रोज़गार दफ्तर मे नौकरी के लिए दरख़्वास्त कर दी। एक महिला के घर उसे नौकरी मिल गई जो अपने दो बेटो के साथ रहती थी। दोनो बेटे स्कूल मे पढते थे। बडे लडके न शीघ्र ही अपनी पुस्तको को ताक पर रखा और कात्यूशा के इर्दगिर्द मडराने लगा। वह कात्यूशा का घडी भर भी पीछा नही छोडता था। मा ने देखा तो दोष कात्यूशा के सिर मढा और उसे नौकरी से बरखास्त कर दिया।

कात्यूशा फिर नौकरी की तालाश मे इधर-उधर भटकने लगी। आखिर लाचार होकर वह फिर रोज़गार दफ्तर मे अर्ज़ी देने गई। वहा उसे एक महिला मिली, जिसके हाथो मे अगूठिया और नगी गदरायी बाहो मे कगन चमक रहे थे। जब उसने देखा कि कात्यूशा नौकरी के लिए मारी मारी फिर रही है तो उसने कात्यूशा को अपना पता लिख कर दिया और उसे अपने घर आने को कहा। कात्यूशा गई। स्त्री ने बडे प्यार से उसका स्वागत किया, केक मिठाई और मीठी हल्की शराब उसके सामने रखी, फिर एक पुर्ज़ा लिखा और अपने नौकरानी को दे कर उसे कही भेज दिया। शाम के वक्त एक ऊचा-लम्बा आदमी आ पहुचा, सिर पर लम्बे लम्बे सफेद बाल और मुह पर सफेद दाढी थी। कमरे म आते ही वह

कात्यशा से सट कर बैठ गया और मुस्कराते हुए, अपनी चमकती आखो से उसकी ओर देखने लगा और हसी मजाक करने लगा। घर मालकिन बूढे का साथ वाले कमरे मे ले गई। कात्यूशा के कान मे कुछ शब्द पड गये। "अभी अभी गाव से आयी है, बिल्कुल ताजा है," घर मालकिन कह रही थी। इसके बाद वह लौट कर आयी और कात्यूशा को एक तरफ ले गई और उसे बताया कि यह आदमी लेखक है, और बडा अमीर है, और यदि कात्यूशा उसके मन को भा गई तो वह उसकी मुह मागी मुराद पूरी करेगा। कात्यशा सचमुच ही उसे भा गई और उसने उसे पचीस रूबल दिय। साथ ही यह भी कहा कि वह उसे अवसर मिलता रहगा। पचीस रूबल खच होते पता भी न चले। कुछ तो मौसी को दिये गये—रिहाइश और खान पान के लिए, बाकी से कात्यूशा ने एक नया फ्रॉक और टोपी और रिब्बन खरीद लिये। कुछ दिन बाद लेखक का फिर सन्देसा आया कात्यूशा गई। अब की भी उसने पचीस रूबल दिये और साथ ही यह भी कहा कि मैं तुम्हारे अलग रहने के लिए जगह का इतजाम किये देता हू।

एक जगह किराये पर ले ली गई, और कात्यूशा उसमे रहने चली गई। वहा पडास मे ही एक हसमुख, जवान लडका रहता था जो किसी दुकान मे कारिन्दे का काम करता था। शीघ्र ही कात्यशा उसे अपना दिल दे बैठी। उसन लेखक से बात छिपायी नही, बल्कि साफ साफ बता दिया और मकान छोड कर एक छोटी सी कोठरी कही पर अपने लिए किराय पर ले ली। कारिन्दे ने शादी करने का वचन दिया, लेकिन एक दिन बिना कुछ कहे-सुने किसी काम पर नीज्नी नोवगोरोद के लिए रवाना हो गया। जाहिर था कि उसन यह काम कात्यूशा से पल्ला छुडाने के लिए किया था। कात्यूशा अकेली रह गई। उसकी इच्छा तो थी कि वही पर रहती रह लेकिन पुलिस वाला ने कहा कि अगर अलग रहना चाहोगी तो पीला काड (वेश्याओ का काड) बनवाना पडेगा, और बाकायदा डाक्टरी जाच के लिए जाना पडेगा। कात्यूशा अपनी मौसी के घर वापिस लौट गई। जब मौसी ने कात्यूशा के बढिया कपडे देखे, सिर पर टोपी और कन्धा पर बढिया ओढनी देखी तो उसे साहस न हुआ कि उस धोबिन का काम करन का वह सके। उसन समझा कि उसकी भाजी धोबिन के स्तर से बहुत ऊची उठ गई है। कात्यूशा का तो धोबिन का काम करन का ख्याल तक नहीं आया। मौसी की लॉण्ड्री मे जो धोबिने काम करती थीं,

उन्हे जी-तोड मेहनत करनी पडती थी। कइयो को तो तपेदिक या रोग लग चुका था। सामने वाले कमरे मे दिन भर वे अपनी पतली पतली बाहो से कपडे धोती या लोहा करती थी। कमरा बेहद गरम और साबुन की भाप से भरा रहता था। खिडकिया गरमी-सरदी बारहो महीने खुली रहती थी। उन्हे देख कर कात्यूशा का दिल हमदर्दी से भर उठता था। वह सोचती कि अगर मुझे भी यही काम करना पडता तो मेरी क्या दशा होती और वह सिर से पाव तक काप उठती।

ऐन इसी समय जब कात्यूशा की स्थिति सकटमय हो रही थी, और कही भी कोई "अभिभावक" नज़र नहा आ रहा था, एक कुटनी की नज़र उस पर पड गई।

कुछ मुद्दत पहले कात्यूशा ने सिगरेट पीना शुरू कर दिया था, और जब दूकान का कारिन्दा उसे धोखा दे कर भाग गया तो उसने शराब भी पीनी शुरू कर दी। यह आदत अब दिन ब दिन जड पकडने लगी थी। वह शराब इसलिए नही पीती थी कि उसे इसमे मजा आता था, बल्कि इसलिए कि इससे वह अपने दुख भूले रहती थी। शराब पी कर वह अपने को अधिक स्वच्छन्द महसूस करती, अपनी नज़रो मे कुछ ऊची उठ जाती, उसका आत्मविश्वास बढ जाता। जब वह न पिये होती तो लज्जित और उदास महसूस करती।

कुटनी ने मौसी का स्वादिष्ट मिठाइया दी और कात्यूशा के लिए शराब लायी। शराब पिलाते समय कुटनी ने उस पर डोरे डाले मैं तुम्हारे लिए शहर के सबसे बडे, सबसे शानदार चकले मे इन्तज़ाम कर दूगी। वहा सुख-चैन से रहोगी, बीसियो तरह के फाइदे होगे। कात्यूशा के सामने दो ही रास्ते थे। या तो किसी के घर चाकरी करे, रोज़ रोज़ का अपमान सहे, घर के आदमी उसे परेशान करे, और कभी कभी लुक छिप कर उसके साथ व्यभिचार करे। या फिर वह आराम से किसी चकले मे जा बैठे, जहा से निकाले जाने का डर न हो, कानून की मजूरी हो, और खुले आम इन्द्रियभोग करे, और साथ मे पैसे भी अच्छे बनाये। कात्यूशा को दूसरा रास्ता अच्छा लगा। उसने यह भी सोचा कि इस तरह मैं उन सब लोगो से जी खोल कर बदला ले सकूगी जिन्होने मुझे यातनाए पहुचाई है—उस अमीरज़ादे से जिसने मेरी अस्मत लूटी और उस कारिन्दे से जिसने मेरे साथ छल किया। इसके अलावा, इस फैसले पर पहुचने का

एक और कारण भी था। कुटनी ने कात्यूशा को तड़क भड़क वाले कपड़ों का लालच दिया। वहां मनचाहे कपड़े पहन सकोगी, वह कहती, मखमल के, रेशमी, सान्नि के, मन आये तो नीचे गले के फ्रॉक बनवाना जो औरतें नाच के वक्त पहनती हैं। कात्यूशा ने अपनी कल्पना में अपने को ऐसी ही एक पोशाक में देखा शोख पीले रंग का रेशमी फ्रॉक जिस पर काली मखमल का किनारा लगा है, नीचा गला और आधी आस्तीनें। कात्यूशा का मन ललक उठा और उसने झट से अपना पासपोर्ट कुटनी के हवाले कर दिया। उसी दिन शाम को कुटनी ने एक गाड़ी पर उसे मदाम कितायेवा के बदनाम वेश्याघर में पहुंचा दिया।

उस दिन से कात्यूशा मास्लोवा का जीवन सभी मानवीय तथा दैवी नियमों के विरुद्ध घोर पाप का जीवन बन गया। ऐसा ही जीवन संसार में लाखों करोड़ों स्त्रियां व्यतीत करती हैं और सरकार न केवल उसकी खुली छुट्टी देती है, बल्कि उसकी सरपरस्ती भी करती है। इस तरह का जीवन बिताने वाली हर दस में से नौ औरतें घोर बीमारियों, युवावस्था में ही शारीरिक क्षति तथा मौत का शिकार हो जाती हैं।

वेश्याघर में रात भर विषय वासना की आग धधकती रहती। रात बीतने में बीतते वेश्याएं खाटों पर जा पड़ती और दूसरे दिन दोपहर तक गहरी नींद में डूबी रहती। दोपहर को तीन और चार बजे के दरमियान वे अपने गन्दे बिस्तरों पर से निढाल सी उठती। तब सोडे की बातलें खुलती कॉफी के दौर चलते। फिर वे शिथिल सी अपने अपने कमरों में, रात के कपड़ों में या चोगे-लबादे पहने इधर-उधर टहलने लगती। खिड़कियों के पर्दों में से बाहर झांकती, एक दूसरी के साथ झगड़ती, लेकिन ये झगड़े बेजान और निरुत्साह होते। फिर नहाती, इत्र छिड़कती, शरीर और बालों पर तरह तरह के सुगन्धित तेल लगाती, चुन चुन कर कपड़े निकालतीं, उन्हें पहन पहन कर देखती और वेश्याघर की मालकिन से उनके लिए झगड़ती। बार बार शीशे में अपना रूप निहारतीं, मुंह पर पाउडर सुर्खी लगातीं, भौंहें बनातीं। इस के बाद भोजन होता, पौष्टिक, चर्बीदार भोजन। फिर शोख रंग के रेशमी कपड़े पहन, जिनमें शरीर का बहुत सा भाग नंगा रहता, वे नीचे बैठक में उतर आतीं। बैठक जगमग कर रही होती और खूब सजी होती। कुछ देर बाद ग्राहकों के शौकीन आने लगते, संगीत बज उठता, नाच होने लगता। तरह तरह के लोग इनसे व्यभिचार

करते—बूढे, जवान और अधेड उम्र के, इनमे तरुण युवक भी होते और अस्थि पजर बूढे भी, क्वारे भी होते और व्याहे हुए भी, व्यापारी, दफ्तरो के बाबू, यहूदी, तातार, आर्मीनियाई, अमीर और गरीब, बीमार और स्वस्थ, सभी तरह के लोग होते। कोई शराब पिये होता, कोई बिना शराब पिये, कोई दुत्कारता और बुरा बोलता, कोई प्यार से बात करता, कोई फौजी होता तो कोई नागरिक, कोई विद्यार्थी होता तो कोई स्कूल का बालक—हर वर्ग, हर उम्र और हर श्रेणी के लोग उनके साथ इन्द्रियभोग करते। वहा शोर मचा रहता, लोग लडते, झगडते, चिल्लाते, मजाक करते। शाम से लेकर पौ फटने तक गाना-बजाना होता रहता, लोग सिगरेट फूकते और शराब पीते। सुबह तक क्षण भर के लिए भी वेश्याओ को चैन न मिलता। जब सुबह हो जाती तो वे पड रहती और गहरी नीद मे डूब जाती। हर रोज यही कुछ होता, हफ्ते मे छ दिन यही दिनचर्या रहती। सातवे दिन सरकारी कानून के मुताबिक वे पुलिस चौकी मे डाक्टरी जाच के लिए जाती। यहा पर सरकारी डाक्टर, कभी ध्यान से और कभी ठिठोलिया करते हुए उनका मुआइना करते। आत्म-रक्षा के लिए जो शर्म और हया न केवल इनसानो को बल्कि हैवानो को भी प्राप्त है, उसे यहा तार-तार किया जाता। डाक्टर उन्हे बाकाइदा लिख कर इजाजत दे देते कि जो पाप वेश्याए और उनके सहापराधी हफ्ता भर करते रहे है, वे भविष्य मे भी कर सकते हैं। दूसरा सप्ताह शुरू हो जाता, वही दिनचर्या, वही क्रम हर रात, गरमी हो या सरदी, काम का दिन हो या छुट्टी का, वही कुछ चलता रहता।

इसी तरह कात्यूशा मास्लोवा के जीवन के सात साल बीत गये। इस बीच उसने दो बार अपना स्थान बदला, एक बार अस्पताल मे भी गई। चकले मे रिहाइश के सातवे साल, जब उसकी उम्र छब्बीस बरस की थी वह घटना घटी जिसके लिए उसे गिरफ्तार कर लिया गया। और आज, छ महीने तक चोरो और हत्यारो के बीच रखे जाने के बाद उसे कचहरी मे पेश होने के लिए ले जाया जा रहा था।

३

जब कात्यूशा मास्लोवा दोनो सिपाहियो की निगरानी मे कचहरी के सामने पहुची तो वह चल चल कर थक चुकी थी। ऐन उसी वक्त प्रिस दमीत्री इवानोविच नेख्लूदोव अपने ऊचे पलग पर लेटा हुआ था। यह वही

शख्स था जिसने मास्लोवा की अस्मत लूटी थी। ऊचा पलग, कमानीदार तोशक और तोशक के ऊपर पखो वाला गद्दा। प्रिस नेख्लदोव, बढ़िया साफ कपडे पहने, लेटे लेटे सिगरेट के कश लगा रहा था और सोच रहा था कि आज उसे क्या क्या काम करना है और कल का दिन कैसे बीता था।

उसे याद आया, उसने पिछली शाम कोर्चागिन परिवार के साथ बितायी थी। कोर्चागिन परिवार बडा धनी और कुलीन परिवार था, और इस बात की बडी चर्चा थी कि इसी घर की लडकी से प्रिस नेख्लूदोव शादी करेगा। उसने गहरी सास ली और सिगरेट का टोटा फेंक दिया। फिर अपना चादी का सिगरेट-केस खोला, उसमे से वह दूसरा सिगरेट निकालने जा ही रहा था जब उसका इरादा बदल गया और बिस्तर मे से अपनी नरम नरम सफेद टागें निकाल कर वह उठ खडा हुआ। प्रिस नेख्लूदोव ने स्लीपर पहने, अपने मासल कधो पर रेशमी ड्रेसिंग-गाउन ओढा और बोझल किन्तु तेज़ चाल से चलता हुआ ड्रेसिंग रूम मे दाखिल हुआ। ड्रेसिंग रूम मे से ओ डी कलोन और इत्रों की महक आ रही थी। वहा उसने एक खास मजन से दात साफ किये (बहुत से दान्तो के खोल भरे हुए थे) और गुलाब के पानी से कुल्ले किये, फिर शरीर के अलग अलग भागो को धोने और अलग अलग तौलियो से रगडने लगा। बढिया खुशबूदार साबुन से हाथ धो कर उसने बडे ध्यान से अपने लम्बे लम्बे नाखूनो को साफ किया। सगमरमर की चिलमची मे अपना मुह और स्थूल गरदन को धोया। इसके बाद तीसरे कमरे मे गया जहा नहाने के लिए ऊपर फव्वारा लगा हुआ था। वहा उसने अपने बलिष्ठ, गोरे चिट्टे और मासल शरीर को ताज़ादम किया, खुरदरे तौलिये के साथ मल मल कर पोछा। फिर साफ बढिया अडरवियर पहने चमकते पालिश किये बूट चढाये और शीशे के सामने बैठ कर अपने घुघराले बालो और छोटी सी काली दाढी को दो अलग अलग ब्रुशो से कघी किया। उसके माथे पर के बाल कुछ कुछ हल्के पडने लगे थे।

पहनावे की हर चीज़—बनयान कमीज़, सूट-बूट और नकटाई से लेकर पिन कफ-बटन तक—सबमे बढ़िया स्तर की, टिकाऊ, दखन मे सादा और कीमती थी।

तरह तरह की दस नकटाइया लटक रही थी और इतने ही नकटाई

पर लगाने वाले पिन भी पडे थे। प्रिंस ने हाथ बढाया और जो पहले हाथ लगा, उठा लिया। जमाना था जब इन नई नई चीजो मे उसकी रुचि थी। लेकिन अब उसके लिए इनमे कोई आकर्षण नही रहा था।

कुर्सी पर कपडे तैयार रखे थे जिन्ह पहले से ब्रुश कर दिया गया था। नेख्लूदोव ने कपडे पहने, और टहलता हुआ खान वाले कमरे मे दाखिल हुआ। वह तरोताजा ता नही महसूस कर रहा था लेकिन साफ-सुथरा जरूर हो गया था और कपडो से इत्र की महक आ रही थी। यह कमरा चौडा कम और लम्बा ज्यादा था, और उसके बीचोबीच एक शानदार मेज रखी थी, जिसके चारा पाये शेर के पजा की शक्ल के बने थे। पास मे इसी से मिलती जुलती बरतना की बडी अलमारी भी रखी थी। अभी एक ही रोज पहले तीन नौकरो ने इस कमरे के फश को रगड रगड कर पालिश किया था। मेज पर एक बढिया कलफ लगा मेजपोश बिछा था जिस पर परिवार के नाम के अक्षर बडे बडे और खूबसूरत ढग से कढे हुए थे। काफी का पात्र चादी का था, जिसमे से भाप के साथ कॉफी की महक की लपटें उठ रही थी, साथ मे चीनीदान, गरम गरम क्रीम का जग, ताज़ा बनी पाव-रोटी के टुकडे, रस्क और बिस्कुटें रखी थी। इनके साथ कुछेक चिट्ठिया, समाचारपत्र और "Revue des deux Mondes" नामक नयी किताब रखी थी।

नेख्लूदोव चिट्ठिया खोल कर पढना ही चाहता था कि गठीले बदन की एक अधेड उम्र की स्त्री ने गलियारे के दरवाजे से होले से कमरे मे प्रवेश किया। उसने मातमी लिबास और सिर पर जालीदार टोपी पहन रखी थी जिससे पीछे की ओर अधिक चौडी होती हुई उसकी माग ढकी हुई थी। यह स्त्री नेख्लूदोव की स्वर्गीय मा की निजी नौकरानी आग्राफेना पत्रोव्ना थी। मा के परलोक सिधारन के बाद वह बेटे के पास घर की दख रेख करन के लिए रह गई थी।

देखने म और चाल-ढाल मे आग्राफेना पेत्रोव्ना कुलीन महिला लगती थी। मालकिन की जिन्दगी म उसके साथ उसने कुल मिलाकर लगभग दस बरस विदेश मे विताये थे। छोटी उम्र से ही वह नेख्लूदोव परिवार मे काम करती आ रही थी, इसलिए दमीत्री इवानोविच को उस समय से जानती थी, जब घर के लोग उसे प्यार से मीतन्का कह कर पुकारा करते थे।

"नमस्ते, द्मीत्री इवानोविच।"

"नमस्ते, क्या बात है?" नेख्लूदोव ने मडागिया सहमे से पूछा।

"प्रिंसेस के घर से चिट्ठी आई है—यह मुझे नहीं मालूम कि मा की तरफ से है या बेटी की तरफ से। वहा की नौकरानी ले कर आई है। और अब कमरे मे बैठी जवाब का इन्तजार कर रही है।" चिट्ठी पकड़ाते हुए आग्राफेना पेत्रोव्ना के होठों पर एक महत्वपूर्ण मुस्कान खेल गई।

अच्छी बात है, जरा दो," नेख्लूदोव ने चिट्ठी लेते हुए कहा। आग्राफेना पेत्रोव्ना को मुस्कराते देख कर उसकी भवे सिकुड़ गई।

यह मुस्करा रही है, इसका मतलब है कि चिट्ठी छोटी प्रिंसेस कोर्चागिना की ओर से आई है। यह समझे बैठी है कि मैं उस लड़की से शादी करूगा। लेकिन आखिर इस तरह के अनुमान लगाने का क्या मतलब है?

"मैं उसे कहती हू कि इन्तजार करे," आग्राफेना पेत्रोव्ना ने कहा, और मेज साफ करने वाले ब्रुश को जो वहीं गलती से यहा पड़ा हुआ था, हटाते हुए तैरती हुई बाहर निकल गई।

चिट्ठी मे से इत्र की महक आ रही थी। नेख्लूदोव खोल कर पढ़ने लगा।

जिस कागज पर चिट्ठी लिखी गई थी वह मोटा और भूरे रंग का था, और कोनों पर खुरदरा था। लिखावट तीखी और शब्द एक दूसरे से दूर दूर लिखे हुए थे। लिखा था

"आपने अपनी मौज मे आकर कल कह तो दिया कि आज कोलोसोव और हमारे साथ कला मण्डप देखने चलेगे। लेकिन आप चल कैसे सकते है। इजाजत हो तो आपको याद करा दू कि आज २८ अप्रैल है और आपको कचहरी मे जा कर जूरी मे बैठना है, a moins que vous ne soyez dispose a payer a la cour d' assises les 300 roubles d amende, que vous vous refusez pour votre cheval,* कल आपके चले जाने के बाद मुझे याद आया। सो, भूलना नही।

*अगर कचहरी मे वक्त से न पहुच कर जुर्माने के ३०० रूबल भरना मजूर हो, न कि उन ३०० से घोड़ा खरीदना, जैसा कि आपका इरादा है, तो बात और है। (फ्रेंच)

प्रि० म० कोर्चागिना"

चिट्ठी की दूसरी तरफ लिखा था

"Maman vous fait dire que votre couvert vous attendra jusqu'a la nuit Venez absolument a quelle heure que cela soit *

M K"

नेख्लूदोव ने पढ कर मुह बनाया। पिछले दो महीने से प्रिंसस कोर्चा गिना बडी पटुता से उसके साथ चाले चल रही थी, डोरे डाल रही थी। वह अप्रत्यक्ष बधनो स उसे अपने साथ गाठती जा रही थी। यह रुक्का भी इसी खेल मे एक चाल थी। परन्तु एक तो जो लोग अपनी जवानी खो चुके होते हैं वो भी शादी के मामले म बडे हिचकिचाते हैं, हा अगर उन्हे किसी स गहरा प्रेम हो जाय तो और बात है, दूसरे यदि नेख्लूदोव शादी करने का निश्चय कर भी लेता तो इस समय वह लडकी से विवाह का प्रस्ताव नही कर सकता था। इसका एक कारण था। यह नही कि दस बरस पहले उसने मास्लोवा की अस्मत लूटी थी और उसका परित्याग किया था। इस बात को तो वह भूल भी चुका था और इस कारण वह शादी न करे, इसका तो उसे ख्याल भी नहीं आ सकता था। नहीं, वास्तव मे कारण यह था कि उसका एक विवाहिता स्त्री के साथ सम्बन्ध हो गया था। अपनी ओर से तो वह इस सम्बन्ध को तोड चुका था लेकिन वह स्त्री मानने मे न आती थी, उसे तोडने के लिए तैयार न थी।

स्त्रियो के मामले मे नेख्लूदोव कुछ कुछ शर्माता था। इसी शर्मीलेपन न ही उस विवाहिता स्त्री को उकसाया और उसने मन म यह शर्मीलापन तोडने की उत्कट इच्छा पैदा हुई। जिस जिले म नेख्लूदोव का वोट देने का हक दिया गया था, यह स्त्री उसी जिले के अभिजातो के प्रधान की पत्नी थी। इस औरत ने धीरे धीरे उसके साथ घनिष्ठता बढा ली थी, और अब इसमे से निकलना उसके लिए कठिन हो रहा था। दिन प्रतिदिन इस सम्बन्ध से उसे अधिकाधिक विरुचि हो रही थी। एक बार वह प्रलोभन मे फस तो गया, पर फिर वह अपने को अपराधी महसूस करने

---

*मा ने आपको लिखने को कहा है कि आपका खाना रात तक लगा रहेगा। तो जब चाहे, अवश्य आयें। (फ्रेंच)

लगा। पर उस ग्रौरत की स्वीकृति के बिना इस सम्बन्ध को तोडने का भी उसमे साहस नही था। यही कारण था जिससे वह मिसी कोर्चागिना के आगे विवाह का प्रस्ताव यदि चाहता तो भी नही रख सकता था।

मेज पर पडी चिट्ठियो मे एक चिट्ठी इसी स्त्री के पति की थी। पता ग्रौर डाकखाने की मोहर देख कर नेख्लूदोव ने पहचान लिया, ग्रौर पहचानते ही उसका चेहरा लाल हो गया ग्रौर बदन मे तनाव ग्राने लगा। नेख्लूदोव का स्वभाव ही ऐसा था कि जब कभी उसे खतरे का भास होता तो उसका जोश उभरने लगता। पर यह जोश शीघ्र ही ठण्डा पड गया। नेख्लूदोव की जमीन्दारी का सबसे बडा टुकडा इसी जिले मे था। ग्रभिजातो के प्रधान ने केवल यह सूचना दी थी कि मई के अन्त मे एक जरूरी बैठक होने वाली है जिसमे स्कूलो ग्रौर सडको के प्रश्न पर वाद विवाद होगा। वाद विवाद मे उसका भाग लेना बेहद जरूरी है, क्योकि उमीद की जाती है कि प्रतिक्रियावादी इसका बडा विरोध करेगे।

मार्शल उदारवादी विचारो का था। उन दिनो, जार ग्रलेक्सान्द्र ततीय के राज्यकाल मे प्रतिक्रियावाद की जो तेज लहर उठी थी, मार्शल ग्रपने कुछ सहविचारको के साथ उसके विरुद्ध सघर्ष कर रहा था, ग्रौर यहा तक इस सघर्ष मे खोया हुग्रा था कि उसे ग्रपने पारिवारिक सकट की भी खबर न हुई।

इस ग्रादमी के कारण नेख्लूदोव को कैसी कैसी विकट परिस्थितियो का सामना करना पडा था। एक एक कर के सभी नेख्लूदोव को याद ग्राने लगी। एक बार उसे ऐसा भास हुग्रा था जैसे पति को पता चल गया है कि उसकी पीठ पीछे क्या हो रहा है, ग्रौर वह उसे द्वन्द्वयुद्ध के लिए ललकारने वाला है। नेख्लूदोव ने निश्चय किया था कि यदि द्वन्द्वयुद्ध हुग्रा तो वह ग्रपनी पिस्तौल हवा मे छोडेगा। उसे वह काण्ड भी याद हो ग्राया जब वह स्त्री एक दिन मायूस हो कर बाहर बाग मे दौड ग्राई थी यह कहती हुई कि वह तालाब मे डूब मरेगी ग्रौर वह उसे रोकने के लिए उसके पीछे पीछे भागा ग्राया था।

"ग्रब मै वहा नही जा सकता ग्रौर न ही उसका उत्तर पाये बिना कोई कदम उठा सकता हू," नेख्लूदोव ने सोचा। हफ्ता भर पहले उसने उसे एक एक निर्णायक पत्र लिख दिया था। उस खत मे उसने ग्रपना दोष

स्वीकार किया और कहा कि मैं इसका प्रायश्चित करने के लिए तैयार हू, पर साथ ही यह भी लिख दिया कि आज से हमारा एक दूसरे के साथ कोई सम्बन्ध नही होगा। इसम मुझे तुम्हारे ही हित का ख्याल है, उसने लिखा। इस पत्र का अभी तक कोई उत्तर नही आया था। और यह एक अच्छा लक्षण भी हो सकता था। क्योकि यदि वह सम्बन्ध तोडने से सहमत न होती तो जरूर लिखती, या ख़ुद चली आती, जैसे कि पहले कई बार आ चुकी थी। नेख्लूदोव के कान म यह बात पडी थी कि कोई अफसर उस औरत पर डोरे डाल रहा है। यह सुन कर वह मन ही मन बेचैन तो हुआ था क्योकि इससे उसकी ईर्ष्या जाग उठी थी, पर साथ ही उसे इस मिथ्याचार से छुटकारा पाने की उमीद भी बनने लगी थी।

दूसरा खत उसके अपने कारिन्दे की ओर से था। कारिन्दे ने लिखा था कि हुजूर का जमीदारी म एक बार आना बहुत जरूरी है ताकि जमीन-जायदाद आपके नाम हो सके। यह भी पूछा था कि क्या जमीन की देख रेख उसी तरह चलती रहेगी जिस तरह मा जी के जीवन-काल मे चलती थी या उसमे कोई परिवर्तन होगा। मैंने तो आपकी माता स्वर्गीय प्रिंसेस स निवेदन किया था, और अब आपसे निवेदन करता हू कि कृषि औजारो की मात्रा बढानी चाहिए और जो जमीन हमने किसानो को भाडे पर दे रखी है उसकी अब ख़ुद काश्त करनी चाहिए। इस तरह जमीन जायदाद से ज्यादा लाभ होगा। कारिन्दे ने इस बात के लिए क्षमा मागी थी कि वह तीन हजार रूबल की रकम अभी तक नही भेज पाया जो पहली तारीख तक भेज दी जानी चाहिए थी। अगली डाक से जरूर भेज दूगा। कारण यह था कि किसानो से वसूली नही हो पायी थी। उनका अब कोई विश्वास नही रहा, मुझे मजबूर हो कर अधिकारियो के आगे दरख्वास्त करनी पडी। चिट्ठी पढ कर नेख्लूदोव को ख़ुशी भी हुई और कुछ कुछ बुरा भी लगा। ख़ुशी इस बात की हुई कि कितनी बडी रियासत पर उसका अधिकार है। परन्तु इसी कारण उसे निराशा भी हुई, क्योकि किसी जमाने मे वह हर्बर्ट स्पेंसर का बडा उत्साही समर्थक रहा था। स्पेंसर ने अपनी पुस्तक 'Social statics" म लिखा था कि निजी सम्पत्ति का अधिकार न्यायोचित नही। स्वय एक बडी जमीदारी का उत्तराधिकारी होने के बावजूद नेख्लूदोव ने इस मत का समर्थन किया था। उस समय वह

युवक था और उसमे विचारो की दढता थी, जिस कारण उसने न केवल लोगो से वाद विवाद ही किया कि जमीन को निजी सम्पत्ति करार देना अन्याय है और विश्वविद्यालय मे इस विषय पर लेख ही नही लिखे बल्कि अपने विश्वास के अनरूप आचरण भी किया, और जो पाच सौ एकड भूमि पिता की ओर से विरासत मे मिली थी, उसे किसानो को दे दिया। परन्तु अब जब मा की बडी ज़मीदारी विरासत मे मिलने पर वह भूमिपति बन रहा था तो उसके सामने दो म से एक ही रास्ता खुला था। या तो वह यह जमीन-जायदाद भी किसानो को सौंप दे जैसा कि आज स दस साल पहले उसने अपने पिता की ज़मीन के सबध मे किया था, या फिर चुपचाप यह कबूल कर ले कि उसके पहले विचार गलत और झूठे थे।

जमीन-जायदाद वह किसाना का नहीं दे सकता था, क्योकि यही उसकी जीविका का एकमात्र साघन था। वह सरकारी नौकरी करना नही चाहता था। साथ ही उसे अब खरचीली आदते पड गई थी जिन्ह छोडना उसके वस की बात नही थी। यह व्यय भी था क्योकि अब उन विचारो मे उसके लिए पहले का सा आकर्षण भी नही रहा था। विचारो की दृढता, जवानी का जोश और विलक्षण काय करने की महत्वाकाक्षा अब नही रही थी। पर वह यह भी नही कर सकता था कि ज़मीन मिलकियत के अन्याय पर आखें मूद सके, जिसके स्पष्ट और अकाट्य तक उसने स्पसर के "Social statics" मे पढे थे। इन्ही तर्कों का योग्य समथन वाद मे हेनरी जाज की पुस्तका मे उसे मिला था। फिर भी वह यह नही कर सकता था।

यही कारण था कि कारिन्दे का खत पढ कर उसका मन खिन्न हो उठा।

४

कॉफी पी चुकने के बाद नख्लूदाव उठा और अपने पढ़ने वाले कमरे म चला गया ताकि सम्मन म देख सके कि उस किस वक्त कचहरी पहुचना है। साथ ही वह प्रिंसेस के खत का जवाब भी देना चाहता था। जाते हुए वह अपन स्टूडियो म से गुजरा। ईज़ल पर अब भी एक अधूरी तस्वीर

लगी थी। उस तस्वीर पर उसने दो साल तक निष्फल मेहनत करता रहा था। दीवारों पर कुछेक चित्र टंगे थे जो किसी जमाने में उसने बनाये थे। यह सोच कर कि वह चित्रकला में भी आगे नहीं बढ़ पाया, उसमें कोई योग्यता नहीं, उसका मन क्षुब्ध हो उठा। कुछ दिनों से उसके मन को यह विचार परेशान किये हुए था, पर वह अपने आपको यह कहकर ढाढ़स दे लेता कि उसकी सौन्दर्य-भावना बेहद सूक्ष्म और विकसित है। जो भी हो, उसके मन में क्षोभ उठा।

सात साल पहले उसने नौकरी को लात मार दी थी, यह सोच कर कि उसमें कलाकार बनने की सच्ची योग्यता है। कला के शिखर पर खड़े हुए उसे बाकी सब काम तुच्छ नज़र आये थे। पर अब ज़ाहिर हो गया था कि ऐसा सोचने का उसे कोई अधिकार नहीं था। अब जब भी कोई चीज उसे इन बातों की याद दिलाती तो उसका मन क्षुब्ध हो उठता। स्टूडियो की अमीराना ढंग की साज-सज्जा को देख कर भी उसका मन उदास हुआ। इसलिए जब वह अपने अध्ययन-कक्ष में पहुंचा तो वह कुछ खीझा हुआ था। अध्ययन-कक्ष भी बड़े ठाठ का था, खुला, बड़ा कमरा और ऊंची छत। उसे इस तरह सजाया गया था कि आरामदेह भी हो और बेहद सुंदर भी लगे।

लिखने के बड़े मेज़ पर, कागज रखने के खाने में कचहरी का सम्मन पड़ा था। ऊपर "अविलम्ब" का लेबल लगा था। ग्यारह बजे उसे कचहरी पहुंचना था।

प्रिंसेस के खत का जवाब देने के लिए नेख्लूदोव मेज़ के पास बैठ गया। वह लिखना चाहता था कि आपके निमन्त्रण के लिए धन्यवाद, मैं ज़रूर भोजन के समय आने की कोशिश करूंगा। उसने एक रुक्का लिखा, लेकिन फिर फाड़ दिया। उसमें कुछ अधिक घनिष्ठता आ गई थी। उसने दूसरा रुक्का लिखा। लेकिन वह भी ठीक नहीं बन पाया, उसमें उपेक्षा का भास होता था। उसने उसे भी फाड़ दिया, यह सोच कर कि कहीं प्रिंसेस पढ़ कर नाराज़ न हो। उसने बिजली की घण्टी का बटन दबाया। नौकर हाज़िर हुआ। वह अधेड़ उम्र का चिड़चिड़ा सा आदमी लगता था, मुंह पर गलमुच्छे, ठुड्डी पर के बाल और मूछें मुंडी हुईं, एक सूती एप्रन लटकाये हुए था।

"गाड़ी बुलाओ।"

"बहुत अच्छा हुजूर।"

'और जो नौकरानी चिट्ठी लेने के लिए बैठी है उसे कहा कि मैं जरूर आने की कोशिश करूंगा। निमन्त्रण के लिए धन्यवाद कहना।'

'बहुत अच्छा हुजूर।"

नख्लूदोव मन में सोचने लगा—"जवाब तो लिख कर ही देना चाहिए, या जबानी कहलवा देने में रुखाई सी लगती है, लेकिन क्या करूं, लिखा नहीं जाता। कोई बात नहीं, आज उससे मिलूंगा ही।" और वह उठ कर अपना ओवरकोट लेने चला गया।

जब वह घर में से निकला तो एक गाडी दरवाज़े पर खड़ी थी, जिसके पहियों पर रबड के टायर लगे थे। वह गाडीवान को जानता था। नेख्लूदोव गाडी में बैठा ही था कि गाडीवान ने तनिक घूम कर कहा—

कल आप प्रिंस कोर्चागिन के घर से अभी निकले ही होंगे कि मैं गाडी ले कर पहुंच गया। दरवाज़े पर दरबान ने बताया कि अभी अभी निकल गये हैं।'

'गाडीवानों तक को पता चल गया है कि कोर्चागिनों के साथ मेरे कैसे सम्बन्ध हैं,' नेख्लूदोव ने सोचा। और यह सवाल फिर उसके मन में उठा कि प्रिंसेस कोर्चागिना के साथ शादी करे या न करे। परन्तु वह कोई फैसला नहीं कर पाया। आजकल वह किसी सवाल का भी फैसला नहीं कर पा रहा था।

शादी के हक में कई बातें थीं। गृहस्थी का आराम तो होगा ही, साथ में, भलमनसाहत से जिन्दगी गुज़रने लगेगी, और मुख्यतः परिवार से, बाल बच्चों से जीवन में कोई लक्ष्य आ जायेगा। आजकल तो जीवन बिल्कुल शून्य हो उठा है। शादी के विरुद्ध भी कई बातें थीं परन्तु उनमें मुख्य यही थी कि वह डरता था। सभी लोग जो अपने यौवन का पहला भाग गुज़ार चुके होते हैं शादी करने से घबराते हैं, डरते हैं कि उनकी आज़ादी छिन जायेगी। साथ ही, अनजाने में ही उनकी नज़रों में स्त्री बड़ी रहस्यमयी जीव हो उठती है, जिससे वे कुछ कुछ भय खाने लगते हैं।

इस विशेष स्थिति को सोचते हुए, मिस्सी के साथ शादी करने के हक में कई बातें थीं। (उसका असल नाम मारीया था, पर जैसा कि एक खास श्रेणी के लोगों में पाया जाता है, उसे एक प्यार का नाम भी दिया गया था।) एक तो यह कि घर-परिवार अच्छा था। दूसरे लडकी हर

बात मे आम लडकियो से भिन्न थी—उसके बातने का ढग, चलने का, हसने का ढग, हर बात म भिन्नता थी। किसी विलक्षणता के कारण नही, वरन अपनी "भद्रता' के कारण ही यह गुण उसने ग्रहण किया था। 'भद्रता" से इस गुण की ठीक ठीक व्याख्या ता नही हानी थी, हालाकि भद्रता का उसकी नजरा म बडा मूल्य था। साथ ही वह किसी भी दूसरे आदमी को इतना अच्छा नही समझती जितना कि उसे—जिसका मतलब है कि वह उसके गुणो को पहचानती है, उसे समझती है। और जो लडकी उसके गुणो का मूल्य आक सकती है, उसे समझ सकती है, जाहिर है कि वह सूझ-बूझ वाली लडकी है, उसकी पहचान अच्छी है। मिस्सी से शादी करने के विरुद्ध सबसे बडी बात यह थी कि समव है उससे भी अच्छी लडकी मिल जाय। मिस्सी सत्ताईस बरस की हो चली है, जिसका मतलब है कि जरूर उसने पहले भी किसी से प्रेम किया होगा, कि उसे ही उसने सबसे पहले अपना दिल नही दिया। यह सोच कर उसके मन मे चुभन सी हुई। उसके आत्मसम्मान को चोट लगी कि कोई दूसरा भी आदमी हो सकता है जिसे वह प्रेम कर सकती थी, भले ही वह अतीत मे कभी रहा हो। बेशक उसे उस वक्त यह मालूम तो नही हो सकता था कि भविष्य म कभी उसकी नेख्ल्यूदोव स मुलाकात होगी, परतु वह किसी दूसरे को प्यार कर सकती थी, यह सोच कर ही नेख्ल्यूदोव को बुरा लगा।

सो शादी करने के हक मे भी उतने ही तक थे जितने कि उसके विरुद्ध। कम से कम नेख्ल्यूदोव को लगता था कि दोनो पलडे एक जैसे भारी हैं। मैं भी वैसा गधा हू, नेख्ल्यूदोव ने सोचा और हसने लगा। उसे उस गधे की कहानी याद हो आई जो यह निश्चय नही कर पाता था कि भूसे के किस ढेर की ओर जाय।

"कुछ भी हो, जब तक मुझे मारीया वासील्येव्ना (अभिजातो के प्रधान की पत्नी) का जवाब नही आ जाता, और वह किस्सा खत्म नही हो जाता, मैं कुछ भी नही कर सकता," उसने मन ही मन कहा।

इस विश्वास से कि वह इस निश्चय को स्थगित कर सकता है, बल्कि उसे जरूर इसे स्थगित कर देना चाहिए, उसके मन को बडा ढाढस मिला।

"बस ठीक है, इस बारे मे फिर सोचा जायगा," उसने मन ही मन कहा। गाडी पक्की सडक पर चलती हुई धीरे से कचहरी के फाटक के सामने जा कर रुक गई।

"अब तो मेरा काम यह है कि पूरी ईमानदारी से अपना सार्वजनिक कर्तव्य निभाऊं जैसे कि मैं सदा करता रहा हूं और जैसा करना उचित भी है। और यह काम अक्सर दिलचस्प भी होता है।" पट्टी के पास से हो कर नेख्लूदोव ने कचहरी में प्रवेश किया।

५

कचहरी के गलियारों में अभी से बड़ी चहल-पहल थी। चपरासी कागजों के फाइल उठाये, और तरह तरह के सन्देशों के पुर्जे पकड़े इधर से उधर, पांव घसीटते भागे फिरते थे। उनके सांस फूल रहे थे। दरबान, वकील और अदालती अफसर इधर उधर आ जा रहे थे। मुद्दई और मुद्दालेह, जो हिरासत में नहीं थे दीवारों के साथ साथ, मुंह लटकाये घूम रहे थे या बैठे इन्तजार कर रहे थे।

"जिला अदालत कहां पर है?" नेख्लूदोव ने एक चपरासी से पूछा।

"कौन सी अदालत, दीवानी या फौजदारी?"

"मैं जूरी का सदस्य हूं।"

"वह फौजदारी अदालत है। इधर दायें हाथ जाइये, फिर बायें घूम कर दूसरा दरवाजा।"

नेख्लूदोव उसी रास्ते जाने लगा।

दरवाजे पर दो आदमी खड़े इन्तजार कर रहे थे। उनमें से एक कोई व्यापारी था, ऊंचा-लम्बा और मोटा-ताजा आदमी, जो खूब चहक रहा था। प्रत्यक्षतः अभी अभी खा पी कर आया था और कुछ चढ़ा रखी थी। दूसरा कोई यहूदी था और किसी दूकान का कारिन्दा था। वे ऊन के भाव के बारे में बात कर रहे थे जब नेख्लूदोव ने पास आ कर पूछा कि क्या जूरी का यही कमरा है?

"जी, श्रीमान, यही कमरा है। क्या आप भी हमीं में से हैं—जूरी में बैठने आये हैं?" व्यापारी ने हंस कर आंख मारते हुए पूछा।

नेख्लूदोव ने हां में जवाब दिया।

'तो फिर एक साथ ही काम करेंगे, क्यों?' व्यापारी कहता गया। "मेरा नाम बाक्लाशोव है द्वितीय व्यापारी गिल्ड का सदस्य हूं।" और उसने अपना चौड़ा, पिलपिला हाथ, जो इतना मोटा था कि मुड़ता भी नहीं था, आगे बढ़ाया। 'जो बन पड़ा करेंगे। और श्रीमान् का शुभनाम?"

नेख्लूदोव ने अपना नाम बताया और सीधा जूरी के कमरे में चला गया।

कमरे म उस वक्त दसेक आदमी होगे, सभी भिन भिन प्रकार के। कुछ बैठे थे, कुछ इधर-उधर टहल रहे थ, कुछेक खडे एक दूसरे की ओर देख रहे थे और आपस मे परिचय प्राप्त कर रहे थे। सभी लोग अभी अभी आये थे। उनमे से एक अवकाशप्राप्त फौजी अफसर था जिसने वर्दी पहन रखी थी। कुछेक ने फ्रॉक-कोट पहने थे, बाकियो न साधारण कोट। एक आदमी देहाती लिबास मे था।

सभी सन्तुष्ट नजर आते थे क्योकि एक सामाजिक कतव्य पूरा करने जा रहे थे। हालाकि कुछ लोगों को अपना कामधधा छोड कर आना पडा था, और वे इस पर बडबडा भी रहे थे।

मौसम की चर्चा हो रही थी कि इस बार बसत जल्दी आ गया है, और इस बात की कि कैसे केस उन्हे सुनने होगे। कुछेक का एक दूसरे के साथ परिचय हो चुका था, कुछ लोग खडे खडे एक दूसरे के बारे मे अनुमान लगा रहे थे कि कौन आदमी कौन है। जिन लोगो का नेख्लूदोव से परिचय नही हुआ था वे उसके साथ हाथ मिलाने के लिए उत्सुक हो उठे, उससे परिचय प्राप्त करना वे अपना गौरव समझते थे। और नेख्लूदोव इसे अपना हक समझता था। अपरिचित लोगो के बीच सदा उसे ऐसा ही महसूस होता था। यदि कोई आदमी उससे पूछता कि वह क्यो अपने को अधिकाश लोगो से बडा समझता है, तो शायद इस सवाल का वह स्वय कोई जवाब न दे पाता। जिस प्रकार का जीवन उसने अब तक बिताया था उसमे कोई विशेषता नही थी। हा, वह अग्रेजी, फ्रासीसी और जमन भाषाए बडी नफासत से बोल सकता था, और उसके कपडे, नेकटाइया, कफ-बटन वगैरा बहुत बढिया होते थे। उन्हे वह सबसे फैशनेबुल दूकानो पर खरीदा करता था। परन्तु इन बातो के कारण तो कोई अपने को औरो से बडा नही समझ सकता। फिर भी वह अपने को बडा समझना चाहता था, लोगो से जो सम्मान प्राप्त होता उसे वह अपना हक समझता, और यदि कोई उसके प्रति उपेक्षा से पेश आता तो उसके दिल को चोट लगती। इस जूरी के कमरे मे उसे वह मान नही मिला, इसलिए उसकी भावनाओ को ठेस लगी। जूरी के सदस्यो मे से एक आदमी को वह पहले से जानता था। प्योत्र गेरासिमोविच उसका नाम था, किसी

ज़माने मे वह नेख्लूदोव की वहिन के वच्चो को पढाने आया करता था। नेख्लूदोव उसके कुल नाम से अनभिज्ञ था। कई वार इस वात के लिए नेख्लूदोव ने डीग भी मारी थी। अब यह आदमी एक पब्लिक स्कूल का अध्यापक था। उसकी वेतकल्लुफी नेख्लूदोव सहन नही कर सका। वह हसता तो बडे आत्मतुष्ट लोगो की तरह। नेख्लूदोव को वह आदमी बडा अशिष्ट लगा।

"ओ-हो! तो तुम्हे भी फसा लिया इन्होने!" कहते हुए प्योत्र गेरासिमोविच ने नेख्लूदोव का अभिवादन किया, और ठहाका मार कर हसने लगा। "तुम बच कर निकल नही पाये, है?"

"मैंने बच कर निकलने की कोई कोशिश भी नही की," नख्लूदोव ने गभीर आवाज़ मे उत्तर दिया। उसके लहजे मे कठोरता थी।

"वाह, मान लिया! जन सेवा का क्या वढिया शौक है! पर ज़रा ठहर जाओ। जब भूख लगेगी और नीद से ऊघने लगोगे, तब पूछूगा। तब कोई दूसरा ही राग आलापोगे।"

नेख्लूदोव ने सोचा कि "यह पादरी का बच्चा अभी मेरा कधा भी थपथपाने लगेगा," और सीधा वहा से हट कर दूसरी तरफ जाने लगा। उसका मुह लटक गया, मानो किसी ने अभी अभी आ कर खबर दी हो कि उसके सब सबधी स्वर्ग सिधार गये हैं। एक जगह पर कुछ आदमी एक ऊचे-लम्बे, रोबीले आदमी के इद गिर्द खडे थे, जो बडे जोश से कोई वात सुना रहा था। उसकी दाढी-मूछ मुडी हुई थी। वात एक मुकद्दमे के बारे मे थी जो दीवानी अदालत मे चल रहा था। जिस मज़े से वह प्रख्यात वकीलो और जजो के नाम ले ले कर वात सुना रहा था उससे जान पडता था कि उसे मुकद्दमे की पूरी पूरी जानकारी है। मुकद्दमा एक बुढिया औरत का था। वह कह रहा था कि वकील ने इतनी कुशलता से पैरवी की कि मुकद्दमे का सारा रुख ही वदल गया। बुढिया औरत के हक मे न्याय था, पर अब उसे उलटे लेने के देने पड रहे है। अब उसे अच्छी खासी रकम अपने मुखालिफ को देनी पडेगी।

"वकील नही जादूगर है," वह कह रहा था।

सब लोग वडे ध्यान से सुन रहे थे। सबके चेहरे पर आदर का भाव था। कुछेक ने अपनी राय देने की कोशिश की, लेकिन उसने किसी को बोलने नही दिया, मानो वही मुकद्दमे के बारे मे सब कुछ जानता हो।

नेख्लूदोव को बडी देर तक इन्तजार करना पडा, हालांकि वह ख़ुद भी देर से आया था। एक जज अभी तक नही पहुचा था, और सब लोग उसका इन्तज़ार कर रहे थे।

६

अदालत का प्रधान जज वक्त से पहले पहुच गया था। ऊचा-लम्बा, हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति, बडे बडे सफेद गलमुच्छे। विवाहित होते हुए भी वह बेलगाम होकर भोग विलास करता था। उसकी पत्नी भी यही कुछ करती थी। इसलिए दोनो स्वतन्त्र थे। आज प्रात उसे स्विट्ज़रलैंड की एक लडकी से खत आया था। यह लडकी पहले इसके बच्चो की गवर्नेस रह चुकी थी और अब दक्षिणी रूस के किसी स्थान से पीटसवर्ग जा रही थी। उसने लिखा था कि वह शाम को होटल "इतालिया" मे ३ और ६ बजे के बीच उसका इन्तजार करेगी। लडकी का नाम क्लारा वासील्येव्ना था। कद-बुत की गुडिया सी, और सिर पर लाल लाल बाल थे। पिछले साल गर्मी के दिना म देहात मे इनका रोमास शुरू हुआ था। अब प्रधान जज की इच्छा थी कि जितनी जल्दी हो सके अदालत की कारवाही शुरू की जाय, ताकि वह ६ बजे से पहले उसके पास पहुच सके।

वह निजी कमरे मे गया और दरवाज़े को अन्दर से चिटखनी चढा दी। फिर एक अलमारी मे से डबल का जोडा निकाल कर सामने रखा। दोनो बाज़ुओ को सामने, ऊपर, नीचे, दायें और बायें बीस बार हिला हिला कर व्यायाम किया। फिर दोनो डबल उठा कर, हाथो को ऊपर कर के, धीरे धीरे, तीन बार उठक-बैठक लगायी।

"सेहत कायम रखने का अगर कोई साधन है तो ठण्डे जल से स्नान और व्यायाम," वह बोला, और अपने बायें हाथ से दायें बाज़ू की मासपेशी को दबा दबा कर देखने लगा। तर्जनी मे उसने सोने की अगूठी पहन रखी थी। इसके बाद वह व्यायाम का दूसरा आसन करने की तैयारी करने लगा। (जब भी अदालत की कारवाही लम्बी हो तो वह ये दोनो आसन जरूर कर लिया करता था)। लेकिन उसी वक्त किसी ने दरवाज़े को धक्का दिया। प्रधान जज ने फौरन डबल अपनी जगह पर रख दिये और दरवाजा खोला।

"माफ कीजिये, आप को इन्तजार करना पडा।"

अदालत के एक सदस्य ने कमरे मे प्रवेश किया। छोटा कद, आखो पर सुनहरी चश्मा और ऊचे-ऊचे कधे। उसके चेहरे पर असन्तोष की छाप थी।

"आज फिर मात्वेई निकीतिच अभी तक नही पहुचा," उसने खीज कर कहा।

"अभी तक नही पहुचा। वह हमेशा देर से आता है," प्रधान जज ने वर्दी पहनते हुए कहा।

"मैं हैरान हू कि उसे शर्म तक नही आती," सदस्य ने गुस्से से कहा और बैठ कर सिगरेट सुलगाने लगा।

यह आदमी हर काम मे बडी मीन मेख निकालता था। उस दिन प्रात इसका अपनी पत्नी के साथ झगडा हो गया था। महीना खत्म होने से पहले ही पत्नी के पास घर-खर्च के पैसे चुक गये थे और उसने इससे कुछ पैसे पेशगी मागे। इसने देने से इन्कार कर दिया था। इस पर झगडा हो गया। पत्नी ने साफ कह दिया कि अगर तुम्हारा ऐसा व्यवहार रहेगा तो आज घर मे खाना नही बनेगा। इस बात पर वह घर से निकल आया था, लेकिन दिल ही दिल मे डर रहा था कि कही उसकी धमकी सच्ची ही न निकले, क्योकि उसकी पत्नी अपनी सनक मे जो कर सो थोडा। प्रधान जज के दमकते, स्वस्थ, हसमुख और दयालु स्वभाव चेहरे को देख कर उसने मन ही मन कहा, "भोगो सदाचार का फल।" प्रधान कुर्सी पर बैठा, दोनो कोहनिया मेज पर दूर दूर रखे, अपने नाजुक गोरे-गोरे हाथो से अपने गलमुच्छे सहला रहा था। घने, सफेद गलमुच्छो के नीचे वर्दी के कोट के कालर पर बढिया कसीदाकारी थी। "यह आदमी सदा प्रसन्नचित्त और सतुष्ट रहता है, और मेरी किस्मत मे क्लेश भोगना ही लिखा है।"

सेक्रेटरी ने प्रवेश किया। वह किसी केस के कागजात लाया था।

'धन्यवाद,' प्रधान जज ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा, "पहले कौन सा मुकद्दमा शुरू करें?'

"मैं सोचता हू जहर वाला मुकद्दमा ठीक रहेगा," सेक्रेटरी ने उपेक्षा से कहा।

"ठीक है, यही सही," प्रधान जज ने कहा। उसने सोचा कि चार बजे तक मैं इसे खत्म कर सकूगा और फिर यहा से जा सकूगा। "क्या मात्वेई निकीतिच आ गया है?"

"अभी तक नही आया।"

"और ब्रेवे?"

"ब्रेवे आ गया है।"

"तो अगर मिले तो उसे कह देना कि हम पहले जहर वाला मुक्द्दमा लेगे।"

ब्रेवे सरकारी वकील था जिसे इस मुक्द्दमे की पैरवी करनी थी।

गलियारे मे ब्रेवे और सेक्रेटरी की मुठभेड हो गई। ब्रेवे कधे ऊपर को उठाये, वगल मे बैग दवाये, एडिया खटखटाता हुआ तेज़ तेज़ जा रहा था। वह दूसरे बाज़ू को अपने सामने दायें बायें झुला रहा था।

"तैयार हो न? मिखाईल पेत्रोविच पूछ रहे थे," सेक्रेटरी ने कहा।

"मैं हर वक्त तैयार रहता हू," सरकारी वकील ने जवाब दिया, "कौन सा मुकद्दमा पहले होगा?"

"जहर वाला मुक्द्दमा।"

"ठीक है," सरकारी वकील ने कहा। परन्तु दिल मे उसे यह ठीक नही लगा। रात को वह अपने एक दोस्त की विदायी पार्टी मे गया था और रात के २ बजे तक शराब और जुआ चलता रहा था और बाद मे सब यार-दोस्त चकले मे गये थे। उसी चकले मे जहा छ महीने पहले मास्लोवा रह रही थी। इस कारण उसे ज़हर वाला केस पढने का वक्त नही मिला था, और वह सोच रहा था कि अब बैठ कर उसे देखूगा। सेक्रेटरी को यह मालूम था, इसी लिए उसने ज़हर वाले मुक्द्दमे से ही कायवाही शुरू करन की सलाह प्रधान जज को दी थी। सेक्रेटरी उदारवादी विचारो का था, बल्कि किसी हद तक रेडिकल था। इसके विपरीत ब्रेवे कट्टरपन्थी था, और रूस मे आ कर आबाद हुए सभी जमनो की तरह, उसके मन मे भी आर्थोडाक्स मत के लिए विशेष अनुराग था। सेक्रेटरी को यह बुरा लगता था और उसे इस पद पर देख देख कर जलता था।

"और स्कोप्त्सी* वाले मुक्द्दमे का क्या करोगे?" सेक्रेटरी ने पूछा।

---

*स्कोप्त्सी—एक धार्मिक समुदाय।

"मैंने पहले ही कह दिया है कि गवाहों के बिना मैं कुछ नहीं कर सकता। यही बात मैं अदालत मे भी कह दूगा।"

"वाह, इससे क्या फरक पडता है?"

"मैं नही कर सकता," अवे ने झुझला कर हाथ हिलाते हुए कहा, और तेज तेज चलता हुआ अपने निजी दफ्तर मे चला गया।

वह जान बूझ कर इस मुकद्दमे को स्थगित करना चाहता था और जिन गवाहो का बहाना बह बना रहा था वे बिल्कुल गैरजरूरी थे। असल वजह यह थी कि अगर मुकद्दमा पढे लिखे जूरी के सामने पेश हुआ तो सम्भव है अपराधी छूट जाय। इसलिए प्रधान जज से मिल कर उसने यह फैसला कर लिया था कि इस मुकद्दमे की पेशी अगले इजलास मे रखी जायेगी, और वह भी इलाके के किसी छोटे कस्बे मे जहा जूरी मे किसानों की सख्या अधिक होगी और इससे सजा दिलवाना आसान होगा।

गलियारे मे हलचल बढने लगी। दीवानी अदालत के दरवाजे पर लोगो की भीड जमा हो गई। यहा पर उसी मुकद्दमे की सुनाई हो रही थी जिसकी चर्चा वह रोबीला आदमी कर रहा था जिसे सभी मुकद्दमो की खबर रहती थी।

कचहरी मे थोडी देर के लिए इजलास बरखास्त हुआ, और वह बूढी महिला निकल कर बाहर आयी, जिसकी जमीन-जायदाद छिन गई थी। प्रतिभावान वकील ने ऐसी बढिया जिरह की थी कि सारी सम्पत्ति उसके मुवक्किल व्यापारी के हाथ आ गई थी, जिस पर वास्तव मे उसका कोई अधिकार न था। जजो को सब मामला मालूम था। वकील और मुवक्किल भी मामले को खूब जानते थे। पर वकील ने जो चाल चली वह ऐसी थी कि यह फैसला अनिवार्य हो गया कि बुढिया की जमीन जायदाद व्यापारी को दे दी जाय।

बुढिया गठीले बदन की स्त्री थी। उसने बढिया कपडे पहन रखे थे और टोपी पर बडे-बडे फूल लगा रखे थे। दरवाजे मे से निकल कर वह रुक गई और अपनी छोटी लेकिन मोटी मोटी बाहे फैला कर बार बार अपने वकील से कहने लगी—"इसका मतलब क्या है? यह हो कैसे सकता है? इसका ख्याल ही किसी को कैसे आ सकता है?"

वकील का ध्यान किसी दूसरी तरफ था, और उसकी आखें बुढिया की टोपी मे लगे फूलो को देखे जा रही थी।

बूढी महिला के पीछे पीछे वह प्रतिभावान वकील दीवानी अदालत के कमरे मे से निकल कर बाहर आया जिसने यह मुकद्दमा जीता था और अपने मुवक्किल से दस हज़ार रूबल ले कर उसे एक लाख रूबल की ज़मीन-जायदाद दिलवा दी थी। यह उसकी ही एक चाल का करिश्मा था कि बुढिया अपना सब कुछ गवा बैठी। कमरे मे से निकलते वक्त उसकी सफेद कलफ चढी कमीज उसकी छोटी सी वास्कट के नीचे से खूब चमक रही थी। वह तेज़ तेज़ कदम रखता हुआ चला आ रहा था, चेहरा खुशी और आत्मसन्तोष से दमक रहा था, और चाल-ढाल ऐसी मानो सबकी आखें उसी पर लगी हो और वह कह रहा हो—"नही, नही, ताली बजाने की कोई ज़रूरत नही।"

७

आखिर मात्वेई निकीतिच भी आ पहुचा। उसके पहुचने पर अदालत के पेशकार ने जूरी के कमरे मे प्रवेश किया। पतला सा आदमी, जब वह चलता तो एक ओर को झूलता था। उसका निचला होठ भी एक ओर को लटका हुआ था।

पेशकार पढा लिखा आदमी था, विश्वविद्यालय मे तालीम पा चुका था, और बेहद ईमानदार था, पर ज्यादा देर तक कही भी नौकरी नही कर पाता था, क्योकि उसे शराब पीने की इल्लत पड गई थी। तीन महीने हुए एक काउटेस की सिफारिश पर उसे कचहरी मे नौकरी मिली थी। काउटेस ने भी सिफ़ारिश इसलिए की कि वह उसकी पत्नी पर मेहरबान थी। और वह इस बात पर बडा खुश था कि इस नौकरी पर वह अब तक डटा हुआ था।

नाक पर अपनी कमानीदार ऐनक चढाते हुए और उसके पीछे से सबको देखते हुए पेशकार बोला—

"तो साहिबान, सब पहुच गये?"

"सब मौजूद हैं," हसमुख व्यापारी ने कहा।

"अच्छी बात है, अभी देख लेते हैं।" और जेब मे से एक सूची निकाल उसने एक एक कर के नाम पढने शुरू कर दिये। नाम पढता

जाता और कभी ऐनक मे से और कभी ऐनक के ऊपर से ताक झाक कर वहा बैठे आदमियो को देखता जाता।

"राज्य-परिषद् के सदस्य श्री इ० म० निकीफोरोव!"

"हा, मैं हाजिर हू।" एक रोबदाब वाले आदमी ने कहा। यह वही सज्जन थे जो कचहरियो के मामलात की पूरी पूरी जानकारी रखते थे।

"पैंशन याफ्ता कनल इवान सेम्योनोविच इवानोव!"

"हाजिर!" एक पतला सा आदमी बोला जिसने अवकाश प्राप्त अफसरो की वर्दी पहन रखी थी।

"द्वितीय व्यापारी गिल्ड के सदस्य, प्योत्र बाक्लाशोव!"

"तैयार-बर-तैयार," हसमुख व्यापारी ने खीसिया निपोरते हुए कहा।

"गार्ड स के लेफ्टिनेंट प्रिस द्मीत्री नेख्लूदोव!"

"हाजिर!" नेख्लूदोव ने जवाब दिया।

ऐनक के ऊपर से झाकते हुए पेशकार ने झुक कर बडी नम्रता तथा प्रसन्नता से अभिवादन किया, मानो उन्हे औरो से अलग समझ कर सत्कार करना चाहता हो।

"कैप्टेन यूरी द्मीत्रियेविच दानचेको, ग्रिगोरी येफीमोविच कुलेशोव, व्यापारी," इत्यादि। दो को छोड कर सभी उपस्थित थे।

"तो साहिबान अदालत मे तशरीफ ले चलिये," बडे आतिथ्यपूर्ण ढग से दरवाजे की ओर इशारा करते हुए पशकार ने कहा।

सभी दरवाजे की ओर बढे। एक दूसरे के लिए रास्ता छोड दने के लिए वे तनिक रुक जाते फिर आगे बढ जाते। गलियारे मे से होते हुए वे कचहरी मे दाखिल हुए।

अदालत का कमरा खूब खुला और लम्बा था। कमरे के एक ओर मच था जिस पर चढने के लिए तीन सीढिया थी। मच पर एक बडा मेज रखा था जिस पर हरे रग का मेजपोश बिछा था। मेजपोश के किनारो पर गहरे हरे रग का बार्डर लगा था। मेज के पीछे तीन बडी बडी बलूत की कुर्सिया रखी थी। कुर्सियो की पीठ ऊची थी, और उन पर नक्काशी का काम हुआ था। कुर्सियो के पीछे, दीवार पर जार का एक बहुत रगीन चित्र लटक रहा था। चित्र मे जार ने वर्दी और कधे पर पट्टा पहन रखे थे, हाथ तलवार की मूठ पर था, और एक पाव तनिक आगे को रखा

था। दायी ओर कोने मे एक चौखटा लटक रहा था जिसमे ईसा की प्रतिमा थी, सिर पर काटो का ताज, और चौखटे के नीचे बाईबल-पाठ के लिए मेज़ रखी थी। उसी तरफ सरकारी वकील की मेज लगी थी। बायी ओर, सरकारी वकील की मेज़ के ऐन सामने सेक्रेटरी की मेज़ थी, और लोगो के बैठने की जगह के नज़दीक बलूत की लकडी का डडहरा लगा था। डडहरे के पीछे कटघरा था जिसमे कैदी के बैठने की बेंच थी। इस वक्त कटघरा खाली था। मच के दायें हाथ जूरी के लिए ऊची पीठ की कुर्सिया रखी थी। नीचे, फर्श पर वकीलो की मेज़ें थी। यह सब कमरे के सामने वाले हिस्से मे था। कमरे के बीचोबीच एक डडहरा लगा था जो पिछले हिस्से और सामने के हिस्से को एक दूसरे से अलग करता था। कमरे के पिछले हिस्से मे बेंचो की कतारे लगी थी। सामने के बेंच पर चार औरते और दो आदमी बैठे थे। औरते या नौकरानिया थी या किसी फैक्टरी की मज़दूरिनें। दोनो आदमी श्रमिक थे। कमरे के वैभवपूर्ण वातावरण का उन पर इतना रोब था कि वे एक दूसरे से बात भी करते तो फुसफुसा कर।

जब जूरी के सदस्य अपनी अपनी जगह पर बैठ गये, तो पेशकार फिर तिरछा चलता हुआ सामने आ खडा हुआ और ऊची आवाज़ मे बोला, मानो वहा बैठे लोगो को डराना हो—

"जज साहिबान तशरीफ ला रहे हैं!"

सभी उठ खडे हुए। जज साहिबान मच की ओर बढे। सबसे आगे प्रधान जज था, बढिया गलमुच्छो और मासपेशियो वाला। उसके पीछे सुनहरी ऐनक वाला दूसरा जज था जिसका मुह हर वक्त लटका रहता था और आज वह पहले से भी अधिक लटका हुआ था। दरअसल अभी अभी उसे उसका साला मिला था। साला बहिन को मिल कर चला आ रहा था, और बहिन ने कहा था कि आज खाना नही पकेगा।

"मतलब है आज किसी ढाबे की तलाश करनी होगी," हसते हुए साले ने कहा।

"यह हसी की बात नही है," जज ने कहा, और उसका मुह और भी लटक आया।

अन्त म अदालत के तीसर जज ने प्रवेश किया। यह मात्वेई निकीतिच था, वही आदमी जो हमेशा देर से पहुचता था। लम्बी सी दाढी और

बडी बडी, गोल-गोल सम्भावनापूर्ण आखें। उस पेट मे गूजन की शिकायत रहती थी आज सुबह, उसने डाक्टर के कहने पर एक नया इलाज शुरू किया था, जिस कारण उसे घर पर ज्यादा देर तक रुकना पडा। अब पर चढते समय वह बडा विचारमग्न नजर आ रहा था। कारण, उसकी यह आदत थी—उसके मन मे तरह तरह के सवाल उठते, और उन सवालों का हल ढूढने के लिए वह तरह तरह की अजीब तरकीबें सोचता रहता। अभी अभी उसके मन मे सवाल उठा था कि यह नया इलाज कामयाब होगा या नही। और जवाब मे उसने सोचा था कि मैं दरवाजे से ले कर अपनी कुर्सी तक अपने कदम गिनूगा। अगर तो ये कदम तीन पर तक़सीम हो सके तब तो मेरी गूजन ठीक हो जायेगी वरना नही। कदम संख्या में छब्बीस निकले, लेकिन उसने कुर्सी के पास पहुच एक हल्का सा कदम और ले कर पूरे सत्ताईस बना लिये।

तीनो जज, प्रधान और उसके साथी अपनी अपनी वर्दियो मे जिनके कॉलरो पर सुनहरी गोटा लगा था, बडे रोबीले नजर आ रहे थे। ऐसा लगता जैसे वे स्वय भी इस बात का महसूस कर रहे हो। वे बडी जल्दी से मेज के पीछे लगी अपनी ऊची कुर्सियो पर आ बैठे, मानो अपने ही गौरव से अभिभूत हो उठे हो। मेज पर हरा कपडा बिछा था, एक तिकोनी वस्तु जिसके सिर पर उकाब बना था, मेज पर रखी थी। इसके अलावा दो काच के गुलदान थे, जो शक्ल-सूरत से उन पात्रो के से लगते थे जिनमे जल-पानगृहो मे मिठाई रखी जाती है। साथ ही कलमदान, कलमे, साफ कागज और तरह तरह की खूब तराशी हुई पेंसिले रखी थी।

जजो के पीछे पीछे सरकारी वकील भी आया। एक बाजू के नीचे बैग, दूसरा झुलता हुआ, वह आते ही सीधा खिडकी के पास अपनी जगह पर जा बैठा, और फौरन कागजात पर नजरसानी करने लगा। वह एक क्षण भी जाया नही करना चाहता था। उसका ख्याल था कि कारवाई शुरू होने से पहले वह अपना केस तैयार कर लेगा। उसे सरकारी वकील बने बहुत अरसा नही हुआ था। अभी तक उसने केवल चार मुकद्दमे लिये थे। ऊपर उठने की उसके मन मे बडी लालसा थी, और उसने दृढ निश्चय कर रखा था कि जरूर किसी न किसी ऊचे ओहदे पर पहुचूगा। इसलिए उसकी यही कोशिश होती कि जो भी मुकद्दमा वह हाथ मे ले उसमे मुद्दालेह को

सज़ा दिलवाये। ज़हर वाले केस को वह मोटे तौर पर जानता था, उसने अपनी तकरीर की रूपरेखा भी तैयार कर ली थी, लेकिन उसे कुछ तथ्यों की ज़रूरत थी, जिन्हें वह अब जल्दी जल्दी नोट कर रहा था।

मंच से हट कर ऐन दूसरी तरफ़ सेक्रेटरी बैठा था। जिस जिस कागज़ की उसे ज़रूरत हो सकती थी उसने पहले से तैयार कर लिया था, और अब बैठा एक लेख पढ रहा था। यह वह लेख था जिस पर सेंसर ने प्रतिबन्ध लगा दिया था। एक दिन पहले उसने यह लेख मंगवा कर पढ लिया था, मगर इस वक्त उसे दोबारा इसलिए पढ रहा था कि वह इसकी चर्चा दाढी वाले जज के साथ करना चाहता था, जिसके साथ उसके विचार मिलते थे।

८

प्रधान जज ने कुछेक कागज़ों को उलट-पलट कर देखा, पेशकार और सेक्रेटरी से कुछेक सवाल पूछे जिनका उत्तर उन्होंने हां मे दिया। इसके बाद उसने कैदियों को पेश करने का हुक्म दिया।

फौरन कटघरे का दरवाज़ा खुला और दो सशस्त्र पुलिस के सिपाही टोपियां लगाये और हाथों मे नंगी तलवारें पकडे दाख़िल हुए। उनके पीछे पीछे तीन कैदी—एक आदमी और दो औरतें—अन्दर आयीं। आदमी का चेहरा दागों से भरा था और सिर पर लाल रंग के बाल थे। उसने कैदियों का लबादा पहन रखा था जो उसके लिए बहुत बडा था, लम्बाई मे भी और चौडाई मे भी। आस्तीनों मे से हाथों के अंगूठे निकालते हुए उसने अपने दोनों बाज़ बगलों के साथ सटा कर रखे थे ताकि आस्तीनें खिसक कर हाथों को भी न ढक लें, क्योंकि लबादे की आस्तीनें भी बडी लम्बी थीं। जजों और दर्शकों की ओर उसने नहीं देखा। वह सीधा बेंच की ओर एकटक देखता रहा और उसके दूसरे सिरे पर जा कर बडे ध्यान से एक कोने मे बेंच के सिरे पर बैठ गया, और बाकी सारी जगह दूसरों के लिए खाली छोड दी। फिर उसकी आंखें प्रधान जज पर जम गईं, और उसकी गालों की मांसपेशियां खिंचने लगीं, मानो वह कुछ फुसफुसा रहा हो। उसके पीछे पीछे एक स्त्री आई। इसने भी कैदियों का लबादा पहन रखा था और सिर पर भी कैदियों का रूमाल बांधे हुए थी। वह बडी उम्र की थी, और चेहरा ज़र्द था। आंखों पर न बरौनियां थीं, न भौंह।

श्रौर श्राखें लाल थी। वह बिल्कुल शान्त जान पडती थी। चलते हुए उसका लबादा किसी चीज़ के साथ श्रटक गया। बडे ध्यान से उसने उसे छुडाया श्रौर श्राराम से श्रा कर बैठ गई।

तीसरी कैदी मास्लोवा थी।

ज्यो ही वह श्रन्दर श्राई, कचहरी मे बैठे सभी श्रादमियो की नज़रें उसकी श्रोर घूम गइ श्रौर वे उसके गोरे मुह, चमकती काली श्राखो श्रौर लबादे के नीचे छातियो के उभार को देखने लगे। श्रौर तो श्रौर जब तक वह बैठ नही गई पुलिस का हथियारबन्द सिपाही भी जिसके पास से वह हो कर श्रायी थी, एकटक उसकी श्रोर देखता रहा, श्रौर फिर घूम कर खिडकी की श्रोर देखन लगा। उसके बदन मे एक सिहरन सी हुई मानो उसे किसी जुर्म का एहसास होने लगा हो।

प्रधान जज चुप बैठा रहा। जब कैदी श्रपनी श्रपनी जगह पर बैठ गये श्रौर मास्लोवा भी बैठ गई तो वह सेक्रेटरी की तरफ मुखातिब हुश्रा।

फिर रोज़मर्रा की कारवाई शुरू हुई। जूरी मे बैठे सदस्यों की गणना हुई, कौन श्राया है कौन नही श्राया। जो नही पहुचे उनकी प्रधान जज ने टीका टिप्पणी की, श्रौर उन पर जुर्माने लगाये, जिन सदस्यो ने छुट्टी की दरख्वास्त दे रखी थी, उनके बारे मे फ़ैसला किया, साथ ही श्रतिरिक्त सदस्यो को नियुक्त किया।

प्रधान जज ने छोटे छोटे कागज के टुकडे लिये, श्रौर उन्हे तह कर के एक गुलदान मे रखा। फिर श्रपनी बाहो पर से श्रास्तीनें थोडी सी पीछे को हटाइ। श्रास्तीनो पर सुनहरी गोटा लगा था। श्रास्तीनें हटाने पर उसकी कलाई पर के बाल नज़र श्राने लगे। फिर उसने एक मदारी के से श्रन्दाज़ मे हाथ हिलाये श्रौर एक एक कर के कागज़ निकाल निकाल कर खोलने श्रौर पढने लगा। उसके बाद, श्रास्तीनें नीची कर के, प्रधान जज पादरी की तरफ मुखातिब हुश्रा श्रौर उसे जूरी के सदस्यो से शपथ लेने का श्रादेश दिया।

बूढा पादरी चलता हुश्रा देवप्रतिमा के नीचे रखे मेज़ के पास श्रा कर खडा हो गया। उसका चेहरा फूला हुश्रा श्रौर ज़र्द था। बदन पर उसने भूरे रग का चोगा पहन रखा था, गले से सोने का क्रॉस झूल रहा था श्रौर सीने पर एक छोटा सा तमगा लटका हुश्रा था। वह चलता था श्रपनी मोटी, घायल टागो को घसीटते हुए।

जूरी के सदस्य उठे और जमघट सा बना कर मेज की ओर जाने लगे।

"आइये, चले आइये," अपने गुदगुद हाथ से गाँग को खीचते हुए पादरी ने कहा, और मेज के पास जूरी के सदस्यो के पहुचने का इन्तज़ार करने लगा।

यह काम करते हुए पादरी का पूरे छियालीस बरस हो चुके थे। और तीन साल बाद वह अपनी स्वर्ण जयन्ती मनाने की तैयारी कर रहा था, और उसी ठाठ-बाठ से मनाना चाहता था जिससे कुछ ही मुद्दत पहले लाट पादरी ने अपनी स्वर्ण जयन्ती मनाई थी। जिस दिन ज़िला अदालत खुली थी, यह पादरी उसी दिन से इसमे काम कर रहा था। उसे बडा गर्व था कि उसने हज़ारो आदमियो का शपथ दिलवाई है, और अपनी वृद्धावस्था के बावजूद अपने धर्म, देश और परिवार के हित मे बराबर मेहनत किये जा रहा है। उसे आशा थी कि वह अपने परिवार के लिए एक मकान और कम से कम तीस हज़ार रूबल तक के सूद वाले शेयर छोड जायेगा। उसे इस बात का कभी ख्याल नही आया कि जिस पवित्र इंजील पर हाथ रखवा कर वह लोगो से शपथ दिलवाता है, उसी इंजील का यह उपदेश है कि शपथ लेना पाप है। उसने अपनी स्थिति का ख्याल करते हुए यह कभी नही सोचा कि वह कितनी लज्जाजनक बात कर रहा है। बजाय इसके कि यह काम उसके अन्तःकरण को कचोटता, उसे अपना यह काम अच्छा लगता था क्योकि इसमे उसे तरह तरह के बडे लोगो से मिलने का मौका मिलता था। अभी अभी उसे विख्यात वकील से मिल कर बहुत खुशी हुई थी जिसने एक ही मुकद्दमे मे दस हज़ार रूबल कमा लिये थे। यह वही बडे बडे फूल लगी टोपी वाली बूढी महिला का मुकद्दमा था। पादरी का दिल वकील के प्रति आदर से भर उठा था।

जब सबके सब सीढियो पर से मच पर चढ गये तो पादरी ने अपना मैला-कुचैला लबादा उठाया और सिर टेढा कर के उसे पहन लिया। उसके बाद अपने बिरले बालो को ठीक कर के वह जूरी के सदस्यो की ओर घूम कर कापती आवाज़ मे बोला–

"अपना दाया हाथ उठाइये, इस तरह, और उगलियो को एक साथ जोड कर रखिये।" अपना मोटा, गुदगुदा हाथ उठाया और अगूठे और दो उगलियो को एक साथ इस तरह जोड कर दिखाया मानो चुटकी लेने

जा रहा हो। "अब मेरे पीछे पीछे बोलिये सर्वशक्तिमान परमात्मा, परम पावन इंजील, तथा भगवान के सजीव शब्द की शपथ ले कर मैं वचन देता हूँ कि इस काम में ..." एक एक शब्द पर रुक रुक कर वह बोल रहा था। "हाथ मत गिराओ, इस तरह सीधा रखो," उसने एक युवक को कहा जिसकी बाजू ढीली पड़ गई थी, "... कि इस काय में जिसे ..."

कुछ लोगों ने—जैसे गलमुच्छों वाले रोबीले आदमी, कनल और व्यापारी आदि ने—अपने बाजू खूब ऊंचे और उंगलियों को बिल्कुल उसी तरह बना कर रखा जैसे पादरी ने कहा था, मानो उन्हें ऐसे करना अच्छा लगता हो। बाकी लोगों ने भी हाथ उठाये मगर लापरवाही से और अनमने पन से। कुछ लोग खूब ऊंची आवाज में ललकारते हुए इन शब्दों को बोलने लगे मानो कह रहे हों, "कुछ भी हो जाय, मैं मन की बात कह के छोड़ूंगा।" कुछ लोग बड़ी धीमी, फुसफुसाती आवाज में बोल रहे थे, और बड़े धीरे धीरे। जब पीछे रह जाते, तो, मानो डर कर, तेज तेज बोलने लगते, ताकि पादरी के साथ साथ चलने लगें। बुढ़े ने अपनी उंगलियां खूब ज़ोर से मिला रखी थीं, मानो डर रहे हों कि चुटकी में से कुछ गिर न जाय। बाकी लोगों की उंगलियां कभी खुलती और कभी बन्द होतीं। सभी को झेंप हो रही थी—सिवाय पादरी के। पादरी समझ रहा था कि वह बड़ा उपयोगी और महत्वपूर्ण काय सम्पन्न कर रहा है।

शपथ के बाद प्रधान जज ने जूरी को अपना मुखिया निर्धारित करने के लिए कहा। सभी सदस्य उठे और भीड़ सी बनाते हुए परामर्श-कक्ष में चले गये। वहां पहुंचते ही, लगभग सभी ने सिगरेट सुलगा लिये। किसी ने रोबीले आदमी को मुखिया बनाने की तजवीज़ की। सवसम्मति से उसे चुन लिया गया। इस पर जूरी के सदस्यों ने सिगरेट बुझाये, टुकड़े फेंके और अदालत में वापस आ गये। रोबीले आदमी ने प्रधान जज को सूचित किया कि उसे मुखिया चुना गया है, इसके बाद सभी अपनी ऊंची ऊंची पीठ वाली कुर्सियों पर जा बैठे।

सब काम जल्दी जल्दी, विधिवत् और बड़े सुचारू रूप से हो रहा था। प्रत्यक्षतः इसमें भाग लेने वाले खुश थे, उन्हें इस तरह का काम अच्छा लगता था जो विधिवत, व्यवस्थित और गंभीर ढंग से किया जाय। इससे उन्हें इस बात का दृढ़ विश्वास होने लगता था कि वे जनता के

प्रति कोई बडा गभीर और महत्वपूण कतव्य निभा रहे हैं। नेख्लूदोव भी ऐसा ही महसूस कर रहा था।

जब जूरी बैठ गये तो प्रधान जज न उन्हे एक भाषण दिया जिसमे उन्हे बताया कि उनके क्या कतव्य, अधिकार तथा जिम्मेदारिया है। बोलते समय वह बार बार करवट बदलता, कभी दायें हाथ की टेक लेता कभी बायें की, कभी कुर्सी की पीठ का सहारा ले कर बैठता, कभी कुर्सी के बाजुओ का। कभी सामने पडे कागजो को सीधा रखता, कभी पेंसिल उठा लेता, कभी कागज काटने का चाकू उठा लेता।

जो सवाल भी आपको कैदियो से पूछने हो, आप मेरी माफत पूछेंगे, प्रधान जज ने कहा। आप कागज पेंसिल का प्रयोग कर सकते हैं, और जो चीजें यहा सबूत के लिए रखी गई हैं, उनकी जाच कर सकते है। आप का फैसला न्याय पर आधारित होना चाहिए, झूठ पर नही। आपको अपनी जिम्मेदारी का अहसास करते हुए कोई भेद की बात बाहर नही करनी होगी, और बाहर के किसी आदमी से सम्पक स्थापित नही करना होगा। यदि आपकी ओर से भूल हुई तो आपको इसकी सजा भुगतनी पडेगी।

सभी बडे ध्यान से सुन रहे थे, सभी के चेहरो पर आदर का भाव था। व्यापारी, जिससे ब्राडी की बू आ रही थी, और जो अपनी हिचकी दबाने की भरसक कोशिश कर रहा था, एक एक वाक्य पर सिर हिला हिला कर अपनी सम्मति प्रकट कर रहा था।

६

अपना भाषण समाप्त करने पर प्रधान जज कैदियो की ओर मुखातिब हुआ।

"सीमन कार्तीनकिन!"

सीमन उछल कर उठ खडा हुआ। उसके गालो की मासपेशिया पहले से भी ज्यादा तेजी से थिरकने लगी।

"तुम्हारा नाम?"

"सीमन पेत्रोविच कार्तीनकिन," उसने फटी हुई आवाज मे तेज तेज जवाब दिया। जाहिर था कि वह यह जवाब देने के लिए पहले से खूब तैयारी कर के आया था।

"कौन वर्ण?'

"किसान हुजूर।"

'अपना गाँव जिला व इलाका बताओ।"

"गाँव बोर्की कुप्याव्स्की परिषद, जिला क्रापीवेन्स्की, तूला प्रान्त।"

"उम्र?'

"तैंतीस साल, जन्म सन अठारह सौ   "

"धर्म?'

"धर्म रूसी, ग्रॉर्थोडाक्स ईसाई।"

"शादी हुई है?"

"जी नहीं, हुजूर।"

"क्या धंधा करते हो?"

"होटल 'मारीतानिया' में नौकर था।"

"पहले कभी तुम पर मुकद्दमा चला है?"

"नहीं हुजूर, कभी नहीं, क्योंकि जिस तरह पहले हम रहते थे

"पहले तुम पर कभी मुकद्दमा नहीं चलाया गया?"

"नहीं हुजूर, खुदा रहम करे।"

"क्या नालिश की नकल तुम्हें मिल गई है?"

"जी, मिल गई है।"

"बैठ जाओ।"

"येवफीमिया इवानोव्ना बोच्कोवा,' प्रधान जज ने दूसरी कैदी को पुकारा।

परन्तु सीमन बोच्कोवा के सामने अब भी खड़ा था।

"बैठ जाओ, कार्तीनकिन।"

कार्तीनकिन फिर भी खड़ा रहा।

"कार्तीनकिन बैठ जाओ!"

परन्तु कार्तीनकिन फिर भी खड़ा रहा। इस पर पेशकार भागा हुआ उसके पास गया, और सिर एक तरफ को टेढ़ा किये आँखें फाड़ फाड़ कर उसकी तरफ देखते हुए बड़े दर्द भरे लहजे में फुसफुसाया—"बैठ जाओ, बैठ जाओ!" तब वह झट से बैठ गया उसी तरह जिस तरह वह उठा था, अपना गाउन अपने इर्द गिर्द लपेटा, और उसके गाल फिर चलने लगे।

"तुम्हारा नाम?" प्रधान जज ने थक कर गहरी साम लेते हुए पूछा, बिना कैदी की ओर देखे। उसकी नजर सामने पडे कागज पर थी। प्रधान जज को अपने काम मे इतना अभ्यास हो गया था कि जल्दी जल्दी काम भुगतान के लिए वह एक वक्त मे दो काम करता था।

बोच्कोवा ४३ बरस की थी, और कोलाम्ना नगर की रहनेवाली थी। वह भी "मावरीतानिया" होटल मे नौकरानी का काम करती थी।

"मुझ पर पहले कभी मुकद्मा नही चलाया गया, और मुझे नालिश की नकल मिल गई है।" उसने तुनक कर जवाब दिये। उसके लहजे से ऐसा जान पडता था मानो हर जवाब के साथ यह भी कहना चाहती हो, "हा, मैं येवफीमिया बोच्कोवा हू, मुझे नालिश की नकल मिल गई है, जो जानता है जाने, मुझे किसी की कोई परवाह नही, और देखना, मेरे साथ मुह मत लगाना।"

आखिरी सवाल का जवाब देते ही वह अपने आप बैठ गई। उसने इस बात का इन्तजार नही किया कि कोई कहेगा तब बैठूगी।

प्रधान जज तीसरी कैदी की ओर मुखातिब हुआ

"तुम्हारा नाम?" प्रधान जज की आवाज मे विशेष नम्रता आ गई, क्योकि उसके दिल मे औरता के लिए बेहद प्रेम था। "तुम्ह खडा होना पडेगा," उसने धीमी, मृदु आवाज मे कहा, जब उसने देखा कि मास्लोवा अब भी बैठी हुई है।

मास्लोवा झट उठ खडी हुई, और छाती फुलाये प्रधान जज की ओर देखने लगी। उसकी काली काली हसती आखो म अजीब तत्परता का भाव था।

"तुम्हारा नाम?"

"ल्युबोव," उसने जल्दी से कहा।

जिस समय कैदियो से सवाल पूछे जाने लगे थे, तो नेख्लूदोव ने अपनी कमानीदार ऐनक नाक पर चढा ली थी। "नही, यह नही हो सकता, नामुमकिन है!" उसकी आखें कैदी के चेहरे पर से हटाये न हटती थी। उसने कैदी का जवाब सुना और मन ही मन कहा—"ल्युबोव! यह कैसे हो सकता है?"

प्रधान जज अगला सवाल पूछने जा ही रहा था, परन्तु साथ मे बैठे ऐनक वाले जज ने टोक दिया, और गुस्से से फुसफुसा कर प्रधान जज को

पूछ वहा। इस पर प्रधान जज ने सिर हिलाया और फिर कैदी की ओर मुखातिब हुआ

"क्या बात है, यहां पर ल्युबाव नहीं, तुम्हारा नाम कुछ और ही लिखा है।"

कैदी चुप रही।

"तुम्हारा असली नाम क्या है?"

"बपतिस्मे के वक्त तुम्हें कौन सा नाम दिया गया?" उस जज ने पूछा जो गुस्से से लाल-पीला हो रहा था।

"पहले मुझे येकातेरीना के नाम से बुलाते थे।"

नेख्लूदोव ने फिर मन ही मन कहा—"नही, यह नहीं हो सकता," पर अब उसे यकीन हो गया था कि यह वही लडकी है—जो उस घर में आधी नौकरानी और आधी कुलीन-बाला की तरह रहती थी—वही है जिसे वह सचमुच कभी प्रेम करता था, और एक दिन मदान्ध हो कर जिसकी उसने अस्मत लूटी थी। और अस्मत लूटने के बाद ऐसा त्यागा था कि फिर कभी याद तक न किया था। याद इसलिए नही किया था कि याद कर के वह बहुत दुखी होता, स्वय अपनी नज़रो मे गिरता और मुजरिम बनता। नख्लूदोव को अपने आचार की दृढता का अभिमान था। इस घटना को याद कर के उसे कबूल करना पडता कि उसने इस औरत के साथ बडा घृणित और निन्दनीय व्यवहार किया है।

हा, यह वही औरत थी। अब उसे उसके चेहरे पर उसके व्यक्तित्व की झलक नजर आने लगी। हर चेहरे की अपनी विशेषता होती है, और इसी मे वह और सभी चेहरो से पृथक् होता है। उसका चेहरा भरा हुआ था, लेकिन उस पर एक प्रकार की रुग्ण पीलिमा छायी थी। इसके बावजूद वह विशेष मृदु व्यक्तित्व इसमे से झलक रहा था, उन होठो से, उसकी आखो के हल्के से ऐंचेपन से, और विशेष कर उसकी भोली मुस्कान से, उसके सारे शरीर और चेहरे पर छाये तत्परता के भाव से।

"तुम्हे यही बताना चाहिए था," प्रधान जज ने फिर विनम्र लहजे मे कहा, "तुम्हारा पितृ नाम?"

"मैं अवैध लडकी हू।"

"बपतिस्मे के वक्त पिता की जगह कौन था?"

"उसके नाम से मिखाइलोव्ना।"

नेख्लूदोव के लिए सांस लेना मुश्किल हो रहा था। वह मन ही मन सोच रहा था—"इसने कौन सा अपराध किया होगा?"

"तुम्हारा कुलनाम?" प्रधान जज पूछ रहा था।

"मा ने कुलनाम स मरा मी मास्लोवा रखा गया था।"

"वर्ग?"

"मश्चान्का।"*

"धर्म—ओर्थोडोक्स?"

"हा।"

"धधा? तुम क्या काम करती थी?"

मास्लोवा चुप रही।

"तुम वहा नौकरी करती थी?"

"मैं एक अड्डे मे थी।"

"कैसा अड्डा?" ऐनको वाले जज ने रूखी आवाज मे पूछा।

"आप तो जानते हैं," उसने कहा और मुस्करा दी। इसके बाद उसने जल्दी से कमरे मे चारो ओर नजर दौडायी और फिर प्रधान जज की ओर देखने लगी।

उसके चहरे के भाव मे कुछ ऐसी विलक्षणता थी, उसके इन शब्दो मे एक ऐसा भयानक तथा दयनीय भय छिपा था, उसकी मुस्कान मे, उसके यो तेजी से कमरे मे नजर घुमाने मे, कि प्रधान जज शर्मा गया, और क्षण भर के लिए अदालत मे चुप्पी छा गई। यह चुप्पी तब टूटी जब सामने बैठे लोगो मे एक आदमी हसने लगा। फिर किसी ने कहा—"श्श ।।" इस पर प्रधान जज ने नजर ऊपर उठायी और अपने प्रश्न जारी रखते हुए बोला—

"पहले कभी किसी जुर्म मे पकडी गई हो?"

"कभी नही," मास्लोवा ने धीमे से कहा और एक ठण्डी सास ली।

"क्या तुम्हें नालिश की नकल मिल गई है?"

"जी, मिल गई है।"

"बैठ जाओ।"

---

*मध्य वर्ग के शहरी लोग।

जिस भांति कोई कुलीन महिला बैठने से पहले, तनिक सा पीछे की ओर झुक कर, हाथों से गाउन का लटकता पल्लू उठा कर बैठता है, इसी तरह मास्लोवा ने भी किया। अपने घाघरे को सभाल कर बठ गई, और अपने गाउन की आस्तीनों के तहों म अपने छोटे छोटे सफेद हाथ छिपा लिये। वह अब भी प्रधान जज की ओर देखे जा रही थी।

गवाहो के नाम बताये गये, फिर उन्ह कमरे मे से भेज दिया गया। इसके बाद डाक्टर के बारे म निणय किया गया, जो मुकद्दमे म विशपज्ञ के नाते अपनी राय देगा, और उसे अदालत मे बुला भेजा गया।

इसके बाद सेक्रेटरी उठा और नालिश पढ कर सुनाने लगा। उसकी आवाज़ ऊची और साफ थी हालाकि उसका 'ल' और 'र' बोलने का ढग एक ही था। पर वह इतना तेज तेज़ पढ रहा था कि शब्द एक दूसरे मे मिलते जा रहे थे और ऐसा जान पडता था जैसे कोई शहद की मक्खी सारा वक्त एक ही आवाज़ मे भिनभिनाये जा रही है।

जज कभी कुर्सी के एक बाजू पर कोहनिया टेकते, कभी दूसरे बाज़ू पर कभी मेज़ पर झुकते, कभी फिर कुर्सी की पीठ का सहारा लेते, कभी आखें ब द करते, कभी खोलते, कभी एक दूसरे से फुसफुसा कर कुछ कहते। सशस्त्र पुलिस का एक सिपाही बार बार जम्हाइया दबाने की चेष्टा कर रहा था।

कैदी कार्तीनकिन के गाल अब भी उसी तरह चल रहे थे। बोच्कोवा सीधी तन कर बैठी थी, केवल कभी कभी सिर खुजलाने के लिए अपना हाथ उठाती और सिर पर बधे रूमाल के नीचे ले जाती।

मास्लोवा मूर्तिवत बैठी थी और नालिश पढने वाले की ओर देखे जा रही थी। केवल कभी कभी वह चौंक सी उठती, मानो कुछ जवाब देना चाहती हो, फिर शर्मा जाती और ठण्डी सास ले कर अपने हाथ एक जगह से उठा कर दूसरी जगह रख लेती और अपने आस पास नज़र घुमा कर फिर नालिश पढने वाले की ओर एकटक देखने लगती।

नेख्लूदोव अगली कतार मे एक सिरे से दूसरी कुर्सी पर बैठा था, और अपनी कमानीदार ऐनक हाथ मे पकडे एकटक मास्लोवा की ओर देखे जा रहा था। उस समय उसके अन्दर एक सघष चल रहा था जो जटिल भी था और दु खपूण भी।

नालिश मे लिखा था—

"१७ जनवरी, १८८ के दिन, होटल "माव्रीतानिया" मे फेरापान स्मेल्कोव नामी द्वितीय गिल्ड के व्यापारी की सहसा मृत्यु हो गई। यह ग्रादमी साइवेरिया मे कुरगान नामक नगर का रहने वाला था।

"शहर के चौथे वार्ड के स्थानीय पुलिस-डाक्टर ने तसदीक की कि मौत दिल की नाडी फट जाने के कारण हुई है—मृत व्यक्ति ने ग्रत्यधिक शराब पी रखी थी। उसके शरीर को दफ़ना दिया गया।

"कुछ दिन बाद मृत व्यक्ति स्मेल्कोव का एक मित्र तीमाखिन पीटर्सवर्ग से लौट कर ग्राया। यह ग्रादमी भी साइवेरिया का व्यापारी है ग्रौर स्मेल्कोव के ही शहर का रहने वाला है। जब उसे पता चला कि किन स्थितियो मे स्मेल्कोव की मृत्यु हुई तो उसे सन्देह हुग्रा ग्रौर उसने सूचित किया कि स्मेल्कोव का रुपया चुराने की गरज़ से उसे ज़हर दिया गया है।

"पहली तफ़तीश मे यह शक ठीक साबित हुग्रा। मालूम हुग्रा कि—

"१) मौत से पहले स्मेल्कोव ने ग्रपने बैंक मे से ३,८०० रूबल निकलवाये थे। लेकिन जब बाद मे उसकी चीज़ो की सूची तैयार की गई ता उसके पास से केवल ३१२ रूबल ग्रौर १६ कोपेक निकले।

"२) मौत से पहले सारा दिन ग्रौर सारी रात स्मेल्कोव न वेश्या ल्यूब्का (येकातेरीना मास्लोवा) के साथ चकले मे ग्रौर होटल "माव्रीतानिया" के ग्रपने कमरे म गुज़ारी। एक बार उसके कहने पर येकातेरीना मास्लोवा चकले से उसके कमरे मे पैसे लाने के लिए गई। वह उसके साथ नही था। स्मेल्कोव ने खुद उसे ग्रपने बैग की चाभी दी थी जिसमे उसके पैसे रखे थे। होटल के दो नौकरो येवफ़ीमिया बोच्कोवा ग्रौर सीमन कार्तीनकिन की मौजूदगी म मास्लोवा ने चाभी लगा कर बैग खोला ग्रौर फिर बन्द कर दिया। बोच्कोवा ग्रौर कार्तीनकिन ने इस बात की शहादत दी है कि जब बैग खुला था तो उसम उन्होने सौ सौ रूबल के नोटो की गड्डिया देखी थी।

"३) जब स्मेल्कोव चकले से लौट कर ग्रपने कमरे मे ग्राया तो वेश्या ल्यूब्का उसके साथ ग्राई। कार्तीनकिन के कहने पर उसने एक गिलास

शराव मे सफेद सा पाउडर डाला और स्मेल्कोव को पीने के लिए दिया। यह पाउडर भी स्वय कार्तीनकिन ने ही उसे दिया था।

"४) इसके दूसरे दिन ल्यूब्का (येकातेरीना मास्लोवा) ने एक हीरे की अगठी अपनी मालकिन (गवाह कितायेवा, चकले की मालकिन) को वेची। मास्लोवा का कहना है कि यह अगूठी स्मेल्कोव ने स्वय उसे भेंट की थी।

"५) स्मेल्कोव की मौत के दूसरे दिन नौकरानी येवफीमिया वोच्कोवा ने वैंक म अपने चालू खाते मे १,८०० रूवल जमा करवाये।

"स्मेल्कोव की शव-परीक्षा की गई, तथा उसके मेदे के द्रव्यो का रासायनिक विश्लेपण किया गया, जिससे पता चला कि मौत जहर दिये जाने के कारण हुई है।

"तीनो मुजरिम मास्लोवा, वोच्कोवा तथा कार्तीनकिन कहते हैं कि उन्होंने कोई जुम नहीं किया। मास्लोवा ने अपने बयान मे कहा है कि जिस वक्त स्मेल्कोव चकले में था, जहा वह 'काम करती है'-उसने इसी शब्द का प्रयोग किया है-तो उसे खुद स्मेल्कोव ने ही 'माव्रीतानिया' होटल से कुछ पैसे लाने के लिए भेजा था। जो चाभी व्यापारी ने उसे दी थी, उससे उसने वैंग खोला और उसम से स्मेल्कोव के आदेशानुसार ४० रूबल निकाले, इससे ज्यादा कुछ नही लिया। उसका कहना है कि वोच्कोवा और कार्तीनकिन इस बात की शहादत दे सकते हैं, क्योंकि उनकी मौजूदगी में उसने वैंग खोला और बद किया था।

"आगे चल कर बयान मे कहा है कि जब वह दूसरी बार होटल म आई तो उसने सीमन कार्तीनकिन के कहने पर स्मेल्कोव को शराव मे कोई पाउडर जरूर दिया था। उसका ख्याल था कि यह नीद लाने वाला पाउडर है और उसके पीने से वह सो जायेगा और उसे और तग नही करेगा। जहा तक अगूठी का सवाल है, उसका कहना है कि स्मेल्कोव ने उसे पीटा, पर जब वह रोने लगी और कहा कि वहा से चली जायेगी तो उसने खुद वह अगूठी उसे दी।

'मुजरिम येवफीमिया वोच्कोवा ने जिरह के वक्त कहा कि उसे गुमशुदा रुपये के बारे म कुछ भी मालूम नही कि वह स्मेल्कोव के कमरे म गयी तक नही थी, कि सब काम वहा ल्यूब्का ने ही किया है। अगर

चोरी हुई है तो रुपया ल्यूबा ने ही उस वक्त चुराया होगा जब वह व्यापारी से चाभी ले कर पैसे लेने आयी थी।"

इस जगह मास्लोवा चौंकी, उसने मुह खोला और बोच्कोवा की ओर देखने लगी।

सेक्रेटरी पढता गया—"जब बोच्कोवा को १,८०० रूबल की बैंक रसीद दिखायी गयी और पूछा गया कि यह रकम उसे कहा से मिली है तो उसने जवाब दिया कि यह उसकी और सीमन की पिछले बारह साल की कमाई की रकम है, और वह शीघ्र ही सीमन से शादी करने वाली है।

"पहली जिरह मे मुजरिम कार्तीनकिन ने कबूल किया कि मास्लोवा के उकसाने पर जो चकले से चाभी ले कर आयी थी, उसने और बोच्कोवा ने रकम चुरायी थी, और उसे दोनो ने मास्लोवा के साथ मिल कर, बराबर बराबर आपस मे बाट लिया था।"

यहा पर भी मास्लोवा चौंकी, बल्कि उठ खडी हुई, और शर्म से लाल हुए बोलने लगी। लेकिन पेशकार ने उसे चुप करा दिया।

सेक्रेटरी पढता गया—"अन्त मे कार्तीनकिन ने कबूल किया कि स्मेल्कोव को सुलाने के लिए उसी ने पाउडर दिया था। जब दूसरी बार जिरह की गई तो उसने इन दोनो बातो से इन्कार कर दिया, और कहा कि न ही पैसे चुराने के मामले मे और न ही पाउडर के मामले म उसका कोई हाथ था, कि जो कुछ भी किया है, अकेली मास्लोवा ने किया है। जब उससे पूछा गया कि बैंक मे जो रकम बोच्कोवा ने जमा कराई उसके बारे मे उसे क्या कहना है, तो उसने भी वही जवाब दिया जो बोच्कोवा ने दिया था कि यह वह रकम है जो होटल मे रहने वाले लोगो ने गाहे गाह पिछले बारह साल की नौकरी के दौरान उन्हे इनाम के रूप मे दी थी।"

इसके बाद जाच का विवरण, गवाहिया और विशेषज्ञो की राय पढ कर सुनायी गई। नालिश को समाप्त करते हुए सेक्रेटरी ने अन्त मे पढा—

"उपरोक्त तथ्यो के अनुसार, सीमन कार्तीनकिन, उम्र तेतीस साल, गाव बोर्की, किसान, मेश्चान्का येवफीमिया बोच्कोवा, उम्र ४३ साल, और मेश्चान्का येकातेरीना मास्लोवा, उम्र २७ साल—पर यह फर्दे जुर्म लगाया जाता है कि १७ जनवरी, १८८ के दिन तीनो ने मिल कर उपरोक्त व्यापारी स्मेल्कोव की चोरी की जिसमे नक्दी और हीरे की

अगूठी शामिल थे। कुल मिला कर यह चोरी २,५०० रूबल का हुआ। अपने जुर्म को छिपाने के लिए उपरोक्त व्यापारी स्मेल्कोव को ज़हर दिया गया ताकि वह मर जाय। और इसी ज़हर से उसकी मौत हुई।

"इस जुर्म पर दण्ड-विधान की धारा १४५३ (पैरा ४ और ५) लागू होती है। अतः ज़ाब्ता फौजदारी की धारा २०१ के अनुसार, किसान सीमन कार्तीनकिन, मेश्चानका येवफीमिया बोच्कोवा तथा मेश्चान्का येकातेरीना मास्लोवा को ज़िला कचहरी में जूरी युक्त अदालत के सामने पेश किया जाता है।"

सेक्रेटरी ने नालिश का चिट्ठा समाप्त किया, कागज़ों को समेटा और लम्बे बालों पर हाथ फेरते हुए अपनी जगह पर जा बैठा। कमरे में बैठे सभी लोगों ने चैन की सांस ली। सभी ने सोचा कि अब मुक़द्दमा शुरू होगा, सब बात साफ होगी और इन्साफ किया जायेगा। केवल नेख्लूदोव ही एक ऐसा आदमी था जिसके हृदय में पृथक् भावनाएं उठ रही थीं। उसे यह देख कर गहरा धक्का लगा था कि यह लड़की मास्लोवा, जो दस ही साल पहले कितनी भोली भाली और प्यारी हुआ करती थी आज न जाने कैसे घोर अपराध करने लगी।

११

नालिश पढ़े जाने के बाद प्रधान जज ने बाकी जजों से मशविरा किया और कार्तीनकिन की ओर मुखातिब हुआ। उसके चेहरे का भाव देख कर ऐसा जान पड़ता था मानो कह रहा हो—"अभी हम सच-झूठ का पता लगा लेंगे कि क्या हुआ और क्या नहीं हुआ। छोटी छोटी बात तक का पता चल जायेगा।" फिर बाईं ओर झुक कर बोला—

"किसान सीमन कार्तीनकिन।'

सीमन कार्तीनकिन उठ खड़ा हुआ, दोनों बाजू नीचे की ओर सीधे किये, और अपने समूचे शरीर से आगे की ओर झुक गया। उसके गाल अब भी चल रहे थे हालांकि मुंह में से एक शब्द भी नहीं निकल रहा था।

"तुम पर यह जुर्म लगाया गया है कि तुमने १७ जनवरी, सन १८८ के दिन येवफीमिया बोच्कोवा और येकातेरीना मास्लोवा के साथ मिल कर स्मेल्कोव नामी व्यापारी के बैग में से रुपये चुराये। इसके बाद

तुमने सखिये की पुडिया येकातेरीना मास्लोवा को दी और कहा कि वह उसे शराब मे मिला कर स्मेल्कोव को पिला दे। वह रजामन्द हो गई और इस तरह स्मेल्कोव की मौत हुई। बोलो, तुम अपना जुर्म कबूल करते हो या नही?" प्रधान जज ने दायी ओर झुकते हुए कहा।

"यह कैसे, नही जी, हमारा काम तो मेहमानो की सेवा करना है, हम तो "

"यह सब बाद मे कहना। जुर्म कबूल करते हो?"

"जी नही हुजूर, हम तो केवल "

"यह बाद मे कहना, हम सुन लेगे। जुर्म कबूल करते हो?" प्रधान जज ने धीमी, दृढ आवाज मे कहा।

"हम कभी ऐसा काम कर सकते है, हम तो "

पेशकार फिर भागा हुआ सीमन कार्तीनकिन के पास गया, और पहले जैसे ही दुखपूर्ण लहजे मे फुसफुसा कर उसे चुप रहने को कहा।

प्रधान जज ने अपना हाथ हिलाया जिसमे कागज पकडा हुआ था, फिर अपनी कोहनी दूसरे रख रखी, मानो कह रहा हो—"बस, एक काम भुगत गया," और इसके बाद येवफीमिया बोच्कोवा की ओर मुखातिब हुआ।

"येवफीमिया बोच्कोवा तुम पर यह जुर्म लगाया गया है कि १७ जनवरी, १८८ के दिन होटल 'माव्रीतानिया' मे तुमने सीमन कार्तीनकिन और येकातेरीना मास्लोवा से मिल कर व्यापारी स्मेल्कोव के बैग मे से कुछ रुपया और एक अगूठी चुराई, यह रकम तुमने आपस मे बाटी और व्यापारी स्मेल्कोव को जहर दी जिससे वह मर गया। अपना जुर्म कबूल करती हो?"

"मैंने कोई जुर्म नही किया," कैदी ने बडे दुस्साहस और दृढता से जवाब दिया। "मैं उस कमरे मे नजदीक तक नही गई। यही डायन उस कमरे मे गई और इसी ने सब कुछ किया।"

"यह सब बाद मे कहना," प्रधान जज ने फिर धीमी आवाज मे दृढता से कहा, "तो तुम कहती हो कि तुमने कोई जुर्म नही किया?"

"मैंने कोई पैसे नही लिये, न ही उसे कुछ पिलाया और न ही मैं उस कमरे मे गई। अगर मैं अन्दर गई होती तो इसे धक्के मार कर बाहर निकाल देती।"

"तो तुम अपने को दोषी नहीं मानती?"

"बिल्कुल नहीं।"

"अच्छी बात है।"

"येकातेरीना मास्लोवा," प्रधान जज तीसरी कैदी की ओर मुखातिब हुआ। "तुम पर यह जुर्म लगाया गया है कि जब तुम व्यापारी स्मेल्कोव के बैग की चाबी ले कर चकले से होटल मे आई तो तुमने उसके बैग मे से कुछ रुपया और एक अगूठी चुराई।" प्रधान जज ने ये शब्द इस तरह कहे मानो पाठ पहले से याद कर रखा हो। वह बायें हाथ बैठे जज की ओर झुक गया जो उसके कानो मे फुसफुसा रहा था कि शहादती चीजों की सूची मे जिस मतबान का जिक्र है, वह नहीं मिल रहा है। "उसके बैग मे से कुछ रुपया और एक अगूठी चुराई," प्रधान जज ने दोहरा कर कहा, "और उस रकम को आपस मे बाटा। फिर तुम स्मेल्कोव के साथ होटल 'माव्रीतानिया' मे वापिस आयी जहा तुमने उसे शराब म जहर मिला कर पिलाया जिससे उसकी मौत हो गई। अपना जुम कबूल करती हो?"

"मैंने कोई जुम नही किया," मास्लोवा तेज तेज बोलने लगी, "मैंने पहले भी कहा था और अब भी कहती हू—मैंने नही लिया, नही लिया, मैंने कुछ भी नही लिया। अगूठी उसने खुद मुझे दी थी।"

"क्या तुम अपना जुम कबूल नही करती हो कि तुमने २ हजार ५ सौ रूबल चुराये?" प्रधान जज ने पूछा।

"मैंने कह दिया है कि ४० रूबल को छोड कर मैंने कुछ भी नही लिया।"

"और यह जुम मानती हो कि तुमने व्यापारी स्मेल्कोव को शराब मे एक पाउडर मिला कर पिलाया?"

"हा, यह मैंने किया था। पर मैंने इन लोगो की बात पर विश्वास किया। इन्होंने कहा कि यह नीद लाने की दवाई है, इससे कोई नुक्सान नही हो सकता। मुझे इसका ख्याल तक नही आया, न ही मैं चाहती थी भगवान साक्षी है, मेरा उसे जहर देने का कोई मतलब न था।"

'तो तुम अपना यह जुम नही कबूलती हो कि तुमने व्यापारी स्मेल्कोव के रुपये और अगूठी चुराई, मगर यह मानती हो कि तुमने उसे पाउडर दिया।'

"हा, मैं यह मानती हू। पर मैंने समझा वह सोने की दवा थी। मैंने उसे इसलिए दिया कि वह सो जाय। मेरा कोई बुरा इरादा नही था, मुझे ख्याल भी नही आया कि इसका कोई बुरा नतीजा निकल सकता है।"

"अच्छी बात है," प्रधान जज बोला। प्रत्यक्षत इस जाच के परिणाम से वह सन्तुष्ट था। "अब सारी बात बताओ क्या क्या हुआ?" और वह कुर्सी की पीठ के साथ सट कर बैठ गया, और दोनो हाथ मेज पर रख लिये। "सारी बात खोल कर बताओ। जो सच सच बताओगी तो इसमे तुम्हारा ही फायदा है।"

मास्लोवा चुपचाप सीधी प्रधान जज की ओर देखे जा रही थी।

"बताओ यह बात कैसे हुई।"

"कैसे हुई?" मास्लोवा ने सहसा तेज तेज बोलना शुरू कर दिया। "मैं होटल मे गई, और मुझे उसके कमरे मे भेजा गया। जब मैं अन्दर गई तो वह बहुत शराब पिये हुए था।" "वह" शब्द कहते हुए उसकी बडी बडी आखें त्रस्त हो उठी। "मैं लौट जाना चाहती थी, मगर उसने मुझे जाने नही दिया।"

वह चुप हो गई मानो उसे घटनाक्रम भूल गया हो, या उसे कोई बात याद हो आई हो।

"अच्छा तो फिर क्या हुआ?"

"तो फिर क्या? मैं थोडी देर तक वहा रही, और फिर वापस घर लौट गई।"

यहा सरकारी वकील अपनी कोहनी का सहारा ले कर थोडा सा ऊपर को उठा। उसकी मुद्रा बडी अटपटी सी लग रही थी।

"क्या आप कोई सवाल पूछना चाहते हैं?" प्रधान जज ने पूछा। वकील के हा मे जवाब देने पर प्रधान जज ने उसे बोलने का इशारा किया।

"मैं यह पूछना चाहता हू कि क्या मुजरिम सीमन कार्तीनकिन को पहले से जानती थी?" उसने बिना मास्लोवा की ओर देखे हुए पूछा।

सवाल पूछने के बाद उसने अपने होठ भीचे और भौंहें सिकोड ली।

प्रधान जज ने सवाल दोहराया। मास्लोवा डरी हुई नजर से सरकारी वकील की ओर एकटक देखने लगी।

"सीमन को? हा," उसने कहा।

"मैं जानना चाहता हूँ कि यह वाकफियत कैसी थी? क्या वे दोनों एक दूसरे को अक्सर मिलते रहते थे?"

"कैसी थी? वह मुझे होटल में मेहमानों के लिए बुलाया करता था। उससे मेरी कोई खास वाकफियत नहीं है," मास्लोवा ने जवाब दिया। उसने घबराई हुई नज़र से पहले प्रधान जज की ओर देखा, फिर सरकारी वकील की ओर, और उसके बाद फिर प्रधान जज की ओर देखने लगी।

"मैं पूछना चाहता हूँ कि स्मेल्कोव होटल के मेहमानों के लिए केवल मास्लोवा को ही क्यों बुलाता था, और लड़कियों में से किसी को क्यों नहीं बुलाता था?" आँखों को सिकोड़े, धूर्तताभरी मुस्कान के साथ सरकारी वकील ने पूछा।

"मैं नहीं जानती। मुझे क्या मालूम?" मास्लोवा ने कहा और घबराई हुई आँखों से इधर-उधर देखा। क्षण भर के लिए उसकी नज़र नेख्लूदोव पर टिक गयी। "जिसे वह चाहता था बुला लेता था।"

"क्या यह मुमकिन है कि इसने मुझे पहचान लिया हो?" नेख्लूदोव ने सोचा, और उसका मुँह लाल हो गया। परन्तु मास्लोवा की नज़र उस पर से हट गई। उसने यह नहीं जाना कि यह औरों से भिन्न है और फिर घबरा कर सरकारी वकील की ओर देखने लगी।

"तो मुजरिम इस बात से इन्कार करती है कि उसका स्मेल्कोव के साथ कोई गहरा सम्बन्ध रहा है? अच्छी बात है, मुझे और कोई सवाल नहीं पूछना है।"

सरकारी वकील ने मेज पर से अपनी कोहनी हटायी और कुछ लिखने लगा। वास्तव में वह कुछ भी नहीं लिख रहा था, केवल अपना कलम टिप्पणियों के उन्हीं शब्दों पर फेर रहा था जो उसने पहले से लिख रखे थे। उसने बड़े सरकारी वकीलों और दूसरे वकीलों को ऐसा करते देखा था। कोई चतुर सा सवाल पूछते और अपनी टिप्पणियों में कुछ दर्ज कर लेते ताकि बाद में अपने विरोधी को परेशान कर सकें।

प्रधान जज ने उसी वक्त मुजरिम से सवाल नहीं किया। वह तिरछी आँखों से जज से यह पूछ रहा था कि वह इस बात से सहमत है या नहीं कि ये सवाल पूछे जायें (ये सवाल पहले से तैयार किये गये थे और कागज़ पर लिखे हुए थे)।

"फिर? फिर क्या हुआ?" उसने पूछा।

"मैं घर आ गई," मास्लोवा ने कहा। उसकी आखो मे कुछ साहस आ गया, और वह केवल प्रधान जज की ओर देखती रही। "मैंने पैसे मालकिन को दिये और सोने चली गई। मुझे नीद आने ही लगी थी जब वहीं की एक लडकी, बेर्ता ने मुझे जगा दिया। कहने लगी—'जाओ, वह व्यापारी फिर आया है और तुम्हे पूछ रहा है।' मैं नही जाना चाहती थी पर मालकिन ने मुझे जाने का हुक्म दिया। वह आदमी," उसने फिर बडी त्रस्त आवाज मे "वह आदमी" कहा, "वह आदमी हमारे घर की लडकियो को खिलाता पिलाता रहा। फिर वह और शराब मगवाना चाहता था, पर उसके सब पैसे चुक गये थे, और मालकिन उसका विश्वास नही करती थी। इसलिए उस आदमी ने मुझे अपने होटल मे भेजा जहा उसके पैसे पडे हुए थे। उसने मुझे बता दिया कि कितने पैसे निकाल कर लाने है। इसलिए मैं गई।"

प्रधान जज अपने बायें हाथ बठे जज के साथ धीमे धीमे बाते कर रहा था, पर यह दिखाने के लिए कि वह सब कुछ सुन रहा है, उसने मास्लोवा के अन्तिम शब्द दोहराते हुए कहा—

"तो तुम गई। फिर? फिर क्या हुआ?"

"मैं गई और जैसे उसने कहा था किया। मैं उसके कमरे मे गई। मगर मैं अकेली नही गयी, मैंने सीमन और इसे बुलाया," बोच्कोवा की ओर इशारा करते हुए उसने कहा।

"यह सरासर झूठ है। मैं बिलकुल उस कमरे मे नही गयी," बोच्कोवा बोली, मगर उसे रोक दिया गया।

"इन दोनो की मौजूदगी मे मैंने बैग मे से दस दस रूबल के चार नोट निकाले," बिना बोच्कोवा की ओर देखे मास्लोवा ने भौंह सिकोड कर फिर कहना शुरू किया।

"ठीक है, मगर क्या मुजरिम ने बैग मे से चालीस रूबल निकालते समय यह भी देखा कि उसमे कितनी रकम पडी थी?" सरकारी वकील ने फिर सवाल किया।

सरकारी वकील का सवाल सुनते ही मास्लोवा काप उठी। अनजाने मे ही उसे ऐसा लगने लगा था जैसे यह आदमी उसका बुरा चाहता है।

"मैंने गिने नही, मगर मैंने देखा कि उसमे कुछ सौ सौ रूबल के नोट पडे थे।"

"आह! तो मुजरिम ने उसमें सौ सौ रुपये के नोट पड़े देखे। बस, मैं इतना ही जानना चाहता था।"

"तो तुम पैसे ले कर वापस आ गयीं," प्रधान जज ने घड़ी की ओर देखते हुए कहा।

"हां।"

"फिर? फिर क्या हुआ?"

"फिर वह मुझे वापस होटल में ले गया," मास्लोवा ने कहा।

"तो तुमने उसे पाउडर किस तरह दिया?"

"किस तरह दिया? मैंने पाउडर शराब के गिलास में डाला और उसे दे दिया।"

"तुमने क्यों ऐसा किया?"

इस सवाल का उसने सहसा जवाब नहीं दिया, बल्कि एक गहरी आह भरी।

"वह मुझे छोड़ता नहीं था," क्षण भर चुप रहने के बाद वह कहने लगी, "पर मैं थक कर चूर हो गई थी। मैं बरामदे में गई और सीमन से बोली कि यह मुझे जाने ही नहीं देता, मैं बहुत थक गई हूं। सीमन कहने लगा, हम भी तंग आ गये हैं, हम सोच रहे हैं कि उसे सोने की दवाई पिला दें। वह पी कर यह सो जायेगा, और फिर तुम चली जाना। मैंने कहा, अच्छा। मैंने समझा इसे देने में कोई डर नहीं। सीमन ने मुझे एक पुड़िया दी और मैं उसे ले कर अन्दर चली गई। वह पार्टीशन के पीछे लेटा हुआ था। मेरे अन्दर पहुंचते ही उसने ब्रांडी मांगी। मैंने ब्रांडी की बोतल मेज पर से उठायी, दो गिलास भरे, एक उसके लिए, एक अपने लिए, फिर उसके गिलास में पाउडर डाला और गिलास उसके हाथ में दे दिया। मुझे मालूम होता कि यह क्या चीज़ है तो मैं देती ही क्यों?"

"अच्छा यह बताओ, यह अंगूठी तुम्हारे हाथ कैसे लगी?" प्रधान जज ने पूछा।

"यह उसने खुद मुझे दी थी।"

"कब?"

"जब मैं होटल में लौट कर उसके साथ आयी। मैं घर जाना चाहती थी, पर उसने मुझे सिर पर घूसा मारा जिससे मेरी कंघी टूट गई। मुझे गुस्सा आ गया और मैंने कहा कि मैं वहां नहीं ठहरूंगी, वहां से जरूर

चली जाऊगी। तब उसने अपनी उगली मे से अगूठी निकाल कर मुझे दे दी ताकि मैं नही जाऊ," मास्लोवा ने कहा।

सरकारी वकील फिर तनिक सा उठा, और बड़ा मासूम दिखने की कोशिश करते हुए कुछ सवाल और पूछने की इजाजत मागी। प्रधान जज ने इजाजत दे दी। इस पर अपना सिर आगे को झुकाते हुए, जिससे उसका कसीदा किया हुआ कॉलर कुछ कुछ ढक गया, वह बोलने लगा—

"मैं जानना चाहता हू कि मुजरिम कितनी देर तक व्यापारी स्मेल्कोव के कमरे मे रही।"

मास्लोवा जैसे फिर डर गई। घबराई हुई आखो से पहले सरकारी वकील की ओर और फिर प्रधान जज की ओर देखते हुए तेज तेज बोलते हुए कहने लगी—

"मुझे याद नही कितनी देर।"

"ठीक है। पर क्या मुजरिम को इतना याद है कि स्मेल्कोव के कमरे मे से निकलने के बाद वह कही और गयी थी या नही?"

मास्लोवा क्षण भर सोचती रही।

"हा, उसके साथ वाले कमरे मे गई थी। वह खाली था।"

"तुम वहा क्यो गई?" सरकारी वकील कायदा भूल कर सीधा उससे पूछने लगा।

"मैं थोडी देर आराम करने के लिए वहा चली गई थी, साथ ही मुझे गाडी का भी इन्तज़ार करना था।"

"क्या मुजरिम के साथ कमरे मे कार्तीनकिन भी था या नही?"

"वह अन्दर आया था।"

"वह क्यो आया था?"

"व्यापारी की थोडी सी शराब बच रही थी। वह हमने मिल कर पी डाली।"

"ओह, मिल कर पी डाली। खूब! क्या उस वक्त सीमन के साथ कोई बातचीत हुई? यदि हुई तो किस बारे मे?"

मास्लोवा की भवे चढ गइ, शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया, और जल्दी जल्दी बोलते हुए वह कहने लगी—

"किसके बारे मे? मैंने कोई बात नही की। बस, मुझे यही कुछ मालूम है। जो मन मे आये, करो। मैंने कोई जुर्म नही किया। बस, इससे ज्यादा मैं कुछ नही जानती।"

"मुझे और कुछ नहीं पूछना है," सरकारी वकील ने कहा, और बड़े अस्वाभाविक ढंग से अपने कन्धे सीधे कर के अपने भाषण की टिप्पणियों में यह दर्ज कर लिया कि मुजरिम ने खुद तस्लीम किया है कि वह कार्तीनकिन के साथ उसी कमरे में गई थी।

अदालत में थोड़ी देर के लिए खामोशी छा गई।

"क्या तुम्हें कुछ और कहना है?"

"मैंने सब कुछ बता दिया है," मास्लोवा ने ठण्डी सांस भरते हुए कहा और बैठ गई।

इसके बाद प्रधान जज ने कुछ नोट किया। उसके बायें हाथ बैठे हुए जज ने प्रधान जज को कुछ फुसफुसा कर कहा, जिस पर प्रधान जज ने १० मिनट के लिए अदालत स्थगित कर दी, और झट से उठ कर कमरे में से निकल गया। जिस जज की बात सुन कर प्रधान जज ने अदालत स्थगित की थी, वह वही ऊंचा लम्बा दाढ़ी वाला जज था जिसकी आंखों से दयालुता टपकती थी। जज के पेट में कुछ गड़बड़ हो गई थी, और उसे ठीक करने के लिए वह पेट की थोड़ी मालिश करना चाहता था और कुछ बूंदें दवाई की पीना चाहता था।

जजों के उठने पर वकील, जूरी के सदस्य और गवाह भी उठ खड़े हुए। उस समय वे सब यह सोच कर खुश और सन्तुष्ट थे कि एक महत्वपूर्ण काम का कम से कम कुछ हिस्सा तो उन्होंने खत्म कर दिया है। और यह सोचते हुए वे अलग अलग दिशा में जाने लगे।

नेख्लूदोव जूरी के कमरे में चला गया और खिड़की के पास जा कर बैठ गया।

१२

हां, यह कात्यूशा ही है!

नेख्लूदोव और कात्यूशा के आपसी सम्बन्धों की कहानी इस प्रकार है।

पहली बार वे तब मिले जब नेख्लूदोव विश्वविद्यालय के तीसरे वर्ष में था। गर्मी की छुट्टियां थीं और वह अपनी फूफियों के पास रहने के लिए गया था। इन्हीं छुट्टियों में वह भूमि-स्वामित्व के सवाल पर एक निबन्ध लिखने की तैयारी कर रहा था। इससे पहले वह गर्मी का मौसम

हमेशा अपनी मा और बहिन के साथ मास्को के नज़दीक गुज़ारा करता था जहा उसकी मा की बहुत बडी जमीदारी थी। पर इस साल उसकी बहिन की शादी हो गयी थी, और मा विदेश चली गई थी जहा वह गर्मी का मौसम किसी स्वास्थ्यप्रद स्थान म खनिज जल के झरना के पास व्यतीत करना चाहती थी। चूकि नख्लूदोव को अपना निबध लिखना था, इसलिए उसने ये दिन अपनी फूफियो के घर बिताने का निश्चय किया। यहा वातावरण में शान्ति थी, क्योकि जमीदारी अलग-थलग जगह पर थी और कोई ऐसी चीज़ भी न थी जो उसका ध्यान दूसरी तरफ खीच सके। दोनो फूफिया उसे बेहद प्यार करती थी। नेख्लूदोव उनका भतीजा ही न था, उनकी ज़मीन-जायदाद का वारिस भी था। नेख्लूदोव को भी अपनी फूफिया बडी अच्छी लगती थी। उसे उनका सीधा-सादा, पुराने ढग का जीवन बडा पसन्द था।

उन गर्मी के दिनो मे इस जागीर पर रहते हुए नेख्लूदोव को जीवन में पहली बार उस अपूव आनन्द का अनुभव हुआ जो एक युवक को उस समय होता है जब वह अपने आप, बिना किसी दूसरे की मदद के जीवन के अदभुत सौन्दय और महत्व को देखने लगता है। जब उसे नज़र आने लगता है कि जीवन म उस काम का अपार महत्व है जो मनुष्य को करने के लिए सौंपा गया है। उसे इस काम द्वारा पूणता तक पहुचने के लिए प्रगति की असीम सभावनाए नज़र आने लगती है—न केवल अपने लिए बल्कि सकल मानव जाति के लिए—और वह अपने काम मे जुट जाता है। उसके हृदय मे न केवल आशा की तरगें उठती हैं, बल्कि यह दृढ विश्वास भी होता है कि वह अवश्य उस पूणता को प्राप्त करेगा जिसके वह स्वप्न देखता है। उसी साल नेख्लूदोव ने यूनीवर्सिटी म स्पेंसर की पुस्तक "सोशल स्टेटिक्स" पढी थी। उसे पढ कर वह स्पेंसर के विचारो से बेहद प्रभावित हुआ था, विशेषकर उन विचारो से जिनका सम्बध भूमि-स्वामित्व से था। विशेषकर इसलिए कि वह खुद एक बडी जमीदारनी का बेटा था। नेख्लूदोव के पिता अमीर नही थे, लेकिन उसकी मा को दहेज मे पचीस हज़ार एकड ज़मीन मिली थी। उस समय उसने पहली बार यह समझ लिया था कि भूमि के निजी स्वामित्व की प्रथा कितनी क्रूर और अन्यायपूण है। कुछ लोगो को अपने अन्त करण की खातिर कुर्बानी देते हुए आध्यात्मिक आनन्द का अनुभव होता है। नख्लूदोव भी इन्ही में से था। उसने निश्चय

पवित्र वृहस्पतिवार अर्थात ईसा के ऊर्ध्वगमन दिवस के पर्व पर फूफियो की एक पडोसिन महिला अपनी दो बेटिया और एक स्कूल जाते बालक को साथ लेकर उनके घर आयी। उनके साथ उनका मेहमान – एक युवा कलाकार भी था। इस कलाकार का जन्म एक मामूली किसान के घर मे हुआ था।

घर के सामने एक खुला मैदान था जिसकी पहले से घास काट दी गई थी। चाय के बाद सभी लोग वहा खेलने के लिए गये। "गोरेल्की" नाम का खेल शुरू हुआ। कात्यूशा को भी खेलने के लिए बुलाया गया। इस खेल मे बार बार भागना और अपना साथी बदलना पडता था। एक बार नेख्लूदोव ने कात्यूशा को छू लिया जिससे वह उसकी साथिन बन गई। अब तक नेख्लूदोव को यह लडकी यो तो बहुत भली लगती थी लेकिन उसके मन मे यह विचार कभी नही आया था कि उन दोनो के बीच किन्ही सम्बन्धो की भी सभावना हो सकती है।

"लो, अब इन दोनो को पकडना आसान नही। अगर खुद गिर पडे तभी पकडाई देंगे," युवा कलाकार ने कहा जो तबीयत का बडा हसोड था। अब पकडने की उसी की बारी थी। उसकी टागें छोटी छोटी और टेढी थी, लेकिन आखिर वह किसान था, उसकी टागें तो मज़बूत होनी ही थी। भागता भी वह खूब तेज़ था।

"वाह! क्या तुम भी हमे नही पकड सकते?" कात्यूशा बोली।

"एक, दो, तीन," और कलाकार ने ताली बजायी।

कात्यूशा खिलखिला कर हस पडी, उसने नेख्लूदोव के साथ अपनी जगह बदली और उसके चौडे हाथ का अपने छोटे से खुरदरे हाथ से दबा कर बायी ओर को भाग गयी। माडी लगे उसके घाघरे से सरसर की आवाज़ आ रही थी।

नेख्लूदोव दायी ओर को तेज़ तेज़ भागने लगा। वह नही चाहता था कि कलाकार उसे पकड पाये। लेकिन जब उसने सिर घुमा कर देखा तो पाया कि कलाकार कात्यूशा के पीछे भागा जा रहा है। कात्यूशा काफी आगे थी और उसकी मज़बूत छोटी छोटी टागें खूब तेज़ भागे जा रही थी। उनके सामने लिलक की एक झाडी थी। कात्यूशा ने अपना सिर झटक कर नख्लूदोव को इशारा किया कि उसके पीछे चलो। खेल के मुताबिक अगर वे दोनो फिर एक दूसरे का हाथ पकड ले तो उन्हे आ कर कोई नही पकड सकता। नेख्लूदोव इशारा समझ गया और झाडी के

पीछे की ओर भागा। उसे मालूम नहीं था कि आगे एक छोटा सा गड्ढा है जिसमें कटीली झाड़ियां उग रही हैं। ठोकर खा कर वह जा गिरा और उसके हाथ छिल गये। झाड़ियां शाम से वहां पड़ी ओस से भीगी थीं। पर वह फौरन ही उठ खड़ा हुआ, और हंसता हुआ अपनी जगह पर फिर आया।

कात्यूशा मानो उड़ती चली आ रही थी, काली काली जामुनों जैसी आंखें और खुशी से दमकता चेहरा। उन्होंने एक दूसरे का हाथ पकड़ लिया।

"अरे, तुम्हारा तो हाथ छिल गया है।" उसने हांफते हुए कहा, और दूसरे हाथ से अपने बाल ठीक करते हुए, मुंह उठा कर नेख्लूदोव की ओर देखा। उसके होंठों पर एक मीठी सी मुस्कान खेल रही थी।

"मुझे क्या मालूम कि वहां पर गढ़ा है," उसने भी मुस्कराते हुए कहा और कात्यूशा का हाथ पकड़े रहा।

वह उसके ज्यादा नजदीक आ गई। फिर किसी अज्ञात प्रेरणावश, नेख्लूदोव का मुंह कात्यूशा के मुंह की ओर झुक गया। कात्यूशा पीछे नहीं हटी। नेख्लूदोव ने उसका हाथ जोर से दबाया और उसके होंठ चूम लिए। नेख्लूदोव को खुद भी मालूम नहीं था कि उसने ऐसा क्यों किया।

"अरे, यह क्या!" उसने कहा और जल्दी से हाथ छुड़ा कर वहां से भाग गई।

लिलक की झाड़ियों के पास पहुंच कर, जिनके फूल कुछ कुछ झर चुके थे, उसने सफेद लिलक की दो टहनियां तोड़ीं और उनसे अपने तमतमाते चेहरे पर थपकी देते हुए गरदन घुमा कर नेख्लूदोव की ओर देखा और फिर अपनी बांहों को आगे की ओर जोर जोर से झुलाते हुए वह बाकी खिलाड़ियों की ओर भाग गयी।

इसके बाद इन दोनों के बीच एक अजीब सा रिश्ता पनपने लगा, एक ऐसा रिश्ता जो अक्सर शुद्ध चाल चलन के लड़का और लड़कियां के बीच पैदा हो जाता है जो एक दूसरे को चाहने लगते हैं।

जब कात्यूशा कमरे में आती, या नेख्लूदोव को दूर से ही उसके सफेद एप्रन की झलक मिलती तो उसकी आंखों में हर चीज रोशन हो उठती, उसी तरह जैसे सूरज के निकलने पर प्रत्येक वस्तु अधिक रोचक, उल्लासित और महत्वपूर्ण हो उठती है। जीवन अधिक आनन्दपूर्ण बन

जाता। कात्यूशा की भी यही मनःस्थिति थी। और ऐसा केवल कात्यूशा की मौजूदगी मे ही नही होता था। नेख्लूदोव के लिए इतना सोच भर लेना ही काफी था कि कात्यूशा जीती है (और कात्यूशा के लिए कि नेख्लूदोव जीता है) वही असर होता। यदि कभी घर से कोई बुरा खत आ जाता, या निबन्ध लिखने मे कोई मुश्किल दरपेश होती, या अकारण ही कभी उदास हो उठता, जैसा कि जवानी मे अक्सर होता है, तो कात्यूशा का नाम लेते ही, और इस विचार से ही कि वह उससे मिलेगा, उसकी सारी उदासी फौरन दूर हो जाती।

कात्यूशा को घर मे बहुत काम रहता लेकिन किसी न किसी तरह वह पढने के लिए थोडा वक्त निकाल लेती थी। नेख्लूदोव ने उसे दोस्तोयेव्स्की और तुर्गनेव की किताबें पढने को दी, जिन्हे उसने खुद हाल ही मे पढा था। तुर्गनेव की रचना "शान्त नीड" उसे सबसे अधिक पसन्द आयी। जब कभी दोनो एक दूसरे को अचानक कही मिल जाते—गलियारे मे या बरामदे मे या बाहर अहाते मे—तो डरते, झिझकते एक दो बात कर लेते। उसी घर मे फफियो की एक बूढी दासी मत्र्योना पाव्लोव्ना रहती थी। कात्यूशा उसी के कमरे मे सोती थी, और नेख्लूदोव उनके साथ बैठ कर कभी कभी चाय पिया करता था। यहा पर बितायी घडिया सबसे ज्यादा खुशगवार होती। जब अकेले मिलते तो उन्हे बडी झिझक होती। तब आखें कुछ कहती और मुह मे से कुछ निकलता। आखो का भाव बेहद महत्वपूर्ण होता और बाते मामूली होती। उनके होठ फडफडाते, मन मे एक तरह का भय छा जाता और वे फौरन एक दूसरे से अलग हो जाते।

जितनी देर नेख्लूदोव वहा पर रहा, दोनो के बीच इस तरह के सम्बन्ध बने रहे। फूफिया ने भी देखा और उनका माथा ठनका, और उन्होने नेख्लूदोव की मा, प्रिंसेस येलेना इवानोव्ना को विदेश मे एक खत लिख दिया। बडी फूफी को डर था कि इन दोनो के बीच अवैध सम्बन्ध पैदा हो जायगा। लेकिन यह डर निराधार था। नेख्लूदोव को कात्यूशा से प्रेम था, हालाकि उसे खुद भी इस की खबर न थी। पर उसका प्रेम वैसा ही था जैसा कि एक निश्छल युवक का हो सकता है। इस कारण उनके कुमार्ग पर पड जाने की कोई आशका नही हो सकती थी। शारीरिक भोग की इच्छा तो दूर, उसका ख्याल तक आते ही उसका मन घृणा

से काप उठता। छोटी फूफी के स्वभाव में कवित्व अधिक था। उनकी आशकाए इतनी निर्मूल भी न थी। वह जानती थी कि दमीत्री दृढस्वभाव युवक है, जो बात मन मे ठान ले उसे पूरी कर के छोडता है। इसलिए उसे डर था कि यदि वह कात्यूशा से प्रेम करने लगा तो ऐन मुमकिन है उससे शादी करने का फैसला कर ले। उस वक्त वह यह नही सोचेगा कि लडकी का खानदान कैसा है और उसकी स्थिति क्या है।

यदि उस समय नेख्लूदोव को मालूम होता कि उसे कात्यूशा से प्रेम है, और विशेषकर यदि उसे कहा जाता कि लडकी छोटी जात की है, उसके साथ तुम्ह किसी हालत मे भी शादी नही करनी चाहिए, तो वह जरूर उससे शादी करने का निश्चय कर लेता। उस निश्छल युवक की दृष्टि मे शादी की यथेष्टता प्रेम से थी, प्रेम के अतिरिक्त सब विचार असगत थे। पर उसकी फूफियो ने अपने डर उस पर जाहिर नही होने दिये। और जब वह वहा से चला गया तब भी उसे मालूम न था कि वह कात्यूशा से प्रेम करता है।

उन दिना उसका रोम रोम जीवन के असीम आनद का अनुभव कर रहा था। उसे विश्वास था कि कात्यूशा के प्रति जो भावनाए उसके मन मे उठती हैं, वे इसी आनन्द का एक रूप हैं, और यह प्यारी, हसमुख बालिका भी उसके साथ इस आनन्द का उपभोग कर रही है। पर जब वह जाने लगा और कात्यूशा उसकी फफियो के साथ सायबान के नीचे खडी, अपने काले काले, आसू भरे नेत्रो से उसे देखे जा रही थी, तो उसे ऐसा जान पडा जैसे उसके जीवन मे से कोई सुन्दर, अमूल्य चीज निकली जा रही है जो फिर उसे कभी प्राप्त नही होगी। और इससे उसका मन उदास हो उठा।

'अलविदा कात्यूशा," बग्घी मे बैठते हुए उसने कात्यूशा की ओर देख कर कहा जिसका चेहरा छोटी फूफी की टोपी के पीछे से नजर आ रहा था, तुम्हारा बहुत बहुत शुक्रिया, हर बात के लिए।"

"अलविदा, दमीत्री इवानोविच," कात्यूशा ने कोमल, मधुर आवाज म जवाब दिया। उसकी आखें आसुओ से भर आयी थी और वह उन्हें रोकने की भरसक कोशिश कर रही थी। फिर वह ड्योढी के अन्दर भाग गई ताकि वहा खुल कर रो सके।

इसके बाद तीन साल तक नेख्लूदोव कात्यशा से नही मिला। जब वह दोबारा उसे मिला तब वह फौज का अफसर बन चुका था और अपनी रेजिमेंट मे भरती होने जा रहा था। रास्ते मे वह कुछ दिन के लिए अपनी फूफियो के पास ठहर गया। पर अब नेख्लूदोव तीन साल पहले वाला नेख्लूदोव नही रहा था, जो यहा गर्मी की छुट्टिया बिताने आया था। अब वह बहुत कुछ बदल गया था।

तब वह एक सच्चा, निःस्वार्थ युवक था जो किसी भी अच्छे काम के लिए अपनी जान तक कुर्बान करने के लिए तत्पर रहता। परन्तु अब वह एक भ्रष्टाचारी युवक था, बाहर से शिष्ट किन्तु अन्दर से घोर अहवादी, जिसकी एकमात्र रुचि विलासिता म थी। पहले उसे यह ससार एक पहेली नज़र आता था जिसे वह अपने हृदय के समूचे उत्साह और उमग के साथ सुलझाने की चेष्टा करता था। किन्तु अब हर बात स्पष्ट और सरल नज़र आती थी, जिस प्रकार का उसका जीवन था उसके अनुसार वह हर चीज की व्याख्या कर लेता था। पहले उसे प्रकृति के ससग मे रहना आवश्यक और महत्वपूण जान पडता था। न केवल प्रकृति के ही, बल्कि उन दार्शनिको और कवियो के भी ससग मे रहना, जो उससे पहले अपना जीवन व्यतीत कर गये थ और अपनी भावनाए और विचार मानवजाति को सौंप गये थे। अब उसे केवल क्लब, नाचघर और साथियो से मेल मिलाप ही आवश्यक और महत्वपूण लगता था। तब स्त्रिया बडी रहस्यपूण और सुदर नज़र आती थी—उनकी रहस्यमयता ही उन्ह सौदय प्रदान करती थी। अब सभी स्त्रियो का एक ही मतलब था, सिवाय अपने परिवार की स्त्रियो के या उन स्त्रियो के जो उसके मित्रो की पत्निया थी। स्त्रिया सभोग की वस्तु थी, और इस सभोग का रस वह कई बार ले चुका था। पहले उसे धन की कोई ज़रूरत नही थी। जेब-खच के लिए जितने पैसे उसे मा से मिलते थ, उसके एक तिहाई से भी उसका काम चल जाता था। और जो ज़मीन-जायदाद उसे पिता की ओर से विरासत मे मिली थी, उसे वह लेने से इन्कार कर सकता था और किसानो म बाट सकता था। अब मा से हर महीने मिलने वाले पद्रह सौ रूबला से भी पूरी न पडती थी। और इस पर वह अपनी मा से झगडा भी कर चुका

था। तब उसकी दृष्टि में "अहं" का अर्थ था आत्मा, अब उसकी दृष्टि में "अहं" का अर्थ था एक स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट शरीर।

इस घोर परिवर्तन का एक मात्र कारण यह था कि उसने अपने ऊपर विश्वास करना छोड़ दिया था और औरों पर विश्वास करने लगा था। यदि अपने आप पर विश्वास रखो तो जीना दूभर हो जाता है। तब हर प्रश्न का उत्तर स्वयं ढूंढना पड़ता है, और यह उत्तर लगभग सदा ही शारीरिक "अहं" के विरुद्ध और आत्मिक "अहं" के हक में होता है। शारीरिक "अहं" में तो केवल भोग की लालसा रहती है। परन्तु यदि औरों पर विश्वास करो तो किसी भी सवाल का जवाब स्वयं ढूंढने की जरूरत नहीं रहती। सभी निश्चय गढ़े-गढ़ाये मिल जाते हैं, और ये निश्चय सदैव शारीरिक "अहं" के हक में और आत्मिक "अहं" के विरुद्ध होते हैं। इतना ही नहीं। यदि मनुष्य को अपने आप में विश्वास हो तो लोग उसकी खिल्ली उड़ाते हैं, और यदि औरों पर विश्वास हो तो लोग शाबाश कहते हैं।

जब नेख्लूदोव जीवन के गंभीर विषयों पर विचार करता या उनकी चर्चा करता—जैसे भगवान्, सत्य, धन-दौलत, दारिद्र्य इत्यादि—तो उसके मित्र-सम्बन्धी इस चर्चा को असंगत समझते, बल्कि किसी हद तक हास्यास्पद भी। उसकी मां और फूफियां बड़े प्यार से उस पर व्यंग्य करतीं और उसे notre cher philosophe* कहतीं। परन्तु जब वह नावल पढ़ता, अश्लील कहानियां कहता, मजाकिया फ्रांसीसी नाटक देखने जाता और उनके चुटकुले हंस हंस कर सुनाता तो सभी उसकी सराहना करते और उसका साहस बढ़ाते। जब वह अपनी जरूरतों को कम करना चाहता और सादा जीवन बिताना चाहता—जैसे पुराना ही ओवरकोट लटकाए रहता, या शराब नहीं पीता—तो सब हैरान होते और समझते कि वह दिखावा कर रहा है। लेकिन जब वह शिकार पर पैसे लुटाता या अपने पढ़ने वाले कमरे की सजावट पर पैसे बरबाद करता तो लोग उसकी पसन्द की वाह वाह करते और उसके शौक को प्रोत्साहित करने के लिए बढ़िया, कीमती उपहार देते। जब वह ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता और कहता कि विवाह के समय तक वह अपने शरीर को पवित्र रखेगा,

---

*हमारा प्यारा दार्शनिक। (फ्रेंच)

रिश्तेदारों को उसके स्वास्थ्य की चिन्ता होने लगती। यहा तक कि जब उसकी मा का पता चला कि उसके बेटे ने अपना "पुरुषत्व" प्रमाणित कर दिया है, और एक फ्रांसीसी लडकी को, जो उसी के एक मित्र की प्रेमसी थी, अपने वश मे कर लिया है, तो दुखी होने के बजाय वह खुश हुई। लेकिन कात्यूशा वाली बात याद कर के और यह कि उसका बेटा उस लडकी से शादी करने की सोच सकता था, प्रिंसेस मा का तो दिल ही बैठ जाता था।

इसी तरह जब नेख्लूदोव बालिग हुआ और उसने विरसे म मिली पिता की छोटी सी ज़मीन किसानो को दे डाली—क्योकि वह भूमि की निजी मिल्कियत को अन्यायपूर्ण समझता था—तो उसकी मा और सभी घर वालो को बडी निराशा हुई। रिश्तेदारो को तो मज़ाक करने का बहाना मिल गया। लोग कहते कि इस तरह किसान अमीर थोडे ही हो गये हैं, उल्टे और भी गरीब हुए हैं, क्योकि एक तो उन्होंने तीन शराबखाने खोल लिये हैं, दूसरे खुद काम करना छोड दिया है। पर जब नेख्लूदोव गार्ड्स सेना मे भरती हुआ और अपने अमीर साथियो के साथ जुए और ऐशोइशरत मे रुपया लुटाने लगा, यहा तक कि मा को अपनी पूजी म से रुपया निकलवाने की नौबत आ गई तो भी मा को कोई दुख नही हुआ। इसे वह स्वाभाविक ही समझती थी, बल्कि किसी हद तक अच्छा भी, कि आदमी को जो गुल खिलाने हो छोटी उम्र मे ही खिला ले और अच्छे खानदानी लोगो की सोहबत मे।

शुरू शुरू मे तो नेख्लूदोव के मन मे सघर्ष उठा। उसने देखा कि अपने आप पर विश्वास रखते हुए जो कोई बात उसे अच्छी लगती थी, वही उसके सगी-साथियो को बुरी लगती, और जिसे वह बुरा समझता उसे वे लोग अच्छा समझते थे। किंतु यह सघर्ष नेख्लूदोव के लिए बहुत कठिन था और अत यही हुआ कि उसने हार मान ली, अर्थात् अपने आप पर विश्वास करना छोड दिया और दूसरो पर विश्वास करने लगा। पहले तो उसे इस तरह आत्मविश्वास को देना खला, पर यह स्थिति ज्यादा देर तक नही रही। उसी समय उसने सिगरेट और शराब पीने की आदत डाल ली, इस तरह शीघ्र ही यह अप्रिय भावना बिल्कुल ही दब गई, और यहा तक कि उसे लगा मानो उस पर से कोई बोझ हट गया है।

नेख्लूदोव धुन का पक्का युवक था। नये ढग का जीवन अपनाने को

देर थी कि बेलगाम हो कर उसमे कूद पड़ा। अब जो कुछ भी वह करता उसमें उसे मित्र-सम्बन्धियों की अनुमति प्राप्त थी। हां, अन्तरात्मा की आवाज कुछ और ही कहती थी, पर उसका उसने गला घोट दिया था। इस स्थिति का आरभ उस समय हुआ जब वह पीटसबर्ग में जा कर रहने लगा, परन्तु पराकाष्ठा तो वह उस समय पहुची जब वह फौज में । हुआ।

सामान्यतया फौज मे जा कर लोगों का नैतिक पतन होने लगता है। वहा का जीवन ऐसा है कि उन्हें कोई काम नहीं करना पड़ता, कम से कम कोई ऐसा काम नहीं जिसे सूझ-बूझ वाला और उपयोगी कहा जा सके। साधारण मानवीय कर्तव्यों तक से उन्हें छुट्टी मिल जाती है, और उनके स्थान पर उन्हें केवल औपचारिक कर्तव्य निभाने पड़ते हैं, जैसे अपनी रेजिमेंट, और वर्दी और झण्डे का गौरव बनाये रखना। एक तरफ अपने से छोटे अफसरों पर उन्हें निरंकुश अधिकार प्राप्त होता है, दूसरी तरफ अपने से बड़े अफसरों का उन्हें दासों की तरह हुक्म मानना पड़ता है।

सेना की नौकरी में जहा बडी वर्दी और झण्डे के गौरव का ढोल पीटा जाता है और हिंसा और हत्या को वैध माना जाता है, वहां पर एक तो मनुष्य का यों ही पतन होने लगता है। पर इसके साथ साथ एक दूसरी तरह का भी पतन होने लगता है जिसका स्रोत पैसा और जार-परिवार के निकट का सपर्क है। गार्ड्स के लिए केवल अमीर और कुलीन घरानों से ही अफसर चुने जाते है। जब इस तरह दोनों तरफ से पतन होने लगता है मनुष्य को घोर स्वार्थ के अलावा कुछ नजर नही आता। और नेख्लूदोव उसी वक्त से स्वार्थान्धता के कीच में फस गया जब वह फौज में दाखिल हुआ और अपने साथियों का सा जीवन व्यतीत करने लगा।

उसका कोई और काम नही था, सिवाय इसके कि बढ़िया वर्दी कसता, जिसका बनाने वाला कोई और होता और ब्रुश से साफ करने वाला कोई दूसरा। फिर हथियारों से लैस हो जाता। ये हथियार भी दूसरों के हाथ के बने होते, और दूसरे ही इन्हें साफ कर के नेख्लूदोव को पकड़ाते। परेड या कवायद पर जाने के लिए वह बढ़िया घोड़े पर सवार होता, और इस घोड़े का पाल कर बड़ा करने वाले, सवारी के लिए तैयार करने वाले, और अब उसकी देख रेख करने वाले भी और लोग थे। वह बड़े ठाठ से तलवार घुमाता, और तोप चलाता जिस तरह उसके अन्य साथी करते,

ौर अन्य लोगो को इसकी शिक्षा देता। इसके अलावा उसका कोई और ाम नही था। और इस काम के लिए बडे बडे अफसर, बूढे और जवान, ज़ार और उसके निकट के लोग न केवल अपनी अनुमति देते बल्कि सकी सराहना करते और इसका धन्यवाद करते। इसके अतिरिक्त वहा स चीज को अच्छा और महत्वपूर्ण समझा जाता था? खाने-पीने को, शेष कर पीने को, अफसरो के क्लबो और बढिया होटलो मे पैसे लुटाने ो, जो पैसे किसी अदृश्य स्रोत से चले आते थे। फिर नाटक, नाच, स्त्रियां। इसके उपरान्त फिर घुड़सवारी, तलवार घुमाना और घुड़-ौडें। जब यह समाप्त होता तो पैसे लुटाने का दौर शुरू हो जाता—शराब, जुआ, औरते।

जो आदमी सेना मे नही है, यदि वह इस प्रकार का जीवन व्यतीत करे तो उसे अन्दर ही अन्दर शर्म महसूस होने लगेगी। परन्तु इसके विपरीत फौजी को इस प्रकार के जीवन पर दम्भ होता है, विशेषकर जब जग का जमाना हो, और नेख्लुदोव ने तो फौज मे उस समय प्रवेश किया था जब अभी अभी तुर्को के खिलाफ जग का ऐलान हुआ था। "लडाई मे हम अपनी जान कुरबान करने के लिए तैयार रहते हैं। इसलिए हमारे लिए हसी-खेल और ऐश न केवल क्षम्य है बल्कि आवश्यक भी। और इसी लिए हम ऐसा जीवन व्यतीत करते हैं।"

इस तरह के अस्पष्ट विचार उन दिनो नेख्लूदोव के मन मे घूमते थे। वह मन ही मन खुश था कि उस नैतिक नियन्त्रण से छुटकारा मिला जो उसने अपने ऊपर लाद रखा था। और उसके जीवन की स्थिति बिल्कुल ऐसे आदमी की थी जिसे स्वार्थ ने अन्धा कर रखा हो।

और इसी स्थिति मे वह, तीन साल के बाद, अपनी फूफियो से मिलने के लिए आया था।

१४

जिस रास्ते नेख्लूदोव अपनी रेजिमट मे शामिल होने के लिए जा रहा था, उसी के नजदीक ही उसकी फूफियो की जमीदारी पड़ती थी। एक तो इस कारण वह उनसे मिलने के लिए चला गया। दूसरे इसलिए कि उन्होने बड़े प्यार से उसे आने को कहा था। पर वहा जाने का सबसे

बडा कारण यह था कि वह कात्यूशा को देखना चाहता था। शायद (
से ही उसके अन्तमन मे कात्यूशा के खिलाफ नीच इरादे बन चुके (
जिनकी प्रेरणा अब उसे अपनी असयत पाशविक वृत्तिया से मिल ((
पर इसकी उसके चेतन मन को खबर न थी। वह दोबारा वहा (
इसलिए जाना चाहता था कि उसने पहले वहा बडे अच्छे दिन (
थे, और अपनी बूढी फूफिया से मिलना चाहता था, जो था तो
सी जीव पर दिल की बडी अच्छी थी, और प्यार से भरी। उसे पता (
न चलता था कैसे, लेकिन वे सदा उसके इद गिद प्रेम और
का वातावरण बना देती थी। वह कात्यूशा से भी मिलना चाहता था
जिसकी बडी मधुर स्मृति वह मन मे सजोये हुए था।

वह वहा मार्च महीने के अन्त में, ईस्टर शुक्रवार के दिन (
बर्फ पिघलनी शुरू हो गई थी। उस रोज मूसलाधार बारिश हो रही थी
और वह बुरी तरह से भीग गया था, और ठिठुर रहा था, लेकिन (
भी खूब चुस्त और खुश था जैसा कि उन दिनो वह हर वक्त
करता था। "क्या कात्यूशा अब भी उनके साथ रहती होगी?" वह (
ही मन सोच रहा था, जब वह बग्घी मे बैठा, जाने पहचाने, पुराने (
के सहन मे दाखिल हुआ। सहन के चारो तरफ ईंटो की दीवार थी और
उसमे छतो पर से गिर गिर कर बर्फ इकट्ठी हो रही थी।

उसका ख्याल था कि बग्घी की घटियो की आवाज सुनते ही वह
भाग कर बाहर आ जायगी। परन्तु वह नही आयी। दो स्त्रिया, नगे पाव
घाघरे ऊपर कर के बाधे हुए, और हाथो मे बाल्टिया उठाए, बगल (
दरवाजे में से बाहर निकली। जाहिर था कि फर्श साफ कर रही थीं।
कात्यूशा सामने के दरवाजे पर भी नही मिली। केवल नौकर तीखोन
बाहर निकल कर सायबान मे आया। उसने एप्रन पहन रखा था, और
जाहिर था कि वह भी सफाई मे लगा हुआ है। छोटी बैठक मे उस (
उसकी छोटी फूफी सोफिया इवानोव्ना मिली। उसने रेशमी पोशाक प(
रखी थी, और सिर पर टोपी पहन रखी थी।

"कितना अच्छा किया तुमने जो तुम आ गये!" अपने भतीजे (
चूमते हुए सोफिया इवानोव्ना ने कहा। 'मारीया की तबीयत ठीक नही
कुछ थक गई है। हम कम्यूनियन मे गई थी।'

"ईस्टर की मुबारक हो फूफी,' सोफिया इवानोव्ना का हाथ चूम(

नेख्लूदोव ने कहा। "उह! मैंने तो आपके कपडे गीले कर दिये! ह कीजिये।"

"तुम चला अपने कमरे मे–अरे तुम तो सिर से पाव तक भीग रहे। और तुम्हारी तो अब मूछें भी आ गई हैं! कात्यूशा! कात्यूशा! ई गरम गरम कॉफी पिलाओ, जल्दी करो।"

"अभी लाती हू," एक मधुर सुपरिचित आवाज़ ने गलियारे मे से ाव दिया।

नेख्लूदोव का दिल बल्लियो उछलने लगा, "यही पर है!" उसे जान पडा जैसे सूरज बादलो के पीछे से निकल आया हो। नेख्लदोव ुश खुश अपने पहले कमरे की ओर बढ गया ताकि कपडे बदल डाले। के पीछे पीछे तीखोन हो लिया।

नेख्लूदोव का मन चाहता था कि तीखोन से कात्यूशा के बारे मे पूछे, का क्या हाल है, क्या करती है, शादी करेगी या नही। पर तीखोन भाव-भगिमा म इतना आदर-भाव और साथ ही इतनी दढता थी– ा तक कि हाथ धुलाने का भी तीखोन हठ करने लगा कि वही हाथो पानी डालेगा–कि नेख्लूदोव फैसला ही नही कर पाया कि पूछू या पूछू। केवल तीखोन के ही नाती-पोतो के बारे मे पूछता रहा, और ई के बूढे घोडे के बारे मे और पोलकान कुत्ते के बारे मे। पोल्कान को ड कर सभी जीते-जागते थे। पोल्कान पिछली गरमियो मे बावला हो या था।

नेख्लूदोव ने गीले कपडे उतारे और दूसरे कपडे पहन ही रहा था तेज़ तेज़ कदमो की आवाज़ आई और किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। ख्लूदोव इन कदमो को पहचानता था और इस विशेप खटखटाहट को । केवल वही इस तरह चलती और दरवाज़ा खटखटाती थी।

नेख्लूदोव ने अपना गीला बरान कोट कधो पर डाल लिया और रवाज़ा खोला।

"आ जाओ।"

कात्यूशा ही थी। बिल्कुल पहले सी, केवल पहले से अधिक प्यारी। हले की ही तरह उसने अपनी मुस्कराती, भोली, थोडी ऐंची काली ांखें ऊपर उठा कर उसे देखा। अब भी उसने सफेद एप्रन पहन रखा था। उसने हाथो म खुशबूदार साबुन की नयी टिकिया, जिस पर से

अभी अभी कागज उतारा गया था और दो तौलिये उठाये हुए थी। फूफियां ने भेजे थे। एक तौलिया मुंह-हाथ पोछने के लिए था, दूसरा लम्बा रूसी तौलिया था, जिस पर कसीदाकारी की हुई थी। ताज़ा मल पर नाम का ठप्पा, तौलिये, हर चीज़, कात्यूशा समेत, स्वच्छ, तार निष्कलंक और प्रिय थी। नेख्लूदोव को देख कर कात्यूशा बरबस ह से मुस्करा उठी, और उसके प्यारे प्यारे सुगठित होंठ उसी तरह सि उठे जिस तरह पहले सिकुड़ा करते थे।

"तुम कैसे हो, दमीत्री इवानोविच," कात्यूशा बड़ी मुश्किल कह पाई। उसका चेहरा लाल हो गया।

"कहो, अच्छी हो!" नेख्लूदोव ने कहा। वह भी शर्मा रहा था "मज़े में हो?"

"भगवान की दया है। यह रहा गुलाबी साबुन जो तुम्हें इतना अ लगता था, और यह रहे तौलिये। तुम्हारी फफी ने भेजे हैं।" उसने हँ और साबुन की टिकिया मेज़ पर रख दी और तौलिये एक कुर्सी हत्थे पर लटका दिये।

"यहां पर सब कुछ मौजूद है," मेहमान की आत्मनिर्भरता पक्ष लेते हुए तीखोन बोला, और नेख्लूदोव के सामान की ओर इशा किया जहां साबुन-तेल रखने वाला बक्स खुला पड़ा था और उसमें तरह की शृंगार की चीजें, ब्रुश, इत्र तथा बहुत सी बोतलें रखी थीं जिन ढकने चांदी के बने थे।

"मेरी ओर से फूफी को धन्यवाद कहना। यहां आ कर मुझे बड़ ख़ुशी हुई है," नेख्लूदोव ने कहा। पहले की तरह अब भी उसका हृद प्यार और मृदुता से भर उठा।

इन शब्दों को सुन कर कात्यूशा केवल मुस्करा दी और बाहर चली गई।

नेख्लूदोव से फूफियां का बेहद प्रेम था। अब की वे और भी प्यार से मिलीं। दमीत्री लड़ाई में जा रहा था, क्या मालूम वहां वह ज़ख्मी हो जाय, या मारा जाय। यह सोच कर वृद्ध महिलाओं का हृदय द्रवित हो उठा था।

नेख्लूदोव आया तो इस इरादे से था कि यहां पर केवल एक दि और एक रात रहेगा, लेकिन जब उसने कात्यूशा को देखा तो ईस्टर का पर्व वहीं मनाने के लिए राज़ी हो गया। उसने अपने दोस्त शेनबोक के

साथ यह फैसला कर रखा था कि उसे ग्रोदेस्सा मे मिलेगा। अब उसे तार दे दिया कि सीधे यही आ जाओ।

कात्यूशा को देखते ही नेख्लूदोव के मन मे पहली भावनाए जाग उठी। अब भी उसका सफेद एप्रन की झलक पडते ही उसका दिल उद्वेलित हो उठता। उसकी आवाज सुन कर, उसके पावो की आहट पा कर, उसे हसते सुन कर, उसका दिल खिल उठता। जब कात्यूशा मुस्कराती और नेख्लूदोव उसकी काली काली, भीगे जगली बेरो की सी आखो की ओर देखता तो उसका दिल कोमलतम भावनाओ से भर उठता। उससे सामना होते ही कात्यूशा का चेहरा लाल पड जाता, और उसे लजाते देख नेख्लूदोव के दिल मे स्नेह उमड पडता था। नेख्लूदोव को महसूस होने लगा जैसे वह कात्यूशा का प्रेम करने लगा है। परन्तु यह प्रेम की भावना पहले की सी न थी। तब वह प्रेम एक पहेली सा था। तब वह स्वय भी स्वीकार न कर पाता कि उसे प्रेम है, तब उसे विश्वास था कि मनुष्य जीवन मे एक ही बार प्रेम कर सकता है। परन्तु अब वह जानता था कि उसे प्रेम है, वह खुश था, उसे धूमिल सा ज्ञान था कि यह प्रेम किस प्रकार का है और इसका क्या अन्त हो सकता है, हालांकि वह अपने आपसे भी उसे छिपाने की कोशिश कर रहा था।

सभी मनुष्यो की तरह नेख्लूदोव मे भी दो जीव बसते थे, एक आध्यात्मिक जीव, जो ऐसे सुख की कामना करता था जिसमे सभी का सुख हो, दूसरा कामुक जीव, जो केवल अपनी ही तृप्ति चाहता था और उसे प्राप्त करने के लिए बाकी सारी दुनिया का सुख होम करने के लिए तैयार था। जीवन के इस काल म नेख्लूदाव का ग्रहकार पीटसबग मे और सेना म रहने के कारण स्वार्थाधता की सीमा तक जा पहुचा था, और कामुक जीव ने आध्यात्मिक जीव को बिल्कुल कुचल कर वहा अपना आधिपत्य जमा लिया था। परन्तु अब, तीन साल के बाद, कात्यूशा से मिलने पर, उसके हृदय मे फिर वही भावनाए जाग उठी जो पहले उठी थी। आध्यात्मिक जीव ने फिर एक बार सिर उठाया। पूरे दो दिन, ईस्टर के दिन तक उसके मन मे निरन्तर सघर्ष चलता रहा, हालांकि वह स्वय इसका स्पष्ट अनुभव नही कर रहा था।

उसके अतर्तम से यह आवाज उठती थी कि यहा से चले जाना चाहिए, फूफियो के घर मे टिके रहने का कोई मतलब नही, कि नतीजा

अच्छा नहीं होगा, परन्तु रहने मे इतना मजा था, इतना लुत्फ था कि उसने सच्चे दिल से इस बारे मे नहीं सोचा, और वहीं पर टिका रहा।

शनिवार शाम को एक पादरी डीकन के साथ स्लेज म बैठ कर उपासना करवाने आये। गिरजे से घर तक तीन मील का फासला था। उन्हें यहा तक पहुचने म बडी कठिनाई हुई, कम से कम उनका यही कहना था क्योंकि सडक पर जगह जगह पानी खडा था और कहीं कहीं पर स्लेज को नगी जमीन पर खींचना पडा था।

नेख्लूदोव भी अपनी फूफियो और घर के नौकर चाकरो के साथ सम्मिलित उपासना मे शामिल हुआ, और सारा वक्त कात्यूशा को घूर देखता रहा जो दरवाजे के पास खडी थी और पादरी के लिए धूपदानिया ला जा रही थी। उपासना खत्म होने पर नेख्लूदोव ने पादरी और फूफियो को ईसा मसीह के पुनर्जन्म पर बधाई देते हुए चूमा और फिर वह सोने जा ही रहा था कि बाहर गलियारे मे मारीया इवानोव्ना की बढिया नौकरानी मात्र्योना पाव्लोव्ना को कात्यूशा के साथ ईस्टर के केका और रग किये अडो को पवित्र करवाने के लिए चर्च जाने की तयारिया करते सुना। "मैं भी जाऊगा," नेख्लूदोव ने मन ही मन कहा।

घर से ले कर गिरजे तक की सडक बहुत ही खराब थी। उस पर न स्लेज म और न ही बग्घी म जाया जा सकता था। नेख्लूदोव ने फौरन घोडा तैयार करने का हुक्म दे दिया और कहा कि बूढे "भाई के घोडे" पर जीन कस दी जाय। नेख्लूदोव इस घर को अपना ही घर समझता था, और उसी तरह व्यवहार करता था। बिस्तर पर सोने की बजाय उसने अपना बढिया वर्दी-कोट पहना चुस्त पतलून कसी और कन्धो पर बरान कोट डाले, घोडे पर सवार हो गया। घोडा बूढा था, लेकिन खूब पला हुआ और बोझल गति से चलता था। सारा रास्ता वह हिनहिनाता गया। बाहर गहन अधेरा था, जिसमे गढो और बर्फ को लाघता हुआ नेख्लूदोव गिरजे की ओर जाने लगा।

१५

नेख्लूदोव के मन पर ईस्टर उपासना का वह दृश्य अत्यन्त सुन्दर और सजीव छाप छोड गया जो उसे आजीवन याद रही।

घने अधेरे म से होता हुआ, जिसे केवल किसी किसी जगह सफेद

ग्रफ के पैवन्द भग करते थे, वह जगह जगह खडे पानी पर छप छप करते हुए गिरजे के ग्रागन मे दाखिल हुग्रा। गिरजे के चारो ग्रोर लैम्पो की क़तार थी। रोशनी को देख कर घोडे ने कान खडे हो गये।

जब नेख्लूदोव गिरजे पहुचा तो उपासना शुरू हो चुकी थी। ग्रागन मे खडे किसानो ने मारीया इवानोव्ना के भतीजे को पहचान लिया, ग्रौर उसके घोडे की लगाम पकड कर सूखी जगह पर ले गये, जहा नेख्लूदोव घोडे पर से उतर सके। फिर घोडे को ठीक जगह पर ले जा कर बाध दिया, ग्रौर नेख्लूदोव को गिरजे मे ले गये। गिरजा खचाखच लोगो से भरा हुग्रा था।

गिरजे मे दायी तरफ किसान खडे थ, बूढे ग्रादमी, घर के कते-बुने कोट पहने ग्रौर पावो मे छाल के बूट कसे ग्रौर साफ-सुथरी सफेद पट्टिया बाधे। जवानो ने नये नये ऊनी कोट पहन रखे थे ग्रौर कमर मे शोख रग की पेटिया ग्रौर चमडे के लम्बे बूट चढाये थे। बायी ग्रोर छोटी उम्र की स्त्रिया थी, सिरो पर लाल रग के रेशमी रूमाल बाधे, काले रग की नक्ली मखमल की जाकटें जिनके नीचे शोख लाल रग की कमीज़ें ग्रौर भडकीले हरे, नीले ग्रौर लाल रग के घाघरे पहने हुए थी। पावो मे उन्होंने चमडे के जूते पहन रखे थे जिनके नीचे लोहे की पतरिया लगी थी। उनके पीछे बूढी स्त्रिया खडी थी जिनकी पोशाक ग्रधिक सादा थी। सिर पर सफेद रूमाल, भूरे रग के कोट, पुरानी चलन के घाघरे, ग्रौर पावो मे चमडे या छाल के जूते। उनके बीच सजे धजे, सिर पर तेल लगाये बच्चे खडे थे। पुरुष क्रॉस का चिन्ह बनाते वक्त ग्रपना सिर झुका लेते ग्रौर बाद मे सीधा कर लेते ग्रौर झटक कर ग्रपने बाल पीछे को कर देते। स्त्रिया, विशेषकर बूढी स्त्रिया ग्रपनी धुधली ग्राखो से टिकटिकी बाधे एक देव प्रतिमा की ग्रोर देखे जा रही थी ग्रौर क्रॉस का चिन्ह बना रही थी। देव प्रतिमा के ग्रास-पास मोमबत्तिया जल रही थी। वे ग्रपनी जुडी उगलियो से ग्रपने सिर के रूमाल को कस कर छूती, फिर पेट को ग्रौर फिर एक एक कर के दोनो कधो को। ग्रौर मुह मे से कुछ फुसफुसाती हुई झुक जाती या घुटनो के बल बैठ जाती। बच्चे बडो की नकल कर रहे थे, जब उन्हे ध्यान होता कि लोग उनकी ग्रोर देख रहे है तो बडे गभीर बन कर प्रार्थना करते। देव प्रतिमाग्रो के सुनहरी फ्रेम चमक रहे थे। उनके चारो तरफ बडी बडी मोमबत्तिया जल

रही थी जिन पर बेलबूटेदार, सुनहरी खोल बने थे। उनके गि
शमादानो मे छोटी बत्तिया जल रही थी। सहगान के मंच पर से न
तरह के रोचक स्वर सुनाई दे रहे थे। गान मण्डली के सदस्य शौकि
गाने वाले थे। इनमे गहरी आवाजें भी थी और नन्हे बालको की ऊ
आवाजें भी।

नेख्लूदोव सीधा आगे बढ गया। गिरजे के बीचोबीच भद्र-जन
एक जमीदार जो अपनी पत्नी और बेटे के साथ आया था (बे
जहाजियो का सूट पहन रखा था), पुलिस अफसर, तार-बाबू, ए
व्यापारी जिसने लम्बे बूट चढा रखे थे, और गाव का मुखिया जिस
छाती पर तमगा चमक रहा था। वेदी के दायी ओर जमीदार की प
के ऐन पीछे मात्र्योना पाव्लोव्ना हल्के बैंगनी रग की पोशाक पहन
कन्धो पर सफेद झालरदार शाल ओढे खडी थी। उसके साथ ही कात्यु
थी। छाती पर झालरो वाली सफेद पोशाक, नीले रग का कमरबन्द औ
वाले काले बालो पर लाल रग का रिब्बन था।

गिरजे मे उत्सव का वातावरण था, हर चीज उज्ज्वल, पवित्र और
सुन्दर लग रही थी। पादरी जरी का जामा पहने था जिस पर सुनहरे
क्रास बने थे। डीकन, क्लर्क और गायको ने सफेद और सुनहरी रग के
वस्त्र पहन रखे थे। शौकिया गान-मण्डली के सदस्य, पूरी सज धज के
साथ, सिर पर खूब तेल चुपड कर आये थे। स्तुतिगान की धुनें बडी
हल्की फुल्की और रोचक थी, ऐसा जान पडता जैसे नाच की धुनें ब
रही हो। पादरी हाथ मे एक मोमबत्ती पकडे जिस पर फूल बने थे बराबर
लोगो को आशीष दिये जा रहा था। गिरजे मे बार बार "प्रभु ईसा जाग
उठे। प्रभु ईसा जाग उठे।" की आवाज गूज उठती। हर चीज सु
सुन्दर थी, पर सबसे अधिक सुन्दर थी कात्यूशा, जो सफेद सफेद पोशाक
पहन, नीला कमरबन्द और अपने काले बालो मे लाल रिब्बन बांधे खडी
थी और जिसकी आखें हृदयोल्लास से चमक रही थी।

वह नेख्लूदोव की ओर देख तो नही रही थी पर नेख्लूदोव जानता
था कि उसे उसकी उपस्थिति का पूरा पूरा भास है। वेदी की ओर जाते
हुए उसने यह भांप लिया था। वह उसके पास से गुजरा। उसे कात्यू
को कुछ नही कहना था, मगर उसने झट से एक बात गढ ली और उस
पास जा कर कान मे बोला

"फूफी ने यहा है कि वह दूसरी उपासना के बाद अपना व्रत तोड़गी।"

सदा की तरह उसे देखते ही कात्यूशा का प्यारा चेहरा लाल हो गया। उसकी उल्लसित काली काली आंखें, जिनमें हंसी फूट रही थी, बड़े भोलेपन से नेख्लूदोव के चेहरे की ओर देखने लगी।

"मुझे मालूम है," उसने मुस्करा कर कहा।

ऐन इसी वक्त गिरजे का क्लर्क पास से गुजरा। वह तांबे का पात्र लिए भीड़ मे रास्ता बना रहा था। उसने कात्यूशा को नही देखा जिससे उसका वस्त्र कही कात्यूशा से अटक गया। प्रत्यक्षत यह इसलिए हुआ कि वह नेख्लूदोव से थोड़ा हट कर निकल जाना चाहता था। पर नेख्लूदोव को बड़ी हैरानी हुई। क्या यह क्लर्क नही जानता कि यहा की हर चीज कात्यूशा के लिए है। यहा की ही क्या, ससार भर की हर चीज कात्यूशा के लिए है। और चीजो की ओर ध्यान न जाय तो समझा जा सकता है, परन्तु कात्यूशा की उपेक्षा कैसे की जा सकती है? वह तो सकल विश्व का केन्द्र है। जो देव प्रतिमाओ के सुनहरी चौखटे चमक रहे है तो उसी के लिए, जो शमादानो म मोमबत्तिया जल रही हैं तो उसी की खातिर, उसी की खुशी के लिए गिरजे मे स्तुतिगान के बोल गज रहे हैं—"देखो सब जन! ईसा का प्रस्थान!" ससार मे जो कुछ भी श्रेष्ठ है, सब उसी के लिए है। ऐसा जान पडता था जैसे कात्यूशा को भी मालूम हो कि सब उसी के लिए हैं। जब नेख्लदोव ने उसके सुडौल शरीर की ओर देखा, उसकी सफेद पोशाक और प्रफुल्लित चेहरे को देखा तो उसने समझ लिया कि जिस सगीत से उसकी अपनी आत्मा झकृत है, वही सगीत कात्यूशा की आत्मा मे भी गज रहा है।

पहली और दूसरी उपासना के बीच अन्तराल था। इस बीच नेख्लदोव गिरजे मे से बाहर निकल गया। गिरजे म खडे लोग पीछे हट हट कर उसके लिए रास्ता बनाने लगे और झुक झुक कर उसका अभिवादन करने लगे। कुछ लोग तो उसे जानते थे। जो नही जानते थे वे एक दूसरे से पूछने लगे कि यह आदमी कौन है। सीढ़िया पर पहुच कर वह खड़ा हो गया। बाहर खडे हुए भिखमगे भागते हुए उसके पास आ गये। नेख्लूदोव ने अपना बटुआ निकाला और जितनी भी रेजगारी उसमे थी उन्हें दे दी, और फिर सीढ़िया उतर गया।

पौ फट रही थी, परन्तु सूर्य अभी नहीं निकला था। लोग गि-
के कब्रिस्तान में, कब्रों के पास बैठे हुए थे। कात्यूशा अब भी अन्दर थी
और नेख्लूदोव उसका इन्तज़ार करने लगा।

लोग अब भी गिरजे में से बाहर निकल रहे थे और निकल कर
कब्रिस्तान में बिखरते जा रहे थे। पत्थर की सीढ़ियों पर उनके बूटों
नीचे लगे कील खट खट कर रहे थे।

एक बहुत बूढ़े आदमी ने जिसका सिर हिल रहा था, नेख्लूदोव को
रोक लिया ताकि प्रथानुसार ईस्टर-चुम्बन कर सके। वह नेख्लूदोव की
फूफियों का रसोइया था। उसकी बूढ़ी पत्नी ने जिसके मुंह पर झुर्रियों का
जाल बिछा था, अपने रूमाल में से एक अण्डा निकाला जिस पर रंग
रंग पुता हुआ था और नेख्लूदोव को भेंट किया। एक युवा किसान
मुस्कराता हुआ नया कोट और हरे रंग की पेटी कसे, नेख्लूदोव के सामने
आ खड़ा हुआ।

"ईसा फिर जाग उठे!" उसने कहा और आगे बढ़ कर अपने
मज़बूत, ताज़ादम होंठों से नेख्लूदोव को सीधा मुंह पर चूम लिया। उसकी
आंखें हंस रही थीं और सारे शरीर में से एक खास तरह की मधुर गंध
आ रही थी, जो केवल किसान के ही शरीर से आ सकती है। चूमते
वक्त उसकी घुंघराली दाढ़ी नेख्लूदोव के गालों को गुदगुदाती रही।

किसान अभी नेख्लूदोव को चूम ही रहा था और उसे गहरे भूरे रंग
का एक अण्डा भेंट कर रहा था जब नेख्लूदोव को मात्र्योना पाव्लोव्ना
की बैंगनी पोशाक और कात्यूशा का प्यारा सा सिर जिस पर लाल रिबन
बंधा था, नज़र आये।

कात्यूशा के सामने बहुत से लोग चले थे। उनके सिरों के ऊपर से
देखते हुए उसे भी नेख्लूदोव नज़र आ गया और नेख्लूदोव ने देखा कि उस
पर नज़र पड़ते ही कात्यूशा का चेहरा खिल उठा है।

वह मात्र्योना पाव्लोव्ना के साथ गिरजे की सीढ़ियों पर चली आ
रही थी और भिखमंगों को भीख बांट रही थी। एक भिखारी उसके पास
आया। उसके मुंह पर, नाक की जगह, लाल पपड़ी जमी थी। कात्यूशा
ने उसे भीख दी, फिर आगे बढ़ कर, बिना किसी प्रकार की घिन महसूस
किये, तीन बार उसे चूम लिया। कात्यूशा की आंखें अब भी वैसी ही
चमक रही थीं। इस बीच उसने नेख्लूदोव की ओर देखा। दोनों की नज़

। कात्यूशा की आंखें मानो पूछ रही हों—"मैं ठीक, अच्छा रही हूं न?"

"ठीक प्रिय, ठीक। तुम जो कुछ कर रही हो ठीक है, शुभ है, हर सुन्दर है। मेरा रोम रोम तुमसे प्रेम करता है।"

वे सीढ़ियां उतर आयी और नेख्लूदोव उनके पास चला गया। वह शा के पास ईस्टर चुम्बन के लिए नहीं गया, वह केवल उसके नजदीक : चाहता था।

मात्र्योना पाव्लोव्ना ने सिर झुका कर मुस्कराते हुए कहा—

"ईसा जाग उठे!" उसने य शब्द इस लहजे मे कहे जिसका मतलब "आज हम सब बराबर हैं।' उसने अपना रुमाल निकाला जिसे : गोल कर के गेंद की सी शक्ल का बना रखा था और अपने हाठ , और फिर चुम्बन के लिए मुह आगे कर दिया।

"बेशक, ईसा जाग उठे," नेख्लूदोव ने जवाब मे कहा और उसे लिया।

फिर उसने कात्यूशा की ओर देखा। कात्यूशा शर्मा गई, और उसके ोक बढ आयी।

"ईसा जाग उठे, दमीत्री इवानोविच!"

"बशक, ईसा जाग उठे!" नख्लूदोव ने जवाब मे कहा, और उन्होंने बार एक दूसरे को चूमा। फिर क्षण भर के लिए रुक गये मानो सोच हा कि तीसरी बार चूमने की जरूरत है या नही, फिर यह निश्चय के कि जरूरत है, उन्होंने तीसरी बार चुम्बन किया और मुस्कराने ।

"क्या तुम दाना पादरी के पास नही जाओगी?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"नही, दमीत्री इवानोविच, हम थोडी देर यहीं पर बाहर बैठेंगी," यूशा ने कहा। उसके लिए बोलना कठिन हो रहा था, मानो वह कोई व हर्षपूर्ण काय सम्पन्न कर पायी हो। उसने एक गहरी सास ली, का समूचा वक्ष फूल उठा। नजर उठा कर उसने सीधा नेख्लूदोव की : देखा। उसकी आखो मे जिनमे हल्का सा ऐंच रहा करता था, इस य विनम्रता, कौमार्य की पवित्रता तथा सच्चा प्रेम छलक रहे थे।

पुरुष और स्त्री के प्रेम मे सदैव एक ऐसा समय आता है जब यह पराकाष्ठा तक जा पहुचता है। उस समय यह अचेतन तथा ...

होता है तथा इसमे कामुकता का लेशमात्र भी नही होता। उस ईस्टर की रात को नेख्लूदोव का प्रेम भी उसी स्तर तक जा पहुचा था। अब जब वह कात्यूशा को याद करता तो उसकी आखो के सामने उसी समय का दृश्य साकार होता। बाकी सब गौण था। कात्यूशा के चिकने, काले बाल, सफेद लिबास जो उसके कोमल, सुडौल शरीर पर बिल्कुल ठीक बैठता था, उसकी छोटी छोटी छातिया, लज्जाशील चेहरा, चमकती, काली आखें। उसके समूचे व्यक्तित्व पर पवित्रता और सच्चे प्रेम की छाप थी—उस प्रेम की जो उसके दिल मे केवल नेख्लूदोव के प्रति ही नही, बल्कि हर प्राणी और हर वस्तु के लिए था, न केवल जो कुछ अच्छा है उसके लिए ही, बल्कि ससार मे हर चीज, हर किसी के लिए था, यहा तक कि उस भिखारी तक के लिए था, जिसका कात्यूशा ने अभी मुह चूमा था।

नेख्लूदोव जानता था कि कात्यूशा का हृदय इस प्रकार के प्रेम से उद्वेलित है, क्योकि उस रात और दूसरे दिन सुबह वह अपने मे भी ऐसे ही प्रेम का अनुभव कर रहा था, और जानता था कि इस प्रेम में वे दोनो एक हो गये हैं।

काश कि वह वही पर रुक जाता, उसी स्तर तक रहता जिस पर उस रात पहुचा था। "ईस्टर की रात के बाद ही वह भयकर काण्ड हुआ था!" जूरी के कमरे की खिड़की के पास बैठा नेख्लूदोव सोच रहा था।

१६

गिरजे से लौट कर नेख्लूदोव ने अपनी फूफियो के साथ बैठ कर नाश्ता, और थोड़ी शराब पी। रजिमेंट मे उसे पीने की आदत पड़ गई थी। उसके बाद वह अपने कमरे मे आया और बिना कपड़े उतारे सो गया। उसकी नींद उस वक्त टूटी जब किसी ने दरवाजा खटखटाया। खटखटाहट सुनते ही वह पहचान गया कि कौन आया है। उसने अगड़ाई ली, और आखें मलता हुए उठ बैठा।

"कात्यूशा, तुम हो क्या? आ जाओ," उसने कहा।

कात्यूशा ने दरवाजा खोला।

"खाना तैयार है," उसने कहा।

कात्यूशा ने अब भी वही सफेद पोशाक पहन रखी थी, परन्तु उसके बालों मे रिब्बन न था। उसने मुस्कराते हुए नेख्लूदोव की ओर देखा, मानो कोई खुशखबरी दे रही हो।

"मैं आ रहा हू," उसने उठते हुए कहा और कघी ले कर बाल ठीक करने लगा।

कात्यूशा मिनट भर वहीं खडी रही। नेख्लूदोव ने उसे खडे देखा तो कघी फेंक कर उसकी ओर बढा। पर ऐन उसी वक्त वह सहसा मुड पडी और गलियारे के बीचोबीच बिछी दरी पर हल्के हल्के पाव रखती हुई तेज तेज वापस जाने लगी।

"मैं भी कैसा मूर्ख हू," नेख्लूदोव ने सोचा, "मैंने उसे रोका क्यो नहीं?" और भाग कर उसके पास जा पहुचा।

वह क्या चाहता था, यह वह स्वय नहीं जानता था। परतु उसे महसूस हो रहा था कि जब कात्यूशा कमरे मे आई तो मुझे कुछ करना चाहिए था, कोई ऐसी बात जो ऐसे मौको पर की जाती है, पर मैं चूक गया हू।

"जरा ठहरो, कात्यूशा!" उसने कहा।

"जी, क्या बात है?" कात्यूशा ने रुकते हुए पूछा।

"कुछ नही, केवल " नेख्लूदोव ठिठक गया, लेकिन फिर याद करके कि ऐसी स्थिति मे लोग अक्सर क्या करते है, उसने अपना हाथ कात्यूशा की कमर पर रख दिया।

वह मूर्तिवत खडी हो गई और उसकी आखो मे देखने लगी।

"नही, दमीत्री इवानोविच, ऐसा मत करो," उसने कहा। लज्जावश उसकी आखो मे आसू आ गये, और उसने अपने दृढ, मजबूत हाथ से नेख्लूदोव का बाजू परे हटा दिया।

नेख्लूदोव ने उसे जाने दिया। क्षण भर के लिए वह हतबुद्धि और लज्जित सा खडा रहा। उसके दिल मे अपने प्रति नफरत सी पैदा हुई। इस समय उसे चाहिए था कि वह अपने अन्त करण की आवाज सुनता। तब उसे पता चल जाता कि इस घबराहट और लज्जा का कारण आत्मा की वे उच्चतम भावनाए है जो मुक्त होना चाहती है। पर उसने समझा कि यह केवल उसकी मूढता है, और उसे वही कुछ करना चाहिए जो

सब लोग करते हैं। वह लपक कर फिर उसके पास जा पहुचा और उ
गरदन पर चूम लिया।

यह चुम्बन उस भोले चुम्बन से बडा भिन्न था जो तीन साल पहले
लिलक की झाडी के पीछे उसने लिया था, और उस चुम्बन से भी जो
आज ही प्रात गिरजे के आगन मे लिया था। यह तो एक भयानक च
था और कात्यूशा ने भी ऐसा ही महसूस किया।

"यह तुम क्या कर रहे हो?" वह इस तरह चिल्लाई मानो नख्लूदोव
ने उसके दिल के किन्ही कोमल, अमूल्य तारो को सदा के लिए तोड दि
हो और दौडती हुई वहा से भाग गई।

नेख्लूदोव खाने वाले कमरे मे आया। कमरे मे पहले से ही उसकी
सजी धजी फूफिया, परिवार का डाक्टर तथा एक पडोसिन बैठे थे। सब
कुछ साधारण ही था परन्तु नेख्लूदोव के मन मे एक तूफान मचा हुआ था।
उनकी बात उसकी समझ मे नही आ रही थी और वह बिना सोचे समझे
जवाब दिये जा रहा था। उसके मन मे कात्यूशा समाई हुई थी। गलियारे
मे लिये गये इस आखिरी चुम्बन से उसके शरीर मे जो सनसनी सी दौड
हुई थी, उसी को वह बार बार याद कर रहा था। वह और कुछ भी
नही सोच पा रहा था। जब कात्यूशा कमरे मे आयी तो बिना सिर ऊपर
उठाये ही नख्लूदोव को उसके आने का पता चल गया। उसका रोम रोम
उसकी उपस्थिति को महसूस कर रहा था। वह उसकी ओर देखना चाहता
था, परन्तु बडी मुश्किल से इस इच्छा को सवरण कर रहा था।

भोजन के बाद वह सीधा अपने कमरे मे चला गया। वह बेहद उत्तेजित
था और बडी देर तक इधर-उधर टहलता रहा। उसके कान घर की हर
आहट की ओर लगे हुए थे। उसे यह आशा थी कि कात्यूशा की पदचाप
सुनाई देगी। अब उसके अन्दर कामुक जीव ने सिर उठा लिया था। इतना
ही नही, उसने उस आध्यात्मिक जीव को पूर्णतया कुचल भी डाला था जो
आज से तीन साल पहले जीवित था, जब वह पहली बार यहा आया
था बल्कि जो आज प्रात भी जीवित था। अब उसके अन्दर कामुक जीव
का ही निरकुश शासन था।

दिन भर वह कात्यूशा की टोह मे रहा, मगर उसे अकेले मे न
मिल सका। शायद वह उससे जान बूझ कर दूर रहना चाहती थी। पर
शाम के वक्त कात्यूशा को मजबूर हो कर उसके साथ वाले कमरे मे आ

पड़ा। डाक्टर से आग्रह किया गया था कि वह रात को यहीं पर रह जाय, इसलिए कात्यूशा उसका बिस्तर बिछाने आई थी। जब नेख्लूदोव को उसके अन्दर जाने की आहट मिली तो वह भी पीछे पीछे कमरे मे चला गया। वह दबे पाव, सास रोक कर इस तरह जा रहा था मानो कोई जुर्म करने जा रहा हो।

कात्यूशा तकिये पर नया गिलाफ चढ़ा रही थी। अपने बाज़ गिलाफ के अन्दर डाले वह दोनो कोनो से तकिये को पकड़े हुए थी। उसने मुड कर नेख्लूदोव की ओर देखा और मुस्करायी। पर इस मुस्कराहट में पहले सी खुशी और उल्लास न था, बल्कि भय और दयनीयता थी। इस मुस्कान को भी देख कर उसे लगा जैसे वह कोई गलत काम करने जा रहा हो। वह क्षण भर के लिए रुक गया। उसके मन मे सघर्ष की अब भी सभावना थी। उसके हृदय मे से एक क्षीण सी आवाज़ अब भी उठ रही थी। यह कात्यूशा के प्रति उसके सच्चे प्रेम की आवाज़ थी, जो कह रही थी–"कात्यूशा को मत भूल जाओ, उसकी भावनाओ की तो सोचो, उसके जीवन की तो सोचो।" पर एक दूसरी आवाज़ भी थी, जो कह रही थी–"यही मौका है! मत चूको! अपनी खुशी और सभोग के इस अवसर को हाथ से मत जाने दो!" और इस दूसरी आवाज़ ने पहली आवाज़ को दबा दिया। वह दृढ निश्चय से कात्यूशा की ओर बढ़ गया। भयानक, अदम्य कामवासना ने उसे बेचैन कर दिया।

कात्यूशा की कमर मे बाह डाल कर उसने उसे बिस्तर पर बिठा लिया। फिर यह सोच कर कि उसे कुछ और भी करना चाहिए, वह उसके साथ सट कर बैठ गया।

"द्मीत्री इवानोविच! मुझे जाने दो!" उसने बड़ी दयनीय आवाज़ मे कहा। "मात्र्योना पाव्लोव्ना आ रही है!" वह चिल्लाई, और अपने को छुड़ा कर खड़ी हो गई। सचमुच कोई दरवाज़े की तरफ आ रहा था।

"अच्छी बात है, मैं रात को तुम्हारे पास आऊगा," वह फुसफुसाया। "तुम वहा अकेली हो ना?"

"तुम क्या सोच रहे हो? हरगिज नही! नही, नही!" परन्तु ये शब्द केवल उसके होठों में से ही निकल पाये। उसका शरीर, जिसके रोम रोम मे उद्भ्रान्ति के कारण कपन उठ रहा था, कुछ और ही कह रहा था।

मात्र्योना पाव्लोव्ना ही थी जो दरवाज़े के पास आई। बाहू के ऊ
एक कम्बल रखे उसने अन्दर झांका और बड़ी भर्त्सना भरी नज़र।
नेख्लूदोव की ओर देखा, और फिर गुस्से से कात्यूशा को झिड़क दे
कि वह ग़लत कम्बल क्या उठा लाई है।

नेख्लूदोव चुपचाप बाहर चला गया लेकिन उसे ज़रा भी शर्म
आयी। मात्र्योना पाव्लोव्ना के चेहरे से साफ नज़र आ रहा था कि वह
नेख्लूदोव पर नाराज़ है, उसे कुसूरवार समझती है। स्वयं नेख्लूदोव भी
जानता था कि मात्र्योना पाव्लोव्ना का गुस्सा वाजिब है, कि वह बुरा
कर रहा है। पर जो घृणित काम पिपासा इस समय उसके मन पर छा
हुई थी, उसमें न तो कात्यूशा के प्रति पहले सच्चे प्रेम की भावना का
लेशमात्र ही रह गया था, और न ही उसके रहते कोई दूसरी भावना
उसके मन में उठ सकती थी। वह अब जानता था कि इस पिपासा को
शान्त करने के लिए उसे क्या करना है, और सोच रहा था कि कैसे इसके
लिए मौका निकाला जाय।

सारी शाम वह पागलों की तरह कभी एक कमरे में जाता रहा कभी
दूसरे में। कभी फूफियों के कमरे में जाता, कभी अपने कमरे में लौट
आता, कभी बाहर सायबान के नीचे जा खड़ा होता। उसके मन में एक
ही धुन समायी हुई थी कि किसी तरह कात्यूशा को अकेले में मिल पाये।
पर वह नेख्लूदोव से कन्नी काट रही थी, और मात्र्योना पाव्लोव्ना की
कड़ी नज़र उस पर थी।

१७

इस तरह शाम आखिर खत्म हुई और रात आयी। डाक्टर आ कर
सो गया। नेख्लूदोव की फूफियां भी सोने के लिए चली गई थीं। नेख्लूदोव
ने सोचा कि इस वक्त मात्र्योना पाव्लोव्ना ज़रूर उन्हीं के पास होगी
जिसका मतलब है कि दासियों के कमरे में कात्यूशा अकेली बैठी होगी।
वह फिर बाहर सायबान के नीचे आया। बाहर अंधेरा था और कुछ
कुछ गरमी थी। हवा में नमी थी और वसन्त की सफ़ेद धुंध छायी हुई
थी जो बर्फ की आखिरी पर्तों को साफ कर जाती है या शायद आखिरी
पर्तों के पिघलने के ही कारण पैदा होती है। फाटक से लगभग सौ कदम

की दूरी पर, पहाडी के नीचे, नदी बहती थी। इस समय उस ओर से अजीब सी आवाज़ आ रही थी। नदी पर जमी बरफ टूट रही थी।

नेख्लूदोव सीढिया उतर कर दासियो के कमरे की ओर जाने लगा। जगह जगह चिकनी बरफ पर पानी खडा था। नेख्लूदोव बच बच कर चलता हुआ खिडकी के पास जा खडा हुआ। उसका दिल धक् धक कर रहा था और सास फूल रही थी। सास खीचता तो जैसे लम्बी आहे भरता। दासियो के कमरे मे एक छोटा सा लैम्प जल रहा था। मेज़ के पास कात्यूशा अकेली बैठी थी, और विचारशील मुद्रा मे सामने की ओर देख रही थी। नेख्लूदोव वही चुपचाप, बिना हिले-डुले, बडी देर तक खडा रहा। वह देखना चाहता था कि कात्यूशा अब क्या करेगी, जिसे यह नही मालूम था कि उसे कोई देख रहा है। मिनट, दो मिनट तक तो कात्यूशा ने कोई हरकत नही की। फिर उसने आखें ऊपर उठाई, मुस्कराई, और सिर झटका, मानो अपने को डाट रही हो फिर रुख बदल कर बैठ गई, दोनो बाजू मेज़ पर रख लिये और सामने, नीचे की ओर देखने लगी।

वह वही खडा उसे देखता रहा। न चाहते हुए भी उसे अपने दिल की धडकन और नदी की ओर से आती हुई विचित्र सी आवाजें सुनाई दे रही थी। वहा, नदी पर, धुध के नीचे, प्रकृति का अनवरत श्रम चल रहा था। तरह तरह की आवाजें मिल कर आ रही थी मानो कोई चीज़ सिमक रही हो, टूट रही हो, गिर रही हो, टुकड टुकडे हो रही हो। इन्ही आवाजो के साथ एक और टुनटुनाती सी आवाज़ भी मिल रही थी काच की तरह, बरफ़ की पतली पर्तों के टूटने की आवाज़।

कात्यूशा का चेहरा गभीर और दुखी था। उससे उसके विकट आन्तरिक सघर्ष का बोध होता था। उसकी ओर देखते हुए नेख्लूदोव का हृदय अनुकम्पा से भर उठा। परन्तु, अजीब बात है, इस अनुकम्पा से उसकी कामवासना और भी भडक उठी।

वह कामान्ध हो रहा था।

उसने खिडकी पर दस्तक दी। कात्यूशा चौक गई, मानो उसे बिजली छू गई हो। उसका अग अग काप उठा और चेहरे पर भय छा गया। फिर वह उछल कर खडी हो गई और खिडकी के पास आ कर अपना चेहरा खिडकी के शीशे के नज़दीक ले आयी। आखो के ऊपर अपने दोना हाथो से छज्जा बना कर उसने झाक कर बाहर देखा। वह नेख्लूदोव को

पहचान गई लेकिन उसके चेहरे पर त्रास का भाव उसी तरह बना रहा। कात्यूशा का चेहरा बेहद गभीर हो रहा था। नेख्लूदोव ने उसे इस तरह पहले कभी नही देखा था। नेख्लूदोव को मुस्कराते देख कर वह भी मुस्कराई, मगर जैसे हुक्म मान रही हो। उसका हृदय नही मुस्करा रहा था, वहा तो केवल भय छाया हुआ था। नेख्लूदोव ने हाथ से उसे इशारा किया कि बाहर आगन मे आ कर मुझे मिलो। पर कात्यूशा ने सिर हिला दिया और खिडकी के पीछे ही खडी रही। नेख्लूदोव खिडकी के शीशे के पास मुह ले जा कर उसे कहना चाहता था कि वह बाहर आ जाय, पर वह सहसा दरवाजे की ओर घूम गई। प्रत्यक्षत किसी ने अन्दर से उसे बुला लिया था। नेख्लूदोव खिडकी पर से हट गया। धुध इतनी गहरी थी कि घर से पाच कदम की दूरी पर से भी खिडकिया नजर नही आती थी, केवल लैम्प की लाल लाल रोशनी का विशाल वृत्त अधकार के निराकृत पुज मे से निकलता हुआ नजर आ रहा था। नदी पर से वही विचित्र आवाजें आ रही थी, सिसकने की, सरसराने की, टटन की, खनकने की। धुध मे ही, नजदीक कही किसी मुर्गे ने बाग दी। जवाब मे एक दूसरे मुर्ग ने बाग दी। फिर दूर, गाव मे बहुत से मुर्ग एक साथ बाग देने लगे। होते होते सभी मुर्गों की आवाजे मिल कर एक हो गइ। या चारो ओर निस्तब्धता छायी हुई थी। केवल नदी पर से वही शब्द सुनाई दे रहे थे। उस रात यह दूसरी बार थी कि मुर्ग बाग देने लगे थे।

घर के नुक्कड के पीछे नेख्लूदोव टहलने लगा। किसी किसी वक्त उसका पाव किसी गढे मे जा पडता। वह फिर खिडकी के पास आया। लैम्प अब भी जल रहा था और कात्यूशा फिर अकेली मेज के पास बैठी थी। वह द्विविधा मे जान पडती थी, मानो उसकी समझ मे न आ रहा हो कि क्या करे और क्या न करे। वह खिडकी के पास पहुचा ही था कि उसने आख उठा कर देखा। नेख्लूदोव ने दस्तक दी। बिना देखे कि कौन खिडकी खटखटा रहा है, वह फौरन् कमरे मे से भाग गई। नेख्लूदोव को बाहर का दरवाजा खुलने की आवाज आई। बगल वाले सायबान के नीचे वह उसका इन्तजार करने लगा। वह आई और नेख्लूदोव ने बिना कुछ कहे उसे बाहो मे भर लिया। वह नेख्लूदोव से निसहाय सी लिपट गई, और अपना मुह ऊपर को उठाया। दोनो के होठ मिले। वे सायबान के कोने के पीछे खडे थे। यहा पर से बरफ गल चुकी थी। अतृप्त वासना

के कारण वह बेचैन हो रहा था। इस के बाद फिर दरवाज़ा खुलने की वैसी ही आवाज़ आई, और मात्र्योना पाव्लोव्ना ने गुस्से से चिल्ला कर पुकारा –

"कात्यूशा!"

कात्यूशा अपने को छुडा कर दासियों के कमरे में वापस लौट गई। नेख्लूदोव ने सिटकनी लगने की आवाज़ सुनी, फिर सब चुप हो गया। लाल रोशनी बुझ गई, केवल धुंध अब भी छायी हुई थी, और नदी पर से वही आवाज़ें आ रही थीं।

नेख्लूदोव खिड़की के पास गया। वहां कोई भी नज़र नहीं आ रहा था। उसने खिड़की पर दस्तक दी। कोई जवाब नहीं आया। सामने के दरवाज़े में से वह घर के अंदर लौट गया, मगर उसे नींद नहीं आयी। वह उठ खड़ा हुआ और नंगे पांव गलियारे को लांघता हुआ कात्यूशा के कमरे के पास जा पहुंचा जो मात्र्योना पाव्लोव्ना के कमरे की बगल में था। मात्र्योना पाव्लोव्ना नींद में हल्के हल्के खर्राटे ले रही थी। नेख्लूदोव आगे कदम रखने ही वाला था कि मात्र्योना पाव्लोव्ना खांसी और करवट बदली जिससे उसकी खाट चरमरा उठी। नेख्लूदोव का दिल बैठ गया। वह जड़वत लगभग पांच मिनट तक, बिना हिले-डुले, खड़ा रहा। जब फिर सन्नाटा छा गया और मात्र्योना पाव्लोव्ना फिर आराम से खर्राटे भरने लगी तो उसने आगे कदम रखा। फ़र्श के एक एक तख्ते पर वह बड़े ध्यान से पांव रखता ताकि कोई आवाज़ न हो। वह कात्यूशा के दरवाज़े तक जा पहुंचा। कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। शायद वह जाग रही थी, वरना उसे उसके सांस लेने की आवाज़ आती। पर ज्यों ही उसने फुसफुसा कर कहा – "कात्यूशा!" वह उछल कर खड़ी हो गई और उसे वापस लौट जाने का आग्रह करने लगी, मानो उसे बहुत गुस्सा हो।

"तुम्हारा मतलब क्या है? तुम कर क्या रहे हो? तुम्हारी फूफियां सुन लेंगी," उसके मुंह से तो ये शब्द निकल रहे थे, परन्तु उसका रोम रोम कह रहा था – "मेरा सर्वस्व तुम्हारा है।" और नेख्लूदोव केवल इसी को समझ पा रहा था।

"दरवाज़ा खोलो! एक मिनट के लिए! मेहरबानी कर के दरवाज़ा खोलो।" नेख्लूदोव खुद भी नहीं जानता था कि क्या कह रहा है।

कात्यशा चुप थी। फिर नेख्लूदोव ने सुना, उसका हाथ [illegible]
ढूढ रहा था। सिटकनी खुलने की आवाज आई। वह अन्दर चला गया।

नेख्लूदोव ने झट से उसे उठा लिया और बाहर ले आया। उसने न
नही देखा कि वह केवल एक मोटी सी खुरदरी कमीज पहने थी और उसके
बाजू नगे थे।

"यह तुम क्या कर रहे हो?" वह फुसफुसायी, पर नेख्लूदोव ने
उसके शब्दो की ओर कोई ध्यान नही दिया और उसे उठाये हुए अपने
कमरे मे ले आया।

"नही नही, ऐसा मत करो, मुझे जाने दो!" कात्यूशा कह रही
थी, परन्तु उसके साथ और भी सट कर लिपट रही थी।

कात्यूशा नेख्लूदोव के कमरे मे से निकली। चुपचाप, कापती हुई।
उसने कुछ कहा मगर कात्यूशा ने कोई जवाब नही दिया। वह फिर निकल
कर सायबान के नीचे जा खडा हुआ, और जो कुछ हुआ था उसे समझने,
उसकी तह तक पहुचने की कोशिश करने लगा।

दिन चढ रहा था। नीचे, नदी की ओर से टटती बरफ के खनकने
और सिसकने की आवाजें और भी ऊची हो उठी थी। साथ ही पानी का
कल कल शब्द भी आ रहा था। धुध नीची होने लगी थी और उसके
ऊपर से घटता चाद नजर आ रहा था। उसके क्षीण प्रकाश मे कोई काली,
भयानक सी चीज दिख रही थी।

"इस सबका क्या मतलब है? क्या मैंने किसी महान सुख का अनुभव
किया है, या मुझ पर बहुत बडा दुर्भाग्य टटा है?" उसने मन ही मन
पूछा।

'ऐसा सभी के साथ होता है—सभी लोग यही कुछ करते हैं,"
उसने अपने आपसे कहा और सोने चला गया।

१८

दूसरे दिन उसका दोस्त शेनबोक आ पहुचा। बडा हसमुख, खूबसूरत
और चतुर जवान था वह। बात करता तो बडे सलीके से, मिलनसार,
दरियादिल और खिलाडी तबीयत का लडका था। एक तो इन गुणो के

ारण और दूसरे दमीत्री के प्रति प्रेम के कारण आते ही उसने दोनो फूफियो का दिल जीत लिया। उसकी दरियादिली देख कर फूफिया प्रभावित तो हुई, पर साथ ही साथ उलझन मे भी पडी क्योकि यह दरियादिली स्वाभाविक नही जान पडती थी। फाटक पर कुछ अधे भिखारी आये, उसने उन्हे एक रूबल निकाल कर दे दिया। नौकरो को बखशीश मे पन्द्रह रूबल दे दिये। सोफिया इवानोव्ना के कुत्ते को पजे पर चोट लग गई और खून बहने लगा तो इसने अपना केम्ब्रिक का रूमाल निकाला और देखते ही देखते उसे फाड कर उसमे से पट्टिया बना दी (सोफिया इवानोव्ना जानती थी कि ऐसे रूमाल पन्द्रह रूबल फी दजन से कम पर नही मिलते) और कुत्ते के पजे की मरहम पट्टी करने लगा। बूढी स्त्रियो ने इस सरीखे लोग पहले कभी नही देखे थे। उन्हे यह मालूम नही था कि शेनबोक पर दो लाख रूबल का कर्ज है जिसमे से यह एक कौडी भी अदा नही करेगा। अगर और बीस-पचीस रूबलो पर पानी फिर गया तो उसे कोई फर्क नही पडेगा।

केवल एक दिन के लिए ही शेनबोक वहा ठहरा। उसी रात वह और नेख्लूदोव, दोनो रवाना हो गये। रेजिमेट मे हाजिरी देना लाजमी था क्योकि दोनो की छुट्टी खत्म हो रही थी।

नेख्लूदोव का इस घर मे आखिरी दिन था। पिछली रात का व्यापार अब भी उसकी आखो के सामने घूम रहा था, जिससे उसके हृदय मे दो पृथक भावनाओ का सघर्ष चल रहा था। एक तो उस कामुक सभोग की याद थी, हालाकि जिस इन्द्रियसुख की उसे आशा थी वह उसे प्राप्त नही हुआ था, और इस बात की तुष्टि भी थी कि मैदान मार लिया, जो करना चाहता था, कर दिखाया। दूसरी ओर रह रह कर यह ख्याल उठता था कि मैने जो कुछ किया है बहुत बुरा किया है। उसका प्रायश्चित करना होगा, उस लडकी की खातिर नही, बल्कि अपनी खातिर।

नेख्लूदोव की स्वार्थाधता जिस सीमा तक जा पहुची थी वहा उसे केवल अपना ही ख्याल आ सकता था, और किसी का नही। वह सोच रहा था कि अगर इस बात का पता लोगो को लग गया तो उसकी बहुत निन्दा तो नही होगी? लोग उसे दोषी ठहरायेंगे भी या नही? उस कात्यूशा का ख्याल नही आया कि उस पर इस समय क्या बीत रही होगी, या भविष्य मे उसे क्या भुगतना पडेगा।

शेनबोक ने भाप लिया कि कात्यूशा के साथ नेख्लूदोव का [illegible] है। नेख्लूदोव ने भी देख लिया कि वह भाप गया है। पर इसने [illegible] भी फूल उठा।

"जी, अब मैं समझा कि फूफियां क्यों तुम्हें इतनी प्यारी [illegible] हैं, किस लिए तुम हफ्ते भर से यहां आसन जमाये हो," [illegible] नज़र पड़ते ही शेनबोक ने कहा, "खूब रहा [illegible] पर लड़की [illegible] मैं भी तुम्हारी जगह होता तो यही करता।"

नेख्लूदोव को इस बात का खेद तो था कि उसे जल्दी जाना [illegible] है। यहां रहता तो जी भर कर कात्यूशा से प्रेम का रस लेता। [illegible] मजबूरी में जाना पड़ रहा था। लेकिन साथ ही इस तरह [illegible] एक लाभ भी था। ऐसे संबंध जिन्हें निभाना कठिन हो, शुरू में [illegible] दिये जायं तो अच्छा रहता है। फिर उसे ख्याल आया कि [illegible] कुछ देते जाना चाहिए। इसलिए नहीं कि उसे पैसा की जरूरत है मगर इसलिए कि सभी ऐसा करते हैं। कात्यूशा को इस्तेमाल भी [illegible] और पैसे भी न दिये तो बड़ी शर्म की बात होगी। इसलिए उसने [illegible] कुछ रकम दे दी [illegible] जो अपनी और कात्यूशा की स्थिति को देखते [illegible] वाजिब लगा।

विदाई के दिन, भोजन के बाद, नेख्लूदोव घर के बाहर [illegible] और बगल वाले दरवाजे के पास कात्यूशा का इन्तज़ार करने लगा। [illegible] आई। [illegible] को देखते ही उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया। [illegible] पाट पर [illegible] जाना चाहती थी। उसने [illegible] लिया कि दालान में कमरे का दरवाज़ा खुला है, लेकिन [illegible] उसे रोक लिया।

"मैं तुमसे विदा लेने आया हूं," [illegible] हाथ में [illegible] [illegible] हुए उसने [illegible]। [illegible] में सौ रूबल का [illegible] था। [illegible]

[illegible] उसका [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible], [illegible] हुए [illegible] का हाथ [illegible] लिया।

[illegible] [illegible], [illegible], उसने [illegible] और [illegible] [illegible] उसके [illegible] से [illegible] लिए। फिर [illegible] कमरा [illegible] कमरे में [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कमरे में [illegible] [illegible]

ो हाथो उसे कोई चोट लगी हो। बडी देर तक वह कमरे म लम्बे लम्बे ग भरता हुआ घमता रहा, जैसे दद से छटपटा रहा हो। यहा तक कि इस आखिरी दृश्य को याद कर के वह फश पर पाव पटकता और ऊची ऊची आवाज़ म कराहने लगता।

"पर मैं और कर भी क्या सकता था? क्या सबके साथ ऐसा नही होता? शेनबोक ने अपनी अध्यापिका के साथ क्या किया? यही कुछ। वह ख द बता रहा था। और चाचा ग्रीशा ने। और मेरे पिता ने तो एक किसान औरत से जारज लडका तक पैदा कर दिया था, जब वह गाव मे थे। मीतेन्का उसका नाम था, आज भी वह ज़िन्दा है। अगर सभी लोग ऐसा करते हैं तो इसका मतलब है कि ऐसा ही होना चाहिए," इस तरह अपने मन को शान्त करने की कोशिश करने लगा। पर बेसूद। इस घटना को याद कर के उसका दिल छलनी हो रहा था।

उसका अन्ततम कह रहा था कि उसने एक अत्यन्त नीच, क्रूर और कायरो का सा काम किया है। जो ख द यह करतूत की तो औरो पर उगली उठानी तो क्या, किसी से आख तक नही मिला सकेगा। आज तक वह अपने को बडा शानदार, श्रेष्ठ और ऊचे विचारो वाला आदमी समझता रहा था। भविष्य म भी वह अपनी नज़रो म यही कुछ बन रहना चाहता था, क्योकि साहस के साथ जीवन का आनन्द लूटने के लिए यह बडा ज़रूरी था। परन्तु अब यह असम्भव हो गया था। इस समस्या का एक ही हल था, कि इसके बारे मे सोचना छोड़ दे। और उसने ऐसा ही किया।

जिस ढग के जीवन मे वह अब प्रवेश करने जा रहा था, वहा बहुत कुछ नया था—नया पास-पडोस, नये दोस्त, और युद्ध। इन सब बातो ने भी इस घटना को भूल जाने मे उसकी सहायता की। ज्यो ज्यो वक्त गुज़रता गया, यह बात उसके मन पर से उतरती गई, और आखिर वह इसे बिल्कुल भूल गया।

लडाई के बाद नेख्लूदोव अपनी फूफियो को मिलने गया, इस आशा से कि वहा कात्यूशा से भेंट होगी। पर कात्यूशा वहा पर नही थी। नेख्लूदोव के विदा होने के कुछ ही मुद्दत बाद यह वहा से चली गई थी। फूफियो ने कहीं से सुना था कि उसे गभ हो गया था और वह बच्चा जनने के लिए कही रहने गई थी। उन्होने कहा कि कात्यूशा का पतन

हो चुका था। नेख्लूदोव के दिल म मगर उठी थी। यदि कात्यूशा के ऽ
साल की अनुमान लगाया जाय तो बच्चा नेख्लूदोव का हो भी सकता
और नहीं भी हो सकता था। उसकी फूफिया कात्यूशा को ही दोष
थी, कहती थीं, जैसी मा वैसी बेटी। उनकी यह राय सुन कर नेख्
दिल ही दिल म खुश हुआ। इससे जैसे वह अपने गुनाह से बरी
जाता था। पहले तो उसकी इच्छा हुई कि कात्यूशा का पता लगाये, उ
बच्चे का पता लगाये। पर जब कात्यूशा का ख्याल आता तो वह मन
ही अन्दर इतना लज्जित और दुखी महसूस करता कि उसने कात्यूशा को
ढूंढने की कोई कोशिश नही की, बल्कि इस दुष्कर्म के बारे म सोचना ह
छोड़ दिया और इस तरह उसे भुलाने की कोशिश करने लगा।

और आज यह विचित्र, आकस्मिक घटना घटी जिसने सारी स्मृति
जगा दी और नेख्लूदोव से माग करने लगी कि अपने उस निर्दयी, क
और कायरतापूर्ण आचरण को स्वीकार करो जिसके कारण तुम दस बर
से पाप का बोझा उठाये जी रहे हो। परन्तु स्वीकार करना तो दूर रहा,
नेख्लूदोव को तो केवल इस बात की फिक्र थी कि कही उसका भण्डाफो
न हो जाय, कही कात्यूशा या उसका वकील सारी कहानी सुनानी श
शुरू कर दे और उसे सबके सामने लज्जित होना पड़े।

१६

इस तरह के विचार नेख्लूदोव के मन मे उठ रहे थे जब वह अदालत
मे से उठ कर जूरी के कमरे मे आया। वह खिडकी के पास बैठा सिगरेट
पर सिगरेट फूके जा रहा था और आस-पास के लोगो की बात सुन रहा
था।

हसोड़ व्यापारी स्मेल्कोव की तारीफ कर रहा था। कह रहा था कि
उस आदमी को मजा लूटने का ढग आता था—

"ऐश कर गया पट्ठा! इसे कहते हैं ऐश! असल साइबेरियाई ढ
की ऐश! वह ढग जानता था साहिब, क्या छोकरी चुनी थी!"

मुखिया का विश्वास था कि इस मामले मे जो निष्कर्ष विशेषज्ञ
निकाले है, वही किसी न किसी रूप मे महत्वपूर्ण साबित होगे। प्या
गेरासिमोविच ने यहूदी क्लर्क से कोई हसी की बात कही, जिस पर

दोनों ठहाका मार कर हस पडे। नेख्लूदोव से यदि कोई कुछ पूछता तो उसका जवाब वह सक्षिप्त सा हा या न म दे कर चुप हो जाता। वह नही चाहता था कि उसे कोई छेडे।

पेशकार उसी तरह टेढा चलता हुआ आया और जरी के सदस्यो को वापस अदालत मे चलन को कहा। नेख्लूदोव को भय ने जकड लिया, मानो वह जूरी न हो कर स्वय मुजरिम हो। अपने अन्ततम मे वह महसूस करता था कि वह एक पतित आदमी है, जिसे लोगो के साथ आखें मिलाते हुए भी शर्म आनी चाहिए। परन्तु वह अभ्यासवश उठा, उसी तरह स्थिर, आश्वस्त चाल से चलता हुआ मच पर जा पहुचा, और मखिया की बगल में बैठ कर, टाग पर टाग रखे, अपनी कमानीदार ऐनक का हाथ मे हिलाने डुलाने लगा।

कैदियो को भी बाहर ले जाया गया था। अब वे भी अन्दर लाये गये।

अदालत मे कुछ नये चेहरे भी दिखायी दिये। ये गवाह थे। नेख्लूदोव ने देखा कि एक गवाह पर से कात्यूशा की आखें हटाये नही हटती। यह कोई बडी मोटी सी औरत थी जो जगले के सामने वाली कतार मे बैठी थी। शोख, भडकीले रग के रेशमी व मखमल के कपडे पहने थी, और सिर पर एक रिब्बन वाला हैट लगाये थी। उसकी दोनो बाहे कोहनियो तक नगी थी, और एक बाजू पर बडा नाजुक और खूबसूरत सा बटुआ लटक रहा था। बाद मे नेख्लूदोव को पता चला कि यह औरत उस चकले की मालकिन थी जिसमे मास्लोवा रहा करती थी।

गवाहो की जाच-पडताल शुरू हुई। उनके नाम, धर्म इत्यादि पूछे गये। फिर यह सवाल उठा कि गवाहो के बयान शपथ पर लिये जायेंगे या नही। बूढा पादरी फिर पाव घसीटता अन्दर आया। छाती पर लटकते सुनहरी क्रॉस को उगली से हिलाते डुलाते पहले की तरह धीमी आवाज मे उसने गवाहो और विशेषज्ञ से शपथ ली। अब भी उसके चेहरे पर वही आश्वासन का भाव था कि जो काम वह कर रहा है वह कोई उपयोगी और महत्वपूर्ण काम है।

शपथ के बाद गवाह फिर बाहर ले जाये गये। केवल चकले की मालकिन कितायेवा अपनी जगह पर बैठी रही। उससे इस वारदात के बारे मे पूछा गया कि बताइये, आप क्या जानती हैं। एक एक वाक्य पर वह

अपना सिर हिलाती, मय अपने ऊचे टोप के और वडे बनाव... मुस्करानी। उसने वातफसील और चतुराई के साथ अपना बयान दि... उसके बोलने के ढग मे जमन लहजे की पुट थी।

वह बताने लगी कि सबसे पहले होटल का नौकर सीमन हमारे ... एक लडकी की फर्माइश ले कर आया। बोला साइबेरिया के एक मालद... व्यापारी के लिए दरकार है। हम सीमन को पहले से जानता है। ह... ल्युबोव को भेजा। कुछ देर वाद जब ल्युबोव लौटा तो व्यापारी भी उस... साथ था। वह उस वक्त भी सरूर मे था—यह शब्द कहते हुए ... मुस्कराई—और हमारे यहा पहुच कर भी वह पीता रहा और लडकि... को खिलाता पिलाता रहा। उसके पास पैसा कम हो गया तो उसने ... ल्युबोव को होटल मे भेजा। इसके साथ उसका कुछ मुहब्बत हो ... था। यह वाक्य कहते हुए उसने कैदी की ओर देखा।

नेख्लूदोव को ऐसे लगा जैसे मास्लोवा भी इस वाक्य पर मुस्कराई... है। कैसी जलालत है, उसने सोचा। नेख्लूदोव के मन मे एक अजीब और... धूमिल सी भावना मास्लोवा के प्रति उठी, जिसमे घृणा और अनुकम्पा... दोनो मिली हुई थी।

"मास्लोवा के बारे मे तुम्हारी क्या राय है?" मास्लोवा के वकील... ने झेंपते शर्माते हुए सवाल किया। इस आदमी ने अदालत म नौकरी के... लिए दरख्वास्त दे रखी थी। इस समय उसे मास्लोवा का वकील मुकर्र... किया गया था।

"बहुत ही अच्छी लडकी ह," कितायेवा ने जवाब दिया। "पढ़ी... लिखी और सलीके वाली लडकी है। अच्छे घर म पल कर बडा हुआ है, ... फ्रासीसी जबान पढ सकता है। कभी कभी शराब जरा ज्यादा पी जाता... है, फिर भी सभल कर रहता है। बहुत अच्छी लडकी है।"

कात्यूशा ने उस औरत की तरफ देखा, फिर सहसा जूरी के सदस्यों... की ओर आखें फेर ली और नेख्लूदोव के चेहरे को एकटक देखने लगी। उसका चेहरा गभीर और कठोर हो उठा। उसकी एक आख म हल्का सा... ऐंच था। दोनो आखें बडे विचित्र ढग से, कुछ देर तक नेख्लूदोव के चेहरे... पर जमी रही। नेख्लूदोव को घर भी भय ने जकड रखा था, फिर भी... वह अपनी नजर इन तिरछी आखो पर से नही हटा पाया। उन आखो की... सफेदी म बडी स्वच्छता और चमक थी। उसे वह भयानक रात या...

ने आई। चारो ओर छायी हुई धुध, नीचे, नदी पर टूटती बरफ, और वह घटता चाद, जो पौ फटने से पहले उभर आया था, और जिसके कोने ऊपर को उठे हुए थे। कोई भयानक काली सी चीज उस चाद की रोशनी मे चमकने लगी थी। इन काली काली आखो को देखते हुए जो उसकी ओर टिकटिकी बाधे थी, उसे वह भयानक काली चीज याद हो आयी।

"इसने मुझे पहचान लिया है!" नेख्लूदोव ने सोचा, और सिकुड़कर पीछे हो गया, मानो डर रहा हो कि मुह पर तमाचा पडेगा। पर उसने उसे नही पहचाना था। कात्यूशा ने ठण्डी सास ली और फिर प्रधान जज की ओर देखने लगी। नेख्लूदोव ने भी ठण्डी सास ली। "यह कब खत्म होगा! जल्दी जल्दी क्यो नही करते?" उसने मन ही मन कहा। जब कभी शिकार खेलते समय कोई परिन्दा जख्मी हो जाय और उसे हाथ से मारना पडे तो जो भावना मनुष्य के मन मे उठती है—घृणा और अनुकम्पा और परेशानी की भावना—वही इस समय नेख्लूदोव के मन मे उठ रही थी। शिकार के थैले मे जख्मी परिन्दा छटपटा रहा होता है। आदमी को उस वक्त बडी घिन होती है, पर साथ ही दया भी आती है और आदमी चाहता है कि जल्दी से जल्दी उसे मार कर खत्म करे और किसी तरह मन मे से निकाल दे।

इस प्रकार की मिश्रित भावनाए नेख्लूदोव के मन मे उठ रही थी जब वह अदालत म बैठा गवाहो की जिरह सुन रहा था।

२०

पर मुकद्दमे की कारवाई तूल पकडती गई मानो नेख्लूदोव से उसे कोई बैर हो। एक एक गवाह से अलग अलग जिरह की गई। आखिर मे विशेषज्ञ से जिरह हुई। सरकारी वकील और दोनो वकीलो ने बडा गम्भीर मुह बना कर तरह तरह के फिजूल और अनगिनत सवाल पूछे। इसके बाद प्रधान जज ने जूरी से कहा कि शहादती चीजो की जाच कर ले। इन चीजो मे एक बडी सी अगूठी थी जिसके अन्दर छोटी छोटी पखुडियो की शकल में हीरे जड हुए थे। जाहिर है उसे पहली उगली मे

ही पहना जाता रहा होगा। एक टेस्ट-टयब रखी थी जिसम जहर क
विश्लेपण किया गया था। इन चीजो के साथ वाकाइदा लेबल ला
और उन पर सरकारी मोहर थी।

जूरी उठ कर इन चीजो का मुग्राइना करने जा ही रह थे जब सरकारी वकील उठ खडा हुआ और माग की कि इन चीजो की जाच करने से पहले डाक्टर की शव-परीक्षा की रिपोट पढ कर सुनाई जाय।

प्रधान जज जल्दी जल्दी काम खत्म करना चाहता था ताकि अपनी स्विस लडकी के पास पहुच सके। वह जानता था कि इस रिपोट से कवल सुनने वालो को ऊब ही बढेगी और भोजन का समय और पीछे पड जायेगा। वह यह भी जानता था कि सरकारी वकील इसकी माग इसलिए कर रहा है कि कानून ने उसे इसका अधिकार दे रखा है। लाचार, उसे इजाजत देनी पडी।

सेक्रेटरी ने डाक्टर की रिपोर्ट निकाली और अपनी नीरस, तुतलाती आवाज मे पढने लगा। जब वह पढता तो "ल" और "र" के उच्चारण म कोई भेद पता न चलता।

"शरीर की बाहरी जाच से पता चला कि—

"१) फेरापोत स्मेल्कोव का कद छ फुट पाच इच था।"

"वाह, क्या डीलडौल था, एँ।" नेख्लदोव के कान म व्यापारी ने बडा रस लेते हुए फुसफुसा कर कहा।

"२) शक्ल सूरत से वह लगभग चालीस साल का नजर आता था।

"३) लाश सूजी हुई थी।

"४) मास का रग हरा था, कुछेक जगह पर गहरे रग के धब्बे थे।

"५) चमडी पर भिन्न भिन्न आकार के फफोले निकल आये थे। कही कही से चमडी के बडे बडे टुकडे फट कर उतर आये थे।

"६) बाल मोटे और भूरे रग के थे। हाथ लगाने पर उखड आते थे।

"७) आखें बाहर को निकली हुई थी, पुतलिया धमिल पड गई थीं।

'८) नाक, कान और मुह म से कोई तरल सा चीज रिस रिस कर बह रही थी।

"९) चेहरा और छाती इस कदर सूजे हुए थे कि गरदन नजर नहीं आती थी।'

इत्यादि इत्यादि।

पूरे चार पन्ना की रिपोर्ट थी, जिसमें इस तरह के २७ पैरे थे। एक एक तफसील के साथ उस व्यापारी की लाश की जाच की गई थी, जो शहर मे मौज मनाता रहा था। लाश बहुत बडी, सूजी हुई और मोटी थी। पहल से ही नेख्लूदोव के मन मे एक अस्पष्ट सी घिन उठ रही थी, लाश का वर्णन सुन कर वह और भी तीव्र हो उठी। कात्यूशा का जीवन, लाश की नाक म मे रिसता मवाद, बाहर को निकली हुई आखें, कात्यूशा के प्रति उसका अपना व्यवहार, सभी बातें एक ही क्रम से सबधित जान पडती थी। उसे ऐसा जान पडा जैसे उसके चारो ओर इसी प्रकार की घिनौनी चीजें उसे घेर हुए हो और वह उनमे डूब रहा हो।

आखिर बाहरी जाच की रिपोर्ट खत्म हुई। प्रधान जज ने इतमीनान की सास ली और सिर ऊपर उठाया, यह सोच कर कि रिपोर्ट अन्त तक पढ डाली गई होगी, पर सेक्रेटरी फौरन् अन्दरूनी जाच की रिपोर्ट पढने लगा।

प्रधान जज ने फिर सिर झुका लिया और हाथ माथे पर रख कर आखें बन्द कर ली। नेख्लूदोव के साथ बैठा व्यापारी कब से ऊघने लगा था, और किसी किसी वक्त उसका शरीर दायें-बायें झूलने लगता। बंदी और सशस्त्र पुलिस के सिपाही चुपचाप बैठे थे।

"अन्दरूनी जाच से पता चला कि–

"१) खोपडी की हड्डियो पर से चमडी बहुत आसानी से उतर आई। उसमें कही भी जमा हुआ खून नहीं मिला।

"२) खोपडी की हड्डिया साधारण मोटाई की थी, और अच्छी हालत म थी।

"३) दिमाग की झिल्ली पर लगभग चार-चार इच लम्बे [illegible] थे। झिल्ली का रग गदला सफेद था।" इत्यादि। रिपोर्ट मे [illegible] १३ और पैरे दज थे।

उसके बाद सहायको के नाम और दस्तखत थे। [illegible] नतीजे पर पहुचा था कि शव-परीक्षा के दौरान पेट [illegible] हद तक अन्तडियो और गुर्दे मे जो तब्दीलिया देखने [illegible], और [illegible] तफसील सरकारी रिपोर्ट म दी गई है, [illegible] पूरी पूरी सभावना जान पडती है कि [illegible]

हुई। यह जहर जब उसके पेट मे पहुचा तो शराब से मिली हुई हालत
था। पेट की स्थिति से यह निश्चय करना बडा कठिन है कि कौन र
जहर दिया गया। पर यह अनुमान ठीक जान पडता है कि जहर शरा
मे मिला कर दिया गया क्योकि स्मेल्कोव के पेट मे बहुत सी शराब पा
गयी थी।

"पीने मे भी लाजवाब था, ऐं," व्यापारी फिर फुसफुसाया, जिसे
अभी अभी आख खोली थी।

इस रिपोर्ट को पढने म पूरा एक घण्टा लग गया था, परन्तु सरकार
वकील अभी भी सन्तुष्ट नही था। इसकी समाप्ति पर प्रधान जज ने उस
ओर देखते हुए कहा—

"मैं सोचता हू अब अन्दर के एक एक अग की रिपोर्ट पढने की कोई
जरूरत न होगी?"

जवाब म सरकारी वकील ने, बिना प्रधान जज की ओर देख, कड़ी
आवाज मे कहा—

"मैं चाहता ह कि वह भी पढ कर सुनाई जाय।" सरकारी वकील
बैठे बैठे, तनिक सा ऊपर को उठा। उसके चेहरे के भाव स लगता था
मानो वह रहा हो कि रिपोर्ट पढवाने का मुझे अधिकार है, और मैं अपना
अधिकार मनवा कर छोडूगा। अगर इसकी इजाजत न दी गई तो मैं अपील
दायर कर दूगा।

लबी दाढी वाले सज्जन, जिनकी दयार्द्र आखो के नीचे गहरे छल्ले
पड हुए थे और जिनके पट म शूल था, इस समय बहुत कमजोरी महसूस
कर रह थ। उन्होंने प्रधान जज से कहा—

"यह सब पढवाने का आखिर लाभ क्या है? मुकद्दमे को घसीटते जाना
है और क्या! ये नये रगरूट काम-वाम कुछ नही करते, केवल लम्बी
हाकना जानत हैं।"

सुनहरी चश्मे वाले जज ने कुछ नही कहा। वह केवल मुह लटकाये
सामने देखते रहे। उन्हे किसी ओर से भी भलाई की आशा नही थी,
न अपनी बीबी की ओर से, न ही सामान्यत जीवन की ओर से।

रिपोर्ट पढी जाने लगी—

"चिकित्सा विभाग के आदेशानुसार, १५ फरवरी, सन १८८
के दिन मैंने सहायक चिकित्सा इन्स्पेक्टर की उपस्थिति मे परीक्षण न०

-३८ सम्पन्न किया।" मेक्रेटरी की आवाज़ मे पहले सी स्थिरता थी। रन्तु अब की वह और भी ऊंची आवाज मे पढने लगा था, मानो ऊंघते लोगो को जगा देना चाहता हो। "इस परीक्षण मे निम्नलिखित भीतरी अंग शामिल थे–

"१) दिल और दाया फेफडा (छ पौंड वाले शीशे के मरतवान मे)।

"२) आमाशय के अन्दर पाई गई चीज़ें (छ पौंड वाले शीश के मरतवान मे)।

"३) आमाशय (छ पौंड वाले शीश के मरतवान म)।

"४) कलेजा, तिल्ली, गुर्दे (तीन पौंड वाले शीशे के मरतवान मे)।

"५) अंतडिया (छ पौंड वाले मिट्टी के मरतवान मे)।"

रिपोट की पढवाई अभी शुरू हुई थी कि प्रधान जज ने एक जज की ओर झुक कर उसके कान मे कुछ कहा, फिर दूसरी ओर झुक कर दूसरे जज के कान मे कुछ कहा, फिर दोनो की स्वीकृति प्राप्त करने के बाद ऊंची आवाज मे बोला–

"अदालत का मत है कि इस रिपोट के पढने की कोई जरूरत नही।"

सेक्रेटरी ने पढना बन्द कर दिया और कागज समेटने लगा। सरकारी वकील गुस्से मे कुछ लिखने लगा।

"जूरी से अनुरोध है कि वे शहादती चीजो को आ कर जाच कर ले," प्रधान जज ने कहा।

मुखिया और कुछेक अन्य सदस्य उठ कर मेज़ के पास आये। उनकी समझ मे नही आ रहा था कि अपने हाथो को कहा रखें। बारी बारी उन्होने अंगूठी का, शीशे के मरतवान तथा टेस्ट-ट्यूब को देखा। व्यापारी ने तो अंगूठी को पहन कर भी देखा।

"वाह, खूब मोटी उंगली थी उसकी! खीरे जैसी!" अपनी जगह पर लौटते हुए वह बोला। ज़ाहिर है कि उसने अपने मन मे उस भीमकाय व्यापारी का बडा मनोरंजक चित्र बना रखा था।

२१

शहादती चीजो की जाच खत्म हुई। प्रधान जज ने घोषणा की कि जाच का काम समाप्त हुआ। इसके बाद उसने जल्दी जल्दी काम निबटाने के लिए, बिना अन्तराल किये ही, सरकारी वकील से बोलने को कहा।

वह आस लगाये बैठा था कि आखिर सरकारी वकील भी इन्सान है, उ
भी सिगरेट पीने या कुछ खाने की ख्वाहिश होती होगी, या कम से क
औरों पर तो रहम करेगा। परन्तु सरकारी वकील ने किसी पर रहम न
किया—अपने आप पर भी नहीं। वह स्वभावतः बड़ा मन्दबुद्धि था
था, इस पर यह दुर्भाग्य कि स्कूल की अंतिम परीक्षा में सोने का तमगा
पाया था। और जब विश्वविद्यालय में पढ़ता था तो रोमन लॉ का अध्ययन
करते समय उसने "दासता" के विषय पर एक निबन्ध लिखा और उस
निबंध पर भी उसे इनाम मिला था। अतः इस आदमी में आत्मविश्वास
और आत्मसन्तोष कूट कूट कर भरे थे (इसलिए भी कि स्त्रियां उसे पसन्द
चाहती थीं)। उसकी मूर्खता का कोई वार-पार न था।

जब उसे बोलने के लिए कहा गया तो वह बड़ा धीरे धीरे उठा, ताकि
सभी लोग कामदार बढ़िया वर्दी में सजे उसके सुडौल शरीर को आंख भर
कर देख सकें। उसने दोनों हाथ मेज़ पर रखे, सिर को हल्का सा टेढ़ा
कर के कमरे के चारों ओर देखा। फिर, क़ैदियों की ओर बिना देखे ही
अपना भाषण देने लगा जिसे वह उस समय तैयार करता रहा था जब
रिपोर्टें पढ़ी जा रही थीं।

"जूरी के आदरणीय सदस्यो! आपके विचाराधीन केस को आपकी
आज्ञा से मैं एक लाक्षणिक अपराध का नाम दूंगा।"

सरकारी वकील यह समझता था कि वह जो भाषण देगा, वह एक
महान सार्वजनिक महत्त्व का भाषण होगा, उन वकीलों के प्रसिद्ध भाषणों
की ही तरह, जिनका उन दिनों बहुत नाम था। यह ठीक है कि इस
उसका भाषण सुनने वाली केवल तीन औरतें थीं—एक दर्ज़िन, एक
बावर्चिन और एक सीमन की बहिन—और इनके अलावा एक मर्द था जो
कोचवानी का काम करता था, पर इससे क्या फ़र्क पड़ता है। शुरू शुरू
में विख्यात वकीलों को भी ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ा था।
और उसका यह सिद्धान्त था कि सरकारी वकील हर बात में सदा मानव
की जड़ देखे, अर्थात् अपराध के मनोवैज्ञानिक कारणों की गहराइयों तक
पहुंच और समाज के जख्मों को नंगा कर सामने रख दे।

'जूरी के माननीय सदस्यो! आपके विचाराधीन अपराध को आपकी
आज्ञा से मैं इस शताब्दी के अंतिम वर्षों का—हमारे काल का—लाक्षणिक
प्रतीकात्मक अपराध कहूंगा, जिसमें वे सब विशिष्टताएं हैं, जो नैतिक

नन की उस शोचनीय प्रक्रिया की लाक्षणिकताएं है, जिसके प्रभाव में मारे काल मे हमारे समाज के वे तत्व डूब रहे है, जो, आपकी आज्ञा , मैं यह कहूगा कि पतन की भयानक प्रक्रिया की चपेट मे आये हुए है।"

सरकारी वकील ने खूब लम्बा चौडा भाषण दिया। उसकी कोशिश थी कि कोई भी ऐसी प्रभावोत्पादक बात छूट न जाय, जिसे उसने पहले से दिमाग म बिठा रखा था। साथ ही, कहीं भी भाषण टूटे नही, उसका प्रवाह अबाध गति से बहता जाय। इस तरह वह पूरे ७५ मिनट तक बोलता रहा। केवल एक बार वह रुका, और थोडी देर तक खडा अपनी थूक निगलता रहा। पर शीघ्र ही वह सभल गया और पहले से भी ज्यादा जोश के साथ बोलने लगा ताकि जो क्षति इस बाधा के कारण हुई थी वह पूरी हो जाय।

बोलते हुए कभी उसका लहजा कोमल हो उठता, कभी उसम खुशामद की पुट होती। कभी एक पाव पर खडा होता, कभी दूसरे पर और जूरी की ओर देखता। कभी वह धीमे धीमे व्यावहारिक लहजे मे बोलने लगता और अपनी कापी मे लिखी टिप्पणियो की ओर देखता। फिर कभी उसकी आवाज ऊची हो उठती और वह अपराधियो को ललकारने लगता। श्रोताओ की ओर स आखें हटा कर जूरी की ओर दखने लगता। परन्तु बंदियो की ओर वह कभी नही देखता था। उनसे नजर चुरा जाता था, हालाकि तीना अभियुक्त आखें फाड फाड कर उसी की ओर देख रहे थे। अपनी विद्वत्ता दिखाने के लिए वह जगह जगह ऐसे विषयो का हवाला देता जिनका उन दिनो, उस जैसे लोगो के बीच फैशन सा चल पडा था—कुछेक का आज भी फैशन है—और जिन्हें वैज्ञानिक ज्ञान की चरम सीमा माना जाता था। इनमें से कुछ विषय थे जुर्म करने की वशगत तथा जन्मजात प्रवृत्ति, लोम्ब्रासो और तार्द, क्रमिक विकास तथा अस्तित्व के लिए सघर्ष, सम्मोहन विद्या तथा सम्मोहन का प्रभाव, शारको तथा ह्रासवाद इत्यादि।

सरकारी वकील की व्याख्या के अनुसार व्यापारी स्मेल्कोव एक विशिष्ट रूसी था—बलिष्ठ और सदाचारी—जिसने नीच लोगो के हाथो पड कर अपने उदार और विश्वासी स्वभाव के कारण अपना सर्वनाश कर लिया था।

सीमन कार्तीनकिन के चरित्र मे वे प्रवृत्तिया थी जो भूदास प्रथा देन हैं और जिसका वशानुगत प्रभाव अब भी उसके खून मे मौजूद है इस मूढ और निरक्षर आदमी का कोई सिद्धान्त नही, यहा तक कि कोई धर्म भी नही है। बेवकूफ़ीमिया इस आदमी की रखेल है और ... प्रवृत्ति की शिकार है। इसके चरित्र मे पतन के सभी लक्षण प्रकट है परतु अपराध की जड मास्लोवा है जो ह्रासवाद के निम्नतम स्तर का प्रतिनिधित्व करती है।

"यह औरत," मास्लोवा की ओर देखे बिना उसने कहा, "... कि इसकी मालकिन ने आज अदालत के सामने कहा, पढी लिखी है, ... केवल लिखना-पढना ही नही जानती बल्कि फ़ासीसी भी जानती है। ... अनाथ, जिसमे सम्भवत अपराध की जन्मजात प्रवृत्ति है, एक सुसंस्कृत परिवार मे पाली-पोसी गयी और अगर चाहती तो ईमानदारी का परिश्रमी जीवन व्यतीत कर सकती थी किंतु यह अपने हितकारी ... को छोड, अपनी काम वासना की प्यास बुझाने, विषय भोग का ... चकले मे जा बैठी और वहा भी इसने अपनी शिक्षा के फलस्वरूप ... जैसी दूसरी पतिताओ से अलग एक विशिष्ट स्थान पा लिया और ... कि माननीय जजो ने अभी अभी इसकी मालकिन से सुना है यह ... मे आने वाले लोगो को एक रहस्यमय आकर्षण शक्ति से अपने वश ... करती थी, वह शक्ति, जिसकी हमारे काल मे विज्ञान मे भी खोज ... है विशेषकर शारको प्रणाली के वैज्ञानिको द्वारा और जिसे विज्ञान की भाषा मे सम्मोहन प्रभाव का नाम दिया गया है। ठीक इस सम्मोहन प्रभाव द्वारा इसने उस अमीर रूसी मेहमान को फास लिया, जो ... का इतना दयालु था कि हम उसे दूसरा सादको कह सकते हैं और उस भोले विश्वास का अनुचित लाभ उठा कर इसने पहले उसे लूटा और उसके बाद क्रूरता के साथ उसकी जान ले डाली।"

"इसने तो जबान को पूरी लगाम ही छोड दी है," प्रधान जज ने गम्भीर जज की ओर झुक कर मुस्कराते हुए कहा।

"बिल्कुल अहमक आदमी है," गम्भीर जज बोला।

परन्तु सरकारी वकील ... बडे नाटकीय अन्दाज से घूमता हुआ ... भाषण उसी तरह जारी रखा—

'जूरी के माननीय सदस्यो ... पर हो लोगो के ही ...

ा निणय करना है, वल्कि किसी हद तक समाज का भाग्य निर्धारण ी करना है। समाज आपके निणय से प्रभावित होगा। मैं चाहता हू कि आप इस अपराध की गभीरता को पूणतया समझे, उस खतरे को समझे ो मास्लोवा जैसे अपराधिया से समाज को पहुचता है। आपकी आज्ञा े मैं ऐसे लोगो को समाज मे विकार ग्रस्त तत्वा का नाम दूगा। समाज को इस सक्रामक रोग से बचाइये, समाज के भोले भाले और स्वस्थ प्राणिया को इस सक्रामक रोग से बचाइये, सवनाश से बचाइये!"

सरकारी वकील अपनी कुर्सी पर बैठ गया। प्रत्यक्षत उसे अपने भाषण पे बेहद खुशी हुई थी। लगता था जैसे वह स्वय इस बात से अभिभूत हो उठा हो कि जजा के प्रत्याशित निणय का कितना महत्व होगा।

अगर अलकारो और शब्दाडम्बर की ओर ध्यान न दें तो सीधे-सादे शब्दो मे सरकारी वकील के भाषण का यह अथ निकलता था कि मास्लोवा ने व्यापारी का विश्वास प्राप्त कर के उसके मन पर जादू कर दिया। फिर उसी की चाभी ले कर, वह उसके होटल मे गई, इस इरादे से कि उसका सभी रुपया लूट लेगी। लेकिन जब सीमन और येवफोमिया ने उसे चोरी करते हुए पकड लिया तो इसे मजबूर हो कर उनके साथ चोरी का रुपया बाटना पडा। इसके बाद अपने अपराध के चिन्ह मिटाने के लिए वह व्यापारी को वापस होटल मे ले आयी और वहा उसे ज़हर दे कर मार डाला।

सरकारी वकील के बाद एक अधेड उम्र का आदमी वकीलो के बैंच पर से बोलने के लिए उठा। उसने फ्रॉक कोट पहन रखा था जो पीछे से अबाबील की पूछ की तरह लटक रहा था। कोट के नीचे से कलफ लगी सफेद कमीज़ को अर्द्धवृत्त सा दिख रहा था। उसने कार्तीनकिन और बोच्कोवा के पक्ष मे भाषण दिया। इस वकील को उन्होंने तीन सौ रूबल दे कर अपने लिए नियुक्त कर रखा था। अपने भाषण मे उसने यह साबित करने की कोशिश की कि ये दोनो निर्दोष है, और सारा दोष मास्लोवा का है।

उसने मास्लोवा के इस बयान को मानने से इन्कार किया कि रुपया निकालते वक्त बोच्कोवा और कार्तीनकिन दोनो उसके साथ थे। वह बार बार इस बात पर बल देता कि चूकि उस पर ज़हर देने का जुम लगाया गया है, इसलिए उसके बयान को स्वीकार नही किया जा सकता। २,५००

रूबल की रकम के बारे मे उसने कहा कि इतनी रकम आसानी से मेहनती और ईमानदार आदमी कमा सकते है, जब कि उन्हे तीन से [illegible] रूबल तक रोज़ाना मेहमानो से बख्शीश मिल जाती हो। व्यापारी के रु[illegible] मास्लोवा ने चुराये। चुराने के बाद यह रकम उसने किसी को दे दी हो या इससे खो गई होगी, क्योकि उस समय इसका दिमाग ठीक तरह का[म] नही कर रहा था। व्यापारी को ज़हर केवल मास्लोवा ने ही दिया।

इसलिए उसने जूरी से अनुरोध किया कि वे चोरी के इलज़ाम से कार्तीनकिन और बोच्कोवा को बरी कर दें, और यदि वे बरी नहीं कर सकते तो कम से कम यह मान ले कि ज़हर देने मे उनका कोई हाथ नहीं [था।]

अन्त मे सरकारी वकील पर व्यग कसते हुए उसने कहा कि मेरे वि[द्वान] मित्र ने वशानुगत प्रवृत्तियो के बारे म बडा आलिमाना लेक्चर दिया। लेकिन इससे वैज्ञानिक तथ्यो पर भले ही प्रकाश पडता हो, पर बोच्कोवा से उसका कोई सम्बध नही क्योकि उसके कुल और वश के बारे मे कि[सी] को कुछ भी मालूम नही।

सरकारी वकील ने क्रुद्ध दिखने की कोशिश की और घृणा [से] आश्चर्य प्रकट करते हुए अपने कधे बिचकाये और अपनी कापी में [कुछ] लिख लिया।

इसके बाद मास्लोवा का वकील उठा, और डरते डरते, बडे [संकोच] के साथ अपना भाषण देने लगा। उसने इस बात से इन्कार नहीं कि[या] कि रुपया चुराने मे मास्लोवा का हाथ था, पर साथ ही यह बात [बड़े] ज़ोर से कही कि स्मेल्कोव को ज़हर देने का उसका कोई इरादा नहीं था। उसने यह पाउडर केवल नीद लाने के लिए दिया था। इस वकील ने भी अपने भाषण को थोडा जोशीला बनाने की कोशिश की। कहने ल[गा] कि जिस आदमी ने वास्तव मे मास्लोवा को व्यभिचार के गर्त मे ढके[ला] उसे कानून की ओर से कोई सज़ा नही मिली। उस कुकर्म की मार [illegible] मास्लोवा को सहनी पडी है। परन्तु मनोविज्ञान के क्षेत्र म [illegible] चेष्टा बिल्कुल असफल रही, यहाँ तक कि अदालत म बैठे लोग भी [illegible] सी महसूस करने लगे। जिस समय उसने स्त्री जवान के पुरुषो की [illegible] और स्त्रियो की पथभ्रष्टता के बारे मे कुछ कहा तो प्रधान जज ने [illegible] पटरी पर लाने के लिए उसकी [illegible] उसे धीरे से सुझाया कि [illegible] [illegible] के बजाय वह सीधा तथ्यो पर ही ध्यान [दे]।

उसके भाषण के बाद सरकारी वकील जवाब देने के लिए उठा। पहले वकील के तर्कों का उत्तर देते हुए कहा कि भले ही बोच्कोवा के कुल-वंश का कुछ भी मालूम न हो, पर इससे वंशानुगत प्रवृत्तियों का सिद्धान्त गलत साबित नहीं हो जाता। वंशानुगत प्रवृत्तियों के नियमों को विज्ञान ने यहां तक प्रमाणित कर दिया है कि हम न केवल वंश से जुर्म का बल्कि जुर्म से वंश का भी अनुमान लगा सकते हैं। जहां तक मास्लोवा के पक्ष में दिये गये तर्कों का सवाल है – मास्लोवा के वकील ने किसी काल्पनिक व्यक्ति पर दोष लगाया है कि उसने मास्लोवा की अस्मत लूटी और उसे व्यभिचार के गर्त में झोंका (सरकारी वकील ने "काल्पनिक" शब्द पर विशेष कटुता से बल दिया) – तो साक्ष्य हमारे सामने हैं, वह तो यही बतलाता है कि इस औरत ने अनगिनत लोगों को अपने जाल में फांस कर उन्हें भ्रष्ट किया होगा। इतना कह चुकने के बाद सरकारी वकील बड़े गर्वोल्लास के साथ अपनी कुर्सी पर जा बैठा।

इसके बाद कैदियों को इजाज़त दी गई कि वे अपने पक्ष में जो कुछ कहना चाहें कह सकते हैं।

येवफीमिया बोच्कोवा ने फिर वही बात दोहराई कि न उसे इस मामले का कुछ मालूम है और न ही उसने उसमें भाग लिया है। उसने सारा दोष मास्लोवा पर लगाया। सीमन कार्तीनकिन बार बार यही कहता रहा – "यह आपका काम है, पर मैं निर्दोष हूं। यह बड़ा अन्याय है।"

मास्लोवा अपने पक्ष में कुछ भी नहीं बोली। जब प्रधान जज ने कहा कि यदि वह कुछ कहना चाहे तो कह सकती है तो उसने केवल आंख उठा कर प्रधान जज की ओर देखा, फिर कमरे में चारों ओर इस नज़र से देखा मानो किसी निरीह हिरन पर शिकारी टूट पड़े हों, और सिर झुका कर फफक फफक कर रोने लगी।

"क्या बात है?" व्यापारी ने नेख्लूदोव से पूछा। नेख्लूदोव के मुंह से एक अजीब सी आवाज़ निकली थी। वह सिसकी दबाने की चेष्टा कर रहा था।

नेख्लूदोव अभी तक अपनी वर्तमान स्थिति के महत्व को नहीं समझ पाया था। उसका ख्याल था कि उसके स्नायु कमजोर होने के कारण ये सिसकियां उठ रही हैं, और आंसू आंखों में भर रहे हैं। उसने आंसू

के लिए अपनी कमानीदार ऐनक आखो पर लगा ली, फिर रूमाल निक-
कर नाक साफ करने लगा।

वह डर रहा था कि यदि अदालत मे सब लोगो को उसके दुर्व्यसन
का पता चल गया तो बडी बदनामी होगी। इस डर ने आत्मा की आवाज
को दबा दिया। यह डर ही इस समय सबसे अधिक बलवान था।

२२

कैदियो ने जो कहना था कह लिया। इसके बाद इस बात का नि-
होने लगा कि किस रूप मे जूरी के सदस्यो के सामने सवाल रख जाए।
इसमे कुछ वक्त लग गया। आखिर सवाल तैयार हो गये और प्रधान जज
ने अपना अन्तिम भाषण देना शुरू किया।

जूरी को अपना फैसला देने के लिए कहने से पहले प्रधान जज थोड़ी
देर तक बडे मीठे मीठे और दोस्ताना ढग से भाषण देता रहा और समझाता
रहा कि किस भाति चोरी चोरी होती है और डाका डाका होता है।
अगर किसी जगह पर ताला पडा हुआ है और चोरी हो जाती है तो
वह भी चोरी है और अगर किसी जगह पर ताला नही पडा हुआ है
और चोरी हो जाती है तो वह भी चोरी है। केवल पहली चोरी एक
ऐसे स्थान पर हुई जहा पर ताला था और दूसरी एक ऐसे स्थान पर
जहा पर ताला नही था। बोलते हुए प्रधान जज किसी किसी वक्त नेख्ल्यू-
दोव की ओर देखता, इस आशा से कि यदि ये महत्वपूर्ण तथ्य उसकी समझ
मे आ गये तो वह बाकी सदस्यो को भी समझा देगा। जब उसने देखा
कि इन तथ्यो पर वह काफी प्रकाश डाल चुका है तो वह एक दूसरे विषय
की व्याख्या करने लगा। हत्या एक ऐसी क्रिया है जिसके परिणामस्वरूप
इन्सान की मौत हो जाती है। इसलिए जहर देने को भी हत्या का नाम
दिया जा सकता है। जब प्रधान जज ने देखा कि यह तथ्य भी जूरी के
सदस्यो के दिमाग मे बैठ गया है तो उसने समझाना शुरू किया कि यदि
चोरी और हत्या एक ही वक्त म एक साथ किये जाय तो इस सम्मिलित
जुर्म को हम हत्या के साथ की गई चोरी कहेंगे।

वह स्वय अपना भाषण जल्दी समाप्त करना चाहता था, क्योंकि
जानता था कि उसकी स्विस प्रेमिका उसकी राह देख रही होगी, लेकिन

अपने व्यवसाय की उसे कुछ ऐसी आदत पड गई थी कि जब एक बार बोलना शुरू कर देता तो उसके लिए बोलना बन्द करना कठिन हो जाता था। अत अब वह जूरी को बडी तफसील के साथ यह समझाने लगा कि यदि वे समझें कि बंदिया ने जुम किया है तो वे अपने फैसले मे उन्हे मुजरिम ठहरायें, और यदि समझें कि उन्होने जुम नही किया है तो अपने फैसले मे कह दें कि वे मुजरिम नही हैं, और यदि वे देखें कि उन्होने एक जुम तो किया है लेकिन दूसरा जुम नही किया, तो वे उन्हे एक जुम मे मुजरिम करार दें और दूसरे जुम मे कह दें कि वे मुजरिम नही हैं। आगे चल कर प्रधान जज ने बताया कि उन्हे इस अधिकार का समझदारी के साथ प्रयोग करना चाहिए। वह यह भी समझाना चाहता था कि यदि किसी सवाल के जवाब मे वे अपना उत्तर हा मे देना चाहते हो, तो यह सकारात्मक उत्तर उस सवाल के सभी अशो पर लागू होगा। परन्तु यदि वे समूचे प्रश्न का उत्तर हा मे नही देना चाहते हो, तो उन्हे चाहिए कि स्पष्टतया बता दें कि उनका जवाब प्रश्न के किस अश पर लागू नही होता। पर प्रधान जज ने घडी की ओर देखा। तीन बजने मे पाच मिनट रह गये थे। यह सोच कर कि और देर करना ठीक नही प्रधान जज ने अपने कानूनी तथ्यो का लेखा समेटने का निश्चय किया।

"इस मुकद्दमे की मुख्य बाते क्या हैं?" प्रधान जज ने कहा, और फिर वे सब बात दोहराने लगा, जो कई बार सरकारी वकील, अन्य वकीलो तथा गवाहो द्वारा कही जा चुकी थी।

प्रधान जज अपना भाषण देता गया। उसके साथ बैठे जज बडे ध्यान से उसका भाषण सुनते रहे। पर किसी किसी वक्त आख उठा कर घडी की ओर देख लेते। उनके विचार मे प्रधान जज का भाषण कुछ ज्यादा लम्बा था, लेकिन था बहुत अच्छा। ऐसा ही होना चाहिए था। सरकारी वकील, अन्य वकील तथा अदालत मे बैठे सभी लोगो का यही विचार था। प्रधान जज ने अपनी अन्तिम टिप्पणिया समाप्त की।

जान पडा जैसे सब कुछ कहा जा चुका है। लेकिन नही। प्रधान जज को बोलने का अधिकार था, और वह इस अधिकार को जल्दी छोड देने वाला नहीं था। अपनी आवाज सुनते हुए उसे बडा आनंद आ रहा था। अपना लहजा बडा प्रभावशाली लग रहा था। इसलिए उसने उचित समझा कि जूरी के सदस्यो को उनके अधिकारो के बारे मे भी दो शब्द कह दे,

कि उन्हें अपने अधिकारों का किस भांति उचित प्रयोग करना और अनुचित प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्हें यह नहीं भूलना कि उन्होंने शपथ ले रखी है, कि वे समाज के अन्तःकरण हैं। जो वे अपने कमरे मे करें उसे पवित्र मानें और उनका भेद बाहर किसी को न दें, इत्यादि, इत्यादि।

जब से प्रधान जज ने बोलना शुरू किया था, मास्लोवा की आंख उसके चेहरे पर गडी हुई थी, मानो उसे डर हो कि कहीं कोई शब्द छूट न जाय। इधर नेख्लूदोव मास्लोवा के चेहरे की ओर देखे जा रहा था, क्योंकि उसे अब यह डर नहीं था कि वह उसकी ओर देखने लगेगा। जब हम मुद्दत के बाद किसी परिचित चेहरे को देखते हैं तो सबसे पहले हमारा ध्यान उन बाहरी तबदीलियों की ओर जाता है जो उस अर्से में उस पर घटी हैं। फिर धीरे धीरे वह चेहरा अधिकाधिक अपने पहले रूप जैसा लगने लगता है, और जो परिवर्तन उसमें समय के कारण हुए हैं वे आंखों से ओझल होने लगते हैं और हमारे आन्तरिक नेत्रों के सामने उसके विलक्षण, एकमात्र आध्यात्मिक व्यक्तित्व का मुख्य भाव उभर कर सामने आ जाता है।

और यही नेख्लूदोव अनुभव कर रहा था।

मास्लोवा ने कैंदियों का लिबास पहन रखा था। उसका शरीर भर गया था। छातियां उभर आयी थीं। चेहरे का निचला हिस्सा भर गया था। माथे और कनपटियों पर कुछेक झुरियां नजर आने लगी थीं। आंखें सूजी हुई थीं। पर इन सब तबदीलियों के बावजूद यह वही कात्यूशा थी जो उस ईस्टर के दिन अपने निष्कपट, प्रेमपूर्ण नेत्रों से नेख्लूदोव की ओर देखती रही थी, जिसे वह हृदय से प्रेम करती थी। तब उसकी प्रेम भरी, हंसती आंखों में खुशी और जीवन की उमंगें छलछला रही थीं।

"कितने बरसों से मैंने उसे नहीं देखा। अजीब बात है कि आज ही यह मुकद्मा पेश होना था जब मैं जूरी का सदस्य हूं और यह एक कैंदी की हालत में, मुजरिमों के कटघरे में मेरे सामने खडी है। इस मामले का अन्त क्या होगा? काश कि यह मुकद्मा जल्दी से जल्दी खत्म हो पाये।"

उसके दिल में पश्चाताप की भावना उठने लगी थी, परन्तु नेख्लूदोव ने उसे दबा दिया। वह चाहता था कि इसे केवल एक आकस्मिक घटना मात्र ही समझे, जो शीघ्र ही टल जायेगी और उसका कोई असर उसका

जीवन चर्या पर नही पडेगा। उसे अपनी स्थिति उस पिल्ले की सी लग रही थी जो किसी स्थान को अपने मल-मूत्र से गन्दा कर देता है और उसका मालिक उसे गरदन से पकड कर उसी जगह ले आता है, और उसकी नाक जबरदस्ती उस गन्दगी मे घुसेडता है ताकि उसे सबक आ जाय। पिल्ला किकियाता है, पीछे को हटता है, और अपने दुष्कृत्य के परिणाम से जहा तक हो सके दूर भागना चाहता है, परन्तु उसका निमम मालिक उसे छोडता नही। उसी तरह नेख्लूदोव को महसूस होने लगा था कि उसने कैसा घणित काम किया। साथ ही वह मालिक के वलिष्ठ हाथ का भी अनुभव कर रहा था। परन्तु अभी तक वह अपने दुष्कृत्य की गम्भीरता को पूणतया समझ नही पाया था, और यह मानने से इकार कर रहा था कि उसे किसी मालिक ने पकडा हुआ है। वह यह मानना नही चाहता था कि जो कुछ वह देख रहा है वह उसी के दुष्कृत्य का परिणाम है। परन्तु मालिक का निमम हाथ उसे पकडे हुए था, और नेख्लूदोव को पूर्वाभास सा हो रहा था कि वह भाग नही पायेगा। उसका धैय अब तक कायम था, और वह जूरी की पहली पक्ति मे रोज की तरह, बडी स्थिरता और आत्मविश्वास के साथ, बडे आराम से एक टाग दूसरी टाग पर रखे कुर्सी पर बैठा था, और हाथ म अपनी ऐनक हिला-डुला रहा था। परन्तु आत्मा की गहराइयो मे उसे सारा वक्त अपने दुष्कृत्य की क्रूरता, कायरपन और नीचता नज़र आ रही थी। केवल इसी दुष्कृत्य की नही, बल्कि उसे अपने समूचे जीवन की भी स्वार्थाधता, अधःपतन, क्रूरता, और निष्क्रियता का बोध हो रहा था। एक भयानक पर्दा था जो, न मालूम कैसे, इस पाप को तथा पिछले बारह साल के जीवन को उसकी आखो से छिपाये हुए था। आज वह पर्दा हिलने लगा था, और उसे इसके पीछे छिपी चीज़ो की झलक मिलने लगी थी।

२३

आखिर प्रधान जज ने अपना भाषण समाप्त किया, और बडे खूबसूरत अन्दाज से प्रश्नो की सूची उठा कर जूरी के मुखिया के हाथ मे दी, जो उसे लेने के लिए आगे बढ आया। जूरी के सदस्यो ने चैन की सास ली

कि उन्हें अपने अधिकारों का किस भांति उचित प्रयोग करना चा‹ और अनुचित प्रयोग नही करना चाहिए। उन्हें यह नही भूलना चाहि कि उन्होंने शपथ ले रखी है, कि वे समाज के अन्त करण हैं। जो बा वे अपने कमरे मे करें उन्हे पवित्र मानें और उनका भेद बाहर किसी को न दें, इत्यादि, इत्यादि।

जब से प्रधान जज ने बोलना शुरू किया था, मास्लोवा की दृ उसके चेहरे पर गडी हुई थी, मानो उसे डर हो कि कहीं कोई श छूट न जाय। इधर नेख्लूदोव मास्लोवा के चेहरे की ओर देख जा र था, क्योकि उसे अब यह डर नही था कि वह उसकी ओर देखने लगेगी। जब हम मुद्दत के बाद किसी परिचित चेहरे को देखते हैं तो सबसे पहले हमारा ध्यान उन बाहरी तबदीलियों की ओर जाता है जो उस बीच में उस पर घटी हैं। फिर धीरे धीरे वह चेहरा अधिकाधिक अपने पहले रूप जैसा लगने लगता है, और जो परिवतन उसमे समय के कारण हुए हैं वे आंखों से ओझल होने लगते है और हमारे आन्तरिक नेत्रो के सामने उसके विलक्षण, एकमात्र आध्यात्मिक व्यक्तित्व का मुख्य भाव उभर कर सामने आ जाता है।

और यही नेख्लूदोव अनुभव कर रहा था।

मास्लोवा ने कैदियो का लिबास पहन रखा था। उसका शरीर गदरा गया था। छातिया उभर आयी थी। चेहरे का निचला हिस्सा भर गया था। माथे और कनपटियो पर कुछेक झुरिया नजर आने लगी थी। आंखें सूजी हुई थी। पर इन सब तबदीलियो के बावजूद यह वही कात्यूशा थी जो उस ईस्टर के दिन अपने निष्कपट, प्रेमपूर्ण नेत्रो से नेख्लूदोव की ओर देखती रही थी, जिसे वह हृदय से प्रेम करती थी। तब उसकी प्रेम भरी, हसती आखो मे खुशी और जीवन की उमगें छलछला रही थीं।

"कितने बरसो से मैंने उसे नही देखा। अजीब बात है कि आज ही यह मुकद्दमा पश होना था जब मैं जूरी का सदस्य हू और यह एक कैदी की हालत म, मुजरिमो के कटघर मे मेरे सामने खडी है। इस मामले का अन्त क्या होगा? काश कि यह मुकद्दमा जल्दी से जल्दी खत्म हो पाये!"

उसके दिल म पश्चात्ताप की भावना उठने लगी थी, परन्तु नेख्लूदोव ने उसे दबा दिया। वह चाहता था कि इसे केवल एक आकस्मिक घटना मात्र ही समझे, जो शीघ्र ही टल जायेगी और उसका कोई असर उस

जीवन चर्या पर नही पडेगा। उसे अपनी स्थिति उस पिल्ले की सी लग रही थी जो किसी स्थान को अपने मल मूत्र से गदा कर देता है और उसका मालिक उसे गरदन से पकड कर उसी जगह ले आता है, और उसकी नाक जबरदस्ती उस गदगी मे घुसेडता है ताकि उसे सबक आ जाय। पिल्ला किकियाता है, पीछे को हटता है, और अपने दुष्कृत्य के परिणाम से जहा तक हो सके दूर भागना चाहता है, परन्तु उसका निमम मालिक उसे छाडता नही। उसी तरह नेख्लूदोव को महसूस होने लगा था कि उसने कैसा घृणित काम किया। साथ ही वह मालिक के बलिष्ठ हाथ का भी अनुभव कर रहा था। परन्तु अभी तक वह अपने दुष्कृत्य की गभीरता को पूणतया समझ नही पाया था, और यह मानने से इन्कार कर रहा था कि उसे किसी मालिक ने पकडा हुआ है। वह यह मानना नही चाहता था कि जो कुछ वह देख रहा है वह उसी के दुष्कृत्य का परिणाम है। परन्तु मालिक का निमम हाथ उसे पकडे हुए था, और नेख्लूदोव को पूर्वाभास सा हो रहा था कि वह भाग नही पायेगा। उसका धैय अब तक कायम था, और वह जूरी की पहली पक्ति मे रोज की तरह, बडी स्थिरता और आत्मविश्वास के साथ, बडे आराम से एक टाग दूसरी टाग पर रखे कुर्सी पर बैठा था, और हाथ मे अपनी ऐनक हिला-डुला रहा था। परन्तु आत्मा की गहराइयो मे उसे सारा वक्त अपने दुष्कृत्य की क्रूरता, कायरपन और नीचता नजर आ रही थी। केवल इसी दुष्कृत्य की नही, बल्कि उसे अपने समूचे जीवन को भी स्वार्थपरता, अधपतन, क्रूरता, और निष्क्रियता का बोध हो रहा था। एक भयानक पर्दा था जो, न मालूम कैसे, इस पाप को तथा पिछले बारह साल के जीवन को उसकी आखो से छिपाये हुए था। आज वह पर्दा हिलने लगा था, और उसे इसके पीछे छिपी चीजो की झलक मिलने लगी थी।

२३

आखिर प्रधान जज ने अपना भाषण समाप्त किया, और बडे खूबसूरत अन्दाज से प्रश्नों की सूची उठा कर जूरी के मुखिया के हाथ म दी, जो उसे लेने के लिए आगे बढ़ आया। जूरी के सदस्यों ने चैन की सास ली

कि अब अपने कमरे में जा पायेंगे और उठ उठ कर अदालत से बाहर जाने लगे। बाहर जाते हुए वे ऐसे लग रहे थे मानो किसी बात पर तसल्ली महसूस कर रहे हो। अब भी उनकी समझ मे नही आ रहा था कि अपने हाथ कहा पर रखें। ज्यो ही वे अपने कमरे में अन्दर पहुचे तो दरवाजा बन्द कर दिया गया और एक हथियारबन्द सिपाही दरवाज़े के बाहर आ कर खडा हो गया। उसने मियान मे से तलवार निकाली और उसे कन्धे पर रख कर पहरा देने लगा। जज भी अदालत के कमरे म से उठ गये। कैदियो को भी बाहर ले जाया गया।

जूरी के सदस्यो ने कमरे मे पहुचते ही पहले की तरह अपने सिगरेट सुलगाये। जितनी देर तक वे अदालत मे बैठे रहे थे, उन सब का अपनी स्थिति किसी हद तक अस्वाभाविक और झूटी लगती रही थी। पर अपने कमरे मे पहुच कर, सिगरेट सुलगाते ही, यह भावना जाती रही थी। उन्होंने इतमीनान की सास ली और बैठते ही बडे जोश से एक दूसरे के साथ बाते करने लगे।

"लडकी निर्दोष है, वह इस मामले मे फस गई है," दयालुस्वभाव व्यापारी बोला। "हमे सिफारिश करनी चाहिए कि इसे क्षमा कर दिया जाय।"

"इसी बात पर तो हमे विचार करना है," मुखिया कहने लगा, "हमे अपनी निजी भावनाओ को बहुत महत्व नही देना चाहिए।"

"प्रधान जज का भाषण अच्छा था," कर्नल बोला।

"खाक अच्छा था, मुझे तो नीद आने लगी थी!"

"मुख्य बात तो यह है कि अगर मास्लोवा नौकरो के साथ नही मिली थी तो नौकरो को रुपये का पता ही नही चल सकता था," यहूदी क्लर्क बोला।

"तो आप क्या समझते हैं, रुपये मास्लोवा ने चुराये है?" जूरी के एक सदस्य ने पूछा।

"मैं कभी भी यह नही मान सकता," दयालुस्वभाव व्यापारी बोला, "यह सब उस लाल लाल आखो वाली चुडैल की करतूत है।"

"सभी छटे हुए बदमाश हैं," कर्नल ने कहा।

"पर वह तो कहती है कि उसने कमरे के अन्दर पाव तक नही रखा था।'

"तो तुम उसकी बात मानोगे? कुछ भी हो जाय, मैं उस डायन की बात तो कभी भी नही मान सकता।"

"तुम्हारे मानने या न मानने से तो इस सवाल का फैसला नही हो जायेगा," क्लर्क बोला।

"चाभी तो लडकी के पास थी।"

"तो क्या हुआ?" व्यापारी झट से बोल उठा।

"और अगूठी भी।"

"पर क्या लडकी ने सब बात साफ साफ नही बता दी?" व्यापारी ने फिर चिल्ला कर कहा। "वह आदमी अपने मिज़ाज का था, और कुछ ज्यादा पी भी गया था। उसने लडकी का एक घूसा जमा दिया। सीधी सी बात है। उसके बाद उसे अफसोस हुआ—स्वाभाविक बात है, और उसने कहा, बस, बस, रोओ नही, यह लो, यह ले लो। कहते है उसका कद छ फुट पाच इच था। वजन भी कम से कम तीन मन रहा होगा।"

"सवाल यह नही है," प्योत्र गेरासिमोविच कहने लगा, "सवाल यह है कि इस मामले की जड मे कौन है? यह लडकी या नौकर? इनमे से किसको इसका ख्याल आया और किसने बाकियो को उकसाया?"

"नौकर अकेले यह काम नही कर सकते थे। चाभी लडकी के पास थी।"

इस तरह की फुटकर बाते काफी देर तक चलती रही। अन्त मे मुखिया ने कहा—

"क्षमा कीजिये, क्या यह बेहतर नही होगा कि हम मेज़ पर बैठ कर इस मामले पर विचार करें? आइये, चलिये।" और वह जा कर अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठ गया।

"लेकिन ये रण्डिया जो न करें वह थोडा," क्लर्क बोला। उसकी राय मे मास्लोवा मुजरिम थी। और इस राय की पुष्टि मे वह सुनाने लगा कि किस तरह एक दिन एक सडक पर उसके किसी दोस्त को एक रण्डी मिली जिसने उसकी घडी चुरा ली।

यह सुन कर कर्नल को भी एक घटना याद हो आई, जो इससे भी ज्यादा रोचक थी और जिसमे चादी की समोवार चुराई गई थी।

"सज्जनो, मेरी प्रार्थना है कि आप इन प्रश्नो को सुनें," ...
ने पेंगिल से मेज को ठकारते हुए कहा।

सब चुप हो गये।

प्रश्नो को इस तरह पेश किया गया था—

१) क्या सीमन कार्तीनकिन—किसान, उम्र तैंतीस वर्ष, गाव ...
जिला क्रापीवेन्स्की—इस बात का मुजरिम है कि उसने १७ जनवरी, १...
के दिन और लोगो से मिल कर नामक शहर मे स्मेल्कोव नामक व्यापा...
को ब्राण्डी म ज़हर मिला कर पिलाया, इस इरादे स कि उसे मार ...
उसका रुपया लूट लिया जाय, जिसके परिणामवश स्मेल्कोव की मृत्यु हो
गई? क्या वह इस बात का भी मुजरिम है कि इसने उस आदमी ...
लगभग दो हजार पाच सौ रूबल नकद और एक अगूठी चुरा ली?

२) क्या येवफीमिया इवानोव्ना बोच्कोवा, उम्र ४३ वर्ष, इस बात
की मुजरिम है कि उसने उपरोक्त अपराध किये हैं?

३) क्या येकातेरीना मिखाइलोव्ना मास्लोवा, उम्र २७ वर्ष, इस
बात की मुजरिम है कि उसने उपरोक्त पहले सवाल मे दिये गए अपराध
किये है?

४) यदि बंदी येवफीमिया बोच्कोवा ने वह अपराध नही किया जिसका
उल्लेख पहले प्रश्न मे किया गया है तो क्या वह इस बात की मुजरिम
है कि उसने १७ जनवरी, १८८ को शहर म, जहा वह होटल
"मावीतानिया" मे मुलाजिम थी, होटल के एक मेहमान, व्यापारी स्मेल्को
के बैग मे से जिस पर ताला चढा हुआ था, और जो उपरोक्त व्यापारी
के कमरे मे रखा था, २,५०० रूबल की रकम चुरा ली? और इस काम
के लिए उसने बैग पर लगे ताले को उसी द्वारा लायी चाभी लगा कर
खोला?

मुखिया ने पहला सवाल पढ कर सुनाया।

"तो सज्जनो, आपकी क्या राय है?"

इस प्रश्न का उत्तर मिलने मे देर नही लगी। सभी ने एकमत
कर कहा—"मुजरिम है।" उन्हे विश्वास था कि जहर देने और ...
करने, दोनो कामो मे कार्तीनकिन का हाथ था। केवल एक बूढे मज...
की राय इससे भिन्न थी। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर म उसने एक ही जवाब
दिया था कि बरी कर दिया जाय।

मुखिया ने समझा कि सवाल उसकी समझ में नही आया, इसलिए वह उसे बताने लगा कि किस तरह हर बात से कार्तीनकिन और बोच्कोवा का अपराध सिद्ध होता है। जवाब मे बूढे ने कहा कि मैं सवाल को भली भांति समझता हू पर अब भी समझता हू कि यह बेहतर होगा कि उस पर दया की जाय। "हम खुद भी कोई सन्त नही हैं," उसने कहा और अपनी राय पर अडा रहा।

दूसरे सवाल पर जिसका सम्बन्ध बोच्कोवा से था बहुत बहस हुई, बहुत शोर-गुल हुआ, परन्तु अन्त मे यही कहा गया कि "मुजरिम नही है"। उसके विरुद्ध कोई स्पष्ट प्रमाण नही था कि जहर देने मे उसका कोई हाथ था। इस तथ्य पर उसके वकील ने भी बहुत बल दिया था।

व्यापारी मास्लोवा को बरी करवाना चाहता था। इसलिए उसने इस बात पर जोर दिया कि अपराध की जड बोच्कोवा ही थी। जूरी के बहुत से सदस्यो का भी यही ख्याल था। लेकिन मुखिया बडा कानूनी आदमी था, उसने कहा कि हमारे पास कोई प्रमाण नही जिसके आधार पर हम कह सके कि जहर देने मे बोच्कोवा ने भाग लिया। बडी बहस हुई, पर अन्त मे मुखिया की राय ही सबको माननी पडी।

लेकिन चौथे सवाल के जवाब मे, जिसका सम्बन्ध भी बोच्कोवा से था, कहा गया कि "मुजरिम है"। परन्तु बूढे मजदूर के आग्रह पर सिफारिश की गई कि उसे क्षमा कर दिया जाय।

तीसरे सवाल पर बडी गरमागरम बहस हुई। यह मास्लोवा के बारे म था। मुखिया का कहना था कि जहर देने और चोरी करने, दोना मे वह अपराधी थी। लेकिन व्यापारी इसका विरोध करता था। कनल, क्लर्क और बूढे मजदूर ने व्यापारी का पक्ष लिया, बाकी लोग असमजस मे थे। नतीजा यह हुआ कि मुखिया की राय जोर पकडने लगी। इसका मुख्य कारण यह था कि सभी थक गये थे, और ऐसा मत अपनाना चाहते थे जिससे जल्दी जल्दी किसी फैसले पर पहुच सके ताकि छुट्टी हो।

नेख्लूदोव को यकीन था कि मास्लोवा निर्दोष है। उसने न चोरी की है और न ही जहर दिया है। उसने आज जो कुछ देखा, और जो कुछ वह मास्लोवा के बारे मे पहले से जानता था, उसके आधार पर वह इस नतीजे पर पहुचा, और उसे यकीन था कि बाकी सब लोग भी इसी नतीजे पर पहुचेंगे। व्यापारी के तक बडे बेडौल से थे (प्रत्यक्षत इनका आधार

मास्लोवा का शारीरिक आकर्षण था जिस पर व्यापारी लट्टू हो रहा था, और जिसे छिपाने की व्यापारी ने कोई कोशिश भी नही की थी)। उधर मुखिया अपनी बात पर अडा हुआ था। और सबसे बडी बात यह थी कि लोग थक गये थे। इन सब बातो के कारण इस बात की सभावना बनने लगी थी कि मास्लोवा को मुजरिम करार दिया जायेगा। जब नेख्लूदोव ने यह देखा तो वह चिन्तित हो उठा और उसका मन चाहा कि उठ कर अपनी राय दे। लेकिन वह डर रहा था कि कही लोगो को मास्लोवा के साथ उसके सम्बन्ध का पता न चल जाय। पर फिर भी उसने सोचा कि यदि इसी तरह चलता रहा तो मामला हाथ से निकल जायेगा। शर्माते सकुचाते हुए उसने बोलने का निश्चय किया, उसका चेहरा भी पीला पड़ गया। पर ऐन उसी वक्त प्योत्र गेरासिमोविच ने एतराज उठाने शुरू कर दिये और वही बात कहने लगा जो नेख्लूदोव कहना चाहता था। मुखिया को अफसरो की तरह बाते करते देख कर वह झल्ला उठा था।

"मुझे भी एक मिनट के लिए बोलने की इजाजत दीजिये," वह बोला, "आप यह समझते जान पडते हैं कि चूकि चाभी मास्लोवा के पास थी इसलिए चोरी भी उसी ने की है। क्या यह नौकरो के लिए कही ज्यादा आसान नही था कि मास्लोवा के होटल मे से चले जाने के बाद वे कोई दूसरी चाभी लगा कर बैग खोल लेते?"

"क्यो नही, क्यो नही," व्यापारी ने कहा।

"यह सभव ही नही कि उसने रुपया लिया हो। रुपया ले लेती तो उसकी समझ मे ही न आता कि उसके साथ करे क्या।"

"यही तो मैं कहता हू," व्यापारी बोला।

"हा, यह मुमकिन है कि मास्लोवा के होटल मे आने पर ही उन्हें चोरी करने का ख्याल आया। इसके बाद उन्होंने मौके का फायदा उठाया और सारा दोष मास्लोवा के सिर मढ दिया।"

प्योत्र गेरासिमोविच इतना चिढ कर बोला कि उसे सुन कर मुखिया भी चिढ उठा। उसने जिद्द पकड ली और उसकी बात का विरोध करने लगा। पर प्योत्र गेरासिमोविच की बाते जूरी के सदस्यो को इतनी तर्कपूर्ण जान पडी कि उनमे से अधिकाश उसके हक मे हो गये, और यह निश्चय किया कि मास्लोवा ने रुपये नही चुराये और अगूठी भी उसे दी गई थी, उसने खुद नही ली। पर जब यह सवाल उठा कि जहर देने मे उसका

कोई हाथ था या नही तो व्यापारी बडे जोश के साथ बोला कि इस अपराध से भी उसे बरी कर दिया जाना चाहिए, क्योकि उसके जहर देने का कोई प्रयोजन ही नही हो सकता था। जवाब मे मुखिया ने कहा कि उसे किसी सूरत मे भी बरी नही किया जा सकता क्योकि उसने स्वय अपना जुर्म कबूल किया है और कहा है कि उसने पाउडर दिया।

"हा, मगर यह समझ कर कि वह अफीम थी।"

"अफीम से भी तो आदमी मर सकता है," कनल ने कहा। कनल का ध्यान किसी बात पर भी ज्यादा देर तक टिक नही सकता था। उसने बताना शुरू किया कि एक बार उसके साले की पत्नी ने कुछ ज्यादा मात्रा मे अफीम खा ली। अगर पडोस मे ही डाक्टर नही रहता होता, और वक्त पर इलाज न हो जाता तो वह जरूर मर जाती। कनल ने यह कहानी इतने रोचक ढग से सुनाई, इतनी स्थिरता और बडप्पन के साथ कि बीच मे बोलने का किसी को भी साहस नही हुआ। पर उसकी कहानी सुन कर, छूत की बीमारी की तरह, क्लर्क को भी एक कहानी याद हो आई।

"कई लोगो को अफीम खाने की आदत पड जाती है, यहा तक कि चालीस चालीस बूदो तक वे चढा जाते है। मेरा एक रिश्तेदार था "

परन्तु कनल को उसका इस तरह विघ्न डालना पसन्द नही था। उसने अपनी कहानी जारी रखी और सुनाने लगा कि अफीम का उसके साले की पत्नी पर क्या असर हुआ।

"सज्जनो, यह मत भूलिये कि पाच बजा चाहते हैं," जूरी का एक सदस्य बोला।

"अच्छी बात है, तो सज्जनो, बताइये, क्या निश्चय हुआ?" मुखिया ने पूछा। "क्या हम यह कह कि उसने अपराध तो किया है लेकिन चोरी करने का उसका इरादा नही था? न ही कोई चीज उठाने का? क्या यह काफी होगा?"

प्योत्र गेरासिमोविच सहमत हो गया। उसे इस बात की खुशी थी कि उसकी जीत हुई है।

"पर हमे यह सिफारिश करनी चाहिए कि उसे क्षमादान दिया जाय," व्यापारी बोला।

सभी सहमत हो गये। केवल बूढा मजदूर बार बार यही कहता रहा कि उन्हें यह घोषणा करनी चाहिए कि वह मुजरिम नही है।

"एक ही बात है," मुखिया ने समझाया, "चोरी करने का इरादा नही था, और कोई चीज नही उठायी। इसलिए स्पष्ट है कि वह बेकसूर है।"

"अच्छी बात है। यही ठीक रहेगा। और हम सिफारिश करते हैं कि उसे क्षमादान दिया जाय," व्यापारी ने खुशी खुशी कहा।

वे सब इस कदर थके हुए थे, और बहस के कारण यहा तक अपनी सुध-बुध खो बैठे थे कि किसी को भी यह नही सूझा कि साथ म यह भी जोड दें कि मास्लोवा ने पाउडर देने का अपराध तो किया है परन्तु उसका कोई इरादा जान लेने का नही था।

नेख्लूदोव इतना उत्तेजित था कि इस छूट की ओर उसका ध्यान ही नही गया। बस, जैसा फैसला हुआ था उसके अनुसार जवाब लिख डाले गये और जूरी उन्हे अदालत मे ले चले।

रब्ले ने एक जगह एक जज का ज़िक्र किया है जो किसी मुकद्दमे की पैरवी करते समय तरह तरह के कानूनो के हवाले देता, कितने ही पन्ने न्याय ग्रथो मे से लातीनी जबान के पढ कर सुनाता और इसके बाद मुद्दई मुद्दालेह से कहता कि पासा फेंक कर फैसला कर लीजिये, अगर पासा जिस्त मे बैठे तो मुद्दई ठीक कहता है, और जो ताक मे बठे तो मुद्दालेह।

इस मुकद्दमे की भी वैसी ही स्थिति थी। यह फैसला इसलिए नहीं किया गया कि सभी इससे सहमत थे, बल्कि इसलिए कि प्रधान जज अपने लम्बे भाषण मे वह बात बताना भूल गया था जो वह हमेशा ऐसे मौको पर बता दिया करता था कि इन प्रश्नो के उत्तर मे यह भी लिखा जा सकता है—"कुसूरवार है, लेकिन इसका इरादा जान लेने का नहीं था।" इसलिए भी कि कर्नल बडी देर तक अपने साले की बीवी की कहानी सुनाता रहा था। और नेख्लूदोव इतने उत्तेजित हो उठा था कि इस शर्त की ओर—"इरादा जान लेने का नही था"—उसका ध्यान ही नही गया। उसका ख्याल था कि ये शब्द लिख देने से ही कि "लूटने का इरादा नही था", फर्देजुर्म रद्द हो जाता है। इसलिए भी कि जब प्रश्न और उनके उत्तर पढे जा रहे थे तो प्योत्र गेरासिमोविच कमरे मे से बाहर गया हुआ था। पर मुख्य कारण यह था कि सभी थक चुके थे और जल्दी से जल्दी छुट्टी करना चाहते थे, इसलिए इस मामले को खत्म करने के लिए जो भी फैसला किया जा सके उससे सहमत होने के लिए तयार थे।

जूरी ने घंटी बजायी। हथियारबंद सिपाही ने, जो बाहर पहरे पर खडा था, अपनी तलवार मियान मे रखी और दरवाजे के सामने से हट गया। जज अपनी अपनी जगह पर बैठ गये, और एक एक कर के जूरी के सदस्य बाहर आने लगे।

मुखिया जवाबो का कागज उठाये बडी गभीरता से अदालत मे दाखिल हुआ और उसे प्रधान जज के हाथ मे दे दिया। प्रधान जज ने उसे पढा, और हैरान हो कर हाथ हिलाया, फिर अपने साथियो से मशिवरा करने लगा। प्रधान जज को इस बात का अचम्भा हुआ था कि जहा पचो ने यह शर्त तो लिख दी कि "लूटने का इरादा नही था", वहा दूसरी शर्त नही लिखी कि "जान लेने का इरादा नही था"। जूरी के फैसले का तो यह मतलब निकलता था कि मास्लोवा ने न चोरी की है, न लूटा है, लेकिन फिर भी बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के एक आदमी को जहर दे डाला है।

"कैसा बेहूदा फैसला है," प्रधान जज ने बायें हाथ बैठे जज से फुसफुसा कर कहा। "इसका मतलब है साइबेरिया मे कैद व मशक्कत की सजा। और लडकी निर्दोष है।"

"क्या आप समझते हैं कि लडकी निर्दोष है?"

"हा, बिल्कुल निर्दोष है। मेरे ध्यान मे इस केस पर धारा ८१८ लागू की जानी चाहिए (धारा ८१८ के अनुसार यदि अदालत जूरी के फ़सले को अन्यायपूर्ण समझे तो उसे रद्द कर सकती है)।

"आपका क्या ख्याल है?" प्रधान जज ने दूसरे जज से पूछा।

दयालुस्वभाव जज ने फौरन जवाब नही दिया। उसके सामने एक कागज पर किसी सख्या के अक लिखे थे। उसने इन अको को जोडा और तीन पर तक्सीम किया। लेकिन वह तीन पर तक्सीम नही हो सका। उसने मन मे फैसला किया था कि अगर जोड तीन पर तकसीम हो गया तो वह प्रधान जज से सहमत हो जायेगा। पर अब तक्सीम न होने पर भी, चूकि वह दयालुस्वभाव पुरुष था, इसलिए सहमत हो गया।

"मैं भी सोचता हू कि उस धारा को लागू करना चाहिए," वह बोला।

"और आप?" प्रधान जज ने गभीर जज को सबोधित करते हुए पूछा।

"हरगिज नही," उसने दृढता से जवाब दिया, "पहले ही अखब
मे खबरें छपती रहती हैं कि जूरी कैदियो को बरी करते रहते है।
अगर जजो ने बरी करना शुरू कर दिया तो लोग क्या कहेंगे। मैं कि
सूरत मे भी इससे सहमत नही हो सकता।"

प्रधान जज ने घडी निकाल कर देखी।

"बडे अफसोस की बात है, मगर किया क्या जाय?" और
कागज मुखिया को पढ कर सुनाने के लिए दिया।

सभी उठ खडे हुए। मुखिया ने एक पाव पर से अपना वाप
कर दूसरे पाव पर रखा खासा, और फिर प्रश्न और उत्तर पढन
कर दिये। अदालत मे सभी लोग—सेक्रेटरी, वकील, यहा तक कि सर
वकील भी—हैरान रह गये।

कैदी अचेत से बैठे थे। जाहिर था कि इन जवाबो का मतलब उ
समझ मे नही आया। सब लोग बैठ गये। प्रधान जज ने सरकारी व
से अभियुक्तो को सजा तजवीज करने के लिए कहा।

सरकारी वकील को इस सफलता की आशा नही थी। वह खुश
कि मास्लोवा को सजा दिलाने मे कामयाब हुआ है, और समझता
कि इसका श्रेय उसकी वाक्पटुता को है। उसने यथावश्यक निर्णय
देखी, और उठ कर बोलने लगा—

"मैं चाहता हू कि सीमन कार्तीनकिन को धारा १४५२ तथा
१४५३ के चौथे पैरे के अनुसार सजा दी जाय, येवफीमिया बो
को धारा १६५६ के अनुसार और येकातरीना मास्लोवा को धारा १
के अनुसार।"

तीनो सजाए बेहद कडी थी। इनसे ज्यादा कडी सजाए नही दी
सकती थी।

"सजाओ पर विचार करने के लिए अदालत की कार्यवाही कुछ
के लिए स्थगित की जाती है," प्रधान जज ने उठते हुए कहा।

उसके उठने के बाद सभी लोग उठ खडे हुए। कोई बाहर चला
और कोई यही टहलने लगा। सब खुश थे कि एक काम अच्छी तरह स
हो गया।

मुखिया नेख्लूदोव के पास खडा उसे कुछ बता रहा था। इत

"क्या आपको मालूम है कि हमने तो सारा मामला ही खराब कर दिया है? लडकी तो अब साइबेरिया की हवा खायेगी।"

"क्या कह रहे हो?" नेख्लूदोव ने चिल्ला कर कहा। अब की उसे इस अध्यापक की बेतकल्लुफी बुरी नही लगी।

"हम लोगो ने जवाब मे यह नही लिखा कि कुसूरवार तो है लेकिन इसका इरादा जान लेने का नही था। सेक्रेटरी ने अभी अभी मुझे बताया है कि सरकारी वकील उसे पन्द्रह साल कडी कैद की सजा दिलवा रहा है।"

"तो क्या हुआ? यही तो निश्चय हुआ था,' मुखिया बोला।

प्योत्र गेरासिमोविच ने इसका विरोध किया, कहने लगा कि चूकि उसने रुपया नही चुराया इसलिए ज़ाहिर है कि उस आदमी को मारने का इसका कोई इरादा नही हो सकता था।

"लेकिन बाहर निकलने से पहले मैंने सब जवाब पढ कर सुना दिये थे," मुखिया ने अपनी सफाई देते हुए कहा। "उस वक्त किसी ने कोई एतराज नही उठाया।"

"मैं उसी वक्त कमरे से बाहर गया था," प्योत्र गेरासिमोविच बोला, फिर नेख्लूदोव की ओर मुड कर बोला, "आपका दिमाग भी उस वक्त घास चरने गया होगा कि आपने इसकी ओर कोई ध्यान नही दिया।"

"मुझे ख्याल ही नही था," नेख्लूदोव कहने लगा।

"ख्याल नही था?"

"पर हम अब भी तो इसे ठीक कर सकते हैं," नेख्लूदोव बोला।

"जी नहीं, अब कुछ नही हो सकता। मामला खत्म हो गया है।"

नेख्लूदोव न कदियो की ओर देखा। वे लोग, जिनकी किस्मत का फैसला होने जा रहा था, अब भी कटहरे के पीछे, सिपाहियो के सामने गतिहीन बैठे थे। मास्लोवा मुस्करा रही थी। नेख्लूदोव के मन मे कुविचार उठा। अब तक उसे आशा थी कि मास्लोवा बरी हो जायेगी। लेकिन यह सोच कर कि वह इसी शहर मे रहने लगेगी उसकी समझ मे नही आ रहा था कि उसके प्रति वह कैसा रवैया अपनाये। उसके साथ अब किसी प्रकार का भी सबध रखना बडा कठिन था। यदि उसे कडी मशक्कत की सजा दे कर साइबेरिया भेज दिया गया तो उसके प्रति कोई रवैया

अपनाने का सवाल ही नही उठेगा। जख्मी परिन्दा शिकारी के कब्ज़े ही छटपटा छटपटा कर दम तोड देगा और शिकारी को उसकी याद नही आयेगी।

२४

प्योत्र गेरासिमोविच का अनुमान ठीक निकला।

प्रधान जज विचार-कक्ष मे से निकल कर वापस आया। उसके हाथ में एक कागज था जिसे उसने पढना शुरू कर दिया

"तिथि १८ अप्रैल, १८८ । महाराजाधिराज के आदेशानुसार, जूरी के निश्चय तथा ज़ाब्ता फौजदारी की धारा ७७१ के भाग ३, धारा ७७६ के भाग ३ और धारा ७७७ के आधार पर अदालत फौजदारी निर्णय सीमन कार्तीनकिन, उम्र ३३ साल और मेश्चान्का येकातेरीना मास्लोवा, उम्र २७ साल को सब प्रकार के सम्पत्ति अधिकारो से वंचित कर के दोनो को कडी मशक्कत की सज़ा दे कर साइबेरिया मे भेजती है कार्तीनकिन को ८ साल के लिए और मास्लोवा को ४ साल के लिए-उन्ही अनुवर्ती परिणामो के साथ जिनका उल्लेख ज़ाब्ता फौजदारी की धारा २८ म किया गया है। मेश्चान्का बोच्कोवा, उम्र ४३ साल, को सभी विशिष्ट निजी व अनुप्राप्त अधिकारो से वंचित कर के ३ साल कैद की सज़ा दी जाती है उन्ही अनुवर्ती परिणामो के साथ जिनका उल्लेख ज़ाब्ता फौजदारी की धारा ४६ मे किया गया है। मुकद्दमे का सारा खर्च कैदी बरदाश्त करेंगे, जो बराबर बराबर हिस्सा म उनसे वसूल किया जायेगा। यदि अदायगी के पर्याप्त साधन उनके पास नही होंगे तो यह खर्च सरकारी खज़ाने मे से अदा किया जायेगा। सब शहादती चीज़ें बेच दी जायेंगी अगूठी वापस कर दी जायेगी और शीशे के पात्र तोड दिये जायेंगे।"

कार्तीनकिन अब भी सीधा तन कर खडा हुआ था और उसके गाल फरफरा रहे थे। बोच्कोवा पूर्णतया शान्त नजर आ रही थी। मास्लोवा ने जब फैसला सुना तो उसका चेहरा लाल हो गया।

'मैंने कोई कसूर नही किया, मेरा कोई दोष नही," सहसा वह चिल्ला उठी और उसकी आवाज़ मार कमरे मे गूज उठी। "यह पाप है।

मैं निर्दोष हू। मेरी कोई इच्छा उसे   मुझे इसका ख्याल तक नही आया। मैं सच कहती हू, बिल्कुल सच कहती हू।" वह बेंच पर ढह गई और बिलख बिलख कर रोने लगी।

कार्तीनकिन और बोच्कोवा अदालत मे से बाहर चले गये। मास्लोवा फिर भी बैठी रोती रही, यहा तक कि सिपाही को उसके लबादे की आस्तीन छू कर उसे उठाना पडा।

जो बुरे विचार नेख्लूदोव के मन मे उठे थे, वे सब गायब हो गये। "इस मामले को यही पर नही छोडा जा सकता, नामुमकिन है," उसने मन ही मन कहा और बरामदे मे तेज तेज चलता हुआ मास्लोवा के पीछे जाने लगा। न जाने क्यो, वह उसे फिर एक बार देख लेना चाहता था। दरवाजे पर लोगो की खासी भीड जमा हो गई थी। वकील और जूरी के सदस्य बाहर निकल रहे थे। वे खुश थे कि काम समाप्त हुआ। नेख्लूदोव को कुछ देर इन्तज़ार करना पडा, इसलिए जब वह बरामदे मे निकल कर आया तो मास्लोवा बहुत दूर जा चुकी थी। वह फिर तेज तेज चलता हुआ, बिना इस बात की परवाह कि लोग उसे देख रहे होगे, उसके पीछे पीछे जाने लगा। वह उसके पास जा पहुचा, फिर आगे निकल गया और एक जगह रुक कर उसकी ओर देखने लगा। वह अब रो नही रही थी, केवल सिसकियां भर रही थी, और सिर पर बधे रूमाल के एक कोन से मुह पोछ रही थी। उसका चेहरा लाल हो रहा था और उस पर जगह जगह धब्बे पडे हुए थे। उसने नेख्लूदोव की ओर नही देखा और आगे निकल गई। इसके बाद नेख्लूदोव भागा हुआ प्रधान जज को मिलने गया। प्रधान जज अदालत के कमरे मे से जा चुका था। नेख्लूदोव उसके पीछे पीछे ड्योढी मे जा पहुचा जहा प्रधान जज अपना हल्का भूरे रग का ओवरकोट पहना रहा था और अदली से अपनी चादी की मूठ वाली छडी ले रहा था। नेख्लूदोव सीधा उसके पास चला गया।

"जनाब, इजाजत हो तो मैं आपसे कुछ कहना चाहता हू। यह इस मुकद्दमे के बारे म है जिसका अभी अभी फैसला हुआ है। मैं जूरी का एक सदस्य हू।"

"जरूर, जरूर, प्रिंस नेख्लूदोव, मुझे खुशी होगी। मैं सोचता हू हम पहले एक दूसरे को मिल चुके हैं," प्रधान जज ने नेख्लूदोव का हाथ दबाते हुए कहा। उसे वह शाम याद हो आई जब वह पहली बार

नेख्लूदोव से मिला था। और यहां आते ही उसका मन घृणा से भर गया। उस काम यह दिन खोन कर जाता था और इतना बढ़िया कि वहां नाहक के युवक भी देखने रह गये थे। "मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूं?"

"मास्लोवा के बारे में जो जवाब दिया गया उसमें एक भूल हो गई। उस पर जहर देने का जुर्म नहीं है फिर भी उसे बामशक्कत की सजा दी गई है," नेख्लूदोव ने कहा। वह अनमना और उदास लग रहा था।

"आपके जवाबों की ही बिना पर अदालत ने सजा दी है," दरवाजे की ओर जाते हुए प्रधान जज ने कहा। "हालांकि आपके जवाब जज को भी असंगत से लगते थे।"

उसे याद आया कि वह जूरी को यह बताने जा ही रहा था कि अभियुक्त को "मुजरिम" करार देते वक्त अगर ये शब्द साथ में न जोड़े जायं कि "जान लेने के इरादे से नहीं किया गया", तो इसका यही अर्थ लिया जाता है कि जुर्म जान बूझ कर मार डालने के इरादे से किया गया। मगर उस वक्त उसे काम खत्म करने की इतनी जल्दी थी कि वह समझाना भूल गया था।

"लेकिन क्या अब इस गलती को ठीक नहीं किया जा सकता?"

"अपील करनी हो तो हमेशा कोई न कोई वजह तो मिल ही सकती है। आपको किसी वकील से सलाह लेनी होगी," प्रधान जज ने चलते चलते कहा, और सिर पर तिरछे से अन्दाज से टोप पहना।

"लेकिन यह बड़ा जुल्म है।"

"आप जानते हैं, मास्लोवा के संबंध में दो ही संभावनाएं थीं," प्रधान जज ने कहा। जाहिर था कि वह नेख्लूदोव से यथासंभव विनम्रता और शिष्टता से बात करना चाहता था। कोट के कॉलर के ऊपर अपने गलमुच्छे ठीक करते हुए उसने हल्के से नेख्लूदोव की कोहनी के नीचे हाथ रखा, और अब भी दरवाजे की ओर बढ़ते हुए बोला—"आप भी चल रहे हैं?"

"जी हां," नेख्लूदोव ने कहा, और जल्दी जल्दी अपना कोट पहन कर उसके साथ हो लिया।

बाहर धूप खिल रही थी, और सड़क पर गाड़ियों के पहियों की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी, इस कारण उन्हें अपनी आवाज ऊंची करके बोलना पड़ा।

"स्थिति वडी अजीव सी है," प्रधान जज ने कहा, "मास्लोवा के
ाराध मे दो म से एक ही वात हो सकती थी। या तो उसे थोडी सी
ाद की सज़ा देकर लगभग वरी कर दिया जाता। और इस वात का
ख़्याल रखते हुए कि वह जेल मे काफी वक्त पहले ही काट चुकी है,
उसे बिल्कुल वरी कर दिया जा सकता था। या फिर उसे साइवेरिया
भेजा जाता। इनके वीच और कोई रास्ता नही था। यदि आप लोग केवल
प शब्द जोड देते कि 'उसका जान लेने का इरादा नही था' तो वह
वरी हो जाती।"

"हा, मुझमे वहुत वडी भूल हुई, मैं अपने को कभी माफ नही कर
सकता," नख्लदोव ने कहा।

"इसी पर सब वात का दारोमदार है," प्रधान जज ने मुस्कराते
हुए कहा, और अपनी घडी को देखा।

केवल ४५ मिनट वाकी रह गये थे। इसके वाद वह अपनी क्लारा
को नही मिल सकेगा।

"अव यदि आप चाहे तो वकीलो से वात कर देखिये। आपको अपील
दायर करने के लिए कोई आधार चाहिए और वह आसानी से मिल
जायेगा।" फिर एक गाडीवान की ओर मुह कर के वोला, "द्वोर्यान्स्काया
चलोगे? तीस कोपेक दूगा। इससे ज्यादा मैं कभी नही देता।"

"चलूगा, हुज़ूर, मैं आपको ले चलूगा।"

"तो इजाज़त है? यदि मैं आपकी कोई ख़िदमत कर सकू तो शौक
से मेरे पास तशरीफ लाइये। मेरा पता है द्वोर्यान्स्काया रोड, द्वोनिकोव
भवन। इसे याद रखना आसान है।"

और वडे दोस्ताना ढग से झुक कर विदा लेते हुए वह गाडी मे वैठ
कर रवाना हो गया।

२५

प्रधान जज के साथ वात कर लेने से नेख्लूदोव का मन कुछ हल्का
हुआ। कुछ इस कारण भी कि वाहर ताज़ा हवा वह रही थी। उसने
सोचा कि इतनी तीव्रता से ये भावनाए उसके दिल मे न उठती यदि वह
सुबह से इस वक्त तक इस अजीव से वातावरण मे न बैठा रहता।

"सचमुच कैसी विचित्र घटना घटी है, आकस्मिक और विलक्षण! और यह बेहद जरूरी है कि यथाशक्ति मैं उसकी सजा को कम करने की कोशिश करूं। और वह भी फौरन! मुझे यहीं कचहरी में से ही पता कर लेना चाहिए कि फानारिन या मिकीशिन यहां रहते हैं,' दो प्रसिद्ध वकीलों के नाम याद करते हुए उसने मन ही मन कहा।

वह कचहरी में लौट आया, और ओवरकोट उतार कर ऊपर चला गया। पहले बरामदे में जाते हुए उसकी स्वयं फानारिन से ही भेंट हो गई। उसने फानारिन को रोक लिया और कहा कि मैं आपको एक काम के सिलसिले में मिलने ही जा रहा था। फानारिन ने नेख्लूदोव का नाम सुन रखा था, और शक्लसूरत से भी उसे पहचानता था। बोला कि जो भी खिदमत हो, मैं खुशी से करने के लिए हाजिर हूं।

"मैं इस वक्त कुछ थका हुआ हूं लेकिन बात लम्बी न हो तो आप बेशक इसी वक्त मुझे उसके बारे में बता दीजिये। चलिये, इधर अन्दर चले चलिये।"

और वह नेख्लूदोव को एक कमरे में ले गया जो शायद किसी जज का कमरा था। दोनों मेज के सामने बैठ गये।

"कहिये, क्या काम है?"

"सबसे पहले तो मैं गुजारिश करूंगा कि इसे अपने तक ही रखिये। मैं नहीं चाहता कि किसी को भी मालूम हो कि मेरी इस मामले में कोई दिलचस्पी है।'

"बेशक बेशक, यह बताने की आपको कोई जरूरत नहीं।"

"आज मैं जूरी पर था और हमने एक बेगुनाह औरत को कड़ी मशक्कत की सजा दिलवा दी है। इससे मेरा मन बहुत बेचैन हुआ है।"

नेख्लूदोव का चेहरा लाल हो गया और वह घबरा सा गया। वह खुद हैरान हो रहा था कि उसे क्या हो गया है। फानारिन ने उसके चेहरे पर एक नजर फेंकी और फिर नीचे देखने लगा, और उसकी बात सुनने लगा।

"कहिये।"

"हमने एक बेगुनाह औरत को सजा दिलवा दी है और मैं इस बारे में ऊंची अदालत में अपील करना चाहता हूं।"

"आपका मतलब है सेनेट में," नेख्लूदोव की अशुद्धि ठीक करते हुए फानारिन ने कहा।

"और मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप इस मुकद्दमे का हाथ में ले लें।"

जो बात नेख्लूदोव के लिए कहना कठिन हो रहा था, वह उसे जल्दी जल्दी कह डालना चाहता था। बोला–

"इस मुकद्दमे का जितना भी खर्च होगा मैं दूंगा।" और उसका चेहरा लाल हो गया।

"कोई बात नहीं, यह हम बाद में देख लेंगे," इन मामलों में नेख्लूदोव की अनुभवहीनता पर कृपाभाव से मुस्कराते हुए वकील ने कहा।

"मामला क्या है?"

जो कुछ हुआ था नेख्लूदोव ने कह सुनाया।

"अच्छी बात है। मैं इस पर काम करना शुरू कर दूंगा और कल इसकी मिसल देखूंगा। आप मुझे परसों मिलिये, नहीं, बेहतर है बृहस्पतिवार को मिलिये। छः बजे के बाद आप मेरे पास आ जाइये और मैं इसके बारे में आपको जवाब दूंगा। तो अब चलें। मुझे यहां कुछेक बातों के बारे में पूछना है।"

नेख्लूदोव ने विदा ली और बाहर निकल आया।

वकील के साथ बात कर लेने से, और यह सोच कर कि मास्लोवा को बचाने के लिए उसने कदम उठाया है, नेख्लूदोव का मन और भी हल्का हो गया। वह बाहर सड़क पर आ गया। मौसम बेहद सुहावना था। वसन्त की ताजा हवा में उसने लम्बी सांस ली। बहुत से गाड़ीवान उसके आस-पास इकट्ठे हो गये और गाड़ी लेने के लिए बार बार कहने लगे। मगर नेख्लूदोव गाड़ी में नहीं बैठा और पैदल जाने लगा। सहसा उसके मन में तरह तरह की स्मृतियां और चित्र घूमने लगे–कात्यूशा के बारे में, और उसके प्रति अपने व्यवहार के बारे में। वह उदास हो गया और हर चीज उसे उदास नजर आने लगी। "नहीं, इन सब बातों के बारे में बाद में सोचा जायेगा। आज जो कुछ देखा है, कितना घिनौना था। उसे मन में से निकाल देना चाहिए," वह मन ही मन सोचने लगा।

उसे याद आया कि कोचागिन परिवार के घर उसे डिनर खाने जाना

है। उसने घड़ी देखी। अभी भी वक्त था, यह पहुंच सकता था। उस ए ट्राम की घण्टी की आवाज सुनाई दी। भाग कर वह उसके पास जा पहुंचा और कूद कर उसके ऊपर चढ़ गया। बाजार में पास पहुंच कर वह न पर से कूद पड़ा, और एक अच्छी घोड़ा गाड़ी में जा बैठा। दस मिनट के बाद वह कोर्चागिन परिवार के विशाल भवन के सामने खड़ा था।

२६

"आइये हुजूर, पधारिये," दरवाजा खोलते हुए इस बड़े घर के मो दरबान ने बड़े अदब से कहा और बढ़िया अंग्रेजी बक्से लगा बलूत का भारी दरवाजा जरा भी शोर किये बिना खोल दिया। "सब लोग आपका इन्तजार कर रहे है। भोजन शुरू हो गया है लेकिन मुझे हुक्म है कि आपको अन्दर ले चलूं।"

दरबान ने सीढ़ियों के पास जा कर घण्टी बजायी।

'बाहर के लोग भी हैं क्या?" नेख्लूदोव ने अपना ओवरकोट उतारते हुए पूछा।

"जी, घर के लोगों को छोड़ कर केवल श्रीमान| कोलोसोव और मिखाईल सेर्गेयेविच है।"

फ्रॉक कोट और सफेद दस्ताने पहने हुए एक बेहद खूबसूरत चोबदार सीढ़ियों के ऊपर आ खड़ा हुआ।

"चलिये, हुजूर, सब आपका इन्तजार कर रहे हैं," उसने कहा।

नेख्लूदोव सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर पहुंचा। सामने एक बड़ा हॉल था, वह ठाट से सजा हुआ। नेख्लूदोव इससे भली भांति परिचित था। इसे लांघ कर वह भोजन-कक्ष में पहुंचा। परिवार के सभी सदस्य मेज पर मौजूद थे, सिवाय प्रिंसेस सोफिया वासील्येव्ना के, जो सदा अपने कमरे में ही रहती थीं। मेज के सिरे पर वृद्ध कोर्चागिन विराजमान थे। उनके बायें हाथ डाक्टर, और दायें हाथ एक अतिथि इवान इवानोविच कोलोसोव बैठे थे। यह सज्जन कभी अपने जिले के अभिजात वर्ग के निर्वाचित प्रधान रह चुके थे और आजकल एक बैंक के डायरेक्टर थे। विचारों के उदारवादी और कोर्चागिन के मित्र थे। बायें हाथ मिस्सी की छोटी चार साला बहिन

तथा उसकी अध्यापिका मिस रेडर बैठी थी। उनके सामने, दूसरी तरफ मिस्सी का भाई पेत्या बैठा था। कोर्चागिन परिवार का यही एक लडका था। वह छठी कक्षा मे पढ रहा था। आजकल उसके इम्तहान हो रहे थे। यही कारण था कि अब तक सारा परिवार शहर मे टिका हुआ था। उसके साथ विश्वविद्यालय का एक छात्र, जो उसे पढाता था, और मिस्सी का चचेरा भाई मिखाईल सेर्गेयेविच तेलेगिन, जिसे अक्सर लोग मीशा कह कर पुकारते थे, बैठे थे। मीशा के ऐन सामने येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना बैठी थी। इस महिला की उम्र ४० वर्ष की थी और वह कुवारी थी, और उसके दिमाग पर स्लाव जाति की श्रेष्ठता का भूत सवार था। मेज़ के दूसरे सिरे पर स्वय मिस्सी बैठी थी, और उसके साथ वाली कुर्सी खाली पडी थी।

"अच्छा हुआ तुम आ गये। हमने अभी मछली खाना ही शुरू किया है," *अपनी लाल आखें ऊपर को उठा कर वृद्ध कोर्चागिन ने कहा।* उसकी आखो को देख कर ऐसा लगता था जैसे उन पर पलके नही हैं। कोर्चागिन को बात करने मे तकलीफ हो रही थी, क्योकि उसका मुह भरा हुआ था और दात नकली थे जिनसे वह बडे ध्यान से, धीरे धीरे मछली चबा रहा था। उसी तरह भरे हुए मुह से उसने दस्तरखान के नौकर को आवाज़ दी –

"स्तेपान!" और आखो से खाली कुर्सी की ओर इशारा किया।

नेख्लूदोव कोर्चागिन को भली भाति जानता था, पहले भी उसे कई बार भोजन करते देख चुका था, लेकिन आज कोर्चागिन का लाल लाल चेहरा, वास्कट मे लगे नैप्किन के ऊपर मोटी, स्थूल गर्दन, तथा कामुक होठ देख कर जिनसे वह बार बार चटखारे ले रहा था, उसे बडी घिन हुई। उसका अग अग बता रहा था कि वह एक पेटू, फौजी अफ्सर है। अपने आप ही नेख्लूदोव को वे बाते याद हो आयी जिनसे इस आदमी की क्रूरता का पता चलता था। जिन दिनो फौज की कमान इसके हाथ मे थी, कोर्चागिन, बिना किसी वजह के, लोगो को हण्टर लगवाता, यहा तक कि फासी तक चढवा देता था। और यह महज़ इसलिए कि अमीर होने के कारण उसे किसी की खुशामद करने की जरूरत नही थी।

"अभी, हुज़ूर," स्तेपान ने कहा और चादी के गुलदानो से सजी हुई बर्तनो की अलमारी मे से शोरबा डालने की कलछी उठाई। फिर मिर

झटक कर उसने खूबसूरत गलमुच्छो वाले चोबदार को इशारा किया। चोबदार फौरन खाली कुर्सी के सामने काटे छुरियां और नप्किन उठा अपनी जगह रखने लगा। नैप्किन की बड़ी खूबसूरत ढंग से तह बना हुई थी और उस पर कुल चिह्न कसीदा किया हुआ था।

नेख्लूदोव एक एक कर के सबसे हाथ मिलाने लगा। वृद्ध कार्चागिन और महिलाओं को छोड कर, सभी उठ उठ कर उससे हाथ मिलाते। नेख्लूदोव को इस तरह मेज़ के इर्दगिर्द घूमना और लोगो से हाथ मिलाना जिनमे से बहुतो के साथ उसकी दुआ-सलाम तक न थी, बडा अजीब और अप्रिय लगा। देरी से पहुचने के लिए उसने माफी मागी। फिर मिस्सी और येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना के बीच वाली कुर्सी पर बैठने ही जा रहा था कि कोर्चागिन ने रोक लिया। कहने लगा कि खाना खाने से पहले अगर एक जाम वोदका नही पीना चाहते तो कम से कम छोटी मेज़ पर से कुछ तो मुह मे डाल लो ताकि भूख चमक उठे। साथ वाली छोटी मेज़ पर प्लेटो मे झीगा मछली, केवियर, पनीर और हेरिंग मछली रखी थी। नेख्लूदोव को ख्याल भी नही था वह इतना भूखा है और डबलरोटी-पनीर का सैंडविच लेकर उसने जो खाना शुरू किया तो फिर रुक ही नहीं पाया और दबादब खाता गया।

"कहो, आज कैसा रहा? खूब तोडी समाज की नीव?" कोलोसोव ने व्यग से एक अखबार का फिकरा दोहराते हुए पूछा। एक प्रतिक्रिया वादी अखबार मे उन्ही दिनो उस अदालती प्रथा की कटु आलोचना की गई थी जिसमे मुकद्दमे का फैसला जूरी के सदस्यो पर छोडा जाता है। "जरूर अपराधियो को बरी कर आये होगे और बेगुनाहो को सज़ा दी होगी, क्यो?"

"तोडी समाज की नीवे तोडी समाज की नीवे हा! हा!" प्रिंस कार्चागिन ने हसते हुए कोलासोव के शब्द दोहराये। उसे अपने इस उदारवादी मित्र और साथी की बुद्धिमत्ता पर बडा विश्वास था।

नेख्लूदोव ने कोई जवाब नहीं दिया, यह जानते हुए भी कि उसका चुप रहना शायद कोलोसोव को बुरा लगे और गरमागरम शोरबा खाता रहा।

"कुछ खाने तो दीजिये उसे," मिस्सी ने मुस्कराते हुए कहा। "उसे" का प्रयोग कर के उसने मानो याद दिलायी कि देखो नेख्लूदोव के साथ मेरी कितनी घनिष्ठता है।

कोलोसोव ख़ूब ऊची ऊची आवाज़ मे बड जोश के साथ उस लेख का ब्योरा देने लगा जिसमे जरी-मुकद्दमा की प्रथा का विरोध किया गया था। उसे वह लेख बिल्कुल पसन्द नही था। मिस्सी का चचेरा भाई मिखाईल सेर्गेयेविच उसकी हा मे हा मिलाने लगा और ख़ुद भी किसी दूसरे लेख की चर्चा करने लगा जो उसी अख़बार मे छपा था।

मिस्सी बडी अच्छी लग रही थी। उसने सादे किन्तु बडे सुरुचिपूर्ण ढग के कपडे पहन रखे थे।

"तुम तो बहुत थक गये होगे, और बडी भूख लगी होगी," जब नेख्लूदोव ने मुह का कौर निगल लिया तो मिस्सी उसे बोली।

"नही, बहुत तो नही, और तुम? क्या तुम तस्वीरें देखने गयी थी?" उसने पूछा।

"नही, हमने सोचा फिर किसी दिन जायेंगे। हम सालामातोव परिवार को मिलने चले गये और वहा टेनिस खेलते रहे। मिस्टर क्रूक्स सचमुच बहुत अच्छा खेलते हैं।"

नेख्लूदोव जो यहा आया था तो अपना ध्यान दूसरी ओर करने के लिए। उसे इस घर मे आना अच्छा लगता था। यहा के ऐशो आराम मे एक तरह की नफासत थी जो उसके मन को भाती थी। साथ ही यहा पर सब उसे चाहते थे और उसकी हल्की चापलूसी करते रहते थे। पर अजीब बात है, आज उसे इस घर की हर चीज घिनौनी लग रही थी, उसी वक्त से जिस वक्त उसने इस घर मे कदम रखा था। इस घर का दरबान, चौडा जीना, फूल, चोबदार, मेज की सजावट, हर चीज उसे बुरी लग रही थी। स्वय मिस्सी मे भी आज कोई आकर्षण नही था। वह उसे बनावटी लग रही थी। जिस ओछे, उदारवादी ढग से, आत्मविश्वास के साथ कोलोसोव बाते कर रहा था, वह भी उसे भद्दा लग रहा था। इसी तरह बूढे कोर्चागिन का कामुक, आत्मतुष्ट, साड का सा आकार-प्रकार और येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना के फ्रासीसी वाक्याश उसे खल रहे थे। अध्यापिका और विश्वविद्यालय के छात्र के दब्बू चेहरे भी बडे अप्रिय थे। पर जो चीज़ उसे सब से बुरी लगी वह थी, मिस्सी का उसके लिए "उसे" शब्द का प्रयोग। मुद्दत से नेख्लूदोव असमजस मे था कि वह मिस्सी को किस दृष्टि से देखे। कभी कभी वह उसे इस तरह देखता मानो चाद की चादनी मे उसे देख रहा हो। उस समय मिस्सी के सौन्दर्य के अतिरिक्त

उसे कुछ भी नजर नही ग्राता था। उस समय वह उसे सुन्दर ताज़ा
चतुर प्रतीत होती थी, ऐसी लडकी जिसमे बनावट का नाम निशान न
हो। फिर सहसा उसे ऐसा लगने लगता जैसे वह उसे दिन की रोशनी
मे, सूर्य के प्रकाश म देखने लगा हो। तब उसे मिस्सी के दोष नज़र आते,
और उन्हे न देखने की इच्छा रखते हुए भी वे उघड उघड कर उसके
सामने आते थे। आज वैसा ही दिन था। आज उसे उसके चेहरे की छो
झुरिया, उसके बालो मे बने कुण्डल, उसकी नुकीली कोहनियां और विशेषकर
उसके अंगूठे का नाखून नजर आ रहे थे। इसका नाखून कितना बड़ा
है,—नेख्लदोव सोच रहा था,—और इसके पिता के नाखून से कितना
मिलता है!

"टेनिस मज़ेदार खेल नहीं है," कोलोसोव कह रहा था। "हम तो
जब छोटे थे तो 'लाप्ता' खेला करते थे। उसमे बहुत मजा आता था।"

"नही, नही, आपने टेनिस खेल कर देखा नही है। बेहद रोचक खेल
है," मिस्सी ने कहा। जिस ढग से बल देकर उसने "बेहद" शब्द कहा,
वह नेख्लूदोव को बहुत बनावटी लगा।

इसके बाद एक बहस छिड गई जिसमे मिखाईल सेर्गेयेविच और
येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना ने भाग लिया। यदि भाग नही लिया तो अध्यापिका,
विद्यार्थी और बच्चो ने नही लिया, जो चुपचाप बैठ थे और बेहद ऊब उठे थे।

"ओह, ये बहसे तो कभी खत्म ही नही होती।" बूढे कोर्चागिन ने
वॉस्कट मे से नैप्किन खीच कर हसते हुए कहा और बडा शोर मचाते हुए
कुर्सी को पीछे धकेल कर उठा (चोबदार ने फौरन बढ कर कुर्सी सभाल
ली) और वहा से चला गया। जब वह उठा तो सभी लोग उठ खड़े हुए
और एक दूसरी मेज की ओर गये जिस पर गर्म, खुशबूदार पानी के
गिलास रखे थे। उन्होने कुल्ले किये और इसके बाद फिर बहस शुरू कर
दी जिसमे किसी की कोई रुचि न थी।

किसी ने कहा कि खेल से मनुष्य के चरित्र का पता चलता है। "ठीक
है न?" मिस्सी ने नख्लूदोव से उसका समर्थन प्राप्त करने की इच्छा से
पूछा। उसने देख लिया था कि नेख्लूदोव का ध्यान किसी दूसरी तरफ
है, और साथ ही वह उसे असन्तुष्ट सा लग रहा था। उसे असन्तुष्ट
देख कर मिस्सी को डर सा लगने लगता था, और वह इसका कारण
जानना चाहती थी।

"मैं कुछ भी नही कह सकता। मैंने इस बारे मे कभी भी सोचा नही है," नेग्नूदोव ने जवाब दिया।

"तुम maman से तो मिलने चलोगे न?" मिस्सी ने पूछा।

"हा, हा, जरूर," उसने कहा और सिगरेट निकालने लगा। उसके लहजे से साफ पता चल रहा था कि उसकी maman से मिलने की कोई इच्छा नहीं है।

मिस्सी चुपचाप, प्रश्नसूचक नेत्रो से उसकी ओर देखने लगी, जिससे नेख्लूदोव को शर्म सी आ गई। "किसी के घर आओ और मुह लटका कर बैठ जाओ," उसने अपने बारे म मन ही मन सोचा, फिर बाते करने की चेष्टा करते हुए बोला कि यदि प्रिसेस की इजाजत हुई तो मैं शौक से मिलने चलूगा।

"Maman तो तुम्हे मिल कर बहुत खुश होगी। वहा तुम सिगरेट भी पी सकते हो। इवान इवानोविच भी वही पर है।"

घर की मालकिन प्रिसेस सोफ्या वासील्येव्ना सदा लेटी रहती थी। वह मेहमानो को भी सदा अपने कमरे मे ही मिलती। पिछले आठ साल से यही चल रहा था। गहना कपडो से लदी मालकिन मेहमानो से मिलती और वह भी ऐसे मेहमानो से जिन्हे वह समीपी मित्र कहती थी, अर्थात वे लाग जिनका स्तर मामूली लोगो से बहुत ऊपर था। कमरे की सज-धज भी देखते बनती थी, मखमली पर्दों, फूलो और तरह तरह के मुलम्मा चढे, हाथी दात, कासे, और लाख के बने पदार्थों से वह भरा पडा था।

इन मित्रो मे नेख्लदोव भी शामिल था क्योंकि उसे सयाना-समझदार आदमी समझा जाता था, उसकी मा की इस परिवार से घनिष्ठ मैत्री रह चुकी थी और साथ ही इसलिए भी कि उसे मिस्सी के लिए उचित वर समझा जाता था।

सोफिया वासील्येव्ना का कमरा दीवानखाने और छोटी बैठक से परे था। मिस्सी आगे आगे चल रही थी। दीवानखाने मे पहुच कर वह दृढता से खडी हो गई और एक मुलम्मा चढी छोटी सी कुर्सी की पीठ पकड कर उसकी ओर देखने लगी।

मिस्सी शादी करने के लिए बेचैन थी। चूकि नेख्लूदोव उपयुक्त वर था, और वह उसे चाहती भी थी। इसलिए उसने अपने मन मे यह बात बिठा ली थी कि वह उसी का हो कर रहेगा (यह नही कि वह स्वय

नेख्लूदोव की होगी)। स्वयं न जानते हुए भी वह इस सम्बन्ध में बड़े हठ से बढ़ रही थी। यह हठ और चालाकी अक्सर ऐसे व्यक्तियों में देखने को मिलती है जिनके मन विकारग्रस्त हों। मिस्सी जानना चाहती थी कि नेख्लूदोव के क्या इरादे हैं।

"जान पड़ता है कोई बात हुई है," वह बोली, "क्या हुआ है?"

नेख्लूदोव को अदालत की बैठक याद हो आयी, उसकी भौंहें चढ़ गईं और चेहरा लाल हो गया।

"हां, एक बात हुई है," सच बोलने की इच्छा से उसने उत्तर दिया, "एक गंभीर और असाधारण बात हुई है।"

"क्या हुआ है? क्या मुझे नहीं बता सकते?"

"इस समय नहीं, मुझे कहने के लिए कहो ही नहीं। मुझे स्वयं उस पर विचार करने का समय नहीं मिला।" उसका चेहरा और भी लाल हो गया।

"तो तुम मुझे बताओगे नहीं?" मिस्सी के चेहरे पर ऐंठन सी आई और उसने कुर्सी को धक्का देकर पीछे हटा दिया।

"नहीं, मैं नहीं बता सकता," उसने जवाब दिया। यह कहते हुए नेख्लूदोव को महसूस हुआ जैसे वह अपने आपको भी कह रहा है कि आज की घटना का सचमुच उसके लिए बड़ा महत्व था।

"चलो, अंदर चलें।"

मिस्सी ने सिर झटक दिया मानो निरर्थक विचारों को मन में से हटाना चाहती हो, और पहले से भी तेज़ कदम रखती हुई उसके आगे आगे जाने लगी।

नेख्लूदोव को लगा जैसे मिस्सी ने अपने होंठ अस्वाभाविक रूप से भींच लिये हैं, ताकि उसे रुलाई न आ जाय। उसे शर्म महसूस हुई कि मैंने नाहक उसका दिल दुखा दिया है। लेकिन फिर भी वह अड़ा रहा, यह जानते हुए कि ज़रा सी भी कमज़ोरी दिखाने पर वह कहीं का न रहेगा, अर्थात् उसे ज़रूर मिस्सी से शादी करनी पड़ेगी। आज विशेषकर वह इस बात से डर रहा था। चुपचाप, मिस्सी के पीछे पीछे चलता हुआ वह प्रिंसेस के कमरे में दाखिल हुआ।

मिस्सी की मा भोजन पर से हटी थी। भाजन ने अनगिनत वढिया व्यजन बने थ। वह सदा अलग स भोजन करती ताकि इस नीरस, कवित्वहीन क्रिया को कोई देख न पाये। उसके कोच के पास एक छोटी सी तिपाई पर काफी का सामान रखा था, और वह सिगरेट के कश लगा रही थी। प्रिसेस एक लम्बी, पतली औरत थी, काले वाल, वडी वडी काली आखें और लम्बे लम्बे दात, वह अभी भी अपने को जवान समझती थी।

डाक्टर के साथ उसके गहरे सम्बन्ध की काफी चर्चा थी। कुछ मुद्दत से नेख्लूदोव भी इसके बारे म सुन रहा था। प्रिसेस के कोच के पास डाक्टर बैठा था। उसकी चिकनी, चमकती दाढी बीच मे से काढी हुई थी। आज डाक्टर को देख कर नेख्लूदोव को न केवल वे अफवाह याद हो आई जो उनके वारे मे सुनने मे आती थी, वल्कि उसका मन भी घृणा से भर उठा।

सोफिया वासील्यव्ना के विल्कुल निकट, तिपाई के साथ एक नीची, नरम नरम आरामकुर्सी पर कोलोसोव बठा कॉफी हिला रहा था। तिपाई पर हल्की शराब का एक गिलास रखा था।

नेख्लूदोव को ले कर मिस्सी अन्दर आई मगर वहा रुकी नही।

"जब maman तुमस ऊब उठें और यहा से तुम्ह चलता करे तो मेरे पास आना," उसन कोलोसाव और नेख्लूदोव को सम्बोधित करते हुए कहा। वह इस तरह बाते कर रही थी मानो कुछ भी न हुआ हो। इसके वाद वह हसती मुस्कराती, गुदगुदे कालीन पर बडी नजाकत से पाव रखती हुई वाहर चली गई।

"आओ मित्र, कहो कैसे हो? आओ बैठो और मेरे साथ बात करो," प्रिसेस न कहा। उसके होठो पर एकदम स्वाभाविक सी, किन्तु वास्तव मे बनावटी झूठी मुस्कान खेल रही थी। मुस्कराते हुए उसके खूबसूरत, लम्बे लम्बे दातो की झलक मिलती थी। ये दात नकली थे, मगर उसके पहले दातो से बेहद मिलते थे। "कोई कह रहा था कि तुम आज कचहरी से बडे परेशान लौटे हो। मैं सोचती हू जो लोग महसूस वहुत करते हो,

उनके लिए कचहरी मे बैठना बडा कठिन होता होगा," उसने मे यह बात जोडी।

"आप ठीक कहती है," नख्लूदोव ने कहा, "आदमी को अपने आदमी महसूस करने लगता है कि उसे किसी की किस्मत का फ़ैसला का कोई अधिकार नही।"

"Comme c'est vrai,"* वह बोली, मानो नेख्लूदोव के बात छिपा सत्य उसे बडा विलक्षण लगा हो। प्रिंसेस की आदत था कि जिस किसी से भी बाते कर रही होती, तो हल्के हल्के, बड से उसकी खुशामद करती रहती।

"और तुम्हारी तसवीर का क्या बना? उसे देखने के लिए मेरा जी चाहता है। अगर मैं यो खाट से न जुडी होती तो कब का उसे आई होती," उसने कहा।

"मैने तसवीर बनाना बिल्कुल छोड दिया है," नेख्लूदोव ने आवाज मे कहा। इस औरत की खुशामद कितनी थोथी है, आज को साफ नजर आ रहा था, उसी तरह जिस तरह आज उसे उसके पर की झुरिया साफ नजर आने लगी थी, हालांकि प्रिंसेस उन्हें की बेहद कोशिश कर रही थी। इसलिए मीठे लहजे मे उसके साथ करना नेख्लूदोव के लिए असभव हो रहा था।

"ओह! कितने अफसोस की बात है! इस शख्स तो तसवीर का हुनर जानता है। स्वय रेपिन** ने मुझसे कहा था," कोलासोव घूम कर देखते हुए प्रिंसेस ने कहा।

"इस औरत का झूट बोलते हुए शर्म भी नही आती!" नेख्लूदोव मन ही मन कहा और उसके माथे पर बल पड गये।

जब प्रिंसेस को यकीन हो गया कि नेख्लूदोव का मिजाज बिगडा है और उसे हल्की फुल्की चुस्त गुफ्तगू मे खीचना कठिन हो रहा है तो कोलासोव की ओर घूम गई और किसी नये नाटक के बारे मे उसकी राय पूछने लगी, ऐसे लहजे मे, मानो उसकी राय जान कर उसके सब सदा दूर हो जायेंगे, और उसका एक एक शब्द अमर होने योग्य हो।

---

*क्या ठीक बात है। (फ्रेंच)

**रूसी चित्रकार, (१८४४-१९३०)।

ोलोसोव नाटक की निंदा और साथ ही कला पर अपने विचार प्रकट रने लगा। प्रिंसेस सोफिया वासील्येव्ना उसके तर्कों की सच्चाई पर विस्मय ्रकट करती, पर साथ ही नाटक के लेखक के पक्ष म कुछ कहने का ्यत्न करती, और फिर तुरत ही कोलोसोव की बात मान जाती या ाई बिचली राय पकडती। नेख्लूदोव बैठा यह सब देख रहा था, किंतु ेख उसे कुछ और ही रहा था, उनकी बाते उसके कानो मे पड रही ी किंतु सुनाई उसे कुछ और ही दे रहा था।

कभी साफिया वासील्येव्ना और कभी कोलोसोव की बाते सुनते हुए ेख्लूदोव साफ साफ देख रहा था कि उन्हे न तो उस नाटक से कोई दिलचस्पी है न एक दूसरे से। अगर वे बाते कर रहे ह तो महज इसलिए कि खाना खाने के बाद उन्ह गले की मासपेशिया और जबान हिलाने की ज़रूरत है। कोलोसोव कुछ सरूर मे भी था क्योंकि उसने वोद्का, हल्की शराब और लिकर शराब—तीनो तरह की शराब पी रखी थी। किसानो की तरह सरूर म नही जो केवल कभी कभी पीते हैं बल्कि उन लोगो की तरह जिन्हें पीने की आदत होती है। वह लडखडा नही रहा था, न ही अट-सट बक रहा था, लेकिन उसकी स्थिति सीधे सादे आदमी की भी नही थी। वह उत्तेजित और आत्मतुष्ट हो रहा था। नेख्लूदोव ने यह भी देखा कि बाते करते समय प्रिंसेस सोफिया वासील्येव्ना की नजर बार बार खिडकी की ओर जाती थी और वह बेचैन सी दिख रही थी। खिडकी म से सूरज की एक तिरछी किरण धीरे धीरे सरकती हुई उसकी ओर बढ रही थी। उसे डर था कि मुह पर पडने मे उसकी झुरिया नजर आने लगेंगी।

"कसी ठीक बात तुमने कही," कोलोसोव की किसी टिप्पणी पर राय देते हुए उसने कहा, और कोच के साथ लगे घण्टी के बटन को दबा दिया।

डाक्टर उठ खडा हुआ, और बिना कुछ कहे, घर के आदमी की तरह, बाहर चला गया। सोफिया वासील्येव्ना की आखें उसकी पीठ पर लगी रही, और साथ साथ वह बाते भी करती रही।

खूबसूरत चोबदार घण्टी सुन कर कमरे मे हाज़िर हुआ।

"मेहरबानी कर के ये पर्दे गिरा दो, फिलिप,' उसने खिडकी की ओर इशारा करते हुए कहा।

"मैं नही मानती, तुम कुछ भी कहो, उसमे एक तरह का र
है। रहस्यवाद के बिना कविता नही हो सकती," वह कह रही थी।
साथ ही उसकी एक काली आख नौकर की ओर लगी हुई थी जो र
गिरा रहा था।

"कविता के बिना रहस्यवाद–अंधविश्वास बन कर रह जाता है
और रहस्यवाद के बिना कविता–गद्य बन कर रह जाती है," एक
सी मुस्कान के साथ वह कहे जा रही थी और साथ ही चोबदार
पर्दों को भी उसी तरह देखे जा रही थी।

"नही, नही, वह पर्दा नही, फिलिप, वह पर्दा जो बड़ा खिड़की
है," उसने दुःखी लहजे मे कहा। प्रत्यक्षत सोफिया वासीलयवना का
पर तरस आ रहा था कि उसे ये शब्द कहने की चेष्टा करना पड़ रहा है
इसलिए अपने को ढाढस बधाने के लिए उसने सिगरेट का होठो से लगा
और एक महक भरा कश लिया। जिन उगलियो मे उसने सिगरेट
रखा था, उन पर अनगिनत अगूठिया झिलमिला रही था।

फिलिप ने हल्के से सिर झुकाया, मानो क्षमाप्रार्थना कर रहा हो, फि
कालीन पर हल्के हल्के कदम रखते हुए, आज्ञाकारी नौकरा की तरह
चुपचाप दूसरी खिड़की के पास गया, और बड़े ध्यान से प्रिसस की ओर
देखते हुए पर्दा ठीक करने लगा, ताकि एक भी किरण प्रिसेस के च
पर न पड़ पाये। फिलिप बड़ा खूबसूरत जवान था, चौड़ी छाती, मज़
पट्ठे, मज़बूत टागे, और चौड़ी चौड़ी पिडलिया। पर अब भी प्रिसस सन्
नही थी। फिलिप उस पर जुल्म ढा रहा था। उसे फिर रहस्यवाद की
चर्चा छोड़ कर, शहीदो की सी आवाज़ मे उस मूख नौकर को समझा
पड़ा। क्षण भर के लिए फिलिप की आखें चमक उठी।

"शैतान की नानी, तुम चाहती क्या हो?–नौकर यही मन मे
रहा होगा,' नेख्लूदाव ने सोचा, जो बैठा यह दृश्य देख रहा था। पर
सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट फिलिप ने फौरन अपने चेहरे का भाव बदल दि
ताकि प्रिसस को उसकी खीज का पता न चल पाये, और चुपचाप
थकी मादी, दुबल, और झूठी औरत के आदश का पालन करता रहा।

"बेशक, डार्विन की बाता म सच्चाई है," अपनी नीची आराम
कुर्सी म धुसताते हुए और उनीदी आखा म सोफिया वासील्यवना का
देखते हुए कालोसोव न कहा, "लेकिन किसी हद तक। उसन कई ए

"तुम कहो, क्या तुम्हारा वंशानुगति में विश्वास है?" उसने नेख्लूदोव से पूछा। नेख्लूदोव की चुप्पी देख कर वह मन ही मन नाराज हो रही थी।

"वंशानुगति में?" नेख्लूदोव ने पूछा, "नहीं, मैं नहीं मानता।" इस समय उसके मन में अजीब से चित्र घूम रहे थे, और वह उन्हीं में खोया हुआ था। एक तरफ़ फिलिप का चित्र था—सुन्दर और सबल फिलिप का, जो एक चित्रकार के मॉडल के रूप में खड़ा था। उसके सामने उसे कोलासोव का नग्नरूप नजर आ रहा था—तरबूज की तरह बढ़ी हुई तोंद, गंजा सिर और मूसलों की तरह लटकते बाजू जिनमें पट्ठों का नाम निशान नहीं। इसी धुंधलके में सोफ़िया वासील्येव्ना के कंधे भी उसे नजर आये, जो इस समय मखमल और रेशम से ढके थे। उनके वास्तविक रूप की कल्पना करते ही वह सिहर उठा और उसे मन में से निकालने की कोशिश करने लगा।

सोफ़िया वासील्येव्ना नेख्लूदोव को आंखों ही आंखों से जांचती रही थी।

"तुम्हें मालूम है मिस्सी तुम्हारा इन्तजार कर रही है," उसने कहा, "जाओ वह तुम्हें शूमा की एक नयी धुन बजा कर सुनाना चाहती है। बेहद दिलचस्प धुन है।"

"उसका कोई इरादा संगीत सुनाने का नहीं। यह औरत सहज झूठ बोले जा रही है, न जाने क्यों," नेख्लूदोव ने मन ही मन कहा, और उठ कर प्रिंसेस के पतले, पारदर्शी अंगूठियों से सजे हाथ को दबा कर बाहर चला गया।

दीवानखाने में उसे येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना मिली, और मिलते ही वह रोज की तरह फ्रांसीसी भाषा में बात करने लगी—

"जान पड़ता है, कि जूरी के काम से तुम्हारा मन उदास हो उठता है।"

"जी हां। क्षमा कीजिये, मैं आज बहुत खुश नहीं हूं, और सोचता हूं कि यहां रह कर और लोगों का भी मन खराब करने का मेरा कोई अधिकार नहीं है।"

"तुम खुश क्यों नहीं हो?"

"क्षमा कीजिये, मैं इस बारे में बात करना नहीं चाहता," अपनी टोपी ढूंढते हुए उसने कहा।

"क्या तुम भूल गये हो—तुम खुद ही तो कहा करते थे कि हम

सदा सच बोलना चाहिए। और जिस निदयता से तुम हम सब का मजे
बात बताया करते थे! अब क्यों नहीं बताना चाहते?" फिर मिस्सी
ओर घूम कर देखते हुए, जो अभी अभी अन्दर आई थी, वह बोला
"क्यों मिस्सी, याद है?"

"वह खेल खेल में था," नेख्लूदोव ने गंभीरता से कहा, "खेल
सच बोला जा सकता है, लेकिन वास्तविक जीवन में, हम लोग—मेरा
मतलब है मैं—इतना बुरा हूं कि कम से कम मैं तो सच नहीं बोल सकता।"

"जो कहना चाहते हो वही कहो, अपने लफ्ज बदलते क्या हो। हमें
बताओ हम क्यों इतने बुरे हैं," मेकातेरीना अलेक्सेयेव्ना ने शब्दों
दिखाते हुए इस तरह कहा मानो उसे मालूम ही न हो कि नेख्लूदोव गंभीर
हो उठा है।

"किसी को भी यह कभी स्वीकार नहीं करना चाहिए कि मैं
उदास हूं। इससे बुरी बात कोई नहीं," मिस्सी बोली, "मैं कभी स्वीकार
नहीं करती, इसी लिए मैं हर वक्त खुश रहती हूं। चलो, हमारे
चलो, हम तुम्हारा mauvaise humeur* दूर करने की कोशिश
करेंगी।"

नेख्लूदोव को लगा जैसे वह कोई घोड़ा हो जिसे पुचकारा जा रहा
ताकि वह चुपचाप मुंह में लगाम और पीठ पर साज डलवा ले। पर
आज उसका मन बिल्कुल ही नहीं चाह रहा था कि कोई उससे मनमानी
करवाये। उसने माफी मांगी, कहा कि उसे घर जाना है, और विदा
लगा। हाथ मिलाते वक्त मिस्सी पहले से ज्यादा देर तक उसका हाथ
अपने हाथ में रखे रही।

"यह नहीं भूलना कि जिस बात को तुम जरूरी समझते हो वह तुम्हारे
मित्रों के लिए भी जरूरी है," वह बोली, "कल आओगे न?"

"शायद नहीं," नेख्लूदोव ने कहा और लज्जित सा अनुभव करने
लगा—न मालूम मिस्सी के कारण या अपनी वजह से, और शर्म से
होते हुए वहां से चला गया।

"बात क्या है? Comme cela m'intrigue"** येकातेरीना

---

*बुरा मिजाज। (फ्रेंच)

**कितनी उत्सुक हूं मैं (यह जानने को)। (फ्रेंच)

अलेक्सेयेव्ना बोली, "मैं ज़रूर इस की तह तक पहुचूंगी। मैं सोचती हू कि यह कोई affaire d amour propre il est tres susceptible, notre cher* दमीत्री।"

"Plutot une affaire d'amour sale"** मिस्सी कहने जा रही थी पर रुक गई। उसके चेहरे पर से सारी रौनक जाती रही। जब नेख्लूदोव से बाते कर रही थी तो उसका चेहरा खिला हुआ था, मगर अब वह बात न रही थी। यहा तक कि येकातेरीना अलेक्सेयेव्ना के सामने भी वह ऐसे भद्दे शब्द नही कह सकती थी। उसने केवल इतना भर कहा—

"हम सबके साथ यही कुछ होता है, कभी खुश तो कभी उदास।"

"क्या यह मुमकिन है कि यह भी मुझे धोखा दे जायेगा?" वह सोच रही थी। "इतना कुछ हो चुकने के बाद बहुत ही बुरी बात होगी।"

यदि मिस्सी से पूछा जाता कि "इतना कुछ हो चुकने" का क्या मतलब है तो शायद वह कुछ भी निश्चित तौर पर न कह पाती। फिर भी वह जानती थी कि नेख्लूदोव ने न केवल उसकी आशाओ को जगा दिया था बल्कि एक तरह का वचन तक दे दिया था। हा, उन दोनो के बीच स्पष्टतया कुछ भी नही कहा गया था—केवल आखो आखो मे, मुस्कराहटो और इशारो मे बात हुई थी। फिर भी मिस्सी उसे अपना समझती थी, उसे खो देना उसके लिए असह्य था।

२८

"कितनी शर्म की बात है, कितनी घिनौनी बात है!" चिरपरिचित सडको पर घर की ओर जाते हुए नेख्लूदोव सोच रहा था। मिस्सी से बात करते हुए उसका मन खिन्न हो उठा था, और अब भी उसका असर बराबर उसके मन पर बना हुआ था। औपचारिक रूप से वह कह सकता था कि उसने कभी भी मिस्सी को कोई वचन नही दिया, उसके सामने

*ज़रूर कोई आत्मसम्मान की बात है। हमारा प्यारा दमीत्री है भी बहुत भावुक। (फ्रेंच)

**बात शायद इश्कबाज़ी की है। (फ्रेंच)

कोई प्रस्ताव नही रखा, इसलिए वह निर्दोष है। परन्तु दिल ही दिल वह जानता था कि वह अपने को मिस्सी के साथ बाध चुका है, उसकी आशाओ को जगा चुका है। फिर भी आज उसका रोम रोम कह रहा था कि वह किसी सूरत मे भी उसके साथ शादी नही कर सकता। "कितनी शर्म की बात है। कितनी घिनौनी बात है।" उसने फिर सोचा। वह मिस्सी के साथ अपने सबध के बारे मे ही नही बल्कि हर चीज के बारे मे सोच रहा था। "हर चीज शर्मनाक और घिनौनी है।" उसने अपने घर के सायबान मे पाव रखते हुए सोचा।

"मैं कुछ नही खाऊगा," नेख्लूदोव ने अपने नौकर कोर्नेई से कहा जो उसके पीछे पीछे खाने वाले कमरे म चला आया था जहा भोजन और चाय के लिए मेज लगी थी। "तुम जा सकते हो।"

"अच्छा हुजूर," उसने कहा, पर वही खडा रहा और मेज पर से चीजें उठाने लगा। नेख्लूदोव के मन मे कोर्नेई के प्रति भी बुरी भावना उठी। वह एकात चाहता था, लेकिन उसे लग रहा था जैसे हर आदमी जान बूझ कर उसे परेशान करने पर तुला हुआ है। जब कोर्नेई बतन उठा कर चला गया, तो नेख्लूदोव चाय बनाने के लिए समोवार की ओर बढा। पर ऐन उसी वक्त उसे आग्राफेना पेत्रोव्ना के कदमो की आवाज आई, और वह भागा हुआ बैठक मे चला गया ताकि उससे सामना न हो, और अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया। आज से तीन महीने पहले इसी कमरे मे उसकी मा का देहात हुआ था। कमरे मे दो लैम्प जल रहे थे, दोनों के साथ रिफ्लैक्टर लगे थे। एक की रोशनी उसके पिता के चित्र पर पड रही थी, और दूसरे की रोशनी उसकी मा के चित्र पर। कमरे म दाखिल होते ही उसे याद हो आया मा की मृत्यु से पहले उसके साथ उसके कैसे सबध रह थे। अस्वाभाविक और घिनौने। यह भी कितनी शर्मनाक और घिनौनी बात थी। उसकी बीमारी के अन्तिम दिनो म वह चाहता था कि उसकी मा मर जाय। अपने आपसे तो वह यह कहता था कि मैं मा की खातिर ऐसा सोच रहा हू, ताकि उसे इस यन्त्रणा स छुटकारा मिले, मगर वास्तव म वह अपना छुटकारा चाहता था, ताकि उस मा का दुख न देखना पडे।

वह चाहता था कि उसके मन म मा के अच्छे दिनो की कोई तस्वीर जागे। वह तसवीर के पास गया। यह तसवीर एक विख्यात कलाकार ने

पाच हजार रूबल ले कर बनाई थी। तसवीर में मां ने काले रंग की मखमली पोशाक पहन रखी थी जिसका गला बहुत नीचा था। कलाकार ने खास तौर पर बड़े प्यार से स्तनों की गोलाई उनके बीच का हिस्सा मां की बेहद खूबसूरत ग्रीवा और कन्धों को चित्रित किया था। यह भी शर्म की बात थी। इसे भी देख कर मन में घिन उठती थी। मां को अध-नग्न सुन्दरी के रूप में चित्रित किया गया था। मां को इस रूप में दिखाना बेहद घिनौना काम है। यह और भी घिनौना इसलिए है कि तीन ही महीने पहले यही स्त्री इस कमरे में लेटी थी, जब वह सूख कर मम्मी बन गई थी, और उससे ऐसी दुर्गन्ध उठ रही थी जो न केवल इस कमरे में ही बल्कि सारे घर में फैली हुई थी। उससे नाक में दम हो उठा था और उसे दूर करना असम्भव हो रहा था। नेस्लूदोव को ऐसा जान पड़ा जैसे अब भी वह दुर्गन्ध आ रही हो। उसे याद आया, मौत से एक ही दिन पहले मां ने अपने कृश हाथ में, जिसकी उंगलियों का रंग पीला पड़ चुका था, उसका सबल, सफेद हाथ ले कर उसकी आंखों में आंखें डाल कर कहा था—"मेरा बुरा नहीं चेतना, दमीत्री, अगर मुझसे कोई भूल हुई हो। और उसकी आंखों में आंसू भर आये थे। यन्त्रणा के कारण उसकी आंखें पीली पड़ चुकी थीं।

उसने फिर आंख उठा कर तसवीर की ओर देखा। इस अध-नग्न स्त्री के होंठों पर विजय की मुस्कान खेल रही थी और कन्धे और बाजू इतने सुन्दर थे मानो संगमरमर तराश कर बनाये गये हों। नेस्लूदोव ने मन ही मन कहा—"उफ! कितनी घिनौनी बात है!" तसवीर में मां की आधी नंगी छातियां देख कर उसे एक दूसरी स्त्री याद आ गई, जिसे कुछ ही दिन पहले इसी तरह अध-नग्न स्थिति में उसने देखा था। वह मिस्सी थी। वह किसी नाच पर जाने के लिए तैयार थी और किसी बहाने उसने नेस्लूदोव को अपने घर बुला लिया था ताकि वह उसे नाच की पोशाक में देख सके। उसकी सुन्दर बाहों और कन्धों को याद कर के उसका मन घृणा से भर उठा। "और उसका भौंडा बाप, जो इनसान नहीं पशु है, अतीत में न मालूम क्या क्या करता रहा है और कितना जालिम है। और उसकी मां की bel esprit* होने की यह कुख्याती।" यह सब सोच कर

*हाजिरजवाब। (फ्रेंच)

उसे घृणा हो आयी, साथ ही लज्जा का भी भास हुआ। "कितना
की बात है, कितनी घिनौनी बात है!"

वह सोचने लगा—"नहीं, नहीं। मुझे आज़ादी चाहिए! इन सम्बन्धो से आज़ादी, जो इन कोर्चागिनो और मारीया वासील्येव्ना के स चल रहे हैं, इस विरासत से आज़ादी। हर चीज़ से आज़ादी! मैं खु हवा मे सास लेना चाहता हू! मैं विदेश जाऊगा, रोम मे जाऊगा, तसवीर मुकम्मल करूगा।" उसके मन मे सशय उठा, क्या चित्रकार बन की मुझ मे योग्यता भी है? "तसवीर, न सही, मैं केवल आज़ाद हवा सास लूगा। पहले कुस्तुनतुनिया जाऊगा, उसके बाद रोम जाऊगा। बस, यह जूरी वाले काम से निबट लू, और वकील के साथ जो इन्तज़ाम है कर लू। बस यह काम खत्म हो जाय, फिर "

फिर सहसा उसकी आखो के सामने उस कैदी की तसवीर उठी, वह सजीव, उसकी काली काली आखें, जिनमे हल्का सा ऐंच था, किस तरह वह रो पडी थी जब कैदियो से कहा गया था कि तुम्हे जो कहना है क लो। नेख्लूदोव ने तेज़ी से अपना सिगरेट बुझा दिया। उसने सिगरेट के टुकडे को राखदानी मे दबा कर बुझाया, फिर एक दूसरा सिगरेट सुलगा लिया, और कमरे मे इधर-उधर चलने लगा। एक के बाद दूसरी व घडिया उसकी आखो के सामने साकार हो आयी जो उसने उस लडकी के साथ बितायी थी। उसे वह आखिरी मुलाकात याद हो आई, जब उसने एक कामाध पशु की तरह व्यवहार किया था, और वासना की भूख शान्त करने के बाद उसे कितनी निराशा हुई थी। गिरजे मे प्रार्थना के सम लडकी ने सफेद पोशाक और नीले रग का कमरबन्द पहन रखा था। "हा, मुझे उससे प्रेम था। उस रात मेरे हृदय मे सचमुच उसके प्रति प्रेम था, और मेरा प्रेम पवित्र था, निर्मल था। इससे पहले भी मैं उससे प्रेम करता था। हा, जब मैं पहली बार अपनी फूफियो के घर ठहरा था, और अपना निबन्ध लिख रहा था तब भी मै उससे प्रेम करता था।" उसे याद हो आया कि उन दिनो वह कैसा व्यक्ति हुआ करता था। उसे ऐसा जान पड़ जैसे उस ताज़गी, यौवन, और जीवन की पूर्णता का एक हल्का सा स्पर्श उसे फिर छू गया हो, और उसके दिल में गहरी टीस उठी।

कितना फर्क पड गया था उसमे, तब क्या था वह और आज क्या है! यह उतना ही फर्क था जितना कि उस धात्पूणा मे जो उस रात गिरजे

ई गयी थी, और इस वेश्या मे जो उस व्यापारी के साथ शराब पीती रही थी और जिसे आज सुबह सजा दी गई थी। तब वह आज़ाद था, निश्शक था, उसके सामने असख्य सभावनाए थी। आज वह ऐसा महसूस कर रहा था जैसे किसी जाल मे फस गया हो, एव विवेकहीन, खोखले, निरर्थक और तुच्छ जीवन के जाल मे। अगर वह चाहता भी तो उसमे से निकलने या कोई रास्ता उसके सामने नही था। और निकलने की ख्वाहिश भी विरले ही उसके मन मे कभी उठती थी। उसे याद आया— एक ज़माना था जब उसे अपनी सत्यवादिता पर गर्व हुआ करता था, उसने नियम बना रखा था कि सदैव सच बोला करेगा, और इस नियम का पालन भी किया करता था। और आज वह झूठ के पक मे कितना गहरा धस गया था। ये झूठ कितने भयानक थे, और इन झूठो को उसके आस-पास के लोग सच समझते थे। इन झूठो मे से निकलने का कोई साधन उसे नही सूझ रहा था। वह कीच मे धस गया था, और अब इसी मे लोटने की उसे आदत हो गई थी।

मारीया वासील्येव्ना और उसके पति के साथ वह किस तरह अपना सम्बन्ध तोडे जिससे वह फिर आख उठा कर उसके पति और उनके बच्चो की ओर देख सके? बिना किसी झूठ के किस प्रकार वह मिस्सी से अपना पीछा छुडाये? एक तरफ वह मानता था कि भूमि का स्वामी बनना अन्यायपूर्ण है, दूसरी ओर वह उस ज़मीन का मालिक बना हुआ है जो उसे अपनी मा से विरासत मे मिली है। इस विरोधाभास से कैसे छुटकारा पाये? कात्यूशा के प्रति किये गये पाप का किस भाति प्रायश्चित करे? इस अन्तिम प्रश्न को तो यही नही छोडा जा सकता था। जिस स्त्री से वह प्यार करता था, उसके प्रति इतना भर कर देने से वह सन्तुष्ट नही हो सकता था कि एक वकील को पैसे दे दे कि वह उसे साइबेरिया के कडे श्रम से बचा ले। उसे कडे श्रम की सजा देना ही अन्यायपूर्ण था। क्या पैसे दे कर अपने पाप का प्रायश्चित करे? उस दिन भी उसने उसे पैसे दिये थे और पैसे देते समय क्या यही नही समझा था कि वह अपने पाप का प्रायश्चित कर रहा है?

उसे वह क्षण स्पष्टतया याद हो आया जब उसने बरामदे मे लडकी को रोक लिया था और उसके एप्रन मे पैसे ठूस कर भाग गया था। "उफ, पैसा!" उसने कहा, और उसके मन मे वैसी ही घृणा और भय उठे

इस रोज़ उठे थे। "हे भगवान! कितना घृणित काम है!" उनके मुँह से उसी भांति ये शब्द आज भी निकले जिस भांति उस दिन निकले थे। "कोई नीच पापी ही ऐसा काम कर सकता था—और मैं ही वह पापी हू, मैं ही वह नीच हू!" वह ऊंची ऊंची आवाज़ मे बोलने लगा। "परन्तु क्या यह सम्भव है?" वह चलते चलते रुक गया और निश्चल खड़ा हो गया। "क्या मैं सचमुच नीच हू?—यदि मैं नहीं हू तो और कौन है?" उसने स्वय अपने सवाल का जवाब दिया। "और क्या यही एक पाप मैंने किया है?" वह अपने पर इलज़ाम लगाता गया। "क्या मारीया वासील्येव्ना और उसके पति के प्रति मेरा व्यवहार घृणित और नीच नहीं है? और सम्पत्ति के प्रति? यह जानते हुए कि सम्पत्ति का उपभोग अन्यायपूर्ण है मैं उसका उपभोग किये जा रहा हू, यह कह कर कि यह मुझे मेरी मां से प्राप्त हुई है। और मेरा समूचा निष्क्रिय घृणित जीवन? और इन सब मे कात्यूशा के प्रति मेरा व्यवहार सबसे अधिक घृणापूर्ण नहीं था? नीच और पापी! वे लोग भले ही जो चाहे मेरे बारे में सोचें, मुझे बुरा समझें या अच्छा, मैं उनको तो धोखा दे सकता हू, परन्तु अपने आपको तो धोखा नहीं दे सकता।"

सहसा उसकी समझ में यह बात आ गई कि आज जो घृणाभाव मन में लोगों के प्रति—प्रिंस कोर्चागिन, सोफिया वासील्येव्ना, मिस्सी और कोर्नेई के प्रति—उसके मन मे उठा था, वह वास्तव मे स्वय उसके अपने प्रति था। और अजीब बात है, जहा अपनी नीचता को इस भांति स्वीकार करते हुए उसके मन को क्लेश हुआ, वहा एक तरह की खुशी और सन्तोष का भी उसने अनुभव किया।

एक बार नहीं, कई बार नेख़्लूदोव के जीवन मे ऐसे क्षण आए थे जिन्हें वह "आत्मपरिशोध" के क्षण कहा करता था। आत्मपरिशोध से उसका मतलब था वह आन्तरिक स्थिति जब वह अपने मन मे से सब कूड़ा-करकट साफ कर लेता था जो बड़ी देर तक मन की निष्क्रियता के कारण वहां इकट्ठा होता रहता था और जिससे मन में अवरोध पैदा हो जाता था।

इस जागरण के बाद नेख़्लूदोव सदा अपने लिए कुछ नियम निर्धारित करता, निश्चय करता कि उनका पालन करेगा, डायरी लिखना आरम्भ और एक सिरे से अपना जीवन शुरू करता, यह सोचते हुए कि

उसमे कभी कोई परिवतन नही आने देगा। अग्रेजी का मुहावरा दुहराते हुए वह इसे turning a new leaf कहता। परन्तु हर वार सासारिक प्रलोभन उसे अपने जाल मे खीच लेते, और विना जाने ही उसका फिर पतन हो जाता, और वह पहले से भी कही गहरे गत मे जा गिरता।

इस तरह जीवन मे कई वार उसने उठने और अपनी आत्मा का कलुष धोने की कोशिश की थी। पहली वार यह तव हुआ था जव वह गमियो के मौसम मे अपनी फूफियो के घर रहा था। वह जागरण सवसे सशक्त तथा उल्लासपूण रहा था, और उसका असर भी काफी देर तक रहा था। दूसरी वार उसे जागरण का अनुभव तव हुआ था जव वह सरकारी नौकरी छोड कर फौज मे दाखिल हुआ था, और अपने जीवन तक की वलि देने के लिए तैयार था। यह लडाई के दिनो की वात है। पर यहा अन्त करण की आवाज शीघ्र ही फिर दव गई थी। फिर एक वार वह जागा। यह उस समय हुआ था जव वह फौज की नौकरी छोड कर विदेश गया था और कला की सेवा करने लगा था।

उसके वाद आज तक वहुत सा समय विना आत्मपरिशोध के निकल गया था। इसलिए वह खाई वहुत चौडी हो गई थी जो उसके अन्त करण की मागो और उसके जीवन की मागा के वीच पैदा हो गई थी। इतना अधिक भी भेद हा सकता है, यह देख कर उसका दिल काप उठा।

खाई वहुत चौडी थी, उसकी आत्मा पूणतया कलुषित हो चकी थी। उसे कोई उमीद न थी कि यह मल अव कभी धोया जा सकेगा। "पहले भी तो तुमने कई वार अपने को सुधारने की, पूर्ण वनाने की चेष्टा की थी। क्या उन चेष्टाओ का कुछ नतीजा निकला? कुछ भी तो नही," उसके अन्दर वैठे शैतान ने फुसफुसा कर कहा। "अव फिर कोशिश करने का क्या लाभ? इस तरह का स्वभाव केवल तुम्हारा ही तो नही है। सभी एक जैसे है—यही जीवन है," आवाज ने फिर फुसफुसा कर कहा। पर उसके अन्दर का उन्मुक्त आध्यात्मिक जीव जाग उठा था। वही एकमात्र जीव सत्य है, सक्षम है, अनन्त है। इसलिए वह उस पर विश्वास किये विना नही रह सकता था। वेशक उसकी वतमान स्थिति और वाछित स्थिति म वहुत गहरा अन्तर था, परन्तु इस नव-जागत आध्यात्मिक जीव को कुछ भी असभव नही जान पडता था।

"किसी भी कीमत पर मैं इस झूठ को तो तार-तार कर दूंगा जो इस समय मुझे बाधे हुए है। मैं सबको सच सच बता दूगा, और सच पर ही आचरण करूगा," नेख्लूदोव ने दृढता के साथ, ऊची आवाज में कहा। "मैं मिस्सी को सच सच बता दूगा, कह दूगा कि मैं दुराचारी हू, इसलिए तुम्हारे साथ विवाह नही कर सकता, मुझे खेद है कि मैंने व्यर्थ ही तुम्हे परेशान किया। मैं मारीया वासील्येव्ना को कह दूगा मुझे उसको कहने के लिए क्या है। मैं उसके पति को बता दूगा कि मैं नीच आदमी हू, तुम्हें धोखा देता रहा हू। अपनी विरासत को भी मैं दे डालूगा, इस ढग से कि मैं सत्य को स्वीकार कर सकू। मैं कात्यूशा को बता दूगा कि मैं एक नीच, पतित हू जिसने उसके प्रति घोर पाप किया है। उसकी यन्त्रणा कम करने का भरसक प्रयत्न करूगा। ठीक है, मैं उसे मिलूगा और उससे क्षमा-याचना करूगा। हा, मैं उसी तरह उससे माफी मागूगा जिस तरह बच्चे मागते हैं।" वह रुक गया। "और ज़रूरत हुई तो उसके साथ शादी कर लूगा।"

वह फिर रुक गया, अपनी छाती पर दोनो हाथ ले जा कर जोड़ लिये जिस तरह वह बचपन मे किया करता था, फिर आखें ऊपर उठा कर किसी को सम्बोधन करते हुए कहने लगा—

"भगवान, मेरी सहायता करो, मुझे शिक्षा दो, मेरे अन्दर प्रवेश करो और मेरे अन्दर का सारा कलुष दूर कर दो।"

वह प्रार्थना कर रहा था, भगवान् से सहायता की याचना कर रहा था, कि भगवान् उसके अन्दर प्रवेश करे और उसका कलुष धो डाले। पर जिस बात के लिए वह प्रार्थना कर रहा था वह पहले ही हो चुकी थी। उसके अन्दर का भगवान् उसकी चेतना मे जाग उठा था। उसे महसूस हो रहा था जैसे वह भगवान् के साथ एकाकार हो रहा है। इसलिए उसे न केवल स्वतन्त्रता, जीवन की पूर्णता तथा आनन्द का अनुभव होने लगा था, बल्कि नेकी की समूची शक्ति का भी। वह महसूस कर रहा था जैसे वह अच्छे से अच्छा काम सम्पन्न कर सकता है, जिसे करने की मनुष्य मे योग्यता हो सकती है।

इस तरह अपने आपसे बाते करते हुए उसकी आखो मे आसू भर आए। ये आसू अच्छे भी थे और बुरे भी। अच्छे इसलिए कि ये खुशी के आसू थे। बरसो तक निद्राग्रस्त रहने के बाद आज उसके अन्दर का आध्यात्मिक

जीव जाग उठा था। बुरे इसलिए कि ये आत्मानुकम्पा के आसू थे, वह अपनी अच्छाई पर गद्गद् हो कर रो रहा था।

नेख्लूदोव को कमरे मे घुटन सी महसूस हुई। उसने आगे बढ कर खिडकी खोल दी। खिडकी बाग मे खुलती थी। बाहर चादनी रात थी, मौन, स्वच्छ। किसी गाडी के पहियो की गडगडाहट सुनाई दी, फिर सब चुप हो गया। खिडकी के बाहर पोपलर का ऊचा पेड खडा था जिसकी पल्लवहीन टहनियो की छाया बाग की बकडी पर अपना जाल बिछाये हुए थी। बाये हाथ बग्घी-खाना था जिसकी छत चादनी मे चमक रही थी और सफेद लग रही थी। सामने पेडो की उलझी हुई शाखो मे से बाग की दीवार का अधियारा साया नजर आ रहा था। नेख्लूदोव छत की ओर, चादनी मे नहाये बाग की ओर, पोपलर की छाया की ओर देखता रहा और ताज़ा, शक्ति दायिनी हवा मे गहरी सास लेता रहा।

"कितना सुदर है, कितना सुदर! हे भगवान्, कितना सुदर है!" वह कह रहा था। उसका अभिप्राय उस परिवतन से था जो उसके अदर घट रहा था।

२६

मास्लोवा जेलखाने की अपनी कोठरी मे शाम के छ बजे जा कर कही पहुची। थक कर चूर हो रही थी, और पावो मे छाले पड गये थे। चलने की उसे आदत न थी, और यहा पथरीली सडक पर दिन मे दस मील चलना पडा था। इस सज़ा को सुन कर उसका दिल टूट गया था, उसे आशा न थी कि इतनी कडी सज़ा मिलेगी। और भूख के कारण वह बेचैन हो रही थी।

मुकद्दमे के वक्त जब बीच मे पहली छुट्टी हुई थी तो उसके नज़दीक ही कुछ सिपाही बैठ कर डबलरोटी और उबले हुए अण्डे खाने लगे थे। मास्लोवा के मुह म पानी भर आया था, और उसे मालूम हुआ था कि उसे भूख लग रही है। लेकिन सिपाहियो से मागना उसने आत्मसम्मान के विरुद्ध समझा था। तीन घण्टे बाद उसकी भूख मर चुकी थी, केवल बदन मे वह कमज़ोरी महसूस करने लगी थी। इसी समय उसे वह अप्रत्याशित सज़ा सुनाई गई। पहले तो उसे यकीन नही हुआ, उसने सोचा कि वह ठीक

तरह से समझ नही पायी। वह इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकती
थी कि वह साइबेरिया मे एक अपराधी की तरह भेजी जा सकती है।
उसने जजो और जूरी के सदस्यो के चेहरा की ओर देखा। सभी के
चेहरो पर व्यावहारिक तटस्थता छायी थी, मानो जो उन्होंने सुना था वह
स्वाभाविक और प्रत्याशित ही था। यह देख कर मास्लोवा क्रुद्ध हो उठी
थी और चिल्ला कर सारी अदालत को कहा था कि मैं बेगुनाह हूं। पर
उसने देखा कि उसकी पुकार को भी लोगो ने स्वाभाविक और प्रत्याशित
ही समझा है, और उससे कुछ भी नही बन पायेगा। यह देख कर निराशा
मे वह रो पडी थी, और महसूस करने लगी थी कि इस निर्दयी, विचित्र
अन्याय के सामने उसे सिर झुकाना ही पडेगा, इसके सिवा कोई चारा
नही। उसे सबसे ज्यादा अचम्भा इस बात का था कि वही जवान आदमी
या कम से कम वे लोग जो अभी बूढे नही हुए थे जो सदा नज़र भर कर
उसकी ओर देखते थे—उन्होंने ही उसे सजा दिलवाई थी। उनमे से एक
आदमी को सरकारी वकील को तो वह बिल्कुल दूसरे रंग से देख चुकी
थी। मुकद्दमा शुरू होने से पहले और बीच बीच मे जब छुट्टी होती थी
तो यही लोग दरवाजा खुला देख कर अन्दर झाकते थे, यह दिखाते हुए
कि वे किसी काम से उधर से हो कर जा रहे हैं, या सीधे अन्दर आ जाते
और आखें भर कर उसकी ओर देखते। फिर इन्ही लोगो ने ही न
क्यो उसे बडे श्रम की सजा दे दी थी, हालाकि वह निर्दोष थी, और
उस पर जो अपराध लगाया गया था, वह गलत था। पहले तो वह रोती
रही, फिर चुप हो गई, और कैदियो के कमरे मे निरुद्ध सी इस इन्तजार
मे बैठी रही कि कब उसे वापस ले जाया जायेगा। उस वक्त उसकी एक
ही इच्छा हो रही थी—सिगरट पीने की। वह इस हालत मे बैठी था उसी
बोच्कोवा और कार्तीनकिन को भी उसी कमरे मे लाया गया। उन्हें भी
फैसला सुना दिया गया था। अन्दर आते ही बोच्कोवा ने मास्लोवा को
बुरा भला कहना शुरू कर दिया और उसे "मुजरिम" कह कर पुकारने
लगी।

"तुम्हें आखिर मिला क्या? वह कहती थी, मन भाई जुर्म नहीं
किया भाई जुर्म नहीं किया, ले लिया मजा, छिनारी राण्ड! ठीक ही
फल मिल गया न? अब जाओ साइबेरिया, यहां ये गहने पकडे नहीं बनेंगे।"
प्यादे की मास्लोवा से दोनों हाथ खाली मास्लोवा चुपचाप ...

झुकाये बैठी थी, और नीचे गंदे फर्श की ओर एक टक देखे जा रही थी। उसने केवल इतना भर कहा—

"मैं तुम्हे कुछ नही कहती, तुम भी मुझे कुछ मत कहो मैंने क्या तुम्हे कुछ कहा है?" उसने बार बार दोहरा कर कहा, फिर चुप हो गई। जब बोच्कोवा और कार्तीनकिन को वहा से ले गये और एक कर्मचारी ने उसे तीन रूबल ला कर दिये तो उसके चेहरे पर कुछ रौनक आई।

"तुम्हारा ही नाम मास्लोवा है?" उसने पूछा, "यह लो। एक औरत ने तुम्हारे लिए दिये है।" और उसने रूबल आगे बढा दिये।

"औरत ने—किस औरत ने?"

"तुम ले लो—मैं तुम्हारे साथ कलाम नहीं करूगा।"

ये रूबल चकले की मालकिन कितायेवा ने भेजे थे। कचहरी से जाते वक्त उसने पेशकार से पूछा था कि क्या वह कुछ रकम मास्लोवा को दे सकती है। पेशकार ने जवाब दिया कि हा, दे सकती हो। इजाज़त मिलने पर उसने एक एक बटन कर के तीनो बटन खोलकर अपने गोरे-चिट्टे स्थूल हाथ पर से स्वेड का दस्ताना उतारा, फिर कमर मे से अपने रेशमी घाघरे की सिलवटो मे से एक बढिया सा बटुआ निकाला। उसमे कूपनो का एक पूरा पुलिदा रखा था जो उसने कुछ लाभांश पत्रको मे से फाड रखे थे। यह नफा उसे अपने चकले के व्यापार मे से हुआ था। उसने ढाई रूबल का एक कूपन निकाला, उसके साथ दो बीस बीस के और एक दस कोपेक का सिक्का जोडे, और यह सब रकम पेशकार के सुपुर्द कर दी। पेशकार ने कितायेवा की मौजूदगी मे ही एक कर्मचारी को बुलाया और पैसे उसके हाथ मे दे दिये।

"किरपा कर के ठीक ठीक दे देना," कितायेवा ने कहा।

इस अविश्वास से कर्मचारी के मन को खेद हुआ। यही कारण था कि उसने मास्लोवा के साथ रुखाई से बात की।

पैसे मिले तो मास्लोवा बडी खुश हुई। इससे वह अपनी एकमात्र ललक तो शान्त कर पायेगी।

"अगर कहीं से सिगरेट मिल पायें और मैं एक कश लगा सकू!" उसने मन ही मन कहा। बरामदे मे दूसरे कमरो के भी दरवाज़े खुलते थे, जिनमे से सिगरटो का धुआ छन छन कर आ रहा था। मास्लोवा सिगरेट पीने के लिए इतनी बेचैन थी कि वह इसी धुए मे लम्बी लम्बी

सास खीचने लगी। सिगरेटो के लिए उसे बडी देर तक इन्तजार करना पडा। सेक्रेटरी या श्राडर मिलने पर ही वंदियो को वहा से ले जाया जा सकता था। और सेक्रेटरी बाते करने मे ऐसा मस्त था कि उसे कुर्सी पर ही गये। वह फिर एक वकील के साथ उस लेख के बारे म बहस करने लगा था, जिसे छापने की सेसर ने मनाही कर रखी थी।

मुकद्दमे के बाद, छोटे-बडे, कितने ही आदमी मास्लोवा को घूरने के लिए कमरे म आये, और एक दूसरे के साथ फुसफुसा कर बातें करते रहे। पर मास्लोवा ने उनकी ओर कोई ध्यान नही दिया।

आखिर पाच बजे जा कर कही उसे वहा से निकलने की इजाजत मिली। पिछले दरवाजे मे से वह निकली। दो सरक्षक, वही नीज्नी नोवगारोद का आदमी और चुवाश उसके साथ थे। अभी वह कचहरी के अहाते मे ही थी कि उसने उन्हे बीस कोपेक दिये और कहा कि उसके लिए दो छोटी डबलरोटिया और एक डिब्बिया सिगरेट ला दें। चुवाश हस दिया, बोला-"अच्छी बात है, ला देता हू," और पैसे ले लिये। और सचमुच वह सिगरेट और डबलरोटिया ले भी आया और ईमानदारी से बाक़ी पैसे भी लौटा दिये।

रास्ते मे उसे सिगरेट पीने की इजाज़त नही दी गई। वह उसी तरह बेचैन जेलखाने की ओर चलती गई। जब वह जेल के फाटक पर पहुची तो उसी वक्त बाहर कही से एक सौ कैदी रेलगाडी द्वारा वहा लाये गये थे और उन्हे अदर ले जाया जा रहा था। गलियारे मे उसका उनसे सामना हुआ।

बाहर की ड्योढी कैदियो से भर गई थी। सभी तरह के कैदी थे बूढे, जवान, दाढी वाले, बेदाढी, रूसी, गैर रूसी, किसी किसी का सिर भी घुटा हुआ था, सभी के पावो मे बेडिया खनखना रही थी। ड्योढी धूल, शोर और कैदियो के पसीने की तीखी गध से भर गई। मास्लोवा के पास से गुजरते हुए सभी कैदी उसकी ओर घूर घूर कर देखते थे। कुछेक तो जान बूझ कर उसे ठोकर लगा रहे थे।

"कैसी लौंडिया है—रसभरी," एक बोला।

"सलाम है मेम साहिब," एक दूसरे ने आख मारते हुए कहा। एक सावला सा आदमी बेडिया खनखनाता आया। उसकी बडी बडी मूछे थी, लेकिन बाकी चेहरा, गर्दन तक, सफाचट था। पास आते ही वह रुक गया और उछल कर मास्लोवा को बाहो मे भर लिया।

"तुम अपने यार को भूल ही गई हो! वाह वाह, बडा गरूर करती हो।" अपने दात दिखाते हुए वह चिल्लाया। मास्लोवा ने उसे धकेल कर हटा दिया तो उसकी आखें चमकने लगी।

'ए सूअर! क्या कर रहे हो?" छोटे इन्सपेक्टर ने पीछे से कहा।

कदी डर कर पीछे हट गया। छोटे अफसर ने मास्लोवा की ओर घूम कर पूछा—

"तुम यहा क्यो?"

मास्लोवा कहना चाहती थी कि उसे कचहरी से यहा वापस लाया गया है, लेकिन वह इतनी थकी हुई थी कि उसने जवाब देना नही चाहा।

"इसे कचहरी से लाया गया है, साहब!" एक सिपाही ने सैल्यूट करते हुए आगे बढ कर कहा।

"तो इसे बडे वार्डर के हवाले करो। म यहा यह बकवास नही चलने दूगा।"

"जी, जनाब!"

"माकोलाव, इसे ले जाओ यहा से," छोटे इन्स्पेक्टर ने चिल्ला कर कहा।

बडा जमादार आया। उसने गुस्से से मास्लोवा का कधा पकड कर धक्का दिया और सिर झटक कर इशारा किया कि मेरे पीछे पीछे चलती आओ, और उसे एक दूसरे वार्ड के बरामदे मे ले गया जहा कैदी औरतो को रखा जाता था। यहा पर उसकी तलाशी ली गयी। जब कुछ भी बरामद न हुआ (उसने सिगरेटो की डिबिया डबलरोटी के अन्दर छिपा ली थी) तो उसे उसी कोठरी मे ले जाया गया जहा से निकल कर वह सुबह कचहरी म गयी थी।

३०

एक लम्बोतरी सी कोठरी मे मास्लोवा को रखा गया था, जिसकी लम्बाई २१ फुट और चौडाई १६ फुट थी। उसम दो खिडकिया और एक टूटा-फूटा अलावघर था। इसके दो तिहाई हिस्से मे कैदियो के लिए एक के ऊपर दूसरा तख्ते लगे हुए थे। उनकी लकडी जगह जगह से ऐंठी और सिकुडी

हुई थी। दरवाज़े के ऐन सामने देवप्रतिमा टगी थी जिसके पास एक मोमबत्ती जलती हुई थी, और सदा बहार फूलों का एक गुच्छा लटक रहा था। बायी ओर दरवाजे के पीछे जहा फर्श काला पड गया था, एक टब रखा था जिसमे से बदबू आ रही थी। बंदी औरतों की जाच हो चुकी थी और उन्हे रात के लिए कोठरी में बद कर दिया गया था।

इस कोठरी मे पन्द्रह लोगों को रखा गया था जिनमे से तीन बच्चे थे। अभी रोशनी काफी थी। केवल दो औरते लेटी हुई थी। उनमे से एक तपेदिक की मारी थी, जिसे चोरी के इलज़ाम मे बद किया गया था। दूसरी मूढ थी जिसे पासपोर्ट न होने के कारण पकड लिया गया था, और जो अधिकाश समय सोती रहती थी। तपेदिक वाली औरत सो नहीं रही थी, केवल लेटी थी और आखें फाड फाड कर देख रही थी। उसने सिर के नीचे अपना कैदियो का लबादा लपेट कर रखा हुआ था, और गले में उठती बलगम को दबाने की चेष्टा कर रही थी ताकि खासी न होने लगे।

अधिकाश स्त्रिया ने केवल भूरे रग की गाढे की कमीज़ें पहन रखी थी। उनमे से कुछेक खिडकी के पास खडी बाहर मैदान मे झाक रही थी, जहा कैदी जा रहे थे। तीन स्त्रिया बैठी सिलाई कर रही थी। इन तीन स्त्रियो मे कोराब्ल्योवा भी थी। यह वही औरत थी जिसने सुबह मास्लोवा को विदा किया था। कद की ऊची लम्बी, और मजबूत औरत थी। चेहरा कठोर, भवे चढी हुई, गालो का मास पिलपिला हो रहा था जिससे ठुड्डी दोहरी हो गयी थी। पीठ पर सुनहरी रग के बालो की हल्की सी चोटी लटक रही थी, कनपटियो पर के बाल सफेद हो चले थे, और गाल पर एक मस्सा था जिसमे बाल उग रहे थे। इसे साइबेरिया मे कडी मशक्कत करने की सज़ा दी गयी थी। इसने एक कुल्हाडी के साथ अपने पति की हत्या कर डाली थी जो इसकी बेटी के साथ अनुचित सम्बध रखना चाहता था। कोठरी मे सब औरतो की यह मुखिया थी, और लुक छिप कर शराब बेचा करती थी। वह चश्मा पहन कुछ सी रही थी। अपने बडे बडे काम के आदी हाथो मे उसने सुई पकड रखी थी—तीन उगलियों से और नोक अपनी तरफ किये, जैसे कि किसान औरत पकडती है। उसकी बगल मे एक दूसरी स्त्री बैठी थी जो मोटी किरमिच का एक थैला सी रही थी। यह औरत रेलवे मे चौकीदारी का काम करती थी। इसे तीन महीने कैद की सज़ा दी गई थी, क्योकि उसने वक्त पर गाडी को

-झण्डी नही दिखायी थी जिससे हादसा हो गया था। दयालु-स्वभाव और -बातें करने की शौकीन थी, कद छोटा सा, नाक चपटी और आखें काली काली थी। सिलाई करने वाली औरतो म तीसरी औरत का नाम फेदोस्या था। यह बेहद सुदर युवती थी, गोरा रग, गुलाबी गाल, बच्चा सी चमकती आख, सुनहरी बालो की लम्बी लम्बी चोटिया जो इसन सिर पर लपेट सी रखी थी। इसे इसलिए कैद कर रखा था कि इसने अपनी शादी के फौरन् ही बाद अपने घर वाले को जहर देन की काशिश की थी (इसकी शादी, इससे बिना पूछे १६ साल की उम्र म ही कर दी गयी थी)। आठ महीने तक यह जमानत पर रिहा रही। इस दौरान इसकी अपने पति के साथ सुलह हो गई। सुलह ही नही हो गई, यह उसे प्यार करने लगी। और जब मुकद्दमे का वक्त आया तो दोनो जी जान से एक दूसरे को चाहते थे। इसके पति, ससुर और सास ने—खास तौर पर सास ने जो इसे बेहद प्यार करने लगी थी—इसे छुडाने की भरसक काशिश की, लेकिन फिर भी इसे साइबेरिया म कडे परिश्रम की सजा द दी गयी। फेदोस्या बडी दयालु-स्वभाव, और हसमुख लडकी थी, सारा वक्त हसती-खेलती रहती। उसका तख्ता मास्लोवा के बिल्कुल साथ था। उसे मास्लोवा से बेहद प्यार हो गया था, यहा तक कि उसकी देखभाल और खिदमत करना वह अपना फर्ज समझती थी। तख्तो पर दो और स्त्रिया बैठी थी जो कोई काम नही कर रही थी। उनमे से एक की उम्र लगभग ४० वर्ष की होगी, दुबला-पतला, पीला सा चेहरा, जो शायद किसी जमाने मे बडा खूबसूरत रहा होगा। उसकी गोद मे बच्चा था जो उसके गोरे चिचुके स्तन को मुह लगाये दूध पी रहा था। इसके गाव मे पुलिस अफसर एक रगरूट को ले जा रहा था (यह लडका इस औरत का भतीजा था)। गाव वालो ने आपत्ति उठाई, क्योकि उनकी राय मे वह उसे गैरकानूनी तौर पर ले जाया जा रहा था और पुलिस अफसर का रास्ता रोक कर लडके को छुडा लिया। इस औरत ने सबसे पहले आगे बढ कर उस घोडे की लगाम पकडी थी जिस पर बिठा कर उसे ले जाया जा रहा था। यही इसका जुर्म था। दूसरी स्त्री जो बेकार बैठी थी, कोई बुढिया थी जिसके बाल पके हुए थे और पीठ झुक गई थी। उसकी आखो से भी दयालुता टपकती थी। उसका तख्ता अलावघर के पीछे था। इस वक्त वह चार साल के फूले हुए पेट वाले लडके को पकडने की कोशिश कर रही थी जो हसता हुआ

उमके सामने आगे-पीछे भाग रहा था। इस लडके ने केवल एक इजार पहन रखी थी, और इसके बाल छोटे छोटे थे। जब भी औरत के पास से हो कर निकलता तो बार बार कहता—"देखा, नही पकडा, नही पकडा।" बुढिया और उसके बेटे को आग लगाने के जुर्म मे कैद हुई गया था। यह अपनी सज़ा हसते-हसते काट रही थी। उसे चिन्ता थी तो अपने बेटे की, और मुख्यतया अपने बूढे पति की। वह सोचती कि उसका "बूढा" बहुत बिगडता होगा क्योकि उसके कपडे धोने वाला अब कोई नही रहा था।

इन सात स्त्रियो को छोड कर चार स्त्रिया खुली खिडकी के पास, सीखचो को पकडे खडी थी। बाहर आगन मे से उन कैदियो का दल जा रहा था जिनसे मास्लोवा की टक्कर हुई थी और ये स्त्रिया उन्हे इशारे कर रही थी और चिल्ला चिल्ला कर उनसे बाते कर रही थी। इनमे से एक बडी भारी-भरकम औरत थी, थलथल पिलपिल, सिर पर ताम्र रग के बाल, जर्द चेहरे, हाथो और गर्दन पर चित्तिया, गर्दन स्थूल जो कॉलर मे से बाहर निकली हुई जान पडती थी। उसने कालर के बटन खोल रखे थे। वह चिल्ला कर, फटी आवाज़ मे कोई अश्लील बात कह रही थी। यह औरत चोरी के इलज़ाम मे कैद काट रही थी। उसकी बगल मे एक दस बरस की लडकी जितनी सावले रग की स्त्री खडी थी। लम्बी कमर, छोटी छोटी टागे, लाल धब्बो भरा चेहरा, आखे एक दूसरे से दूर-दूर, और मोटे मोटे होठ थे जो उसके लम्बे लम्बे सफेद दातो को भी ढक नही पाते थे। आगन मे जो कुछ हो रहा था, उसे देख कर वह किसी किसी वक्त अचानक ऊची कर्कश आवाज़ मे हसने लगती। वह चोरी और आग लगाने के इलज़ाम मे सज़ा काट रही थी। उसे सिगार-सज्जा का बडा शौक था, इसी लिए औरतो ने उसका नाम छबीली रख छोडा था। इनके पीछे एक दुबली-पतली, दयनीय सी स्त्री, भूरे रग की बडी गदी कमीज़ पहने खडी थी। उसे गर्भ था। इसे चोरी का माल छिपा कर रखने का अभियोग लगाया गया था। यह औरत चुपचाप खडी थी लेकिन आगन मे जो कुछ हो रहा था, उसे देख देख कर खुश हो रही थी और मुस्करा रही थी, मानो उसे अच्छा लग रहा हो। इन्ही के साथ एक नाटे कद की गठीली किसान औरत खडी थी, बडी बडा भारी मिलनसार चेहरा। यह उस लडके की मा थी जो बुढिया के साथ खेत ए

था। इसी की एक सात बरस की बेटी भी थी जो उसी के साथ जेल मे थी। बच्चे भी इसलिए उसके साथ जेल मे आये थे क्योकि बाहर इनकी देखभाल करने वाला कोई न था। नाजायज शराब बेचने के जुर्म मे कैद काट रही थी। वह खिडकी से कुछ हट कर खडी मोजा बुन रही थी। खिडकी से जो कुछ कहा जा रहा था उसे सुन तो रही थी लेकिन उसे बुरा समझती थी, और बार बार सिर हिला कर आखें बन्द कर रही थी। पर उसकी सात साल की बेटी, छोटी सी शमीज पहने, छोटे से, दुबले-पतले हाथ से लाल बालो वाली औरत की स्कर्ट पकडे खडी थी, और बडे ध्यान से उन अश्लील गालियो को सुने जा रही थी जो औरते और मर्द कैदी एक दूसरे को निकाल रहे थे, और धीरे धीरे उन्हे मुह मे दोहरा रही थी, मानो जबानी याद कर रही हो। उसके पटुए के से बाल खुले लटक रहे थे और नीली नीली आखें एकटक लाल बालो वाली औरत को देखे जा रही थी। बारहवी औरत एक पादरी की लडकी थी, लम्बी-ऊची, रोबीले आकार वाली लडकी जिसने अपने अवैध बच्चे को कुए मे फेंक दिया था। वह इस गाली-गलोच की ओर कोई ध्यान नहीं दे रही थी। उसने भी केवल एक गन्दी सी शमीज पहन रखी थी और नगे पावो घूम रही थी। उसके सुनहरी बालो की एक छोटी सी लट जूडे मे से निकल कर लटक रही थी और बडी भद्दी लग रही थी। कोठरी मे खाली जगह पर बिना किसी की ओर देखे, वह इधर-उधर चल रही थी, और जब भी दीवार के सामने पहुचती तो झट से घूम कर फिर चलने लगती।

३१

ताला खुलने की आवाज आई। दरवाजा खुला और मास्लोवा कोठरी मे दाखिल हुई। सभी औरते घूम कर उसकी ओर देखने लगी। यहा तक कि पादरी की बेटी भी क्षण भर के लिए रुक गई और भवे चढा कर मास्लोवा की ओर देखा, पर फिर बिना कुछ कहे, लम्बे लम्बे डग भरती हुई तेज तेज चलने लगी। कोराब्ल्योवा ने सूई अपने भूरे रग के टाट मे खोसी और चश्मे मे से प्रश्नसूचक नेत्रो से मास्लोवा की ओर देखा।

"हे भगवान्, लौट आयी क्या? मुझे तो पक्का यकीन था कि वे तुम्हे छोड देंगे। तो तुम्हे भी सजा मिल गई!" उसने गहरी खरज आवाज मे कहा। उसकी आवाज आदमियो जैसी थी।

उसने अपना चश्मा उतारा और अपना थाम उठा कर पास ही तख्ते पर रख दिया।

"और यहा मैं और बुढिया चाची बैठी कह रही थी, 'यह भी हो सकता है कि मास्लोवा को फ़ौरन् ही छोड दें', सुनती हू ऐसा भी होता है। किसी किसी को तो ढेरो रुपया भी मिलता है। लेकिन सब किस्मत की बात है," चौकीदारिन कहने लगी। वह जब बातें करती तो ऐसा जान पडता जैसे गा रही है। "और हुआ बिल्कुल ही उलट। हमारा अनुमान बिल्कुल गलत निकला। भगवान् को यह मजूर नही था, प्यारा।" वह अपनी मधुर आवाज़ मे कहती गई।

"क्या यह कभी मुमकिन हो सकता है? क्या तुम्हें सज़ा दी गई है?" फ़ेदोस्या ने सद्भावना भरी, व्यग्र आवाज़ मे पूछा और अपनी हल्की नीली बच्चो की सी आखो से उसकी ओर देखने लगी। उसका चमकता चेहरा मुर्झा गया मानो उसे रुलाई आ रही हो।

मास्लोवा ने कोई उत्तर नही दिया। वह सीधी अपने तख्ते की ओर गई, जो दिवार के साथ दूसरे नम्बर पर कोराब्ल्योवा के पास था, और जा कर बैठ गई।

"कुछ खाया भी है या नही?" फ़ेदोस्या ने पूछा और उठ कर मास्लोवा के पास चली आई।

मास्लोवा ने जवाब नही दिया और डबलरोटी के दोनो रोल तख्ते पर रख दिया। फिर अपना धूल भरा लबादा उतारा और अपने घुघराले बालो पर से रूमाल हटाया।

बुढिया औरत जो बच्चे के साथ खेल रही थी, चली आई और मास्लोवा के सामने आ कर खडी हो गई।

'च च च!" उसने बडी दया से सिर हिलाते हुए कहा।

लडका भी उसके साथ चला आया। डबलरोटी को देख कर उसके होठ खुल गये और आखें फाड फाड कर उसकी ओर देखने लगा। आज दिन भर जो उसके साथ बीती थी, उसके बाद इन सवेदनापूर्ण चेहरों को देख कर मास्लोवा के होंठ कापने लगे और उसे रोना आ गया। लेकिन उसने अपने को सभाल लिया। पर यह उस वक्त तक रहा जब तक कि बुढिया और लडका वहा पर नही पहुचे। जब उसने बुढिया की दयार्द्र, सहानुभूतिपूर्ण आवाज़ सुनी और बच्चे को डबलरोटी पर से हट कर अपने

भ्रार देखते पाया तो वह भ्रपने को न रोक सकी। उसका सारा चेहरा कापने लगा भ्रौर वह फफक फफक कर राने लगी।

"मैंने कहा नही था कि कोई भ्रच्छा सा वकील कर ले," कोराब्ल्योवा ने कहा। "भ्रब क्या मिला? देश निकाला?"

मास्लोवा कोई जवाब नही द पायी। उमने डबलरोटी मे से सिगरेटो की डिबिया निकाली भ्रौर कोराब्ल्योवा के सामने बढा दी। डिबिया पर एक गुलाबी गालो वाली भ्रारत की तसवीर थी, जिसके बाल ऊपर को उठे हुए थे भ्रौर बहुत नीचे गले वाली कमीज़ पहने थी। कोराब्ल्योवा ने डिबिया को देख कर सिर हिला दिया। लेकिन मुख्यतया इसलिए कि उसे मास्लोवा का इन चीजो पर पैसे ज़ाया करना भ्रच्छा नही लगा। फिर भी उसने एक सिगरेट निकाली, लैम्प के पास जा कर उसे सुलगाया, भ्रौर एक कश ले कर मास्लोवा के हाथ म दे दिया। मास्लोवा भ्रब भी रो रही थी। लेकिन वह बडी भ्रधीरता से तम्बाकू के कश खीचने लगी।

"कडी मशक्कत की सज़ा मिली है," मास्लोवा ने धुभ्रा छोडते हुए, सिसकी भर कर कहा।

"इन जाननेवाभ्रो को भगवान् का भी डर नही," कोराब्ल्योवा बुदबुदायी। "बिना किसी दोष के लडकी को सज़ा दे दी।"

खिडकी की भ्रोर से ऊची ऊची हसने की कर्कश भ्रावाज़ भ्राई। भ्रौरत हस रही थी। छोटी लडकी भी हस रही थी भ्रौर उसकी पतली बचपना भ्रावाज़ भ्रौरतो की तीखी फटी भ्रावाज़ मे मिल रही थी। बाहर भ्रागन म किसी कैदी न कोई ऐसी हरकत की थी जिस पर ये दर्शक भ्रौरतें हसने लगी थी।

"भ्ररे, वह देखो उस सिर-मुडे शिकारी कुत्ते को, क्या कर रहा है," लाल बालो वाली मोटी भ्रौरत न कहा, भ्रौर हसी से उसका सारा शरीर हिलने लगा। फिर सीखचो के पास भ्रागे की भ्रोर झुक कर उसने भ्रश्लील ज़बान मे फिज़ूल चिल्लाना शुरू कर दिया।

"मोटी खूसट चिल्लाये जा रही है। क्या हुभ्रा है जो इतना हस रही है?" कोराब्ल्योवा ने कहा भ्रौर फिर मास्लोवा की भ्रोर घूम कर बोली, "कितने साल?"

"चार साल," मास्लोवा ने जवाब दिया। उसकी भ्राखो से झर झर भ्रासू बह रहे थे, यहा तक कि एक भ्रासू सिगरट पर भी जा पडा। मास्लोवा

ने गुस्से मे सिगरेट मरोड कर फेंक दी और एक दूसरी सिगरेट निकाली।
चौकीदारिन सिगरेट पीती तो नही थी लेकिन उसने फिर भी सिगरेट उठा ली और उसे सीधा करने लगी। और उसी तरह सारा वक्त बात करती रही—
"हा, तो यह हुआ प्यारी, आखिर तो यह सच है कि सब को तो इन्होने भाड मे झोंक दिया है। अब जो मन मे आये करते है। यहा हम बैठी अनुमान लगा रही थी कि तुम्हे छोड दिया जायगा। कोराब्ल्योवा कहती थी—'उसे जरूर छोड देंगे'। मैं कहती थी—'नही, नही प्यारी, मेरा दिल कहता है कि उसे कभी नही छोडेंगे।' और वही हुआ भी," वह बोलती जा रही थी। प्रत्यक्षत उसे अपनी आवाज सुन कर मजा आ रहा था।
एक एक कर के वे औरते भी मास्लोवा के पास चली आयीं जो खिडकी के पास खडी थी। बाहर आगन मे से कैदी चले गये थे जिनसे उनका दिलबहलाव हो रहा था। सबसे पहले मोटी मोटी आखो वाली औरत आई जो नाजायज़ शराब बेचने के कारण कैद काट रही थी। उसके साथ उसकी नन्ही बेटी भी आई।
"इतनी सख्त सज़ा क्यो मिली?" मास्लोवा के पास बैठते हुए और खूब तेज तेज़ बुनते हुए उसने कहा।
"इतनी सख्त क्यो? क्योकि पैसे नही थे। इसलिए। अगर पैसे होते, और एक अच्छा वकील कर लिया जाता जो उनकी चालाकिया पकड सकता तो यह छूट जाती। यकीनी बात है," कोराब्ल्योवा ने कहा। "वहा एक वकील है, क्या नाम है उसका—वह जिसके मुह पर बाल ही बाल है और लम्बी सी नाक है—वह ऐसा मर्म जानता है कि फासी के तख्ते पर से उतरवा लेता है आदमी को। मैं बताऊ तुम्हें। अगर उसे कर लिया होता तो कोई बात ही नही थी।"
"जी, वह तुम्हारे हाथ जरूर आता," छबीली ने उनके पास बैठते और अपनी बत्तीसी निपोरते हुए कहा, "वह एक हजार से नीचे तो बात ही नहीं करता।"
"लगता है जैसे तुम पर ग्रह है," उस बुढिया ने कहा जिसे आग लगाने के जुर्म मे बंद किया गया था। "जरा सोचो तो, एक तो उसकी घर वाली को फसा लिया, दूसरे उसे बंद कर दिया। और मुझे भी

मेरा बुढापा नही देखा। कीडे खा जायेंगे हमे यहा पर," अपनी कहानी उसने फिर शुरू कर दी जो सैकडो बार पहले सुना चुकी थी। "या जेल भुगतो या भाग कर खाओ। भिखारी और कैदी बनते देर नही लगती।"

"लगता है सभी एक जैसे है," नाजायज शराब बेचने वाली ने कहा, और अपनी बेटी के सिर की ओर देख कर अपनी बुनाई तख्ते पर रख दी और लडकी का घुटनो के बीच खडा कर के उसके बालो मे से जूए निकालनी शुरू कर दी। "पूछते हैं—'तुम शराब क्यो बेचती हो?' वाह!" वह बोलती गई "क्यो, बच्चो का पेट कैसे पाले?"

मास्लोवा ने य शब्द सुने तो उसका शराब पीने का जी कर आया।

"थोडी सी शराब मिल जाय?" अपनी आस्तीन मे आखे पोछते हुए उसने कोराब्ल्यावा से पूछा। अब उसकी सिसकिया कुछ थमने लगी थी।

"अच्छी बात है, हो जाय," कोराब्ल्योवा बोली।

३२

मास्लोवा ने पैसो का कूपन निकाला और कोराब्ल्योवा के हाथ मे दे दिया। इसे भी उसने डबलरोटी मे छिपा रखा था। कोराब्ल्यावा पढना नही जानती थी, फिर भी उसने कूपन ले लिया। उसे छबीली पर यकीन था, और छबीली ने बताया था कि कूपन दो रूबल और पचास कोपेक का है। कोराब्ल्योवा तख्तो पर पाव रखती हुई रोशनदान तक जा पहुची जहा उसने शराब की एक छोटी सी शीशी छिपा रखी थी। उसे शराब निकालते देख कर व औरते वहा से सरक गइ जिनके तख्त वहा से दूर थे। इस बीच मास्लोवा ने अपने लबादे और रूमाल को झाड कर साफ किया और तख्ते पर चढ कर बैठ गई और डबलरोटी खाने लगी।

"मैंने तुम्हारे लिए चाय रख दी थी," फेदोस्या बोली, और एक तख्ते पर से टीन की चायदानी और एक मग उठा लाई जिन्हें उसने एक चिथडे मे लपट कर रखा हुआ था, "पर चाय जरूर ठण्डी हो गई होगी।"

चाय ठण्डी थी, और उसमे चाय की कम और टीन की अधिक गध आ रही थी। फिर भी मास्लोवा ने मग भर लिया और डबलरोटी के साथ साथ उसे पीने लगी।"

"पिनाश्का, यह लो," उसने डबलरोटी का एक टुकडा उस छोटे लडके को दिया जो बडा उसके चलते मुह को देखे जा रहा था।

इस बीच कोराब्ल्योवा ने शराब की शीशी और एक मग मास्लोवा के आगे बढा दिया। मास्लोवा ने थोडी थोडी शराब कोराब्ल्योवा और छबीली को भी पीने के लिए दी। इन कैदियो का इस कमरे म बडा ऊचा समझा जाता था, क्योकि इनके पास कुछ पैसे थे। इसलिए भी कि इनके पास जो कुछ होता वे दूसरे के साथ बाट कर खाते थे।

कुछ ही मिनटो मे मास्लोवा सरूर मे आ गई और चहक चहक कर अदालत की बात सुनाने लगी। सरकारी वकील की नकल उतारती। जिस बात ने उसे सबसे अधिक प्रभावित किया, उसके बारे म बोली। कई आदमी उसके पीछे पीछे जाते रहे थे, वह सुनाती रही, सभी आदमी उसे घूर घूर कर देखते थे, और जितनी देर वह कैदियों के कमरे में रही, बार बार अदर आते रहे।

"एक सिपाही मुझसे कहने लगा— 'ये सब तुम्हे देखने आते है।' एक आदमी अदर आता और पूछता—'यहा मेरा कागज पडा था।' या कुछ और। मगर मैं जानती थी, वह कागज ढूढने नही आया था, वह तो मुझे घूरने के लिए आया है," उसने सिर हिलाते हुए कहा, "पूरे कलाकार थे।"

"ठीक कहती हो," चौकीदारिन की सुरीली आवाज आई, "वे तो इस तरह मण्डराते है जसे गुड पर मक्खिया, और कुछ मिले या न मिले, उन जैसे लोग रोटी छोड देगे पर औरत को नही छोडेंगे।"

"यहा पर भी वही कुछ हुआ," मास्लोवा ने उसकी बात काटते हुए कहा, "मैं अभी कचहरी से वापस पहुची ही थी कि रेल पर से कैदियो का एक गिरोह यहा पहुचा। मुझे छोडते ही न थे, मेरी समझ मे नही आ रहा था कि उनसे कसे पीछा छुडाऊ। शुक्र है, छोटे इन्स्पेक्टर ने उन्हें वहा से भगा दिया। एक तो मेरे पीछे ही पड गया था। मैं तो मुश्किल से उसके हाथो से बच पायी।

"कैसा था वह?" छबीली ने पूछा।

"सावले रग का था, बडी बडी मूछें थी।"

"वही होगा।"

"वही कौन?"

"श्चेग्लोव, वही जो अभी अभी आगन मे से गया है।"

"श्चेग्लोव कौन है?"

"वाह, तुम श्चेग्लोव को भी नही जानती? दो बार वह साइबेरिया से भाग चुका है। अब उन्होंने फिर उसे पकड लिया है, मगर यह फिर भाग जायेगा। जेल के वाडर खुद उससे डरते हैं," छबीली बोली। उसे जेल की सब बाता की जानकारी रहती थी। किसी न किसी तरह वह कैदियो को पुर्जे भेजती रहती थी। "वह जरूर भाग जायेगा, मानी हुई बात है।"

"अगर वह भाग जायेगा तो हमे कौन सा अपने साथ ले जायेगा," कोराब्ल्योवा ने कहा और मास्लोवा की ओर घूम गई, "तुम बताओ कि अपील करने के बारे मे वकील क्या कहता है? दरखास्त देने का यही वक्त है।"

मास्लोवा ने कहा कि मुझे इस बारे मे कुछ भी मालूम नही।

उसी वक्त लाल बालो वाली औरत इन "बडे लोगो" के पास चली आई। अपने दोनो चित्तीदार हाथ उसने बालो मे खस रखे थे और नाखूनो से सिर खुजला रही थी।

"मैं तुम्हे सब बताये देती हू, येकातेरीना," वह कहने लगी, "सबसे पहली बात तो यह कि तुम्हे लिख कर देना होगा कि यह सजा नाजायज है, फिर इसके बाद सरकारी वकील को नोटिस देना होगा।"

"तुम्हारा यहा क्या काम है?" कोराब्ल्यावा ने गुस्से से कहा। "शराब की गध तुम तक पहुच गई है न! तुम्हारी बक बक की यहा कोई जरूरत नही। अपनी नसीहत अपने पास रखो।"

"तुम्हारे साथ कौन बात कर रहा है? तुम अपनी टाग मत अडाओ।"

"शराब लेने आई हो और क्या। इसी लिए नाक रगडती यहा आ गई हो।"

"इसे थोडी दे देंगे," मास्लोवा ने कहा, जो हमेशा अपनी चीजे दूसरो के साथ बाटने के लिए तैयार रहती थी।

"इसे मैं मजा चखाऊगी "

"आओ, चखाओ मजा," लाल बालो वाली ने कोराब्ल्योवा की ओर बढते हुए कहा, "तुम समझती हो मैं तुमसे डरती हू?"

"डायन!"

"डायन वह जो दूसरो को कहे।"

"रण्डी।"

"रण्डी मैं? मैं रण्डी हू। तू कौन है? हत्यारी, कैदी।" लाल बा[illegible] वाली ने चीख कर कहा।

"चली जाओ यहा से, मैं तुम्हे कह रही हू," कोराब्ल्योवा ने द[illegible] से कहा, मगर लाल बालो वाली पास आती गई, और कोराब्ल्योवा ने उसे धक्का दिया। जान पडता है लाल बालो वाली इसी इन्तजार म थी। उसने झट हाथ बढा कर कोराब्ल्योवा के बाल पकड लिये और दूसरे हाथ से उसे मुह पर घूसा जमाने की कोशिश की। कोराब्ल्योवा ने उसका यह हाथ पकड लिया। मास्लोवा और छबीली ने लाल बालो वाली का बा[illegible] पकड ली और उसे पीछे खीचने की कोशिश करने लगी। क्षण भर के लिए उसने बुढिया के बाल छोड दिये, पर दूसरे ही क्षण उसने फिर उन्हें पकड कर अपनी कलाई पर लपेट लिया। कोराब्ल्योवा का सिर एक तरफ को झुका हुआ था। एक हाथ से वह लाल बालो वाली का घूसे लगा रही थी और कोशिश कर रही थी कि किसी तरह उसके हाथ को दातों से काट सके। बाकी औरतें चीखती चिल्लाती उन्हें छुडाने की कोशिश कर रही थी। यहा तक कि तपेदिक की मरीज भी उठ आई थी और खास रही थी और तमाशा देखे जा रही थी। बच्चे रोने लगे थे और एक दूसरे के साथ सिमट कर खडे हो गये थे। शोर सुन कर जमादारिन और जमादार वहा आ गये। जो औरतें लड रही थी वे अलग हो गई और शिकायतें करने लगी। कोराब्ल्योवा अपनी सफेद चुटिया को खोल कर उसमें से टूटे बाल निकाल रही थी। और लाल बालो वाली औरत का कुर्ता फट गई थी जिससे उसकी पीली पीली छाती नजर आने लगी थी, और वह दोनो हाथो से कमीज को पकडे हुए थी।

"मैं जानती हू यह सब शराब की करतूत है। जरा ठहरो, मैं कल ही इन्सपेक्टर को बताऊगी और वह तुम्हें मजा चखायेगा। मुझे साफ उसकी गन्ध आ रही है। हटा लो सब कुछ वरना बहुत बुरा होगा," जमादारिन ने कहा, "हमारे पास तुम्हारे झगडे निपटाने के लिए वक्त नहीं है। चुपचाप अपनी अपनी जगह पर चली जाओ। खबरदार जो शोर किया तो।'

मगर शोर फिर भी बडी देर तक मचता रहा। बडी देर तक औरतें

एक दूसरी से झगडती रही और बोलती रहीं कि किसका कसूर है। आखिर जमादारिन और जमादार दोनो कोठरी मे से चले गये, औरते थोडी देर के लिए चुप हो गयी और अपने अपने तख्ते पर जा लेटी। बुढिया देव-प्रतिमा के सामने जा खडी हुई और प्रार्थना करने लगी।

"मिल गई दो सैवेरन राडें," सहसा कमरे के दूसरे सिरे से लाल बालो वाली औरत की फटी हुई आवाज़ आई, एक एक शब्द के साथ चुनी चुनी गाली निकल रही थी।

"अभी जी नही भरा? फिर से सीधा कर दूगी," कोराब्ल्योवा ने जवाब दिया। उसने भी गालिया निकाली। फिर दोनो चुप हो गईं।

"किसी ने छुडाया न होता तो मैं तेरी आखें नोच लेती," लाल बालो वाली ने फिर बोलना शुरू किया। दूसरी ओर से पट से वैसा ही जवाब आया।

फिर थोडी देर तक चुप्पी छायी रही, परन्तु कुछ देर तक ही। गालिया की बौछाड फिर पडने लगी। पर बौछाडो के बीच की चुप्पी ज्यादा लबी होती गई और अन्त मे कमरे मे बिल्कुल सन्नाटा छा गया। बाकी सब स्त्रिया भी तख्तो पर लेटी हुई थी, कुछेक तो खर्राटे भी भरने लगी थी। केवल बुढिया, जो हमेशा बडी देर तक प्रार्थना करती रहती थी, अब भी देव-प्रतिमा के आगे बार बार सिर नवा रही थी। और पादरी की बेटी वार्डर के चले जाने पर उठ खडी हुई थी, और फिर कमरे मे इधर-उधर टहलने लगी थी।

मास्लोवा के दिमाग मे बडी देर तक यह ख्याल चक्कर लगाता रहा कि मैं मुजरिम हू, सज़ायाफ्ता मुजरिम, जिसे कडी मशक्कत की सज़ा दी गई है। आज दो बार अलग अलग औरतो ने उसके लिए इस शब्द का प्रयोग किया था। एक बार बोच्कोवा ने और दूसरी बार इस लाल बालो वाली औरत ने। पर उसका मन मानने को तैयार नही था। उसके साथ वाले तख्ते पर कोराब्ल्योवा ने करवट बदली।

"किसे ख्याल था कि ऐसा होगा," धीमी आवाज़ मे मास्लोवा ने कहा, "लोग कैसे कैसे जुर्म करते हैं और साफ छूट जाते हैं, और मैं बेकसूर भुगत रही हू।"

"चिन्ता नही करो बच्ची, लोग साइबेरिया मे भी रह लेते हैं। तुम भी यहा पर खो नही जाओगी," कोराब्ल्योवा ने ढाढस बधाते हुए कहा।

"खो तो नही जाऊगी, पर फिर भी है तो सब बेटमाफी ही। मैं सब नही भुगतना चाहती—मुझे ज्यादा आराम से रहने की आदत है।"

"भगवान के आगे किसी का वस नही चलता," कोराब्ल्योवा ने उसास भरते हुए कहा, "कुछ वस नही चलता।"

"ठीक है, बडीबी, पर मेरे लिए बडा मुश्किल है।"

कुछ देर तक दोनो चुप रही।

"सुनती हो उस नामुराद की आवाज?" कोराब्ल्योवा ने फुसफुसा कर कहा। कमरे के दूसरे सिरे से एक अजीब सी आवाज आने लगी थी।

लाल बालो वाली औरत दबी दबी सिसकिया ले रही थी। वह इसलिए रो रही थी कि उसे गालिया निकाली गईं, पीटा गया और फिर भी शराब नही मिली, जिसके लिए वह तरस गई थी। साथ ही उसे याद आ रहा था कि हमेशा ही लोग उसे गालिया देते रहे हैं, उसका अपमान करते रहे हैं, उसकी खिल्ली उडाते रहे हैं, पीटते रहे हैं। अपने दिल को ढाढस देने के लिए वह फैक्ट्री के मजदूर फेदका मोलोदेन्कोव से अपने पहले प्यार की बात सोचने लगी। पर साथ ही उसे यह भी याद आने लगा कि उस प्यार का क्या अन्त हुआ था। और अन्त यह हुआ था कि इसी मोलोदेन्कोव ने नशे मे धुत हो कर हसी हसी मे उसके सबसे कोमल अग पर थोडा सा तेजाब लगा दिया था और फिर उसे दर्द से छटपटाता देख कर अपने दोस्तो के साथ ठहाके मारता रहा था। यह याद कर के उसे अपने पर तरस आने लगा। फिर यह सोच कर कि कोई भी सुन नही रहा है, वह बच्चो की तरह रोने लगी, नाक मे से सू सू करती और अपने आसू निगलती जाती।

"तरस आता है बेचारी पर," मास्लोवा बोली।

"हा, तरस तो आता ही है, पर टाग अडाने का क्या काम।"

३३

दूसरे दिन जब नेख्लूदोव जागा तो उसे ऐसा भास हुआ जैसे उसके साथ कोई घटना घटी है। क्या हुआ है यह याद आने से पहले ही उसे यह महसूस हो रहा था कि कोई अच्छी और महत्वपूर्ण बात हुई है।

"कात्यूशा, मुकद्दमा।" ठीक है, अब और झूट नही बोलना होगा, अब सच सच बता देना होगा।

अचानक उसी दिन ही उसे मारीया वासील्येव्ना से वह पत्र भी मिल गया जिसका उसे बहुत दिनो से इन्तज़ार था। इस चिट्ठी की उसे खास तौर पर ज़रूरत भी थी। मारीया वासील्येव्ना ने उसे आज़ाद कर दिया था और शादी के लिए अपनी शुभेच्छाए भेजी थी।

"शादी!" उसने व्यग भरे लहजे मे कहा, "इस वक्त तो शादी के ख्याल तक से मैं कोसो दूर हू!"

उसे वे इरादे याद आये जो पिछले रोज़ उसने किये थे कि उसके पति से साफ साफ सब बात कह दूगा, अपना सारा दोष स्वीकार करूगा, और कहूगा कि जो भी तुम इसकी सज़ा मुझे देना चाहो, मुझे सिर-आखो पर मजूर होगी। पर यह सब कल जितना आसान लग रहा था, आज उतना आसान नही था। फिर एक आदमी को जान बूझ कर दुखी करने से क्या हासिल—जब वह जानता ही नही तो उसे बताने का क्या लाभ? हा, अगर वह खुद मेरे पास आये और पूछे तो मैं सब कुछ बता दूगा। लेकिन खुद यह मतलब लेकर उसके पास जाऊ और सब कुछ बताऊ—इसकी बिल्कुल कोई ज़रूरत नही।

इसी तरह मिस्सी को भी सच सच बता देना आज कठिन लग रहा था। वह बोलना शुरू ही करेगा तो वह नाराज़ हो उठेगी। सासारिक मामलो म हर बात साफ साफ नही कही जाती। हा, उसके मन मे एक बात बिल्कुल साफ थी, कि वह उनके घर कभी नही जायेगा, और जो उन्होने पूछा तो सच सच बता भी देगा।

परन्तु जहा तक कात्यूशा का सवाल है, उससे कोई भी बात नही छिपानी होगी, सब कह देना होगा।

"मैं जेलखाने मे जा कर उससे मिलूगा, और सब बात कह कर उससे माफी मागूगा। और अगर ज़रूरत हुई हा, अगर ज़रूरत हुई तो उससे शादी भी कर लूगा," उसने सोचा।

यह विचार आते ही कि अपनी नैतिक सतुष्टि की खातिर वह सब कुछ कुरबान करने के लिए तैयार है और उसके साथ शादी कर लेगा, वह द्रवित हो उठा।

बहुत दिनो के बाद आज उसे दिन का काम आरभ करते समय इतनी स्फूर्ति का अनुभव हो रहा था। जब आग्राफेना पेत्रोव्ना उसके कमरे मे

"खो तो नही जाऊगी, पर फिर भी है तो सब वेइसाफी ही। मैं .
सब नही भुगतना चाहती—मुझे ज्यादा आराम से रहने की आदत है।

"भगवान् के आगे किसी का वस नही चलता," कोराब्ल्योवा उसास भरते हुए कहा, "कुछ वस नहीं चलता।"

"ठीक है, वडीवी, पर मेरे लिए वडा मुश्किल है।"

कुछ देर तक दोनो चुप रही।

"सुनती हो उस नामुराद की आवाज?" कोराब्ल्यावा ने फुसफुसा कर कहा। कमरे के दूसरे सिरे से एक अजीब सी आवाज आने लगी थी।

लाल वालो वाली औरत दवी दवी सिसकिया ले रही थी। वह रो रही थी कि उसे गालिया निकाली गईं, पीटा गया और फिर भी शराब नही मिली, जिसके लिए वह तरस गई थी। साथ ही उसे याद आ रहा था कि हमेशा ही लोग उसे गालिया देते रहे हैं, उसका अपमान करते रहे हैं, उसकी खिल्ली उडाते रहे हैं, पीटते रहे हैं। अपने दिल को ढाढ़स देने के लिए वह फैक्ट्री के मजदूर फेदका मोलोदेकोव से अपने पहले प्यार की बाते सोचने लगी। पर साथ ही उसे यह भी याद आने लगा कि उस प्यार का क्या अन्त हुआ था। और अन्त यह हुआ था कि इसी मोलोदेकोव ने नशे मे धुध हो कर हसी हसी मे उसके सबसे कोमल अग पर गन्धक का तेजाव लगा दिया था और फिर उसे दर्द से छटपटाता देख कर अपने दोस्तो के साथ ठहाके मारता रहा था। यह याद कर के उसे अपने पर तरस आने लगा। फिर यह सोच कर कि कोई भी सुन नही रहा है, वह बच्चो की तरह रोने लगी, नाक मे से सू सू करती और अपने आसू निगलती जाती।

"तरस आता है वेचारी पर," मास्लोवा वोली।

"हा, तरस तो आता ही है, पर टाग अडाने का क्या काम।"

३३

दूसरे दिन जब नेख्लदोव जागा तो उसे ऐसा भास हुआ जैसे उसके साथ कोई घटना घटी है। क्या हुआ है, यह याद आने से पहले ही यह महसूस हो रहा था कि कोई अच्छी और महत्वपूर्ण बात हुई है।

"कात्यूशा, मुकद्दमा।" ठीक है, अब और झूठ नही बोलना होगा, अब सच सच बता देना होगा।

अचानक उसी दिन ही उसे मारीया वासील्येव्ना से वह पत्र भी मिल गया जिसका उसे बहुत दिनो से इन्तजार था। इस चिट्ठी की उसे खास तौर पर जरूरत भी थी। मारीया वासील्येव्ना ने उसे आजाद कर दिया था और शादी के लिए अपनी शुभेच्छाए भेजी थी।

"शादी!" उसने व्यग भरे लहजे मे कहा, "इस वक्त तो शादी के ख्याल तक से मैं कोसो दूर हू!"

उसे वे इरादे याद आये जो पिछले रोज उसने किये थे कि उसके पति से साफ साफ सब बात कह दूगा, अपना सारा दोष स्वीकार करूगा, और कहूगा कि जो भी तुम इसकी सजा मुझे देना चाहो, मुझे सिर-आखो पर मजूर होगी। पर यह सब कल जितना आसान लग रहा था, आज उतना आसान नही था। फिर एक आदमी को जान बूझ कर दुखी करने से क्या हासिल—जब वह जानता ही नही तो उसे बताने का क्या लाभ? हा अगर वह खुद मेरे पास आये और पूछे तो मैं सब कुछ बता दूगा। लेकिन खुद यह मतलब लेकर उसके पास जाऊ और सब कुछ बताऊ—इसकी बिल्कुल कोई जरूरत नही।

इसी तरह मिस्सी को भी सच सच बता देना आज कठिन लग रहा था। वह बोलना शुरू ही करेगा तो वह नाराज हो उठेगी। सासारिक मामलो मे हर बात साफ साफ नही कही जाती। हा, उसके मन मे एक बात बिल्कुल साफ थी, कि वह उनके घर कभी नही जायेगा, और जो उन्होने पूछा तो सच सच बता भी देगा।

परन्तु जहा तक कात्यूशा का सवाल है, उससे कोई भी बात नही छिपानी होगी सब कह देना होगा।

"मैं जेलखाने मे जा कर उससे मिलूगा, और सब बात कह कर उससे माफी मागूगा। और अगर जरूरत हुई हा, अगर जरूरत हुई तो उससे शादी भी कर लूगा," उसने सोचा।

यह विचार आते ही कि अपनी नैतिक सतुष्टि की खातिर वह सब कुछ कुरबान करने के लिए तैयार है और उसके साथ शादी कर लेगा, वह द्रवित हो उठा।

बहुत दिनो के बाद आज उसे दिन का काम आरभ करते समय इतनी स्फूर्ति का अनुभव हो रहा था। जब आग्राफेना पेत्रोव्ना उसके कमरे मे

आई तो उसने उसे साफ साफ कह दिया कि अब वह इस घर में रह रहेगा, और उसे उसकी खिदमत की जरूरत नही होगी। वह घर में इ नौकर चाकर और इतना साज-सामान इसलिए रखे हुए था कि उसका ख्याल था कि शादी करेगा। यह बात सभी समझते थे। इसलिए अब घर छोड देने का एक विशेष महत्व था। आग्राफेना पेत्रोव्ना न हैरान हो कर उसकी ओर देखा।

"जिस ध्यान से आपने मेरी देख-भाल की है, मैं उसके लिए आपका शुक्रगुजार हू। पर अब मुझे इतने बडे घर की और इतने नौकरो की कर जरूरत नही है। अगर आप मेरी मदद करना चाहती हैं, तो सब इस साज-सामान ठिकाने लगवा दें, जैसा कि मा के जीते-जी हुआ करता था जब नताशा आयेगी तो खुद सारा प्रबंध कर लेगी।" (नताशा नेख्लूदोव की बहिन थी।)

आग्राफेना पेत्रोव्ना ने सिर हिलाया—

"ठिकाने लगवा दू, क्यो? उनकी तो जरूरत होगी।"

"नही, इनकी जरूरत नही होगी, आग्राफेना पेत्रोव्ना, इनकी बिलुकुल जरूरत नही होगी" उसके सिर हिलाने का अभिप्राय समझ कर नेख्लूदोव ने जवाब दिया। "साथ ही मेहरबानी कर के कोर्नेई को भी कह देना कि अब मुझे उसकी भी जरूरत नही होगी। मैं उसे दो महीने की तनख्वाह दे दूगा।"

"बडे खेद की बात है, दमीत्री इवानोविच, कि आप ऐसा करने की सोच रहे हैं," वह बोली, "अगर आप विदेश घूमने भी गये, तो भी तो घर शहर में घर की तो जरूरत होगी।"

"आप जो कुछ सोच रही हैं वह ठीक नही है, आग्राफेना पेत्रोव्ना। मैं विदेश नही जा रहा हू। यदि मैं कही गया भी तो किसी दूसरी ही दिशा मे जाऊगा।"

सहसा उसका चेहरा लाल हो गया।

"मुझे जरूर बता देना चाहिए," उसने सोचा, "अब कुछ छिपाना नही चाहिए। सभी को सब कुछ बताना चाहिए।"

"कल मेरे साथ एक बहुत ही अजीब और महत्वपूर्ण बात घटी। आपको वह लडकी कात्यूशा याद है जो फफी मारीया इवानोव्ना के यहा रहती थी?"

"हा, हा, क्यो नही, मैंने ही तो उसे सीना पिरोना सिखाया था।"

"कल अदालत मे इसी लडकी का मुकद्दमा था और मैं जूरी मे था।"

"हे भगवान्, बडे खेद की बात है। किस जुर्म के लिए उस पर मुकद्दमा चलाया जा रहा था?"

"कत्ल के लिए, और यह सब मेरा दोष है।"

"वाह, कैसी अजीब बात कहते है। इसमे आपका कैसे दोष हो सकता है?" आग्राफेना पेत्रोव्ना ने कहा। उसकी बूढी आखो मे एक चमक सी दौड गयी।

उसे कात्यूशा वाला किस्सा मालूम था।

"हा, वह सब मेरे ही कारण हुआ। यही वजह है कि आज मेरे सब इराद बदल गये हैं।"

"आपको इससे क्या फरक पडता है?" अपनी हसी दबाते हुए आग्राफेना पेत्रोव्ना ने कहा।

"फरक यह पडता है कि मैंने ही उसे इस रास्ते पर डाला है, अब मेरा फर्ज हो जाता है कि मैं उसकी हर तरह से मदद करू।"

"जैसे आपकी खुशी हो करो, लेकिन इसमे आपकी कोई खास कसूर तो नही। हर किसी के साथ ऐसी बाते होती रहती है, और आदमी जरा समझ बूझ से काम ले तो बात रफा-दफा हो जाती है और लोग उसे भूल जाते हैं," उसने बडी गभीरता और सख्ती से कहा। "आप इसका दोष अपने पर क्यो लेते हो? इसकी क्या जरूरत है? मैंने भी सुना था कि वह बुरे रास्ते पर पड गई थी। इसमे दोष किसका है?"

"मेरा। इसी लिए मैं अपनी गलती ठीक करना चाहता हू।"

"इन मामलो को ठीक करना आसान नही होता।"

"यह मेरा काम है। लेकिन अगर आपको अपना ख्याल आ रहा है तो उसकी चिन्ता नही करो। मा की जैसी इच्छा थी, मैं उसी के अनुसार "

"मैं अपने बारे मे नही सोच रही हू। आपकी स्वर्गीय मा का वर्ताव मेरे साथ इतना अच्छा रहा है कि मुझे किसी चीज की कमी नही। लीजा मुझे बार बार बुलाती रही है (लीजा उसकी भतीजी का नाम था)। जब मेरी जरूरत यहा पर नही रहेगी तो मैं उसके पास चली जाऊगी। मुझे अफसास केवल इस बात का है कि आपने इस बात को दिल से लगा लिया है। ऐसी बाते तो आये दिन हर किसी के साथ होती रहती हैं।"

"मैं ऐसा नही समझता। मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि आप इस सामान ठिकाने लगाने मे और घर मे कोई किरायेदार बिठाने म मदद करो। और मुझ पर खफा नही होना। आपने मेरे लिए बहुत कुछ किया है और मैं आपका बेहद शुक्रगुज़ार हू।"

और अजीब बात है, जिस क्षण नख्लूदोव को यह महसूस हुआ कि वह खुद बुरा है और घृणास्पद है, उसी क्षण से उसे अन्य लोग अच्छे लगने लगे। आग्राफेना पेत्रोव्ना और कोर्नेई के प्रति उसके दिल म प्यार का भाव उठने लगा। उसका मन चाहता था कि वह कोर्नेई के पास भी जा कर अपना दोष कबूल करे, परन्तु कोर्नेई सदा ही इतने आदर और शिष्टता के साथ उससे पेश आता था कि उसकी हिम्मत नही हुई।

कचहरी की ओर जाते हुए वह उन्ही सडको पर से जा रहा था जिन पर कल गया था, गाडी भी वही थी। लेकिन वह महसूस कर रहा था जैसे कोई दूसरा ही व्यक्ति चला जा रहा हो। इस परिवतन पर वह स्वयं बहुत हैरान था।

कल उसे लग रहा था कि वह मिस्सी से शादी करेगा, आज उसे यह शादी असम्भव लग रही थी। कल वह अपनी स्थिति यो समझता था कि मिस्सी उससे विवाह कर के खुश होगी, इस बात म ज़रा भी सन्देह उसे नही था। आज उसे महसूस होने लगा था कि वह शादी करने के सवथा अयोग्य है, न केवल शादी करने के ही, बल्कि मिस्सी के साथ किसी प्रकार की घनिष्ठता के भी। "अगर उसे पता चल पाय कि मैं कैसा आदमी हू तो मेरा तो वह मुह तक नही देखना चाहेगी। और कल ही मैं उसके दोष निकाल रहा था कि वह उस आदमी से आखें लडा रही थी। पर नही, यदि वह मेरे साथ विवाह करना मजूर भी कर ले तो मेरे मन को चैन नही होगा। खुशी तो दूर रही। मुझे सारा वक्त यह बात सतायेगी कि दूसरी जेल म पडी है और कल या परसो उसे साइबेरिया मे कडी मशक्कत के लिए भेज देंगे। जिस लडकी को मैंने बरबाद किया है वह तो साइबेरिया ले जायी जा रही होगी, और मैं अपनी दुल्हन के साथ मित्रो और सम्बधियो को मिलने जाऊगा, और वे मुझे बधाइया देंगे। या स्थानीय स्कूलो की जाच होगी, और सदस्यो की बैठको मे उन सुधारों पर बहस होगी जो जाच कमेटी ने प्रस्तुत करेगी। लोग पर्चियाँ डालेंगे और मैं अभिजात वग के उसी प्रधान के साथ बैठ कर, जिसे मैं कितनी

ीचता से धोखा देता आया हू, इन्हे गिनूगा। वहा तो पचियों गिनूगा और उसके बाद छिप कर उसकी पत्नी से मिलने जाऊगा (उफ! कैसा घिनौना विचार है!)। या मै अपनी तसवीर पर काम करने लगूगा जो कभी भी खत्म नही हो पायेगी, क्योकि मुझे ऐसी फिजूल चीज़ो पर न तो वक्त जाया करना ही चाहिए और न ही अब मैं यह सब कर सकता हू।" वह सोचता जा रहा था। अपने मे इस परिवतन का भास पा कर उसका मन बल्लियो उछल रहा था।

"पहला काम तो यह है कि वकील से मिलू और पता लगाऊ कि उसने क्या निश्चय किया है फिर उसे मिलने जाऊ जिसे कल मुजरिम करार दिया गया था, और उसके सामने दिल खोल कर रख दू।'

और जब मन ही मन उसने इस बात की कल्पना की कि वह कैसे उससे मिलेगा, किस भाति उसे सब कुछ बतायेगा, अपना पाप स्वीकार करेगा, उससे कहेगा कि मैं इस पाप को धोने के लिए जो बन पड़ेगा करूगा और उससे शादी कर लेगा, तो उसका हृदय एक विचित्र आनन्द से भर उठा और उसकी आखो मे आसू छलक आये।

३४

जब नेख्लूदोव कचहरी पहुचा तो बरामदे मे ही उसे कल वाला पेशकार मिला। उसने पेशकार से पूछा कि सजायाफ्ता कैदियो को कहा रखा जाता है, और उनसे मिलने के लिए किसकी इजाजत लेने की ज़रूरत होती है। पेशकार ने बताया कि सज़ायाफ्ता बदी अलग अलग स्थानो पर रखे जाते है, और जब तक उन्हे आखिरी फैसला नही सुना दिया जाता उनसे मिलने की किसी को इजाज़त नही होती। लेकिन अगर बडा सरकारी वकील मिलने की इजाजत दे दे तो दूसरी बात है।

"आज अदालत की कायवाही के बाद मैं खुद आपको सरकारी वकील के पास ले चलूगा। इस वक्त तो वह यहा पर है भी नही। अदालत की कायवाही के बाद मिल सकेगा। अब आप अन्दर तशरीफ ले चलिये। काम शुरू होने ही वाला है।"

नेख्लूदोव ने पेशकार का धन्यवाद किया (जो आज उसे बडा दयनीय लगा) और जूरी के कमरे की ओर चल दिया।

कमरे के नज़दीक पहुचा तो उसने देखा कि बाकी सदस्य कमरे से निकल कर अदालत की ओर जा रहे हैं। आज भी व्यापारी ने चढा रखी थी और कल की ही तरह चहक रहा था। नख्लूदोव को इस तरह मिला जैसे उसका पुराना दोस्त हो। प्योत्र गेरासिमोविच ने कल की ही तरह बेतकल्लुफी दिखाने की कोशिश कर रहा था और ऊचे हस रहा था। लेकिन आज नेख्लूदोव के दिल मे इन बाता को देख कर नफरत पैदा नही हुई।

नेख्लूदोव चाहता था कि जूरी के सभी सदस्या को बता दे कि इस वाले कैदी के साथ उसके कैसे सम्बन्ध रहे थे। "अच्छा तो यह होना कि मुकद्दमे के समय मैं उठ कर अपना जुर्म सबके सामने कबूल कर लेगा," वह सोच रहा था। पर अदालत मे प्रवेश करने पर उसने देखा कि कल की ही तरह आज भी सारी कायवाही बडी गभीरता और रीति अनुसार चल रही है। "जज साहिबान तशरीफ ला रहे ह," आज भी यह घोषणा हुई और तीन आदमी फूलदार कॉलर लगाये, मच पर पहुचे, उना तरह जूरी के सदस्य अपनी ऊची पीठ वाली कुर्सियाँ पर बैठे, वही सिपाही, वही चित्र, वही पादरी। और नेख्लूदोव अपना कर्तव्य पहचानते हुए भी यह सोच रहा था कि अदालत के इस सजीदा महौल म विघ्न डाल उसके बस की बात नही। वह कल भी यह नही कर सकता था और आज भी नही कर सकता।

आज भी अदालत की कायवाही की तैयारिया उसी तरह चल रही थी, हा, जूरी से कल की तरह शपथ नही ली गई, प्रधान जज ने उनके सामने भाषण भी नही दिया।

आज अदालत के सामने चोरी का मुकद्दमा था। अभियुक्त बीस एक बरस का दुबला पतला युवक था, जिसकी छाती अन्दर को धसी हुई थी, और चेहरे पर रगत का नाम न था। उसने भूरे रग का लबादा पहन रखा था और उसे दो सिपाही, नगी तलवार के पहरे मे अन्दर लाये थे। कटघरे मे वह अकेला बैठा था और अदालत के अन्दर आने वाले लोगों को झुकी झुकी नजरो से देखे जा रहा था। उसका जुर्म यह था कि उसने एक और आदमी के साथ मिल कर एक गोदाम का ताला तोडा और उसमे से कुछेक पुरानी चटाइया चुराइ, जिनकी कुल कीमत ३ रूबल और ६७ कापेक बनती थी। तालिका पर्चे के अनुसार चटाइया इसके साथी ने

पीठ पर उठा रखी थी, और जब ये दोनो सडक पर जा रहे थे तो पुलिस के सिपाही ने इन्हे रोका। दोनो ने उसी वक्त अपना जुर्म कबूल कर लिया, और दोनो को हिरासत में ले लिया गया। उसका साथी कोई लुहार था। वह जेल मे ही मर गया था। इसलिए इस लडके पर अकेले मुकद्दमा चलाया जा रहा था। चटाइया एक मेज़ पर शहादती चीजो के तौर पर रखी थी।

अदालत की कार्यवाही का क्रम भी कल जैसा ही था। शहादते, सबूत, गवाहिया, शपथ, सवाल जवाब, विशेषज्ञ, जिरह आदि सब कल की ही तरह था। जब भी प्रधान जज या सरकारी वकील या वकील सिपाही से कोई सवाल पूछते (जो एक गवाह था) तो जवाब मे वह यही कहता— "ठीक है, सा'ब" या "जी नही जानता, सा'ब।" बेशक, कठोर अनुशासन ने उसे एक मशीन बना डाला था, और उसके मन में जडता आ गई थी, फिर भी जाहिर था कि वह सकुचा रहा था और मुजरिम के कद किये जाने के बारे मे कुछ नही कहना चाहता था।

एक दूसरा गवाह भी सकुचा रहा था। यह उस घर का बूढा मालिक था जिसमे चोरी हुई थी। चटाइया इसी की थी। इस चिडचिडे आदमी से जब पूछा गया कि चटाइया तुम्हारी है या नही, तो बडी देर तक हिचकिचाने के बाद उसने स्वीकार किया कि हा, मेरी ही हैं। जब सरकारी वकील ने पूछा कि इन चटाइयो का वह क्या करेगा, वे उसके किस काम आयेंगी तो वह खीज कर बोला—

"भाड मे जाये चटाइया। मुझे उनकी कोई जरूरत नही। अगर मुझे मालूम होता कि इन पर इतना तूफान खडा किया जायेगा तो मैं इनके बारे मे पूछता तक नही, बल्कि दस रूबल का नोट अपनी तरफ से इनके साथ रख देता ताकि मुझे कचहरियो की खाक नही छाननी पडती। मैं इन सवालो से परेशान हो उठा हू। पाच रूबल तो मैं गाडियो के भाडे मे दे चुका हू। और फिर मेरी सेहत भी ठीक नही। मुझे जोडो का दर्द रहता है और गठिया है।"

ये थे गवाहो के बयान। मुजरिम ने खुद सब कुछ कबूल कर लिया था। और जाल मे फसे जगली जनवर की भाति अपने चारो ओर मूढ दृष्टि से देखते हुए उसने रुक रुक कर सारी घटना का ब्योरा दे दिया था।

सब बात साफ थी, लेकिन फिर भी सरकारी वकील, कल की तरह,

कन्धे झाडता हुआ उठ खडा हुआ और तरह तरह के बारीक सवाल पू
लगा मानो किसी चालाक मुजरिम को फासने की कोशिश कर रहा है।

अपनी तकरीर मे उसने साबित किया कि चोरी एक रिहाइशी मका
मे हुई है और ताला तोड कर की गई है, इसलिए लडके को सख्त स
दी जानी चाहिए।

मुजरिम के वकील ने, जिसे अदालत ने नियुक्त किया था, कहा कि
चोरी रिहाइशी मकान मे नही हुई है। बेशक, मुजरिम ने अपना अप
स्वीकार किया है, फिर भी वह समाज के लिए इतना खतरनाक नही
जितना कि सरकारी वकील ने दिखाने की कोशिश की है।

प्रधान जज कल की तरह आज भी पूर्णतया तटस्थ था और इन्स
करना चाहता था। उसने जूरी के सामने उन सभी तथ्यो की व्याख्या क
और उन्हे खोल कर समझाया जिन्हे वे पहले से भली भांति जानते थे और
जिन्हे वे जाने बिना रह ही न सकते थे। कल की तरह आज भी कारवा
बार बार स्थगित की गई, आज भी वे सिगरेट पीते रहे, आज
पेशकार बार बार चिल्लाकर कहता रहा—"जज साहिबान तशरीफ ला
रहे हैं" और आज भी कैदी के ऊपर नगी तलवार का पहरा था, और
दोनो सिपाही भरसक कोशिश कर रहे थे कि वे ऊंघने से बचे रहें।

अदालत की कार्यवाही से पता चला कि यह लडका एक तम्बाकू की फैक्टरी
मे काम करता था जहा इसके बाप ने इसे शागिर्द लगा रखा था। पांच
साल तक वहा पर यह काम करता रहा। इस साल फैक्ट्री मे हडताल हो
गई और इसे बरखास्त कर दिया गया। काम न होने के कारण यह शहर
मे आवारा घूमता रहा और जो थोडा-बहुत इसके पास था शराब मे गुंवा
रहा। एक शराबखाने मे इसे अपने जैसा ही बेकार लुहार मिला, जि
की नौकरी इससे पहले की छूट चुकी थी। एक रात दोनो ने शराब पी
कर एक गोदाम का ताला तोडा और जो चीज सबसे पहले हाथ लगी उठ
उठा लिया। वे पकडे गये। उन्होंने सब बात कबूल कर ली और उन्हें
कर लिया गया। जेल मे, मुकद्दमे से पहले ही, लुहार की मृत्यु हो गई।
लडके को अब एक खतरनाक व्यक्ति मान कर उस पर मुकद्दमा चल
जा रहा था जिससे समाज की रक्षा करना जरूरी है।

"यह भी उतना ही खतरनाक है जितना कि कल वाला अपराधी था,"
अदालत की कार्यवाही को सुनते हुए नख्लूदोव सोच रहा था। "मेरे

ख़तरनाक हैं, और हम? – जो उन पर बैठ कर न्याय करते हैं–क्या हम खतरनाक नही है? मैं कौन हू? एक कपटी, भोग विलासी और व्यभिचारी। फिर भी लोग, मुझे अच्छी तरह जानते हुए भी, मुझसे नफ़रत करने की बजाय मेरा आदर करते हैं। पर मान ले कि इन सब आदमियो मे से जो इस वक्त इस कमरे मे मौजूद हैं, यह लडका ही समाज के लिए सबसे अधिक खतरनाक है, तो हमारी अक्ल क्या कहती है, इसे पकडने के बाद हम इसके साथ कैसा सलूक करना चाहिए था?

"यह तो स्पष्ट है कि यही सबसे बडा अपराधी नही है। साधारण सा लडका है। आज यदि यह अपराधी बन गया है तो उन परिस्थितियो के कारण जो ऐसे चरित्र का निर्माण करती हैं। अत इस जैसे लडको को कुमार्ग से बचाने के लिए जरूरत इस बात की है कि उन परिस्थितिया को बदला जाय जिनमे ऐसे अभागे युवक परवरिश पाते हैं।

"पर हम करते क्या हैं? जो लडका हमारे हाथ मे आ जाय उसे तो हम झपट कर पकड लेते है और जेल मे ठूस देते हैं यह अच्छी तरह जानते हुए कि इस जैसे हजारो और लडके हैं जिन्हे हम नही पकड पाते। जेल मे यह लडका या तो बिल्कुल बेकार पडा रहता है, या फिर इसे हम इस जैसे ही दुर्बल और पतित लोगो की सगति मे ऐसा काम करने पर मजबूर करते है जो निरर्थक और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है और इसके बाद हम इसे सरकारी खर्च पर अन्य भ्रष्ट लोगो के साथ मास्को से इर्कूत्स्क गुबेर्निया मे भेज देते हैं।

"हम उन परिस्थितिया को बदलने की कोई कोशिश नही करते, जिनमे इस तरह के लोग पैदा होते है। उलटे हम ऐसी सस्थाओ को बढावा देते हैं जिनके कारण ऐसी परिस्थितिया पनपती हैं। इन सस्थाओ को हम भली भाति जानते है कारखाने, फैक्टिया, शराबखाने, जुएखाने और चकले। हम इन सस्थाओ को न केवल बरकरार रख हुए है, बल्कि हम इनको प्रोत्साहन देते हैं, इनकी व्यवस्था करते हैं और इन्हे अत्यावश्यक समझते हैं।

"इस तरह हम, एक नही, लाखो ऐसे लडको को जन्म देते हैं। जब हम उनमे से किसी एक को पकड पाते हैं तो उसे अपनी बहुत बडी सिद्धि समझते है। हम समझते है कि हमने समाज की रक्षा की है। फिर हम उसे मास्को से इर्कूत्स्क गुबेर्निया भेज कर निश्चित हो जाते है कि अब

हमे और कुछ भी करने की जरूरत नही।" नेख्लूदोव के मन में ये वडी स्पष्टता से उठ रहे थे। जूरी मे वह कर्नल की बगल म वग ... जज, छोटे सरकारी वकील और वकील के लयवद्ध भाषणो को सुन ... था और उनकी आत्मतुष्ट भाव-भगिमा को देखे जा रहा था। "यह खडा करने के लिए कितनी मेहनत की गई है!" वह अपने चारो ... कमरे मे नजर दौडाते हुए सोच रहा था—"ये तसवीरें, ... आराम-कुर्सिया, वर्दिया, मोटी मोटी दीवारे और आलीशान खिडकि... इतनी वडी इमारत और इससे भी वडी सस्था, जिसम अनगिनत अफसर, क्लर्क, चौकीदार, और चपरासी काम कर रहे हैं, और इस नाटक खेलने के लिए जिसका किसी को कोई लाभ नही, इन्हे वडी वडी ... दी जाती हैं। केवल यही पर नही, रूस भर मे यही कुछ हो रहा है! जितना परिश्रम इस आडम्बर को खडा रखने पर वर्बाद किया जाता है यदि उसका सौवा हिस्सा भी उन परित्यक्त लोगो की मदद करने मे ... जाता तो कितना वडा उपकार होता। आज हम उन लोगो को इन्‍... तक नही समझते और उन्हे केवल अपने सुख और आराम के लिए इस्ते... करते हैं।

"यह लडका गरीव था। गरीवी के कारण मजबूर हो कर इसके ... सम्वधियो ने इसे शहर भेज दिया। यदि उस समय कोई आदमी इस पर तरस खा कर इसकी मदद कर देता, तो यह बच जाता," लडके के ... और त्रस्त चेहरे की ओर देखते हुए नख्लूदोव सोच रहा था। "या बाद में उस वक्त भी, जब यह फैक्ट्री मे बारह बारह घण्टे तक काम करने के बाद अपने से बडे साथियो के साथ शराबखाना के चक्कर लगाने लगा था, ... कोई आदमी आ कर इसे कहता—'नही, वान्या, मत जा, यहा जाना ठीक नही,' तो यह सभल जाता, बुरे रास्ते पर नही पडता और ... यह जुर्म नही करता।

"लेकिन नही, इसके जीवन म कोई ऐसा आदमी नही आया जो ... पर तरस खाता। वरसो तक यह फैक्ट्री मे शागिर्दी करता रहा, और ... असहाय जानवर की तरह शहर मे घूमता रहा। इसका सिर मूड ... गया ताकि उसम जुए नही पडें, और यह मिस्त्री लोगो के छोटे-मोटे ... करने के लिए भागता रहा। इसके विपरीत, जब से वह शहर म रहने लगा था अपने से बडे कारीगरो के मुह से यही कुछ सुन रहा था कि जो

ो दगा करता है, शराब पीता है, गालिया बकता है, दूसरे को पीट कता है, व्यभिचार कर सकता है, वही सबसे बडा सूरमा है।

"इस तरह यह बीमार लडका, जिसका स्वास्थ्य बडे परिश्रम, शराब ौर व्यभिचार के कारण टूट चुका है, बावला सा शहर मे निष्प्रयोजन क्कर काटता फिरता है, मानो वह नीद मे ही चल रहा हो। और ऐसे ी अपने बावलेपन मे एक दिन वह किसी गोदाम मे जा पहुचता है और हा से कुछ पुरानी चटाइया उठा लेता है जिनकी किसी को कोई जरूरत हीं। यहा बैठे हुए हम शिक्षित, अमीर लोग यह नही सोचते कि उन ारणो को किस भाति दूर किया जाय जिनसे यह लडका इस स्थिति तक हुचा, उलटे हम उसे सजा देना चाहते हैं और समझे बैठे हैं कि सुधार ा यही तरीका है।

"कैसी भयानक स्थिति है! क्रूरता और मूढता का बोलबाला है। ौर यह कहना कठिन है कि दोनो मे से कौन अधिक प्रबल है—क्रूरता या ूढता। जान पडता है, दोनो चरम सीमा तक जा पहुची हैं।"

नेख्लूदोव के मन मे इस तरह के विचार उठ रहे थे। उसका ध्यान अदालत की कार्यवाही से हट गया था। आज जिन बातो को वह देख रहा ा, उनसे उसका मन भयाकुल हो उठा था। और वह सोच रहा था, मैं इन्हें पहले क्या नही देख पाया, और लोगो को ये क्यो नजर नही आती?

३५

एक बार जब अदालत की कार्यवाही कुछ देर के लिए स्थगित हुई तो वह उठ कर बरामदे मे आ गया। अदालत मे अब वह लौट कर नही जाना चाहता था। अब इस घृणित नाटक मे मैं भाग नही लूगा, उनके जो म जो आये कर ले।

उसने बडे सरकारी वकील के दफ्तर का पता लगाया और सीधा वहा जा पहुचा। बाहर खडे अर्दली ने उसे रोकने की कोशिश की, कहा कि साहिब मसरूफ है, लेकिन नेख्लूदोव ने कोई परवाह नही की और सीधा दरवाजे के पास चला गया। दरवाजे पर एक कर्मचारी खडा था। नेख्लूदोव ने उससे कहा कि जा कर सरकारी वकील को मेरा नाम बताओ और कहो कि मैं जूरी का सदस्य हू और एक जरूरी बात कहने के लिए आया हू।

नेख्लूदोव की उपाधि और कपडे वडे सहायक सिद्ध हुए। नेख्लूदोव को अदर बुला लिया गया। सरकारी वकील उसे खडे खडे ही मिला, प्रत्यक्ष वह नेख्लूदोव की धृष्टता पर नाराज था।

"आप क्या चाहते है?" सरकारी वकील ने वडे कठोर लहजे में पूछा।

"मैं जूरी का सदस्य हू। मेरा नाम नेख्लूदोव है। मैं कैदी मास्लोवा से मिलना चाहता हू। उसे मिलना मेरे लिए वेहद जरूरी है," नेख्लूदोव दृढता से, जल्दी जल्दी कह गया। वह शर्माने लगा था और महसूस कर रहा लगा था कि जो कदम वह आज उठाने जा रहा है उसका उसके जीवन पर गहरा प्रभाव पडेगा।

सरकारी वकील एक छोटे से कद का, सावला सा आदमी था, छोटे भूरे रग के वाल, चमकती, सजीव आखे। निचला जबडा कुछ आगे को वढा हुआ था और उस पर घनी, कटी-तराशी दाढी थी।

"मास्लोवा? हा, ठीक है, याद आया। उस पर जहर देने का जुर्म था," सरकारी वकील ने धीरे से कहा। "आप उसे क्या मिलना चाहते है?" फिर मानो अपने सवाल की कठोरता को कम करने के लिए साथ ही कहने लगा, "मैं उस वक्त तक इजाजत नही दे सकता जव तक कि मुझे मालूम न हो कि आप क्यो उससे मिलना चाहते है।"

नेख्लूदोव का चेहरा लाल हो गया।

"एक विशेष कारण है जिसके लिए मैं यह इजाजत माग रहा हू। वह वेहद जरूरी है।"

"अच्छा?" सरकारी वकील ने आख उठा कर वडे ध्यान से नेख्लूदोव की ओर देखते हुए पूछा। "उसके मुकद्दमे की सुनाई हो चुकी है या नहीं?"

"उसका मुकद्दमा कल पेश हुआ था, और उसे चार साल की सख्त मशक्कत की सजा दी गई थी। यह सजा ठीक नही थी। लडकी बेकसूर है।"

"अच्छा? अगर कल ही उसे सजा दी गई है तब तो वह अभी हवालात म होगी," सरकारी वकील ने कहा। उसने नेख्लूदोव के शब्दों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जो उसने मास्लोवा के निर्दोष होने के बारे म कहे थे। "जब तक आखिरी तौर पर सजा नहीं सुना दी जाती मुजरिमो को यहीं रखा जाता है। यहा कैदियो को मिलने के लिए खास दिन मुकरर हैं। आप वहीं से दर्याफ्त कीजिये।'

"पर मैं उससे जल्दी से जल्दी मिलना चाहता हू," नेख्लूदोव ने कहा। निर्णायक घडी को नज़दीक आता देख कर उसकी ठोडी कापने लगी।

"क्यो चाहते हैं?" सरकारी वकील ने आख उठा कर तनिक झल्लाहट के साथ पूछा।

"क्योकि वह निर्दोष है, फिर भी उसे इतनी कडी सजा दी गई है। यह सब मेरे कारण हुआ है," नेख्लूदोव ने कापती आवाज़ मे कहा। वह महसूस कर रहा था कि वह जो कुछ कह रहा है, उसके कहने की कोई ज़रूरत नही।

"वह किस तरह?" सरकारी वकील ने पूछा।

"क्योकि मैंने उसकी अस्मत लूटी थी, इसी कारण उसकी आज यह हालत है। मैंने ही उसे इस स्थिति मे झोका है, अगर मैंने ऐसा नही किया होता तो आज उसे यह सजा नही मिलती।"

"फिर भी मैं नही समझ सकता कि इस सबका उसे मिलने से क्या सबध है।"

"सबध यह है कि मैं उसके साथ जाना चाहता हू उससे विवाह करना चाहता हू," नेख्लूदोव ने हकला कर कहा। अपने ही व्यवहार से अभिभूत, उसकी आखो मे आसू आ चले थे।

"क्या सच? खूब!" सरकारी वकील बोला, "यह तो सचमुच ही निराली स्थिति है। यदि मैं भूल नही करता तो आप क्रास्नोपेस्क स्थानीय बोर्ड के सदस्य हैं न?" उसने पूछा, मानो उसे याद हो आया हो कि इस नेख्लूदोव के बारे मे कही कुछ सुना था। यह वही आदमी है जो आज ऐसी विचित्र घोषणा कर रहा है।

"क्षमा कीजिये, इसका मेरी प्रार्थना के साथ कोई सबध नही है," गुस्से से तमतमाते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

"नही, नही, कोई सबध नही," सरकारी वकील ने निलज्जता से मुस्कराते हुए कहा। "मैं तो केवल यह सोच रहा था कि आपकी इच्छा कुछ इतनी विलक्षण और असाधारण सी है।"

"तो कहिये, आप मुझे इजाजत देंगे।"

"इजाजत? हा, हा, अभी लीजिये। मैं आपको प्रवेश-पत्र अभी लिखे देता हू। आप तशरीफ रखिये।"

और वह मेज के पास जा कर लिखने बैठ गया।

"आप बैठ जाइये।"

नेख्लूदोव अब भी खड़ा रहा।

उसने प्रवेश पत्र लिया और नेख्लूदोव के हाथ में देते हुए बड़ी कुतूहल भरी आंखों से उसकी ओर देखने लगा।

"मैं यह भी बता देना चाहता हूं कि मैं अब से अदालत की कार्रवाई में भाग नहीं लूंगा।"

"इसके लिए आपको बाकायदा अदालत को लिख कर देना होगा कि आप क्यों भाग नहीं लेना चाहते। यह तो आपको मालूम ही होगा।"

"इसलिए कि मैं दूसरों का न्याय करना न केवल निरर्थक समझता हूं बल्कि पाप भी।"

"ठीक है," फिर वही हल्की सी मुस्कान सरकारी वकील के होठों पर आई, मानो वह दिखाना चाहता हो कि इस प्रकार की घोषणाओं से वह भली भांति परिचित है, और इन्हें वह हास्यास्पद समझता है। "ठीक है, मगर आप यह तो मानेंगे कि सरकारी वकील होने के नाते इस बात पर मैं आपसे सहमत नहीं हो सकता। इसलिए मैं आपसे कहूंगा कि इस बारे में आप अदालत से दरखास्त कीजिये। वही आपके इस बयान पर गौर करेगी और फैसला करेगी कि वह बाजाब्ता है या नहीं। अगर बाजाब्ता न हुई तो आपको जुर्माना भरना होगा। इसलिए आप अदालत से दरखास्त कीजिये।

"मैंने जो कहना था कह दिया है, अब मैं कहीं दरखास्त देने नहीं जाऊंगा," नेख्लूदोव ने गुस्से से कहा।

"अच्छी बात है, तो खुदा-हाफिज," सरकारी वकील ने तनिक सा सिर झुका कर कहा। जाहिर था कि वह इस अनोखे मुलाकाती से पीछा छुड़ाना चाहता था।

"यह कौन आदमी तुमसे बातें कर रहा था?" नेख्लूदोव के चले जाने पर अदालत के एक सदस्य ने अन्दर प्रवेश करते हुए पूछा।

"नेख्लूदोव था। तुम उसे जानते होगे, वही जो क्रास्नापेर्स्क के ज़िला बोर्ड में तरह तरह के अजीब बयान दिया करता था। जरा सोचो! यह शख्स जूरी का सदस्य है। यहां कैदियों में एक औरत है या कोई लड़की है जिसे बड़ी मशक्कत की सजा दी गई है। यह कहता है कि मैंने उसकी असमत लूटी है, और अब उससे शादी करना चाहता हूं।"

"सच ?"

"यही कुछ उसने मुझसे कहा है। और बहुत उत्तेजित हो रहा था।"

"आजकल के नौजवानो के दिमाग खराब हो गये है।"

"पर यह तो लडका नही है, काफी उम्र का है।"

"अरे, बाबा, तुम्हारे इस सहायक इवार्शेकाव ने तो सबकी नाक मे दम कर रखा है। बोले जायेगा, बोले जायेगा, जब तक अदालत मे सब उसकी बक बक से निढाल न हो जाय।"

"उफ, ऐसे लोगो का मुह ब द कर देना चाहिए, वरना ये कोई काम नही होने देंगे। हर काम मे रुकावट डालेंगे।"

३६

बडे सरकारी वकील को मिलने के बाद नेख्लूदोव सीधा हवालात मे गया। मालूम हुआ कि मास्लोवा नाम की कोई औरत वहा पर नही है। इन्स्पेक्टर ने बताया कि मुमकिन है वह पुरानी जेल मे ही हो। नेख्लूदोव उधर चल पडा।

येकातेरीना मास्लोवा सचमुच वही थी। बडे सरकारी वकील को यह याद नही रहा था कि तब से कोई छ महीने पहले पुलिस ने बेहद बढा-चढा कर एक राजनीतिक मामला खडा किया था और इस कारण हवालात की सभी जगहें छात्र छात्राओ, डाक्टरो, मजदूरो, नर्सो से भरी पडी थी।

पुरानी जेल हवालात से बहुत दूरी पर थी। इसलिए वहा तक पहुचते पहुचते नेख्लूदोव को शाम हो गई। जेल की इमारत बहुत बडी और भयावह सी थी। वह दरवाज़े की ओर जा ही रहा था कि एक सन्तरी ने उसे रोक दिया और घण्टी बजायी। घण्टी सुन कर एक जेलर बाहर आया। नेख्लूदोव ने उसे प्रवेश-पत्र दिखा दिया, मगर जेलर ने कहा कि जब तक इन्स्पेक्टर इजाज़त न दें वह उसे अन्दर नही जाने दे सकता। नेख्लूदोव इन्स्पेक्टर से मिलने गया। वह सीढिया चढ रहा था जब उसके कानो मे सगीत की आवाज़ पडी। दूर कोई पियानो पर कठिन सी धुन बजा रहा था। एक गुस्सैल नौकरानी ने, जिसकी एक आख पर पट्टी बधी थी, दरवाज़ा खोला। दरवाज़ा खुलने पर अन्दर से सगीत की आवाज़ उफनती हुई उसके कानो

मे पडी। लिस्त की एक रचना बजाई जा रही थी, एक रप्सोडी। बजाने वाला बडी कुशलता से बजा रहा था, लेकिन एक खास स्थल तक पहुंच कर वह रुक जाता और शुरू से बजाने लगता। नेख्लूदाव ने नौकरानी से इन्स्पेक्टर के बारे मे पूछा। मालम हुआ कि वह घर पर नही है।

"क्या जल्दी लौटेंगे ?"

धुन बजनी बन्द हो गई। बजाने वाला उसी स्थल तक आ पहुचा था। थोडी देर खामोशी रही, इसके बाद धुन फिर शुरू से बजाई जाने लगी। अब की बार और भी ज़ोर ज़ोर से, और पहले से भी अधिक कुशलता के साथ। लेकिन उसी विलक्षण स्थल तक पहुच कर फिर चुप हो गई।

"मैं जा कर पूछती हू," दासी ने कहा।

रैप्सोडी फिर बडी तरग से बजने लगी थी, लेकिन उस विलक्षण स्थल तक पहुचने से पहले ही फिर बन्द हो गई, और उसके स्थान पर एक आवाज़ सुनाई दी –

"कह दे कि घर पर नही है, और आज लौटेंगे भी नही। किसी के यहा गये हुए हैं। घडी भर के लिए चैन भी लेने देंगे ?" आवाज़ एक औरत की थी, और दरवाज़े के पीछे से आ रही थी। धुन फिर बजने लगा, और फिर बन्द हो गई। फिर एक कुर्सी के फर्श पर घिसटने की आवाज़ आई। ज़ाहिर था कि पियानो बजाने वाली खीज उठी है और आगन्तुक को खरी खरी सुनाना चाहती है जो ऐसे गलत वक्त पर आ टपका है, और उसे परेशान कर रहा है।

"पिताजी घर पर नही हैं," एक लडकी ने डयोढी म आते हुए और घर कहा। पीली-दुबली लडकी, थकी हुई आखो के नीचे स्याह छल्ले और घुरमुर बाल। लेकिन बाहर एक युवक को खडे देख कर, जिसने बढिया कोट पहन रखा था, वह धीमी पड गयी।

"आइये तशरीफ ले आइये, आपको क्या चाहिए ?"

"मैं जेल म एक बंदी से मिलना चाहता हू।"

"कोई सियासी बदी होगा शायद ?"

"नही, सियासी बंदी नही है। मेरे पास बडे सरकारी वकील का लिखा हुआ अनुमतिपत्र है।'

"मैं तो जानती नहीं हू, और पिता जी घर पर नहीं हैं पर अन्दर आइए," उसने फिर कहा, "या फिर आप छोटे इन्स्पेक्टर से बात

कर देखिये। वह इस वक्त दफ्तर मे ही हैं। आप उनसे पूछ लीजिये। आपका शुभ नाम?"

"धन्यवाद," लडकी के सवाल का उत्तर दिये विना नेख्लूदोव वहा से चला गया।

दरवाज़ा बन्द होने की देर थी कि वही धुन फिर सुनाई देने लगी। पहले की ही तरह सजीव। यह सगीत इस स्थान के साथ बिल्कुल मेल नही खाता था और इस रुग्ण लडकी की शक्ल-सूरत के साथ भी नही जो इतनी ढिठाई से इस धुन को बजाये जा रही थी। बाहर आगन मे उसे एक अफसर मिला जिसके मुह पर तीखी खुरदरी मूछे थी। उससे नेख्लूदोव ने छोटे इन्स्पक्टर के बारे मे पूछा। वही आदमी छोटा इस्पक्टर निकला। उसने प्रवेश पत्र पर नज़र दौडाई और बोला कि यह प्रवेश पत्र हवालात के लिए है। वह इजाज़त नही दे सकता। साथ ही अब बहुत देर हो चुकी है।

"आप कल आ जाइये। कल सुबह, दस बजे। उस वक्त हर किसी को मिलने की इजाज़त होती है। इस्पेक्टर साहिब भी उस वक्त घर पर होगे। तब आप कैदी से बडे कमरे म मिल सकते हैं जिसमे सभी मुलाकाती मिलते हैं, या फिर, अगर इस्पक्टर साहिब ने इजाजत दे दी तो दफ्तर मे भी मिल सकते है।"

इस तरह नेख्ल्दाव मुलाकात नही कर सका और घर लौट गया। वह मास्लोवा से मिलेगा, इसका ध्यान आते ही, वह उत्तेजित हो उठा था। इस उत्तेजना म, सडको पर चलते हुए, उसे कचहरी की कार्यवाही बिल्कुल भूल गई। उसे केवल सरकारी वकील और छोटे इन्स्पेक्टर के साथ हुई बातचीत ही याद आ रही थी। यह सोच कर ही कि वह मास्लोवा से मिलने की कोशिश करता रहा है, और सरकारी वकील से सारी बात कह। दी है, और दो जेलो मे उसे मिलने के लिए जा भी चुका है, वह बेहद उत्तेजित हो उठा था और बडी देर तक उसका मन ठिकान पर नही आया। घर पहुचते ही उसने अपनी डायरी निकाली, जिसमे मुद्दत से उसने कुछ नही लिखा था, उसमे से कुछ वाक्य पढे और फिर लिखने लगा—

"दा बरस से मैंने इस डायरी मे कुछ नही लिखा। सोचता था डायरी लिखना बडी बचकाना बात है और आगे स कभी नही लिखूगा। लेकिन यह बचकाना बात नही है। इसके द्वारा मैं अपनी अन्तरात्मा से बातें करता

हू—उस दैवी ज्योति से जो हर मनुष्य मे वास करती है। जितनी देर वह सुप्तावस्था मे रही, मेरे लिए इसके साथ वार्तालाप करना असभव था। लेकिन २८ अप्रैल के दिन कचहरी मे एक विलक्षण घटना घटी जिसने इसे जगा दिया। उस दिन मैं जूरी के सदस्य के नाते अदालत मे बैठा था। वहा मैंने उसे कैदियो के कटघरे मे देखा, उसी कात्यूशा को जिसे मैंने भ्रष्ट किया था। उसने कैदियो के कपडे पहन रखे थे। एक अजीब सी गलती के कारण और मेरी भूल से उसे कडी मशक्कत की सजा दी गई है। मैं आज सरकारी वकील से मिला था और अभी जेल से आ रहा हू। आज अन्दर जाने की इजाजत नही मिली। परन्तु मैंने निश्चय कर लिया है कि उससे मिलने की यथासभव कोशिश करूगा, उसके सामने अपने गुनाह तसलीम करूगा, और अपने पाप का प्रायश्चित करूगा—जरूरी हुआ तो उसके साथ शादी तक करूगा। भगवान मेरी सहायता करें। आज मेरी आत्मा शान्त है और मेरा हृदय खुशी से भर उठा है।"

३७

उस रात मास्लोवा बडी देर तक आखें खोले लेटी रही। उनका ध्यान दरवाजे पर लगी हुई थी, जिसके सामने पादरी की लडकी टहल रही थी। वह लाल बालो वाली का सुडकना सुन रही थी और उसके मन मे तरह तरह के विचार घूम रहे थे।

वह सोच रही थी कि कुछ भी हो जाय, मैं सखालिन मे किसी कैदी से तो शादी नही करूगी। अगर जेल के किसी अफसर से बात बन जाय, किसी क्लर्क या वाडर या छोटे वाडर तक से भी, तो ठीक रहेगा। "सभी मर्द एक जैसे होते हैं। बस कही दुबली न हो जाऊ। नही तो सब मामला गडबड हो जायेगा।" मास्लोवा को याद आया कि वकील किस तरह मेरी तरफ देख रहा था, और वह बडा जज भी, और सभी लोग जो मुझे मिलते थे। कचहरी मे कितने ही आदमी तो बार बार पास से गुजरते थे। उसे याद आया कि बेरता उससे जेल मे मिलने आयी थी और उसे बता रही थी कि जिस विद्यार्थी को मास्लोवा चाहती थी, जब वह किताएव के यहा रहती थी, वही उसके बारे मे पूछ रहा था और उसकी सजा की बात सुन कर बहुत दुखी हो रहा था। मास्लोवा को लाल बालो वाली के

साथ हुआ झगडा भी याद आया और उस पर दया आई। उसे वह डबलरोटी वाला याद आया जिसने एक डबलरोटी मुफ्त मे अलग उसे दे दी थी। उसे वहुत लोग याद आये। यदि कोई याद नही आया तो नेख्लदोव याद नही आया। मास्लोवा अपने वचपन और यौवन के दिनो का, और विशेष रूप से नेख्लूदोव के प्रति अपने प्रेम को कभी याद नही करती थी, उन्हे याद करना बेहद दुखपूर्ण होता। ये स्मृतिया उसकी आत्मा की गहराइयो मे अछती पडी थी। वह उसे कभी याद नही आया, स्वप्न मे भी नही। आज अदालत मे भी मास्लोवा ने उसे नही पहचाना। जब आखिरी बार उसने उसे देखा था तो वह वर्दी पहने हुए था, तब उसके मुह पर दाढी नही थी, केवल छोटी सी मूछें थी, और सिर पर घने, छोटे छोटे, घुघराले वाल थे। अब नेख्लूदोव बडा हो गया था, उसके दाढी थी। लेकिन उसे न पहचानने का यह कारण नही था। कारण यह था कि उसने नेख्लूदोव के बारे मे कभी सोचा ही नही था। उसकी याद को उसने उस रात, उस भयानक अंधेरी रात को दफना दिया था, जब वह फौज मे से लौट रहा था और विना अपनी फूफियो को मिले सीधा आगे निकल गया था।

जब तक कात्यूशा को यह आशा वनी रही कि वह उसके पास लौट आयेगा, उसे अपना गर्भ बोझल नही लगा। कभी कभी गर्भ के अंदर बच्चा हरकत करता, नन्ही नन्ही, आकस्मिक करवटें लेता, तो मास्लोवा का दिल गदगद हो उठता। पर उस रात सब बदल गया, और बच्चा निरा बोझ बन गया।

फूफिया नेख्लदोव का इन्तजार कर रही थी। उन्होंने उसे कहा था कि लौटते समय जरूर मिल कर जाना। लेकिन उसने तार दे दी कि मुझे खास वक्त पर पीटसबर्ग पहुचना है, इसलिए रुक नही सकता। जब कात्यूशा ने यह सुना तो दिल मे ठान ली कि मैं जरूर उसे स्टेशन पर मिलने जाऊगी। रात को दो बजे गाडी वहा से गुजरती थी। सोने के वक्त तक कात्यूशा फूफिया के साथ रही। जब वे सोने चली गई, तो उसने बावचिन की छोटी बेटी माश्का को अपने साथ चलने के लिए तैयार कर लिया, फिर पुराने बूट निकाल कर पहने, शाल ओढी, और अपने कपडे संभालती हुई स्टेशन की ओर भाग निकली।

पतझड की अंधेरी रात थी, पानी बरस रहा था और हवा चल रही थी। किसी किसी वक्त पानी की मोटी मोटी, गर्म बून्दें गिरतीं, फिर

बंद हो जाती। खेतो मे से जाते हुए उसे रास्ता नही सूझ रहा था क्योंकि जंगल म तो घुप्प अंधेरा था। रास्ता जानते हुए भी कात्यूशा भटक गई। उसे उमीद थी कि वह छोटे से स्टेशन पर, जहा गाडी सिर्फ तीन मिनट खडी होती थी, गाडी आने स पहले ही पहुच जायेगी, लेकिन जब वह पहुची तो गाडी की रवानगी की दूसरी घटी भी बज चुकी थी। हांफती हुई कात्यूशा प्लेटफाम पर पहुची। उसे फौरन नेख्लूदोव नजर आ गया। फस्ट क्लास के डिब्बे मे, खिडकी के पास वह बैठा था। डिब्बे म खूब रोशनी थी। मखमली सीटो पर दो अफसर एक दूसरे के सामने बैठे ताश खेल रहे थे। सीटो के बीच एक मेज रखी था जिस पर दो मोटी मोटी मोमबत्तिया जल रही थी, और उनका मोम पिघल पिघल कर गिर रहा था। नेख्लूदोव ने सफेद कमीज और चुस्त बिरजस पहन रखी थी, और सीट के बाजू पर बैठा, पीठ के साथ टेक लगाये, किसी बात पर हस रहा था। सर्दी के कारण कात्यूशा के हाथ सुन्न हो रहे थे। उसे पहचानते ही कात्यूशा ने आगे बढ कर खिडकी के शीशे को खटखटाया। ऐन उसी वक्त तीसरी घण्टी बजी, गाडी ने पीछे की ओर एक हल्का सा झटका लिया और चल पडी। डिब्बे धीरे धीरे आगे बढने लगे। ताश खेलने वालो मे से एक उठ खडा हुआ, और बाहर की ओर झांक कर देखा। उसने हाथ मे ताश के पत्ते पकड रखे थे। कात्यूशा ने फिर खिडकी को खटखटाया, और अपना मुह शीशे के पास ले गई। लेकिन डिब्बा आगे बढता जा रहा था और वह उसके साथ साथ चलने लगी थी। सारा वक्त वह अन्दर देखे जा रही थी। अफसर ने शीशा गिराने की कोशिश की, लेकिन नही गिरा पाया। इस पर नेख्लूदोव उठा और उसे हटा कर खुद शीशा गिराने लगा। गाडी की रफ्तार तेज होने लगी, और कात्यूशा भी तेज तेज चलने लगी। जब शीशा उतरा तो गाडी की रफ्तार और भी बढ चुकी थी। ऐन उसी वक्त गार्ड न उसे धक्का दे कर परे हटा दिया और खुद उछल कर गाडी पर चढ गया। प्लेटफॉम के भीगे तख्तो पर कात्यूशा भागती चली जा रही थी। प्लेटफॉम का दूसरा सिरा आ पहुचा। कात्यूशा सीढिया उतरते हुए गिरते गिरते बची। अब वह गाडी के साथ साथ भाग रही थी, हालांकि फस्ट क्लॉस के डिब्बे कब के आगे निकल गये थे, और अब सैकड क्लॉस के डिब्बे भी बडी तेजी से आगे बढते जा रहे थे। थर्ड क्लॉस के डिब्बो के पहुचते पहुचते गाडी की रफ्तार और भी तेज हो चुकी

थी। पर कात्यूशा अब भी दौडे जा रही थी। आखिर गाडी का सबसे पिछला डिब्बा भी आगे निकल गया, जिसके पीछे बत्तिया लगी होती हैं। तब तक कात्यूशा उस टैंक तक जा पहुची थी, जिसमे से इजनो मे पानी डाला जाता है। यहा तेज हवा चल रही थी जिसमे उसकी शाल उड रही थी और उसका घाघरा टागो के साथ चिपका जा रहा था। उसके सिर पर से शाल उड गई, पर वह अब भी दौडे जा रही थी।

"मौसी मिखाइलोव्ना, शाल उड गई!" बच्ची ने चिल्ला कर कहा जो उसके पीछे पीछे बडी मुश्किल से भागी आ रही थी।

"वह तो जगमग करती गाडी मे बैठा हसी मज़ाक कर रहा है, मखमली कुर्सियो पर बैठा शराबें पी रहा है, और मैं यहा घुप्प अधेरे मे कीचड मे बारिश, हवा के थपडे खाती खडी रो रही हू," कात्यूशा ने सोचा और रुक गई। सिर पीछे को झटक कर, उसे दोना हाथो मे ले कर वह फफक फफक कर रोने लगी।

"चला गया!" उसने चीख कर कहा।

बच्ची डर गई और उसे अपनी बाहो मे भीच लिया।

"मौसी, चलो घर चले।"

"अगली गाडी आते ही उसके पहिया के नीचे बस," कात्यूशा सोच रही थी। बच्ची की ओर उसने कोई ध्यान नही दिया।

कात्यूशा ने निश्चय कर लिया था कि वह ऐसा कर के रहेगी। पर जैसे कि सदा होता है, गहरी उत्तेजना के बाद छाने वाली शाति के पहले क्षण मे बच्चा—उसका बच्चा—जो उसके गर्भ मे था, सहसा काप उठा और धक्का सा देकर, धीरे धीरे सीधा हुआ और फिर किसी पतली, कोमल और तेज सी चीज से हल्के हल्के आघात करने लगा और सहसा सब कुछ बदल गया। क्षण भर पहले उसे जीना असम्भव लग रहा था, और वह बेहद दुखी थी। पर सहसा उसके प्रति सारी कटुता दूर हो गई। अपनी जान दे कर उससे बदला लेने की जो भावना उसके मन मे उठी थी, वह जाती रही। वह शात हो गई, शाल सिर पर ओढी और घर चल दी।

बारिश मे भीगी, कीचड से लथपथ, और थक कर चूर वह घर पहुची। और उसी दिन से उसके अदर वह परिवर्तन होने लगा जो आज

उसे इस स्थिति पर ले आया था। यह परिवर्तन उसी भयानक रात से शुरू हो गया था, जब नेकी मे उसका विश्वास जाता रहा। उसे नेकी में गहरा विश्वास था, और वह समझती थी कि बाकी सब लोगों का भी उसमे विश्वास है। परन्तु उस रात के बाद कात्यूशा का यकीन हो गया कि नेकी म किसी को भी विश्वास नही, कि भगवान और उसके नियमों के बारे म जो कुछ भी कहा जाता है, सब धोखा है, झूठ है। जिससे वह प्रेम करती थी और जो उसे प्रेम करता था—हा, कात्यूशा जानती थी कि वह उससे प्रेम करता था—उसी ने उसके शरीर का भोग कर के उसे दूर पर फेंक दिया था, उसके प्रेम का ठुकरा दिया था। और वह सबसे अच्छा आदमी था। जितने भी लोगो को वह जानती थी, उनमे वह सबसे अच्छा था। बाकी लोग तो और भी बुरे थे। इस घटना के बाद उसके साथ मे जो कुछ भी हुआ, उससे कदम कदम पर उसका यह विश्वास और दृढ होता गया। नेख्लूदोव की फूफिया जैसी भद्र महिलाए थी। जब कात्यूशा पहले की तरह उनकी सेवा नही कर सकी तो झट उसे निकाल दिया। जितने लोग भी उसे मिले सभी एक जसे थे। स्त्रिया पसे कमाने के लिए उसे इस्तेमाल करती और पुरुष वासना-तृप्ति के लिए। बूढे पुलिस अफसर से ले कर जेल के वाडरा तक सभी यही चाहते थे। अपनी खुशी के सिवा दुनिया मे किसी का किसी चीज की परवाह नही। कात्यूशा का यह विश्वास उस समय और भी दृढ हो गया था जब वह अपनी आजादी के दूसरे दिनों में बूढे लेखक के साथ रह रही थी। वह कात्यूशा को सीधे से यही कहा करता था कि जीवन का सुख इसी म है, इसे वह कविता और सौन्दर्य का नाम दिया करता था।

सभी अपने लिए जीते थे, अपनी खुशी के लिए और भगवान और सदाचार की दुहाई देना धोखा था। कभी कभी कात्यूशा के मन म प्रश्न उठते, और वह हैरान हो कर मन ही मन पूछती कि ससार की रचना क्यो इतनी बुरी है कि सब लोग एक दूसरे को कष्ट देते है और दुखी करते है। पर जब ऐसे सवाल उठते तो वह सोचना छोड देती। यही सबसे अच्छा था। जब बहुत उदास हुई तो सिगरेट का कश लगा लिया या शराब का घूट गले तले उतार लिया या फिर किसी मर्द से प्यार कर लिया और उदासी खतम।

इतवार के दिन सुबह पाच बजे जेल के उस हिस्से म जहा औरतो को रखा जाता था, बरामदे मे एक सीटी बजी। कोराब्ल्योवा पहल से जाग रही थी। उसन मास्लोवा का जगाया।

"मैं मुजरिम हू!" जागते ही यह विचार उसके मन म आया। सुबह के वक्त जेल की हवा मे और भी अधिक सडाध आ गयी थी। उस बदबू भरी हवा मे सासे लेती हुई मास्लोवा आखे मल रही थी। उसका जी चाहा कि फिर सो जाय, विस्मृति के लोक मे फिर चली जाय, लेकिन उसके दिल म ऐसा डर बैठ गया था कि नीद उडते देर न लगती थी। वह उठ बैठी और टागे अपने नीचे समेटते हुए कमरे म इधर उधर देखने लगी। सभी स्त्रिया जाग चुकी थी, केवल बच्चे अब भी सो रह थे। जिस औरत को नाजायज शराब बेचन के जुम मे सजा मिली थी, वह धीर धीरे, बडे ध्यान से, बच्चा क नीचे से लबादा खीच रही थी, ताकि व जाग न जाय। जिस औरत ने रगरूट को छुडाया था, वह अलगनी पर सूखने के लिए चिथडे टाग रही थी। इन्ही चिथडो मे बच्चे का लपट कर रखा जाता था। बच्चा जार जार से रा रहा था। नीली आखा वाली फेदोस्या उस उठाये हुए थी और अपनी कोमल आवाज म उस चुप कराने की कोशिश कर रही थी। तपेदिक की रोगी अपनी छाती को हाथा से दबाये जोर जोर से खास रही थी। उसका चेहरा लाल हो रहा था। जब जब खासी रुकती ता वह ऊचे ऊचे उसासे भरती। ऐसा लगता जैसे चीख रही हो। लाल बालो वाली मोटी औरत घुटन ऊपर को उठाये पीठ के बल लेटी थी और मजे मे ऊची ऊची आवाज मे अपना सपना सुना रही थी। जिस बुढिया को आग लगाने के जुर्म मे कैद किया गया था, वह देव प्रतिमा के सामने खडी बार बार सिर निवा रही थी और छाती पर क्रास का चिन्ह बना रही थी, और एक ही वाक्य को बार बार गुनगुना रही थी। पादरी की बेटी अपने तख्ते पर बैठी थकी हुई, उनीदी आखो से सामने देखे जा रही थी। छबीली अपन चिकने, काले, खुरदरे बाला को अपनी उगलिया के इद गिद लपेटे जा रही थी।

गलियारे मे किसी के घिसटते जूता की आवाज आयी। दरवाजा खुला और दो कैदी कोठरी मे दाखिल हुए। दोना ने जाकेट और भूरे रग

की पतलूनें पहन रखी थी जो उनके टखना तक भी नही पहुच पा रही थी। चेहरो से वे गभीर और खीजे हुए से लग रहे थे। वे अन्दर घुसे और वदबू से भरा टब उठा कर वाहर ले गये। औरते मुह हाथ धोने के लिए वरामदे मे चली गइ जहा पानी के नल लगे थे। वहा पर भी लाल बालो वाली औरत ने एक दूसरी औरत के साथ झगडना शुरू कर दिया जो किसी दूसरी कोठरी मे से आयी थी। एक वार फिर गाली-गलौज चीखना चिल्लाना, शिकवा शिकायत शुरू हो गया।

"क्या चाहती हो, अकेली कोठरी मे डाल दू?" एक जलर ने चिल्ला कर कहा और ज़ोर से लाल बालो वाली की नगी, मोटी पीठ पर चपत जमाई। आवाज़ वरामदे भर मे गूज गई। "खवरदार जो फिर मैंने तुम्हे लडते देखा तो!"

"अरे, बूढा तो चुहले करता है!" लाल वालो वाली औरत बोली। चाटे को वह लाड-प्यार समझ रही थी।

"जल्दी करो, गिरजे के लिए तैयार हो जाओ।"

मास्लोवा मुश्किल से कपडे पहन कर वालो मे कघी कर पायी थी कि अपने सहायको को साथ ले कर इन्स्पक्टर वहा आ पहुचा।

"जाच के लिए हाज़िर होओ!" एक जेलर ने चिल्ला कर कहा।

अन्य कोठरियो मे से भी कैदी निकल निकल कर आने लगे। वरामदे मे सभी औरते दो लाइनें बना कर खडी हो गइ। प्रत्येक स्त्री ने अपने दाया हाथ सामने वाली स्त्री के कधो पर रखे। इस के वाद कैदियो की गिनती हुई।

जाच के बाद एक वाडर स्त्री कैंदिया को गिरजे की ओर ले जाने लगा। अलग अलग कोठरियो मे से आयी लगभग एक सौ कैदी स्त्रिया की लाइन आगे वढने लगी। इस लाइन के मध्य मे मास्लोवा और फेनास्या एक साथ चली जा रही थी। लगभग सभी स्त्रियो ने सफेद घाघरे और सफेद जाकेट पहन रखी थी और सिर पर सफेद रूमाल वाध रखे थे। कुछेक ने अपने रगदार कपडे पहन रखे थे। ये वे औरते थी जिनके पति साइवेरिया भेजे जा रहे थे और ये भी उनके साथ, अपने वाल-वच्चो को ले कर साइवेरिया जा रही थी। सीढियो पर, ऊपर से नीचे तक, कैंदियो की लाइन लगी हुई थी। जूतो की हल्की हल्की टप-टप के साथ वात करने की आवाज

ग्रौर किसी किसी वक्त हसने की ग्रावाज सुनाई देती। मोड पर पहुच कर मास्लोवा को ग्रपनी दुश्मन वोच्कोवा की सडियल सूरत नजर ग्राई। वह ग्रागे ग्रागे जा रही थी। मास्लावा ने ग्रपनी साथिन फेदोस्या को इशारा कर के उसे दिखाया। सीढिया पर से उतरते हुए ग्रौरत चुप हो गई ग्रौर सिर निवाते ग्रौर त्रास का चिन्ह बनाते हुए गिरजे के ग्रन्दर दाखिल होने लगी। गिरजे मे ग्रभी तक कोई न था। सुनहरी मुलम्मे से गिरजा चमचमा रहा था। ग्रौरता की जगह दाये हाथ को थी ग्रौर वे धक्का-मुक्की करती हुई वहा खडी होने लगी।

स्त्रियो के बाद पुरुष कैदी ग्रन्दर ग्राने लगे। उन्होने भूरे रग के लबादे पहने रखे थे। इनमे कई तरह के कैदी थे कुछ यहा जेल मे ग्रपनी सजा काट रहे थे, ग्रौर कुछ वे जिन्हें ग्राम-पचायतो द्वारा साइबेरिया भेजा जा रहा था। जोर जोर से खासत हुए वे गिरजे के मध्य मे ग्रौर बाई ग्रार भीड बना कर खडे हो गये।

ऊपर की गैलरी मे एक तरफ को वे कैदी खडे थे जिन्ह साइबेरिया मे बडी मशक्कत की सजा दी गई थी। इन्हे सबसे पहले गिरजे मे लाया गया था। सबके ग्राधे ग्राधे सिर मुडे हुए थे, ग्रौर उनके पावा मे से वेडिया के खनकने की ग्रावाज ग्रा रही थी। गैलरी की दूसरी ग्रोर वे कदी थे जिन्हे हवालात मे रखा गया था। इनके पावो मे वेडिया नही थी, ग्रौर न ही इनके सिर मुडे हुए थे।

जेलखाने के इस गिरजे का निर्माण ग्रौर साज-सजावट एक व्यापारी के पैसो से की गई थी, जिसने हजारो रूबल इस पर खच कर दिये थे। तरह तरह के शोख रगो ग्रौर सुनहरी मुलम्मे से गिरजा चमचमा रहा था।

कुछ देर तक गिरजे मे चुप्पी छायी रही। केवल खासने खखारने, नाक साफ करने, बच्चा के रोन ग्रौर किसी किसी वक्त वेडिया के खनकने की ग्रावाजे ग्रा रही थी। ग्राखिर गिरजे के मध्य मे खडे कैदी हिलने लगे ग्रौर एक दूसरे को धकेलन लगे, गिरजे के ऐन बीचोबीच एक रास्ता सा बन गया। इस रास्ते पर इन्स्पेक्टर चलता हुग्रा ग्राया ग्रौर गिरजे के मध्य मे कैदियो के ग्रागे ग्रा कर खडा हो गया।

उपासना आरभ हुई।

उपासना इस तरह थी पादरी ने अजीब सा जरी का जामा प-
इस जामे को पहन कर खडे होना आसान न था। फिर उसने एक
मे डबलरोटी के छोटे छोटे टुकडे किये, और उन्ह शराब से भरे एक
मे डाल दिया। सारा वक्त वह प्रार्थना के शब्द गुनगुनाता रहा और
अलग नाम लेता रहा। इसी बीच डीकन ने स्लावोनिक भाषा में प्र
की। एक तो उसे समझना यो भी कठिन था, दूसरे डीकन इतनी त
से पढ रहा था कि कुछ भी पल्ले नही पडता था। प्रार्थना की इ
को उसने बाद मे कैदियो के साथ गा गा कर दोहराया। प्रार्थना म
और उसके परिवार के स्वास्थ्य की कामना की गई थी। प्रार्थना
उक्तियां को बार बार दोहराया गया, अकेले मे भी और अन्य
के साथ मिला कर भी। सारा वक्त लोग घुटने टेके रहे। इसके
डीकन ने धर्मदूतो के कर्म ग्रन्थ मे से कुछेक पद पढ कर सुनाये।
आवाज मे इतना तनाव था कि उन्हे समझना असभव था। इसके बाद
पादरी ने इजील मे से सत मार्क के उपदेश का एक अंश बडी माफ
मे पढा। इस मे ईसा के पुनर्जागरण का उल्लेख था। पुनर्जागरण के
ईसा उडकर स्वर्ग जाने और वहा पर अपने पिता अर्थात परमात्मा
हाथ पर बैठने से पूर्व मरियम मैग्डेलीन से मिले, जिसके शरीर
उन्होने सात दुष्टात्माओ का निकाल भगाया। तत्पश्चात वह अपने
अनुयाइयो से मिले और उन्ह आदेश दिया कि वे ससार भर
वाणी का प्रचार करे, और कहा कि जो इजील मे विश्वास नही
उसका सर्वनाश होगा, और जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा
भगवान् रक्षा करेंगे और वह अपने स्पर्श द्वारा लोगो को रोगमुक्त
उनके शरीर मे से पिशाचो को भगायेगा, नयी भाषाओ मे बात
भाषा का पढेगा और यदि वह विषपान भी करेगा तो मरेगा नहीं,
जीता-जागता और स्वस्थ रहेगा।

उपासना का सार यह था कि डबलरोटी के जो छोटे
पादरी ने तोड तोड कर शराब म डाले है, उन पर जब विशेष
प्रार्थना की जायगी, तथा विधिवत् कृत्य सम्पन्न किया जायगा, तो इनमे

टुकडे भगवान के मास के टुकडे वन जायेंगे और शराव ख ून मे वदल
ायेगी। कृत्य इस तरह था पादरी सुनहरी जरी का जामा पहने, वार
ार हाथ ऊपर को उठाता—जामे के कारण हाथ उठाना कठिन हो रहा
ा—फिर घुटने टेक देता और मेज़ का चूमता, और मेज पर रखी प्रत्येक
ीज़ को चूमता। परन्तु कृत्य की मुख्य क्रिया यह थी कि पादरी एक
पडे को दो सिरा से पकड कर सोन के प्याले और चादी की तश्तरी
े ऊपर हल्के हल्के और एक लय मे झुलाता। अनुमान किया जाता था
के ऐन इसी वक्त डवलरोटी मास मे और शराव ख ून म परिवर्तित हुई
ै। इसी लिए कृत्य का यह भाग वडी गभीरता से सम्पन्न किया गया।

फिर पार्टीशन के पीछे से पादरी की आवाज़ आई— "अव भगवान् की
परम भाग्यशालिनी, परमपावन, परमपवित्र मा के हेतु!" इस पर सगीत
मण्डली वडी गभीरता से गाने लगी। गीत मे यह कहा गया था कि माता
मरियम का यशोगान सवथोचित है, क्योकि ईसा को अपन शरीर म धारण
करने के पश्चात् भी उसका कौमाय भग नही हुआ। अत वह फरिश्ता
स कही अधिक माननीय है और दवदूता से कही अधिक कीर्ति के याग्य
है। माना जाता था कि इस गान के वाद परिवतन सम्पन्न हुआ। पादरी
न तश्तरी पर से कपडा उठाया। उम पर रखे डवलरोटी के टुकडा मे से
बीच वाले टुकडे को काट कर चार हिस्से किये, फिर एक हिस्से को उठाया,
उम पहले शराव मे भिगाया और फिर अपने मुह मे डाल लिया। इसका
अर्थ था कि उसने भगवान् का माम खाया है और ख ून पिया है। इसके
वाद पादरी न एक पर्दा गिराया, और पार्टीशन के वीच का दरवाज़ा खोल
कर हाथ म सोने का प्याला उठाये वह वीच वाले दरवाज़े मे से वाहर
आ गया, और लोगो को निमन्त्रण देने लगा कि जिसकी इच्छा हो, वह
आये और भगवान् का मास खाये और खन पिये।

कुछेक वच्चा की ऐसा करने की इच्छा हुई।

पादरी ने वच्चा के नाम पूछे। फिर चमचे से शराव मे भीगा एक
डवलरोटी का टुकडा प्याले म से निकाला और एक वच्चे के गले में दूर
ले जाकर डाल दिया। फिर वारी वारी सभी वच्चा के गले मे डाला।
डीकन न वच्चो के मुह पाछे, और पोछते हुए ऊची ऊची आवाज़ में वडे
आनन्द स गाने लगा कि वच्चे भगवान् का मास खा रहे हैं और ख ून
पी रहे हैं। इसके वाद प्याला उठाये पादरी पार्टीशन के पीछे चला गया

और वहा जा कर भगवान् के मास के सभी बचे हुए टुकडे ...
खून पी लिया और प्याला और मूछें अच्छी तरह साफ कर ...
प्रसन्नता से, तेज तेज कदम रखता हुआ बाहर आ गया। पावों में ...
बछडे की खाल के जूते पहन रखे, जो चलते वक्त खूब ...
थे।

उपासना का सबसे ज़रूरी भाग सम्पन्न हो चुका था। परन्तु ...
अभागे कैदियो को सान्त्वना देने के लिए पादरी ने साधारण उपासना ...
साथ एक छोटी सी उपासना और जोड दी। वह चलता हुआ ...
के पास गया जिस पर सोने का मुलम्मा चढा हुआ था और जिसके ...
और मुह काले रग के थे। उसके आगे दजन के लगभग मोमबत्तिया ...
रही थी। यह उसी भगवान् की प्रतिमा थी जिसका मास पादरी ...
अभी खा कर हटा था। देव-प्रतिमा के सामने खडे हो कर वह ...
फटी हुई आवाज़ मे गुनगुनाने और गाने लगा—

"हे यीसु! सबसे प्यारे यीसु! धमदूतो ने जिसका यशोगान ...
हुतात्माओ ने जिसका गुणगान किया। हे सर्वशक्तिमान, ...
मेरी रक्षा करो! मेरे मुक्तिदाता यीसु, सबसे सुन्दर यीसु इस ...
रक्षा करो! हे मुक्तिदाता, हे आराधना के पुत्र यीसु, अपने ...
की, सभी पैगम्बरो की रक्षा करो, उन्हें स्वर्ग के आनन्द का ...
बनाओ, हे यीसु! तुम्हारे हृदय मे सभी मनुष्यो के प्रति प्रेम है!"

फिर वह चुप हो गया, एक गहरी सास खीची, छाती पर ...
का चिन्ह बनाया और ज़मीन तक सिर निवा लिया। गिरजे मे ...
लोगो ने—इन्स्पेक्टर, वार्डर, कैदी—सभी ने ऐसा ही किया। ऊपर ...
देर तक बेडिया घनघनाती रही।

पादरी की प्रार्थना अब भी चल रही थी—"हे देवदूतो के ...
तुम सभी शक्तियो के स्वामी हो, तुम सबसे अद्भुत, सर्वशक्तिमान, ...
को अपने प्रताप से चकित करने वाले, तथा हमारे पुरखाओ का ...
वाले हो! हे यीसु, तुम सबसे प्यारे हो, हमारे बडो ने तुम्हारा ...
किया है! हे यीसु, तुम्हारी महिमा अपरम्पार है, तुम राजाओ का ...
प्रसार करने हो। हे सर्वश्रेष्ठ यीसु, तुमने पैगम्बरो की सिद्धि ...
है! हे यीसु, तुम सबसे सच्चे हो, तुम हुतात्माओ की ...
की है। हे यीसु, तुम सबसे विनम्र हो, धर्माभिमुखो मे आनन्द का ...

हो। हे यीसु, तुम दयालुता की मूर्ति हो, पादरियो की श्राख का तारा हो। हे कृपानिधान, तुम व्रतधारियो को सयम प्रदान करते हो। हे सर्वप्रिय यीसु, सभी न्यायप्रिय व्यक्तियो के लिए तुम श्रानन्द का स्रोत हो! हे परमपावन यीसु, तुम ब्रह्मचारियो का ब्रह्मचर्य हो। हे यीसु, श्रादि काल से तुम पापियो का उद्धार कर रहे हो! हे यीसु, भगवान के पुत्र, मुझ पर कृपादृष्टि रखो।"

हर बार "यीसु" शब्द के साथ "स" की श्रावाज़ श्रौर श्रधिक ज़ोर से सीटी की तरह निकलती। श्रन्त मे वह चुप हो गया। फिर श्रपना वस्त्र उठा कर, जिसके नीचे रेशम का श्रस्तर लगा था, वह एक घुटने के बल झुक गया श्रौर ज़मीन तक सिर निवाया। सगीत मण्डली ने फिर गीत श्रारम्भ किया—"भगवान के बेटे यीसु, हम पर कृपादृष्टि रखो!" कैदियो ने भी घुटनो के बल झुक कर माथा निवाया। फिर उठे, सिर के श्राधे हिस्से पर जो बाल बच रहे थे, उन्हे झटक कर पीछे किया। बेडिया फिर खनकी जिनसे कैदियो के टखने जख्मी हो रहे थे।

यही कुछ बडी देर तक चलता रहा। पहले महिमागान हुश्रा, जिसके श्रन्तिम शब्द थे—"हम पर कृपादृष्टि रखो!" इसके बाद श्रौर महिमागान हुश्रा, जिसके श्रन्त मे "श्रल्लेलूइया" कहा गया। कैदियो ने क्रास का चिन्ह बनाया, सिर निवाया श्रौर ज़मीन पर गिरे। पहले वे हर वाक्य के बाद श्रौर बाद मे हर दूसरे श्रौर हर तीसरे वाक्य के बाद सिर निवाते रहे। सभी खुश थे कि महिमागान समाप्त हुश्रा। पादरी ने भी पोथी बन्द की, श्रौर चैन की सास लेते हुए पार्टीशन के पीछे चला गया। हा, एक क्रिया श्रभी श्रौर बाकी थी। पादरी ने एक मेज़ पर से बडा सा क्रॉस उठाया श्रौर उसे ले कर गिरजे के ऐन बीचोबीच श्रा कर खडा हो गया। क्रॉस पर सोने का मुलम्मा चढा हुश्रा था श्रौर दोनो सिरो पर इनेमल के पदक लगे थे। सबसे पहले इन्स्पेक्टर ने श्रागे बढ कर उसका चुम्बन किया, उसके बाद छोटे इन्स्पेक्टर श्रौर वार्डरो ने। श्रौर इसके बाद कैदी, एक दूसरे को धकेलते, कोहनिया मारते, श्रौर एक दूसरे को दबी श्रावाज़ मे गालिया देते हुए श्रागे बढ बढ कर उसे चूमने लगे। पादरी इन्स्पेक्टर से बाते करने लगा। जिस हाथ मे उसने क्रॉस को पकड रखा था उसे कैदियो की श्रोर बढा दिया। कभी उसे कैदियो के मुह के सामने ले जाता, कभी उनके नाक के सामने। कैदी क्रॉस को भी चूमने की कोशिश कर रहे थे श्रौर पादरी

के हाथ को भी। इस भांति ईसाई धर्म की यह उपासना सम्पन्न हुई, जिसका अभिप्राय अपने उन भाइयों को उबारना और सान्त्वना प्रदान करना था जो सन्मार्ग से भटक गये थे।

४०

पादरी और इन्स्पेक्टर से ले कर मास्लोवा तक, वहां खड़े सभी लोगों में से किसी को भी यह ख्याल नहीं आया कि जिस यीशु का नाम पादरी बार बार ले रहा था, और इन विचित्र शब्दों में जिसका गुणगान कर रहा था, उस यीशु ने उन सभी बातों की मनाही कर दी थी जो यहां पर की जा रही थीं। यह कोलाहल सर्वथा निरर्थक था। रोटी और शराब के ऊपर किया गया मन्त्रपाठ पाखण्डपूर्ण था। यीशु ने न केवल इसकी मनाही कर रखी थी, बल्कि बड़े स्पष्ट शब्दों में आदेश दिया था कि कोई किसी को अपना गुरू न पुकारे, मंदिरों में जा कर उपासना नहीं करे। उसकी तो शिक्षा थी कि सभी एकान्त में उपासना करें। उसने मन्दिरों के बनाने तक की मनाही कर दी थी और कहा था कि मैं उनका नाश करने के लिए संसार में आया हूं। उसकी शिक्षा थी कि सच्ची उपासना मन्दिरों में नहीं, वरन हृदय में तथा सत्याचरण में होती है। उसका आदेश था कि कोई किसी का न्याय नहीं करे, किसी को कैद नहीं करे, यन्त्रणा नहीं दे, फांसी नहीं लगाये, और ये सब कार्य यहां पर किये जा रहे थे। उसका आदेश था कि किसी प्रकार की हिंसा नहीं की जाय। मैं बन्दियों को मुक्त कराने आया हूं—यह उसका कथन था।

किसी ने नहीं सोचा कि जो कुछ यहां हो रहा है, बड़े से बड़ा पाप है, उस ईसा का अपमान है जिसके नाम पर ये क्रियाएं की जा रही हैं। किसी को यह ख्याल नहीं आया कि जिस सोने चढ़े और इनामेल के क्रास को पादरी चूमने के लिए लोगों के सामने बढ़ा रहा था, वह उस फांसी के खम्भे का प्रतीक है जिस पर ईसा को लटकाया गया था, इसलिए कि ईसा ने इन सब कार्यों का विरोध किया था जो आज यहां पर किये जा रहे थे। ये पादरी यह सोचते हैं कि वे भगवान् का मांस खाते और रक्त पीते हैं। वास्तव में ये उसका मांस खाते और रक्त पीते हैं। इसलिए नहीं कि वे रोटी के टुकड़े खाते और शराब पीते हैं,

हैं बल्कि इसलिए कि वे उन निरीह लोगों को अपने जाल में फसा रहे हैं जिन्हें ईसा ने अपने भाई माना था, उन्हें सभी सुखों से वंचित कर रहे हैं, उन्हें क्रूरतम यन्त्रणा पहुचा रहे हैं और जिस महान सुख का सन्देश वह ससार में लाया था उसे लोगों से छिपा रहे हैं। यह ख्याल वहा खडे किसी आदमी को भी नहीं आया।

पादरी का अन्तःकरण साफ था। वह अपना काम सन्ताप के साथ किये जा रहा था। उसे बचपन में यही सिखाया गया था कि यही एकमात्र सच्चा धर्म है। प्राचीन काल में सर्वोत्कृष्ट लोगों का यही मत था और आज भी राज्य तथा धर्म के सभी अधिकारी इसी मत के अनुयायी हैं। वह यह नहीं मानता था कि रोटी सचमुच मास में परिणत हो जाती है, या कुछेक शब्दों को बार बार दोहराने से आत्मा का उद्धार होता है, या डबलरोटी और शराब के सेवन से उसने सचमुच भगवान् के एक अंश को अपने अन्दर ग्रहण किया है। किसी को भी यह यकीन नहीं हो सकता था। लेकिन पादरी का यह विश्वास था कि इसमें यकीन करना चाहिए। और यह विश्वास और भी दृढ इसलिए हो पाता था कि धर्म की इन मांगों को पूरा करते हुए पिछले १८ साल से वह अच्छे पैसे कमा रहा था, जिससे वह एक बडे परिवार का लालन पालन कर पाया था, अपने बेटे को जिम्नेज़ियम में और अपनी बेटी को एक कन्यापाठशाला में भेज पाया था जिसमें पादरियों की बेटियां पढ़ती थीं। डीकन का भी विश्वास इसी तरह का था, बल्कि उसकी आस्था पादरी की आस्था से भी अधिक दृढ थी। धर्म के सिद्धान्तों का सार वह कब का भूल चुका था। वह केवल इतना जानता था कि उसकी सभी प्रार्थनाओं का, पितरों के लिए की गई प्रार्थनाओं, सामूहिक प्रार्थनाओं, एकेथिस्टस के साथ या उसके बिना की गई प्रार्थनाओं—सबका निश्चित मूल्य है। और यह मूल्य सच्चे ईसाई बडी खुशी से चुका देते हैं। इसलिए वह बडे उत्साह से "कृपादृष्टि रखो। कृपादृष्टि रखो, भगवान्।" का उच्चारण किया करता था। निर्धारित सूत्रों तथा उक्तियों को आवश्यक मानता था और उनका पाठ पूरी निष्ठा से करता था, उसी तरह जिस तरह दूकानदार लोग ईंधन, आटा और आलू बेचते हैं। जेल का इंस्पेक्टर तथा वार्डर लोग इन सिद्धान्तों को या गिरजे में होने वाली क्रियाओं को नहीं समझते थे, न ही उन्होंने कभी इनपर विचार किया था। फिर भी वे समझते थे कि उन्हें जरूर इनमें विश्वास

करना चाहिए क्योंकि ऊचे पदाधिकारी, स्वय जार बादशाह तक इस विश्वास रखते हैं। साथ ही एक धूमिल सा विचार भी उनके मन में था (जिसका कारण वे नही जानते थे)—इस धर्म मे विश्वास रखने हुए वे अपना अमानुषिक धधा बेधडक हो कर किये जा सकते हैं, कि यह धर्म उनकी पीठ ठोकता है। यदि यह विश्वास न होता तो व लोगो पर इतने पूरी शक्ति से जुल्म नही ढा सकते थे, जैसा कि वे अब शुद्ध अन्तःकरण के साथ कर सकते थे। इस विश्वास के बिना ऐसा करना कठिन होता, शायद असभव होता। इन्स्पेक्टर तो ऐसा दयालु-स्वभाव पुरुष था कि यदि उसमे विश्वास की दृढता न होती तो उसके लिए इस प्रकार जीना कठिन हो जाता। इसी लिए वह बडे उत्साह के साथ सीधा खडा होता, सिर निवाता और छाती पर क्रॉस का चिन्ह बनाता। जिस समय देवदूतो का गीत गाया जा रहा था, उस समय उसने पूरी कोशिश की कि उसकी आखो मे आसू आ जाय। और जब बच्चो ने पादरी से भगवान के मांस और खून को ग्रहण किया तो उसने एक बच्चे को स्वय बाहों में उठा कर पादरी के सामने किया था।

अधिकाश कैंदी समझते थे कि इन सुनहरी प्रतिमाओ, पादरी के वस्त्रों, मोमबत्तियो, प्यालो, क्रॉसो तथा "मधुरतम यीशु" तथा "कृपादृष्टि रखो" ऐसे गोपनीय शब्दो मे कोई रहस्यपूण शक्ति विद्यमान है, जिससे उन्हें लोक मे तथा परलोक मे सुख की प्राप्ति हो सकती है। केवल कुछेक ही लोग स्पष्टतया उस धोखाधडी का देख पाते थे जो इस मत के अनुयाइयों के साथ की जाती थी। मन ही मन मे वे हसते थे। परन्तु अधिकाश लोगों ने प्राथनाओ, प्रीतिभाजो और मोमबत्तिया इत्यादि से, वाछित सुख प्राप्त करने की कुछेक बार कोशिश की। उन्हें सुख नही मिला, भगवान ने उनकी प्राथनाए नही सुनी। फिर भी वे यही समझते रहे कि उनकी असफलता किसी आकस्मिक कारणवश रही होगी। उन्हें विश्वास था कि यह रस्म जिसे शिक्षित समुदाय का तथा बडे बडे पादरियो का समर्थन प्राप्त है, बडी महत्वपूण तथा आवश्यक है, यदि लोक के लिए नही तो परलोक के लिए तो जरूर ही है।

मास्लोवा का भी यही विश्वास था। और लोगो की तरह उसमे भी एक मिश्रित सी भावना उठती थी, भक्ति की तथा ऊब की। पहले तो वह कटहरे के पीछे भीड मे खडी रही, पर इस तरह वह केवल अपने

साथियो को ही देख पाती थी, और किसी को नही। लेकिन जब कम्युनियन ग्रहण करने वाली स्त्रिया आगे बढ गईं तो वह और फेदोस्या दोनो आगे चली आईं। यहा से उन्होने इन्स्पेक्टर को देखा, और उसके पीछे जहा चाहर खडे थे, एक छोटे से किसान को भी खडे देखा जिसके छोटी सी दाढी और सिर पर सुनहरी बाल थे। यह आदमी फेदोस्या का पति था और एकटक अपनी पत्नी की ओर देखे जा रहा था। अकाथिस्टस के समय मास्लोवा बडे गौर से उसकी ओर देखती रही और फेदोस्या के साथ दबी आवाज मे बाते करती रही। जिस वक्त सब लोग सिर निवाते और क्रॉस का चिन्ह बनाते तो वह भी बना लेती थी।

४१

नेख्लूदोव घर से जल्दी ही निकल पडा। गली मे एक किसान, जो गाव से दूध बेचने आया था, एक छकडे पर बैठा, अजीब से लहजे मे बराबर चिल्लाये जा रहा था—"दूध! दूध, ले लो दूध! दूध!"

पिछले ही दिन वसन्त की पहली स्निग्ध वर्षा हुई थी। जहा कही भी पटरा नही बिछी थी, हरी हरी घास लहरा रही थी। बागो मे बच के वृक्ष हरियाली की ओढनी ओढे थे, बर्ड चेरी और पोपलर के पेडो के लम्बे लम्बे महकभरे पत्ते निकल रहे थे। लोग अपनी दूकानो और घरो मे खिडकियो के दोहरे चौखटो मे से अन्दर वाले चौखटे उतार रहे थे जो उन्होंने सर्दी के मौसम के लिए लगा रखे थे और खिडकिया साफ कर रहे थे। फेरी बाजार मे, जहा से नेख्लूदोव को हो कर जाना था, दुकानो की कतार के सामने अभी से लोगो की भीड उमड रही थी।

फटे-पुराने कपडे पहने कुछ लोग ऊचे बूट बगल मे दबाये और लोहा की हुई पैंटें और जाकेटें कधे पर डालकर बेचते फिर रहे थे।

अपनी फैक्टरियो से छुटकारा पा कर मजदूर स्त्री-पुरुष ढाबो के पास भीड लगाये खडे थे। स्त्रिया सिर पर चटकीले रगो वाले रेशमी रूमाल बाधे व काच के मोती लगे कोट पहने थी, पुरुष साफ सुथरे लबे कोट और चमकीले ऊचे बूट डाटे थे। अपनी पिस्तौलो की पीली डोरिया चमकाते सिपाही इस ताक मे खडे थे कि कोई गडबड हो और वे अपनी ऊब भगा

पायें। चौडी सडको की पटरियो पर तथा हरी हरी घास पर छोटे छोटे बच्चे और कुत्ते इधर-उधर भाग-दौड रहे थे और दाइया बेंचो पर बैठी मजे मे गप्पें हाक रही थी।

बायी ओर, जहा साया था, सडके अभी भी नम और ठण्डी थी लेकिन बीच मे से वे सूख गयी थी। गडगडाते बोझल छकडे, खडखड करती बग्घिया और टनटन करती ट्रॉम गाडिया लगातार आ जा रही थी। इस तरह तरह के शोर और गिरजो के घटो की गूज से वातावरण कम्पित हो रहा था। गिरजो के घटे लोगो को ईश्वर के वैसे ही महिमा-जय मे भाग लेने के लिए बुला रहे थे, जैसा इस समय जेल मे हो रहा था और लोग अपने अपने गिरजो की ओर सजे धजे चले जा रहे थे।

बग्घी वाले ने नेख्लूदोव को जेल तक न ले जा कर, जेल से पहले मोड पर ही उतार दिया।

इसी मोड पर, जेल से लगभग सौ कदम की दूरी पर कुछ स्त्रिया और पुरुष खडे थे। अधिकाश बण्डल उठाये थे। दायें हाथ लकडी के बने से मकान थे। बायें हाथ एक दो मजिला इमारत थी जिसके बाहर एक बोर्ड लगा था। सामने ही जेलखाने की, ईटो की बनी, भीमकाय इमारत थी, लेकिन आगन्तुको को उसके पास जाने की इजाजत नही थी। उनके सामने ही एक सन्तरी ड्यूटी दे रहा था। जो भी आदमी उसके पास से निकल कर जेलखाने की तरफ जाने की कोशिश करता, उसे वह रोक देता।

लकडी के घरो के बाहर, सन्तरी के ऐन सामने एक वार्डर वर्दी पहने बेंच पर बैठा था। उसकी वर्दी पर सुनहरी पाइपिंग लगी थी, और उस के हाथ मे एक कॉपी थी। मुलाकाती उसके पास जा कर कैदियो के नाम बताते जिनसे वे मिलने आये हैं, और वह अपनी कॉपी मे उनके नाम दर्ज कर लेता। नेख्लूदोव भी उसके पास गया और येकातेरीना मास्लोवा का नाम बताया। वार्डर ने नाम लिख लिया।

"अन्दर क्यो नही जाने देते?" नेख्लूदोव ने पूछा।

'गिरजे मे उपासना हो रही है। जब खतम हो जायगी तो अन्दर जाने देंगे।'

नेख्लूदोव घूम कर मुलाकातियो की भीड मे आ मिला। फटे पुराने कपडे पहने एक आदमी, नगे पाव, सिर पर मुचडा हुआ टोप रखे, कधो

वे अलग हो कर जेलखाने की ओर जाने लगा। उसका चेहरा लाल लाल रेखाओं से भरा पड़ा था।

"अबे आ! किधर चला?" बन्दूक वाले सन्तरी ने पुकारा।

"अरे तो चिल्ला क्या किया है," फटे हाल आदमी ने जरा भी झेंपे बिना जवाब दिया, और लौट आया। "नहीं जाने देना ता ना सही, इतजार कर लूगा। देखिया तो बडा आया है, जनरल चिल्लान वाला!"

लोग हसने लगे। उन्हे उसकी बात पसन्द आई थी। अधिकाश लोगो के तन पर ढग के कपडे न थे, कुछेक तो बिलकुल फटे पुराने कपडे पहने थे। लेकिन उसी भीड मे कुछेक स्त्रिया पुरुष भले घरो के जान पडते थे। नेख्लूदोव के साथ ही एक हट्टा कट्टा आदमी खडा था। चेहरा सफाचट और लाल-लाल, हाथ मे एक बण्डल उठाये हुए था जिसमे प्रत्यक्षत नीचे पहनने वाले कपडे रखे थे। नेख्लूदोव ने उससे पूछा कि क्या वह पहली बार यहा आया है। वह बोला कि नही, वह हर इतवार यहा आता है। बाते चल पडी। वह किसी बैक मे चौकीदार था। यहा वह अपने भाई से मिलने आया था जिसे जालसाजी के जुर्म मे पकडा गया था। यह आदमी इतने सरल स्वभाव का था कि उसने नेख्लूदोव को अपनी सारी जीवन कहानी कह सुनाई। सुना चुकने पर उसने नेख्लूदोव से उसकी राम-कहानी सुनाने को कहा। लेकिन उसी वक्त एक छोटी बग्घी वहा आ पहुची जिसमे एक विद्यार्थी और एक युवती बैठे थे। युवती के हैट से जाली गिर कर उसके मुह पर पड रही थी। बग्घी के पहियो पर रबड के टायर थे और आगे एक बडा नस्ली घोडा जुता हुआ था। लडके के हाथ मे एक बडा सा बण्डल था। उस बण्डल मे डबलरोटिया थी। नेख्लूदोव से आ कर बोला कि वह इन डबलरोटियो को बँदियो मे बाटना चाहता है। क्या बाटने की इजाजत होगी? यदि इजाजत होगी तो किस भाति बाटना होगा? उसके साथ जो युवती आयी थी, वह उसकी मगेतर थी। उसी की इच्छा से वह यहा आया था। उसके माता पिता ने परामर्श दिया था कि बँदियो को कुछ दान कर आयें।

"मैं खुद आज पहली बार यहा आया हू" नेख्लूदोव ने कहा, "मुझे मालूम नही है। पर तुम उस आदमी से दरयाफ्त करो।" और उसने दायी तरफ बैठे वाडर की ओर इशारा किया जिसकी वर्दी पर सुनहरी पाइपिंग लगी थी, और हाथ म कॉपी पकडे हुए था।

वे बातें कर ही रहे थे कि जेल का लोहे का फाटक खुला, जि
एक खिडकी थी, और एक बावर्दी अफसर बाहर निकल कर आया। उसके
पीछे पीछे एक और वाडर भी बाहर आया। जिस जेलर के हाथ में
थी, उसने पुकार कर कहा कि अब मुलाकाती अन्दर जा सकते हैं। मुलाकाती
हट कर एक तरफ को खडा हो गया, और लोग लपक कर फाटक की
ओर दौडे, मानो उन्हें डर हो कि कहीं देर न हो जाय। मुलाकाती अन्दर
जाने लगे। एक वाडर दरवाजे के पास खडा उन्हें ऊंची ऊंची आवाज में
गिनने लगा—सोलह, सत्तरह, इत्यादि। अन्दर की तरफ एक और वाडर
खडा अगले दरवाजे से अन्दर जाते मुलाकातियों को छू छू कर गिन रहा
था, ताकि जब ये लोग वापस लौट कर आयें, तो इनमें से कोई आदमी
जेल में न रह जाय, और कोई कैदी बाहर न निकल जाय। इस वाडर
ने यह देखे बिना कि कौन गुजर रहा है, नेख्लूदोव की पीठ पर हाथ मारा
और वाडर का यह स्पर्श शुरू में उसे अपना अपमान लगा, लेकिन यह
याद कर के कि किस काम के लिए यहां आया है, उसे अपनी इस नाराजगी
और अपमान की भावना पर लज्जा होने लगी।

दरवाजों में से निकल कर सामने एक बडा, मेहराबदार कमरा था।
इसकी खिडकियां छोटी छोटी थीं और उन पर लोहे के सींखचे लगे थे।
यह मुलाकात का कमरा था। नेख्लूदोव यह देख कर हैरान रह गया कि
कमरे में क्रास से लटके ईसा का एक विशालकाय चित्र था।

"इस तसवीर का यहां क्या काम?" उसके मन में सवाल उठा।
"ईसा का सम्बन्ध तो आजादी से है, न कि कैद से।"

धीरे धीरे वह आगे बढने लगा, उन मुलाकातियों को रास्ता देता हुआ,
जो जल्दी में थे। इस इमारत में वे लोग भी बन्द थे जिन्होंने बुरे काम किए
थे। उनके बारे में सोच कर उसका मन भय से कांप उठता। लेकिन जब
वह निर्दोष लोगों के बारे में सोचता, जैसे कि कात्यूशा, या वह स्त्री
जिसे कल ही सजा दी गई थी, तो उसके मन में अनुकम्पा उठती। ऐसे
लोग भी यहां पर कैद थे। कात्यूशा के साथ होने वाली भेंट के बारे में
सोच कर उसका हृदय द्रवित हो उठा और हल्की हल्की घबराहट का
भास होने लगा। मुलाकाती-कमरे के दूसरे सिरे पर एक जेलर खडा था।
पास से गुजरते हुए मुलाकातियों को वह कुछ कह रहा था। परन्तु नेख्लूदोव
अपने विचारों में खोया हुआ था, उसने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं

ग्या। मुलाकातिया की भीड के पीछे पीछे चलता हुआ औरतो वाले हिस्से
। जाने की बजाय मर्द-कैदियो वाले हिस्से मे जा पहुचा।

वह सबसे पीछे मुलाकाती-कमरे म दाखिल हुआ। जो लोग जल्दी पहुचने
के लिए उद्विग्न थे, वे आगे बढते गये थे। कमरे का दरवाजा खोलते ही
नेख्लूदोव भौचक्का रह गया। अन्दर कोलाहल मचा हुआ था, सौ आदमियो
की चीखें मिल कर एक कानफाड शोर बन गई थी। पहले तो नेख्लूदोव की
समझ मे नही आया कि इस शोर का क्या कारण हो सकता है, लेकिन
जब वह लोगो के और नजदीक पहुचा तो उसने देखा कि सब लोग लोहे
की जाली पर टूटे पडते हैं जैसे मक्खिया चीनी पर टूटती हैं। तब उसकी
समझ मे सब बात आ गई। एक नही, दो जालिया, फर्श से लेकर छत
तक, कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लगी थी, जिनसे कमरे मे दो
अलग अलग विभाग बन गये थे। दोना जालियो के बीच सात फुट का
गलियारा था, जिसमे वाडर आगे-पीछे चल रहे थे। जिस दरवाजे को
लाघ कर वह अन्दर आया था, उसके ऐन सामने वाली दीवार मे खिडकिया
थीं। नजदीक वाली जाली के पीछे मुलाकाती खडे थे, और दूर, उनके
सामने वाली जाली के पीछे, कैदी। दोना के बीच मे जालिया थी, और
७ फुट का गलियारा था, ताकि वे एक दूसरे के हाथ मे कुछ दे नही सकें।
यदि किसी आदमी की नजर कमजोर हो, ता वह गलियारे के पार जाली
के पीछे खडे आदमी को ठीक तरह से पहचान भी नही सकता था। बाते
करना भी बडा कठिन था। जब तक चिल्लाओ नही, दूसरा आदमी कुछ
समझ नही सकता था।

दाना तरफ लोग जालियो के साथ जुड कर खडे थे। इनमे पत्निया थी,
पति थे, पिता और माताए थी, बच्चे थे। सभी एक दूसरे का पहचानने
की कोशिश कर रहे थे, और इस बात का भरसक प्रयत्न कर रहे थे कि
उन्हें जो कहना है वह कह पायें।

हर कोई चाहता था कि उसका सम्बन्धी उसकी बात सुन सके, और
उसके पडोसी भी यही चाहते थे और उनकी आवाजें एक-दूसरे के लिए
बाधा थी। इसलिए हर कोई अपन साथ वाले आदमी से ज्यादा ऊचा
चिल्ला चिल्ला कर बोलने की कोशिश कर रहा था। यही कारण था कि
यहा ऐसा कोलाहल मचा हुआ था जिससे नेख्लूदाव अन्दर आते ही भौचक्का
सा खडा रह गया था। एक दूसरे की आवाज सुनना असभव हा रहा था।

एक दूसरे के चेहरे की ओर ही देख कर ही अनुमान लगाया जा सकता था कि दूसरा आदमी क्या कह रहा है। इसी से उन आपसी सम्बंधों का अनुमान लगाया जा सकता था। नेख्लूदोव के साथ ही एक बूढ़ी औरत जाली के साथ सट कर खड़ी थी। उसने सिर पर रूमाल बांध रखा था और उसकी ठुड्डी कांप रही थी। चिल्ला चिल्ला कर वह सामने, जंगले के दूसरी तरफ खड़े, एक पीले से युवक को कुछ कह रही थी। युवक का आधा सिर मुंडा हुआ था, और वह भौंहें उठाये, बड़े ध्यान से बुढ़िया की बात सुन रहा था। बुढ़िया की बगल में एक युवक खड़ा था जिसने किसानों का कोट पहन रखा था। वह बार बार सिर हिला रहा था और कान पर हाथ रख कर सामने, दूसरी जाली के पीछे खड़े एक वयस्क आदमी की आवाज को बड़े ध्यान से सुन रहा था। आदमी का चेहरा थका-मांदा था और दाढ़ी के बाल सफेद हो चले थे। जान पड़ता था कि वह इस लड़के का बाप है। युवक से आगे फटे-पुराने कपड़ों वाला आदमी खड़ा था। वह बाजू हिला हिला कर चिल्ला रहा था और हंसे जा रहा था। उसके साथ ही एक स्त्री फर्श पर एक बच्चे को गोद में लिये बैठी थी और जार जार रोये जा रही थी। वह कंधों पर एक अच्छी सी शाल ओढ़े हुए थी। दूसरी तरफ एक बूढ़ा आदमी खड़ा था जिसका सिर मुंडा हुआ था। प्रत्यक्षतः पहली बार वह स्त्री इस आदमी की कमीज़ को और बेड़ियों में और मुंडे हुए सिर से देख रही थी। इस स्त्री से आगे एक चौकीदार खड़ा था जिसके साथ, जेल से बाहर, नेख्लूदोव ने बातें की थीं। वह पूरे जोर से चिल्ला चिल्ला कर एक गंजे कैदी से कुछ कह रहा था। कैदी की आंखें चमक रही थीं।

नेख्लूदोव ने समझ लिया कि इन्हीं हालात में उसे भी बात करनी होगी। उसका दिल इस व्यवस्था व प्रबंधकों के विरुद्ध घृणा से भर उठा। यह मानवीय भावनाओं का अपमान था। नेख्लूदोव हैरान था कि इस स्थिति में आकर को पा कर किसी आदमी के मन में भी विद्रोह की भावना क्यों न उठ रही थी। सिपाहियों, इन्स्पेक्टर, मुलाकातियों तथा कैदियों का व्यवहार ऐसा था मानो वे इसे आवश्यक समझते हों।

लगभग पांच मिनट तक नेख्लूदोव इस कमरे में खड़ा रहा। यह देख कर कि वह कितना लाचार है, और उसके विचार और लोगों से कितने

ा कितने भिन्न हैं, उसके मन पर एक अजीब सी उदासी छा गई। जिस तरह जहाज में बैठे आदमी को उबकाई सी आने लगती है नेख्लूदोव को अपनी मानसिक विवशता की पीडा से मतली सी आने लगी।

४२

"पर मैं जिस काम से यहा आया हू करू," अपना हौसला बढाने की कोशिश करते हुए नेख्लूदोव ने मन ही मन कहा। "अब मुझे क्या करना चाहिए?"

उसने इधर-उधर देखा, ताकि कोई जेल का अधिकारी मिले तो उससे पूछ सके। एक पतला, ठिगना सा आदमी, अफसरों की वर्दी पहने, लोगो के पीछे टहल रहा था। नेख्लूदोव उसके पास जा पहुचा।

"हुजूर क्या मुझे बता सकते हैं," अतीव नम्रता दिखाते हुए नेख्लूदोव ने पूछा, "कि स्त्री-कैदियो को कहा रखा जाता है, और उन्हे मिलने के लिए कहा जाना होगा।"

"औरतो के विभाग मे जाना चाहते हैं?"

"जी, मैं वहा एक कैदी औरत से मिलना चाहता हू," उसी खिचे खिचे विनम्र लहजे मे नेख्लूदोव ने कहा।

"आपको चाहिए था कि यह बात हाल कमरे म बताते। किसे मिलना चाहते है?"

"मैं कैदी येकातेरीना मास्लोवा से मिलना चाहता हू।"

"क्या वह सियासी कैदी है?"

"नही, वह तो केवल "

"हू, उसे सजा मिल चुकी है?"

"जी, परसो सजा दी गई थी," नेख्लूदोव ने उसी तरह यतीमो के से लहजे मे कहा। जान पडता था कि इन्स्पेक्टर उसकी मदद कर देगा, इसलिए वह पूरी कोशिश कर रहा था कि उसका मिजाज नही बिगडे।

नेख्लूदोव के रूप रग से अधिकारी ने समझ लिया कि इस व्यक्ति की उपेक्षा नही करनी चाहिए।

"यदि आपको स्त्री-कैदियो के विभाग मे जाना है, तो कृपया, इस तरफ आइये," अफसर ने कहा, और फिर एक मूछो वाले कार्पोरल को

एक दूसरे के चेहरे की ओर ही देख कर ही अनुमान लगाया जा सकता कि दूसरा आदमी क्या कह रहा है। इसी से उन आपसी सम्बन्धो का अनुमान लगाया जा सकता था। नेख्लूदोव के साथ ही एक बुढ़िया जाली के साथ सट कर खडी थी। उसने सिर पर रूमाल बांध रखा और उसकी ठुड्डी काप रही थी। चिल्ला चिल्ला कर वह सामने, के दूसरी तरफ खडे, एक पीले से युवक को कुछ कह रही थी। युवक आधा सिर मुडा हुआ था, और वह भौंहें उठाये, बडे ध्यान से बुढ़िया की बात सुन रहा था। बुढिया की बगल मे एक युवक खडा था जिसने किसानो का कोट पहन रखा था। वह बार बार सिर हिला रहा था और पर हाथ रख कर सामने, दूसरी जाली के पीछे खडे एक वयस्क आदमी की आवाज को बडे ध्यान से सुन रहा था। आदमी का चेहरा थका था और दाढी के बाल सफेद हो चले थे। जान पडता था कि वह लडके का बाप है। युवक से आगे फटे पुराने कपडा वाला आदमी था। वह बाजू हिला हिला कर चिल्ला रहा था और हस जा रहा था। उसके साथ ही एक स्त्री फर्श पर एक बच्चे को गोद म लिये बैठी और जार जार रोये जा रही थी। वह कधो पर एक अच्छी सी शाल ओढे हुए थी। दूसरी तरफ एक बूढा आदमी खडा था जिसका सिर मुडा हुआ था। प्रत्यक्षत पहली बार वह स्त्री इस आदमी को कैदियो की पोशाक और बेडियो मे और मुडे हुए सिर से देख रही थी। इस स्त्री के पास चौकीदार खडा था जिसके साथ, जेल से बाहर, नेख्लूदोव न बातें की थी। वह पूरे जोर से चिल्ला चिल्ला कर एक गजे कैदी से कुछ कह रहा था। कैदी की आखें चमक रही थी।

नेख्लूदोव ने समझ लिया कि इन्ही हालात मे उसे भी बातें करनी होंगी। उसका दिल इस व्यवस्था के प्रबन्धको के विरुद्ध घृणा से भर उठा। यह मानवीय भावनाओ का अपमान था। नेख्लूदोव हैरान था कि इस स्थिति मे धपने को पा कर किसी आदमी के मन म भी विद्रोह की भावना नहीं उठ रही थी। सिपाहियो, इन्स्पेक्टर, मुलाकातियो तथा कैदियो का व्यवहार ऐसा था मानो वे इसे आवश्यक समझते हो।

लगभग पाच मिनट तक नेख्लूदोव इस कमरे म खडा रहा। वह सोच कर कि वह कितना लाचार है, और उसके विचार और लोगो के विचारो

सिपाही भिन्न हैं, उसके मन पर एक अजीब सी उदासी छा गई। जिस तरह उसके मन में बैठे आदमी की उपस्थिति सी हो जाती है, नेख्लूदोव की अपनी मानसिक स्थिति की पीड़ा से जाती भी जा रही थी।

८२

"यह मैं जिस काम से यहाँ आया हूँ यह," अपना हैसियत बयान की कोशिश करते हुए नेख्लूदोव ने मन ही मन कहा। "अब मुझे क्या करना चाहिए?"

उसने इधर-उधर देखा, ताकि किसी जेल के अधिकारी मिल तो उससे पूछ ले। एक पतला, ठिगना सा आदमी, अफसरों की वर्दी पहने, लोगों के पीछे टहल रहा था। नेख्लूदोव उसके पास जा पहुँचा।

"हुजूर क्या मुझे बता सकते हैं," अत्यंत नम्रता दिखाते हुए नेख्लूदोव ने पूछा, "कि स्त्री-बंदियों को कहाँ रखा जाता है, और उनसे मिलने के लिए कहाँ जाना होगा।"

"औरतों के विभाग में जाना चाहते हैं?"

"जी, मैं यहाँ एक कैदी औरत से मिलना चाहता हूँ," उसी विनम्र सहजे में नेख्लूदोव ने कहा।

"आपको चाहिए था कि यह बात हॉल-अफसर से बताते। किससे मिलना चाहते हैं?"

"मैं कैदी यकातेरीना मास्लोवा से मिलना चाहता हूँ।'

"क्या वह सियासी कैदी है?"

"नहीं, वह तो केवल "

"हूँ, उसे सजा मिल चुकी है?"

"जी, परसों सजा दी गई थी," नेख्लूदोव ने उसी तरह यतीमा के से सहजे में कहा। जान पड़ता था कि इंस्पेक्टर उसकी मदद कर देगा, इसलिए वह पूरी कोशिश कर रहा था कि उसका मिजाज नहीं बिगड़े।

नेख्लूदोव के रूप रंग से अधिकारी ने समझ लिया कि इस व्यक्ति की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

"यदि आपको स्त्री-बंदियों के विभाग में जाना है, तो कृपया, इस तरफ आइए," अफसर ने कहा, और फिर एक मूंछ वाले कार्पोरल की

ग्रोर घूम कर, जिसकी छाती पर तमगे लटक रहे थे, बोला, "सादोरा साहब को स्त्री विभाग में ले जाग्रो।"

"जनाब।"

ऐन इसी वक्त किसी के जार जार रोने की ग्रावाज नेख्लूदोव के कान मे पडी। जाली के नजदीक कोई व्यक्ति बिलख बिलख कर रो रहा था।

यहा की हर चीज नेख्लूदोव को ग्रजीब सी लगी। परन्तु जो बात सबसे विचित्र लगी वह यह थी कि उसे जेल के इन्स्पेक्टर तथा प्रधान वाडरों का शुक्रिया ग्रदा करना पड रहा था ग्रौर ग्रपने ग्रापको कृतज्ञ मानना पड रहा था—उन लोगो के प्रति जो इस इमारत में ... तरह तरह के जुल्म ढा रहे थे।

कमरे से बाहर निकल कर, कार्पोरल नेख्लूदोव को एक लम्बे बरामदे मे ले गया। उसके दूसरे सिरे पर एक दरवाजा था जो ग्रौरतो के मुलाकाती कमरे मे खुलता था।

यह कमरा मर्दों के कमरे से छोटा था। इसमे भी जालिया की पाते लगी थी। यहा पर कैदी भी कम थे ग्रौर मिलने वालो की सख्या भी... थी। पर शोर-गुल उतना ही था जितना कि मर्दों के कमरे म। यहा पर जालियो के बीच की जगह म ग्रधिकारी टहल रहा था, फर्क केवल इतना था कि यहा पर ग्रधिकारी एक महिला थी। इस वाडर-स्त्री ने वर्दी जॉकेट पहन रखी थी जिसके किनारो पर नीले रग की मगजी ग्रौर ग्रास्तीन पर सुनहरी डोरी लगी थी ग्रौर कमर मे नीले रग की पेटी लगा रखी थी। मर्दों के कमरे की तरह यहा पर भी दोनो तरफ लोग जालिया से सट कर खडे थे। जहा नेख्लूदोव खडा था उसके नजदीक शहर से ग्राये लोग थे ग्रौर तरह तरह के कपडे पहने हुए थे। दूसरी तरफ कैदी ग्रौरतें जिनमे से कुछेक ने कैदियो की सफेद पोशाक पहन रखी थी, ग्रौर बाकियो ने ग्रपने रगदार कपडे पहन रखे थे। कमरे के एक सिरे स ले कर दूसरे सिरे तक लोग जाली के साथ जुड कर खडे थे। कुछ लोग, पजो के बल उठ उठ कर, लोगो के सिरो के ऊपर से बोल रहे थे ताकि उनकी ग्रावाज सुनाई दे सके। कुछ लोग फर्श पर बैठे बाते कर रहे थे।

एक पतली सी जिप्सी ग्रौरत, बाल ग्रौर कपडे ग्रस्त-व्यस्त, चीख चीख कर बाते कर रही थी। जिस ढग से वह चिल्ला चिल्ला कर बात कर रही थी, उसे देख कर, ग्रौर उसके रूप रग को देख कर, वह ग्रौ...

भी कैंदियो मे विलक्षण लग रही थी। जिम हिस्से मे कैंदी औरते खडी थी, उनके ऐन बीचोबीच वह एक खम्भे के पास खडी, हाथ हिला हिला कर चिल्लाये जा रही थी। उसके सिर पर से रूमाल फिसल गया था और घुंघराले बाल नजर आने लगे थे। वह इस ओर खडे एक जिप्सी आदमी से बातें कर रही थी जिसने नीले रग का कोट पहन रखा था और उसके ऊपर कमर के नीचे कस कर पेटी बाध रखी थी। इस जिप्सी आदमी की बगल मे एक फौजी फर्श पर बैठा किसी कैंदी औरत से बाते कर रहा था। फौजी के आगे, जाली के साथ सट कर एक किसान युवक खडा था। उसके मुह पर हल्के सुनहरी रग की दाढी थी और चेहरा लाल हो रहा था। वह अपने आसू रोकने की भरसक चेष्टा कर रहा था। उसके साथ एक खूबसूरत सी कैंदी-लडकी बाते कर रही थी। लडकी की नीली नीली आखो मे चमक थी, और सिर पर सुनहरी रग के बाल थे। ये फेदोस्या और उसका पति थे। उनके आगे एक आवारा आदमी एक चौडे मुह वाली औरत से बाते कर रहा था। उसके आगे दो औरते थी, फिर एक आदमी, फिर एक औरत, हरेक के सामने एक कैंदी औरत खडी थी। मास्लोवा इनमे नही थी। परन्तु कैंदियो के पीछे कोई और खडा था, और नेख्लूदोव का दिल कह रहा था कि वही मास्लोवा है। उसका दिल धक धक करने लगा और सास फूलने लगी। निर्णायक क्षण आ रहा था। वह जाली के पास गया और मास्लोवा को पहचान लिया। वह नीली आखो वाली फेदोस्या के पीछे खडी, उसकी बाते सुन सुन कर मुस्करा रही थी। इस समय वह कैंदियो के लबादे मे नही थी, बल्कि एक सफेद पोशाक पहने थी, जिसे उसने कमर पर पेटी से कस रखा था और जो छातियो पर ऊची उभरी हुई थी। रूमाल के नीचे से काले काले कुण्डल उसी तरह नजर आ रहे थे जिस तरह कचहरी मे नजर आ रहे थे।

"बस, क्षण भर मे निर्णय हो जायेगा," नेख्लूदोव ने सोचा, "इसे कैसे बुलाऊ? क्या वह खुद इधर आ जायेगी?"

लेकिन वह उधर नही आयी। उसे क्लारा का इन्तजार था और यह ख्याल भी नही था कि यह आदमी उसे मिलने आया है।

"आप किससे मिलना चाहते हैं?" स्त्री-वार्डर ने, जो जालियो के बीच घूम रही थी, नेख्लूदोव के पास आकर पूछा।

"येकातेरीना मास्लोवा से " नेख्लूदोव के मुह से ये शब्द कठिनाई से निकले।

"मास्लोवा! तुम्हे कोई मिलने आया है!" वार्डर ने चिल्ला कर कहा।

४३

मास्लोवा ने घूम कर देखा, फिर सिर झटक कर, और छाती फुला कर, जाली के पास आ गई। उसके चेहरे पर वही तत्परता का भाव था, जिससे नेख्लूदोव भली भांति परिचित था। दो कैदियों के बीच जगह बनाते हुए वह खडी हो गई और विस्मित, प्रश्नसूचक नज़रों से नेख्लूदोव की ओर एकटक देखने लगी।

नेख्लूदोव के कपडे देख कर उसने समझ लिया कि यह कोई अमीर आदमी है, और मुस्कराने लगी।

"आप मुझसे मिलना चाहते हैं?" उसने मुस्कराते हुए पूछा और अपना चेहरा जाली के और नजदीक ले आई। उसकी आखो में वही हल्का सा ऐंचापन था।

"मैं मैं मिलना चाहता था " नेख्लूदोव निश्चय नही कर पा रहा था कि 'आप' कहे या "तुम" और अत में उसने "आप" ही कहा। वह साधारणतया जैसे बोलता था, अब भी उससे ऊचा नही बोल रहा था। "मैं आपसे मिलना चाहता था मैं "

"झूठ नही बोल," खडा आवारा आदमी चिल्ला रहा था। "तूने उठाया था या नही?"

"बहुत कमज़ोर हो गई है, मर रही है!" दूसरी तरफ से कोई और चिल्ला रहा था।

मास्लोवा को नेख्लूदोव की आवाज़ सुनाई नही दी। परन्तु जब वह बोल रहा था, तो उसके चेहरे के भाव को देख कर उसे उसकी याद हो आयी। किंतु वह अपनी आखो पर विश्वास नही कर पा रही थी। फिर भी उसके चेहरे पर से मुस्कराहट ग़ायब हो गई और माथे पर गहरी यन्त्रणा की रेखाए खिच गइ।

"क्या कह रहे हैं, कुछ सुनाई नही देता," आखें सिकोडते हुए तथा पर और भी अधिक बल डालते हुए उसने कहा।

"मैं इसलिए आया हू कि "

"ठीक है, मैं अपना कर्तव्य निभा रहा हू—अपना अपराध स्वीकार कर हू," नेख्लूदोव ने सोचा, और यह सोचते ही उसकी आखो मे आसू गये, और गला भर आया। दोनो हाथो से उसने जाली को पकड ा और भरसक चेष्टा करते हुए कि कही फूट फूट कर रोने न लग ', चुप हो गया।

"जहा तेरा कोई काम नही क्या वहा अपनी टाग अडाई?" एक और कोई चिल्ला रहा था।

"भगवान् जानता है, मुझे कुछ भी मालूम नही है," एक कैदी ा कर दूसरी ओर से कह रही थी।

मास्लोवा ने नेख्लूदोव की उद्विग्नता देखी और उसे पहचान लिया।

"शक्ल तो वैसी ही है, पर नही, वह नही"

नेख्लूदोव की ओर देखे बिना वह चिल्लाई। उसका लाल चेहरा और अधिक उदास हो उठा।

"मैं तुमसे माफी मागने आया हू," नेख्लूदोव ने ऊची लेकिन नीरस ाज मे कहा, मानो रटा हुआ पाठ दोहरा रहा हो।

ये शब्द कहते ही उसे झेंप होने लगी। उसने अपने आस पास देखा। (सहसा उसके मन मे यह विचार उठा कि यदि मैं लज्जित महसूस रहा हू तो यह और भी अच्छा है, मुझे यह लज्जा सहन करनी होगी। (वह फिर ऊची आवाज मे बोला—

"मुझे क्षमा कर दो। मैंने तुम्हारे साथ बडा जुल्म किया है " ने इतना ही कहा।

मास्लोवा निश्चेष्ट खडी थी, और अपनी ऐंच वाली आखा से एकटक की ओर देखे जा रही थी।

उसके लिए बोलना कठिन हो रहा था। वह जाली के पास से हट ा और अपनी सिसकिया दबाने की भरसक चेष्टा करने लगा जो उसके को रुधे जा रही थी।

जिस इन्स्पेक्टर ने नेख्लूदोव को स्त्रियो के विभाग की ओर भेजा था, टहलता हुआ वहा आ पहुचा। नेख्लूदोव के बारे मे उसे कुतूहल हो रहा

था। जब उसने देखा कि नेख्लूदोव जाली के पास नहीं खड़ा है तो उसके पास आ गया और पूछने लगा कि क्या वह उस औरत के साथ बातें नहीं कर रहा है जिसे वह मिलने आया था। नेख्लूदोव ने नाक साफ किया, और अपने को सँभालने की कोशिश करते हुए कहा—

"इन जालियों में से बात करना बेहद मुश्किल है। कुछ भी तो सुनाई नहीं देता।"

इन्स्पेक्टर ने क्षण भर के लिए सोचा, और फिर बोला—

"तो कुछ देर के लिए उसे बाहर भी लाया जा सकता है   मारीया कार्लोव्ना   " वार्डर की ओर मुखातिब होते हुए उसने कहा, "मास्लोवा को बाहर ले आओ।"

मिनट भर बाद मास्लोवा बगल वाले दरवाजे में से बाहर आ गई। हल्के हल्के कदम रखती हुई वह सीधी नेख्लूदोव के बिलकुल पास आ कर खड़ी हो गई और आँख उठा कर भौंहों के नीचे से उसकी ओर देखा। आज भी उसके माथे पर उसी तरह काले बालों के कुण्डल बने हुए थे जैसे कि दो दिन पहले उसने देखे थे। उसका चेहरा अस्वस्थ और फूला हुआ था, लेकिन फिर भी शान्त और आकर्षक था। केवल उसकी काली आँखें सूजी हुई पलकों के नीचे से अजीब ढंग से चमक रही थीं।

"आप यहाँ बात कर सकते हैं," इन्स्पेक्टर ने कहा और एक तरफ हट गया।

दीवार के साथ एक बेंच रखा था। नेख्लूदोव उसकी ओर जाने लगा।

मास्लोवा ने प्रश्नसूचक नेत्रों से इन्स्पेक्टर की ओर देखा, फिर विस्मय से कन्धे बिचका कर, नेख्लूदोव के पीछे पीछे जाने लगी और अपनी स्कर्ट ठीक कर के बेंच पर बैठ गई।

"मैं जानता हूँ कि तुम्हारे लिए क्षमा करना आसान नहीं है," उसने फिर कहना शुरू किया, लेकिन आगे नहीं कह सका। उसका गला रुँध रहा था। "मैं अपने पिछले किये को मिटा तो नहीं सकता, लेकिन अब मैं यथाशक्ति जो भी कर सकता हूँ करूँगा। मुझे बताओ   "

"आपको मेरा पता कैसे मालूम हुआ?" मास्लोवा ने उसके सवाल का जवाब दिये बिना पूछा। उसकी ऐंची आँखें न तो नेख्लूदोव के चेहरे की ओर सीधा देख रही थीं न ही उस पर से हट रही थीं।

"हे भगवान्, मेरी सहायता करो, मुझे सुझाओ मैं क्या करूँ," मास्लोवा

के चेहरे की ओर देखते हुए नेख्लूदोव मन ही मन कह रहा था। मास्लोवा का चेहरा अब बहुत कुछ बदल गया था। उसमे पहले सी कोमलता नही थी।

"परसो मैं अदालत मे था। जूरी मे बैठा था," वह बोला, "क्या तुमने मुझे वहा नही पहचाना?"

"नही, मैं नही पहचान पाई। पहचानने का वक्त ही कहा था। मैंने तो उस तरफ देखा भी नही," उसने कहा।

"तुम्हारे बच्चा हो गया था न?" उसने पूछा और उसका चेहरा शर्म से लाल होने लगा।

"शुक्र है भगवान् का, पैदा होते ही मर गया," उसके चेहरे पर से नजर हटाते हुए उसने कटुता से दो टूक उत्तर दिया।

"कैसे? क्या हुआ था?"

"मैं खुद मरते मरते बची। बहुत बीमार हो गयी थी," बिना नजर उठाये उसने कहा।

"पर फूफियो ने तुम्हे जाने कैसे दिया?"

"बच्चे के साथ नौकरानी को कौन रखता है? ज्यो ही उन्हे पता चला फौरन् जवाब दे दिया। लेकिन इन बातो का जिक्र करने का क्या लाभ? मुझे कुछ भी याद नही, सब भूल गयी हू। वे सब बाते खत्म हो चुकी हैं।"

"नही, खत्म नही हुई हैं। मैं अपने पाप का देर से सही प्रायश्चित करना चाहता हू।"

"प्रायश्चित करने की कौन सी बात है। जो होना था हो गया, अब यह बीते दिनो की बात है," मास्लोवा ने कहा, और नख्लूदोव की ओर लुभावनी, दयनीय आखो से देखा जिसकी नेख्लूदोव को तनिक भी आशा नही थी। उसे उसका यो देखना अप्रिय लगा।

मास्लोवा को ख्याल न थी कि वह फिर कभी नेख्लूदोव से मिल पायेगी। कम से कम यहा पर और इस समय मिलने की तो उसे तनिक भी आशा न थी। इसलिए नेख्लूदोव को पहचानने पर अनायास ही वे स्मृतिया जाग उठी जिन्हें वह कभी भी याद करना नही चाहती थी। क्षण भर के लिए उसकी आखो के सामने भावनाओ और विचारो के उस नवीन और अद्वितीय ससार का धूमिल दृश्य घूम गया, जिसके द्वार एक

सुदर युवक ने एक दिन उसके आगे खोल दिये थे। वह युवक उससे प्यार करता था, और वह स्वय उससे प्यार करती थी। इसके बाद उसे उस युवक की बबरता याद हो आई, अगम्य बबरता! फिर एक के बाद एक उसे वे सब अपमान, तिरस्कार और यत्रणाए याद आने लगी जो उसे भोगनी पडी थी। उस अपूव आनन्द की घडियो के बाद इनका ताता लग गया था, और इनका उद्गम भी उसी अपूव आनन्द से हुआ था। उसका हृदय व्यथित हो उठा। लेकिन वह अपनी वेदनाओ का कारण समझने म असमथ थी, अत इस समय भी उसने वही कुछ किया जिसकी उसे आदत हो गई थी इन कटु स्मृतियो को उसने मन मे से निकाल दिया और उन्ह अपने भ्रष्ट जीवन के धुधलेपन मे डुबो देने का प्रयत्न करने लगी। शुरू शुरू मे तो उसने इस आदमी का सम्बध उस युवक से जोडा जिससे वह प्रेम करती थी। पर यह देख कर कि इससे उसके दिल मे दद उठता है, उसने अपने मन म यह सबध जोडना छोड दिया। अब यह आदमी, जो बन सवर कर उसके सामने बैठा था, जिसकी दाढी पर इत्र छिडका हुआ था, वह नेख्लूदोव नही था जिससे वह प्रेम करती थी। यह आदमी भी अब उन अनगिनत आदमियो मे से एक था, जो जरूरत के वक्त उस जसी स्त्रियो का इस्तेमाल करते है और उस जसी स्त्रिया भी अपने लाभ के लिए इन आदमियो का इस्तेमाल करती हैं। यही कारण था कि मास्लोवा ने उसकी ओर लुभावने ढग से मुस्कराते हुए देखा था। वह चुपचाप बैठी सोच रही थी कि किस भाति इसका अधिक से अधिक लाभ उठाया जाय।

"वह सब बीत चुका है," वह बोली, "अब तो मुझे कडी मशक्कत की सजा भुगतनी होगी।"

और ये भयानक शब्द कहते हुए उसके होठ कापने लगे।

"मुझे मालूम था मुझे पक्का विश्वास था कि तुमने कोई जुम नही किया," नेख्लूदोव ने कहा।

"हा, सो तो है ही। मैं भला कोई चोर हू या डाकू हू। यहा औरत कहती हैं बात सारी वकील की है,' वह कहने लगी, "कहती है, दरख्वास्त करनी चाहिए, पर सुना है पैसे बहुत लगते है "

"जरूर करनी चाहिए " नेख्लूदाव ने कहा, "मैंने पहले ही एक वकील से बात कर ली है।"

"पैसे का ख्याल नही करना चाहिए। वकील अच्छा होना चाहिए," मास्लोवा बोली।

"जो भी मैं कर सका करूगा।"

दोनो चुप हो गये।

मास्लोवा फिर लुभावने ढग से मुस्कराई।

"और मैं कहना चाहती थी   अगर आप   कुछ पैसे मुझे दे सके बहुत नही   सिफ दस रूबल," उसने एकाएक कहा।

"हा, हा," नेख्लूदोव ने कहा। और वह झेंप कर अपना बटुआ निकालने लगा।

मास्लोवा की नज़र झट इन्स्पेक्टर की ओर गई जो कमरे म आगे-पीछे टहल रहा था।

"इसके सामने नही देना, वह ले लेगा।"

ज्यो ही इन्स्पेक्टर की पीठ हुई, नेख्लूदोव न झट से बटुआ निकाल कर उसमे से दस रूबल का नोट निकाल लिया। लेकिन वह मास्लोवा को दे नही पाया, क्योकि उसी वक्त इन्स्पेक्टर घूम कर उनकी ओर आने लगा था। नेख्लूदोव ने नोट को मरोड कर मुट्ठी म बन्द कर लिया।

"यह स्त्री तो मर चुकी है," नख्लूदोव ने सोचा। यही चेहरा जो किसी ज़माने मे इतना प्यारा हुआ करता था, अब भ्रष्ट और सूजा हुआ था। काली काली ऐंची आखो मे धृष्टता की चमक थी, जो इस समय कभी नेख्लूदोव की मुट्ठी की ओर देख रही थी, जिस मे नोट बन्द था, कभी इन्स्पेक्टर की ओर। क्षण भर के लिए नेख्लूदोव द्विविधा म पड गया।

गत रात उसकी दुरात्मा उसे तरह तरह के मशविरे देती रही थी। अब फिर उसकी आवाज़ आने लगी। दुरात्मा उसका मन कतव्य पर से हटा कर उसके परिणामो की ओर ले जाने की चेष्टा करने लगी, उसे समझाने लगी कि व्यावहारिक दृष्टि से क्या करना चाहिए।

"अब इस स्त्री का तुम कुछ नही बना सकते," दुरात्मा की आवाज़ आयी, "तुम केवल पावो मे बेडिया डाल लोगे, जो तुम्हे ले डूबेंगी और तुम दूसरे लोगो के लिए कुछ भी नही कर पाओगे। क्या यह बेहतर नही कि तुम्हारे बटुए म इस वक्त जितने भी पैसे है, इसके हवाले करो, इसे खैर-बाद कहो और इससे सदा के लिए पल्ला छुडाओ?' दुरात्मा ने फुसफुसा कर कहा। लेकिन उसे महसूस हुआ जैसे ऐन उसी वक्त उसकी आत्मा

मे एक महत्वपूण घटना घटने लगी है। उसका आतरिक जीवन डगमगाने लगा है। तनिक सी भी कुचेष्टा उसे डुबो देगी, और सुचेष्टा उसे उवार लेगी। उसने भगवान् से सहायता की प्राथना की, उस भगवान से जिसकी उपस्थिति उसने दो दिन पहले अपनी आत्मा मे महसूस की थी। भगवान ने उसकी प्राथना सुनी। और नेख्लूदोव ने फौरन, उसी वक्त, मास्लोवा को सब कुछ कह डालने का निश्चय किया।

"कात्यूशा, मैं तो तुमसे क्षमा मागने आया हू, और तुमने मुझे कोई उत्तर नही दिया। क्या तुमने मुझे क्षमा कर दिया है? क्या तुम कभी भी मुझे क्षमा कर पाओगी?" उसने पूछा।

मास्लोवा ने उसकी बात नही सुनी। उसकी आखें उसकी मुट्ठी पर और इस्पेक्टर पर लगी हुई थी। ज्यो ही इस्पेक्टर ने पीठ मोडी, उसने हाथ फैला दिया, झपट कर नोट हाथ मे लिया और उसे अपनी पेटी मे छिपा लिया।

"कैसी अजीव बाते कर रहे है आप," मास्लोवा ने मुस्करा कर कहा। नेख्लूदोव को लगा जैसे उसकी मुस्कान मे तिरस्कार की भावना छिपी हुई है।

नेख्लूदोव को ऐसा महसूस हुआ जसे मास्लोवा की आत्मा म कोई ऐसी चीज है जो उसका विरोध कर रही है, जो मास्लोवा की वतमान स्थिति का समयन करती है, और उसे उसके दिल तक पहुचने स रोक रही है।

परन्तु यह अजीव बात है कि इससे उसके दिल म घणा नही उठी। बल्कि कोई नई विचित्र शक्ति उसे मास्लोवा के और भी निकट ले जाने लगी। वह जानता था कि उसे मास्लोवा की आत्मा को जगाना है। यह काम मुश्किल होगा। लेकिन इस काम की कठिनाई ही उसे बढावा दे रही थी। मास्लोवा के प्रति उसके हृदय मे ऐसी भावनाए उठ रही थी जैसी कि पहले उसके प्रति, या किसी भी अन्य व्यक्ति के प्रति नही उठी थी। इन भावनाओ मे स्वाथ का लेशमात्र भी नही था। वह उससे अपने लिए कुछ भी नही चाहता था। उसकी केवल यही इच्छा थी कि मास्लोवा वह न रहे जो इस समय थी, वल्कि फिर स जाग उठे और वैसी ही बन जाय जैसी वह पहले हुआ करती थी।

"ऐसा क्या कहती हो कात्यूशा? मैं तुम्हे जानता हू। मुझे पानोवो के वे दिन याद हैं, तुम याद हो।"

"बीती बातो को याद करने का क्या लाभ?" उसने रूखी आवाज़ मे कहा।

"मैं उन्हे इसलिए याद कर रहा हू कि मैं अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहता हू, कात्यूशा," नेख्लूदोव ने कहा और उससे कहने जा ही रहा था कि मैं तुम्हारे साथ विवाह करूगा। जब मास्लोवा की आखो के साथ उसकी आखें मिली तो उनमे उसे ऐसी भयानक, अशिष्ट, और घृणित भावना नज़र आयी कि उसका मुह बन्द हो गया।

ऐन इसी वक्त मुलाकाती जाने लगे। इन्स्पेक्टर ने नेख्लूदोव के पास आ कर कहा कि मुलाक़ात का वक्त खत्म हो चुका है। मास्लोवा सहमी हुई सी उठ खडी हुई, और इन्तज़ार करने लगी कि कब उसे वहा से चले जाने को कहा जायेगा।

"खुदा-हाफिज़, मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है, मगर, तुम देख रही हो, इस वक्त कहना मुमकिन नही," नेख्लूदोव ने कहा और अपना हाथ आगे बढाया। "मैं फिर आऊगा।"

"मैं तो सोचती हू तुमने जो कहना था वह कह लिया है।"

मास्लोवा ने हाथ मिलाया लेकिन नेख्लूदोव के हाथ को दबाया नही।

"नही, मैं फिर तुम्हे मिलने की कोशिश करूगा, और किसी ऐसी जगह जहा हम बाते कर सके। तब मैं तुम्हे अपने दिल की बात बताऊगा—वह बहुत ज़रूरी है।"

"अच्छी बात है, तो आओ," उसने जवाब मे कहा, और उसी तरह मुस्कराई जिस तरह वह उन आदमियो के सामने मुस्कराया करती थी जिन्हे वह खुश करना चाहती थी।

"तुम मुझे मेरी बहिन से भी ज्यादा अज़ीज़ हो," नख्लूदोव ने कहा।

"अजीब बात है," उसने फिर कहा, और सिर झटक कर जाली के पीछे चली गई।

४४

इस भेंट से पहले नेख्लूदोव का ख्याल था कि जब कात्यूशा को पता चलेगा कि उसके मन मे कितना अनुताप है, जब वह जान जायेगी कि वह उसकी सेवा करना चाहता है तो वह बेहद खुश होगी, उसका हृदय द्रवित

हो उठेगा, और वह फिर पहले भी कात्यूशा हो जायेगी। पर जब उसने देखा कि कात्यूशा का तो वहा लेशमात्र भी नही रहा है, कि उसके स्थान पर अब मास्लोवा है, तो वह बेहद हैरान और भयभीत हो उठा।

उसे सबसे ज्यादा हैरानी यह देख कर हुई कि कात्यूशा तनिक भी लज्जा का अनुभव नही करती—इस बात पर नही कि वह एक कैदी है (इस पर तो वह जरूर लज्जित महसूस करती थी), लेकिन इस बात पर कि वह वेश्या है। इसके विपरीत, ऐसा जान पडता था जैसे वह अपनी स्थिति से सतुष्ट हो, उसे उस पर गर्व हो। परन्तु देखा जाय तो इसके अतिरिक्त कुछ हो भी नही सकता था। हर आदमी को अपना धधा उत्कृष्ट और महत्वपूर्ण समझना पडता है। यदि वह ऐसा न समझे तो उसके लिए काम करना मुश्किल हो जाता है। इसलिए, किसी स्थिति मे भी इसान हो, वह मानव जीवन के प्रति एक ऐसा दृष्टिकोण बना लेता है जिसमे उसका अपना व्यवसाय उसे उत्कृष्ट और महत्वपूर्ण नजर आने लगता है।

अक्सर यह समझा जाता है कि चोर चकार, हत्यारे, जासूस, वेश्याए आदि यह मान कर कि उनका धधा बडा अधम है, लज्जित महसूस करते होगे। लेकिन सचाई इसके बिलकुल उलट है। ऐसे लोग जिन्हे भाग्य ने या उनके कुकर्मो ने एक विशेष स्थिति मे ला पटका है, जीवन का एक ऐसा दृष्टिकोण बना लेते है जिसमे उन्हे अपनी स्थिति अच्छी और स्वीकार्य जान पडती है। भले ही वह स्थिति कितनी ही बुरी क्यो न हो। और इस दृष्टिकोण को बनाये रखने के लिए वे उन्ही लोगो के साथ उठते बैठते हैं जिनका उन जैसा ही दृष्टिकोण और उन जैसी ही स्थिति हो। जब चोर अपनी चालाकी की डीग मारते है, वेश्याए अपने पतन की शेखी बघारती हैं, और हत्यारे अपनी क्रूरता पर ऐंठते हैं, तो हम हैरान रह जाते है। कारण ये लोग सीमित दायरे तथा वातावरण मे रहते हैं। परन्तु हमारे आश्चर्य का मुख्य कारण यह होता है कि हम स्वय इनके दायरे से बाहर होते है। लेकिन जब धनी लोग अपने धन की डीग मारते है—जो और कुछ नही लूट-खसोट ही है, और फौजी जनरल अपने कारनामो की—जो निरी हत्या ही है, और उच्च पदाधिकारी अपनी शक्ति की—जो मात्र हिसा ही है, तो यह सब क्या वही कुछ नही है? यदि उनका दृष्टिकोण हमे विकृत नही लगता तो इसलिए कि उनका दायरा बडा होता है, और हम खुद उसी मे रहते हैं।

इसी तरह मास्लोवा ने भी जीवन तथा अपनी स्थिति के प्रति अपना दृष्टिकोण स्थिर कर रखा था। वह थी तो एक वेश्या जिसे कड़ी मशक्कत की सजा दी गई थी, परन्तु अपनी जीवन धारणा के कारण अपने आपसे सन्तुष्ट थी, यहां तक कि अपनी स्थिति पर उसे गर्व भी था।

इस धारणा के अनुसार वह समझती थी कि पुरुषों—भले ही वे बूढ़े हों या जवान, स्कूलों के छात्र हों या जनरल, शिक्षित हों या अशिक्षित—सभी पुरुषों की सिद्धि इसी में है कि वे सुन्दर स्त्रियों के साथ इंद्रिय भोग करें। सभी पुरुषों के अन्ततम में यही इच्छा होती है, भले ही बाहर से वे अन्य कामों में व्यस्त होने का बहाना करते हों। वह जानती थी कि वह एक सुंदर स्त्री है, कि यह उसकी सामर्थ्य में है कि किसी की इच्छा को सन्तुष्ट करे या न करे। इसलिए वह अपने को आवश्यक और महत्वपूर्ण व्यक्ति समझती थी। उसका समूचा पिछला तथा वर्तमान जीवन इस धारणा को सिद्ध करता था।

पिछले दस सालों से वह देखती आयी थी कि जिस किसी स्थिति में भी वह रही, सभी आदमियों को उसकी जरूरत रहती थी—नेख्लूदोव तथा बूढ़े पुलिस अफसर से ले कर जेलखाने के जेलरों तक। कारण, जिन लोगों को उसकी जरूरत नहीं थी, उन्हें न ही कभी उसने देखा था और न ही उनकी परवाह की थी। इसलिए उसे संसार में सभी लोग इंद्रिय-भोग के लिए बेचैन नजर आते थे जो हर तरीके से—कपट, हिंसा, धन तथा धूर्तता से—उसे अपने वश में करने की कोशिश कर रहे हों।

यह थी मास्लोवा की जीवन के बारे में धारणा। और इस दृष्टिकोण के अनुसार वह अपनी नजरों में एक अधमतम व्यक्ति नहीं थी बल्कि एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थी। और यह दृष्टिकोण मास्लोवा के लिए बहुमूल्य था। यदि वह इस दृष्टिकोण को खो देती तो वह अपना महत्व खो बैठती। इसलिए इसे मूल्यवान समझना उसके लिए अनिवार्य था। जीवन में अपना महत्व बनाये रखने के लिए वह स्वभावतः ऐसे लोगों के साथ रहती थी जिनका जीवन के प्रति उस जैसा ही दृष्टिकोण था। जब उसने देखा कि नेख्लूदोव उसे इस दायरे में से बाहर, किसी दूसरी दुनिया में ले जाना चाहता है, तो उसने इसका विरोध किया। वह जानती थी कि ऐसा करने से वह जीवन में अपना स्थान खो बैठेगी, जिससे उसको स्थिरता और आत्मसम्मान मिलता था। इसी कारण उसने अपने मन में से अपनी

किशोरावस्था तथा नेख्लूदोव से अपने प्रथम सम्बन्धों की स्मृतियो को निकाल दिया था। ससार के प्रति उसकी वतमान धारणा के साथ ये स्मतिया मेल नही खाती थी। इसी लिए उनके लिए मन मे जगह न थी। या यह कहना चाहिए कि ये स्मतिया वही दवा दी गई थी। उन्हे कभी छुआ नही गया था। ऐसा जान पडता जैसे उन्हे बन्द कर के ऊपर से पलस्तर कर दिया गया हो ताकि कभी भी बाहर निकल नही सके—उसी तरह जिस तरह मधु मक्खिया, अपने परिश्रम के फल को सुरक्षित रखने के लिए, कीडा के छत्ते को ऊपर से बन्द कर देती हैं। अत यह नेख्लूदोव वह आदमी नही है, जिस पर उसने कभी अपना पवित्रतम प्रेम न्योछावर किया था, बल्कि एक अमीर आदमी है जिसका वह लाभ उठा सकती है, और उसे अवश्य उठाना चाहिए, और जिसके साथ उसके सम्बन्ध वही कुछ हो सकते है जो सामान्यतया पुरुषो के साथ रहे हैं।

"नही, मैं जरूरी बात तो उससे कह ही नही पाया," मुलाकातियो के साथ बाहर जाते हुए नेख्लूदोव सोच रहा था, "मैंने उससे यह नही कहा कि मैं तुम्हारे साथ शादी करूगा। यह नही कहा, लेकिन मैं उसे जरूर कहूगा।"

फाटक पर दो वाडर खडे थे जो पहले की ही तरह गिन गिन कर मुलाकातियो को बाहर निकाल रहे थे। एक एक मुलाकाती को वे हाथ से छते ताकि कोई अन्दर का आदमी बाहर नही निकल जाय, न ही कोई मुलाकाती अन्दर रह जाय। अब भी गुजरते हुए नेख्लूदोव की पीठ पर हाथ पडा। लेकिन अब की वह नाराज नही हुआ, बल्कि उसने इस ओर ध्यान ही नही दिया।

४५

नेख्लूदोव अपने समूचे बाह्य जीवन की फिर से व्यवस्था करना चाहता था। वह चाहता था कि नौकरो को निकाल दे, बडे मकान को किराये पर चढा दे और खुद होटल मे कमरा ले कर रहने लगे। परन्तु आग्राफेना पेत्रोव्ना ने सुझाव दिया कि सर्दी के मौसम से पहले कोई भी तबदीली करना बेसूद होगा। गरमी के मौसम मे कौन आदमी शहर म घर ले कर रहेगा? फिर सामान को भी तो कही रखना है। अत अपनी जीवन चर्या बदलन

की उसकी सभी कोशिशे नाकामयाव रही (वह छात्रो की तरह सादा जीवन व्यतीत करना चाहता था)। सब बात वैसी की वैसी ही रही। इतना ही नही, घर मे एक दूसरी ही तरह की गहमागहमी शुरू हो गई। घर के सब ऊनी व फर के वस्त्र निकाल कर उन्हे धूप मे रखा जाने लगा और साफ किया जाने लगा। इस काम म पहरी, छोकरा, बावरची और स्वय कोर्नेई तक जुट गये। तरह तरह के फर के कपडे जिन्हे कभी इस्तेमाल नही किया गया था, तथा तरह तरह की वर्दिया रस्सी पर लटका दी गयी। इसके बाद फर्नीचर और कालीन बाहर डाल दिये गये। पहरी और छोकरे दोनो ने अपनी मासल बाहो पर आस्तीनें चढा ली और डण्डे हाथ मे ले कर इन्हे एक साथ, एक ताल मे पीटने लगे। कमरो मे फीनाइल की गोलिया की गन्ध फैल गई।

आगन लाघते हुए या खिडकी मे खडे खडे जब नेख्लूदोव यह कार-वाई देखता तो हैरान रह जाता कि घर मे कितना अधिक सामान धरा पडा है, और सबका सब फिजूल है। इन सब चीजो का एक ही उपयोग और लाभ था कि इससे आग्राफेना पेत्रोव्ना, कोर्नेई, पहरी, छोकरे और बावरची—सबकी वरजिश हो जाती थी।

"इस समय अपने रहन सहन का ढग बदलने का लाभ भी क्या है," वह सोचने लगा, "मास्लोवा के मामले का कोई फैसला नही हुआ। इसके अलावा रहन-सहन बदलना बहुत मुश्किल है। जब उसे छोड दिया जायेगा या अगर साइबेरिया भेज दिया गया और मै उसके पीछे पीछे वहा चला गया, तो मेरा रहन-सहन अपने आप बदल जायेगा।"

निश्चित दिन को नेख्लूदोव बग्घी मे बैठ कर वकील फानारिन के घर जा पहुचा। बडा आलीशान मकान था, ऊचे ऊचे ताड-वृक्षो और तरह तरह के बेलबूटो से सजा हुआ। अद्भुत पर्दे टगे थे। वास्तव मे ऐशो आराम की हर चीज से साफ झलकता कि यहा मुफ्त का पैसा बहुत है (जिसे कमाने के लिए मेहनत नही की गई), और जिसकी नुमाइश वही लोग करते है जो सहसा अमीर हो जाय। बाहर ड्योढी मे बहुत से आदमी मेजो के पास बैठे थे, जैसे किसी डाक्टर के घर की ड्योढी मे बैठते हैं। सब इस इन्तजार मे थे कि कब उनकी बारी आये और वे वकील साहब से मुलाकात कर सकें। सभी के चेहरे उदास थे। मेजो पर उनके मनबहलाव के लिए सचित्र पत्रिकाए रखी थी। कमरे मे वकील का मुशी एक ऊची सी मेज के सामने

बैठा था। उसने नेख्लूदोव को देखते ही पहचान लिया, और उठ कर उसके पास चला आया, और कहने लगा कि मैं अभी जा कर वकील साहिब से आपके आने की सूचना देता हूं। लेकिन अभी मुंशी दरवाज़े तक पहुंच भी न पाया था कि दरवाज़ा खुल गया और कमरे में से ऊंचा ऊंचा बोलने की आवाज़ें आने लगीं। एक व्यापारी और फानारिन आपस में बात कर रहे थे। व्यापारी अधेड़ उम्र का हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति था, लाल लाल चेहरा और बड़ी बड़ी मूछें, नये बढ़िया कपड़े पहन कर आया था। दोनों के चेहरे का भाव बताता था कि अभी अभी उनमें कोई सौदा पटा है, जिससे लाभ तो बहुत होगा लेकिन जिसमें ईमानदारी नहीं है।

माफ कीजिये, लेकिन कसूर आप ही का है," फानारिन मुस्करा कर कह रहा था।

"अजी फरिश्ता कौन भयो हमन में। फरिश्ते होते तो स्वर्ग में नहीं पौंच जाते।"

"हां ठीक है, ठीक है, यह तो सभी जानते हैं।"

और दोनों बड़े बनावटी ढंग से हंसे।

"ओह, प्रिंस! आइये, आइये, तशरीफ लाइये," नेख्लूदोव को देखते ही वकील बोला। एक बार फिर उसने व्यापारी को झुक कर विदा किया और नेख्लूदोव को अपने कमरे में ले गया। इस कमरे की हर चीज़ बिलकुल सही ढंग से सजायी गयी थी। "सिगरेट पीजिये," नेख्लूदोव के सामने बैठते हुए वकील ने कहा। उसके होठों पर मुस्कराहट थी जिसे वह दबाने की चेष्टा कर रहा था। ज़ाहिर था कि उस सौदे की सफलता से उसके दिल में अभी भी गुदगुदी हो रही थी।

"शुक्रिया। मैं मास्लोवा के केस के बारे में आपसे मिलने आया हूं।"

"हां, हां, अभी लीजिये! ये मोटी तोंद वाले लोग बड़े लुच्चे होते हैं," उसने कहा, "आपने इस आदमी को देखा? करोड़पति है यह। और बात करता है तो 'फरिश्ता कौन भयो हमन में'। फिर भी एक एक कौड़ी को दांत से रगड़ता है।"

"वह कहता है 'फरिश्ते' और 'हमन में' और तुम कहते हो 'कौड़ी को रगड़ता है'," नेख्लूदोव सोच रहा था। और नेख्लूदोव का मन इस आदमी के प्रति गहरी घृणा से भर उठा। "मेरे साथ हंस हंस कर बातें कर के यह दिखाना चाहता है कि यह और मैं दोनों एक ही पक्ष के हैं और इसके बाकी सब मुवक्किल दूसरे पक्ष के।'

"इसने मुझे परेशान कर रखा है। बेहद नीच आदमी है। क्या करूँ, मुझे अपने दिल का गुबार तो हल्का करना है," वकील बोला, मानो इस बात के लिए माफी माग रहा हो कि वह ऐसी बातो की चर्चा करने लग गया है जिनका उनके काम से कोई सबन्ध नही। "अच्छा, तो काम की बात करे। मैंने केस ध्यान से पढा है, और जैसा कि तुर्गेनेव ने एक जगह लिखा है 'उसकी हिमायत नही करना'। मतलब यह कि वह नौसिखुआ वकील एकदम भोदू है और उसने अपील के लिए कोई आधार ही नही छोडा।"

"तो फिर, अब क्या करना होगा?"

"जरा माफ कीजिये," वकील ने कहा और मुशी की ओर मुखातिब हो कर, जो अभी अभी अन्दर आया था, बोला, "उसे कह दो कि मेरी बात पत्थर पर लकीर होती है। अगर वह कर सकता है, तो ठीक है, नही कर सकता, तो मैं मजबूर हूँ।"

"लेकिन वह नही मानता।"

"तो मैं मजबूर हूँ।" और वकील का चेहरा जो पहले खिला हुआ और शात था, सहमा चिडचिडा और क्रुद्ध हो उठा।

"यह लीजिये! और लोग कहते हैं कि वकील मुफ्त की कमाई खाते हैं," कुछ देर रुक कर, पहले की तरह हस हस कर बातें करने की चेष्टा करते हुए वह कहने लगा, "एक दिवालिये पर बिलकुल झूठा मुकद्दमा चल रहा था, मैंने उसे बचा लिया। अब सब लोग मेरे यहा भीड लगाये रहते हैं। लोग यह नही समझते कि एक एक मुकद्दमे के लिए खून-पसीना एक करना पडता है। हम भी तो, जैसा किसी लेखक ने कहा है, अपनी दवाता मे दिल का टुकडा छोडते हैं। अच्छा, तो आपके मुकद्दमे के बारे मे—यानी उस मुकद्दमे के बारे मे जिसमे आपकी दिलचस्पी है—मैं कहूँगा कि मुकद्दमे की पैरवी निहायत नामाकूल तरीके से हुई है। अपील करने का कोई माकूल आधार ही नही रह गया। तो भी," वह कहता गया, "हम अपील करने की कोशिश तो कर सकते हैं। मैंने इस सम्बन्ध मे यह दर्ज किया है।'

उसने कुछ पन्ने उठाये जिन पर उसने बहुत कुछ लिख रखा था और तेज तेज पढ़ने लगा। किसी किसी वाक्य को खास बल दे कर पढता और जहा कही नीरस कानूनी बात लिखी होती उन्हे छोडता जाता।

"उच्च यायालय, महकमा फौजदारी, वगैरा वगैरा। अदालत क निणयानुसार जो सजा दी गई है, वगैरा वगैरा। मास्लोवा को मुजरिम करार दिया गया है कि उसन व्यापारी स्मेल्कोव को जहर दिया जिससे उसकी मृत्यु हो गई, और इसलिए जाब्ता फौजदारी की दफा १४५४ के अनुसार उसे कडी मशक्कत की सजा दी गई है। वगैरा वगैरा।"

वह रुक गया। जाहिर था कि वह अपनी रचना को पढ कर खुश हो रहा था, हालाकि इन्हे पढने का उसे रोज मौका मिलता था।

"मुकद्दमे की सुनवाई म अदालती कायवाही का जो जगह जगह उल्लघन किया गया है और जो गलतिया की गई हैं, वे स्पष्ट हैं। यह सजा उन्ही भूलो का सीधा परिणाम है," उसने प्रभावपूण आवाज मे पढा, "और इस सजा को रद्द किया जाना चाहिए। पहले तो, जब स्मेल्कोव की अतडियो की परीक्षा की रिपोट अदालत मे पढ कर सुनाई जाने लगी तो प्रधान जज ने शुरू मे ही उसे पढने से रोक दिया। यह रहा पहला नुक्ता।"

"लेकिन इसे पढने की माग तो सरकारी वकील न की थी," नेख्लूदोव ने हैरान हो कर पूछा।

"कोई बात नही। मुद्दालेह की ओर से भी इसे पढ कर सुनाने की माग की जा सकती थी। उसके भी उपयुक्त कारण हो सकते थे।"

"पर इसकी तो किसी को भी कोई जरूरत नहीं थी।"

"लेकिन अपील करने के लिए इसे आधार बनाया जा सकता है। आगे चले, नम्बर दो," वह पढता गया, "मुद्दालेह के वकील ने जब मास्लोवा की शख्सियत पर रोशनी डालने की कोशिश की और यह बताने लगा कि किन कारणो से उसका पतन हुआ तो प्रधान जज ने उसे रोक दिया और कहा कि इन बातो का विचाराधीन विषय के साथ कोई सम्बन्ध नही। लेकिन मुजरिम के गुण-दोषो तथा उसके सामान्य नैतिक दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण फौजदारी मुकद्दमो मे बेहद महत्वपूण होता है। और नही तो इससे अपराधी का निणय करने मे मदद मिलती है। इस बात पर सेनेट ने बार बार बल दिया है। यह रहा दूसरा नुक्ता," नेख्लूदोव की ओर देख कर वकील ने कहा।

"पर मुद्दालेह का वकील इतने भद्दे ढग से जिरह कर रहा था कि किसी के कुछ भी पल्ले नही पड रहा था," नेख्लूदोव ने कहा। वह और भी हैरान हो उठा था।

"वह तो बेवकूफ है, काम की बात क्या कहेगा," फानारिन ने हंस कर कहा, "फिर भी अपील के लिए इस नुक्त को आधार बनाया जा सकता है। नम्बर तीन प्रधान जज ने अपने भाषण मे, जब वह सारी बात का ब्योरा दे रहा था, जूरी को यह नहीं बताया कि कानून की दृष्टि से अपराध की परिभाषा क्या होती ह। इस तरह जाब्ता फौजदारी के भाग १, दफा ८०१ का उल्लघन हुआ ह। यह मान लिया गया है कि मास्लोवा ने स्मेल्कोव को जहर दिया। लेकिन इस बात का काई सबूत नही कि वह जान बूझ कर स्मेल्कोव की हत्या करना चाहती थी। इसलिए जूरी को पूरा पूरा हक था कि वह मास्लोवा को हत्या का अपराधी नही ठहराये बल्कि उस पर केवल लापरवाही का दाेष लगाये, जिस कारण स्मेल्कोव की मृत्यु हो गई, हालाकि मास्लावा की कोई इच्छा उसे मारने की नही थी। प्रधान जज ने जूरी के इस अधिकार का उल्लेख नही किया। यह है सबसे बडा नुक्ता।"

"हा, लेकिन इसकी खबर हमे खुद होनी चाहिए थी। यह भूल तो हमारी है।"

"खैर। नम्बर चार," वकील कहता गया, "जो जवाब जूरी ने दिया है उसमे प्रत्यक्षत विरोधाभास पाया जाता है। मास्लोवा पर यह दोष लगाया गया है कि उसने लोभवश, अपनी इच्छा से स्मेल्कोव को जहर दिया। उसकी हत्या करन का यही एक हेतु बताया गया ह। जूरी ने अपने फैसले मे कहा है कि मास्लोवा का कोई इरादा चोरी करने का न था, या और लोगा के साथ मिल कर कीमती चीजें चुराने का न था। इस जुर्म से उसे बरी किया गया है जिसका मतलब यह है कि जूरी उसे इस जुर्म से भी बरी करना चाहते थे कि मास्लावा हत्या करने का इरादा रखती थी। यदि जूरी अपने जवाब में इस बात का स्पष्टतया कहना भूल गये तो गलतफहमी के कारण। और यह गलतफहमी इसलिए उठी कि प्रधान जज ने जो ब्योरा दिया वह अधूरा था। अत जब जरी की आर से इस किस्म का जवाब दिया जाता है ता उस पर जाब्ता फौजदारी की दफा ८१६ और ८०८ को लगाना जरूरी हो जाता है, जिसके अनुसार प्रधान जज का यह फर्ज हो जाता है कि वह जूरी को उनकी भूल समझाये, और मुजरिम के अपराध के बारे मे दोबारा जिरह की जाय और मुकद्दमे का फैसला फिर से हो।"

"तो प्रधान जज ने ऐसा क्यो नही किया?"

"मैं भी यही जानना चाहता हू कि उसने क्यो ऐसा नही किया," हसते हुए फानारिन ने कहा।

"तो यकीनन सेनेट इस भूल को ठीक कर देगी?"

"यह इस बात पर निर्भर करता है कि उस समय सेनेट की अध्यक्षता किसके हाथ मे है। खैर, आगे लिखा है," वह तेज़ तेज़ पढने लगा, "जब जूरी की ओर से इस किस्म का फैसला आया तो अदालत को कोई अधिकार नही था कि वह मास्लोवा को मुजरिम करार दे कर उसे सज़ा देती, और उसके मुक्द्दमे पर ज़ाब्ता फौजदारी की दफा ७७१, भाग ३ लागू करती। इस तरह अदालत ने हमारे कानून फौजदारी के मूलभत सिद्धान्तो का निश्चित तौर पर घोर उल्लघन किया है। उपरोक्त आधार पर मैं प्रार्थना करूगा कि ज़ाब्ता फौजदारी की दफा ६०६, ६१०, ६१२ के भाग २ और ६२८ के अनुसार इस सजा को रद्द किया जाय वगैरा वगैरा इस मुकद्दमे की उसी अदालत के किसी दूसरे विभाग मे और जाच की जाय। यह रहा! जो मुमकिन है वह मैंने कर दिया है। पर सच कहू तो मुझे कामयाबी की उम्मीद कम है, हालाकि यहा सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि उस समय सेनेट मे कौन कौन से सदस्य मौजूद होगे। वहा पर कोई असर रसूख हो तो जरूर लडाइये।

"कुछ सदस्यो का तो मैं जरूर जानता हू।"

"अच्छी बात है। लेकिन जो भी करना हो जल्दी कीजिये। वरना सब लोग अपनी बवासीर का इलाज कराने भाग जायेगे और आपको उनकी वापसी तक, पूरे तीन महीने इन्तज़ार करना पडेगा। अगर इसमे हम असफल रहे तो एक सभावना और भी है। हम ज़ार से अपील कर सकते हैं। उसके लिए भी तिकडम लडानी पडेगी। उस हालत मे भी मैं सेवा करने के लिए हाज़िर हू। मेरा मतलब है अपील लिखने के लिए, तिकडम लडाने के लिए नही।"

"धन्यवाद। और फीस "

"मेरा मुशी आपको दरख्वास्त भी दे देगा और इसके बारे मे भी बता देगा।"

"एक बात और। इस मुजरिम को जेल मे मिलने के लिए मुझे सरकारी वकील ने पास दिया था। मगर वहा मुझे पता चला कि अगर मैं मुजरिम

को किसी दूसरे वक्त और किसी दूसरे कमरे मे मिलना चाहू तो उसके लिए मुझे गवनर से इजाजत लेनी होगी। क्या इसकी कोई जरूरत है?"

"हा, मैं सोचता हू जरूरत है। पर आजकल गवनर यहा पर नही है। उसकी जगह पर सहायक-गवनर है। लेकिन वह ऐसा बेवकूफ है कि उसके साथ आपके लिए बात करना मुश्किल हो जायेगा।"

"क्या उसका नाम मास्लेन्निकोव है?"

"हा।"

"मैं उसे जानता हू," नेख्लूदोव न कहा, और वहा से जाने के लिए उठ खडा हुआ।

ऐन उसी समय एक बेहद कुरूप स्त्री भागी हुई कमरे मे आई—नाटा कद, पतली सी, ऊपर को उठी हुई नाक, पीला ज़द चेहरा, हड्डिया निकली हुई। यह वकील की पत्नी थी। अपनी कुरूपता के कारण उसका मन तनिक भी विचलित नही हुआ था। न केवल उसकी पोशाक बेमिसाल भडकीली थी—रेशम भी और मखमल भी, सुख पीला और हरा भी सभी कुछ उस पर लदा हुआ था, उसके पतले-झीने बालो म कुण्डल भी बने हुए थे। बडे गव के साथ वह कमरे मे उडती चली आयी। उसके पीछे पीछे मटमैले रग के चेहरे वाला, रेशमी कॉलरो वाला कोट और सफेद नकटाई पहने एक लम्बा सा आदमी भी मुस्कराता हुआ चला आया। वह एक लेखक था। नेख्लूदोव ने उसे देखा हुआ था।

"अनातोल," दरवाजा खोलते हुए उसन कहा, "चलो, मेरे कमरे मे चलें। यह रहे सेम्योन इवानोविच। इन्होने वादा किया है कि अपनी कविता जरूर पढ कर सुनायेंगे। और तुम्ह गाशिन के बारे मे पढ कर सुनाना होगा।"

नेख्लूदोव वहा से जाने लगा तो उसने अपने पति के कान मे कुछ फुसफुसा कर कहा फिर फौरन् नेख्लूदोव को सम्बोधन कर के बोली—

"क्षमा कीजिये, प्रिस, मैं आपको जानती हू, इसलिए परिचय की कोई जरूरत नहीं। मैं चाहती हू कि आप भी हमारी साहित्यिक गोष्ठी मे भाग ले। थोडी देर के लिए रुक जाइये। गोष्ठी बहुत दिलचस्प होगी। अनातोल ऐसा बढिया कविता-पाठ करते है कि क्या कहू।"

"देखा आपने, मुझे क्या क्या करना पडता है," फानारिन ने अपने हाथ फैला दिये और मुस्करा कर अपनी पत्नी की ओर इशारा करते हुए

यहा मानो दिखाना चाहता हो कि ऐसी सुन्दर स्त्री की आज्ञा का पालन कौन नही करेगा।

इस सम्मान के लिए नेख्लूदोव ने बडी विनम्रता से वकील की पत्नी को धन्यवाद दिया, लेकिन अपनी मजबूरी भी बताई कि वह रुक नही सकेगा। उसका चेहरा गभीर और उदास हो रहा था। उसने विदा ली और बाहर निकल आया।

"जाने अपने को क्या समझता है!" उसके चले जाने के बाद वकील की पत्नी ने टिप्पणी की।

डयोढी मे मुशी ने उसके हाथ म तैयार दरख्वास्त दी और बताया कि वकील साहिब की फीस एक हज़ार रूबल होगी। साथ ही यह भी कहा कि मिस्टर फानारिन अक्सर इस तरह का काम नहीं करते, लेकिन इस बार केवल उसकी खातिर उन्होने यह काम सिर पर ले लिया है।

"इस दरख्वास्त को क्या करना है? इस पर कौन दस्तखत करेगा?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"अभियुक्ता स्वय दस्तखत कर सकती है, लेकिन अगर यह मुमकिन न हो तो मिस्टर फानारिन दस्तखत कर देंगे। उस हालत मे अभियुक्ता स वकालत नामा लाना होगा।'

"नही नही, मैं खुद जा कर दस्तखत करवा लाऊगा," नेख्लूदोव ने कहा। वह खुश था कि निश्चित दिन से पहले उससे मिल पायेगा।

४६

नियमानुसार, ऐन वक्त पर जेलखाने के बरामदो म वाडर की सीटी की आवाज़ गूज गई। कोठरियो पर लगे लोहे के दरवाजे खडखडा कर खुलने लगे। नगे पावो के चलने की आवाज आई। एडिया खनखनाइ। जिन कैदियो को मेहतरो का काम करना था वे बरामदो को लाघ कर जाने लगे। उनसे तीखी बदब आ रही थी, जिसस हवा बोझल हो उठी। क़ैदियो ने मुह-हाथ धोया, कपडे पहने, जाच के लिए बाहर आये, और फिर चाय के लिए उबलता पानी लेने चले गये।

नाश्ते के समय सभी कोठरियो मे कैदी बडी सजीवता से बाते कर रहे थे। दो कैदियो को उस रोज़ कोडा से पीटा जाना था। उनमे से एक पढा-

लिखा युवक था जिसका नाम वासील्येव था। यह कोई क्लर्क था जिसने ईर्ष्या से पागल हो कर अपनी रखैल को मार डाला था। सभी कैदी उसे पसन्द करते थे क्योंकि वह दिल का उदार और हसमुख युवक था और जेलखाने के अधिकारियों के सामने डट कर खड़ा हो जाता था। वह कानून से वाकिफ था, इसलिए हर नियम का पालन जोर दे कर करवाता था। इसलिए अधिकारियों को वह बहुत बुरा लगता था। तीन हफ्ते पहले भोजन करते समय एक मेहतर से वार्डर की नयी वर्दी पर शोरवा गिर गया था। वार्डर ने जोर से उसके मुह पर तमाचा दे मारा। वासील्येव ने मेहतर का पक्ष लिया और कहा कि कैदी को पीटना कानून के खिलाफ है। "मैं तुम्हें कानून सिखाऊंगा," वार्डर बोला और गुस्से से वासील्येव को गालिया देने लगा। जवाब मे वासील्येव ने भी गालिया दी। वार्डर उस पर भी हाथ चलाने के लिए आगे बढ़ा लेकिन वासील्येव ने उसके दोनों हाथ पकड़ लिये, और थोड़ी देर तक पकड़े रहने के बाद उसे घुमा कर दरवाजे मे से बाहर निकाल दिया। वार्डर ने जा कर इन्स्पेक्टर से शिकायत कर दी। और इन्स्पेक्टर ने हुक्म दे दिया कि वासील्येव को कैद-तनहाई मे रखा जाय।

कैद-तनहाई के लिए कैदियो को छोटी छोटी अधेरी कोठरियो मे बन्द कर दिया जाता था। एक के साथ एक ऐसी कोठरियो की एक लम्बी कतार थी। कोठरिया को बाहर से ताला चढ़ा दिया जाता। अन्दर न खाट थी, न मेज, न कोई कुर्सी। कैदी गन्दे फर्श पर बैठते और सोते। वहा चूहे इतने निडर कि कैदियो की रोटी तक चुरा ले जाते। [illegible] कैदी हिलता-डुलता रहता तो वे दूर रहते, लेकिन ज्यो ही वह हिलना-डुलना बन्द कर देता तो उसे काटने तक के लिए चढ़ [illegible]। वासील्येव ने कैद-तनहाई मे जाने से इनकार कर दिया, [illegible] अपराध नही किया। लेकिन वे जबरदस्ती से उसे अन्दर [illegible]। वासील्येव ने विरोध किया। दो और कैदी उसकी [illegible] और उसे वार्डरो के हाथ से छुड़ा लिया। तब [illegible]। इनमे पेत्रोव नाम का एक वार्डर था जिसमे पहलवानों [illegible] की। कैदियो को उन्होने नीचे गिरा दिया और [illegible] बन्द कर [illegible] साथ ही गवर्नर को फौरन [illegible] म [illegible] कर दी है। गवर्नर ने [illegible] नेपोम्नियाश्ची की पीठ पर [illegible] जाय।

यह सजा उस कमरे म दी जानी थी जिसम स्त्री-कदी अपन मुलाक़ातियों से मिलती थी।

यह खबर पिछली शाम को ही सब कैदियो का पता चल गई थी, इसी लिए कोठरिया मे इसकी बडी चचा थी।

अपने कमरे के कोने मे कोराब्ल्योवा, छबीली, फेदोस्या और मास्लोवा एक साथ बैठी चाय पी रही थी। सभी के चेहरे वोद्का के कारण लाल हो रहे थे। सभी खुल खुल कर बात कर रही थीं। मास्लोवा को अब बराबर शराब मिलती रहती थी, और वह अपनी साथिना को मुफ्त पिलाती रहती थी।

"उसने कोई दगा फसाद तो नही किया," हाथ मे चीनी की डली पकडे, अपने मजबूत दाता से उसे थोडा थोडा कर के कुतरते हुए कोराब्ल्योवा ने कहा। वह वासीलयेव की बात कर रही थी। "अपने साथी की पीठ पर खडा हुआ, बस। आजकल कैदी को पीटने का कोई कानून नही है।"

"मैंने सुना है वह बहुत अच्छा आदमी है," फेदोस्या बोली। वह एक लकडी के कुन्दे पर तख्ते के सामने बैठी थी जिस पर चायदानी रखी थी। बालो की लम्बी लम्बी चोटिया उसने सिर के इर्दगिर्द लपेट रखी थी।

"तुम्हे चाहिए कि तुम इस बारे मे उससे बात करो," चौकीदारिन ने मास्लोवा से कहा। "उससे" का मतलब था नख्लूदोव से।

"मैं जरूर कहूगी। वह मेरी कोई भी बात नही टालेगा," मास्लोवा ने सिर झटक कर मुस्कराते हुए कहा।

"हा, मगर वह आयेगा कब ? ये लोग तो कैदियो को लाने भी चले गये है," फेदोस्या बोली, फिर ठण्डी सास भर कर कहने लगी, "कितनी भयानक बात है।"

"मैंने एक बार एक किसान को कोडे लगते देखा था। मेरे ससुर ने मुझे गाव के मुखिया के घर भेजा। वहा मैं गई और वहा " चौकीदारिन एक लम्बी कहानी सुनाने लगी, लेकिन उसी वक्त ऊपर वाले बरामदे से लोगा के चलने और बोलने की आवाजें आने लगी। चौकीदारिन आगे नही कह पायी।

सभी स्त्रिया चुप हो गइ। उनके कान इन आवाजा की ओर लग हुए थे।

"उसे खीचे लिये जाते है, शैतान के वच्चे !" छवीली वोली। "वे उसे मार डालेगे, जरूर मार डालेगे। सभी वाडर उसके दुश्मन है, क्योकि यह उनसे डरता नही है।"

ऊपर से ग्रावाजे ग्रानी वद हो गयी। चुप्पी छा गई। चौकीदारिन ने फिर ग्रपनी कहानी कहनी शुरू की ग्रौर ग्रन्त तक सुनाती गई। कहने लगी कि जव वह खलिहान मे गई ग्रौर किसान को पिटते देखा तो ऐसी डरी कि उसे मतली ग्राने लगी। वगैरा वगैरा। छवीली सुनाने लगी कि उन्होने एक वार श्चेग्लोव को कोडे लगाये तो उसने सी तक नही की। फिर फेदोस्या ने चाय के वरतन उठा दिये, ग्रौर कोराब्ल्योवा ग्रौर चौकीदारिन सिलाई ले कर वैठ गई। मास्लोवा ग्रपने घुटना के इर्दगिर्द वाहे डाले, खिन्न ग्रौर उदास, तख्ते पर वैठी रही। वह चाहती थी कि लेट जाय ग्रौर सोने की कोशिश करे, लेकिन उसी वक्त स्त्री वाडर ने उसे बुलाया ग्रौर कहा कि दफ्तर मे चलो, वहा कोई ग्रादमी तुमसे मिलने ग्राया है।

"ग्रव भूलना नही, हमारे वारे मे जरूर कहना," बुढिया मेन्शोवा वोली। मास्लोवा उठ कर धुधले से शीशे के सामने सिर का रुमाल ठीक करने लगी। "हमने घर को ग्राग नही लगाई। उस शैतान ने खुद लगाई। उसके कारिदे ने ग्रपनी ग्राखा से उसे करते देखा। ग्रव इन्कार करता है कि नही देखा। समझता है सच वोलेगा तो नरक मे जायेगा। उसे कहना कि मित्री से मिले। मित्री उसे सारी बात साफ साफ वता देगा। जरा सोचो तो, हमने सपने मे वुरा नही चेता ग्रौर हम तो यहा जेल मे सड रहे है, ग्रौर वह खुद किसी की वीवी को बगल मे ले कर शरावखाने मे वैठा गुलछर्रे उडा रहा होगा।"

"यह इसाफ नही है,' कोराब्ल्योवा ने हामी भरी।

"जरूर बताउगी—सव कुछ बता दूगी," मास्लोवा ने जवाव दिया। "घूट भर ग्रौर शराव दे दो। इससे मेरा साहस वना रहेगा," ग्राख मारते हुए उसने कहा। कोराब्ल्योवा ने ग्राधा प्याला वोदका डाल कर दे दी, जो मास्लोवा पी गई। फिर मुह पोछा ग्रौर वार वार "साहस वना रहेगा, साहस वना रहेगा" कहती हुई, हसती, सिर झटकती, वाडर के पीछे पीछे वरामदे मे जाने लगी।

नेख्लूदोव हॉल मे बैठा बडी देर तक इन्तज़ार करता रहा।

जेलखाने पहुच कर उसने बाहर के दरवाज़े पर लगी घण्टी बजाई। जवाब वार्डर ने दिया जो ड्यूटी पर था। नेख्लूदोव ने पास उस के हाथ मे दिया जो बडे सरकारी वकील ने उसे दिया था।

"ग्राप किसे मिलना चाहते हैं?"

"कैदी मास्लोवा को।"

"इस वक्त ग्राप उसे नही मिल सकते। इन्स्पेक्टर साहब को फुर्सत नही है।"

"क्या वह दफ्तर मे हैं?"

"नही, मुलाकातियो के कमरे मे हैं," वार्डर ने जवाब दिया। वह कुछ घबराया हुग्रा सा लग रहा था।

"क्यो, क्या ग्राज मुलाकात का दिन है?"

"नही, उन्हे खास काम है।"

"तो उनसे कैसे मिला जाय?"

"ग्रभी बाहर ग्रायेंगे तो मिल लेना। थोडा इन्तज़ार कीजिये," वार्डर बोला।

उसी वक्त एक सॉर्जेंट मेजर बगल वाले दरवाज़े मे से बाहर निकला, चिकना चुपडा चेहरा, मूछें तम्बाकू से पीली पडी हुई। उसकी वर्दी पर लगी सुनहरी डोरी चमक रही थी। ग्राते ही वार्डर पर बरस पडा—

"तुमने क्यो ग्रन्दर ग्राने दिया है? दफ्तर मे "

"मुझे बताया गया कि इन्स्पेक्टर साहब यहा पर है," नेख्लूदोव ने कहा। सॉर्जेंट-मेजर को इतना उत्तेजित देख कर वह हैरान हो रहा था।

उसी वक्त ग्रन्दर का दरवाज़ा खुला ग्रौर पेत्रोव बाहर निकला, पसीने से तर ग्रौर हाफ्ता हुग्रा।

"याद रखेगा," उसने सॉर्जेंट मेजर को सम्बोधन करते हुए कहा।

सॉर्जेंट मेजर ने ग्राख के इशारे से समझाया कि नेख्लूदोव खडा है। पेत्रोव तेवर चढाये, पीछे के दरवाज़े से बाहर निकल गया।

"कौन याद रखेगा? ये सब इतने घबराये हुए क्यो हैं? सॉर्जेंट मेजर ने इसे इशारा क्या किया?" नेख्लूदोव सोच रहा था।

सॉर्जेंट-मेजर ने फिर नेख्लूदोव को सम्बोधित किया—

"आप यहा पर किसी से नही मिल सकते। कृपा कर के इधर दफ्तर मे आ जाइये।"

नेख्लूदोव चलने ही वाला था कि पीछे का दरवाज़ा खुला और इन्स्पेक्टर अन्दर आ गया। वह सबसे ज्यादा घबराया हुआ था और बार बार ठण्डी सास ले रहा था। नेख्लूदोव को देखते ही वह वार्डर से बोला—

"फेदोतोव, स्त्रियो की पाच नम्बर कोठरी मे से मास्लोवा को दफ्तर मे भेज दो।"

"मेरे साथ आइये," नेख्लूदोव की ओर घूमते हुए इन्स्पेक्टर ने कहा। वे सीढिया पर चढ कर एक छोटे से कमरे मे पहुचे जिसमे एक ही खिडकी, मेज और कुछ कुर्सिया थी। इन्स्पेक्टर बैठ गया।

"बहुत, बहुत मुश्किल काम है। ऐसी कडी जिम्मेदारिया है," सिगरेट निकालते हुए उसने फिर नेख्लूदोव से कहा।

"ज़ाहिर है, आप बहुत थक गये ह," नेख्लूदोव बोला।

"मैं इस नौकरी से ही थक गया हू। मुझ पर बहुत कडी ज़िम्मेदारिया हैं। मेरी कोशिश तो रहती है कि इनका बोझ हल्का हो लेकिन उल्टे काम और भी खराब होता है। मैं तो सोचता हू कि किसी तरह इस काम से छुट्टी मिले। बहुत कडी ज़िम्मेदारिया हैं।"

नेख्लूदोव को मालूम नही था कि इन्स्पेक्टर को कौन सी खास मुश्किले पेश आ रही है, लेकिन आज वह खास तौर पर उदास और निराश था और चाहता था कि लोग अपनी सहानुभूति प्रकट करे।

"हा, मुझे भी यही लगता है, आपकी जिम्मेदारिया सचमुच बहुत कडी है," नेख्लूदोव ने कहा, "आप यह काम करते ही क्यो है?"

"क्या करू? घर है, परिवार है, आमदनी का और कोई ज़रिया नही।"

"लेकिन अगर इतना ही कडा काम है तो "

"फिर भी, आप जानते है, आदमी किसी हद तक उपयोगी हो सकता है। जहा तक मुझसे बन पडता है मैं नरमी बरतता हू। मेरी जगह कोई और होता तो दूसरी ही तरह का व्यवहार करता। आप जानते हैं, हमारे पास यहा दो हज़ार से भी ज्यादा कैदी है। और कैदी भी कैसे! उन्हे सभालने का ढग आना चाहिए। आखिर वे भी इन्सान हैं। उनके प्रति

अपने आप मन मे दया उठती है। पर फिर भी उन्हे काबू मे तो रखना ही पडता है।"

और इन्स्पेक्टर नेख्लूदोव को बताने लगा कि कुछ ही दिन पहले कैदी आपस मे लडने लगे, जिससे एक कैदी मारा गया।

कहानी जारी रहती मगर उसी वक्त एक वाडर मास्लोवा को कमरे मे ले आया।

मास्लोवा की नज़र अभी इन्स्पेक्टर पर नही पडी थी कि नेख्लूदोव ने दरवाज़े मे से उसे देख लिया। मास्लोवा का चेहरा लाल हो रहा था, और वाडर के पीछे पीछे तेज़ तेज़ चलती हुई वह मुस्करा रही थी और बार बार अपना सिर झटक रही थी। परन्तु इन्स्पेक्टर को देखते ही वह डर गई और एकटक उसकी ओर देखने लगी। उसके चेहरे का भाव बिलकुल बदल गया। फिर फौरन् ही सभल गई, और बडी निडरता से, हसते हुए नेख्लूदोव से बोली—

"कहिये, आप कैसे हैं?" एक एक शब्द को लम्बा करते हुए वह बोल रही थी। फिर मुस्कराते हुए, खूब ज़ोर से नेख्लूदोव के साथ हाथ मिलाया। पहली बार जब नेख्लूदोव से मिली थी तो इस तरह हाथ नही मिलाया था।

"मैं यह एक दरख्वास्त लाया हू। इस पर दस्तखत कर दो," नेख्लूदोव ने कहा। जिस निडरता से आज मास्लोवा उसके साथ बात कर रही थी, उसे देख कर वह हैरान हो रहा था। "यह दरख्वास्त वकील ने लिखी है, तुम्हारा उस पर दस्तखत करना जरूरी है, फिर हम उसे पीटसबर्ग भेज देंगे।"

"बेशक, जो आप कहे मुझे मजूर है," आख मार कर मुस्कराते हुए उसने कहा।

नेख्लूदोव ने जेब मे हाथ डाला और एक तह किया हुआ कागज़ बाहर निकाला और उसे लिये हुए मेज़ के पास गया।

"आपकी इजाज़त हो तो यहा बैठ कर यह इस पर दस्तखत कर दे," नेख्लूदोव ने इन्स्पेक्टर से पूछा।

"हा, हा, बैठो। लो, यह कलम लो। लिखना जानती हो?" इन्सपेक्टर ने कहा।

"किसी ज़माने म तो जानती थी,' मास्लोवा बोली, और अपना घाघरा और जाकेट की आस्तीनें ठीक कर के मेज़ के सामने बैठ गई।

फिर मुस्कराई और अपने छोटे से चुस्त हाथ मे बेढब से तरीके से कलम पकडी, और नेख्लूदोव की तरफ देख कर हस पडी।

नेख्लूदोव ने बताया कि क्या लिखना है और कहा पर दस्तखत करना है।

उसने कलम को स्याही मे डुबोया, बडे ध्यान से उससे कुछ कतरे स्याही के गिराये, और अपना नाम लिख दिया।

"बस?" उसने पूछा। वह कभी नेख्लूदोव की ओर और कभी इन्स्पेक्टर की ओर देखती और कलम को कभी कलमदान पर और कभी कागजो पर रखती।

"मुझे तुमसे कुछ कहना है," मास्लोवा के हाथ मे से कलम लेते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

"अच्छी बात है, बताओ क्या कहना है," उसने कहा। फिर सहसा उसका चेहरा गभीर पड गया, मानो उसे कुछ याद हो आया हो या नीद आने लगी हो।

नेख्लूदोव को मास्लोवा के पास छोड कर इन्स्पेक्टर उठ कर कमरे मे से बाहर चला गया।

४८

जो वाडर मास्लोवा को साथ ले कर आया था, वह कुछ दूर हट कर, खिडकी के दासे पर जा बैठा। नेख्लूदोव के लिए निर्णायक क्षण आ पहुचा था। वह सारा वक्त मन ही मन अपने को धिक्कारता रहा था कि उसने पहली बार मास्लोवा से मिलने पर मुख्य बात नही कही। अब वह निश्चय कर के आया था कि उससे साफ कह देगा कि मैं तुमसे शादी करूगा। मास्लोवा मेज के एक सिरे पर बैठी थी। नेख्लूदोव उसके बिलकुल सामने बैठा था। कमरे मे रोशनी थी, और नेख्लूदोव को पहली बार उसका चेहरा नजदीक से नजर आ रहा था। उसने साफ साफ देखा कि उसकी आखो और मुह के आस-पास रेखाए थी, पलकें सूजी हुई थी। नेख्लूदोव के हृदय मे उसके प्रति इतनी अनुकम्पा उठी जितनी पहले कभी नही थी।

वाडर कोई यहूदी लगता था। उसके मुह पर भूरे रग के गलमुच्छे थे। नेख्लूदोव ने मेज के ऊपर सामने की ओर झुक कर, फुसफुसा कर कहा ताकि वाडर न सुन सके—

"अगर इस दरख्वास्त से कुछ नहीं हुआ तो हम महाराज के नाम प्रार्थना-पत्र भेजेंगे। जो कुछ भी मुमकिन हुआ किया जायगा।"

"अगर शुरू में ही कोई ढंग का वकील किया होता तो यह नौबत ही न आती," वह बीच ही में बोल उठी। "मेरा वकील तो निरा बुद्धू था। सारा वक्त मेरी ही तारीफें करता रहता था," यह कह कर हंसने लगी। "अगर उस वक्त उन्हें मालूम होता कि मेरी तुमसे जान-पहचान है तो बात ही बदल जाती। सब यही सोचे बैठे हैं कि मैं चोर हूं।"

"आज यह कैसे अजीब ढंग से बातें कर रही है," नेख्लूदोव सोच रहा था। वह अपने मन की बात कहने जा ही रहा था जब मास्लोवा ने फिर बोलना शुरू कर दिया—

"हां, मुझे तुमसे एक बात कहनी है। हमारे यहां एक बूढ़ी औरत है। इतनी अच्छी, इतनी अच्छी कि क्या कहूं, सब हैरान होते हैं। उसने कोई जुर्म नहीं किया, फिर भी उसे पकड़ा हुआ है। उसके बेटे को भी। सभी जानते हैं कि उनका कोई दोष नहीं, उन पर जुर्म लगाया गया है कि उन्होंने किसी के घर को आग लगाई। जानते हो, जब उसे मालूम हुआ कि हमारी तुम्हारी जान पहचान है तो मुझसे कहने लगी—'उनसे कहो मेरे बेटे को मिलें। वह उन्हें सारी बात बता देगा।'" बातें करते हुए मास्लोवा कभी दायीं ओर कभी बायीं ओर सिर झुका कर नेख्लूदोव की ओर देखती। "उसका नाम मेन्शोव है। मिलोगे न उसे? इतनी अच्छी है वह बुढ़िया, तुम्हें क्या बताऊं। देखते ही पता चल जाता है कि उसका कोई दोष नहीं। यह काम करोगे न? तुम बड़े अच्छे हो!" यह कहते हुए मास्लोवा मुस्कराई, फिर उसकी ओर देख कर आंखें नीची कर लीं।

"अच्छी बात है, मैं पता करूंगा," नेख्लूदोव ने कहा। नेख्लूदोव मास्लोवा को यों खुल खुल कर बातें करते देख कर अधिकाधिक हैरान हो रहा था। "पर मैं तो तुम्हारे साथ अपने बारे में बात करने आया हूं। तुम्हें याद है जो कुछ मैंने पिछली बार तुमसे कहा था?"

"पिछली बार तुमने तो कितनी ही बातें कहीं थीं। क्या कहा था तुमने?" मास्लोवा बोली। वह अब भी मुस्कराये जा रही थी और सिर दायें से बायें घुमा रही थी।

"मैंने कहा था कि मैं तुमसे माफी मांगने आया हूं," नेख्लूदोव ने कहना शुरू किया।

"उसका क्या फायदा? माफी, माफी, उससे क्या होगा? इससे तो यही अच्छा है कि "

"मैं अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहता हूं। बातों से नहीं, बल्कि कर्म से। मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं तुमसे शादी करूंगा।"

सहसा मास्लोवा के चेहरे पर भय छा गया। उसकी ऐंचीतानी आंखें नख्लूदोव के चेहरे पर गड़ गईं, मगर फिर भी ऐसा लग रहा था जैसे उसे देख नहीं रही हैं।

"यह किस लिए?" गुस्से से भौंह सिकोड़ कर उसने कहा।

"भगवान् के सामने मैं अपना कर्तव्य निभाना चाहता हूं।"

"अब कौन सा भगवान तुम्हें मिल गया है? क्या ऊल-जलूल बक रहे हो? भगवान? कौन सा भगवान्? तुम्हें उस वक्त भगवान को याद करना था," मास्लोवा ने कहा और उसका मुंह खुला का खुला रह गया।

अब जा कर नख्लूदोव को पता चला कि मास्लोवा की सांस में से शराब की गंध आ रही है। वह मास्लोवा की उत्तेजना का कारण समझ गया।

"शान्त हो जाओ," वह बोला।

"मैं क्यों शान्त होऊं? तू समझता है मैं नशे में हूं? हां मैं नशे में हूं, पर मैं फिर भी जानती हूं मैं क्या कह रही हूं," वह तेज़ तेज़ बोलने लगी। उसका चेहरा तमतमा उठा। "मैं तो मुजरिम हूं, रण्डी हूं। और तुम भले आदमी हो, एक प्रिंस हो। मुझे हाथ लगा कर तू अपने को नापाक नहीं कर। तू जा अपनी प्रिंसेसों के पास। मेरी कीमत तो दस रूबल है।"

"तुम बड़ी सख्त बात कर रही हो, लेकिन इस वक्त जो मेरे मन पर गुज़र रही है वह मैं ही जानता हूं," नेख्लूदोव ने कहा। उसका शरीर कांप रहा था। "तुम सोच भी नहीं सकती हो कि मैं तुम्हारे प्रति अपने को कितना बड़ा मुजरिम समझता हूं।"

"मुजरिम समझता हूं!" मास्लोवा ने गुस्से से नेख्लूदोव की नकल उतारते हुए कहा। "उस वक्त तो तू अपने को मुजरिम नहीं समझता था। उस वक्त तो सौ रूबल का नोट फेंक कर चलते बना था। यह ले—तेरी कीमत "

"जानता हूं, जानता हूं, पर अब क्या किया जाय?" नेख्लूदोव ने

कहा। "अब मैं तुम्हें छोड कर नही जाऊंगा, मैंने निश्चय कर लिया है और मैं अपनी बात पूरी कर के रहूगा।"

"और मैं कहती हू कि तू कभी पूरी नहीं करेगा," मास्लोवा बोली और ज़ोर ज़ोर से हसने लगी।

"कात्यूशा!" उसके हाथ को छूते हुए नेख्लूदोव कहने लगा।

"चला जा यहा से। तू ठहरा प्रिंस, मैं मुजरिम। तेरा यहा क्या काम?" उसने हाथ छुडाते हुए चीख कर कहा। गुस्से से उसका चेहरा विकृत हो रहा था। "तू मेरे ज़रिए अपने आपको बचाना चाहता है?" वह कहे जा रही थी। उसके दिल मे तूफान उठ रहा था। आज वह अपने दिल का सारा गुबार निकाल देना चाहती थी। "इस लोक मे तूने मुझे भोगा और अब मुझसे ही अपना परलोक सुधारना चाहता है! मुझे तुझसे नफरत है—तेरी इन ऐनको से, तेरी इस मोटी गन्दी सूरत से मुझे नफरत है! चला जा यहा से, चला जा!" उसने चिल्ला कर कहा और ज़ोर से उठ खडी हुई।

वाडर भागा हुआ उनके पास आया।

"क्या शोर मचा रही हो? ऐसा करोगी तो "

"कृपया, रहने दीजिये," नेख्लूदोव ने कहा।

"शोर मचाने का क्या मतलब है!" वाडर बोला।

"मेहरबानी कर के थोडा इतज़ार कीजिये," नेख्लूदोव ने कहा। वाडर खिडकी के पास लौट गया।

मास्लोवा, आखे नीची किये, अपने छोटे छोटे हाथ कस कर एक दूसरे से पकडे, फिर बैठ गई।

नेख्लूदोव उसके पास खडा था। उसकी समझ मे नही आ रहा था कि क्या कहे।

"तुम्हे मुझ पर विश्वास नही है?" वह बोला।

"किस बात का, कि तुम मेरे साथ ब्याह करना चाहते हो! यह कभी नहीं होगा। मैं मर जाऊगी लेकिन तुम्हारे साथ ब्याह नही करूगी। बस, सुन लिया?'

"कोई बात नही। मैं फिर भी तुम्हारी सेवा करता रहूगा।"

"यह तुम जानो। पर यह समझ लो कि मुझे तुमसे किसी चीज़ की

भी जरूरत नही है। यह मैं सच कह रही हू। मर क्यो नही गई मैं तभी।" उसने कहा और बिलख बिलख कर रोने लगी।

नेख्लूदोव के मुह मे जवान नही थी। उसे रोता देख कर उसकी आखो म भी आसू आ गय।

मास्लोवा ने सिर उठा कर उसकी ओर देखा तो हैरान रह गई, फिर रूमाल से अपने आसू पोछने लगी।

वाडर ने फिर पास आ कर कहा कि मुलाकात का वक्त खत्म हो चुका है। मास्लोवा उठ खडी हुई।

"तुम इस वक्त बेचैन हो। हो सका तो मैं कल फिर तुमसे मिलने आऊगा। जो कुछ मैंने कहा है, उस पर विचार करना," नेख्लूदोव ने कहा।

मास्लोवा ने कोई जवाब नही दिया, और बिना उसकी ओर देखे, वाडर के पीछे पीछे कमरे मे से बाहर चली गई।

"अब तो तुम्हारे मजे ही मजे हैं," कोठरी मे मास्लोवा के लौटने पर कोराब्ल्योवा कहने लगी। "जान पडता है वह तुम पर फिदा है। जब तक वह तुम्हे चाहता है, उसका पूरा पूरा फायदा उठा लो। उसने मदद की तो छूट जाओगी। अमीर लोग सब कुछ कर सकते है।"

"ठीक है, बिलकुल ठीक कहती हो," चौकीदारिन अपनी सुरीली आवाज मे कहने लगी। "जब कोई गरीब आदमी ब्याह करना चाहे तो हजार झझट उठते हैं। पर अमीर आदमी के लिए तो बस कहने की देर है, उसका झट से ब्याह हो जाता है। मैं ऐसे एक अमीर जादे को जानती हू। जानती हो उसने क्या किया? "

"क्या तुमने मेरे बारे म उससे बात की थी?" बुढिया ने पूछा।

परन्तु मास्लोवा ने अपनी साथिना के किसी भी सवाल का जवाब नही दिया, और तख्ते पर जा कर लेट रही और शाम तक वही पडी रही। सारा वक्त वह अपनी ऐची आखो से छत के एक कोने की ओर देखती रही। उसकी आत्मा म एक बडा सघर्ष चल रहा था। नेख्ल्यूदोव की बातो से उसे वह दूसरी दुनिया याद हो आयी थी जिसमे उसने यन्त्रणा भोगी थी। उस दुनिया को बिना समझे, उससे घृणा करती हुई वह उसमे से निकल आयी थी। सारा वक्त वह एक तन्द्रा की हालत म जीती रही

थी। आज उसकी तन्द्रा टूट गई थी। परतु उन दिनो की स्पष्ट स्मृतिया ले कर जीना असम्भव सा लगता था, वे स्मृतिया उसे असह्य वेदना पहुचाती थी। शाम को उसने फिर वोदका मागी और अपनी साथिना के साथ जी भर कर पी।

४६

"हू, तो यह बात है," जेलखाने मे से निकलते हुए नेख्लदोव सोच रहा था। अब जा कर वह अपने अपराध की गभीरता को पूरी तरह से समझ पा रहा था। यदि उसने प्रायश्चित करने की कोशिश नही की होती तो उसे मालूम ही नही हो पाता कि उसने कितना बडा अपराध किया है। इतना ही नही, स्वय मास्लोवा भी नही समझ पाती कि उसके साथ कैसा जुल्म हुआ है। अब नेख्लूदोव को अपने पाप की भयकरता स्पष्टतया नजर आने लगी थी। अब वह देख रहा था कि उसने इस स्त्री की आत्मा का किस तरह रौंद डाला है। और अब मास्लोवा को भी नजर आने लगा था, यह भी समझने लगी थी कि उसके साथ कितना बुरा व्यवहार हुआ है। आज तक तो नेख्लूदोव के मन मे आत्मश्लाघा की भावना उठती रही थी, और वह इसी भावना से जैसे खेलता रहा था। जब उसके मन मे पश्चाताप भी उठता तो उसका हृदय अपने प्रति श्रद्धा से भर उठता था। परन्तु अब वह भय से काप उठा। वह जानता था कि अब वह मास्लोवा से किनारा नही कर सकता। पर साथ ही उसकी समझ मे यह भी नही आ रहा था कि उनका एक दूसरे के साथ कैसा सम्बन्ध होगा, और ऐसे सम्बन्ध का क्या बनेगा।

वह बाहर निकल ही रहा था जब एक वाडर चलता हुआ उसके पास आया और बड़े रहस्यपूण अन्दाज से एक पुर्जा उसके हाथ म दिया। वाडर के चेहरे पर बडा घिनौना सा भाव था, मानो वह जान बूझ कर नेख्लूदोव को उकसाने के लिए आया हो। उसकी छाती पर क्रॉस और तमगे चमक रहे थे।

"किसी ने आपके नाम यह पुर्जा दिया है हुजूर," लिफाफा नेख्लूदोव के हाथ मे देते हुए उसने कहा।

"किसने?'

"आप पढेंगे तो आपको मालूम हो जायेगा। वह सियासी कैदी है। मैं उसी वार्ड मे काम करता हू। इसलिए उस औरत ने मुझी को यह पुर्जा देने को कहा। आप जानते है, यह है तो कानून के खिलाफ, मगर फिर भी, इन्सान का इन्सान स हमदर्दी होती है " वार्डर का बात करने का लहजा बडा अस्वाभाविक था।

नेख्लूदोव हैरान हुआ। यह वार्डर उसी वार्ड मे काम करता है, जिसमे सियासी कैदी रखे गये हैं, और खुद पुर्जे पहुचा रहा है, और वह भी जेल के अन्दर, खुल्लमखुल्ला, सबके सामने। नेख्लूदोव यह नही जानता था कि यह आदमी वार्डर भी था और जासूस भी। उसने पुर्जा ले लिया और जेलखाने से बाहर आ कर पढा। पुर्जा चुस्त लिखावट मे लिखा था।

"यह जान कर कि आप यहा आते हैं और एक मुजरिम के मुकद्दमे म आपकी दिलचस्पी है, मेर दिल मे भी आपसे मिलने की ख्वाहिश उठी है। मुझसे मिलने के लिए इजाजत मागिये। आपको फौरन इजाजत मिल जायेगी। मिलने पर मैं आपको आपकी आश्रिता के बारे में बहुत कुछ बता सकूगी। साथ ही अपने दल के बारे मे भी। आपकी, कृतज्ञा, वेरा बोगादूखोव्स्काया।"

वेरा बोगोदूखोव्स्काया नोवगोरोद गुबेनिया के एक दूरपार के गाव मे अध्यापिका का काम करती थी। एक बार जब नेख्लूदोव अपने मित्रो के साथ रीछ का शिकार खेलने गया तो वे उसी गाव मे ठहरे थे। वहा इस महिला ने नेख्लूदोव से आर्थिक सहायता की प्रार्थना की थी ताकि वह आगे अपनी पढाई जारी रख सके। नेख्लूदोव ने उसे कुछ पैसे दिये थे। उसके बाद यह महिला उसके मन से उतर गई थी। अब जान पडता था कि इस महिला ने सियासी जुर्म किये हैं, और जेल मे है (शायद जेल म ही उसे नेख्लूदोव की कहानी मालूम हुई है) और उसकी मदद करना चाहती है। उन दिनो जीवन कितना सरल और सुगम था, और अब कितना जटिल और कठोर हो उठा है! नेख्लूदोव को वे दिन याद हो आये, जिन दिनो उसका बोगोदूखोव्स्काया से परिचय हुआ था। उन्हे याद कर के उसके दिल मे खुशी की लहर दौड गई। बडी स्पष्टता से वह दृश्य उसकी आखो के आगे घूम गया। शीतकाल की समाप्ति के पर्व से कुछ ही दिन पहले की बात थी। वे एक ऐसी जगह पर थे जहा से रेल का स्टेशन ६० मील दूर था। उस दिन शिकार अच्छा हुआ था—उन्होने दो रीछ मार

डाले थे, और वापस लौटने से पहले सभी लोग बैठे भोजन कर रहे थे। जिस घर मे वे बैठे थे उस घर की मालकिन उनके पास आ कर बोली थी कि पादरी की बेटी प्रिस नेख्लूदोव से बात करना चाहती है।

"क्या देखने म अच्छी है?" किसी ने पूछा था।

"ऐसी बात मत कहो," नेख्लूदोव ने कहा था और बडी गभीर मुद्रा धारण किये उठ खडा हुआ था। फिर मुह पोछ कर, यह सोचते हुए कि पादरी की बेटी को मेरे साथ क्या काम हो सकता है, वह मकान के उस हिस्से मे चला गया था जिसमे घर के लोग रहते थे।

वहा उसने एक लडकी को खडे देखा था, फेल्ट का टोप लगाये, वह कधो पर गरम कोट ओढे थी। लडकी शरीर की मजबूत थी लेकिन शक्ल की कुरूप थी। केवल कमान जैसी भौंहो के नीचे उसकी आखें बेहद सुदर थी।

"लो बेटी, यह है प्रिस। जो कहना हो इनसे कह लो। मैं बाहर ठहरती हू," बुढिया मालकिन ने कहा था।

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हू? नेख्लूदोव ने पूछा।

"आप आप आप तो धनी हैं, अपना रुपया शिकार जैसी फिजूल बातो पर बबाद करते है," लडकी कहने लगी थी। वह बहुत घबरायी हुई थी। "मैं जानती हू मुझे केवल एक चीज की जरूरत है मैं लोगो की सेवा करना चाहती हू। पर मैं कुछ भी नही कर सकती, क्योकि मैं बहुत कम जानती हू।"

लडकी की आखो से नजर आ रहा था कि वह बडी दयालु-स्वभाव की है, और जो कुछ कह रही है बिल्कुल सच होगा। जिस लहजे मे वह बात कर रही थी उसमे सकोच और दढता का भाव था जो हृदय को छूता था। नेख्लूदोव ने, जसा कि उसका स्वभाव था, मन ही मन लडकी की स्थिति म अपने को रख कर देखा। सहसा उसने लडकी की स्थिति को समझ लिया और उसका हृदय सहानुभूति से भर उठा।

"मैं आपके लिए क्या कर सकता हू?"

"मैं अध्यापिका का काम करती हू। मैं यूनीवर्सिटी म पढ़ना चाहती हू लेकिन इसकी मुझे इजाजत नही मिलती। इजाजत तो मिलती है लेकिन इसके लिए मेरे पास पैसे नही हैं। आप मुझे पैसे दीजिये। कोर्स खत्म होने के बाद मैं यह रकम लौटा दूगी। मैं सोचती हू कि धनी लोग तो रीछों

का शिकार करते हैं और किसानो को शराबें पिलाते है। यह कोई अच्छी बात है? वे लोगो का भला क्यो नही करते? मुझे केवल ८० रूबल की जरूरत है लेकिन अगर आप देना नही चाहते, तो न दें," उसने तनिक गुस्से से कहा।

"नही, नही, बल्कि मैं तो आपका कृतज्ञ हू कि आपने मुझे सेवा का यह अवसर दिया। मैं अभी पैसे लाता हू," नेख्लूदोव ने कहा।

वह गलियारे मे निकल आया जहा उसे अपना एक साथी मिला जो वहा खडा उनकी बाते सुन रहा था। वह नेख्लूदोव से मज़ाक करने लगा। उसके मज़ाक की कोई परवाह न करते हुए, नेख्लूदोव ने अपने बटुए मे से पैसे निकाले और लडकी का दे दिये।

"नही, नही, मेरा धन्यवाद करने की कोई जरूरत नही। उल्टे मुझे आपका धन्यवाद करना चाहिए।"

इस वक्त ये सब बाते याद कर के मन को सुख पहुचता था। एक अफसर ने इस बात पर एक भद्दा सा मजाक किया था, और नख्लूदोव उससे झगड पडा था। उस झगडे का याद कर के भी आज मन को सुख पहुचता था। एक दूसरे दोस्त ने नेख्लूदोव का पक्ष लिया था, और इसके फलस्वरूप वे बाद मे गहरे दोस्त हो गये थे। शिकार का वह अभियान कितना सफल रहा था। और उस रात जब वे रेलवे स्टेशन पर पहुचे ये तो वह मन ही मन कितना खुश था

जगल के बीच तग सा रास्ता। उस रास्ते पर स्लेजो की एक कतार चली जा रही है। हर स्लेज के आगे दो घोडे जुते हुए हैं। तेज तेज जाते हुए कभी स्लेज ऊचे ऊचे वृक्षो के बीच मे से, कभी छोटे छोटे फर वृक्षो के बीच मे से गुज़रने लगते है। फर वृक्षो की शाखें बर्फ के बोझ मे, जिसके बडे बडे लोदे उन पर पडे हैं, झुक झुक जाती हैं। अधेरे मे सहमा लाल लाल रोशनी चमकती है। किसी न खुशबूदार सिगरेट सुलगाया है। रीछा का शिकारिया, ओसिप, कभी एक स्लेज मे जाता है कभी दूसरे म। बर्फ उसके घुटनो घुटनो तक आती है। शिकार का साज़-सामान ठीक करते हुए वह कहानिया सुनाता जा रहा है। बारहसिघा की कहानिया, जो इस वक्त गहरी, बरफ मे घूम रहे हागे, और ऐस्पन के पेडा पर स छाल खराच रहे होगे और रीछा की कहानिया, जा इस वक्त अपनी

गहरी गुप्त खोहा मे सोये पडे होगे और उनकी नाक मे से गरम गरम सासे निकल रही होगी।

सारा दृश्य नेख्लूदोव की आखो के सामने घूम जाता है। परतु जिस चीज की उसे सबसे अधिक याद आती है वह है स्वास्थ्य, शारीरिक बल, तथा निश्चिन्तता की अनुभूति। हवा म पाले की सर्दी है, और वह उसम लम्बी लम्बी सासे ले रहा है जिससे उसकी छाती फूल उठती है और फर का कोट तग महसूस होन लगता है। पेडा की निचली शाखा पर से हल्की हल्की बफ उसके चेहरे पर गिर रही है। उसके शरीर मे गर्मी है, चेहरे पर ताजगी है, और उसकी आत्मा पर न चिन्ता का, न आत्मग्लानि, भय अथवा लालसाओ का बोझ है जीवन कैसा सौन्दयमय था। और अब, हे भगवान्, कैसी यत्रणा है, कितना क्षोभ है!

जाहिर था कि वेरा बोगोदूखोव्स्काया कोई क्रान्तिकारी थी और इसी कारण उसे जेल मे भी रखा गया था। वह उससे जरूर मिलेगा, विशेषकर इसलिए भी कि उसने उसे मास्लोवा के बारे मे परामश देने का वचन दिया है।

५०

दूसरे दिन सुबह नेख्लूदोव जल्दी जाग गया। पिछले दिना की बाता को याद करते ही उसे भय ने जकड लिया।

लेकिन इस भय के बावजूद, वह पहले से भी अधिक दृढता स उस काम को जारी रखना चाहता था जो उसने शुरू किया था।

अपने कतव्य को समझते हुए वह घर से निकल पडा और सीधा मास्लेन्निकोव को मिलने चल पडा। उससे वह जेल मे मास्लोवा से मिलने के लिए तथा, मेन्शोव, मा और बेटे से मिलने के लिए जिनका जिक्र मास्लोवा ने किया था इजाजत लेना चाहता था। साथ ही, वह बोगोदूखोव्स्काया से मिलने की भी इजाजत लेना चाहता था। सभव है वह मास्लोवा की सहायता कर सके।

नेख्लूदोव का परिचय मास्लेन्निकाव से काफी पुराना था। दोनों एक ही रेजिमेंट म रह चुके थे। उन दिना मास्लेन्निकाव रेजिमट मे बख्शी के पद पर नियुक्त था। वह बडा नेक दिल और उत्साही अफसर था। रेजिमट

ग्रौर राजपरिवार को छोड कर उसे किसी तीसरी चीज मे रुचि न थी। अब जब नेख्लूदोव उससे मिला तो वह रेजिमेट छोड कर प्रबधविभाग का एक पदाधिकारी बना हुग्रा था। उसको शादी ग्रमीर घर की एक चुस्त लडकी से हुई थी, जिसने उसे ग्रपना धधा बदलने पर मजबूर किया था।

उसकी स्त्री उसका मज़ाक उडाती, साथ ही उससे लाड-प्यार भी करती, माना उसने कोई जानवर पाल रखा हो। सर्दी के मौसम मे नेख्लूदोव एक बार उनसे मिलने गया। पति पत्नी दोना इतने नीरस निकले कि दोबारा उनसे मिलने जाने की उसे इच्छा नही हुई।

नेख्लूदोव को देखते ही मास्लेन्निकोव का चेहरा खिल उठा। ग्रब भी उसका मुह वैसा ही लाल ग्रौर फूला हुग्रा था, शरीर उसी तरह गदराया हुग्रा था जैसा कि फौज के दिना मे हुग्रा करता था। पोशाक भी पहले ही की तरह बढिया थी। फौज के दिनो मे वह नये से नये फैशन की वर्दी पहना करता था, जो छाती ग्रौर कधो पर खूब चुस्त सिली होती। ग्रब वह सिविल पोशाक डाटे हुए था। यह भी नये से नये चलन की थी, उसके मासल शरीर पर खूब फिट बैठती थी, ग्रौर इसम उसकी चौडी छाती भी खूब उभर कर निकल ग्राई थी। दोनो की उम्र मे काफी फर्क था (मास्लेन्निकोव ४० बरस का था)। इसके बावजूद दोनो मे ग्रच्छी दोस्ती थी।

"कहो दोस्त, ग्राज तो बडी कृपा की! चलो, पहले चल कर मेरी पत्नी से मिलो। मुझे एक मीटिंग मे पहुचना है। लेकिन ग्रभी दस मिनट हैं। ग्राजकल चीफ यहा नही है, मैं उसकी जगह गुबेर्निया प्रबन्ध का चीफ हू," उसने कहा। वह ग्रपनी खुशी को छिपा नही पा रहा था।

"मैं एक काम से तुम्हे मिलने ग्राया हू।"

"क्या काम है?" मास्लेन्निकोव ने सहसा सतर्क हो कर थोडी सहमी ग्रौर साथ ही सख्ती लिये ग्रावाज़ मे पूछा।

"जेल मे एक कैदी है, उसमे मेरी गहरी दिलचस्पी है।" (जेल का नाम सुनते ही मास्लेन्निकोव का चेहरा कठोर पड गया)। "मैं उससे मिलना चाहता हू, लेकिन मुलाकाती कमरे मे नही, ग्रलग, दफ्तर मे, ग्रौर केवल उस वक्त ही नही जब सब लोग मिलते हैं। मैंने सुना है कि इसकी इजाज़त तुमसे लेनी होगी।"

"ज़रूर, mon cher * यार, तुम्हारा काम नहीं करूंगा?" मास्लेन्निकोव ने कहा और अपने दोनों हाथ नेख्लूदोव के घुटनों पर रख दिए, मानो अपना रोब दाब कम करना चाहता हो। "पर यह मत भूलो कि मेरा राज बस एक घण्टे के लिए है।"

"तो क्या तुम मुझे आर्डर लिख दे सकते हो, ताकि मैं उस औरत को मिल सकूं?"

"क्या वह कोई औरत है?"

"हां।"

"किस जुर्म के कारण कैद है?"

"ज़हर देने के कारण। लेकिन उसके साथ अन्याय हुआ है।"

"हां, देख लो, यही है जूरी का न्याय, ils n en font point d autres"** जाने क्यों उसने फ्रांसीसी में कहा। "मैं जानता हूं तुम मेरे साथ सहमत नहीं हो, पर चारा ही क्या है? C est mon opinion bien arretee"*** उसने अपनी राय जाहिर करते हुए कहा। यह राय वह पिछले बारह महीने से एक प्रतिक्रियावादी अखबार में भिन्न भिन्न रूपों में पढ़ता आ रहा था। "मैं जानता हूं कि तुम उदारवादी हो।"

"मैं नहीं जानता उदारवादी हूं या कुछ और," नेख्लूदोव ने मुस्कराते हुए कहा। जब भी लोग उसे उदारवादी कह कर किसी राजनीतिक पार्टी के साथ उसका संबंध जोड़ते तो उसे बड़ी हैरानी होती। उसका तो केवल यही कहना था कि सज़ा देने से पहले मुजरिम को अपनी सफाई देने की पूरी आज़ादी हो, कि कानून की नज़र में उस वक्त तक सब बराबर है जब तक कि किसी का जुर्म साबित नहीं हो जाता, कि किसी के साथ भी अनुचित व्यवहार, मार-पीट आदि नहीं होनी चाहिए, उन लोगों के साथ तो विशेषकर नहीं होनी चाहिए जिनका जुर्म अभी साबित नहीं हुआ हो। "मैं नहीं जानता कि मैं उदारवादी हूं या नहीं, लेकिन मैं इतना ज़रूर जानता हूं कि बुरी होते हुए भी मौजूदा अदालती प्रणाली पहली प्रणाली से बेहतर है।"

"तुमने वकील कौन सा किया है?"

---

*मेरे प्यारे [दोस्त]। (फ्रेंच)

**और कुछ तो वे करते ही नहीं। (फ्रेंच)

***यह मेरा दृढ़ मत है। (फ्रेंच)

"मैंने फानारिन से बात की है।"

"फानारिन से? अरे!" मास्लेनिकोव ने मुह बनाते हुए कहा। उसे याद हो आया कि साल भर पहले इसी फानारिन ने उसका मज़ाक उडाया था। एक मुकद्दमे मे वह गवाह बन कर पेश हुआ था। और फानारिन घण्टा भर बडी विनम्रता से उससे सवाल पूछता रहा, और सारा वक्त लोग हसते रहे थे। "मैं तुम्हे परामर्श दूगा कि इस फानारिन से कोई वास्ता न रखो। फानारिन तो est un homme tare"*

"मुझे एक और अर्ज भी करनी है," नेख्लूदोव ने कहा, "एक और लडकी भी है। मुद्दत हुई उससे मेरी जानपहिचान हुई थी। बडी निरीह सी लडकी है, अध्यापिका का काम करती थी। वह भी जेल मे है। उसने मुझसे मिलने की ख्वाहिश ज़ाहिर की है। क्या उससे भी मिलने की मुझे इजाज़त मिल सकती है?"

मास्लेनिकोव ने गर्दन थोडी टेढी की और सोचने लगा।

"सियासी कैदी है?"

"हा, मुझे तो यही बताया गया है।"

"सियासी कैदियो से मिलने की केवल सम्बन्धियो को इजाजत होती है। फिर भी कोई बात नही, मैं एक खुला प्रवेश-पत्र तुम्हे लिख देता हू। Je sais que vous n abuserez pas ** तुम्हारी इस रक्षिता का नाम क्या है? बोगोदूखोव्स्काया? Elle est jollie?"***

"Hideuse"****

मास्लेनिकोव ने इस तरह सिर हिलाया मानो उसे यह बात पसद नही थी और मेज़ के पास जा कर एक कागज़ लिया और प्रवेश पत्र लिखने बैठ गया। कागज़ पर मास्लेनिकोव का शिरोनामा छपा हुआ था।

"हामिल रुक्का प्रिंस दमीत्री इवानोविच नेख्लूदोव को इजाज़त है कि वह जेलखाने के दफ्तर मे कैदी मास्लोवा तथा चिकित्सा-सहायिका

---

*बदनाम इन्सान है। (फ्रेंच)

**मैं जानता हू, तुम इसका दुरुपयोग नही करोगे। (फ्रेंच)

***वह अच्छी है? (फ्रेंच)

****बेहूदा। (फ्रेंच)

वोगोदूखोव्स्काया से भेंट कर सकता है।" और नीचे बड़ी शान के साथ अपना नाम लिख कर उसने पत्र को खत्म किया।

"अब तुम्हें देखने का मौका मिलेगा कि हमारा इन्तज़ाम कितना अच्छा है। हालाकि बता दू कि इन्तज़ाम करना आसान नहीं है। जेलखाना छोटा है, मगर कैदियों की सख्या बहुत ज्यादा है, विशेषकर उन कैदियों की जिन्हें जलावतन किया जायेगा। लेकिन मैं खुद बड़ी निगरानी रखता हू। और अपना काम बड़ी लगन से करता हू। तुम देखोगे कि कैदी वहा बड़े आराम से रहते हैं और खुश हैं। पर उन्हें हाथ में रखने का ढग आना चाहिए। कुछ ही दिन पहले मामूली सी गड़बड़ हुई। कैदियों ने हुक्म-उदूली की। मेरी जगह कोई और होता तो इसे बग़ावत समझता, और बहुत लोगो को दुख देता। लेकिन हमारे यहा चुपचाप सब काम ठीक हो गया। ज़रूरत इस बात की है कि एक तरफ हितचिन्ता हो और दूसरी तरफ दृढता और शक्ति," उसने अपने स्थूल सफेद हाथ से मुट्ठी भीचते हुए कहा, जो माड़ी लगी कमीज की आस्तीन मे से निकल रहा था। एक उगली पर फिरोज़े की अगूठी थी, और कफ पर सोने का स्टड चमक रहा था। "हितचिन्ता के साथ साथ दृढ शक्ति की ज़रूरत है।"

"इस बारे मे तो मैं कुछ नही जानता," नेख्लूदोव ने कहा, "मैं दो बार वहा जा चुका हू, लेकिन दोनो ही बार मन बड़ा उदास हुआ।"

"जानते हो, तुम्हे काउटेस पास्सेक से मिलना चाहिए," मास्लेन्निकोव बोला। वह अब बड़े जोश से बाते करने लगा था। "वह अपना सारा वक्त इसी काम को देने लगी है। Elle fait beaucoup de bien * यह उसी की कोशिशो का नतीजा है—और मैं अपनी तारीफ नही करता, किसी हद तक मेरी कोशिशो का भी—कि जेल की सारी व्यवस्था बदल गई है। जो भयानक बाते पहले हुआ करती थी, वे कही तुम्हे देखने को नही मिलेगी। कैदी सचमुच बड़े आराम से रहते है। यह सब तुम खुद देख लोगे। जहा तक फानारिन का सवाल है, वह सचमुच बहुत बुरा आदमी है। मैं उसे खुद नही जानता। मेरी सामाजिक पोजीशन के कारण हमारे रास्ते अलग अलग है। और फिर वह अदालत में ऐसी फिजूल बाते कह देता है, जो उसके मुह मे आता है बक देता है।"

---

*वह बहुत से भलाई के काम करती है। (फ्रेंच)

"अच्छा, तो धन्यवाद," कागज हाथ मे ले कर और बिना उसकी बातो की ओर ध्यान दिये नख्लूदोव ने अपने भूतपूर्व साथी अफसर से छुट्टी ली।

"तो क्या तुम मेरी पत्नी से मिल कर नही जाओगे?"

"माफ करना, मेरे पास इस समय वक्त नही है।"

"ओ हो, वह मुझ पर बेहद नाराज़ होगी," सीढिया उतरते हुए मास्लेनिकोव बोला। आधी सीढियो तक आ कर वह रुक गया। जो लोग बहुत रुतबे वाले हो उन्ह नीचे तक छोडने जाया करता था, जो उनसे कम रुतबे के हो उन्ह आधी सीढियो तक। नेख्लूदोव को वह दूसरे दर्जे मे रखता था। "और नही तो थोडी देर के लिए चले चलो।"

परन्तु नेख्लूदोव दृढ बना रहा। चोबदार ने भाग कर उसे छडी और ओवरकोट दिया, दरबान ने उसके लिए बाहर का दरवाजा खोला। सारा वक्त वह यही कहता रहा कि वह मजबूर है, रुक नही सकता। दरवाज़े के बाहर पुलिस का सिपाही ड्यूटी पर खडा था।

"अच्छी बात है, लेकिन बृहस्पतिवार को जरूर आना। मेरी पत्नी ने दावत दे रखी है। मैं उसे कह दगा कि तुम आ रहे हो," सीढियो पर से मास्लेनिकोव ने कहा।

५१

मास्लेनिकोव के घर से नेख्लूदोव सीधा बग्घी मे बैठ कर जेलखाने की ओर चल पडा, और वहा पहुच कर इन्स्पेक्टर के घर गया। वह अब जानता था कि इन्स्पेक्टर का घर कहा पर है। अब की बार फिर उसे उसी घटिया पियानो की आवाज़ सुनाई दी। लेकिन अब की रैप्सोडी नही बजाई जा रही थी, अब की क्लेमेटी की कुछ लघुरचनाए बजायी जा रही थी। पर वादन उतना ही ओजपूर्ण, स्पष्ट और तेज़ था। नौकरानी ने आ कर कहा कि इन्स्पेक्टर साहिब घर पर हैं और नेख्लूदोव को एक छोटी सी बैठक म ले गयी। वही नौकरानी थी, जिसकी एक आख पर पट्टी बधी थी। बैठक मे एक सोफा रखा था, और उसके सामने एक मेज थी जिस पर एक बडा सा लैम्प रखा था। लैम्प के ऊपर गुलाबी रग के कागज का शेड लगा था, जो एक तरफ से जल गया था। लैम्प

के नीचे क्रोशिये के काम का छोटा सा रूमाल बिछा था। इन्स्पेक्टर ने कमरे मे प्रवेश किया। उसका चेहरा उदास और थका हुआ था।

"तशरीफ रखिये। मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हू?" वर्दी कोट का बीच वाला बटन बन्द करते हुए उसने कहा।

"मैं अभी अभी सहायक गवनर को मिल कर आ रहा हू। उन्होने यह आर्डर दिया है। मैं कैदी माम्लोवा से मिलना चाहता हू।"

"मार्कोवा?" इन्स्पेक्टर ने पूछा। सगीत की वजह से वह नाम स्पष्टतया नही सुन पाया था।

"मास्लोवा!"

"हा हा, ठीक है।"

इन्स्पेक्टर उठ कर दरवाजे की ओर गया जहा से क्लेमेंटी के सगीत की धुने बराबर आ रही थी।

"मारीया, जरा दो मिनट के लिए तो इसे बन्द करो," उसने कहा। उसके लहजे से पता चलता था कि यह सगीत उसकी जान पर आफत बना हुआ है। "एक लफ्ज तक सुनाई नही देता।"

पियानो बन्द हो गया। लेकिन उसकी जगह नाराज कदमो की आवाज आने लगी। फिर किसी ने दरवाजे मे से झाक कर देखा।

सगीत बन्द होने से थोडी देर के लिए वातावरण शान्त हो गया। जान पडता था कि इससे इन्स्पेक्टर को कुछ चैन मिला है। उसने एक मोटा सा सिगरेट सुलगाया, जिसमे कोई हल्का सा तम्बाकू भरा था, और नेख्लूदोव को भी पीने के लिए कहा। नेख्लूदोव ने इन्कार कर दिया।

"मैं मास्लोवा से मिलने आया हू।"

"आज मास्लोवा से मिलना ठीक नही होगा।"

"क्यो?"

"क्या कहू, दरअसल कसूर आपका है," इन्स्पेक्टर ने कहा। उसके होठो पर हल्की सी मुस्कराहट थी। 'देखिये, प्रिंस, आप उसके हाथो मे पैसे मत दिया कीजिये। अगर देना भी चाहे तो मुझे दीजिये। मेरे पास वह रकम जमा रहेगी। कल आपने जरूर उसे कुछ पैसे दिये होगे। उनसे उसने शराब खरीदी—इस इल्लत को दूर करना हमारे लिए बडा मुश्किल है,—और आज वह नशे मे है, और लोगो से हाथापाई तक कर रही है।"

"क्या सच ?"

"मैं ठीक कहता हू। मजबूर हो कर मुझे उसके साथ सख्ती का बर्ताव करना पडा। मैंने उसे दूसरे कमरे में डाल दिया है। या तो वह शान्त स्वभाव की औरत है। पर कृपा कर के आप उसे पैसे न दिया कीजिये। ये लोग इतने "

कल की सारी घटना नेख्लूदोव की आखो के सामने उभर आयी, और उसे फिर भय ने जकड लिया।

"और सियासी कैदी वोगादूखोव्स्काया क्या मैं उस मिल सकता हू ?"

"हा हा, यदि आप मिलना चाहते है तो " इन्स्पेक्टर बोला। उसी वक्त एक छोटी सी पाच छ साल की लडकी कमरे मे आयी और भागती हुई अपने बाप की ओर जाने लगी, लेकिन सारा वक्त सिर टेढा किये नेख्लूदोव की ओर देखती आ रही थी। "क्या क्या है ? देखो, सभल के, गिर पडोगी," इन्स्पेक्टर ने मुस्कराते हुए कहा। लडकी ने ध्यान नही दिया और उसका पाव फर्श पर बिछे कालीन म अटक गया।

"अगर मिलना मुमकिन है तो मैं चलूगा।"

"जरूर मुमकिन है।'

इन्स्पेक्टर ने लडकी को बाहो मे भर लिया। लडकी अब भी नेख्लूदोव की ओर देखे जा रही थी। इन्स्पेक्टर उठ खडा हुआ और बडे प्यार से लडकी को एक तरफ को जाने का इशारा करते हुए ड्योढी मे चला गया।

ड्योढी में खडी नौकरानी ने उसे ओवरकोट पहनाया, और दोनो बाहर जाने को हुए। दरवाजे के पास पहुचे ही थे कि क्लेमेंटी के सगीत की ध्वनिया फिर आने लगी।

"सगीत महाविद्यालय में शिक्षा पाती रही है। लेकिन वहा इतनी बदइन्तजामी है कि क्या कहू। यो इसम सगीत के लिए बडी योग्यता है," सीढिया उतरते हुए इन्स्पेक्टर कहने लगा, "वह कन्सर्टों म भाग लेना चाहती है।"

इन्स्पेक्टर और नेख्लूदोव जेलखाने मे पहुचे। उन्हे देखते ही फाटक खोल दिये गये। वार्डरो ने सैल्यूट मारे और एकटक इन्स्पेक्टर की ओर देखते रहे। चार आदमी जिनके सिर आधे मुडे हुए थे, किसी चीज से भरे टब उठाये लिये जा रहे थे। इन्स्पेक्टर पर नजर पडते ही वे दुबक कर एक तरफ खडे हो गये। उनमे से एक विशेष रूप मे झुक गया, उसके तेवर चढे हुए थे, और काली काली आखें चमक रही थी।

"जो अदर गुण हो तो जरूर सीखना चाहिए, गुण को मरने नहा देना चाहिए। पर आप जानते हैं, छोटे घर मे इससे जी तग पड जाता है," इस्पेक्टर अब भी बातें किये जा रहा था। कैदिया की ओर उसने कोई ध्यान नही दिया। खवामादा, वह अपने पाव घसीटता, नख्लूदोव के आगे हाल मे दाखिल हुआ। "आप किस मिलना चाहते हैं?"

"वोगोदूखोव्स्काया से।"

"ओह, वह तो बुर्ज मे है। आपको थोडा इन्तजार करना पडेगा," उसने कहा।

"तो इस बीच, यदि सभव हो, तो मैं उन दो कैदिया से मिल लूगा—मा और बेटे से। उनका नाम मेन्शोव है। वही जिन पर आग लगाने का जुर्म था।"

"हा, २१ नम्बर कोठरी म हैं। उन्हे बुलाया जा सकता है।"

"क्या मैं मेन्शोव से उसकी कोठरी मे ही नही मिल सकता?"

"लेकिन मैं सोचता हू मुलाकाती कमरे मे ज्यादा आराम रहेगा।"

"नही नही, मैं कोठरी मे मिलना अधिक पसन्द करूगा। वहा ज्यादा दिलचस्प रहेगा।"

"यहा भी दिलचस्पी की कोई चीज़ आपको नज़र आ गई।"

बगल वाले दरवाज़े मे से उसका सहायक अफसर दाखिल हुआ। उसने खूब चुस्त कपडे पहन रखे थे।

"सुनो, प्रिस को २१ नम्बर कोठरी मे मेन्शोव के पास ले जाओ," इस्पेक्टर ने अपने सहायक से कहा। "इसके बाद इन्हे दफ्तर म ले आना। मैं जा कर दूसरे कैदी को बुलाता हू। क्या नाम है उसका?"

"वेरा वोगोदूखोव्स्काया।"

सहायक इस्पेक्टर एक गोरे रग का युवक था, मूछे चुपड कर ऐंठी हुई, कपडो से हल्की हल्की कोलोन के इत्र की खुशबू आ रही थी।

"इस तरफ तशरीफ ले चलिये,' एक मधुर मुस्कान के साथ उसने नेख्लूदोव से कहा। "हमारे जेलखाने मे आपकी दिलचस्पी है?"

"हा हा, जरूर दिलचस्पी है। साथ ही मैं अपना फर्ज़ समझता हू कि किसी इसान की मदद करू जो यहा बन्द है और जिसके बारे मे कहते है कि बेगुनाह है।"

सहायक इन्स्पक्टर ने कधे बिचका दिये।

"हा, ऐसे भी हो जाता है," उसने धीमे से कहा, और बडे तपाक से एक तरफ हट कर खडा हो गया ताकि मेहमान बरामदे में दाखिल हो सके। बरामदे में से दुर्गन्ध की लपटें उठ रही थी। "पर कई बार ऐसा भी होता है कि ये लोग झूठ बोलते हैं। इधर तशरीफ ले चलिये।"

कोठरियों के दरवाजे खुले थे। कुछेक कैदी बरामदे में खड़े थे। वार्डरों की सैल्यूट के जवाब में सहायक इन्स्पेक्टर ने हल्के से सिर हिलाया, और कनखियों से कैदियों की ओर देखा। कैदी दीवार के साथ सट कर खड़े थे। इन्स्पेक्टर को देखते ही या तो वे अपनी कोठरियों में सरक गये, या हाथ लटकाये सिपाहियों की तरह खड़े हो गये और इन्स्पेक्टर की ओर एकटक देखने लगे। एक बरामदा लांघ कर सहायक इन्स्पेक्टर नेख्लूदोव को बायें हाथ एक दूसरे बरामदे में ले गया। दोनों बरामदों के बीच एक लोहे का दरवाजा था।

यह बरामदा पहले बरामदे से ज्यादा तंग और अंधियारा था। बदबू भी यहां पहले से कहीं ज्यादा थी। बरामदे के दोनों तरफ ताले लगे दरवाजे थे जिनमें छोटे छोटे, एक एक इंच व्यास के सूराख थे। यहां केवल एक ही बूढ़ा वार्डर ड्यूटी पर था। उसका चेहरा उदास और झुर्रियों भरा था।

"मेन्शोव कहां है?" सहायक इन्स्पेक्टर ने पूछा।

"बायें हाथ, आठवीं कोठरी में।"

५२

"क्या मैं अन्दर झांककर देख सकता हूं?"

"जरूर, जरूर," सहायक ने मुस्करा कर कहा और फिर वार्डर से कुछ पूछने के लिए थम गया। नेख्लूदोव ने एक छोटे से सूराख में से अन्दर देखा। कोठरी में एक लम्बे कद का युवक, नीचे पहनने के कपड़ों में टहल रहा था। उसके मुंह पर छोटी सी काली दाढ़ी थी। दरवाजे के बाहर किसी की आहट पाकर उसने सिर ऊपर उठाया और भौंह चढ़ा कर देखा, लेकिन फिर भी टहलता रहा।

नेख्लूदोव ने एक दूसरे सूराख में से देखा। अन्दर झांकते ही उसने एक और आंख को देखा, बड़ी सी आंख थी और डरी हुई, जो सूराख में से बाहर उसकी ओर देख रही थी। नेख्लूदोव झट से पीछे हट गया।

तीसरी कोठरी मे एक बहुत ही छोटा सा आदमी तख्ते पर पडा सो रहा था। सिर से पाव तक उसने अपने ऊपर कैदियो का लबादा ओढ रखा था। चौथी कोठरी मे एक आदमी, घुटनो पर कोहनिया रखे बैठा था। उसका चेहरा चौडा और पीला था और सिर बहुत नीचे को झुका था। बाहर कदमो की आवाज सुन कर उसने सिर उठाया और ऊपर को देखा। उसके चेहरे पर, विशेषकर उसकी बडी बडी आखो मे, घोर निराशा का भाव था। स्पष्ट था कि उसे इस बात मे कोई दिलचस्पी नही कि कौन उसकी कोठरी का निरीक्षण कर रहा है। कोई भी हो, कैदी को प्रत्यक्षत उससे किसी अच्छाई की आशा न थी। नेख्लूदोव घबरा उठा और बिना किसी और सूराख मे से झाके सीधा मेन्शोव की २१ नम्बर कोठरी की ओर जाने लगा। वाडर ने ताले मे चाभी लगाई और दरवाजा खोल दिया। एक युवक, सोने वाले तख्ते के पास खडा, जल्दी जल्दी अपना लबादा पहन रहा था। जब उसने आगन्तुको की ओर देखा तो उसके चेहरे पर भय छाया हुआ था। युवक की गर्दन लम्बी और पट्ठे मज़बूत थे। मुह पर छोटी सी दाढी थी और आखें गोल गोल और सदभावना भरी थी। नेख्लूदोव का ध्यान खास तौर पर उन सद्भावना भरी गोल आखो की ओर गया। त्रस्त और प्रश्नसूचक नज़रो से वे कभी नेख्लूदोव की ओर देखती, कभी वाडर की ओर, कभी सहायक इन्स्पेक्टर की ओर, और फिर नेख्लूदोव की ओर देखने लगती।

"ये सज्जन तुम्हारे मुकद्दमे के बारे मे तुमसे कुछ पूछना चाहते हैं।"

"बडी मेहरबानी जी।'

'हा, तुम्हारे बारे मे मुझे बताया गया है," कोठरी को लाघ कर खिडकी की ओर जाते हुए नेख्लूदोव ने कहा। खिडकी गदी थी और उसमे सीखचे लगे थे। "मैं सारी बात तुम्हारे मुह से सुनना चाहता हू।"

मेन्शोव भी खिडकी के पास आ गया, और झट से अपनी कहानी कहने लगा। शुरू शुरू मे तो वह झेंप से सहायक इन्स्पेक्टर की ओर देखता रहा, बाद मे धीरे धीरे उसका साहस बढता गया। जब सहायक इन्स्पेक्टर, कुछ आदेश देने के लिए कोठरी मे से निकल कर बरामदे मे चला गया, तब तो वह बिल्कुल ही निर्भीक हो कर बोलने लगा। बडे स्वाभाविक ढग से उसने अपनी कहानी सुनाई। उसके ढग और लहजे से ही पता लग रहा था कि यह युवक कोई साधारण, भोला भाला किसान

है। नेख्लूदोव हैरान हो रहा था कि यह कहानी उसे एक कैदी सुना रहा है जो हीन लिवास म जेलखान की कोठरी म खडा है। नेख्लूदोव उसकी बात सुन रहा था, पर साथ ही अपने आस-पास की चीजा को दख रहा था। सोन का तख्ता नीचा था, और उस पर फूस का गद्दा बिछा था। खिडकी पर लाह के मोटे सीखचे लगे थ। दीवार गदी और गीली थी। और जेलखान का लबादा और बूट पहन इस अभागे, कुरूप किसान का चेहरा अतिदयनीय था। नख्लूदोव का हृदय अधिकाधिक उदास हो रहा था। उसका मन चाहता था कि जो कुछ यह भोला युवक कहे जा रहा है, वह ग़लत हा। क्या यह सभव है कि एक ऐसे आदमी का पकड कर, जिसका केवल यही दोप है कि उसके साथ स्वय बुरा व्यवहार किया गया है, उसे क़दिया के कपडे पहना कर ऐसी भयानक जगह पर रखा जाय? साच कर ही मन सिहर उठना है। इस युवक की कहानी सुनने म तो सच जान पडती थी। लडके क चेहरे स सरलता टपकती थी। लेकिन क्या मालूम जो कुछ यह कह रहा है झूठ हो, यह कहानी इसने ख़ुद गढ रखी हा। यह साच कर तो मन और भी सिहर उठता है। जो कहानी उसन सुनाई वह यो थी। इस लडके ने शादी की। इनके गाव म एक सराय थी। शादी के फौरन ही बाद सराय के मालिक ने इसकी बीवी को लालच दे कर फसा लिया। यह लडका मारा मारा भटकता रहा कि कोई इसक साथ इन्साफ करे और इसकी बीवी इसे वापस दिला दे। पर यह जहा जाता वही पर सराय का मालिक अधिकारियो को रिश्वत दे कर साफ निकल जाता। एक बार यह जबरदस्ती अपनी बीवी को पकड लाया, लकिन दूसर ही दिन वह भाग गई। यह फिर उसके घर गया। लडकी घर म मौजूद थी। अन्दर जाते वक्त उसने उसे देखा भी था। लेकिन फिर भी सराय के मालिक ने कह दिया कि नही है और इस वहा स चल जाने को कहा। लडके ने जाने से इन्कार कर दिया जिस पर सराय का मालिक और उसका नौकर इस पर पिल पडे और अधमरा कर के छोडा। दूसरे ही दिन सराय म आग लग गई। सराय के मालिक ने इस लडके और इसकी मा को मुजरिम कह कर पकडवा दिया। जिस वक्त आग लगी थी उस वक्त लडका वहा पर मौजूद ही नही था, बल्कि किसी दोस्त को मिलने गया हुआ था।

"सच कहते हो कि तुमन आग नही लगाई?"

"मुझे तो यह सूझा भी नही जनाव। आग खुद मेरे दुश्मन ने लगाई है। कोई जन कह रहा था कि उसने कुछ ही दिन पहले सराय का बीमा करवाया था। अब कहते है कि आग मेरी मा और मैंन लगाई है। यह भी कहते थे कि हमने उन्ह मारने की भी धमकी दी। यह तो सच है कि मैंने उस दिन उसे गाली दी थी। मैं और वरदाश्त नही कर सकता था। पर घर को मैंने आग नही लगाई। उसने खुद आग लगाइ और जुम हमारे सिर मढ दिया। जब आग लगी तो मैं वहा पर था ही नही। लेकिन उसने ऐसा इन्तजाम कर के आग लगाई जब थोडी ही देर पहले मे और मा उधर स गुजरे थे।"

"क्या तुम सच कह रहे हो?"

"भगवान देख रहा है, मैं सच कहता हू जी। आप मुझ पर दया कीजिये, हुजूर " वह झुक कर जमीन पर माथा रखने लगा। नेख्लूदोव बडी मुश्किल से उसे रोक पाया। "मुझ पर दया कीजिये मैंने कोइ क़सूर नही किया, यहा तो मैं पडा पडा मर जाऊगा।"

सहसा उसके होठ कापने लगे। उसने लबादे की आस्तीना म मुह छिपा लिया और रोने लगा, और अपने आसू अपनी गन्दी कमीज की आस्तीन से पोछने लगा।

"क्या बात खत्म हो गई?" सहायक ने पूछा।

"हा। तुम बहुत चिन्ता नही करो। जो मुमकिन हुआ हम करेंग," नेख्लूदोव ने कहा और बाहर निकल गया। मेन्शोव दरवाजे के ऐन पास खडा था, इसलिए वाडर ने दरवाजा बन्द करते हुए उसे धकेल कर हटा दिया। वाडर ने दरवाजे पर ताला चढाया। मेन्शोव छोटे से सूराख म से बाहर झाक झाक कर देखता रहा।

५३

चौडे बरामदे को लाघ कर व फिर वापस जान लगे। बरामदे म बहुत स कैदी खडे थे (खान का वक्त हो गया था और कोठरिया क दरवाजे खुले थे)। हल्के पीले रग के लबादे, छोटी निकरें और कन्पिया के जूते पहन व बडी उत्सुकता से नख्लूदोव की आर देख जा रहे थे।

नेख्लूदोव के मन म एक अजीव मिश्रित सा भाव उठ रहा था। कैदियो के प्रति दया उठती थी। पर उन लोगो के व्यवहार के प्रति जिन्होंने उन्ह यहा बन्द कर रखा था, भय और व्यग्रता का भाव उठता था। इतना ही नहीं, उसे अपने आप पर शर्म आ रही थी कि वह यह सब चुपचाप देखे जा रहा है, हालांकि इस शर्म का कारण वह नहीं जानता था।

एक बरामदे मे कोई आदमी भागता हुआ, जूते खटखटाता, कोठरी के दरवाज़े पर आया। कोठरी मे से कुछेक आदमी बाहर निकले और नेख्लूदोव को सिर निवाने लगे और उसका रास्ता रोक कर खडे हो गये।

"कृपा कीजिये, हुजूर,—हम आपका शुभनाम नही जानते,—हमारा फैसला करवा दीजिये।"

"मैं सरकारी आदमी नही हू। मुझे तुम्हारे मामले का कुछ भी मालूम नही है।"

"फिर भी आप बाहर से आये हैं। किसी से बात कीजिये—ज़रूरत हो तो यहीं के किसी अफसर से बात कीजिये," किसी ने क्रुद्ध आवाज़ म कहा। "यह दूसरा महीना चल रहा है। हम बेकसूर यहा पडे है।"

"क्या मतलब? क्या?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"क्या? हम खुद नही जानते क्यो। पर हम दो महीने से यहा पर बन्द हैं।"

"ठीक है, यह ठीक कहता है। एक हादसा हो गया था, इसी लिए," सहायक इन्स्पेक्टर ने कहा। "इन लोगो के पास पासपोर्ट नहीं थे इस-लिए इन्हे पकडा गया। चाहिए तो यह था कि इन्हे इनके इलाक़े मे वापस भेज दिया जाता, लेकिन वहा के जेलखाने को आग लग गयी, और वहा के अधिकारियो ने हमे लिख भेजा कि इन्हे अभी नहीं भेजें। और लोगो को तो जिनके पास पासपोर्ट नहीं थे, हमने अपने अपने जिले मे वापस भेज दिया है, लेकिन इनको यहीं पर रखे हुए हैं।"

"क्या? क्या इतने से कारण के लिए?" दरवाज़े के पास खडे होते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

लगभग ४० आदमी, जेल के कपडे पहने हुए, नेख्लूदोव और सहायक इन्स्पेक्टर को घेर कर खडे हो गये। कइयो ने एक साथ बोलना शुरू कर दिया। सहायक ने उन्हे चुप करा दिया।

"एक आदमी बोले।"

एक ऊंचा-लम्बा भलामानस सा किसान भीड में से निकल कर सामने आया। उसने नेख्लूदोव को बताया कि सबको जेल में इसलिए बन्द रखा जा रहा है कि उनके पास पासपोट नही हैं। वास्तव में नये पासपोट बनवाने में उन्हें केवल दो हफ्ते की देरी हुई। मगर यह कोई नई बात नहीं है, हर साल नये पासपोट बनवाने में उन्हें थोडी बहुत देरी हो जाती रही है, और कभी किसी ने कुछ नही कहा। पर इस साल उन्हें पकड लिया गया है और मुजरिमो की तरह जेलखाने में रखा जा रहा है।

"हम सब थवई हैं और एक ही आर्तेल* के सदस्य हैं। हमें बताया गया है कि हमारे ज़िले के जेलखाने को आग लग गई है। मगर इसमें हमारा क्या दोष है? कृपा कर के ज़रूर हमारी मदद कीजिये।"

नेख्लूदोव के कान में तो उसकी बात पड रही थी मगर उसे वह समझ नही रहा था। उसकी आंखें एकटक वृद्ध के चेहरे को देखे जा रही थी जिस पर एक मोटी सी जू रेंग रही थी। गहरे भूरे रंग की जू थी, और कितनी ही उसकी टांगें थी।

"ऐसा क्यो? क्या इतनी छोटी सी बात के लिए भी?" सहायक की ओर घूमते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

"हां, इन्हें अपने घरो को वापस भेज दिया जाना चाहिए था," सहायक ने कहा, "लेकिन जान पडता है इन्हें वे भूल गये है, या कोई और बात हो गई है।"

अभी सहायक बोल ही रहा था कि भीड में से एक छोटा सा आदमी आगे बढ आया। उसने भी जेल के कपडे पहन रखे थे और बेहद उत्तेजित था। अजीब ढंग से मुह बिचका कर वह कहने लगा कि उनका कोई कसूर नही फिर भी जेल में उनके साथ बुरा सलूक किया जाता है।

"कुत्तो से भी बुरा..." वह कह रहा था।

"बस, बस, बहुत कह चुके। जबान बन्द करो वरना..."

"वरना क्या?" नाटा आदमी अत्यन्त उत्तेजित हो कर चिल्लाया। "हमारा कसूर क्या है?"

"चुप रहो!" सहायक ने चिल्ला कर कहा और वह आदमी चुप हो गया।

---

*आर्तेल—श्रमिकों का संघ।

"पर इस सब का मतलब क्या है?" बरामदे में से जाते हुए नेख्लूदोव सोच रहा था। कोठरियों के दरवाजों में से अनगिनत आँखें झाँक झाँक कर उसकी ओर देख रही थीं। बरामदे में खड़े बंदी उसकी ओर एकटक देख रहे थे। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे बरामदे के दोनों ओर बंदियों की कतारें खड़ी हों, और हर बंदी उसकी पीठ पर कोड़े लगा रहा हो।

"क्या यह संभव है कि बिल्कुल निर्दोष आदमियों को भी यहाँ रखा जाता है?" बरामदे में से बाहर निकलते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

"आप क्या चाहते हैं, हम क्या करें? लेकिन ये झूठ भी बहुत बोलते हैं। उनकी बात सुनो तो जैसे सबके सब मासूम हों," सहायक इंस्पेक्टर बोला।

"पर इन लोगों ने तो कोई कसूर नहीं किया।"

"ठीक है, यह तो मानना पड़ता है। पर ये लोग बेहद बिगड़े हुए हैं। कोई कोई तो इनमें पल्ले दर्जे के दुष्ट होते हैं। उन पर हमें कड़ी निगरानी रखनी पड़ती है। कल ही हमें ऐसे दो आदमियों को सजा देनी पड़ी।"

"सजा? कैसे?"

"कोड़े लगाने पड़े। हमें हुक्म हुआ था।"

"लेकिन शारीरिक दण्ड की तो कानूनी तौर पर मनाही कर दी गई है।"

"उन लोगों के लिए मनाही नहीं है जिन्हें अधिकारों से वंचित कर दिया गया हो। उन्हें अब भी शारीरिक दण्ड दिया जा सकता है।"

नेख्लूदोव को कल का दृश्य याद हो आया जब वह हॉल में खड़ा इन्तजार कर रहा था। अब उसकी समझ में आया कि उस समय सजा दी जा रही थी। कुतूहल, उदासी, हैरानी—ये सब भावनाएँ एक साथ उसके मन में उठने लगीं। उसकी आत्मा में एक घिन सी उठी, यहाँ तक कि उसे मतली होने लगी। पहले कभी भी वह इतना बेचैन नहीं हुआ था।

बिना सहायक इंस्पेक्टर की बात सुने, और बिना घूम कर देखे, वह जल्दी से बरामदे में से निकल आया और दफ्तर की ओर जाने लगा। इंस्पेक्टर बरामदे में ही था, लेकिन और काम में व्यस्त हो जाने के कारण, बोगोदूखोव्स्काया को बुलाना तक भूल गया था। जब नेख्लूदोव

ने दफ्तर मे पाव रखा तब उसे अपना वचन याद आया कि मैं बोगोदूखोव्स्काया को पहले से बुलवा भेजूगा।

"आप तशरीफ रखिये। मैं अभी उसे बुलवाये लेता हू," उसने कहा।

५४

दफ्तर दो कमरो मे बटा हुआ था। पहले कमरे के एक कोने मे एक काले रग का स्टड रखा था जिस पर कैदियो का कद मापा जाता था। कमरे मे एक टूटा-फूटा अलावघर और दो गन्दी सी खिडकिया थी। दूसरे कोने मे ईसा की एक बडी सी प्रतिमा टगी थी। जिन स्थानो पर लोगो को यत्रणा दी जाती हो, वहा अक्सर ईसा की प्रतिमा टाग दी जाती है। मानो उसके उपदेशो का मज़ाक उडाने के लिए ऐसा किया जाता हो। इस कमरे मे कुछेक वाडर खडे थे। साथ वाले कमरे मे लगभग २० स्त्रिया और पुरुष थे, जो टोलियो मे या जोडो मे बैठे धीमी धीमी आवाज़ मे बाते कर रहे थे। खिडकी के पास एक दफ्तरी मेज़ रखी थी।

इन्स्पेक्टर मेज के सामने बैठ गया, और नेख्लूदोव को अपने पास एक कुर्सी पर बैठने को कहा। नेख्लूदोव बैठ कर कमरे मे बैठे लोगो को देखने लगा।

सबसे पहले उसकी नज़र एक युवक पर पडी। इस युवक का चेहरा बडा प्यारा सा था और उसने छोटी सी जाकेट पहन रखी थी। वह एक स्त्री के सामने खडा बडे उत्साह से हाथ हिला हिला कर बात कर रहा था। स्त्री अधेड उम्र की थी, और उसकी भौंहे काली थी। उनके साथ ही एक बूढा आदमी, आखो पर नीले रग का चश्मा लगाये, एक लडकी का हाथ अपने हाथ मे लिये बैठा था। लडकी ने कैदियो के कपडे पहन रखे थे और बूढे को कोई बात सुना रही थी। एक छोटा सा स्कूली लडका, सहमी हुई आखो से, एकटक बूढे के मुह की ओर देखे जा रहा था। एक कोने मे दो प्रेमी बैठे थे। लडकी छोटी सी और काफी खूबसूरत थी, सिर पर सुनहरी कटे हुए बाल थे, और चेहरे से ओज टपकता था। बडे बढिया कपडे पहन हुए थी। नक्श नाक-नक्श सुन्दर, और बाल घुण्डलदार थे। रबड की जाकेट पहन हुए था। कोने मे बैठे दोनो एक दूसरे से फुसफुसा कर बात कर रहे थे और दोनो प्रेम मे बेसुध हो रहे थे।

मेज़ के सबसे निकट एक सफेद बालो वाली महिला बैठी थी, जिसने सिर से पाव तक काले रग के कपडे पहन रखे थे। उसके पास ही एक दुबला-पतला युवक बैठा था। इस युवक ने भी रबड की जाकेट पहन रखी थी और लगता था जैसे उसे दिक का रोग हो। ज़ाहिर था कि महिला इस लडके की मा है। महिला कुछ कहना चाहती थी लेकिन सिसकिया के कारण बोल न सकती थी। कई बार उसन कोशिश की लेकिन उसे बीच ही मे रुक जाना पडता। युवक की समझ मे नही आ रहा था कि क्या करे। हाथ मे एक कागज पकडे वह उसे बार बार गुस्से से कभी तह करता कभी मरोडता था। उनकी बगल मे एक मोटी-ताजी सुदर लडकी बैठी थी, जिसके चेहरे पर ताज़गी थी और आखें बडी बडी थी। इस लडकी ने भूरे रग की पोशाक पहन रखी थी और ऊपर केप लगाये थी। वह बडे स्नेह से अपनी सिसकिया भरती मा का कधा सहला रही थी। इस लडकी की हर चीज़ सुदर थी उसके बडे बडे सफेद हाथ, छोटे कुण्डलो वाले बाल नाक, होठ। पर उसके रूप का सबसे सुदर अग थी उसकी आखे, सहृदयता और सरलता से भरी, बादामी रग की गोल गोल आखें। जब नेख्लूदोव ने कमरे मे प्रवेश किया तो ये सुन्दर आखें मा पर से क्षण भर के लिए हट कर उसकी आखो से जा मिली। लेकिन वह फौरन घूम गई और मा से कुछ कहने लगी। प्रेमियो से थोडी ही दूरी पर एक सावला सा आदमी, अस्त-व्यस्त बाल, और उदास चेहरा, बडे गुस्से से एक आदमी से बाते कर रहा था जो उससे मिलने आया था। मुलाकाती के दाढी मूछ नही थी और शक्ल-सूरत से हिजडा लगता था।

इन्सपेक्टर की बगल मे बैठा नेख्लूदोव बडे कुतूहल के साथ अपने आस-पास के लोगो को देख रहा था। एक छोटा सा लडका, जिसने हाल ही मे बाल कटवाये थे, उसके पास चला आया और पतली सी आवाज़ मे उससे बातें करने लगा।

"तुम किसका इतज़ार कर रहे हो?"

सवाल सुन कर नेख्लूदोव हैरान हुआ। लेकिन लडके के नन्हे से चेहरे पर गभीरता का भाव देख कर, तथा उसकी चमकती, सतर्क आखो का देख कर जो एकटक उसके चेहरे पर जमी थी, गभीरता से जवाब दिया कि वह अपनी जान पहचान की एक स्त्री का इन्तज़ार कर रहा है।

"क्या वह तुम्हारी बहिन है?" लडके ने पूछा।

"नही, बहिन तो नही है," नेख्लूदोव ने हैरान हो कर ज
दिया। "और तुम, तुम यहा किसके साथ आये हो?" उसने ल
से पूछा।

"मैं? मा के साथ हू। वह सियासी कैदी है," उसने जवाब दि

"मारीया पाव्लोव्ना, आ कर कोल्या को ले जाओ," इन्स्पेक्टर
कहा। प्रत्यक्षत उसे नेख्लूदोव का लडके के साथ बाते करना नियम वि
लग रहा था।

मारीया पाव्लोव्ना वही सुन्दर गोल गोल आखो वाली लडकी
जिसकी ओर नेख्लूदोव का ध्यान आकर्षित हुआ था। ऊची लम्बी, सी
सतर, वह उठी और बडी दृढता से पुरुषो की तरह डग भरती
नेख्लूदोव तथा उस बालक के पास आई।

"यह आपसे क्या पूछ रहा है कि आप कौन है?" नेख्लूदोव की ड
सीधा देखते हुए उसने पूछा। उसके होठो पर हल्की सी मुस्कान थी, ड
बडी बडी सद्भावनापूर्ण आखो से विश्वास छलकता था। इस सादगी
उसने यह सवाल पूछा कि सहज ही यह विश्वास हो जाता था कि
युवती का हर किसी के प्रति बहिनो का सा स्नेह है। इससे भिन्न भाव
उसके हृदय मे उठ ही नही सकती। "यह हर बात जानना चाहता है
ये शब्द उसने लडके की ओर इतने प्यार और सद्भावना के साथ दे
हुए कहे कि लडका और नेख्लूदोव विवश हो कर जवाब मे मुस्कराने लं

"यह मुझसे पूछ रहा था कि मैं किससे मिलने आया हू।"

"मारीया पाव्लोव्ना, तुम जानती हो बाहर के लोगो से बात कर
मना है," इन्स्पेक्टर ने कहा।

"अच्छा, अच्छा,' कहते हुए उसने कोल्या का नन्हा सा हाथ अ
चौडे सफेद हाथ म लिया, और दिक के रोगी की मा के पास लौट गई
बालक उसके चेहरे की ओर बराबर देखे जा रहा था।

"यह नन्हा लडका कौन है?" नेख्लूदोव ने इन्स्पेक्टर से पूछा।

"इसकी मा सियासी कैदी है। यही जेल मे ही यह पैदा हुआ था,
इन्स्पेक्टर ने सन्तोषपूर्ण लहजे म कहा, माना वह यह बता कर ख
हो रहा हो कि देखो, यह हमारा जेलखाना कितनी विलक्षण संस्था है

"क्या यह मुमकिन हो सकता है?"

"जी, क्यो नही, और अब वह अपनी मा के साथ साइबेरिया जा रहा है।"

"और वह युवती?"

"मैं आपके सवाल का जवाब नही दे सकता," इन्सपेक्टर ने कधे बिचकाते हुए कहा। "लीजिये, बोगोदूखोव्स्काया आ गई।"

५५

कमरे के पीछे एक दरवाज़े मे से वेरा बोगोदूखोव्स्काया बल खाती हुई अन्दर चली आ रही थी। उसका चेहरा ज़र्द था, बाल कटे हुए थे, और शरीर दुबला पतला। बडी बडी आखो से सद्भावना टपकती थी।

"बहुत बहुत शुक्रिया, आप आये," नेख्लूदोव के साथ हाथ मिलाते हुए उसने कहा। "तो आप मुझे भूले नही हैं? आइये, कही बैठ जाय।"

"मुझे ख्याल भी न था कि मैं तुम्हे इस स्थिति मे देखूगा।"

"मैं तो बहुत खुश हू। इस स्थिति मे इतना सुख है, इतना सुख है कि मैं इससे बेहतर किसी चीज की इच्छा ही नही कर सकती," अपनी बेहद पतली गर्दन को घुमाते हुए और एकटक नेख्लूदोव की ओर देखते हुए उसने कहा। उसकी गोल, बडी बडी, सद्भावनापूर्ण आखो मे पहले की तरह आज भी भय छाया हुआ था। और पतली किन्तु मजबूत गर्दन को उसके ब्लाउज़ का फटा पुराना, मैला और मुचडा हुआ कॉलर ढके हुए था।

नेख्लूदोव के पूछने पर कि वह कैसे यहा आ पहुची, उसने बडे उत्साह से अपने अनुभवो की कहानी कहनी शुरू कर दी। उसके भाषण मे कुछेक विशेष शब्दो का बार बार प्रयोग होता, जैसे प्रापेगैण्डा, अव्यवस्था, दल, विभाग, उप विभाग, इत्यादि। उसका ख्याल था कि हर कोई इन शब्दो से परिचित होगा, लेकिन नेख्लूदोव ने उन्हे पहले कभी नही सुना था।

उसने नेख्लूदोव को 'नरोदनाया वोल्या'* के सभी भेद बता दिये। प्रत्यक्षत उसे यह विश्वास था कि नेख्लूदोव उन्हे जान कर खुश होगा। लेकिन नेख्लूदोव कभी उसकी पतली सी गर्दन की ओर देखता, कभी उसके बिरले उलझे बालो की ओर और हैरान हो कर सोचता कि वह ऐसी

---

*'नरोदनाया वोल्या' (जनता की आज़ादी)—पिछली सदी की आठवी दशाब्दी का एक क्रातिकारी सगठन।

बाते क्या करती रही है और अब मुझे उनके बारे म क्या सुना रही है। उसका दिल इस लडकी के प्रति अनुकम्पा से भर उठा, परन्तु यह दयाभावना उस दयाभावना से भिन्न थी जो उसके हृदय मे उस निर्गीत किमान मेशाव के प्रति उठी थी जो इस बदबूदार जेलखाने म पडा सड रहा था। इस लडकी की स्थिति दयनीय इसलिए थी कि उसके विचार बेहद उलझे हुए थे। यह तो स्पष्ट था कि वह अपने को एक वीरागना समझे बैठी थी जो अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए जान हथेली पर लिए जी रही थी। परन्तु वह लक्ष्य क्या था और उसकी सिद्धि किस बात में है, यह उसके लिए बताना बडा कठिन था।

जिस काम के लिए वेरा बागोदूखोव्स्काया ने नेख्लूदोव से मिलने की इच्छा प्रकट की थी, वह इस प्रकार था। लगभग पाच महीने पहले शस्तोवा नाम की उसकी एक सहेली गिरफ्तार हुई थी और पीटर-पॉल किले म बन्द थी। यह लडकी निर्दोष थी, उस तथाकथित उप विभाग की सदस्या भी नही थी जिसमे बागोदूखोव्स्काया स्वय काम करती थी। उसे पकडा इसलिए गया था कि उसके पास अवैध साहित्य पाया गया था जो किसी और का देने के लिए उसने रखा हुआ था। अपनी उस मित्र की गिरफ्तारी के लिए वेरा किसी हद तक अपने को दोषी समझती थी, इसी लिए वह चाहती थी कि नेख्लूदोव उसे रिहा करवाने की पूरी पूरी कोशिश करे। चूकि नेख्लूदोव का अधिकारियो से मेल-जोल था, इसलिए उसने सोचा कि यह सभव होगा। इसके अतिरिक्त उसने अपने एक दूसरे मित्र, गुर्केविच का भी जिक्र किया। वह भी पीटर-पॉल किले मे बन्द था। वह चाहती थी कि नेख्लूदोव उसे अपनी मा से मिलने की इजाजत ले दे, और उसके अध्ययन के लिए कुछेक विज्ञान-सम्बन्धी पुस्तको के पहुचाने का प्रबन्ध कर दे।

नेख्लूदोव ने उसे आश्वासन दिया कि जब भी वह पीटर्सबर्ग जायगा तो जो कुछ भी उससे बन पडा, करेगा।

जो कहानी उसने अपने बारे मे सुनाई वह यो थी। दाइया का कोर्स पूरा करने के बाद उसका सम्पर्क 'नरोदनाया वोल्या' के अनुयाइयो के एक दल से हो गया। पहले तो सब काम सुभीते से चलता गया। वे लोग घोषणाए लिखते और फैक्ट्रियो मे प्रचार का काम करते। फिर एक दिन दल का एक प्रमुख सदस्य पकडा गया। अधिकारियो के हाथ जरूरी कागजात पड गये जिनसे सभी सम्बन्धित लोग गिरफ्तार कर लिये गये।

"मैं भी पकडी गई। अब मुझे भी निवासित कर दिया जायेगा। पर क्या हुआ? मैं तो बेहद खुश हू।" यह कहते हुए, उसने अपनी कहानी समाप्त की। उसके होठो पर दयनीय मुस्कान खेल रही थी।

नेख्लूदोव ने उससे उस बडी बडी आखो वाली लडकी के बारे मे पूछा। वेरा ने बताया कि वह एक जनरल की बेटी है और मुद्दत से क्रान्तिकारी पार्टी के सम्पर्क म है। अदालत म यह कबूल करने पर कि उसने राजनीतिक पुलिस के एक सिपाही पर गोली चलाई थी उसे जेलखाने मे बन्द कर दिया गया। वह कुछेक षड्यन्त्रकारियो के साथ एक घर मे रहा करती थी। उसी घर मे उन्होने छिपा कर एक छापाखाना रखा हुआ था। एक रात, पुलिस उस घर की तलाशी लेने आ पहुची। घर वालो ने उनका मुकाबिला करने की ठान ली और बत्तिया बुझा कर उन सब चीजो को नष्ट करना शुरू कर दिया जिनके कारण उन पर अभियोग चल सकता था। पुलिस दरवाजे तोड कर अन्दर घुस आई। किसी षडयन्त्रकारी ने गोली चला दी जिससे एक सिपाही को घातक चोट लगी। जब जाच शुरू हुई तो इस लडकी ने कहा कि गोली उसने चलायी थी, हालाकि वास्तव मे उसने कभी रिवाल्वर को हाथ तक नही लगाया था, और किसी पक्षी तक पर हाथ नही उठा सकती थी। पर वह अपने बयान पर डटी रही, और अब उसे कडी मशक्कत की सजा दे कर साइबेरिया भेजा जा रहा है।

"बडी परोपकारी लडकी है, बहुत अच्छी लडकी है," वेरा बोगादूखोव्स्काया ने उसकी सराहना करते हुए कहा।

तीसरी बात वह मास्लोवा के बारे मे कहना चाहती थी। मास्लोवा के जीवन के बारे मे, तथा नख्लूदोव के साथ उसके सम्बन्ध के बारे मे वह जानती थी—जेलखाने मे इस तरह की बाते सभी को पता चल जाती हैं। वेरा ने यह परामर्श दिया कि या तो नेख्लूदोव उसकी सियासी कैदियो के वार्ड म बदली करा दे, या उसे जेल के अस्पताल मे भिजवा दे जहा वह रोगियो की टहल-सेवा कर सके। इस समय अस्पताल मे रोगियो की सख्या बहुत ज्यादा थी जिस कारण नर्सों की बहुत जरूरत थी। इस परामर्श के लिए नेख्लूदोव ने उसका धन्यवाद किया और कहा कि वह जरूर इस पर अमल करने की कोशिश करेगा।

५६

यह कह कर उसकी बातचीत कट गई। इन्स्पेक्टर उठ खड़ा हुआ और बोला कि मुलाकात का वक्त खत्म हो चुका है, इसलिए कैदियों और उनसे मिलनेवालों को एक दूसरे से विदा लेनी होगी। नेख्लूदोव ने उस से विदा ली और दरवाजे पर जा कर खड़ा हो गया और वहां का दृश्य देखने लगा।

"सज्जनो, वक्त खत्म हो चुका है, वक्त खत्म हो चुका है!" इन्स्पेक्टर बार बार कह रहा था। वह कभी उठता और कभी बैठ जाता।

इन्स्पेक्टर का हुक्म सुन कर कमरे में लोग और भी अधिक उत्साह से बात करने लगे। कोई भी बाहर नहीं गया। कुछ लोग उठ खड़े हुए, और खड़े खड़े बातें करने लगे। कुछ बैठे बैठे ही बात करते रहे। कुछेक ने रोना शुरू कर दिया और एक दूसरे से विदा लेने लगे। मां और उसके तपेदिक के रोगी बेटे की विदाई का दृश्य सचमुच मर्मस्पर्शी था। लड़का अब भी कागज के टुकड़े को मरोड़े जा रहा था, उसके चेहरे से लगता था कि वह बहुत क्रुद्ध है। वह भरसक कोशिश कर रहा था कि उसकी मां की भावना का उस पर असर न हो। जब मां ने यह सुना कि विदा लेने का वक्त आ गया है तो लड़के के कंधे पर सिर रख कर फफक फफक कर रोने लगी। गोल गोल, सद्भावनाभरी आंखों वाली लड़की—नेख्लूदोव अनचाहे उसकी ओर देखे जा रहा था—सिसकती मां के सामने खड़ी उसे ढाढ़स बंधाने के लिए कुछ कह रही थी। नीली ऐनक वाला वृद्ध, अपनी बेटी का हाथ पकड़े खड़ा था, और बेटी जो कुछ कहती उसके जवाब में बार बार सिर हिला रहा था। युवा प्रेमी उठ खड़े हुए थे, और एक दूसरे का हाथ पकड़े, चुपचाप एक दूसरे की आंखों में देख जा रहे थे।

"यहां पर केवल यही दो खुश हैं," प्रेमियों की ओर इशारा करते हुए, नेख्लूदोव की बगल में खड़े छोटा सा कोट पहने युवक ने कहा। वह भी जुदा होते लोगों को देखे जा रहा था।

जब प्रेमियों को—रबड़ की जाकेट वाले लड़के और सुंदर युवती को—यह भास हुआ कि नेख्लूदोव और युवक उनकी ओर देख रहे हैं, तो उन्होंने बांहें फैला दीं और एक दूसरे का हाथ पकड़ कर गोल चक्कर में नाचने लगे।

"आज रात को इनकी शादी है। यहीं जेलखाने में। उसके बाद लडकी उसके साथ साइबेरिया जायेगी," युवक ने बताया।

"वह क्या?"

"कैदी है। बडी मशक्कत की सजा हुई है। चलो, कम से कम इन दोनों को तो कुछ खुशी नसीब हो। यहां पर तो क्लेश ही क्लेश है," तपेदिक के रोगी की मां की सिसकियों को सुनते हुए युवक ने कहा।

"अच्छा, भले लोगो, अब कृपा करो और मुझे मजबूर न करो कि मैं कोई सख्त कदम उठाऊं," इन्स्पेक्टर ने कहा और बार बार इन शब्दों को दोहराने लगा। "कृपा करो!" शिथिल, सकोचपूर्ण आवाज में वह कहे जा रहा था, "वक्त कब का खत्म हो चुका है। आपका आखिर मतलब क्या है? इस तरह की बात नहीं चल सकेगी अब मैं आखिरी बार आपसे कह रहा हूं," उसने थकी हुई आवाज में कहा और अपनी सिगरेट बुझा कर दूसरी सिगरेट जला ली।

अपने को जिम्मेवार न ठहराते हुए दूसरों को दुख पहुंचाने का अधिकार रखने की लोगों की दलीलें भले ही कितनी भी कुशल, कितनी भी पुरानी, कितनी भी परिचित क्यों न हों, फिर भी जाहिर था कि इस कमरे में जो क्लेश लोगों को पहुंच रहा था, उसके लिए इन्स्पेक्टर अपने को चाहते हुए भी सर्वथा निर्दोष नहीं समझ सकता था। जाहिर था कि उसे यह बात बेचैन किये हुए थी। वह जानता था कि इन लोगों को दुख पहुंचाने वालों में से वह भी एक है।

आखिर कैदी अपने अपने मुलाकातियों से जुदा होने लगे। कैदी अन्दर वाले दरवाजे से और मुलाकाती बाहर वाले दरवाजों से जाने लगे। रबड की जाकेटों वाले आदमी, और तपेदिक का रोगी लडका और वह आदमी जिसके बाल अस्त-व्यस्त थे, सब चले गये। मारीया पाव्लोव्ना भी उस लडके के साथ चली जो जेल में पैदा हुआ था।

मिलने वाले भी चले गये। नेख्लूदोव के आगे आगे नीली ऐनकों वाला वृद्ध, कदम घसीटता हुआ चला जा रहा था।

"सचमुच बडी विचित्र स्थिति है," नेख्लूदोव के साथ सीढियां उतरते हुए बातूनी युवक कह रहा था, मानो टूटे हुए वार्तालाप की कडी फिर से जोड रहा हो। "फिर भी हम इन्स्पेक्टर के बडे कृतज्ञ हैं। बहुत अच्छा आदमी है, नियमों की बहुत परवाह नहीं करता। इन लोगों के लिए

इतना भी वहुत है कि थोडी देर के लिए एक दूसरे से बात कर ले। इनसे इनके दिल का गुबार कुछ हल्का हो जाता है।"

"दूसरे जेलो म क्या ऐसी मुलाकातो की इजाजत नही?"

"हा-हा! नाम भी मत लो। अकेले म नही मिलना चाहते जनाव? वह भी जाली के आर पार?"

इस युवक ने अपना परिचय कराते हुए कहा था कि इसका नाम मेदिन्तसेव है। इससे बाते करते हुए नेख्लूदोव हॉल म पहुचा, जहा उहे इन्सपक्टर मिला जो उसी तरह थका मादा उनकी ओर चला आ रहा था।

"यदि आप मास्लोवा से मिलना चाहते हैं, तो कृपया कल आइये," प्रत्यक्षत नेख्लूदोव के प्रति विनम्रता दिखाने की इच्छा रखते हुए उसने कहा।

"अच्छी बात है," नेख्लूदोव ने जवाब दिया और जल्दी जल्दी वहा से निकल गया।

मेशोव की यन्त्रणा, जो प्रत्यक्षत निर्दोष था, बडी भयानक थी। परन्तु उसकी शारीरिक यन्त्रणा से भी बढ कर भयानक उसकी मानसिक व्यग्रता थी, भगवान तथा मनुष्य की अच्छाई मे अविश्वास था। यह व्यग्रता और अविश्वास वरबस उसके मन म उठते जब वह इन लोगो की निदयता को देखता जो बिना किसी कारण के उसे यत्रणा पहुचा रहे हैं। बीसियो निर्दोष लोगो को भयानक तिरस्कार और यातना सहनी पडती, केवल इसलिए कि कागजो पर कोई बात जिस तरह लिखी जानी चाहिए थी वसे नही लिखी गई थी। वाडर भी भयानक थे जिनका स्वभाव ही ववर हो गया था। इनका काम ही अपने भाइयो को यत्रणा पहुचाना था। उहे विश्वास था कि वे अपना कतव्य निभा रह है जो महत्वपूर्ण और उपयोगी है। परन्तु इन सबसे भयानक यह दुबला-पतला, ढलती उम्र का, नेक दिल इन्स्पेक्टर था, जिसे मजबूर हो कर मा को बेटे से, और बाप को बेटी से अलग करना पडता था। आखिर इन लोगो का भी तो सम्बध वसा ही था जसा कि इन्स्पेक्टर का अपने बच्चो से था।

"यह सब किस लिए?" नेख्लदोव ने मन ही मन पूछा। जब भी वह जेलखाने मे आता तो उसकी आत्मा बेचैन हो उठती, और यह बेचनी मतली का रूप ले लेती। आज तो पहले से भी बढ कर उसकी यह दशा हुई, और इस प्रश्न का कोई उत्तर उसे नही सूझ पाया।

दूसरे दिन नेख्लूदोव वकील से मिलने गया, और उससे मेंशाव मा और बेटे की स्थिति के बारे मे बात की और उससे आग्रह किया कि उनके मुकद्दमे की पैरवी करे। वकील ने वचन दिया कि वह मुकद्दमे की जाच करेगा, और यदि नेख्लूदोव का कहना ठीक निकला–जैसा कि बहुत सभव जान पडता था–तो उसकी पैरवी मुफ्त करेगा। फिर नेख्लूदोव ने उन १३० आदमियो का ज़िक्र किया जिन्हें किसी भूल के कारण जेलखाने मे रखा जा रहा था।

"किसे यह फ़ैसला करना है? किस का कसूर है?"

वकील क्षण भर के लिए चुप रहा। ज़ाहिर है वह सवाल का ठीक ठीक जवाब देना चाहता था।

"किस का कसूर है? किसी का भी नही," उसने निश्चयपूर्वक कहा। "सरकारी वकील से पूछिये तो वह कहेगा गवर्नर का कसूर है, गवर्नर से पूछिये तो वह सरकारी वकील का कसूर बतायेगा। किसी का भी कसूर नही।"

"मैं अभी सहायक गवर्नर से मिलने जा रहा हू। मैं उससे बात करूगा।"

"इसका कुछ फायदा नही," वकील ने मुस्करा कर कहा, "वह तो, क्या कहू–कही वह आपका मित्र या सम्बन्धी तो नही?–वह तो निरा काठ का उल्लू है। फिर भी अपना काम साधना खूब जानता है।"

नेख्लूदोव को मास्लेन्निकोव के शब्द याद आ गये जो उसने वकील के बारे में कहे थे, और बिना कुछ भी जवाब में कहे उससे विदा ली और मास्लेन्निकोव को मिलने चल दिया।

मास्लेन्निकोव से उसे दो काम थे एक तो यह कि मास्लोवा को जेल के अस्पताल मे भेज दिया जाय, और दूसरा उन १३० आदमियो के बारे में जिन्हें बिना किसी कसूर के, पासपोर्ट न होने के कारण, जेलखाने मे रखा जा रहा था। एक ऐसे आदमी के सामने गिडगिडाना जिसके प्रति मन में कोई आदर भाव न हो, नेख्लूदोव के लिए बडा कठिन था, मगर वह क्या करता, अपना काम निकालने का यही एक तरीका था और वह उसे अपनाना पडा।

जब नेख्लूदोव बग्घी में बैठ कर मास्लेन्निकोव के घर पहुचा तो उसने

पाया कि बहुत सी गाडिया फाटक के सामने खडी हैं। उसे याद हो आया कि आज सहायक गवनर की पत्नी का दावत का दिन है जिस पर उस भी आमन्त्रित किया गया था। जिस वक्त नेख्लूदोव की गाडी पहुची उसी वक्त दरवाजे के सामने एक गाडी खडी थी, और एक वावर्दी चोबदार, टापी म रिब्बन लगाये, एक महिला को घर की बाहरी सीढिया उतरवा रहा था। महिला ने अपने गाउन को हल्के से ऊपर उठा रखा था जिससे उसके नाजुक टखने, काले लम्बे मोजे और जूते नजर आ रहे थे। गाडियो मे एक बन्दगाडी, लैण्डो, भी थी। नेख्लूदोव जानता था कि यह गाडी कोर्चागिन परिवार की है। गाडी पर उनका कोचवान बैठा था—सफेद बाल, लाल लाल गाल—उसने टोपी उतारी और सिर झुका कर बड़े अदब से, और साथ ही बडे मैत्रीपूण ढग से अभिवादन किया, जैसे किसी सुपरिचित व्यक्ति का किया जाता है। नेख्लूदोव मास्लेनिकोव के बारे म पूछने जा ही रहा था जब उसने देखा कि वह एक बहुत ही प्रतिष्ठित मेहमान के साथ साथ सीढिया उतरता हुआ चला आ रहा है। सीढियों पर कालीन बिछा था। मास्लेनिकोव उसे आधी सीढिया तक नही बल्कि नीचे तक छोडने जा रहा था। यह अति प्रतिष्ठित मेहमान कोई फौजी आदमी था, और फ्रासीसी भाषा मे किसी लॉटरी की चर्चा कर रहा था जिसके पैसे से शहर मे अनाथालय खोले जायेंगे। वह कह रहा था कि स्त्रियो के लिए लाटरियो के लिए काम करना बडा अच्छा है। "इससे उनका मनबहलाव होता है, और हमे पैसे मिलते हैं।"

"Qu elles s amusent et que le bon dieu les benisse* ओह, नेख्लूदोव! कहो कैसे हो? बहुत दिन हो गये, कभी नजर नही आये?" नेख्लूदोव का अभिवादन करते हुए उसने कहा। Allez presenter vos devoirs a madame** कोर्चागिन भी आये है, और नादीना बुक्सगेव्देन भी यही पर है। Toutes les jolies femmes de la ville*** प्रतिष्ठित मेहमान ने कहा और अपने वावर्दी कन्धे तनिक ऊपर को उठा दिये ताकि उसका नौकर

---

*इनका मनबहलाव हो और ईश्वर उन्ह आशीश दे (फ्रेंच)

**जाओ, गृह-स्वामिनी को अपना आदर प्रकट करो। (फ्रेंच)

***शहर की सभी सुदरिया, (फ्रेंच)

उसे फौजी बरानकोट पहना सके। नौकर ने भी बहुत बढिया वर्दी पहन रखी थी। "Au revoir, mon cher!"* और उसने मास्लेनिकोव का हाथ दबाया।

"आओ, अब चलो। मुझे बहुत खुशी है कि तुम आ गये," नख्लूदोव का हाथ अपने हाथ मे लेते हुए मास्लेनिकोव ने उत्तेजित स्वर मे कहा। मास्लेनिकोव मोटा था, फिर भी जल्दी जल्दी सीढियां चढने लगा।

मास्लेनिकोव खास तौर पर खुश था। इतने बडे आदमी ने उसके साथ बातें जो की थी। ऐसा सोचा जा सकता था कि स्वय जार की रेजिमेंट मे रह चुकने के बाद उसे राजपरिवार के लोगों से मिलने की आम आदत हो जानी चाहिए, लेकिन जान पडता है कि नीच की नीचता उसे पुचकारने से बढती ही जाती है और हर बार किसी बडे आदमी का ध्यान पा कर वह उसी तरह खुश होता जिस तरह कोई वफादार कुत्ता खुश होता है जब उसका मालिक उसे थपथपाये, सहलाये या उसके कान खुजलाये। वह अपनी दुम हिलाता है, कदमो मे लोटता है, उछलता है, अपने कान दबा लेता है और जोर जोर से चक्कर लगाने लगता है। मास्लेनिकोव भी यही कुछ करने के लिए तत्पर था। नख्लूदोव का चेहरा गभीर हो रहा था, लेकिन मास्लेनिकोव ने नही देखा, न ही उसके शब्दो की ओर कोई ध्यान दिया, बल्कि उसे खीचता हुआ बैठक की ओर ले गया। पीछे पीछे चलते जाने के सिवाय नेख्लूदोव के सामने कोई चारा नही था।

"काम बाद मे होता रहेगा। जो कहोगे कर दूगा," नाचने वाले हॉल मे से नेख्लूदोव को ले जाते हुए मास्लेनिकोव ने कहा। फिर बिना रुके अपने चोबदार से बोला, "अन्दर जा कर कहो कि प्रिंस नेख्लूदोव आये हैं।" चोबदार भागता हुआ उनके आगे निकल गया। "Vous n'avez qu'a ordonner"** पहले तुम्हे जरूर मेरी पत्नी से मिलना होगा। पिछली बार उसे बिना मिले चले गये तो उसने मेरी अच्छी गत बनाई।"

---

*अलविदा, मेरे प्रिय! (फ्रेंच)

**तुम्हे हुक्म भर देना होगा। (फ्रेंच)

उनकी बैठक तक पहुचने से पहले ही चोबदार ने अन्दर जा कर सूचना दे दी थी। सहायक गवनर की पत्नी आना इग्नात्येव्ना स्त्रिया से घिरी बैठी थी जिन्होंने बढिया वानेट लगा रखे थे। खिल कर मुस्कराते हुए उसने नेख्ल्दोव का स्वागत किया। बैठक के दूसरे सिरे पर कुछ स्त्रिया चाय की मेज़ के इदगिद बैठी थी। उनके नज़दीक ही कुछ फौजी और गैरफौजी आदमी खडे थे। स्त्रिया और पुरुष खब चहक चहक कर बातें कर रहे थे।

"Enfin! * हमने तो सोचा तुम हमें भूल ही गये हो! हमने क्या कसूर किया है?"

इन शब्दो से आना इग्नात्येव्ना ने नवागन्तुक का स्वागत किया। वह दिखाना चाहती थी कि नेख्लूदोव के साथ उसकी गहरी घनिष्ठता है, हालांकि वास्तव मे उनमे कोई घनिष्ठता नही थी, न कभी रही था।

"तुम इन्हे जानते हो?—मदाम बेल्यावस्काया, मि० चेर्नोव। ज़रा नज़दीक बैठो। मिस्सी, venez donc a notre table On vous apportera votre the ** और तुम," उसने एक अफसर से कहा जो मिस्सी के साथ बाते कर रहा था, जान पडता था जसे वह अफसर का नाम भूल गई हो, "इधर आ जाओ। चाय का प्याला बनाऊ प्रिस?"

"मैं तुम्हारे साथ बिल्कुल सहमत नही हू, बिल्कुल नही। सीधा सी बात है। वह उससे प्यार नही करती थी," किसी स्त्री की आवाज़ आ रही थी।

"पर उसे चाट मिठाइयो से तो प्यार था।"

"उफ! हमेशा ऐसे ही भाडे मज़ाक सूझते हैं," किसी दूसरी स्त्री ने हसते हुए कहा। स्त्री रेशमी कपडो, हीरे-सोने मे चमचमा रही थी।

"C'est excellent *** ये छोटी छोटी बिस्कुटें तो बहुत अच्छी हैं। कितनी हल्की हैं! मैं तो एक और लूगी।"

---

*अतत! (फ्रेंच)

**हमारी मेज़ पर आ जाओ। तुम्हारी चाय यहा आ जायेगी (फ्रेंच)

***लाजवाब, (फ्रेंच)

"क्या तुम जल्दी ही शहर से चली जाओगी?"

"हा, आज हमारा यहा आखिरी दिन है। इसी लिए हम आ गये हैं।"

"ठीक है। देहात मे तो बहुत अच्छा होगा। इस बार तो वसन्त कैसा खिल कर आया है!"

मिस्सी, टोप पहने और किसी गहरे रग की चुस्त, धारीदार पोशाक पहने, बडी सुदर लग रही थी। नेख्लूदोव को देखते ही वह शर्मा गई।

"ओह, मैंने तो सोचा था कि तुम चले गये हो," उसने नेख्लूदोव से कहा।

"बस जल्दी ही चला जाऊगा। काम की वजह से शहर मे रुका हुआ हू। यहा भी काम के ही कारण आया हू।"

"Maman को मिलने नही आओगे क्या? वह तुम्हे मिल कर बहुत खुश होगी," उसने कहा। यह जानते हुए कि जो कुछ वह कह रही है, वह सच नही है, और नख्लूदोव भी जानता है कि वह सच नही है, मिस्सी और भी शर्मा गयी।

"उमीद नही कि मुझे वक्त मिल सके," नेख्लूदोव ने गभीरता से जवाब दिया यह दिखाने की कोशिश करते हुए कि उसने मिस्सी को शर्माते हुए नही देखा।

मिस्सी ने गुस्से से भौह सिकोडी, कधे उचकाये और बाके अफसर की ओर घूम गई। अफ़सर ने मिस्सी के हाथ से खाली प्याला ले लिया, और बडे जवामर्दों की तरह उसे उठाये हुए दूसरी मेज पर रखने के लिए चला गया। जाते हुए, जगह जगह उसकी तलवार कुर्सियो के साथ टकरा रही थी।

"तुम्हें जरूर अनाथालय के लिए दान देना चाहिए।"

"मैंने इन्कार तो नही किया। मैं तो केवल इतना चाहता हू कि मैं यह दान लॉटरी के लिए तैयार रखू। उस वक्त देने पर इसकी शान होगी।"

"अच्छा तो भूलना नही!" किसी ने कहा और उसके बाद हसने की आवाज आई। हसी प्रत्यक्षत बनावटी थी।

आन्ना इग्नात्येव्ना तो जैसे हवा मे उड रही थी। उसकी पार्टी बेहद कामयाब रही थी।

"मीशा ने कहा था कि तुम जेल-सुधार का काम करने लगे हो। मैं तो सच बड़ी प्रशंसा करती हूं,' उसने नेख्लूदोव से कहा। "मीशा से कितनी ही बार इस ... उसका दिल बड़ा कोमल है। (मीशा से मतलब उस का मोटा पति मास्लेन्निकोव था।) इन बेचारे कैदियों का यह सारा कष्ट वह समझ सकता है। और बुरा तो वह बिलकुल ही नहीं सकता। Il est d'une bonté "*

वह रुक गई। उस मोटे पति के bonté को अभिव्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द नहीं सूझ रहे थे। और यह पति वही था जिसके आदेश से लोगों को कोड़ों से पीटा जाता था। उसी समय एक बुढ़िया ने बड़ बूढ़ महिला ने कमरे में प्रवेश किया और वह मुस्कराते हुए उसकी ओर घूम गई। बुढ़िया ने बैंगनी रंग के रिबन लगा रखे थे।

औपचारिकता निभाने के लिए जो दो शब्द कहने जरूरी थे, नेख्लूदोव ने कहे और उठ कर मास्लेन्निकोव के पास चला गया। इन औपचारिक शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता।

"क्या दो मिनट मेरी बात सुन सकते हो?"

"हां, हां, क्या नहीं? कहो, क्या है? आओ, इधर अन्दर बैठ जाते हैं।"

दोनों एक छोटी सी जापानी सजावट की बैठक में खिड़की के पास जा कर बैठ गये।

५८

"अच्छा तो je suis à vous** सिगरेट पियोगे? ज़रा ठहरो, मैं कोई इन्तज़ाम कर लूं। कहीं यहां कुछ खराब हो गया, तो," मास्लेन्निकोव ने कहा और एक राखदानी उठा लाया। "अब कहो।"

"मुझे तुमसे दो काम हैं।"

"अच्छा!"

मास्लेन्निकोव का मुंह लटक गया। वह उत्तेजना एकदम हवा हो गई, जो मालिक के कान खुजलाने पर कुत्ते में पैदा हो जाती है। बड़ी बैठक

---

*वह इतना दयालु है (फ्रेंच)

**मैं तुम्हारी सेवा में हाजिर हूं। (फ्रेंच)

मे से लोगो की ग्रावाजें ग्रा रही थी। कोई स्त्री कह रही थी—"Jamais, jamais je ne croirais!"* दूसरी ग्रोर से किसी ग्रादमी की ग्रावाज ग्रा रही थी, जो कोई वार्ता सुना रहा था जिसमे काउटेस वोरोन्त्सोवा ग्रौर विक्तोर ग्रप्राक्सिन का नाम बार बार ग्रा रहा था। किसी तीसरी ग्रोर से बातो की भनभनाहट ग्रौर हसी की मिली-जुली ग्रावाजें ग्रा रही थी। मास्लेनिकोव एक कान से इन ग्रावाजो को सुनने की कोशिश कर रहा था ग्रौर दूसरे कान से नेख्लूदोव की बात को।

"मैं फिर उसी ग्रौरत के बारे मे तुमसे मिलने ग्राया हू," नेख्लूदोव ने कहा।

"हा, हा, मैं जानता हू। वही न, जो बेकसूर है लेकिन उसे सजा दी गई है?"

"मैं चाहता हू कि उसे जेल के ग्रस्पताल मे भेज दिया जाय। वहा पर वह कोई काम करे। मुझे मालूम हुग्रा है कि यह मुमकिन है।"

मास्लेनिकोव होठ भीच कर सोचने लगा।

"मुश्किल है," उसने कहा, "फिर भी मैं देखूगा, जो बन पडा कर दूगा। मैं कल तुम्हें इसका जवाब तार द्वारा भेज दूगा।"

"मुझे मालूम हुग्रा है कि वहा बीमारो की सख्या काफी ज्यादा है ग्रौर सहायता की जरूरत है।"

"ग्रच्छी बात है, ग्रच्छी बात है। मैं जरूर तुम्हे इत्तला करूगा।"

"जरूर, बडी कृपा होगी," नेख्लूदोव ने कहा।

बडी बैठक मे से लोगो के हसने की ग्रावाज ग्राई। उनमे से कोई कोई स्वाभाविक हसी भी हस रहे थे।

"यह सब उस विक्तोर के कारण है। जब तरग मे हो तो किसी को सामने टिकने नही देता," मास्लेनिकोव बोला।

"दूसरी बात जो मैं तुमसे कहना चाहता था, वह यह थी," नेख्लूदोव कह रहा था, "जेल मे १३० ग्रादमी महज इसलिए बन्द है कि उन्होंने ग्रपने पासपोर्ट नये नही बनवाये। एक महीने से ज्यादा ग्रर्से से वे वहा पडे हुए हैं।"

---

*कभी नही, कभी नही मान सकती! (फ्रेंच)

और उसने उनकी स्थिति का ब्योरा दिया।

"तुम्हे यह कैसे मालूम हुआ?" मास्लेनिकोव ने पूछा। उसके चेहरे पर असन्तोष और घबराहट नजर आने लगी।

"मैं एक कैदी को मिलने गया, और इन लोगो न वरामदे म मुझे घेर लिया और मुझसे पूछने लगे ..."

"तुम किस कैदी से मिलने गये थे?"

"एक किसान कैदी। वह भी निर्दोष है और उसे भी जेल म रखा हुआ है। इसका मुकद्दमा तो मैंने एक वकील को पैरवी करने क लिए दे दिया है। लेकिन सवाल यह नही है। मैं यह पूछना चाहता हू कि क्या यह मुमकिन है कि जिन लोगा ने कोई जुर्म न किया हो, उन्हे महज इसलिए जेल मे रखा जाय कि उन्होने नये पासपोर्ट बनवाने मे देर कर दी है? और ..."

"यह काम तो सरकारी वकील का है," गुस्से से बात काटते हुए मास्लेनिकोव ने कहा। "अब देख लिया तुमने! तुम कहते थे कि इस ढग से मुकद्दमे किये जाय तो फौरी फैसला होता है और इन्साफ से होता है। देख लिया नतीजा? यह फर्ज सरकारी वकील का है कि जेलखाने मे जा कर जाच करे कि कैदियो को कानून के मुताबिक रखा जा रहा है या नही। लेकिन उन लोगो को ताश खेलने से फुर्सत मिले, तब न! वे तो यही कुछ करते हैं।"

"क्या मैं यह समझू कि तुम कुछ नही कर सकते?" नेख्लूदोव ने निराशा से कहा। उसे वकील के शब्द याद हो आये कि सहायक गवर्नर सरकारी वकील पर दोष मढेगा।

"नही, मैं कुछ न कुछ करूंगा। मैं फौरन इसकी जाच करूंगा।"

"अपना ही बुरा करेगी। C'est un souffre-douleur"* बैठक मे से किसी स्त्री की आवाज आई। प्रत्यक्षत उसे इस बात की कोई परवाह नही थी कि वह क्या कहे जा रही है।

"और भी अच्छी बात है। मैं इसे भी ले लूगा," दूसरी ओर से एक आदमी की आवाज आई। फिर किसी स्त्री की चचल हसी की आवाज आई। ऐसा जान पडता था जैसे आदमी उससे कोई चीज छीनना चाहता हो और वह रोक रही हो।

---

*यह दुखिया, (फ्रेंच)

"नही नही, कभी नही," औरत कह रही थी।

"अच्छी बात है, मैं यह सब कर दूगा," मास्लेत्निकोव ने कहा और अपनी सिगरेट बुझा दी जो उसने अपने गोरे चिट्टे हाथ मे पकड रखी थी, और जिसकी उगली मे फिरोज़े की अगूठी चमक रही थी। "और अब चलो, स्त्रिया इन्तजार कर रही होगी।"

"ज़रा ठहरो," बैठक के दरवाज़े पर रुकते हुए नेख्लूदोव ने कहा, "मुझे किसी ने बताया कि कल जेलखाने मे किसी कैदी को शारीरिक दण्ड दिया गया था। क्या यह ठीक है?"

मास्लेत्निकोव का चेहरा लाल हो गया।

"ओ, वह! नही mon cher तुम्हे वहा जाने देना बहुत बडी भल है। तुम हर बात का पता लगाना चाहते हो। आओ, आओ, चले—आन्ना हमे बुला रही है," नेख्लूदोव को बाजू से पकडते हुए मास्लेत्निकोव ने कहा। वह अब भी उसी तरह उत्तेजित हो उठा था जैसा कि प्रतिष्ठित मेहमान के साथ बाते करते वक्त हुआ था, केवल फर्क यह था कि यह उत्तेजना खुशी की नही थी, बल्कि घबराहट की थी।

नेख्लूदोव ने ज़ोर से बाजू खीच लिया, और बिना किसी से विदा लिये या कुछ कहे बैठक को लाघता हुआ नीचे हॉल मे चला गया। चोबदार लपक कर उसके पास आया, लेकिन नेख्लूदोव सीधा उसके पास से हो कर बाहर के दरवाज़े तक जा पहुचा। सारा वक्त उसका चेहरा गभीर बना हुआ था।

"इसे क्या हो गया है? तुमने उसे क्या कर दिया है?" आन्ना ने अपने पति से पूछा।

"यह तो बिल्कुल a la française* है," किसी ने टिप्पणी कसी।

"वाह, a la française नही, a la zoulou** है।"

"हा, वह सदा से ही ऐसा सनकी है।"

कोई उठ खडा हुआ, फिर उसकी जगह कोई दूसरा आ गया, और लोगो का चहकना उसी तरह जारी रहा। लोगो के लिए यही घटना

---

*फ्रासीसियो का अदाज़ (फ्रेंच)

**जुलुओ का अदाज (फ्रेंच)

वार्तालाप का विषय बन गई, और जितनी देर तक पार्टी चलती रही, इसी की चर्चा होती रही।

दूसरे रोज़ नेख्लूदोव को मास्लेन्निकोव का खत मिला। खत मोटे, चमकीले कागज़ पर सुन्दर, दृढ लिखावट में लिखा था। कागज के ऊपर राज चिन्ह छपा था और लिफाफे पर बाकाइदा मोहर लगी थी। उसमें लिखा था कि मैंने मास्लोवा के बारे में अस्पताल के डाक्टर लिख दिया है, और आशा है तुम्हारी इच्छा के अनुसार कारवाई जायेगी। नीचे लिखा था बड़े प्यार से, तुम्हारा पुराना साथी, दस्तखत बड़े बड़े, दृढ और कलापूर्ण अक्षरों में, बड़ी शान के साथ किया गया था।

"गधा कहीं का!" बरबस नेख्लूदोव के मुह से निकल गया, विशेषकर "साथी" शब्द को पढ कर जिससे मास्लेन्निकोव की उसके प्रति कृपालुता का भास होता था। जो काम मास्लेनिकाव कर रहा था, वह नैतिक दृष्टि से घृणित और लज्जाजनक था। फिर भी वह समझे बैठा था कि वहुत बड़ा आदमी है। और नेख्लूदोव को यह दिखाना चाहता था कि देखो, इतना बड़ा आदमी होते हुए भी मैं तुम्हें साथी कह कर बुला रहा हू।

५६

यह मिथ्या विश्वास बहुत प्रचलित है कि हर मनुष्य में कोई न कोई विशेष गुण होता है किसी में दयालुता है, किसी में निर्दयता, कोई बुद्धिमान है तो कोई बेवकूफ, कोई चुस्त है तो कोई सुस्त। लेकिन वास्तव में लोग ऐसे नहीं होते। हम यह कह सकते हैं कि एक मनुष्य का व्यवहार अधिकतर दयालुता का होता है, निर्दयता का कम, वह अधिकतर सूझ बूझ से काम लेता है, बेवकूफियां कम करता है, अधिकतर चुस्त रहता है, सुस्त कम। या हम इसके उलट कह सकते है। लेकिन यह कहना गलत होगा कि एक आदमी दयालु या बुद्धिमान है और दूसरा बुरा या मूर्ख है। लेकिन फिर भी हम लोगों को हमेशा इसी तरह श्रेणियों में बाटते रहते हैं। और यह सर्वथा असत्य है। मनुष्य तो नदियों के समान होते हैं। सभी नदियों में एक सा ही जल बहता है। लेकिन प्रत्येक नदी का

पाट किसी जगह पर तग है, कही पर वह तेज़ वहने लगती है, कही पर सुस्त हो जाती है, कही अधिक चौडी, किसी जगह पर उसका पानी साफ है, तो किसी दूसरी जगह पर गदला, कही ठण्डा तो कही पर गरम। यही स्थिति मनुष्यो की भी है। प्रत्येक मनुष्य म मानव स्वभाव के सभी गुण बीजरूप म मौजद होते हैं। पर कभी एक गुण प्रकट होता है तो कभी दूसरा, कई वार उसका स्वभाव अपने सामान्य स्वभाव के प्रतिकूल हो उठता है, हालाकि मनुष्य वही रहता है। किसी किसी मनुष्य म यह स्वभाव-परिवतन चरम सीमा तक जा पहुचता है। नेख्लूदोव ऐसा ही मनुष्य था। उसमे ये परिवतन शारीरिक तथा मानसिक कारणा स हुआ करते थे। ऐसा ही एक परिवतन अव उसमे आया।

कात्यूशा के मुकद्दमे तथा उससे पहली वार मिलने के उपरान्त नख्लूदोव को ऐसा भास हुआ था जैसे वह फिर से जी उठा है और उसका हृदय विजय और उल्लास से भर उठा था। लेकिन यह भावना अव विल्कुल खत्म हो चुकी थी। आखिरी वार जव वह उससे मिल कर आया तो खुशी का स्थान भय और घणा ने ले लिया था। वह अव भी इस निश्चय पर दढ था कि वह उसे छोडेगा नही, और अगर वह मान गई तो उससे अवश्य विवाह करेगा, अपने इस फैसले को वदलेगा नही। लेकिन इस पर अमल करना उसे वडा कठिन लग रहा था, और इस कारण उसका मन दुखी रहता।

मास्लेन्निकोव से मिलने के वाद, दूसरे दिन वह फिर उसे मिलने जेलखाने म गया।

इन्स्पेक्टर ने उसे मिलने की इजाजत तो दे दी लेकिन दफ्तर म नही, न ही वकील के कमरे मे वल्कि औरतो के मुलाकाती कमरे म।

इन्स्पेक्टर मेहरवान था लेकिन नेख्लूदोव के प्रति पहले से कुछ खिचा खिचा सा था। जो वार्तालाप नेख्लूदोव का मास्लेन्निकोव से हुआ था, उसके फलस्वरूप, जान पडता था कि इन्स्पेक्टर को अधिक सावधान रहने का हुक्म हुआ है।

"आप उसे मिल सकते है," इन्स्पेक्टर ने कहा, "लेकिन पैसे देने के वारे मे मैंने आपस जो कुछ कहा था, कृपया उस नही भूलिये। और उस अस्पताल म भेजने के वारे मे जनाव गवनर साहव ने मुझे लिखा है। यह काम हो जायेगा। डाक्टर मान जायेगा। लेकिन वह खुद वहा जाना

नही चाहती। वह कहती है 'और नही तो मैं उन गले-सडे भिखमगों को खाना खिलाऊं। मैं नही जाऊगी।' प्रिस, आप इन लोगो को नहा जानते।"

नेख्लूदोव ने कोई जवाब नही दिया, केवल उससे मिलने का प्रबन्ध करने के लिए कहा। इन्सपक्टर ने एक वार्डर को भेजा, और नख्लूदोव उसके पीछे पीछे स्त्रिया के मुलाकाती कमरे मे दाखिल हुआ। वहा केवल मास्लोवा, अकेली बैठी इन्तजार कर रही थी। चुपचाप, सहमी हुई सी, यह जाली के पीछे से आई और उसके ऐन पास आ कर खडी हो गई। फिर, बिना उसकी ओर देखे कहने लगी—

"मुझे क्षमा करना, दमीत्री इवानोविच, परसो मैं बहुत अण्ट-सण्ट बोलती रही।"

"मैं क्या क्षमा कर सकता हू, मैं तो " नेख्लूदोव ने कहना शुरू किया।

"पर जो भी हो, तुम मुझे छोड दो," उसने बात काटते हुए कहा और अपनी ऐंची आखा से नेख्लूदोव की ओर देखा। नेख्ल्दोव को लगा जैसे उनमे फिर वही पहले सा खिचाव और क्रोध झलक रहा है।

"क्यो छोड क्यो दू?"

"तुम्हे छोडना होगा।"

"परन्तु क्यो?"

मास्लोवा ने फिर नेख्लूदोव की ओर देखा। नेख्लदोव को उसकी नजर मे फिर उसी क्रोध का भास हुआ।

"बस यही बात है," उसने कहा, "तुम्ह जरूर छोडना होगा। मैं जो कुछ कह रही हू बिल्कुल ठीक है। मैं यह नही कर सकती। तुम यह सब छोड दो।" उसके होठ कापने लगे और वह क्षण भर के लिए चुप हो गई। "मैं ठीक कहती हू। मैं मर जाऊगी लेकिन यह नही करूगी।"

मास्लावा के इन्कार करने मे नेख्लूदोव को घृणा और क्रोध का भान हुआ। वह उसे क्षमा नही करना चाहती जान पडती थी। लेकिन इसके साथ ही और भी कुछ था, कोई अच्छी और महत्वपूर्ण बात भी थी। पहले भी उसने इन्कार किया था। आज वह उसी इन्कार को दोहरा रही थी, लेकिन बडी स्थिरता के साथ। इसम नख्लूदोव के हृदय मे जितनी भी शकाए उठ रही थी, सब शात हो गई, और फिर से उसम उत्त

गभीर विजय भावना का सचार होने लगा जो कात्यशा के सम्बन्ध म पहले उसके हृदय मे उठी थी।

"कात्यूशा, मैंने जो कुछ तुम्ह कहा था, अब फिर कहूगा," उसने बडी गभीरता से कहा, "मुझसे शादी कर लो। अगर तुम नही चाहती हो, तो मैं उस वक्त तक तुम्हारा साथ नही छोडूगा, जहा जाओगी, वही तुम्हारे पीछे पीछे जाऊगा जब तक कि तुम अपना इरादा बदल नही लेती हो।"

"यह तुम्हारा काम है। मैं और कुछ नही कहूगी," मास्लोवा ने जवाब दिया और उसके होठ फिर कापने लग।

नेख्लदोव भी चुप हो गया, उसके भी कहे कुछ नही कहा गया। जब उसका मन कुछ स्थिर हुआ तो बोला—

"अब मैं देहात म जाऊगा और उसके बाद पीटसबग मे। मैं पूरी पूरी कोशिश करूगा कि तुम्हारे मुकद्दमे पर मेरा मतलब है हमारे मुकद्दम पर फिर विचार हा और भगवान् ने चाहा तो सजा मसूख हो जायेगी।"

"अगर मसूख नही हुई, तो तुम चिन्ता नही करना। मुझे अपने किये का फल मिल रहा है। इस वारदात मे न सही, और कई बाता म," मास्लोवा ने कहा। नेख्लूदोव ने देखा कि मास्लोवा के लिए अपने आसू रोकना बेहद कठिन हो रहा है। "क्या मेशोव से मिले थे?" अपने आसू छिपाने की चेष्टा करते हुए उसने झट स कहा, "वे निर्दोष है, क्यो, ठीक है न?"

"हा, मेरे ख्याल मे वे निर्दोष हैं।"

"वह बुढिया कितनी अच्छी है!"

जो जो बात नेख्लूदोव को मेशाव के बारे मे पता चली थी, उसने वह सुनाई और फिर पूछा कि उसे किसी चीज की जरूरत तो नही। मास्लावा ने सिर हिला दिया।

दोना फिर चुप हो गय।

"और, अस्पताल के बारे म,' अपनी ऐंची आखा से नेख्लूदोव की ओर देखते हुए सहसा मास्लोवा बोली, "अगर तुम चाहते हो तो मैं वहा चली जाऊगी। और अब से शराब भी नही पियूगी।"

नेख्लूदोव ने उसकी आखो की ओर देखा। वे मुस्करा रही थी।

"बडी अच्छी बात है," यही शब्द वह कह पाया, और फिर विदा ले कर यहा से चला आया।

"हा, हा, वह सचमुच बदल गई है," नेख्लूदोव सोच रहा था। उसका मन पहले संशयो से घिरा रहता था। लेकिन जो भावना अब उसके मन मे उठ रही थी, उसका अनुभव उसे पहले कभी नही हुआ था–उसे विश्वास हो रहा था कि प्रेम सचमुच अजेय है।

इस भेंट के बाद मास्लोवा अपनी बदबूदार कोठरी म लौट गई। उसने अपना लबादा उतारा और दोनो हाथ अपनी गोद मे रखे तख्ते पर बैठ गई। उस वक्त कोठरी मे केवल तपेदिक की बीमार स्त्री, जो ब्लादीमिर से आई थी, उसका बच्चा मेंशाव की बुढिया मा, तथा चौकीदारिन और उसके बच्चे ही थे। पादरी की बेटी को परसो यहा से अस्पताल मे ले गये थे। डाक्टरो ने कहा था कि उसका दिमाग खराब हो गया है। बाकी औरते कपडे धोने के लिए गई हुई थी। बुढिया सो रही थी, कोठरी का दरवाजा खुला था और चौकीदारिन के बच्चे बाहर बरामदे मे खेल रहे थे। दोनो स्त्रिया–ब्लादीमिर वाली स्त्री, अपने बच्चे को उठाये हुए, और चौकीदारिन दोनो मास्लोवा के पास आ गयी। चौकीदारिन ने हाथ मे मोज़ा उठा रखा था जो वह अपनी चपल उगलियो से बुनती जा रही थी।

"बात कर आई हो?" उन्होने पूछा।

मास्लोवा चुपचाप ऊचे तख्ते पर बैठी रही, और टागें झुलाती रही। तख्ता इतना ऊचा था कि उसके पैर ज़मीन पर नही लगते थे।

"रोने बिसूरने से क्या होगा?" चौकीदारिन बोली, "सबसे ज़रूरी यह बात है कि मन पक्का रखो। ए कात्यूशा, क्यो दुखी होती है?" अपनी उगलिया तेज तेज़ चलाते हुए वह बोली।

मास्लोवा ने कोई जवाब नही दिया।

"हमारी कोठरी की सब औरत कपडे धाने गयी हैं,' ब्लादीमिर वाली स्त्री बोली, "कह रही थी कि आज बहुत खैरात आई है। बहुत सी चीजें आयी हैं।"

"फिनाश्का!" चौकीदारिन ने पुकार कर कहा, "कहा गया कलमुहा?"

उसने एक सिलाई ले कर ऊन के गोले और मोजे दोनो मे खुभोई और बाहर बरामदे म चली गई।

इसी वक्त बरामदे मे औरतो के बाते करने की आवाजे आने लगी और स्त्रिया अपनी काठरी मे दाखिल हुई। सभी ने पावो मे जेलखाने के जूते पहन रखे थे, लेकिन मोजे नही पहने हुए थे। हरेक के हाथ मे पावरोटी थी। किसी किसी के हाथ मे दो भी थी। फेदोस्या सीधी मास्लोवा के पास आ गई।

"क्या है? क्या कोई बुरी बात हुई है?" अपनी स्वच्छ नीली आखो से, बडी स्नेहभरी दृष्टि से मास्लोवा की ओर देखते हुए उसने पूछा। "ये हमारी चाय के लिए है," और उसने पावरोटिया ऊपर तख्ते पर रख दी।

"क्या, वह शादी करने को कहता था, उसने अपना मन तो नही बदल लिया?" कोराब्ल्योवा ने पूछा।

"नही, उसने तो नही बदला, मगर मैं नही चाहती," मास्लोवा बोली, "और मैंने उसे वह भी दिया है।"

"है ना बेवकूफ," कोराब्ल्योवा अपनी गहरी आवाज मे बडबडाई।

"अगर एकसाथ रहना नही हो तो शादी करने का क्या फायदा है?" फेदोस्या बोली।

"तुम्हारा पति तो तुम्हारे साथ जा रहा है न?" चौकीदारिन ने कहा।

"हमारी बात दूसरी है, हमारी तो पहले से शादी हो चुकी थी," फेदोस्या बोली, "अगर उसे इसके साथ रहना नही है, तो शादी की रस्म करने का क्या लाभ?"

"वाह, क्या लाभ? पागलो की सी बाते मत करो। तुम तो जानती हो, अगर उसने शादी कर ली तो यह धन से खेलेगी," कोराब्ल्योवा बोली।

"यह कहता है 'ये लोग जहा कही भी तुम्हे ले गये, मैं तुम्हारे पीछे पीछे आऊगा,'" मास्लोवा ने कहा, "अगर उसने ऐसा किया तो

भी अच्छा है, जो नही किया, तो भी अच्छा है। मैं उसे कहूगी नहा। अब वह पीटसवग मे जा कर इस मामले के बारे मे कोशिश करेगा। वहा के सब मन्त्री उसके रिश्तेदार हैं। पर फिर भी, मुझे उसकी कोई जरूरत नही है," वह कहती गई।

"ठीक है," कोराब्ल्याका ने सहसा सहमति प्रकट की। जाहिर है उसका ध्यान किसी दूसरी तरफ था। वह अपने बैग मे रखी चीजो की जाच पडताल कर रही थी। "तो कहो, एक एक घूट हो जाय?"

"तुम पियो, मैं नही पियूगी," मास्लोवा ने जवाब दिया।

पहला भाग समाप्त

लगभग दो हफ्ते के बाद मास्लोवा का मुकद्दमा सेनेट के सामने पेश होगा, ऐसी सभावना थी। नेख्लूदोव को उस समय पीटसबर्ग मे मौजूद होना था। और अगर सेनेट न अपील रद्द कर दी तो जार के सामने दरख्वास्त करनी होगी जैसा कि वकील ने कहा था। उसी ने दरख्वास्त भी तैयार की थी। वकील का कहना था कि यह दरख्वास्त देने के लिए तयार रहना चाहिए, क्योंकि अपील के तक बहुत कमजोर हैं। कैदियो के जिस दल के साथ मास्लोवा को साइबेरिया भेजा जायेगा वह शायद जून महीने के शुरू म चल दे और चूकि नख्लूदोव ने उसके पीछे पीछे साइबेरिया जाने का पक्का निश्चय कर लिया था, उस सूरत म यह जरूरी था कि वह अब अपनी जमीन-जायदाद पर जाय, और वहा पर आवश्यक बातो का निबटारा करे।

सबसे पहले नेख्लूदोव अपनी पास ही की काली मिट्टी वाली जागीर कुज्मिस्कोये गया। अपनी आमदनी का अधिकाश भाग उसे इसी जागीर से प्राप्त होता था। अपने बचपन और जवानी के दिनो मे नेख्लूदोव कई बार वहा गया था। उसके बाद भी दो बार जा चुका था। एक बार तो मा के कहने पर वह एक जमन कारिंदे को साथ ले कर गया था और वहा का हिसाब किताब किया था। इसलिए वहा की स्थिति से भली भाति परिचित था, तथा साथ ही किसानो के प्रबन्धक के साथ (अर्थात मालिक के साथ) सम्बन्धो को भी अच्छी तरह जानता था। मालिक किसान सम्बन्धो की व्याख्या यदि शिष्ट रूप मे करें तो हम कहेंगे कि किसान मालिक पर पूर्णतया आश्रित थे, और यदि अशिष्ट रूप म करें तो कहेंगे कि वे इस प्रबन्ध के गुलाम थ। यह वह जिन्दा गुलामी नहीं थी जिसे १८६१

मे खत्म कर दिया गया था। इसमे, समूचे तौर पर, सभी किसान जिनके पास या तो जमीन थी ही नही या वहुत कम थी सभी वडे वडे ज़मींदारों के गुलाम थे, या व्यक्तिगत तौर पर उन वडे वडे ज़मीदारो के गुलाम थे, जिनके वीच वे रहते थे। नेख्लूदोव इसे जानता था, यह जाने बिना वह रह भी नही सकता था, क्योकि उसकी ज़मीन-जायदाद का प्रबंध एसी ही गुलामी पर निभर था। वह स्वय इस प्रवध को बनाये हुए था। इतना ही नही, वह यह भी जानता था कि यह प्रबंध प्रणाली निदयी और अन्यायपूण है। यह वह उस समय से जानता था जब वह विश्वविद्यालय का छात्र था और हैनरी जाज के सिद्धान्तो को मान कर उनका प्रचार किया करता था। उन्ही सिद्धान्तो के आधार पर उसने अपनी वह ज़मीन किसाना मे वाट दी थी जो उसे अपने पिता की ओर से विरासत म मिली थी क्योकि वह भू स्वामित्व को आजकल वैसा ही पाप समझता था, जैसा कि पचास साल पहले भू-दासो पर स्वामित्व था। हा, यह ज़रूर सच है कि फौज मे नौकरी करने के वाद, जहा उसे एक साल में बीस हज़ार रूबल खच कर देने की आदत पड गई थी, वह अपने को उन पहले सिद्धान्तो से वाध्य नही समझता था, वे उसे भूल तक गये थे। और उसने न केवल यह पूछना छोड दिया था कि जो रुपया उसे मा भेजती है, वह कहा से आता है, बल्कि इस वारे मे साचना तक छाड दिया था। पर मा की मत्यु हो जाने से, तया अपनी विरासत की ज़मीन-जायदाद पर अधिकार ग्रहण करने और उसका प्रवध हाथ म लेने की आवश्यकता उत्पन्न पर यह सवाल उसके सामने फिर उठ खडा हुआ था कि भमि के निजी स्वामित्व के प्रति उसकी स्थिति क्या है। महीना भर पहले यदि नख्लूदोव से पूछा जाता तो वह जवाव देता कि मौजूदा व्यवस्था को बदलना उसके वस की वात नही, यह स्वय अपनी ज़मीन-जायदाद का प्रबंध नहीं कर रहा है। और वह खुद ज़मीन-जायदाद से दूर रह कर, ज़रूरत के रुपये वहा से मगवाता रहता और इस तरह उसका ज़मीर साफ बना रहता। परन्तु अब बावजूद इसके कि नख्लूदोव को निकट भविष्य म साइबेरिया जाना था, जहा जेलो की दुनिया के साथ कठिन और पचीदा सबंध से उसका वास्ता पडेगा और जहा पैसा की ज़रूरत होगी उसने निश्चय कर लिया था कि वह मौजूदा व्यवस्था को या नही छोड सकता बल्कि उसे नुकसान उठा कर भी इसको बदलना होगा। इसके लिए उसने निश्चय

किया कि वह ज़मीन की खुद काश्त तो नही करवायेगा वल्कि उसे मामली लगान पर किसानो को दे देगा और इस तरह उन्हे ज़मीदार पर निर्भर हुए बिना जमीन की काश्त करते रहने का अवसर देगा। कई बार ज़मीदारा की स्थिति की तुलना भू-दासो के स्वामियो से करते हुए नेख्लूदोव ने यह सोचा था कि उनके द्वारा किसानो को ज़मीन लगान पर दे देना वैसा ही है जैसा कि किसी ज़माने मे भू-दासो के स्वामियो द्वारा अपने दासो से बेगार पर काम लेने की जगह उन्हे उन्मोचन भाटक पर खेती करने देना था। इससे समस्या का समाधान तो नही हो जाता, लेकिन उसे हम समाधान की ओर एक कदम ज़रूर कह सकते हैं। यह गुलामी की बबरता को कम करने मे सहायक है। और इसी के अनुसार अब वह आचरण भी करना चाहता था।

नेख्लूदोव लगभग दोपहर के समय कुज़्मिस्कोये पहुचा। वह अपने जीवन को हर तरह से सादा बनाने की कोशिश कर रहा था, इसलिए उसने पहले तार नही दी और स्टेशन से भी दो घोडो वाले एक छकडे मे बैठ कर चला। गाडीवान—नौजवान छोकरा मोटे सूती कपडे का कोट पहने था, जिसे उसने लम्बी सी कमर के नीचे पेटी से कस रखा था। गाडीवान को साहब के साथ बाते करने मे मज़ा आ रहा था, विशेषकर इसलिए भी कि इस तरह उसका लगडा सफेद मरियल बिचला घोडा और बगल वाला दुबला-पतला थका-हारा घोडा—दोनो धीमी चाल से चल सकते थे, और उन्हे इसी चाल से चलना पसन्द भी था।

गाडीवान कुज़्मिस्कोये जागीर के कारिन्दे के बारे मे बाते करने लगा। उसे मालूम नही था कि जागीर का मालिक उसके छकडे मे बैठा है। नेख्लूदोव ने जान बूझ कर उसे अपने बारे मे नही बताया था।

गाडीवान अपनी सीट पर तिरछा हो कर बैठ गया, अपनी लम्बी चाबुक पर ऊपर से नीचे तक हाथ फेरा और अपनी योग्यता दिखाने की कोशिश करते हुए (वह शहर हो आया था और कुछेक उपन्यास पढ चुका था) बोला—।

"वह जर्मन बडा दिखावटी आदमी है! कही से तीन जवान, मुश्की घोडे ले आया है। जब वह अपनी औरत को बग़ल मे बैठाल कर सवारी का निकलता है, तो बाप रे, देखते बनता है! बडे दिन पर उसने ज़मीदार की कोठी मे क्रिसमस का पेड खडा किया। मैं कुछ मेहमाना को गाडी

बिठला कर वहा ले गया था। पेड में बिजली के कुमकुमे चमक रहे थे। सारे इलाके मे आपको ऐसी सजावट कहीं देखने को नहीं मिलेगी। मालिक के रुपये मार मार के उसने बहुत सा धन बटोर लिया है। और बटोरे भी क्यो नही? उसे रोकने वाला तो कोई है ही नहीं। सुनते हैं उसने एक बहुत बढिया जागीर मोल ले ली है।

नेख्लूदोव समझता था कि उसे इस बात की कोई परवाह नहीं कि कारिन्दा उसकी जमीन-जायदाद का कैसा प्रबन्ध करता है, और उसमें से अपने लिए क्या क्या लाभ निकालता है। फिर भी जो बातें इस लम्बी कमर वाले लडके ने कही, उसे अप्रिय लगी।

दिन बडा सुहावना था, उसे बहुत प्यारा लग रहा था। किसी किसी वक्त गहरे, अंधियारे बादलो की टुकडिया सूरज को ढक लेतीं। खेतों में किसान, चारो ओर ताजा जई की गुडाई कर रहे थे। मैदानों पर हरियावल बिछी थी और उनके ऊपर लार्क पक्षी पंख फैलाये उड रहे थे। बलूत के कुछेक पेडो को छोड कर सभी पेड नये पत्तो की ओढनी ओढे हुए थे। चरागाहो मे जगह जगह ढोर और घोडे चर रहे थे। दूर दूर तक खेतो मे जोताई हो चुकी थी। समूचा दृश्य बहुत सुन्दर था, फिर भी किसी किसी वक्त उसे ऐसा भास होता जैसे कहीं कोई अप्रिय बात हुई है। जब वह मन ही मन पूछता कि यह अप्रिय बात क्या हो सकती है तो उसे गाडीबान की वार्ता याद हो आती, जो उसने कुज्मिन्स्कोये की जमीन के बारे मे की थी कि जमन उसका कैसे प्रबन्ध कर रहा है।

लेकिन जब वह अपने ठिकाने पर पहुच गया और काम मे जुट गया तो यह अप्रिय भावना जाती रही।

नेख्लूदोव ने हिसाब देखा। कारिन्दे से बाते की। कारिन्दे ने बडी सरलता से उसे समझाना शुरू किया कि किसानो के पास अपनी जमीन बहुत कम है, जो है भी तो वह जमीदार की जमीनों के बीच में है। इससे जमीदार को बहुत फायदा है। इन बातो से नेख्लूदोव का निश्चय और भी पक्का हो गया कि वह खेतीबारी छोड देगा और जमीन किसानों को लगान पर दे देगा।

दफ्तर मे रखे बही-खाते और कारिन्दे की बातो से नेख्लूदोव को पता चला कि सबसे अच्छी जमीन के दो तिहाई भाग पर बढिया औजारों द्वारा मजदूरो से काश्त करवाई जाती है, और मजदूरो को निश्चित पगार

दी जाती है। बाकी एक तिहाई जमीन की जोताई किसान करते हैं और उन्हें पाच रूबल फी देस्यातीना के हिसाब से पैसे मिलते है। इसका मतलब यह है कि किसान प्रत्येक देस्यातीना पर तीन बार हल चलाते है, तीन बार उस पर हेंगी करते हैं, अनाज बाते और काटते हैं, उसके गट्ठर बना कर अनाज साफ करने वाले स्थान तक पहुचाते हैं, और इस सब काम के लिए उन्ह पाच रूबल मिलते है। यही काम अगर मजदूरो द्वारा पगार दे कर करवाया जाय तो इसके लिए कम से कम दस रूबल देने पडेंगे। किसान जो कुछ भी जमीदारी मे से उठाते हैं उसके लिए उन्हे श्रम के रूप मे बहुत अधिक मूल्य चुकाना पडता है। अपने ढोर चराने का, लकडी का, आलुओ के डठल-पत्तो का—इन सब चीजो का मूल्य उन्हें बडे श्रम द्वारा चुकाना पडता है। इस तरह अगर हिसाब लगा कर देखा जाय तो काश्त शुदा जमीनो से परे जो जमीनें किसानो को लगान पर दी गई है, अगर उनके मूल्य की रकम पाच प्रतिशत ब्याज पर लगायी जाय तो जो आमदनी उससे होगी, उससे चार गुना ज्यादा आमदनी जमीदार किसानो से वसूल कर लेता है।

नेख्ल्दोव यह सब पहले से जानता था, लेकिन ये बाते अब उसे एक नयी रोशनी मे नजर आने लगी थी। वह इस बात पर हैरान हो रहा था कि उसे और उस जैसे अन्य जमीदारो को इस स्थिति की अस्वाभाविकता का बोध क्या नही होता। कारिन्दे का यह तर्क था कि अगर जमीनें लगान पर चढा दी गईं तो खेतीबारी के औजारो से कुछ भी प्राप्त नही होगा, उनकी कीमत का एक चौथाई भी वसूल नही होगा, किसान जमीन खराब कर देंगे और नेख्लदोव का बडा नुकसान होगा। ये तर्क सुन कर नेख्लूदोव का विश्वास और भी दृढ हो रहा था कि जमीन किसानो को लगान पर दे कर और इस तरह अपनी आय के बहुत बडे भाग से वचित रह कर वह बहुत ही शुभ काम कर रहा है। उसने निश्चय कर लिया कि इस बात का निबटारा अभी वह अपनी मौजूदगी म कर के जायगा। बाकी काम—अनाज की कटाई, बिक्री, खेतीबारी के औजारो का बेचना, अनुपयोगी मकानो का बेचना इत्यादि—वक्त आने पर कारिन्दा खुद करता रहेगा। परन्तु इस समय उसने कारिन्दे को उन तीन गावो के किसानो की मीटिंग बुलाने को कहा जो कुज्मिस्कोये जमीदारी

से घिरे थे। इस मीटिंग मे वह अपना इरादा साफ कर देना चाहता था और लगान की शर्तों का फैसला कर देना चाहता था।

जब नेख्लूदोव दफ्तर मे से निकल कर बाहर आया तो वह मन ही मन खुश था। कारिन्दे के तर्कों के सामने वह दृढ रहा था और हर नुक्सान उठाने के लिए तत्पर था। अपने अगले काम के बारे में सोचते हुए वह घर के आसपास टहलने लगा। फूलो की क्यारियां उपेक्षित पड़ी थी—अब की फल कारिंदे के घर के सामने लगाये गये थे। टेनिस के मैदान मे चिकोरी उग आई थी। इनके पास से टहलते हुए वह उस राह पर जाने लगा जिसके दोनो ओर लाइम वृक्ष लगे थे। किसी जमाने में वह यहा पर सिगार पीने आया करता था। यहीं पर वह किरिमोवा से चुहले किया करता था। किरिमोवा एक बड़ी सुन्दर युवती थी जो उसकी मां से मिलने आया करती थी। मन ही मन उसने संक्षेप रूप में अपना भाषण तैयार कर लिया जो वह दूसरे रोज किसानो के सामने देना चाहता था। इसके बाद वह कारिन्दे के पास गया और चाय पीते समय उसके साथ एक बार फिर इस बात पर विचार विमर्श किया कि कैसे जमीन जायदाद किसानो को दी जाय और इस ओर से बिल्कुल शांत हो कर अपने कमरे मे आराम करने के लिए चला गया। यह कमरा बड़ा रोगी में उसके लिए तैयार किया गया था। पहले इस कमरे का एक फालतू सोने वाले कमरे के रूप मे इस्तेमाल किया जाता था।

कमरा छोटा सा और साफ-सुथरा था। दीवारो पर वेनिस नगर के चित्र टंगे थे। दो खिड़कियों के बीच, दीवार पर आईना लटक रहा था। बिस्तर बड़ा साफ था और उस पर कमानीदार गद्दा बिछा था। पलंग के पास ही एक छोटी सी मेज पर पानी की सुराही, दियासलाई और मोमबत्ती बुझाने वाला उपकरण रखा था। आईने के नीचे एक मेज पर उसका बैग खुला पड़ा था। उसमें उसका साबुन-तेल का डिब्बा और कुछ किताबें रखी थी। किताबों में से एक किताब रूसी भाषा में थी 'जाब्ता फौजदारी की जांच'। इसके अलावा एक किताब जर्मन भाषा में और एक अंग्रेजी में थी। इन किताबों का भी विषय यही था। इन्हें वह दहात में सफर करते वक्त पढ़ने के लिए ले आया था। लेकिन आज पढ़ना सम्भव नहीं था, बहुत देर हो गई थी। इसलिए वह सोने की तैयारी करने लगा ताकि सुबह जल्दी उठ कर किसानों से भेंट करने के लिए तैयार हो सके।

कमरे के एक कोने मे एक आराम-कुर्सी रखी थी। पुराने ढग की, महागोनी की बनी कुर्सी थी, जिस पर पच्चीकारी का काम किया हुआ था। नेख्लूदोव को याद आ गया कि यही कुर्सी मा के सोने वाले कमरे मे रखी रहती थी। यह याद आने की देर थी कि उसके हृदय मे एक ऐसी भावना जाग उठी जिसकी उसे तनिक भी आशा न थी। वह सोचने लगा कि यह घर खण्डहर बन जायेगा, बाग मे झाड-झखाड उगने लगेंगे, जगल काट डाला जायेगा ये सब चौपाल, अस्तबल छप्पर, यन्त्र, घोडे, गौए उपेक्षित पडे रह जायेंगे जिन्हे जुटाने मे और जिनकी सार-सभाल करने मे इतनी मेहनत करनी पडी थी—भले ही यह मेहनत नेख्लूदोव को नही करनी पडी हो। उसका हृदय अनुताप से भर उठा। इन सब चीजो का छोड देना पहले आसान लगता था, लेकिन अब मुश्किल हो रहा था। न केवल इन्हें त्यागना ही, बल्कि जमीन को लगान पर चढा देना भी, क्योंकि उससे आमदनी आधी रह जायेगी। सहसा एक दूसरे तर्क ने इस भावना की पुष्टि की। किसानो को जमीन देने से उसकी सारी जागीर नष्ट भ्रष्ट हो जायेगी, ऐसा करना सर्वथा अनुचित होगा।

"जमीन का स्वामी बन कर मुझे नही रहना चाहिए। लेकिन अगर यह स्वामित्व न रहा तो इस सारी जायदाद को भी मैं सभाल नही सकता। इसके अलावा साइबेरिया जाना है, मुझे न घर की जरूरत होगी न जमीन की," उसके अन्दर एक आवाज उठती। पर जवाब मे दूसरी आवाज कहती—"यह सब ठीक है, लेकिन साइबेरिया मे तुम सारी जिन्दगी तो नही बैठे रहोगे। सभव है तुम शादी करो तुम्हारे बच्चे हो, तुम्हारा फर्ज हो जाता है कि यह जायदाद उतनी ही अच्छी हालत मे तुम उनके सुपुर्द करो जितनी अच्छी हालत मे तुम्हें स्वय प्राप्त हुई थी। जमीन के प्रति भी तुम्हारा वैसा ही कर्तव्य है। इसे छोड देना, हर चीज को नष्ट-भ्रष्ट कर देना आसान है, लेकिन फिर बनाना बहुत मुश्किल होगा। सबसे जरूरी बात यह है कि तुम अपने भविष्य के बारे मे सोचो, कि तुम क्या करोगे, और उसी के अनुसार जमीन-जायदाद का निपटारा करो। फिर यह तो बताओ क्या तुम यह त्याग सचमुच अपनी अन्तरात्मा के आदेश का पालन करते हुए कर रहे हो या महज दिखावा करने के लिए?"

नेख्लूदोव ने मन ही मन अपने से ये सब सवाल किये। उसे स्वीकार करना पडा कि उस पर इस विचार का जरूर असर हुआ था कि लोग उसके

बारे मे क्या कहेगे। जितना अधिक वह इन प्रश्नो के बारे म सोचता, उतनी ही अधिक सख्या म प्रश्न उसके मन मे उठते, और उतने ही अधिक वे असाध्य जान पडते।

वह अपने साफ-सुथर बिस्तर पर लेट गया और सोन की कोशिश करने लगा। सो जाऊगा तो ये विचार परेशान नही करेंगे। सुबह क वक्त दिमाग साफ होता है, उस वक्त इन समस्याओ को सुलझाऊगा। लेकिन फिर भी उसे बडी देर तक नीद नही आयी। कमरे म ताज़ा हवा के झोके आ रहे थे और चाद की चादनी छन छन कर आ रही थी। बाहर मेढक टरा रहे थे। उनकी आवाज़ दो बुलबुलो की आवाज़ से मिल कर सुनाई पड रही थी, एक बुलबुल बाग मे और दूसरी खिडकी के पास लिलक की फूलो से लदी झाडी मे बैठी गा रही थी। बुलबुलो और मेढकों की आवाजो को सुनते हुए नेख्लूदोव को सहसा इन्स्पेक्टर की बेटी का सगीत याद हो आया और फिर स्वय इन्स्पेक्टर भी। उससे उसे मास्लोवा की याद आयी। मास्लोवा ने जब कहा था—"तुम्ह यह सब बिल्कुल छोड देना होगा," तो उसके होठ किस तरह काप रहे थे बिल्कुल उसी तरह जिस तरह ये मेढक टर्रा रहे हैं। फिर जर्मन कारिदा मेढको के पास जाने लगा। उसे ज़बरदस्ती पीछे हटाया गया। लेकिन वह नही रुका, बल्कि मास्लोवा मे बदल गया और मास्लोवा धिक्कारने लगा—"तुम प्रिंस हो, मैं मुजरिम हू।" "नही, मैं हार कभी नही मानूगा," नेख्लूदोव ने सोचा, फिर जाग कर अपने से पूछा—"मैं जो कुछ कर रहा हू क्या यह ठीक है या गलत? मैं नही जानता। और मुझे इसकी कोई परवाह नही है। कोई फर्क नही पडता। मुझे सो जाना चाहिए।" और जिस ओर उसने कारिंदे और मास्लोवा को नीचे उतरते देखा था, उसी ओर वह स्वय भी उतरने लगा। वही पर यह सब खत्म हो गया।

२

दूसरे दिन सुबह नौ बजे नेख्लूदोव की नीद टूटी। उसकी टहल-सेवा का काम एक युवक कर रहा था जो दफ्तर मे क्लर्क था। ज्यो ही उसने देखा कि मालिक बिस्तर पर हिल-डुल रहे हैं, तो वह उनके बूट ले आया।

बूट ऐसे चमक रहे थे जैसे पहले कभी नही चमके थे। साथ ही मुह हाथ धोने के लिए चश्मे का स्वच्छ ठण्डा जल भी लाया। और मालिक से कहा कि किसान अभी से जमा होने लगे हैं। नेख्लूदोव उठ कर खडा हो गया और स्थिरता से सोचने लगा। जो अनुताप उसे कल यह सोच कर होने लगा था कि अपनी जमीन-जायदाद दे कर वह उसे नष्ट-भ्रष्ट कर रहा है उसका लेशमात्र भी इस समय नही था। इस अनुताप को याद कर के वह हैरान हुआ। इस समय जो काम उसके सामने था उसके बारे मे सोचते हुए उसके हृदय मे उल्लास था, और अनजाने मे ही उसे गव का भास होने लगा था।

खिडकी में से उसे टेनिस खेलने का मैदान नजर आ रहा था जिस पर चिकरी उग रही थी। वही पर किसान इकट्ठे हो रह थे। पिछली रात जो मेढक टर्राते रहे थे तो किसी कारण ही। आज दिन साफ नही था, बादल छाये थे। हवा बन्द थी। सुबह सवेरे ही हल्की हल्की, स्निग्ध सी बूदाबादी होने लगी थी, और बारिश की बूदें पेडो की शाखा और पत्ता और घास पर लटक रही थी। खिडकी मे से ताजा हरियाली, और भीगी धरती की गध आ रही थी। जान पडता जैस धरती और बारिश माग रही है।

कपडे पहनते हुए नेख्लूदोव ने कई बार किसानो की ओर देखा जो टेनिस के मैदान पर जमा हो रहे थे। एक एक कर के वे आ रहे थे। एक किसान आता, सिर पर से टोपी उतार कर, झुक कर सब का अभिवादन करता, अपनी जगह पर जा खडा होता। सभी लोग एक दायरे की शक्ल म खडे हो रहे थे, और अपनी अपनी लाठी की टेक ले कर खडे बाते कर रहे थे। कारिन्दा अन्दर आया और बोला कि सभी किसान पहुच गये हैं लेकिन आप पहले नाश्ता कर लीजिये, चाय और काफी दोना हाजिर हैं, इतनी देर तक किसान इन्तजार कर सकते हैं। कारिन्दा हृष्ट-पुष्ट गठे हुए बदन का युवक था। उसने एक छोटी सी जाकेट पहन रखी थी जिस पर बडे बडे बटन लगे थे और हरे रग का खडा सा कालर था।

"नही, मैं सोचता हू मैं अभी उनसे मिलूगा," नख्लूदोव ने कहा। सहसा यह सोच कर कि वह किसानो से क्या बाते करने जा रहा है, नेख्लूदोव को झेंप और शर्म महसूस होने लगी थी।

वह किसानो की इच्छा-पूर्ति करने जा रहा था, जिस इच्छापूर्ति की आशा तक करने का उन्हें साहस नही हो पाता था। वह मामूली से लगान पर अपनी ज़मीन उन्हे देने जा रहा था, उन पर बहुत बड़ा उपकार करने जा रहा था। फिर भी किसी बात पर उसे शर्म महसूस हो रही थी। नेख्लूदोव किसानो के पास पहुचा। किसानो ने सिर पर से टोपिया उतारी, कितने ही सिर उसके सामने नगे हो गये, किसी पर सुनहरे बाल थे किसी पर घुघराले, कोई सिर गजा था, किसी पर सब बाल सफेद हो चुके थे। उस समय घबराहट के कारण नेख्लूदोव के मुह से एक शब्द भी नही निकल सका। हल्की हल्की बूदाबादी अब भी हो रही थी जिससे किसानो के बाल, उनकी दाढ़िया, उनके खुरदरे कोटो के रोए भीग रहे थे। किसान इस इन्तज़ार मे थे कि कब मालिक बोलना शुरू करें, वे उनकी ओर देखे जा रहे थे, लेकिन नेख्लूदोव इस कदर शर्मा रहा था कि उसके मुह से एक शब्द भी नही निकल रहा था। एक झेंप भरी चुप्पी छाई हुई थी। आखिर इसे तोडा जर्मन कारिन्दे ने, जो धीर गभीर, आत्म विश्वासी आदमी था, और समझता था कि वह रूसी किसानो की रग-रग पहचानता है, और जो बहुत अच्छी तरह रूसी बोल सकता था। एक तरफ यह हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताज़ा आदमी खडा था। उसके साथ खडा नेख्लूदोव भी वैसा ही था। दूसरी ओर किसान थे, उनके दुबले पतले, झुर्रियो भरे चेहरे, मोटे मोटे कोटो मे से कधो की हड्डिया निकली हुइ। कितना अन्तर था!

"प्रिंस तुम पर बहुत बडा उपकार करने वाले हैं, परन्तु तुम इस उपकार के योग्य नही हो। वह तुम्हे ज़मीन लगान पर दे देंगे,' कारिन्दे ने कहा।

"योग्य कैसे नही हैं वासीली कार्लोविच, क्या हम तुम्हारे लिए काम नही करते? जब कुवर जी की मा ज़िन्दा थी—भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दें—तो हम बडे आराम से रहते थे। और हमे विश्वास है, कुवर जी भी हमे बिसरायेंगे नही। हम इनके बहुत शुक्रगुज़ार हैं,' लाल बालो वाले एक वाक्-पटु किसान ने कहा।

"हां इसी लिए मैंने आज तुम सबको बुलाया है। अगर तुम चाहो तो सारी की सारी ज़मीन मैं तुम्हें लगान पर दे दूगा।"

किसान कुछ नही बोले। ऐसा जान पडता था जैसे या तो बात उनकी समझ मे नही आयी या उस पर उन्हे विश्वास नही हो रहा था।

"ज़रा ठहरो जी। ज़मीन हमे देंगे। क्या मतलब हुआ?" एक वयस्क आदमी बोला।

"ज़मीन तुम्हे देंगे ताकि तुम उस पर खेतीबारी कर सको। लगान तुम्हे बहुत कम देना पडेगा।"

"अच्छी बात है," एक बूढे ने कहा।

"बस, लगान हमारे बूते मे हो," एक दूसरा बोला।

"हा, हा, ज़मीन क्यो न ली जाय।"

"खेती कर के ही तो अपना पेट पालते है। बाप दादा से यही चल रहा है।"

"इससे तुमको भी आराम रहेगा। कोई काम नही करना पडेगा। घर बैठे बैठे लगान लेते रहोगे। सोचो तो आजकल तुम्हे कोई चैन नही। और कितना पाप तुम्हारे सिर पर है!" कुछेक के मुह से निकला।

"पाप सब तुम्हारे सिर है," जमन बोला, "अगर काम ठीक तरह करते और ढग से रहते "

"यह हम जैसो के लिए नामुमकिन है," तीखी नाक वाले एक बूढे ने कहा। "तुम हमसे कहते हो कि 'तुमने खेत मे क्यो घोडा घुसने दिया?' जसे मैंने ख ुद उसे खेत के अन्दर डाल दिया हो। मैं इधर दिन भर अपने हाड तोडता रहा, हसिया चलाता रहा या कुछ और, लगे जैसे दिन कभी खत्म ही नही होगा। किसान का एक एक दिन एक एक साल बराबर होता है। रात को घोडो को चराने ले गया तो कही नीद आ गई। पता नही चला और घोडा तुम्हारी जई म घुस गया। और अब तुम मेरी चमडी उधेड रहे हो।"

"कहा तो, सब कुछ ढग से रखो।"

"तुम्हें तो क्या, कह दिया ढग से रखो। किसान के इतने हाड कहा।" अधेड उम्र के एक ऊचे-लम्बे आदमी ने कहा। उसके सिर और मुह पर काले बाल ही बाल थे।

"कहा नही था कि बाड लगाओ?"

"लाओ लकडी दो, हम बाड बना लेगे," एक नाटे कद के, सीधे सादे किसान ने कहा। "पिछले साल मैं बाड़ लगाने चला था। मैंने ज्योही

एक पेड पर कुल्हाडी चलायी तो तुमने मुझे तीन महीने के लिए जेल मे डाल दिया। बस, धाक बन गई।"

"यह क्या कह रहा है?" कारिन्दे की ओर घूम कर नेख्लूदोव ने पूछा।

"Der erste Dieb im Dorfe,"* कारिन्दे ने जर्मन भाषा में उत्तर दिया, "हर साल यह आदमी जंगल मे से लकड़ी चुराते हुए पकड़ा जाता है।" फिर किसान को सम्बोधित करते हुए बोला, "दूसरे की चीज को इज्जत से देखना चाहिए।"

"क्या हम तुम्हारी इज्जत नही करते?" बूढ़े ने कहा। "तुम्हारी इज्जत नही करेंगे तो जायेंगे कहा? हम तो तुम्हारे हाथ मे हैं, तुम चाहो तो हमे बट कर रस्सी बना सकते हो।"

"उलटी बात कह रहे हो, भले आदमी। तुम्हारे साथ ऐसा करना नामुमकिन है। उलटे तुम हमारी गर्दन पर सवार रहते हो,' जर्मन बोला।

"हम सवार रहते है। भली कही। तुम्ही ने मेरा जबडा तोडा था न। मुझे क्या मिला। अमीरो के सामने भला गरीब की भी कभी चली है।"

"तुम्हे कानून के मुताबिक चलना चाहिए।"

तू-तू मैं मैं का मुकाबला चल रहा था। इसमे भाग लेने वाले भी नही जानते थे कि वे क्यो ऐसा कर रहे हैं। पर इतना जरूर नजर आ रहा था कि एक ओर कटुता है जिसे भय के कारण दबाने की कोशिश की जा रही है। दूसरी ओर अपनी ताकत और बडप्पन का घमण्ड है। इन बातो को सुनना नेख्लूदोव के लिए बहुत मुश्किल हो रहा था। इसलिए उसने लगान की फिर चर्चा शुरू कर दी कि यह निश्चय किया जाय कि लगान कितना हो और किन शर्तों पर हो।

"अच्छा, अब जमीन की बात करो। लेना चाहते हो? अगर मैं सारी की सारी तुम्हे दे दू तो कितना लगान दोगे?"

"माल तुम्हारा है, तुम्ही बताओ।"

नेख्लूदोव ने रकम बतायी। पास-पडोस म जो लगान लिया जाता था, उससे यह बहुत कम था। फिर भी किसानो ने कहा कि यह बहुत

---

*गाव का एक नबर चोर है, (जर्मन)

ज्यादा है, और आदत के मुताबिक सौदाबाजी करने लगे। नेख्लूदोव का ख्याल था कि रकम सुनते ही उनके चेहरे खुशी से खिल उठेंगे, मगर वहा खुशी कही नज़र नही आती थी। हा एक बात ऐसी हुई जिससे नेख्लूदोव को पता चल गया कि उसके प्रस्ताव से किसानो को लाभ पहुचेगा। जब उनके सामने यह सवाल रखा गया कि जमीन किसको दी जाय, सारे ग्राम-समुदाय को जिसमे सभी किसान शामिल है या किसी खास सोसाइटी को जिसमे केवल वही किसान शामिल होंगे जो ज़मीन लेना चाहते है, तो झगडा खडा हो गया। कुछ किसान चाहते थे कि ऐसे किसानो को जो गरीब हैं और वक्त पर लगान नही चुका सकेंगे बाहर रखा जाय। जवाब मे वे लोग शिकवा शिकायत करने लगे जिन्हे डर था कि उन्हे इस कारण शामिल नही किया जायेगा। आखिर कारिन्दे ने स्थिति सभाल ली, लगान की रकम और शर्तें मुकरर की गईं। किसान ऊचा ऊचा बोलते हुए पहाडी उतर कर अपने अपने गावो को जाने लगे। नेख्लूदोव और कारिन्दा करारनामा तैयार करने के लिए दफ्तर मे चले गये।

हर बात का फैसला नेख्लूदोव की इच्छानुसार तथा आशानुसार हो गया। ज़िले भर मे जिस लगान पर किसानो को ज़मीन मिल सकती थी, उससे तीस प्रतिशत कम पर उन्हे यहा पर मिली। नेख्लूदोव के लिए जमीन से आमदनी पहले से आधी रह गई। पर अब भी यह रकम उसकी ज़रूरत से ज्यादा थी विशेषकर इसलिए कि उसने एक जगल बेच दिया था और कुछ रकम खेतीबारी के औज़ार बेचने पर भी उसे वसूल होगी। हर बात का इन्तज़ाम बहुत बढिया ढग से हुआ था, फिर भी वह किसी कारण लज्जित सा अनुभव कर रहा था। किसानो ने उसका धन्यवाद तो किया था लेकिन वे सन्तुष्ट नही थे। उन्हे इससे भी अधिक लाभ की आशा थी। परिणाम यह निकला कि उसने अपने को बहुत सी रकम से वचित भी कर दिया और फिर भी किसान सन्तुष्ट नही हुए।

दूसरे दिन करारनामे पर दस्तखत हो गया। नेख्लूदोव, कुछेक वयोवृद्ध किसानो के साथ जिन्हे प्रतिनिधि चुना गया था, दफ्तर मे से बाहर निकला। उसका मन अब भी अशान्त था, मानो कोई बात अधूरी रह गई हो। दफ्तर मे से निकल कर यह कारिन्दे की रईसाना सवारी मे (स्टेशन से उसे लाने वाले गाडीवान के शब्दो मे) जा बैठा किसानो

से विदा ली और स्टेशन की ओर चल दिया। मिसा अब भी खड़े सिर हिलाये जा रहे थे, मगर निराश और असन्तुष्ट हो। नेख्लूदोव मन ही मन अपने आपसे असन्तुष्ट था। सारा वक्त, अनजाने में ही, वह बिना बात पर उदास और लज्जित अनुभव करता रहा।

३

कुजिमस्कोये से नेख्लूदोव सीधा उस जागीर पर गया जो उसे फूफियों से विरासत में मिली थी। यह वही जगह थी जहां उसकी कात्यूशा से भेंट हुई थी। उसका इरादा यह था कि कुजिमस्कोये की तरह यहां पर भी जमीन का वैसा ही प्रबंध कर दिया जाय। इसके अलावा वह कात्यूशा तथा अपने बच्चे के बारे में भी पता लगाना चाहता था। क्या बच्चा सचमुच मर गया था? और जो मर गया था तो किन परिस्थितियों में मरा?

वह सुबह सवेरे पानोवो पहुंच गया। घर पहुंचा तो देखा कि सभी इमारतें जर्जर और जीर्ण शीर्ण दशा में पड़ी हैं, विशेषकर रिहाइशी मकान। छत पर मुद्दत से रंग नहीं किया गया था, जिससे लोहे की चादरें जंग के कारण लाल हो रही हैं। पहले उन पर हरा रंग किया जाता था। कुछ चादरें तो ऊपर को मुड़ी थीं, शायद अंधड़ और तूफान के कारण। दिवारों पर मढ़े हुए तख्तों को लोग जगह जगह से उखाड़ ले गये थे। जिन जगहों पर कीलें जंग खाकर कमजोर हो गयी थीं, वहीं उन्होंने तख्ते उखाड़ लिये थे। दोनों ओसारे टूट-फूट गये थे, विशेषकर बगल का ओसारा जिससे वह भली भांति परिचित था। केवल कड़ियां अब तक खड़ी थीं। कुछ खिड़कियों पर शीशों की जगह तख्ते मढ़े हुए थे। मकान का बगल वाला हिस्सा जिसमें कारिन्दा रह रहा था, बावर्चीखाना और अस्तबल—सभी कुछ गयी-गुजरी हालत में था और गल सड़ रहा था। अगर कोई स्थान जर्जर नहीं हुआ था तो वह बाग था। वह पहले से भी घना हो रहा था, और पूरे जोबन पर था। बाड़ के पीछे से ही चेरी, सेब और आलूबुखारे के पेड़ नजर आ रहे थे। उन पर फूल आये हुए थे जिससे वे सफेद बादलों के पुंज से लग रहे थे। लिलक की झाड़ियां खूब खिल

रही थी। बारह साल पहले भी वे इसी तरह खिल रही थी जब नेख्लूदोव ने कात्यूशा के साथ यहां नाम का खेल खेला था और इनके पीछे वह कटीले पौदे पर गिर पडा था, जिससे उसके हाथ छिल गये थे। तब कात्यूशा की उम्र सोलह वर्ष की थी। घर के निकट ही फूफी सोफिया इवानोव्ना ने लाच का पेड लगाया था। उन दिनो वह एक छडी के समान छोटा सा था। अब वह एक पेड बन गया था। उसका तना इतना मोटा था कि उसमे से मकान की कडी निकल सकती थी। उसकी टहनियो पर कोमल, हरे रग की सुइया जैसी पत्तिया उग रही थी ऐसे लगता था जसे रोयें निकल आये हों। नदी का प्रवाह, अपने दोनो किनारा मे सीमित, पनचक्की के बाध पर से टाठें मारता हुआ बहे जा रहा था। नदी के पार घास का मैदान था जिसमे जगह जगह किसानो के मिले-जुले ढोर चर रहे थे।

आगन मे ही उसे कारिन्दा मिला जो खडा मुस्करा रहा था। वह कोई विद्यार्थी था जो विद्यालय की शिक्षा पूरी करने से पहले ही चला आया था। जब उसने नेख्लूदोव से दफ्तर मे चलने को कहा तब भी उसके होठो पर मुस्कराहट थी। अन्दर पहुचते ही मुस्कराते हुए वह पार्टीशन के पीछे चला गया, मानो उसकी मुस्कराहट के पीछे कोई भेद छिपा हो, वह कोई बहुत ही बढिया चीज़ नेख्लदोव को भेंट करना चाहता हो। कुछ देर तक पार्टीशन के पीछे फुसफुसा कर बाते करने की आवाजें आती रही। इसके बाद वह गाडीवान जो नेख्लूदोव को स्टेशन पर से लाया था, बख्शीश ले कर अपनी गाडी हाक ले गया। चलती गाडी से घटियो की आवाज आती रही। फिर सब चुप हो गया। उसके बाद खिडकी के सामने से एक लडकी गाढे की कामदार कमीज पहने, नगे पावो भागती हुई निकल गई। उसने कानो मे बुदो के स्थान पर रेशम के फुनगे लटका रखे थे। फिर एक किसान सामने से गुज़रा। उसके बूटो के नीचे कील लगे थे जिससे बाहर पगडण्डी पर चलते हुए उसके बूटो से खटखट की आवाज आ रही थी।

छोटी सी खिडकी के पास बैठ कर नेख्लूदोव बाहर बाग की ओर देखने लगा। उसके कान बाहर की ओर लगे हुए थे। खिडकी मे से वसन्त की ताजा हवा के हल्के हल्के झोंके आ रहे थे, उनमे धरती की गध थी जिसे हाल ही मे खोदा गया हो। हवा के झोके उसके पसीने से

माथे पर लटक ग्राये बालो के साथ ग्रौर चाकू से कटे फटे दासे पर रखे कागज़ो के साथ खिलवाड करते वह रहे थे।

"त्रा-पा-तप! त्रा-पा-तप!" नदी पर से स्त्रियो के कपडे धोने की ग्रावाज ग्रा रही थी। सभी एकलय मे लकडी के बल्लो से कपडो को पीट रही थी। पनचक्की का तालाब झिलमिल कर रहा था। ऐसा जान पडता जैसे यह ग्रावाज छितर कर तालाब पर फैल रही हो। पनचक्की पर से गिरते पानी की लयबद्ध ग्रावाज ग्रा रही थी। नेख्लूदोव के कान के पास से एक डरी हुई मक्खी जोर जोर से भिनभिनाती हुई उड गई।

ग्रौर सहसा नेख्लूदोव को याद ग्राया जैसे बरसो पहले, जब वह भोला भाला युवक था, पनचक्की पर से यही लयबद्ध शब्द सुनाई दिया करता था ग्रौर उस पर से स्त्रियो के कपडा पीटने की ग्रावाज़ इसी तरह ग्राया करती थी। इसी तरह वसन्त समीर के झोके उसके गीले माथे पर लटकते बालो को सहलाते थे तथा खिडकी के कटे फटे दासे पर रखे कागज़ो को उडाते थे। इसी तरह एक मक्खी भिनभिनाती हुई उसके कान के पास से उड कर गई थी। यह कहना गलत होगा कि नेख्लूदोव को उन दिनो की बात याद हो ग्रायी थी जब वह ग्रठारह वर्ष का युवक था। लेकिन इस समय वह ऐसा ही महसूस कर रहा था जैसे वह ग्रठारह वर्ष का युवक हो, वही ताज़गी ग्रौर स्वच्छता ऐसी मानसिक स्थिति जब भविष्य की महान तथा ग्रसीम सभावनाए उसके सामने खुल रही हो। पर साथ ही वह यह भी महसूस कर रहा था—जैसा कि सपना देखते समय होता है—कि यह सब ग्रब नही रहेगा, ग्रौर इससे उसका हृदय बेहद उदास हो उठा।

"ग्राप भोजन किस समय करना चाहते हैं?" कारिन्दे ने मुस्कराते हुए पूछा।

"जब भी तुम कहो। मुझे भूख नही है। मैं पहले गाव म थोडा टहलने जाऊगा।"

"क्या ग्राप घर के ग्रन्दर नही चलना चाहते? सब चीज़ें बड ढग से रखी हैं। कृपया ग्रन्दर चलिये। यदि बाहर "

"इस समय नही धन्यवाद बाद मे चलूगा। मेहरबानी कर के यह तो बताग्रो, क्या यहा कोई मत्र्योना खारिना नाम की ग्रौरत रहती है?" (यह कात्यूशा की मौसी का नाम था।)

"जी हा, गाव म रहती है। उसने ग्रपने घर म शराबखाना खोल

रखा है, जहा लोग लुक छिप कर शराब पीने जाते हैं। मुझे मालूम है, मैंने कई बार उसे समझाया भिड़का भी है कि तुम जुर्म कर रही हो, लेकिन उसे पकड़ने को तो दिल नही मानता, बूढी औरत है, नाती पोते हैं उसके," कारिन्दे ने कहा। वह अब भी मुस्करा रहा था। वह मालिक को खुश भी करना चाहता था, और अपना यह विश्वास भी व्यक्त करना चाहता था कि इन बातो के प्रति नेख्लूदोव का और उसका एक ही मत है।

"वह किस जगह रहती है? मैं चाहता हू कि अभी टहलते हुए चला जाऊ और उससे मिल लू।"

"गाव के दूसरे सिरे पर रहती है। उस तरफ से तीसरा झोपडा है। बायें हाथ पहले एक पक्का, ईंटो का मकान आता है, उसके आगे उसका झोपडा है। लेकिन मैं आपको ले चलूगा," खुशी से मुस्कराते हुए कारिन्दे ने कहा।

"नही, शुक्रिया, मैं खुद ढूढ लूगा। तुम एक बात करो। कृपया किसानो की एक मीटिंग बुला लो। उनसे कहो कि मैं उनसे ज़मीन के बारे मे बात करना चाहता हू," नेख्लूदोव ने कहा। उसका इरादा यह था कि यहा के किसानो के साथ भी वह वैसा ही करारनामा कर ले जैसा कि उसने कुज्मिस्कोये के किसानो के साथ किया था। और अगर हो सके तो वह उसी दिन शाम को इस काम से निबट जाना चाहता था।

४

नेख्लूदोव फाटक मे से बाहर निकला तो उसे फिर वही लडकी मिली जिसने कानो मे रेशमी फुनगे लटका रखे थे। वह उसी पुरानी पगडण्डी पर चरागाह की ओर से लौट रही थी जिस पर तरह तरह के झाड-पात उग रहे थे। उसने शोख रग का, लम्बा सा एप्रन पहन रखा था। उसके गुदगुदे पाव अब भी नगे थे। भागते हुए वह अपना बाया बाजू तेज़ तेज़ झुला रही थी। दायें बाजू से वह एक मुर्ग को पेट के साथ चिपकाये हुए थी। मुर्ग चुपचाप बैठा था, उसकी लाल कलगी हिल रही थी। बस कभी कभी वह आखें घुमाता और अपनी काली टाग को कभी बाहर निकाल देता और कभी वापस खीच लेता। उसका पजा बार बार लडकी के एप्रन से अटक रहा था। जब लडकी मालिक के अधिक नज़दीक पहुची तो उसने

अपनी रफ्तार धीमी कर दी और दौड़ने के बजाय चलने लगी। उसके सामने पहुंच कर वह खड़ी हो गई और एक बार अपना सिर पीछे की ओर झटका, और झुक कर अभिवादन किया। जब नख्लूदोव आगे निकल गया तो वह फिर मुग को लिये घर की ओर भागने लगी। कुए की ओर जाते हुए नख्लूदोव को एक बुढ़िया मिली। उसने गाढ़े की मोटी सी कमीज पहन रखी थी, और बहंगी पर दो बल्टिया पानी की लटकाये चली आ रही थी। बहंगी के नीचे उसकी पीठ बैठी जा रही थी। बुढ़िया ने बड़े ध्यान से दोनो बाल्टिया जमीन पर रखी, उसी तरह सिर को पीछे फेंका और फिर झुक कर अभिवादन किया।

कुए के पास से हो कर नख्लूदोव ने गाव मे प्रवेश किया। सूरज चमक रहा था, और हवा मे घुटन और गर्मी थी, हालाकि अभी दिन के केवल दस ही बजे थे। आकाश मे बादल घिर रहे थे जो किसी किसी वक्त सूरज को ढक लेते। गाव की गली मे पहुचा तो हवा मे गोबर की तीखी गध छाई हुई थी, परन्तु यह गध अप्रिय नही लगती थी। यह गध कुछ तो उन छकडो मे से आ रही थी जो खाद मे लदे पहाड़ी पर चढ रहे थे लेकिन मुख्यतया यह गध घरो के आगनो मे लगे खाद के ढेरो मे से आ रही थी। ढेरो मे से खाद निकालने पर गध उडती थी। जिस जिस घर के सामने से नख्लूदोव गुजरा उसका दरवाजा खुला था। किसान घूम घूम कर इस ऊचे लम्बे, हृष्ट पुष्ट धनी आदमी को देखते, जो भूरे रग का टोप पहने और उसमे छम छम करता रेशमी फीता लगाये, हाथ मे बढ़िया, चमकती मूठ वाली छड़ी पकड़े, जिसे वह हर दूसरे कदम पर जमीन से छूता हुआ गाव की सड़क पर चला जा रहा था। किसानो के पाव नगे थे और जो कमीजे और पतलूने उन्होने पहन रखी थी, उन पर जगह जगह गोबर लगा हुआ था। कुछ किसान अपने खाली छकड़ो मे बैठे दुलकी चाल मे चलते, हिचकोले खाते खेतो से लौट रहे थे। सिर पर से अपनी टोपिया उठा उठा कर वे नख्लूदोव का अभिवादन करते और फिर विस्मित आखो से इस विलक्षण आदमी को देखते रह जाते जो गाव की सड़क पर चला जा रहा था। औरते घरो के फाटको से बाहर आ खड़ी होती या घरो के ओसारो के नीचे खड़ी, एक दूसरी से नख्लूदोव की ओर इशारा करती हुई आखें फाड़ फाड़ कर देखे जा रही थी।

चौथे घर के सामने से जाते हुए नेख्लूदोव को रुक जाना पड़ा। फाटक में से एक छकड़ा निकल रहा था। पहिये चीं चीं कर रहे थे। छकड़े पर ढेरों खाद रखी थी, और ऊपर से दबा कर उस पर चटाई बिछा दी गई थी ताकि बैठा जा सके। छकड़े के पीछे पीछे एक छोटा सा छः साल का लड़का चला आ रहा था। इस आशा से कि छकड़े में सवारी मिलेगी, वह बड़ा उत्तेजित हो रहा था। एक किसान युवक, छाल के जूते पहन, लम्बे लम्बे डग भरता हुआ घोड़ी को हाँक कर बाहर ला रहा था। फाटक में से एक भूरे रंग का बछेड़ा लम्बी लम्बी टांगों वाला, कूद कर निकला परन्तु नेख्लूदोव पर नजर पड़ते ही वह छकड़े के पास दुबक गया। उसकी टांगें गाड़ी के पहियों के साथ रगड़ने लगीं। अपने पीछे भारी बोझ को खींचते हुए घोड़ी उत्तेजित हो रही थी और हल्के हल्के हिनहिना रही थी। फिर बछेड़े ने एक छलांग लगाई और अपनी मां से आगे निकल गया। दूसरे घोड़े को एक बूढ़ा आदमी हाँक कर बाहर लाया। वह दुबला-पतला मगर बड़ा फुर्तीला था। पांवों से नंगा, कंधों की हड्डियां बाहर को निकली हुई वह एक मैली कमीज़ और धारीदार पतलून पहने हुए था।

जब दोनों घोड़े पक्की सड़क पर पहुंच गये जहां जगह जगह सूखी भूरे रंग की खाद बिखरी पड़ी थी, तो बूढ़ा लौट कर फाटक के पास आ गया और झुक कर नेख्लूदोव का अभिवादन किया।

"आप तो हमारी मालकिनों के भतीजे हैं न?"

"हां, मैं उनका भतीजा हूं।"

"आप हमें देखने आये हैं? बड़ी किरपा की।" बूढ़ा आदमी बड़ा बातूनी जान पड़ता था।

"हां, तुम्हें देखने आया हूं। कहो तुम्हारे कैसे हाल चाल हैं?" नेख्लूदोव ने पूछा। उसे कुछ सूझ नहीं रहा था कि क्या कहे।

"हाल चाल कैसे हैं? बहुत बुरे," बूढ़े ने लटका लटका कर कहा, मानो इस तरह बोलने से उसे खुशी मिलती हो।

"बहुत बुरे क्या?" फाटक के अन्दर कदम रखते हुए नेख्लूदोव ने पूछा।

"हमारी जिन्दगी क्या है जी, बहुत बुरी," बूढ़े ने कहा और नेख्लूदोव के पीछे पीछे आंगन के उस हिस्से में जा खड़ा हुआ जो ऊपर से छना हुआ था।

नेख्लूदोव छत के नीचे जा कर खड़ा हो गया।

"यह देखो, पूरे बारह जन हैं खाने वाले," उन दो औरतों की ओर इशारा करते हुए बूढ़े ने कहा, जो हाथों में तंगली उठाये, खाद के बचे खुचे ढेर के पास पसीने से तर खड़ी थीं। उनके सिर पर के रूमाल खिसक आये थे, घाघरे उन्होंने ऊपर को चढ़ा रखे थे जिससे उनकी नंगी, मैली पिंडलियां नज़र आ रही थीं। "एक महीना गुज़रे न गुज़रे छः पूड अनाज खरीद दो इन्हें। इतने पैसे कहां से आवें?"

"तुम्हारा अपना अनाज काफी नहीं होता?"

"हमारा अपना?" बूढ़े ने दोहरा कर कहा। उसके होंठों पर तिरस्कार भरी मुस्कराहट थी। "मेरे पास ज़मीन ही कितनी है—तीन आदमियों के लिए। पिछले साल तो इतना भी अनाज नहीं हुआ कि बड़े दिन तक गुज़र चल सके।"

"फिर तुम क्या करते हो?"

"क्या करते हैं? एक बेटे को मजूरी करने भेज दिया है। फिर हुजूर की कोठी से भी मैंने उधार ले रखा है। यह सब पैसे लेंट से पहले ही चुक गये। और टैक्स अभी तक नहीं दिया गया।"

"टैक्स कितना है?"

"हमारे घर को साल में तीन बार सत्रह सत्रह रूबल देने होते हैं। हे भगवान, यह भी कोई ज़िन्दगी है! मालूम नहीं हम जी कैसे रहे हैं।"

"मैं तुम्हारे घर के अन्दर जा सकता हूं?" नेख्लूदोव ने पूछा और आंगन पार करने लगा। आंगन में खाद के ढेर पर से उतारी हुई पीली मटमैली परतें रखी थीं, जिन्हें तंगली से उतारा गया था। उनके कारण गोबर की तीखी गन्ध उठ रही थी।

"ज़रूर ज़रूर, चलिये!" बूढ़े ने कहा और गोबर पर अपने नंगे पांव रखता हुआ, जिससे उसकी पांवों की उंगलियों से गोबर का पानी चू रहा था, वह नेख्लूदोव के पास से हो कर आगे गया और घर का दरवाज़ा खोल दिया।

औरतों ने सिर पर रूमाल ठीक कर लिये, घाघरे ठीक किये, और बड़े विस्मय और आदर से इस साफ-सुथरे कुलीन की ओर देखने लगीं जिसकी आस्तीनों पर सोने के स्टड लगे थे और जो उनके घर के अन्दर जा रहा था।

घर के अन्दर से दो छोटी छोटी लड़कियां भाग कर निकलीं। उन्होंने केवल नीचे की कुर्तियां ही पहन रखी थीं। दरवाज़ा छोटा था। नेख्लूदोव ने अन्दर जाने के लिए सिर पर से टोप उतारा और सिर झुका कर बरामदे में दाखिल हुआ, और बरामदे में से होकर घर के अन्दर गया। घर तंग और गंदा था और उसमें से खट्टे खाने की गंध आ रही थी। बहुत सी जगह को खड्डियों ने घेर रखा था। झोंपड़े के अन्दर, चूल्हे के पास एक वृद्धा स्त्री आस्तीनें चढ़ाये खड़ी थी। उसकी सँवलाई हुई बाहें पतली लेकिन मजबूत थीं।

"मालिक आये हैं," बूढ़े ने कहा।

"धन्यभाग हमारे," बुढ़िया ने स्नेह भरे स्वर में कहा, और आस्तीनें उतारने लगी।

"मैं देखना चाहता था कि तुम लोग कैसे रहते हो।"

"बस, ऐसे ही रहते हैं जैसे देख रहे हो। झोंपड़ा आज गिरा कि कल गिरा। किसी की जान जरूर लेगा। मगर मेरा घर वाला कहता है कि यह खूब भला है, इसलिए हम बादशाहों की तरह रहते हैं," बुढ़िया ने सिर झटकते हुए कहा। बुढ़िया चुस्त औरत थी। "अब खाना लगाने लगी हूं, अपने मजूरों का पेट भरूंगी।"

"भोजन के लिए क्या दोगी?"

"भोजन? हमारा भोजन बहुत अच्छा होता है। सबसे पहले डबलरोटी और क्वास*, उसके बाद क्वास और डबलरोटी" बुढ़िया ने अपने दांत दिखाते हुए कहा, जो आधे से ज्यादा घिस चुके थे।

"नहीं नहीं सच सच बताओ, तुम लोग क्या खाओगे?"

"क्या खायेंगे?" बूढ़े ने हंसते हुए कहा। "हमारी खुराक सीधी सादी है। इन्हें दिखा दो, बीवी।"

बुढ़िया ने सिर हिला दिया।

"हम किसान क्या खाते हैं, यह देखना चाहते हो? बड़ी खोज-बीन करने वाले आदमी जान पड़ते हो। सब बात जानना चाहते हो, क्यों? मैंने कहा नहीं, डबलरोटी और क्वास खायेंगे। इसके पीछे शोरबा पियेंगे।

---

*एक खट्टा पेय।

एक औरत हमारे लिए मछली लेती आयी थी। उसी का शारवा बनाया है। उसके बाद आलू खायेंगे।"

"बस इतना ही?"

"और क्या चाहते हो? थोडा सा दूध भी होगा," हसती हुई आँखों से दरवाजे की ओर देखते हुए बुढिया ने कहा।

दरवाजा खुला था, और बरामदे मे लोगो की भीड इकट्ठी हो गई थी—लडके, लडकिया, औरत जिन्होने गोद म बच्चे उठा रखे थे—सभी भीड बनाय इस विचित्र आदमी की ओर देख रहे थे जो किसानो की खराब देखना चाहता था। बुढिया को इस बात पर बडा गव था कि वह कुलीनो के साथ व्यवहार करना जानती है।

"हा, हुजूर, बहुत ही खराब जिदगी है हमारी, कहना ही क्या,' बूढा बोला। "ऐ, कहा चले आ रहे हो!" बरामदे म खडे लोगो की ओर देखते हुए उसने चिल्ला कर कहा।

"अच्छा, तो मैं अब चलूगा " नख्लूदोव न कहा। वह फिर बचन और लज्जित सा अनुभव करने लगा था, हालाकि इसका कारण वह नही जानता था।

"बडी किरपा की हुजूर, जो हमारी खोज-खबर ली,' बूढे न कहा।

बरामदे म खडे लोग एक दूसरे के साथ सट कर खडे हो गय ताकि नेख्लूदोव को निकल जाने दें। नेख्लूदोव बाहर निकल आया और फिर पहले की तरह सडक पर जाने लगा। दो नगे पाव लडके उसके पीछे पीछे बरामदे म से निकल कर आ गय। दोनो न कमीजे पहन रखी थी। बडे लडके की कमीज किसी जमाने म सफेद रग की रही होगी। दूसरे की फटी-पुरानी कमीज गुलाबी रग की थी, मगर उसका भी रग फीका पड गया था। नख्लूदोव ने मुड कर उनकी ओर देखा।

"अब आप कहा जायगे?' सफेद कमीज वाले लडके न पूछा।

'मत्र्योना खारिना के घर,' नेख्लूदोव न जवाब दिया, 'क्या तुम उसे जानते हो?

गुलाबी कमीज वाला लडका किसी बात पर हसने लगा। लेकिन बडे लडके न गभीरता स पूछा—

कौन सी मत्र्योना? वह जो बूढी है?

हा, वही।

"ग्रा—ह! वह वाली!" उसने नम्रता वर वे वहा "वह गाव वे दूसरे सिरे पर रहती है। चल फेदका, हम इह ले चले।'

"चल, मगर घाडा का क्या करेगे?"

"उनकी कोई फिक्र नही।"

फेदका मान गया, ग्रौर ताना सडक पर जाने लगे।

५

नख्लूदोव को वडी उम्र के लागा के साथ वात करन से वच्चा के साथ वाते करना कही ग्रामान लगा ग्रौर वह रास्ते मे लडका के साथ खुल कर बात करने लगा। छोटे लडके ने हसना वद कर दिया, ग्रौर वडे लडके की तरह ही हर वात का जवाब ठीक ठीक ग्रौर गभोरता से दन लगा।

"यहा पर सवस गरीव लाग कौन हैं, क्या तुम वता सवत हो?" नख्लूदोव न पूछा।

"सबसे गरीव? मिखाइल गरीव है, सम्यान माकाराव ग्रौर माफा गरीव है।"

"ग्रौर ग्रनीसिया, वह उनमे भी ज्यादा गरीव है। उसके पास ता गाय भी नही। वे लाग तो माग कर खात है," नह फेदका न कहा।

"उसके पास गाय तो नही है, मगर उसके घर म केवल तीन जने हैं। मार्फा के घर म तो पाच जन हैं," वडे लडके ने ग्रापत्ति की।

"लेकिन ग्रनीसिया तो विधवा है," गुलावी कमीज वाले लडके ने ग्रनीसिया का पक्ष लेते हुए कहा।

"ग्रनीसिया विधवा है तो माफा कौन सी उससे ग्रच्छी है? वह भी विधवा जैसी ही है" वडे लडके ने कहा 'उसका भी तो घर वाला कोई नही।"

"कहा है उसका घर वाला?" नेख्लदोव ने पूछा।

"जेल मे उसे कीडे खा रहे हैं," वडे लडके न किसाना के प्रचलित शब्दो मे जवाब दिया।

"दो साल हुए उसने जमीदार के जगल म म दो वज के पेड काट डाले थे," गुलावी कमीज वाला छाटा लडका झट से बोल उठा, "वस,

उसे जेल मे डाल दिया। अब वह छ महीने से वही पडा है, और उसकी घर वाली भीख मागती है। घर मे तीन बच्चे हैं और एक बूढी नानी है," ब्योरा देते हुए उसने कहा।

"रहती कहा पर है?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"इसी घर मे," एक झोपडे की ओर इशारा करते हुए लडके ने कहा। झोपडे के सामने, जिस रास्ते पर नेख्लूदोव जा रहा था, एक नन्हा सा लडका, पटुए के से पीले बाल, अपनी पतली, टेढी, घुटनो पर बाहर को मुडी हुई टागो पर खडा था, और लगता था कि अभी गिरा कि गिरा।

"वास्का! कहा गया कम्बख्त?" एक स्त्री ने चिल्ला कर कहा, जो घर मे से बाहर दौडी आ रही थी। उसने भूरे रग का मैली सी कमीज पहन रखी थी। त्रस्त आखो से देखती हुई वह भागी हुई आयी, और नेख्लूदोव के पहुचने से पहले ही उसे उठा कर अन्दर ले गई, मानो डर रही हो कि नेख्लूदोव उसके बच्चे को पीट डालेगा।

यही वह स्त्री थी जिसका पति नेख्लूदोव के वन-वृक्षो के कारण जेल भुगत रहा था।

"और मात्र्योना? क्या वह भी गरीब है?" मात्र्योना के घर के सामने पहुचते हुए नेख्लूदोव ने पूछा।

'वह गरीब क्यो होगी, वह तो शराब बेचती है," गुलाबी कमीज वाले, दुबले-पतले लडके ने निश्चय से जवाब दिया।

झोपडे के पास पहुच कर नेख्लूदोव ने लडको को बाहर ही रुकने को कहा और बरामदा लाघ कर अन्दर चला गया। झोपडा चौदह फुट लम्बा था। झोपडे मे एक बडा सा अलावघर लगा था, जिसके पीछे एक खाट थी। खाट लम्बाई मे इतनी छोटी थी कि लम्बे कद का आदमी उस पर नहीं सो सकता था। "इसी खाट पर," नेख्लदोव सोच रहा था, "कात्यूशा ने बच्चे को जन्म दिया था, और बाद मे बीमार पडी रही थी।" घर मे बहुत सी जगह खड्डी ने घेर रखी थी। जब नेख्लूदोव ने झोपडे मे प्रवेश किया उस समय बुढिया अपनी सबसे बडी पोती के साथ उस पर ताना ठीक कर रही थी। दरवाज़ा नीचा था जिस कारण नेख्लूदोव का माथा उससे टकरा गया। नेख्लूदोव के पीछे पीछे और दो पोते भागते हुए अन्दर आये, लेकिन दरवाज़े पर ही रुक गये और चौखटा पकड कर खडे हो गये।

"क्या चाहिए?" रूखी आवाज़ मे बुढिया ने पूछा। उसका मिज़ाज

विगडा हुग्रा था, एक तो इसलिए कि ताना ठीक नही वैठ रहा था, दूसरे इसलिए वि ग्रवैध शराव बेचने के कारण जब भी कोई ग्रजनवी उसके झोपडे मे ग्राता तो वह डर जाती थी।

"मैं यहा का जमीदार हू। तुम्हारे साथ वात करना चाहता हू।"

वुढिया चुप हो गई ग्रौर उसकी ग्रोर बडे ध्यान से देखने लगी, फिर सहसा उसके चेहरे का भाव वदल गया।

"ग्ररे लाला, तुम ग्राये हो! मैं भी कैसी पगली हू, मैं सोच रही थी कि काई राह-जाता ग्रादमी ग्रन्दर घुस ग्राया है। छिमा करना, लाला, भगवान के वास्ते," बुढिया न स्नेह का स्वाग भरते हुए कहा।

"मैं तुम्हारे साथ ग्रकेले मे वात करना चाहता हू," नेख्लूदोव ने दरवाज़े की ग्रोर देखते हुए कहा, जहा बच्चो के पीछे एक स्त्री क्षीणकाय, पीले वच्चे को गोद मे लिये खडी थी। बच्चे के सिर पर टुकडे जोड कर बनायी टोपी रखी थी, ग्रौर होठो पर जीण मुस्कान थी।

"क्या देख रहे हो? लाग्रो तो जरा वैसाखी मेरी, मैं इन्हे सीधा करू," दरवाज़े पर खडे लोगो की ग्रोर देख कर वह चिल्लायी। "दरवाज़ा वद कर दो, सुनते हो?"

वच्चे भाग गये ग्रौर वच्चे वाली ग्रौरत ने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

"मैं सोच रही थी 'यह ग्रादमी कौन है?' मुझे क्या मालूम कि खुद मालिक ग्राये हैं, मैं वारी वारी जाऊ, तुम पर लाला," बुढिया वोली, "ग्राज तो चीटी के घर भगवान ग्राये हैं, ग्राग्रो, ग्राग्रो मालिक, यहा वैठो," ग्रपने एप्रन से एक तख्ता साफ करते हुए वह बोली। "मैं सोच रही थी, 'यह कौन कलमुहा ग्रन्दर घुसा ग्रा रहा है' ग्रौर निकला कौन, हाय, हाय, खुद मालिक, हमारे सिर के स्वामी, साधु-सज्जन, हमारा रक्षक। छिमा करना, मैं तो वुढा गई हू, मैं तो ग्रन्धी हो गई हू।"

नेख्लूदोव वैठ गया, ग्रौर बुढिया उसके सामने खडी हो गई। दाया हाथ उसका गाल पर था, ग्रौर बायें हाथ से दायें बाजू की कोहनी थामे हुए थी। फिर गाती हुई ग्रावाज़ मे कहने लगी—

"मैं वारी वारी जाऊ, मालिक, तुम्हारे तो ग्रब वाल पकने लगे। तुम्हारा तो चेहरा ऐसा खिला खिला होता था जैसे सदाबहार का फूल। ग्रौर ग्रव देखो! वहुत चिन्ता करते होगे?"

"मुझे तुमसे यह पूछना था कात्यूशा मास्लोवा तुम्हे याद है?"

"येकातेरीना, क्या नहीं। वह तो मेरी भाजी रही। उम कम भन सकती हू? मुझे सब मालम है। ओह, मानिक, कौन है जिसकी चार साफ हो? कौन है जिसने राजा का कानून नहीं तोडा हो? जवाना मन्ताना होती है। तुम दोनो चाय-कॉफी मिल कर पीते थे न, बस, शनान ने तुम्ह वस म कर लिया। कभी कभी उसने आगे किसी की नहा चलनी। अब करते तो क्या करते? उस छोड देते, तो? मगर नही, तुमने ता उसकी झोली भर दी, उसे पूर एक सौ रूबल दे डाले। और वह? जानते हो उसने क्या किया? उसने कोई भी बात समझदारी की नहीं की। मरा कहा मानती ता सुख से रहती। मैं तो सच्ची बात कहती हू, भले ही वह मेरी भाजी है वह लडकी अच्छी नही है। मैंने उसे इतनी अच्छी नौकरी दिलवायी। वहा मालिक की उसने नही मानी, उलटे उस गालियां दी। हम जैसे लोग क्या भले आदमियो को गालियां देंगे? उन्होंने उस निकाल बाहर किया। फिर जगलात वाले के घर। वहा आराम से रह सकती थी, मगर नहीं वहा से भी चली आयी।"

"मैं बच्चे के बारे मे जानना चाहता हू। बच्चा तुम्हारे ही घर म हुआ था न? वह कहा है?"

"अब बच्चे की सुनो। उस वक्त मैंने उसके बारे म बहुत सोचा। कात्यूशा की एक सास ऊपर एक नीचे, मैं सोच यह तो जीती नही बचेगी। मैंने बच्चे का बपतिस्मा करवाया और उसे यतीमखाने म भेज दिया। अब मा मर रही हो तो बच्चे को ता बचाना चाहिए। उस बेचारे ने क्या कुसूर किया है। और लोग तो बस, बच्चे को छोड देते हैं खाने को कुछ नही देते, वह अपने आप सूख कर खत्म हो जाता है। पर मैं सोच हाय नही, मैं थोडा कष्ट सह लूगी, मगर इसे यतीमखाने म जरूर भेजूगी। पैसे थे, बस मैंने उसे भिजवा दिया।

"ता यतीमखाने के अस्पताल से रसीद ली होगी। उसका नबर तो होगा तुम्हारे पास?

"हा नबर तो था, मगर बच्चा मर गया,' वह बोली, 'वह औरत बता रही थी कि ल के पहुची ही कि मर गया।"

'औरत कौन औरत?

"वही जा स्कोरोम्ना म रहती थी। उसका यही धधा था। मालानिया नाम था उसका। अब तो वह मर गई है। बडी समझदार औरत थी।

जानते हो वह क्या करती थी? लोग उसके पास कोई बच्चा ले जाते तो वह उसे अपने पास रख लेती, उसे खिलाती पिलाती। जब काफी बच्चे हो जाते—तीन या चार— तो उन्हें सीधे यतीमखाने मे दे आती। उसने बहुत बढिया इतज़ाम कर रखा था—एक बडा सा पालना बना रखा था दोहरा पालना। उसमे वह बच्चा को एक तरफ से या दूसरी तरफ से लिटा देती थी। उसके साथ हैडल भी लगा था। उसमे वह चारा बच्चा को लिटा दती—एक के पाव दूसरे के साथ जुडे होते, मगर सिर दूर दूर रखती ताकि एक दूसर के साथ टकराये नही। इस तरह वह चारा बच्चा का एक साथ ल जाती थी। वह उनके मह म चीथडा के चचब बना कर द दती जिसस वे बेचारे चुप बने रहते।"

"कहो, आगे कहो।"

"बस, येकातरीना के बच्चे को चौदह दिन तक अपने पास रखा। फिर उसी तरह उस भी ले गई। मगर बच्चा उसी के घर म बीमार पडने लगा था।"

"क्या बच्चा सुदर था?" नख्लदाव न पूछा।

"ऐसा सुदर, ऐसा सुन्दर, हाथ लगाओ तो मैला होना था। बिल्कुल तुम्हारी सूरत थी" बुढिया न आख मार कर कहा।

"बीमार क्यो होन लगा था? क्या खुराक अच्छी नही थी?"

"खुराक कहा थी, खुराक का ता नाम ही था। बात भी ठीक है, अपना बच्चा न हो तो कोई क्यो पाले। इतना भर देती थी कि यतीमखाने पहुचने तक बचे रहे। कहती थी,' किसी तरह मैंने उसे मास्को पहुचाया। मगर वहा पहुचते ही वह मर गया। वह वहा स सार्टीफीकट भी ल आयी थी—बिल्कुल कायदे के मुताबिक। इतनी समझदार औरत थी वह।'

बस, अपने बच्चे के बार मे नेख्लदोव को यही कुछ पता चल पाया।

६

नेख्लूदोव बाहर सडक पर आ गया। अब की बार फिर बाहर निकलते हुए उसका सिर दोना दरवाजा से टकराया। सडक पर सफेद और गलाबी कमीजो वाले दोनो लडके उसका इन्तजार कर रहे थ। कुछेक अय लाग

भी उनके पास आ खड़े हुए थे। स्त्रियों में से कई एक की गोद में बच्चे थे। इनमें वह दुबली-पतली स्त्री भी थी जिसने अपने बच्चे के सिर पर चीथड़ों की बनी टोपी पहना रखी थी। बच्चा दुबला था, और उसके सूखे हुए पतले चेहरे पर एक अजीब सी मुस्कान खेल रही थी। बार बार वह अपना टेढ़ा सा अंगूठा हिलाने लगता। नेख्लूदोव जानता था कि इस मुस्कान में यन्त्रणा छिपी है। उसने लड़कों से उस औरत के बारे में पूछा।

"यही तो अनीसिया है। मैंने आपको बताया था न?" बड़े लड़के ने कहा।

नेख्लूदोव ने अनीसिया को सम्बोधित कर के पूछा—

"तुम्हारी गुजर कैसे होती है? क्या काम करती हो?"

"क्या काम करती हूं—भीख मांगती हूं," अनीसिया ने कहा और रोने लगी।

बच्चे के सूखे हुए चेहरे पर फिर मुस्कान खेल गई और वह लातें मारने लगा। उसकी टांगें सूख कर कांटा हो रही थीं।

नेख्लूदोव ने जेब में से बटुआ निकाला और दस रूबल का एक नोट उस औरत के हाथ में दे दिया। वह दो एक कदम ही आगे बढ़ पाया होगा जब एक और औरत उसके पास आ पहुंची। उसकी गोद में भी बच्चा था। उसके पीछे पीछे एक बूढ़ी औरत चली आई, और उसके बाद एक और जवान स्त्री आ पहुंची। सभी अपनी गरीबी का रोना रोने लगीं और नेख्लूदोव के आगे हाथ फैला दिये। नेख्लूदोव के पास कुल मिला कर साठ रूबल थे। उसने सबके सब उन्हें दे डाले, और कारिन्दे के घर की ओर लौट पड़ा। उसका हृदय व्याकुल हो उठा।

कारिन्दा अब भी मुस्करा रहा था। कहने लगा कि किसान शाम के वक्त मीटिंग के लिए इकट्ठे हो जायेंगे। नेख्लूदोव ने धन्यवाद किया और सीधा बाग में जा कर टहलने लगा। सेब के पेड़ों पर बूर आया हुआ था, और फलों की पत्तियां घास-पत्तर में भरी रविशों पर छितरी हुई थीं। आज जो कुछ नेख्लूदोव ने देखा था वह उस पर विचार करना चाहता था।

पहले तो चारों ओर मौन छाया रहा लेकिन फिर सहसा कारिन्दे के घर के पिछवाड़े से आवाजें आने लगीं। दो औरतें गुस्से से बोल रही थीं, और एक दूसरी की बात बार बार काट रही थी। बीच में कभी कभी

मुस्कराते कारिन्दे की भी आवाज सुनाई पड जाती। नेख्लूदोव कान लगा कर सुनने लगा।

"मुझमे अब और सकत नही है। तुम क्या कर रहे हो, मेरे गले का क्रॉस छीन रहे हो," एक औरत की क्रुद्ध आवाज आयी।

"मेरी गाय तो जरा सी देर के लिए घुसी थी," दूसरी औरत बोली। "मुझे मेरी गाय वापस कर दो। पशु पर तो जुल्म नही करो। मरे बच्चे क्या करेंगे, उन्हें दूध कैसे मिलेगा?"

"गाय चाहती हो तो पैसे निकालो, या पैसे के बदले काम करो " कारिन्दे की आवाज आई।

नेख्लूदोव बाग मे से निकल कर सायबान मे आ गया। उसी के पास दो फटेहाल स्त्रिया खडी थी और उनमे से एक गर्भवती थी, लगता था जसे उसके दिन पूरे होने वाले हैं। कारिन्दा, सायबान की सीढियो पर, दोनो हाथ अपने हॉलैंड-कोट की जेबो मे डाले, खडा था। मालिक को देखते ही स्त्रिया चुप हो गयी और सिर पर से फिसल आये रूमाल ठीक करने लगी, कारिन्दा भी जेबो म से हाथ निकाल कर मुस्कराने लगा।

जो कुछ हुआ था वह यह था। कारिन्दे का कहना था कि किसान लोग अक्सर अपने बछडे, और कभी कभी गौए भी, जमीदार के मैदान म चरने के लिए छाड देते हैं। इन दो औरतो के घरा की दो गौए मैदान म चरती पायी गयी। उन्ह हाक कर बाडे मे ले जाया गया। कारिन्दे ने औरता पर फी गाय तीस तीस कोपेक जुर्माना कर दिया, और कहा कि अगर पसे नही देना चाहती हो तो दो दो दिन काम करो। औरतो ने जवाब दिया कि गौए खुद मैदान मे चली गयी, इसमे हमारा कोई दोष नही। हमारे पास पसे नही हैं। गौए वापस कर दो, उन पर दया करो, देखो, वे सुबह से भूखी खडी डकार रही है। जो कहोगे तो हम बाद मे जुर्माना भी दे देंगी।

"मैं बार बार तुम्हारी मिन्नते कर चुका हू कि जब दोपहर को अपने ढोर घर वापस ले जाया करो, तो उन पर नजर रखा करो " नेख्लूदोव की ओर देखते हुए कारिन्दा मुस्करा कर कहने लगा मानो उसे अपना गवाह बना रहा हो।

"मैं अपने नन्हे को पकडने के लिए उसके पीछे भागी। मरी पीठ हुई कि वे मैदान म घुस गयी।"

"जब ढोर देखने का ज़िम्मा लिया है तब भागना तो नहीं चाहिए।"

"मेरे बच्चे को कौन दूध पिलाता? क्या तुम पिलाते?"

"अगर गौएं मैदान में नुकसान करती तब तो कोई बात था, पर वे तो मिनट भर के लिए अन्दर गई थीं," दूसरी औरत बोली।

"सभी मैदान चौपट हो गये है," नेख्लूदाव की ओर देखते हुए कारिंदे ने कहा। "मैं जुर्माना नहीं करूं तो घास का तिनका भी नहीं बचेगा।"

"यह पाप मत करो, झूठ नहीं बोलो। मेरी गौएं कभी भी पहले वहां गई हैं?" गर्भवती स्त्री ने चिल्ला कर कहा।

"आज तो गई थी। बस, जुर्माना अदा करो या बदले में मजूरी करो।"

"अच्छी बात है, मैं मजूरी कर दूंगी। अब गाय मेरे हवाले करो। उसे भूखा तो नहीं मारो," उसने गुस्से से कहा। "या मैं कौन सा सुखी हूं न दिन को चैन है न रात को। सास बीमार और घर वाला शराबी। सारा काम मुझे करना पड़ता है, और शरीर में ताकत नहीं। भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारे जुर्माने!"

नेख्लूदाव ने कारिंदे को गौएं लौटा देने को कहा और खुद बाग़ में वापस लौट गया, ताकि फिर अपनी समस्या पर विचार कर सके। पर सोचने के लिए बाकी रह ही क्या गया था? उसे हर बात इतनी स्पष्ट जान पड़ती थी कि वह हैरान था कि सब लोग उसे क्यों नहीं देख पाते, और वह स्वयं भी उस बात को पहले क्यों नहीं देख पाया, जो अब इतनी स्पष्ट लग रही है।

'लोग मर रहे हैं। मरने का एक क्रम चल रहा है, और वे उसके अभ्यस्त हो गये हैं। इसी के अनुसार उन्होंने अपने जीवन को भी ढाल लिया है। अनगिनत बच्चे मर जाते हैं, स्त्रियां काम के बोझ के नीचे पिस रही हैं, लोगों को भर-पेट खाना नहीं मिलता, विशेष रूप से बूढ़ों को। धीरे धीरे लोगों की यह स्थिति हो गई है कि वे इसकी बीभत्सता को नहीं देख पाते, और कोई शिकवा शिकायत नहीं करते। इसलिए हम भी यह समझते हैं कि उनकी स्थिति स्वाभाविक और यथोचित ही है।" अब यह बात उसके लिए सर्वथा स्पष्ट हो गई थी कि जनता के घोर दारिद्र्य का मुख्य कारण यही है कि जिस ज़मीन से उनका पालन-पोषण हो सकता था, उसे ज़मींदारों ने हथिया लिया है। किसान स्वयं यह बात जानते हैं

और हमेशा इसकी ओर सकेत भी किया करते थे। बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि बच्चे और बूढ़े इसलिए मर रहे है कि उन्हे दूध मुयस्सर नही होता। और दूध इसलिए मुयस्सर नही होता कि उनके पास चारागाह भूमि नही है, न ही जमीन है जिस पर वे अनाज या चारा पैदा कर सके। लोगो के सभी क्लेशो का स्वत स्पष्ट कारण यही है—या कम से कम उनके सारे दुख दर्द का मुख्य कारण यही है कि जो जमीन उनका पेट पाल सकती है, वह उनके अपने हाथ मे नही है। इसके विपरीत वह उन लोगो के हाथ मे है जो भूमि के स्वामित्व का लाभ उठाते हुए इन लोगो की मेहनत पर जीते हैं। यह भूमि लोगो के लिए अत्यावश्यक है। उससे वचित हो जाने पर वे मरने लगते हैं। उसी भूमि पर भूखे पेट रह कर ये लोग काश्त करते हैं ताकि अनाज विदेश मे जा कर बिके और भूमि के स्वामी टोप और छडिया, घोडे-गाडिया और कास की मूर्तिया खरीद सके। नेख्लूदोव के लिए यह सारी बात कम ही स्पष्ट हो गयी थी, जैसे कि यह स्पष्ट था कि बाडे मे बद घोडे अपने पैरो तले की घास खा चुकने के बाद दुबले होने लगेंगे और भूखो मरने लगेंगे जब तक कि उन्हे उस जमीन पर न जाने दिया जाय, जहा वे अपने लिए चारा ढूढ सकते हो। वर्तमान स्थिति अत्यन्त भयानक है और उसे कायम नही रहने देना होगा। उसे बदलने के साधन ढूढने होंगे। यदि ऐसा नही कर सकते तो कम से कम उसमे भाग नही लेना होगा। 'मैं उन्हे अवश्य ढूढूगा" बर्च के पेडो के नीचे टहलते हुए नेख्लूदोव सोच रहा था। "वैज्ञानिक क्षेत्रो, सरकारी दफ्तरो, और अखबारो इत्यादि मे हम लोगो की दरिद्रता के कारणो की चर्चा करते हैं तथा उसे दूर करने के साधनो पर विचार करते है। परन्तु उनकी स्थिति को सुधारने का जो एक मात्र निश्चित साधन है—उन्हे जमीन लौटा देना जिसकी उन्हे बेहद जरूरत है—उसकी चर्चा कभी नही करते।"

नेख्लूदोव को हैनरी जार्ज का मूल सिद्धान्त याद हो आया। कोई जमाना था जब इस सिद्धान्त से वह बेहद प्रभावित हुआ था। वह हैरान था कि उसे भूल कैसे गया। "भूमि पर किसी का स्वामित्व नही हो सकता। जिस भाति जल, वायु तथा धूप का क्रय विक्रय नही किया जा सकता, उसी भाति जमीन को भी खरीदा और बेचा नही जा सकता। इससे प्राप्त होने वाले लाभ पर सभी का समान अधिकार है।' अब उसकी समझ मे आया कि कुज़मिन्स्कोये के प्रबन्ध मे उसे क्या लज्जा का अनुभव हो

रहा था। वह अपने को धोखा देता रहा था। यह जानत हुए कि जमीन के स्वामित्व का अधिकार किसी का भी नही होना चाहिए, फिर भी उसने अपने लिए इस अधिकार को स्वीकार किया था, और किसानों को एक ऐसी चीज़ का एक भाग दिया था जिस पर स्वय उसका कोई अधिकार नही था। उसका अन्ततम इस बात को जानता था। यहा पर वह वही बात नही दोहरायेगा, बल्कि, कुज़िमस्कोये वाले प्रबन्ध को भी बदल देगा। उसने मन ही मन एक योजना तैयार की, जिसके अनुसार वह ज़मीन किसानो को लगान पर दे देगा, और उनके सामने यह स्वीकार करेगा कि जो लगान वे देंगे उस पर उन्ही का अधिकार रहेगा, और वे उस टक्स अदा करने तथा सामूहिक हित के कामो के लिए ही इस्तेमाल करेंगे। यह Single tax* तो नही होगा, परन्तु आधुनिक परिस्थितियों में यह उस प्रणाली के निकटतम अवश्य होगा। मुख्य बात यह थी कि वह भू-स्वामित्व का लाभ उठाने से इन्कार कर रहा था।

जब नेख्लदोव लौट कर आया तो कारिन्दे ने उसे भोजन करने को कहा। इस समय भी वह मुस्करा रहा था, और यह मुस्कान विशेषतया हर्षपूर्ण थी। उसकी पत्नी ज़ियाफत तैयार कर रही थी, और इसमें उस लडकी की मदद ले रही थी जिसके कानो मे रेशमी फुनगे थे। कारिन्दे को डर था कि यदि भोजन करने मे देरी हो गयी, तो भाजिया बहुत ज़्यादा उबल जायेंगी।

मेज़ पर गाढे का मेज़पोश बिछा था। नैप्किन की जगह एक तौलिया रखा हुआ था जिस पर कढाई का काम हुआ था। एक पुराने सस्ते बतन म जिसका दस्ता टूटा हुआ था आलुओं का शोरवा रखा था। शोरवे मे मुग के टुकडे तैर रहे थे। यह वही मुग था जिसने फडफडा कर अपनी काली टाग खीची थी। अब उसे काट डाला गया था, या या कहें कि टुकडे कर डाले गये थे, और किसी किसी टकडे पर अब भी उसके बाल मौजूद थे। शोरवे के बाद फिर यही बालो वाला मुग परोसा गया। इस की कसके टुकडे भून कर रखे गये थे। उसके बाद दही म तैयार की गये पन्ट्रिया रखी गयी, उनम मे घी चू रहा था, और बेहद शक्कर डाली गई थी। इस भोजन को खाने मे किसी की तनिक भी रुचि नहीं हो सकती

---

*एकीकृत कर (अंग्रेजी)

थी, लेकिन नेख्लूदोव इसे खाता गया। इसके जायके की ओर उसका ध्यान तक नही गया। जब वह गाव मे से लौट कर आया था तो वह उदास था, लेकिन एक विचार ने उस सारी उदासी को छिन्न भिन्न कर दिया था। और भोजन करते समय यही विचार उसके मन मे घूम रहा था।

मेज पर वही सहमी हुई लडकी भोजन ला रही थी जिसने कानो मे फुनगे लटका रखे थे। कारिन्दे की पत्नी बार बार दरवाजे पर आ कर अन्दर झाक जाती, और कारिन्दा बराबर मुस्कराये जा रहा था, वह फूला नही समा रहा था, और मन ही मन इस बात पर गर्व कर रहा था, कि उसकी पत्नी कैसी अच्छी रसोई बना लेती है।

भोजन समाप्त हुआ, और नेख्लदोव आखिर किसी तरह कारिन्दे को अपने पास बिठा पाया। उसे बिठाना आसान नही था। नेख्लूदोव अपनी योजना पर फिर एक बार विचार करना चाहता था और किसी को सुनाना चाहता था। इस कारण उसने किसाना को जमीन देने की अपनी योजना कारिन्दे को सुनाई और उससे उसकी राय पूछी। वह मुस्कराता रहा, मानो मुद्दत से उसने स्वय यही बात सोच रखी हो और अब उसे नेख्लूदोव के मुह से सुन कर खुश हो रहा हो। लेकिन वास्तव मे उसके पल्ले कुछ भी नही पडा था। इसलिए नही कि नेख्लूदोव ने अपने विचार स्पष्टता से नही समझाये थे, बल्कि इसलिए कि नेख्लूदोव दूसरा के लाभ के लिए अपना लाभ त्याग कर रहा था। कारिन्दे के दिमाग मे यह धारणा जड पकड चुकी थी कि हर व्यक्ति को केवल अपने लाभ का और दूसरो के नुकसान का ही ख्याल होता है। इसलिए जब नेख्लूदोव ने बताया कि भूमि से प्राप्त होने वाली सारी आय से किसानो की सामूहिक पूजी तैयार की जायेगी तो उसने सोचा कि यह बात उसकी समझ म नही आ रही है।

"जी, समझा, तो आपको इस पूजी मे से हिस्सा मिलता रहेगा," कारिन्दे ने कहा। उसका चेहरा खिल उठा।

"अरे नही भाई, नही, जमीन व्यक्तिगत रूप से अलग अलग व्यक्तियो की मिलकियत नही हो सकती। आया समझ मे?"

"जी आ गया।"

"इस तरह जमीन की सारी उपज पर सबका अधिकार होगा।"

"तो फिर आपको कुछ नही मिलेगा?" कारिन्दे ने कहा। उसकी हंसी उड गई थी।

"नही, उसे मैं छोड रहा हू।"

कारिन्दे ने ठण्डी उसास भरी, और फिर मुस्कराने लगा। अब बात उसकी समझ मे आ गयी थी। जाहिर है नेख्लूदोव का दिमाग ठीक नही है। वह फौरन इस बात पर विचार करने लगा कि नेख्लूदोव की इस योजना से, जिसके अनुसार वह अपनी ज़मीन सौंप देगा, वह अपने लिए क्या लाभ निकाल सकता है। वह इस योजना को अपने लाभ की दृष्टि से देखने लगा।

पर जब उसने देखा कि यह भी सभव नही तो उसका चेहरा लटक गया, योजना में उसकी रुचि जाती रही। अब भी जो वह मुस्करा रहा था तो केवल मालिक को खुश करने के लिए। यह देख कर कि कारिन्दे की समझ मे उसकी बात नही आ रही है, नेख्लूदोव ने उसे वहा से भेज दिया, और स्वय मेज के सामने बैठ कर अपनी योजना को कागज़ पर लिखने लगा। मेज़ जगह जगह से कटी-छिली थी और स्याही के धब्बो से गन्दा हो रही थी।

लाइम-वृक्षो के पीछे, जिन पर नयी हरियावल छायी थी, सूरज डूब गया। कमरे मे धडाधड मच्छर आने लगे, और नेख्लूदोव को काटने लगे। ज्यो ही उसने अपनी टिप्पणियो को लिखना समाप्त किया तो उस गाव की ओर से आती आवाज़े सुनाई दी। ढोर डकार रहे थे और फाटक चर्रा कर खुल रहे थे। इसके अतिरिक्त किसानो की आवाज़ें थी जो मीटिंग के लिए इकट्ठे हो रहे थे। नेख्लूदोव ने कारिन्दे को कह रखा था कि वह किसानो को दफ्तर मे नही बुलाय, क्योंकि वह स्वय गाव मे जा कर उसी स्थान पर उनसे मिलना चाहता था जहा पर वे इकट्ठे हुए थे। जल्दी जल्दी एक प्याला चाय पी कर, जो कारिन्दे ने उसे ला कर दिया, नेख्लूदोव गाव की ओर चल पडा।

७

गाव के मुखिया के घर के सामने भीड खडी थी, और लोगो के बतियाने की आवाजें आ रही थी। पर ज्यो ही नेख्लूदोव वहा पहुचा तो सब चुप हो गये। किसानो ने सिर पर से टोपिया उतार ली, उसी तरह

जिस तरह कुजिमस्कोये के किसानो ने किया था। यहा के किसान कुजिमस्कोये के किसानो से भी अधिक गरीब थे। लडकिया और स्त्रिया काना मे सिर्फ रेशमी फुनगे लटकाये हुए थी, पुरुषो ने पावो मे छाल के जूते पहन रखे थे और बदन पर गाढे के कुर्ते और कोट लगाये थे। कुछेक ने केवल कुर्ते पहन रखे थे और पावो से नगे थे। जिस तरह वे काम पर से लौटे थे उसी तरह सीधे यहा चले आये थे।

नेख्लूदोव ने भाषण देने की कोशिश की, और कहने लगा कि मैं अपनी जमीन पूर्णतया आप लोगो का सौंप देना चाहता हू। किसान चुपचाप सुनते रहे, उनके चेहरो पर कोई भाव-परिवर्तन नही आया।

"मैं यह मानता हू, और मेरा यह दृढ विश्वास है," नेख्लूदोव ने लजाते हुए कहा, "कि जो आदमी जमीन पर काम नही करता, उसे जमीन का मालिक बनने का कोई अधिकार नही। और हर इन्सान का हक है कि वह जमीन का इस्तेमाल करे।"

"ठीक बात है, बिल्कुल सच है," कुछेक लोगो की आवाजें आयी।

नेख्लूदोव ने कहा कि जमीन से जो आमदनी होगी उसे सबमे बाट देना चाहिए। मैं तुम्हे जमीन देता हू, और मेरी राय है कि तुम लोग खुद जमीन का मोल लगा कर उस पर लगान का निश्चय करो। और यह लगान की रकम सबके साझे इस्तेमाल के लिए एक जगह जुडती जायेगी। भीड मे से समर्थन की आवाजें अब भी आ रही थी, लेकिन किसानो के गम्भीर चेहरे और भी गम्भीर हो गये थे। जो लोग पहले जमीदार की ओर देख रहे थे, उन्होने आखें नीची कर ली, मानो जमीदार की कपट चाल को समझ गये हो और उसे यह दिखा कर कि वे उसके जाल मे नही फसेंगे, उसे शर्मिन्दा नही करना चाहते हो।

नेख्लूदोव ने अपनी बात बडे स्पष्ट शब्दो मे कही थी। किसान भी समझदार थे। लेकिन फिर भी वे उसकी बात को नही समझे, और न ही समझ सकते थे। कारण वही रहा होगा जिस कारण कारिन्दा अभी तक उसकी बात को नही समझ पाया था। उन्हे पूर्ण विश्वास था कि प्रत्येक मनुष्य स्वभावत अपने ही हित की बात सोचता है। कई पुश्तो के अनुभव ने उन पर यह बात सिद्ध कर दी थी कि जमीदार सदा अपने हित का साधते हैं और उनसे सदा किसानो का अहित होता है। इसलिए आज जो जमीदार ने मीटिंग बुलाई है जिसमे वह कोई नई तजवीज उनके सामने

रखना चाहता है, तो उसका एक ही अभिप्राय हो सकता है कि वह पहले से भी अधिक धूर्तता के साथ उन्हें ठगना चाहता है।

"तो बोलो जमीन का क्या लगान लगाओगे?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"हम कैसे मोल लगा सकते हैं? हम नही लगा सकते। जमीन आपकी है, और ताकत भी आपके हाथ मे है," जवाब मे भीड म से कुछ आवाजें आयी।

"नही, नही, जो रकम इकट्ठी होगी उसे तुम सब साझे खर्च के लिए उठा सकोगे।"

"हम ऐसा नही कर सकते। ग्राम-समुदाय एक बात है, और यह बिल्कुल दूसरी बात है।"

"क्या तुम यह नही समझते," कारिन्दे ने मुस्कराते हुए कहा (वह मीटिंग मे नेख्लूदोव के पीछे पीछे चला आया था) "कि प्रिंस लगान पर तुम्हे जमीन दे रहे हैं, और लगान की रकम तुम्ही को वापस भी लौटा रहे हैं ताकि उस रकम से ग्राम-समुदाय की साझी पूजी बनती जाय?"

"हम खूब समझते हैं," आखें ऊपर उठाये बिना एक बूढा बोला, जिसके मुह मे दात नही थे। "यह भी बैंक ही की तरह की चीज है, और क्या? हमे मुकरर वक्त पर पैसे देने होगे। हम यह नही चाहते। पहले ही हमारे लिए मुश्किले कम नही है, इससे तो हम बिल्कुल तबाह हो जायेंगे।"

"यह नही चलेगा। हमारे लिए वही रास्ता ठीक है जिस रास्ते हम चलते आये है," कई एक लोगो की आवाजें आयी। उनकी आवाज मे असन्तोष और धृष्टता थी।

और जब नेख्लूदोव ने कहा कि वह एक करारनामा तैयार करेगा जिस पर उसे और सब किसानो को दस्तखत करना होगा तब तो किसानो का विरोध और भी तीव्र हो उठा।

"दस्तखत किस बात का? हम जिस तरह पहले काम करते रहे हैं, उसी तरह अब भी करते जायेंगे। इस सबका क्या मतलब है? हम कुछ जानते-समझते नही।"

"हमे यह मजूर नही। हमारे लिए यह बिल्कुल नयी चीज है। जैसे पहले चलता रहा है वैसे ही अब भी चलने दीजिये। हा, हम चाहते हैं कि हम बीज नही देना पडे।"

इसका मतलब यह था कि मौजूदा प्रबंध मे बीज किसानो को देना पडता था, अब वे चाहते थे कि बीज जमीदार दे।

"तो क्या मैं यह समझू कि तुम लोग जमीन लेने से इकार करते हो?" नेख्लूदोव ने एक वयस्क किसान से पूछा जो चेहरे से समझदार लगता था। उसके पावो मे जूते नही थे, एक फटा-पुराना कोट पहने वह बायें हाथ मे फटी-पुरानी टोपी उठाये इस अन्दाज से सीधा खडा था जिस अन्दाज मे सिपाही खडे होते हैं जब उन्हे टोपी उतारने का हुक्म होता है।

"जी, ठीक है," किसान बोला। प्रत्यक्षत उस पर से फौज की नौकरी का जादू अभी तक नही उतरा था।

"क्या इसका मतलब यह है कि तुम्हारे पास काफी जमीन है?" नेख्लूदोव ने कहा।

"नही, हुजूर, हमारे पास काफी जमीन नही है," भूतपूर्व फौजी ने जवाब दिया। उसके चेहरे पर बनावटी खुशी का भाव था, और वह अपनी फटी-पुरानी टोपी सामने की ओर किये हुए खडा था, मानो कह रहा हो कि जिसे जरूरत हो, ले ले।

"फिर भी जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, उस पर विचार करना," नेख्लूदोव ने हैरान हो कर कहा और फिर एक बार अपनी तजवीज दोहरा कर सुना दी।

"हमे विचार करने की कोई जरूरत नही है। जो कुछ हमने कहा है, वही होगा," दतहीन, गुस्सैल बूढे ने बडबडा कर कहा।

"मैं कल तक यही पर रहूगा। अगर तुम्हारा ख्याल बदल जाय तो तुम मुझे इत्तला करना।"

किसानो ने कोई जवाब नही दिया।

इस तरह इस भेट द्वारा किसी भी परिणाम तक पहुचने म नेख्लूदोव सफल नही हुआ।

जब नेख्लूदोव घर पहुचा तो कारिदा उससे कहने लगा—

"इजाजत हो तो मैं एक बात कहू, प्रिस। इस तरह आप किसानो के साथ किसी भी फैसले पर नही पहुच पायेंगे। ये लोग बडे ज़िद्दी होते है। मीटिंग मे ये लोग एक बात पर अड जाते है और उससे टस से मस नही होते। कारण यह है कि इन्हे हर बात से डर लगता है। लेकिन यही किसान—जैसे वह सफेद बालो वाला, या वह सावले रग वाला किसान—

समभदार लोग हैं। जब इन्ही मे से कोई दफ्तर मे आता है, और हम उसके आगे चाय का प्याला रखते हैं, तो उसका मन इस तरह चलने लगता है जैसे वह कोई राजनीतिज्ञ हो," उसने मुस्कराते हुए कहा। "हर बात पर वह ठीक तरह से विचार करेगा। लेकिन मीटिंग मे वह बदल जाता है, वह आदमी नही रहता। यहा वह एक ही बात की रट लगाये रहता है।"

"जो लोग इनमे से ज्यादा समझदार हैं, क्या उन्हें यहा पर नहीं बुलाया जा सकता?" नेख्लूदोव ने कहा, "मैं अपनी तजवीज़ ज्यादा ध्यान से उन्हें समझाऊगा।"

"यह हो सकता है," मुस्कराते हुए कारिन्दे ने कहा।

"ठीक है, तो उन्हें कल बुला लो।"

"ज़रूर, मैं ज़रूर बुला लूगा," कारिन्दे ने कहा और पहले से भी अधिक खुशी के साथ मुस्कराया। "मैं उन्हें कल बुला लूगा।"

"उसकी बात सुनो तुम। बडा सीधा बनता है," दो घोडा पर साथ साथ जाते दो किसानो मे से एक किसान ने कहा। सिर पर काले बाल, अस्त व्यस्त दाढी, वह अपनी मोटी-ताज़ी घोडी की पीठ पर बैठा दायें से बायें हिचकोले खा रहा था। जिस आदमी से वह बात कर रहा था वह बूढा था और फटा हुआ कोट पहने था। रात का वक्त था और ये दोनो आदमी किसाना के घोडो के एक झुण्ड को घास चराने के लिए ले जा रहे थे। प्रत्यक्षत तो वे उन्हें बडी सडक के किनारे किनारे घास चरा रहे थे लेकिन उनका अभिप्राय यह था कि लुक छिपकर ज़मीदार के जगल मे चरने के लिए ले जायेंगे।

"हम मुफ्त मे तुम्हें ज़मीन दे देंगे, बस इधर दस्तखत कर दो—ये पहली बार थोडे ही हमे झासा देने की कोशिश कर रहे हैं। हम जसो के साथ पहले भी कई बार यह दाव खेले जा चुके हैं। नही, भले आदमी, अब हम तुम्हारे झासे मे नही आने के। अब हमे कुछ अक्ल आ गई है," उसने कहा और एक बछेडे को हाक लगाने लगा जो भटक कर पीछे रह गया था।

उसन अपना घोडा रोक लिया और आस-पास देखने लगा। बछेडा पीछे नही रह गया था, वास्तव मे वह सडक के किनारे एक चरागाह मे घुस गया था।

"देखो उस बदज़ात को, ज़मीदार की चरागाहो मे घुसने लगा है," सावले रग वाला किसान बोला जिसकी दाढी के बाल बिखरे हुए थे। बछेडा हिनहिनाता हुआ महकती चरागाह मे चने के डण्ठलो को रौंदता भागा चला जा रहा था। उसके पावो के नीचे डण्ठल चरमरा रहे थे।

"यह चर-मर सुन रहे हो? किसी छुट्टी के दिन औरतो को चरागाह मे भेजना होगा कि आ कर यहा से मोथा साफ कर जाय," पतले किसान ने कहा जिसने फटा हुआ कोट पहन रखा था, "वरना यहा हमारी दरातिया टूट के रहेंगी।"

"कहता है 'दस्तखत करो' " ज़मीदार के भाषण पर टिप्पणी कसते हुए बिखरी दाढी वाला किसान कहने लगा, "'दस्तखत करो', जी ज़रूर ताकि तुम हमे ज़िन्दा ही हडप कर जाओ!"

"यह तो पक्की बात है," बूढे ने जवाब दिया।

फिर दोनो चुप हो गये। बडी सडक पर केवल घोडो के चलने की आवाज़ आने लगी।

८

नेख्लूदोव ने लौट कर देखा कि दफ्तर मे ही उसके सोने का प्रबंध कर दिया गया है। कमरे मे एक ऊचा पलग बिछाया गया है, जिस पर पखो का बिस्तर और दो बडे बडे तकिये लगा दिये गये हैं। बिस्तर के ऊपर गहरे लाल रग का बडा सा रेशमी लिहाफ रखा है। लिहाफ को बडी बारीकी से और बडे परिश्रम के साथ तागा गया था, प्रत्यक्षत कारिन्दे की जब शादी हुई थी तो उसकी पत्नी दहेज मे इसे अपने साथ लाई थी। कारिन्दे ने नेख्लूदोव से फिर भोजन करने को कहा। वह दिन के भोजन से बची हुई चीज़ें उसके सामने रखना चाहता था। लेकिन नेख्लूदोव ने इकार कर दिया, जिस पर कारिन्दा अपने गरीबाना दस्तरखान और गरीबाना रहन-सहन के लिए माफी मागने के बाद नेख्लूदोव से विदा ले कर बाहर चला गया।

किसानो ने जमीन लेने से इकार कर दिया था लेकिन इससे नेख्लूदोव के मन को तनिक भी क्लेश नही पहुचा। कुज़्मिस्कोये मे किसानो ने उसका प्रस्ताव स्वीकार किया था और उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट की थी। इसके

विपरीत यहा पर उसे सन्देह और विरोध का सामना करना पड़ा था। फिर भी उसका हृदय सन्तुष्ट और उल्लासित था।

दफ्तर बहुत साफ नही था, और उसमे घुटन महसूस होती थी। नेख्लूदोव बाहर आगन मे चला गया। वहा से वह बाग की ओर जा रहा था जब उसे वह रात याद आ गयी—दासियो के कमरे की वह खिड़की, और बगल वाला सायवान—और उसका मन विचलित हो उठा। वह उस स्थान के पास से हो कर नही जाना चाहता था, जिसके साथ इतना अनुतापपूर्ण स्मृतिया जुड़ी हुई थी। वह दरवाजे के बाहर सीढ़िया पर बैठ गया और बाग के अधेरे मे देखने लगा। हल्की हल्की स्निग्ध हवा बह रही थी, और उसमे वच-वृक्षो के नये नये पत्तो की महक फैली हुई था। पनचक्की की आवाज बराबर आ रही थी, बुलबुले गा रही थी, और नजदीक ही किसी झाडी मे कोई पक्षी नीरस आवाज मे निरन्तर सीटी बजा रहा था। कारिन्दे के कमरे की खिडकी मे से रोशनी बुझ गई। पूर्व की ओर, खलिहान के पीछे, आकाश नवोदित चाद की ज्योत्स्ना से भरने लगा। बार बार बिजली चमकने लगी जिसकी रोशनी मे टूटा-फूटा घर और फूलो से लदा तथा झाड-झखाड से भरा बाग नजर आने लगे। दूर से बादलो का गर्जन सुनाई देने लगा, और एक तिहाई आकाश मे घन बादल छा गये। बुलबुले और अन्य पक्षी चुप हो गये। पनचक्की मे से पानी की गडगडाहट सुनाई देती, किन्तु उससे भी अधिक कलहसो की चू चू सुनाई देने लगी। इसके बाद गाव मे तथा कारिन्दे के आगन मे मुर्ग बाग देने लगे। गर्मी के मौसम मे जब बादल गरजते हैं तो मुर्ग वक्त से पहले बाग देने लगते हैं। कहावत है कि अगर मुर्ग बाग जल्दी दें तो रात अच्छी गुजरती है। नेख्लूदोव के लिए रात सुखद ही नही, उल्लसित और आह्लादपूर्ण भी हो उठी थी। उसकी कल्पना जाग उठी और उसे वे दिन याद आने लगे जब लड़कपन मे उसने यहा गर्मियो का मौसम व्यतीत किया था। वे दिन कितने खुशियो से भरे थे, और वह कितना सरल बालक हुआ करता था! मन ही मन वह फिर अपने को वैसा ही महसूस करने लगा, न केवल उस समय ही बल्कि ऐसे सब अवसरो पर जिन्हे वह अपने जीवन की सर्वोत्कृष्ट घडिया समझता था। उसे वह दिन याद हो आया—याद ही नहीं, वह वैसा ही महसूस भी करने लगा—जब चौदह बरस की उम्र मे उसने भगवान् से प्रार्थना की थी कि मुझे सत्य के दर्शन कराइए।

या वह घडी जब मा से विदा होते समय वह उसकी गोद मे सिर रख कर रोया था और उसे वचन दिया था कि मैं कभी भी कोई बुरा काम नही करूगा, और कभी आपको क्लेश नही पहुचाऊगा। उसके हृदय मे फिर वही भावनाए जाग उठी, जब निकोलेंका इर्तेनेव के साथ मिल कर उसने शपथ ली थी कि स्वच्छ, सदाचारी जीवन व्यतीत करने मे सदा एक दूसरे की मदद करेंगे और सबको खुश रखने की कोशिश करगे।

उसे याद आया कि किस तरह कुज्मिस्कोये मे वह प्रलोभन मे फसने लगा था, और उसे अपना घर, जगल, खेत और ज़मीन त्यागते हुए अफ़सोस होने लगा था। उसने मन ही मन पूछा कि क्या अब भी मुझे उनके लिए अफ्सोस हो रहा है? उसे यह सोच कर ही हैरानी हो रही थी कि उसे कभी अफ़सोस हुआ था। फिर आज की सब घटनाए उसकी आखो के सामने घूम गयी। बच्चो वाली वह मा जिसके पति को इसलिए जेलखाने मे ठूस दिया गया था कि उसने नेख्लूदोव के जगल मे से पेड काटा था। फिर उसे वह भयानक औरत माल्योना याद आई जो यह समझती थी—कम से कम उसकी बातो से तो ऐसा ही लगता था—कि कुलीन लोग यदि उस जैसी स्थिति की औरतो से व्यभिचार करना चाहे तो उन्हे विरोध नही करना चाहिए। बच्चो के प्रति उसका कैसा रुख था, किस तरह बच्चो को यतीमखाने मे पहुचाया जाता था। उसे वह अभागा चिथडो की टोपी वाला बच्चा याद हो आया जिसके सूखे हुए चेहरे पर मुस्कान खेल रही थी, और जो भूख के कारण धीरे धीरे मर रहा था। उसे वह दुबली-पतली, गभवती स्त्री याद आयी, जिसे विवश हो कर उसके लिए मज़दूरी करनी पडेगी, क्योकि कमर-तोड काम के कारण वह अपनी भूखी गाय की ओर ध्यान नही दे पायी थी। फिर सहसा उसे वह जेलखाना याद हो आया, बदियो के मुडे हुए सिर, कोठरिया, दुर्गन्ध, बेडिया-हथकडिया, और दूसरी तरफ शहर मे अमीरो की ऐशो इशरत से भरी ज़िन्दगी, जिसमे वह भी शामिल था। हर चीज़ नग्न स्पष्टता मे उसकी आखो के सामने घूम गई।

खलिहान के ऊपर चाद उभर कर आ गया—लगभग पूर्णिमा का चाद, चमकता हुआ। आगन मे लम्बे लम्बे साये पडने लगे। उजडे हुए घर की लोहे की छत चमकने लगी।

बुलबुल फिर गाने लगी, मानो वह इस रोशनी का पूरा पूरा लाभ उठाना चाहती हो।

कुजिमस्कोये मे उसका मन उलझन मे पड गया था। जो कदम वह उठाने जा रहा था उसका निश्चय करते समय उसे अपने जावन का चिन्ता होने लगी थी। उसके लिए निश्चय करना कठिन हो गया था, एक एक सवाल पर कितनी ही कठिनाइया उठ खडी होती थीं। उसने वहा सवाल अब फिर अपन से पूछे और देख कर हैरान रह गया कि सारी बात कितना सरल है। अब वह यह नही सोच रहा था कि इन कार्यों का परिणाम उसके अपने हित मे कैसा होगा, वह केवल अपने कतव्य का साच रहा था। इसी लिए सारी बात सरल हा उठी थीं। और अजीब बात यह था कि उसके लिए अपने हित की बात का निश्चय करना कठिन था, लकिन जब वह साचता कि उसे औरा के लिए क्या करना चाहिए तो उसके मन में कोई सशय नही रहता। उसे यकीन हो गया था कि उस किसानो का जरूर ज़मीन दे देनी चाहिए, क्योकि यदि वह नही देगा ता यह अन्याय होगी। वह निश्चित तौर पर जानता था कि उसे कात्यूशा को कभी भी नही छोडना चाहिए, बल्कि उसकी निरन्तर सेवा करनी चाहिए तथा उसके प्रति किये गये अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहिए। वह पक्के तौर पर जानता था कि मुकद्दमो और दण्डो के इस प्रश्न पर उसे अध्ययन करना चाहिए, इस सवाल का स्पष्टीकरण करना तथा उसे समझना चाहिए क्योकि उसका ख्याल था कि इसके प्रति उसका दृष्टिकाण और लोगो के दृष्टिकोण से भिन्न है। इस सबका क्या परिणाम होगा, वह नही जानता था, परन्तु इतना वह निश्चय जानता था कि यह काम उसे ज़रूर करना होगा। और इस दढ आश्वासन से उसका हृदय उल्लास से भर उठा था।

सारा आकाश काले बादला से ढक गया। चकाचौध करने वाली बिजली बार बार चमकती, जिससे आगन तथा पुराना घर और उसके टूटे-फूटे सायबान स्पष्ट हो उठते। सिर पर बादल गरज रहे थे। पक्षी चुप थे, लेकिन पेडा के पत्ते सरसरा रहे थे, और जिन सीढिया पर नेख्लूदोव बैठा था, वहा हवा के झोके आने लगे थे और नेख्लूदोव के बाला से खेलने लगे थे। पहल बारिश की एक बूद गिरी फिर दूसरी और तत्पश्चात बरडाक के बडे बडे पत्ता और लाहे की छत पर टपाटप बूदें पडने लगी।

सारा वातावरण आलोकित हो उठा। और पलक मारने की देर थी कि सिर के ऊपर बिजली कड़की और उसकी भयानक कड़क दूर तक आकाश में गूंजती हुई सुनाई दी।

नख्लूदोव अन्दर चला गया।

"ठीक है ठीक बात है," वह सोच रहा था "जीवन द्वारा कौन सा काय सिद्ध होता है, यह सारा काम, इसका अथ, यह सब मैं नहीं समझता, न ही समझ सकता हूं। मेरी फूफियां किस लिए संसार म आयी थी? निकोलेंका इर्तेनेव की मृत्यु हो गई, और मैं जी रहा हूं, यह क्यो? कात्यूशा के जीवन का प्रयोजन क्या था? और मेरा पागलपन? और उस जंग का प्रयोजन? बाद मे मैं क्यो वैसा अनियन्त्रित जीवन व्यतीत करने लगा? इसे समझना, भगवान् की इच्छा की पूरी थाह पाना मेरे वस की बात नहीं। परन्तु मेरे अन्तःकरण मे भगवान की जो इच्छा व्याप रही है, मैं उसका पालन करने म समथ हूं। और इस इच्छा को मैं भली भांति जानता हूं। और इस इच्छा का पालन करते समय मेरी आत्मा म शान्ति होती है।"

मूसलाधार बारिश होने लगी और छत पर से बह बह कर नीचे बने एक हौज म गिरने लगी। अब बिजली कम चमकने लगी थी, जिससे घर और आंगन पर रोशनी कम पड़ती थी। नख्लूदोव अन्दर चला गया और कपड़े उतार कर लेट गया। दीवार पर लगा हुआ कागज गंदा हो रहा था और जगह जगह से फट रहा था जिस कारण उसे डर था कि यहां पर खटमल होंगे।

"हां, मुझे स्वयं को मालिक नहीं, सेवक समझना चाहिए," वह सोच रहा था और इस विचार स खुश हो रहा था।

वही बात निकली। बत्ती बुझाने की देर थी कि खटमल आ पहुंचे और उसे काटने लगे।

"जमीन दे दू और साइबेरिया चला जाऊं—पिस्सू, खटमल, गन्दगी! तो क्या हुआ? यदि यह अनिवाय है तो मैं इसे सहन करूंगा।" परन्तु अपने नेक इरादो के बावजूद भी वह सहन नहीं कर पाया। वह उठ कर खुली खिड़की के सामने बैठ गया। बादल छितरने लगे थे और चांद फिर निकल आया था। नेख्लूदोव मुग्ध नेत्रों स उनकी ओर देखने लगा।

६

सुवह जा कर कहीं नेख्लूदोव को नींद ग्रायी, इसलिए जब वह जा
तो काफी देर हो गई थी।

दोपहर के समय किसानों के सात प्रतिनिधि, जिन्हें कारिन्दे ने क
कर बुला लिया था, फला के बाग़ में आ पहुंचे। सेवा के पेडों के नाचे
जमीन में छोटे छोटे खम्मे गाड कर और उन पर तख्ते रख के कारि
ने एक मेज और बेंचों का प्रबन्ध कर दिया था। बड़ी देर के बाद किसा
इस बात पर रजामन्द हो पाये कि वे अपनी टोपियां सिर पर पहन र
और बेंचों पर बैठ जायेंगे। सबसे ज्यादा हठ तो भूतपूर्व फौजी ने कि
जो आज साफ़ से जूते पहन कर आया था। वह तन कर खड़ा था और
हाथ में अपनी टोपी इस तरह उठाये हुए था जिस तरह फौज में अर्थी
समय उठाने का नियम है। उनमें से एक बूढ़े किसान ने जो शक्ल-सूरत
से बड़ा रोबदार लगता था, सिर पर अपनी बड़ी सी टोपी रख ली
और अपने इर्दगिर्द कोट लपटता हुआ मेज के पीछे आ कर बैठ गया।
चौड़े कन्धे, उसकी दाढ़ी में कुण्डल पड़ते थे जैसे मिकेल अजैलो द्वारा बनाई
गई तस्वीर में मोजिस की दाढ़ी में हैं, और मवलाये ऊंचे माथे पर सफ़
घुंघराले बालों की लट गिरती थी। उसे बैठते देख कर बाक़ी किसानों ने
भी सिर पर टोपियां रखी और बैठने लगे।

जब सब बैठ गये तो उनके सामने नेख्लूदोव भी आ कर बैठ गया।
मेज पर उसके सामने एक कागज रखा था जिस पर उसने अपनी योजना
लिख रखी थी। तनिक आगे की ओर झुकते हुए नेख्लूदोव ने अपनी बात
समझानी शुरू की।

अब की बार नेख्लूदोव के मन में कोई उलझन नहीं थी। उसका
कारण शायद यह रहा हो कि आज किसानों की सख्या बहुत कम थी,
या शायद यह कि उसका ध्यान अपने काम की ओर ज्यादा था, और अपने
अहं की ओर कम। उसने अपने आप ही उस चौड़े कन्धों और घुंघराली
दाढ़ी वाले वृद्ध को सम्बोधित करना शुरू कर दिया। उसका ख्याल था
कि उसी की ओर से अनुमोदन अथवा आपत्ति के शब्द सुनने को मिलेंगे।
लेकिन नेख्लूदोव का अनुमान गलत निकला। यह रोबदार आदमी, जो
वयोवृद्ध कुलपति लगता था, किसी किसी वक्त स्वीकृति में अपना खूबसूरत

सिर हिला देता, और जब कोई किसान आपत्ति करता तो यह भी भौंहें चढ़ा कर सिर हिलाता। लेकिन इसके बावजूद, उसे समझने में प्रत्यक्षत बड़ी कठिनाई हो रही थी। जब और लोग नेख्लूदोव के शब्दों को अपने शब्दों में दोहरा कर कहते तब कहीं कुछ उसके पल्ले पड़ता। इसी कुलपति के साथ ही एक टुइया सा बूढ़ा आदमी बैठा था, जो इससे बेहतर समझ रहा था। उसने नेनकिन का कोट पहन रखा था जिस पर जगह जगह पैवंद लगे थे। पांवों में पुराने बूट थे। एक आंख से काना था, और दाढ़ी घसता हो रही थी। बाद में नेख्लूदोव को मालूम हुआ कि यह आदमी भट्ठी बनाता है। यह आदमी अपनी भौंहे बड़ी तेज तेज हिलाता, बड़े ध्यान से नेख्लूदोव के शब्द सुनता और सुनते ही उन्हें अपने शब्दों में दोहरा लेता था। एक और आदमी भी बातों को उतनी ही जल्दी समझ रहा था। गठीले बदन का बूढ़ा आदमी था, सफेद दाढ़ी, पैनी आंखें, व्यंग करने का कोई मौका हाथ से नहीं जाने देता था। प्रत्यक्षत दिखावे के लिए ठिठोली करता था। भूतपूर्व फौजी भी, जान पड़ता था कि बातों को समझ रहा है, लेकिन चूंकि उसे केवल फौजियों का बकवाद सुनने की आदत थी, इसलिए वह उलझन में पड़ जाता था। लेकिन जो आदमी बातों को सबसे अधिक गंभीरता और ध्यान से सुन रहा था, वह था एक ऊंचे-लम्बे कद का किसान, छोटी सी दाढ़ी, लम्बी नाक और गहरी आवाज वाला। उसने घर के कते-बुने मगर साफ-सुथरे कपड़े पहन रखे थे और छाल के नये जूते पहन कर आया था। इस आदमी के दिमाग में हर बात बैठ रही थी, और वह तभी बोलता था जब जरूरत होती थी। इनके अलावा दो वृद्ध पुरुष और थे। एक तो वही बूढ़ा था जिसके मुंह में दांत नहीं थे और जो पहली मीटिंग में नेख्लूदोव की हर तजवीज को रद्द करता रहा था। दूसरा एक ऊंचे-लम्बे कद का गोरा चिट्टा आदमी था जिसके चेहरे से सद्भावना टपकती थी। यह आदमी लंगड़ा था, और उसने अपनी पतली पतली टांगों पर कस कर पट्टियां बांध रखी थीं। वे दोनों बोलते बहुत कम थे, हालांकि हर बात को बड़े ध्यान से सुन रहे थे।

नेख्लूदोव ने सबसे पहले भूमि पर निजी स्वामित्व के बारे में अपने विचार बताये।

"मेरे विचार में भूमि का क्रय विक्रय नहीं हो सकता। यदि यह हो सकता हो तो जिस आदमी के पास पर्याप्त धन राशि होगी वह सारी की

सारी जमीन खरीद लेगा, और जिनके पास भूमि नही है, उन्हे इस्तेमाल के लिए दे कर उनसे मनमानी रकम ऐंठेगा। यहा तक कि वह जमीन पर खडा तक होने के पैसे ले सकेगा," स्पेंसर का तर्क दोहराते हुए उसने कहा।

"एक ही उपाय रह जायेगा—पख जोड लो और उडो," मफेद दाढी और हसोड आखो वाला बूढा बोला।

"सच है," लम्बी नाक वाले ने अपनी गहरी आवाज म कहा।

"बिल्कुल ठीक है," भूतपूर्व फौजी बोला।

"एक औरत अपनी गाय के लिए मुट्ठी भर घास उखाडता है, उसे पकड कर जेल मे ठूस देते है," नेकदिल लगडे आदमी ने कहा।

"हमारी अपनी जमीन तो यहा से पाच वेर्स्ता दूर है। लगान पर जमीन लेने के लिए हमारी तौफीक नही है लगान इतना बढा देते हैं कि उससे हमारे लिए कुछ बचता ही नही है," चिडचिडे, दतहीन बूढे ने कहा, "वे हमारे सरीर की रस्सिया बनाते हैं। यह तो जमीन-गुलामी से भी बुरा है।"

"मेरे भी वही विचार हैं जो तुम्हारे हैं। मैं जमीन की मिल्कियत को पाप समझता हू। इसलिए मैं उसे दे देना चाहता हू," नेख्लूदोव ने कहा।

"बडी अच्छी बात है," मिकेल अजेलो के मोजिस के से घुघराले बालो वाले बूढे ने कहा। प्रत्यक्षत वह यह समझ रहा था कि नेख्लूदोव अपनी जमीन लगान पर देना चाहता है।

"मैं यहा इसलिए आया हू कि मैं जमीन का मालिक नही बना रहना चाहता। अब आइये इस बात पर विचार करे कि जमीन का कैसे बटवारा किया जाय।"

"किसानो के हवाले कर दीजिये, बस," चिडचिडे, दतहीन बूढे ने कहा।

क्षण भर के लिए नेख्लूदोव लज्जित सा अनुभव करने लगा। उसे महसूस होने लगा कि इस टिप्पणी का मतलब है इन लोगो को मेरे इरादों पर शक है। पर वह फौरन् सभल गया और इसी टिप्पणी का प्रयोग करते हुए अपना मतलब साफ करने लगा।

"मैं तो खुशी से दे दू," वह बोला, "मगर किसे दू और कैसे दू?"

किस गाव के किसानो को दू? तुम्हारे गाव को क्यो दू और धोमिस्कोये के किसानो को क्यो नही दू?" (यह पडोस के एक गाव का नाम था जहा वहुत कम जमीन थी।)

सब चुप रहे, केवल भूतपूर्व फौजी ने कहा—

"बिल्कुल ठीक है।"

"अच्छा," नेख्लूदोव ने कहा, "तो अगर जार कहे कि जमीदारो से सारी की सारी जमीन ले कर किसानो मे बाट दी जायेगी, तो इसे आप कैसे करेगे?"

"कोई अफवाह है क्या?" उसी बूढे ने पूछा।

"नही, जार ने कुछ नही कहा है। मैं वैसे ही अपनी ओर से कह रहा हू अगर जार कहे जमीदारो से सारी जमीन ले कर किसानो मे बाट दी जाय, तो तुम लोग यह कैसे करोगे?"

"कैसे करेगे? बस, बराबर बराबर बाट लेगे। इतनी इतनी जमीन हर आदमी के लिए, चाहे वह किसान हो या जमीदार," भट्ठी बनाने वाले ने कहा। वह जब बात करता तो अपनी भवे बडी तेजी से उठाता और गिराता था।

"और कौन सा तरीका है? बस फी आदमी इतना इतना दे दो," दयालुस्वभाव लगडा बोला, जिसने टागो पर सफेद पट्टिया बाध रखी थी।

सबने इस बात का समर्थन किया, सबको यह सन्तोषजनक लगी।

"फी आदमी इतना दे दो? तो क्या घर के नौकरो को भी हिस्सा दोगे?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"नही हुजूर," भूतपूर्व फौजी बोला। वह बडा लापरवाह और खुशमिजाज नजर आने की कोशिश कर रहा था।

लेकिन ऊचे कद का समझदार आदमी उससे सहमत नही हुआ।

"अगर बाटना हो तो सबको एक जैसा हिस्सा मिलना चाहिए," थोडी देर सोचते रहने के बाद वह अपनी गहरी आवाज मे बोला।

"यह नही हो सकता," नेख्लूदोव ने कहा। उसने अपना जवाब पहले से तैयार कर लिया था। "अगर सबका एक जैसा हिस्सा मिले तो जो लोग काम नही करते, खुद हल नही चलाते, वे अपना हिस्सा अमीर लोगो को बेच देंगे—जैसे, मालिक और नौकर, बावर्ची, अधिकारी, क्लर्क, सभी शहरी लोग। नतीजा यह होगा कि जमीन फिर अमीर लोगो के हाथ

मे चली जायेगी। जमीन पर काम करने वालो की सख्या बढती चली जायेगी और जमीन का मिलना मुश्किल होता जायेगा। इस तरह अमीर लोगो का फिर उन लोगो पर अधिकार हो जायगा जिन्हे जमीन की जरूरत होगी।"

"बिल्कुल ठीक है," भूतपूर्व फौजी बोल उठा।

"जमीनो को बेचने की मनाही कर दो। जमीन केवल उसी को मिले जो उस पर हल चलाता हो," भट्ठी बनाने वाला झल्ला कर बीच मे बोल उठा।

इसका जवाब नेख्लूदोव ने यह दिया कि यह जानना असभव है कि कौन आदमी अपने लिए हल जोत रहा है, और कौन किसी दूसरे के लिए।

ऊचे कद वाले समझदार आदमी ने सुझाव दिया कि ऐसी व्यवस्था की जाय जिससे सब मिल कर हल जोते। जो जोतें उन्हे जमीन मिले, और जो नही जोते उन्हे कुछ नही मिले।

इस साम्यवादी योजना का जवाब भी नेख्लूदोव के पास तयार था। वह कहने लगा कि ऐसी व्यवस्था के लिए जरूरी होगा कि सबके पास हल हो, सबके पास बराबर सख्या मे घोडे हो, ताकि कोई पीछे न रह जाय। हल, घोडे, अनाज निकालने की मशीने तथा बाकी सब औजार साझे होने चाहिए। लेकिन ऐसा आप तभी कर सकते हैं जब सभी लोग सहमत हो।

"हमारे लोगो को मनाना कौन सा आसान काम है। मरते दम तक सहमत नही होगे," चिडचिडे स्वभाव वाला बूढा बोला।

"रोज लडाइया होगी," हसोड आखो वाले बूढे ने कहा। "औरतें एक दूसरी की आखें नोच डालेगी।"

"जमीन की समानता के बारे मे फिर क्या कहते हो?" नेख्लूदोव ने पूछा, "एक आदमी को उपजाऊ जमीन मिले और दूसरे को ऐसी जिसमें रेता और कीच हो, ऐसा क्यो?"

"यह बात है तो जमीन के छोटे छोटे टुकडे बनाये जायें, और सबके हिस्से में बराबर बराबर टुकडे मिले," भट्ठी बनाने वाला बोला।

इसके जवाब मे नेख्लूदोव ने कहा कि वह केवल एक ही ग्राम म जमीन के बटवारे की बात नही सोच रहा है, बल्कि अलग अलग गुबेर्नियाओं में जमीन के व्यापक बटवारे की। यदि जमीन किसानो में मुफ्त बाटी जायेगी

तो फिर कुछ किसानो को अच्छी और कुछ को बुरी जमीन क्या मिले? सभी की इच्छा होगी कि उन्ह अच्छी जमीन मिले।

"बिल्कुल ठीक है," भूतपूर्व फौजी ने कहा।

बाकी लोग चुप रहे।

"इसका मतलब है कि यह बात इतनी आसान नही है जितनी कि नजर आती है," नेख्लूदोव ने कहा। "पर इस सवाल के बारे में केवल हम ही नही बल्कि बहुत से लोगो ने विचार किया है। मसलन हैनरी जार्ज नाम का एक अमरीकी है, मैं उससे सहमत हू। उसका विचार यह था कि "

"आप तो मालिक हो, जैसे चाहो जमीन दे सकते हो। आपको कौन रोक सकता है? ताकत आपके हाथ म है," चिड़चिड़े स्वभाव वाले बूढ़े ने कहा।

इस वाक्य को सुन कर नेख्लूदोव सकपका गया। मगर उसे यह देख कर खुशी हुई कि केवल वही इस बाधा पर नाराज नही हुआ था।

"बीच मे नही बोलो, चाचा सेम्योन, उन्ह बात कर लेने दो," समझदार आदमी ने अपनी गहरी, रोबीली आवाज मे कहा।

इससे नेख्लूदोव को हौसला हुआ और वह हैनरी जार्ज द्वारा प्रतिपादित उस पद्धति की व्याख्या करने लगा जिसके अनुसार जमीन पर एक ही कर लगाया जाना चाहिए।

"धरती भगवान् की है, धरती किसी आदमी की नही है," वह कहने लगा।

"ठीक है, बिल्कुल ठीक है," एक साथ कई आवाजें आयी।

"जमीन सबकी साझी है। सभी को उस पर समान अधिकार है। पर जमीन अच्छी भी है और बुरी भी है, सभी चाहेगे कि उन्ह अच्छी जमीन मिले। अब यह किस भाति किया जाय ताकि बटवारा इन्साफ के साथ हो? तरीका यह है जो अच्छी जमीन का प्रयोग करे वह उस जमीन की लागत उन लोगो को अदा करे जिनके पास कोई जमीन नही है।" अपने ही प्रश्न का उत्तर देते हुए नेख्लूदोव कहने लगा, लेकिन यह कहना मुश्किल है कि कौन किसको पैसे दे, और सामूहिक जरूरतो का पूरा करने के लिए भी पैसे की जरूरत है, इसलिए प्रबन्ध ऐसा हो कि जो अच्छी जमीन का प्रयोग करे वह उस जमीन की कीमत ग्राम-समुदाय को उसकी

जरूरतो के लिए दे दे। इस तरह सब को बराबर बराबर हिस्सा मिलेगा। अगर तुम जमीन को इस्तेमाल करना चाहते हो तो उसका दाम चुकाओ —अच्छी जमीन के लिए ज्यादा, बुरी के लिए कम। अगर जमीन का इस्तेमाल नही करना चाहते तो कुछ भी मत दो, जो लोग जमीन का इस्तेमाल करेंगे वे तुम्हारी जगह टैक्स तथा सामूहिक खर्च अदा करेंगे।"

"यह ठीक है," भट्ठी बनाने वाले ने भौंह हिलाते हुए कहा, "जिसके पास अच्छी जमीन हो वह ज्यादा पैसे दे।"

"वाह भाई वाह, बडा सियाना आदमी था यह जार्ज," घुंघराले बालो वाला बुज़ुर्ग बोला।

"बस, जो पैसे हमे देने पडें वे अगर हमारी तौफीक के बाहर न हो तो सब ठीक है," गहरी आवाज़ वाले लबे कद के आदमी ने कहा। प्रत्यक्षत वह समझ गया था कि इस योजना का लक्ष्य क्या है।

"जो रकम तुम्हे देनी पडेगी वह न बहुत ज्यादा होनी चाहिए और न ही बहुत कम। अगर बहुत ज्यादा होगी तो कोई भी नही देगा, नतीजा यह होगा कि नुकसान होगा। अगर बहुत कम हुई तो लोग जमीन की खरीद-फरोख्त करने लगेंगे। जमीन का व्यापार होने लगेगा," नेख्लदोव ने कहा। "मैं तुम्हारे लिए इसी बात का प्रबंध करना चाहता हू।"

"बडी इंसाफ की बात है, बिल्कुल ठीक है, यह बिल्कुल ठीक रहेगा," किसानो ने कहा।

"बडा सियाना आदमी था, वह जार्ज," चौडे कधो और घुंघराले बालो वाले बूढे ने कहा, "वाह, कैसी बात सोच निकाली है!"

"और यदि मैं कुछ जमीन लेना चाहू, तो?" मुस्कराते कारिन्दे ने कहा।

"कोई टुकडा खाली हो तो उसे ले कर काश्त करो," नेख्लदोव ने कहा।

"तुम्हे जमीन की क्या जरूरत है? तुम तो वैसे ही खाते-पीते हो," हसोड आखो वाले बूढे ने कहा।

इस पर मीटिंग समाप्त हो गई।

नेख्लूदोव ने अपना प्रस्ताव फिर एक बार समझाया। उसने कहा कि मैं आप लोगो से इसी वक्त कोई जवाब देने को नही कह रहा हू। आप

इस पर विचार करे, गाव के बाकी लोगो से सलाह-मश्विरा करे, और फिर जिस नतीजे पर पहुचे मुझे आ कर बताए।

किसानो ने कहा कि वे आपस मे बात करेंगे, और जो जवाब हुआ ला कर देंगे, और बडी उत्तेजना मे वहा से विदा हुए। सडक पर जाते हुए भी उनके ऊचा ऊचा बातन की आवाज आ रही थी। और गहरी रात गये तक भी नदी के पास, गाव म स उनकी आवाज आती रही।

किसान लोग दूसरे दिन काम पर नही गये। व जमीदार के प्रस्ताव पर विचार करते रहे। किसानो की कम्यून मे दो पाटिया बन गई। एक वे थे जिन्ह इस प्रस्ताव में फायदा नजर आता था, और जो समझते थे कि इसे मजूर करने मे कोई खतरा नही। दूसरे वे थ जिनकी समझ म यह प्रस्ताव बैठा ही नही, इसलिए वे डरते थे और शक करते थ। मगर तीसरे दिन सभी सहमत हो गये, और अपने कुछ प्रतिनिधि भी नेख्लूदोव के पास यह कहने के लिए भेज दिये कि हम आपका प्रस्ताव मजूर है। उनके इस निर्णय पर पहुचने का एक कारण था। एक बुढिया न उन्ह कहा कि मालिक तो बहुत भला आदमी है, उसे अपनी आत्मा की चिन्ता होने लगी है, वह यह काम इसलिए कर रहा है कि उसे मोक्ष मिले। इस बात का उन पर बहुत असर हुआ और उनके दिल मे से यह भय जाता रहा कि उनके साथ धोखा हान जा रहा है। इसके बाद जब लोगो को पता चला कि मालिक पानोवा म बहुत दान पुण्य कर रहे हैं तो इस बात की पुष्टि भी हो गई। वास्तव म नेख्लूदोव न पहले कभी इतनी घोर दरिद्रता तथा जीवन मे इतनी साधनहीनता नही देखी थी, जितनी कि यहा उसे अपने किसानो में नजर आयी। वह इसे देख कर सिहर उठा था, और यह जानते हुए कि इस तरह पैसे देना उचित नही, वह देता रहा। पैसे दिये बिना वह रह नही सकता था, और उसके पास पैसे थे भी बहुत। पिछले साल ही उसने एक जगल बेचा था, उससे बहुत सी रकम मिली थी। इसके अतिरिक्त हाल ही म कुजिमिन्कोये जमीदारी के पशु और औजार बेचने का बयाना उसे मिला था।

यह पता चलने की देर थी कि मालिक दान दे रहे हैं कि धडाधड लोग विशेषतया औरतें, मागने के लिए आ पहुची। नख्लूदोव को कुछ भी मालूम नहीं था कि दान कैसे दिया जाता है, अथवा यह निश्चय कैसे किया

जाता है कि किसको कितना देना चाहिए। एक तरफ तो उसकी जेब में पैसे थे, और उसके सामने लोगों का घोर दारिद्र्य था, वह अपना हाथ कैसे रोक सकता था। दूसरी तरफ वह यह भी समझता था कि इस तरह ऊलजलूल पैसे देना बुद्धिमत्ता नहीं है। इस स्थिति में उसे एक ही रास्ता सूझ रहा था, और वह यह कि यहां से भाग चले और यही उसने किया भी।

पानोवो में नेख्लूदोव का आखिरी दिन था। वह अपनी फूफियों का साज़-सामान देख रहा था। वहां एक महागनी की लकड़ी की आलमारी रखी थी जिस पर तांबे के बने शेरों के मुंह लगे थे जिनमें गोल गोल छल्ले डले हुए थे। इस आलमारी के निचले दराज़ में उसे बहुत सी चिट्ठियां मिलीं जिनमें एक तसवीर भी पड़ी थी। यह तसवीर एक ग्रुप की थी जिसमें उसकी फूफियां – सोफिया इवानोव्ना तथा मारीया इवानोव्ना, स्वयं नेख्लूदोव और कात्यूशा शामिल थे। उस ज़माने की तसवीर थी जब वह विद्यार्थी था और कात्यूशा पवित्र, सुन्दर और जीवन के उल्लास से छलछला रही थी। घर की सभी चीज़ों में से केवल ये चिट्ठियां और तसवीर ही उसने उठायीं। बाकी सब पनचक्की के मालिक के हवाले कर दीं। मुस्कराते कारिन्दे की सिफारिश पर पनचक्की के मालिक ने मकान और उसका सारा सामान असल लागत का केवल दसवां हिस्सा दे कर खरीद लिया था। नेख्लूदोव के चले जाने पर मकान गिरा दिया जायेगा और सामान छकड़ों पर लाद कर यहां से ले जाया जायेगा।

कुज़्मिन्स्कोये में अपनी ज़मीन-जायदाद छोड़ते हुए नेख्लूदोव को अफसोस हुआ था। आज वह हैरान हो रहा था कि क्योंकर उसके मन में उस दिन पश्चात्ताप की भावना उठी थी। आज इस मुक्ति पर उसके हृदय में निरन्तर उल्लास की भावना थी। आज उसे नवीनता का भास हो रहा था, उस यात्री की तरह जो नये नये स्थलों तथा देश देशान्तरों को पहली बार देख रहा हो।

१०

जब नेख्लूदोव वापस लौटा तो उसे अपना शहर नये और विचित्र रंग में नज़र आया। वह शाम के वक्त लौटा था जब बत्तियां जल चुकी थीं, और रेलवे-स्टेशन से सीधे घर आया। कमरों में अब भी फीनाइल की बू छायी हुई थी। आग्राफेना पेत्रोव्ना और कोर्नेई दोनों थके हुए और

असन्तुष्ट लग रहे थे। उनकी आपस मे झडप भी हो चुकी थी, इन चीजो को ले कर, जिन्हे, जान पडता है, केवल बाहर टागने हवा लगवाने और फिर तह कर के बक्सो मे बद कर देने के लिए ही बनाया गया हो। नेख्लूदोव का कमरा खाली, लेकिन अव्यवस्थित था। दरवाजे म ट्रक पडे थे, जिस कारण रास्ता रुका हुआ था। प्रत्यक्षत उसके आ जाने से उस काम में बाधा पड गई थी, जो एक अजीब परपरा के अनुसार इस घर मे चल रहा था। किसानो के दीन-हीन जीवन का जो प्रभाव उसके मन पर पडा था, उसके बाद यह काम प्रत्यक्षत उसे फिजूल लग रहा था, जिसम वह स्वय भी किसी जमाने मे भाग लेता रहा था। अब उसे यह इतना अरुचिकर लगने लगा कि उसने दूसरे ही दिन किसी होटल जा कर रहने का निश्चय कर लिया, और चीजो के सभालने का काम आग्राफेना पेत्रोव्ना पर छोड दिया कि वह जैसा ठीक समझे इन्हे ठिकाने लगा दे। नेख्लूदोव की बहिन बाद मे आ कर घर के साज-सामान का जैसा चाहेगी निबटारा कर देगी।

दूसरे दिन नेख्लूदोव जल्दी ही घर से निकल पडा और एक होटल मे दो कमरे किराये पर ले लिये। साधारण सी जगह थी, और बहुत साफ भी नही थी। जेलखाने के नजदीक थी। फिर कुछेक चीजो के बारे म आदेश दे कर कि उन्हे वहा भिजवा दिया जाय, वह स्वय वकील को मिलने चला गया।

बाहर सर्दी थी। कुछ दिन तक बारिश और अधड रहने के बाद सर्दी हो गई थी, जैसा कि बसन्त ऋतु म अक्सर होता है। नेख्लूदोव ने हल्का ओवरकोट पहन रखा था, फिर भी सर्दी इतनी अधिक थी और हवा इतनी तीखी कि बदन को काटती थी। नेख्लूदोव तेज तेज चलने लगा ताकि शरीर म कुछ गरमी आ जाय।

उसके मन म अब भी किसानो की आकृतिया घूम रही थी—स्त्रिया, बच्चे, बूढे—उनकी गरीबी और थकान जिसे उसने मानो पहली बार देखा हो। विशेषकर उसकी आखो के सामने उस नन्हे बच्चे का सूखा हुआ चेहरा घूम जाता जिसके होठो पर मुस्कान थी और जो बार बार पतली टागें मरोडता। ऐसा जान पडता जैसे उन टागो म पिडलिया नही हैं। बरबस वह इस जीवन की तुलना शहरी जीवन स करने लगा। गोश्त मछली और कपडे इत्यादि की दूकानो के सामने से जाते हुए उसे फिर यही भास हुआ जम

वह इस दृश्य को पहली बार देख रहा है। लगभग सभी दूकानदार कितने साफ-सुथरे और मोटे-ताज़े लग रहे थे। उन जैसे डील-डौल का एक भी किसान ढूंढने से नही मिलेगा। इनका काम लोगो को धोखा देना था जो इनकी चीज़ो का वास्तविक मूल्य नही जानते थे। और इस पर वे बड़ी मेहनत करते थे। इसे वे निरर्थक काम नही समझते थे। इसके विपरीत उन्हे पूर्ण विश्वास था कि वे बड़ा महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं। सड़क पर जो भी लोग उसे नज़र आये, सभी खाते-पीते और मोटे-ताज़े लग रहे थे। बड़े बड़े नितबो वाले कोचवान, जिनकी पीठो पर बटन चमक रहे थे और सुनहरी डोरी वाली टोपिया पहने दरबान, एप्रन पहने कुन्तल वाली दासिया—सभी ऐसे ही खाते-पीते नज़र आते थे। और विशेष कर हृष्ट-पुष्ट तो गाड़ीवान नज़र आ रहे थे, गर्दन पीछे से मुड़ी हुई, अपनी बग्घियो मे आराम से टेक लगाये बैठे थे और आने-जाने वालो को देखे जा रहे थे। उनकी आखो से घृणा और दुर्वासना का भाव टपकता था। इन सब लोगो मे उसे अनचाहे ही वे किसान नज़र आ रहे थे जो ज़मीनें न होने के कारण गाव छोड़ कर शहरो मे आ गये थे। कुछेक को तो शहरी जीवन की स्थिति से लाभ उठाने का अवसर मिल गया था, और अब वे भी अपने मालिको की तरह ही हो गये थे और अपनी स्थिति से सन्तुष्ट थे। लेकिन बाकी लोगो की हालत तो गाव से भी बदतर थी। उनकी दशा तो किसानो की दशा से भी अधिक दयनीय थी। मिसाल के तौर पर ऐसे ही लोग थे वे जूते बनाने वाले मोची जिन्हे नेख्लूदोव ने एक मकान के तहखाने मे काम करते देखा था। या वे धोबिनें जो खुली खिड़कियो मे अपनी पतली पतली बाहो से कपड़े इस्त्री करती हुई नज़र आती है—चेहरे पीले, बाल अस्त-व्यस्त, खिड़कियो मे से साबुन से भरी भाप निकलती हुई। या वे दो रगसाज़ जिन्हे नेख्लूदोव ने सड़क पर देखा था। एप्रन लगाये और हाथो मे रग से भरी बाल्टी उठाये वे एक दूसरे से झगड़ते चले जा रहे थे। पावो मे उनके मोज़े तक न थे, ऊपर से नीचे तक रग ही रग पुता हुआ था। दोनो आस्तीनें चढ़ाये थे जिससे कोहनियो तक उनकी दुबली-पतली और सवलाई बाहें नज़र आ रही थीं। उनके चेहरे थके-माद और चिड़चिड़े लग रहे थे। यही भाव छकड़े वालो के चेहरो पर भी नज़र आ रहा था जो हिचकोले खाते छकड़ो पर चले जा रहे थे। और उन मर्दों और औरतो के चेहरो पर भी जो चिथड़े पहने

लडका के नावो पर खडे भीख माग रहे थे। ऐसे ही चेहरे उसे ढावा की खिडकियो मे से भी नजर आये, जिनके सामने से हो कर नेख्लूदोव जा रहा था। गन्दे मेजो पर चाय के बरतन और बोतल रखी थी, और मेजो के बीच सफेद कमीजें पहन वेटर इधर-उधर भाग रह थे। और मेजो के सामने लोग बैठे चिल्ला रहे थे या गा रहे थे। उनके चेहरे लाल और पसीने से तर हो रहे थे और उन पर मढता छाई हुई थी। ऐसा ही एक आदमी एक खिडकी के सामने बैठा था भौंह चढी हुई, होठ फूले हुए, और आखें एकटक देखती हुई, मानो कोई बात याद करने की कोशिश कर रहा हो।

"य लोग यहा पर क्या जमा हैं?" नख्लूदोव ने मन ही मन पूछा। ठण्डी तेज़ हवा के कारण सडक पर धूल उड रही थी। धूल के अतिरिक्त हवा में जले तेल और ताज़ा रोगन की गन्ध छाई हुई थी।

एक सडक पर चलता हुआ वह किसी छकडा की कतार के पास जा पहुचा जिन पर किसी प्रकार का कोई लोहे का सामान लदा था। सडक में जगह जगह खड्डे थे जिस कारण लोहे की इतनी खडखड हो रही थी कि नेख्लूदोव के कान फटने लगे और सिर-दर्द होने लगा। उसने कदम तेज़ कर दिये ताकि छकडा की कतार मे आगे निकल जाय। सहसा इस शोर म उसे अपना नाम सुनाई दिया। कोई उसे बुला रहा था। नेख्लूदोव खडा हो गया और देखा कि एक छैल गाडीवान की बग्घी मे एक फौजी अफसर बैठा मुस्करा रहा है और उसकी ओर बडे दोस्ताना ढग से हाथ हिला रहा है। अफसर की पतली नोकदार मूछें खूब चुपडी हुई थी, चेहरा चमक रहा था, और दात बेहद सफेद थे।

"नेख्लूदोव! अरे, तुम यहा?"

उसे देख कर नख्लूदोव को पहले तो बडी खुशी हुई।

"वाह शेनबोक!" उसने बडे उत्साह से कहा, परन्तु दूसरे ही क्षण उसे ख्याल आया कि खुश होने का कोई मतलब नही है।

यह वही शेनबोक था जो उस दिन उसकी फूफिया के घर आया था। मुद्दत से नेख्लूदोव ने उसे नहीं देखा था, मगर उसने इतना सुन रखा था कि कर्जों के बावजूद अब भी शेनबोक किसी तरह रिसाले म अपने पद पर कायम है और अमीरो म अपना स्थान बनाये हुए है। उसके दमकते, सन्तुष्ट चेहरे को देख कर नेख्लूदोव समझ गया कि जो कुछ उसने सुन रखा था वह ग़लत नही था।

"बहुत अच्छा हुआ जो मुलाकात हो गई। शहर में कोई भी नहीं है। अरे, यार, तुम तो बड़े हो चले हो," बग्घी में से निकल कर कंधे फैलाते हुए उसने कहा। "मैं तो तुम्हारी चाल से ही तुम्हें पहचान गया। अच्छा सुनो, आज खाना इकट्ठे खायेंगे। यहां कोई अच्छा होटल-वोटल भी है जहां ढंग का खाना मिल सकता हो?"

"माफ करना, मेरे पास तो वक्त नहीं होगा," नेख्लूदोव ने कहा। वह चाहता था कि किसी तरह इस आदमी से पिण्ड छूट जाय, परन्तु ऐसे ढंग से कि वह नाराज़ न हो। "कहो, तुम्हारा यहां कैसे आना हुआ?"

"काम पर आया हूं, दोस्त। अभिभावक के काम पर। आजकल मैं अभिभावक बना हुआ हूं। समानोव को जानते हो न? वही लखपती? उसके मामलों की देख रेख करता हूं। उसका दिमाग कुछ सठिया गया है, लेकिन चौवन हज़ार देस्यातीना ज़मीन का मालिक है," उसने विशेष गर्व के साथ कहा मानो यह सारी ज़मीन उसकी अपनी कमाई हो। "उसके मामले बुरी तरह उलझे हुए थे, कोई देखने वाला न था। सारी की सारी ज़मीन किसानों को लगान पर चढ़ा दी गई थी, मगर उन्होंने एक कौड़ी लगान नहीं दिया। इधर अस्सी हज़ार रूबल से भी ज्यादा कर्ज़ चढ़ा हुआ था। मैंने साल भर में सब बदल के रख दिया, और सत्तर फीसदी मुनाफ़ा भी निकाल दिखाया। कहो, क्या कहते हो?" उसने गर्व से पूछा।

नेख्लूदोव को याद आया, किसी ने उससे कहा था कि शेनबोक अपनी सारी दौलत लुटा चुका है और उस पर बड़ा कर्ज़ है, लेकिन किसी आदमी के खास असर-रसूख से वह किसी जायदाद का अभिभावक बना दिया गया है। जायदाद किसी बड़े धनी की है जो उसके हाथ से निकली जा रही है। प्रत्यक्षतः अब इसी अभिभावकता पर शेनबोक का गुज़र चल रहा था।

"इस आदमी से कैसे पीछा छुड़ाऊं ताकि यह नाराज़ भी न हो?" शेनबोक के चमकते चेहरे और ऐंठी हुई मूछों की ओर देखते हुए नेख्लूदोव सोच रहा था। यह आदमी बड़े दोस्ताना ढंग से हंस हंस कर बतिया रहा है कि कहां पर सबसे अच्छा खाना मिल सकता है, और अभिभावक के नाते उसने क्या क्या कारनामे किये हैं।

"अच्छा तो कहो, कहां पर भोजन करें?"

'सच मानो मेरे पास वक्त नहीं है,' अपनी घड़ी की ओर देखते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

"अच्छा तो यह बताओ आज शाम को घुडदौड पर जाओगे?'

"नही, मैं नही जा पाऊगा।"

"जरूर आना। मेरे पास अपने घोडे तो नही हैं, लेकिन मैं ग्रीशा के घोडा पर खेलता हू। तुम्हे याद है न, उसके पास बहुत बढिया घाडे हैं। तो आओगे न? शाम का खाना मिल कर खायेंगे।"

"नही, मैं तुम्हारे साथ शाम का खाना भी नही खा पाऊगा," नेख्लूदोव ने मुस्करा कर कहा।

"उफ ओ! यार यह तो बहुत बुरी बात है। कहो, इस वक्त कहा जा रहे हो? मेरे साथ बग्घी मे बैठ चलो।"

"मैं एक वकील से मिलने जा रहा हू। वह नजदीक ही, इसी सडक के मोड पर रहता है।"

"हा, हा, याद आया। तुम जेलखाना के बारे मे कुछ कर रहे हो न? कैदिया के मध्यस्थ बन गय हो, मैंने सुना है," शेनबोक ने हस कर कहा, "मुझे कोर्चागिना के घर से पता चला था। वे तो अभी से शहर छाड कर चले गये हैं। इस सबका क्या मतलब है, कुछ समझाओ तो?"

"हा, हा, बिल्कुल ठीक है," नख्लूदोव न जवाब दिया, "मगर यहा सडक पर मैं तुम्हे क्या बता सकता हू?"

"ठीक है, ठीक है, तुम हमेशा से सनकी रहे हो। मगर घुडदौड पर तो आओगे?"

"नही, मैं नही आ सकूगा, और आना चाहता भी नही हू। देखो, नाराज नही होना।"

"नाराज? अरे नाराज किस बात पर? बताओ रहते कहा हो?" सहसा उसके चेहरे पर गभीरता आ गई, आखें एकटक देखने लगी, और भौह सिकुड गइ। जान पडता था जैसे कुछ याद करन की कोशिश कर रहा हो। नेख्लूदोव का उसके चेहरे पर वही जडता का भाव नजर आया जो उसे उस आदमी के चेहरे पर नजर आया था जो भौह चढाये और होठ फुलाये ढाबे की खिडकी मे बैठा था।

"आज कितनी सर्दी है, क्यों?"

"हा बहुत सर्दी है।"

'सामान तेरे पास है ना?" गाडीवान की ओर घूम कर शेनबोक ने पूछा।

"अच्छा तो ख़ूब हाकिम! तुम्हें मिल कर सचमुच बड़ी ख़ुशी हुई।" और वह लगातार म कमदार के साथ हाथ मिला कर उछल कर बग्घी में जा बैठा और मुस्कराते हुए हाथ हिलाने लगा। हाथ पर उसने सफ़ेद दस्ताना पहन रखा था। हाथ के पीछे उसका चमकता चेहरा और चमकते सफ़ेद दांत नज़र आ रहे थे।

"क्या यह संभव है कि मैं भी इसी आदमी जैसा था?" वकील के घर की ओर जाते हुए नेख्लूदोव सोच रहा था। "हां, मैं उस जैसा बनना चाहता था, हालांकि मैं बिल्कुल उस जैसा नहीं था। मैं उसी की तरह का जीवन बिताने की सोचा करता था।"

११

नेख्लूदोव के पहुंचते ही वकील ने उसे अन्दर बुला लिया हालांकि बहुत से लोग बाहर बैठे इन्तज़ार कर रहे थे, और छूटते ही मेन्शोव के मुकद्दमे की चर्चा करने लगा। उसने मुकद्दमे की मिसाल पढ़ी थी और उस पर उसे बेहद गुस्सा आया था क्योंकि जो अभियोग लगाया गया था वह बिल्कुल असंगत था।

"इस मुकद्दमे के बारे में पढ़ कर तो सचमुच रोंगटे खड़े हो जाते हैं," वह कहने लगा, "ऐन मुमकिन है कि घर के मालिक ने ख़ुद आग लगाई हो ताकि उसे बीमे के पैसे मिल सकें। पर मुख्य बात तो यह है कि मेन्शोव का दोष साबित नहीं हुआ। कोई शहादत ही वहां पर नहीं है। यह सब जांचकर्ता के बढ़े-चढ़े जोश और सरकारी वकील की इतनी ही बढ़ी-चढ़ी लापरवाही का नतीजा है। अगर यह मुकद्दमा इस अदालत में पेश हो—प्रान्तीय अदालत में नहीं—तो मैं यकीन से कह सकता हूं कि वे बरी हो जायेंगे, और मैं पैरवी का कुछ भी नहीं लूंगा। अब दूसरे मुकद्दमे को सुनिये—फ़ेदोस्या बिर्युकोवा वाले मुकद्दमे की ज़ार के नाम अपील मैंने लिख दी है। जब आप पीटर्सबर्ग जायें तो उसे साथ लेते जाइये, और ख़ुद दाखिल करवा आइये। उसके लिए ख़ुद वहां बात भी कीजिये वरना वे लोग मामूली तफ़्तीश कर के मामला ख़त्म कर देंगे, बने-बनायेगा कुछ नहीं। और आप कोशिश कीजिये ऊपर तक पहुंच निकालने की।"

"ज़ार तक?" नेख्लदोव ने पूछा।

वकील हस पड़ा।

"यह तो सबसे ऊपर की पहुच होगी। ऊपर का मतलब अपील कमेटी का सेक्रेटरी या अध्यक्ष वगैरा तक किसी की सिफारिश ढूढिये। सो, जनाब अब बस?"

"नही, एक बात और। मुझे यह खत मिला है। किसी धार्मिक सम्प्रदाय के लोगो ने मुझे लिखा है," जेब म स चिट्ठी निकालते हुए नेख्लदोव ने कहा। "जो कुछ उन्होने खत म लिखा है अगर वह ठीक है, तो सचमुच उनका मुकद्दमा बहुत दिलचस्प है। आज मैं उन्हे खुद मिल कर पता लगाऊगा।"

"आप तो एक तरह से जेल का नाला बने हुए हैं या नल कह लीजिये, जिसके ज़रिये कैदियो की शिकायतें बाहर पहुचने लगी हैं," वकील ने मुस्करा कर कहा, "यह बहुत बडा काम है, आप इसे सभाल नही पायेंगे।"

"लेकिन यह एक खास ही किस्म का मुकद्दमा है," नेख्लूदोव ने कहा और मुकद्दमे का सक्षिप्त सा ब्योरा देने लगा। कुछ किसान इजील पढने के लिए अपने गाव मे इकट्ठे हुए, लेकिन पुलिस ने आ कर उन्हे उठा दिया। अगले इतवार को वे फिर इकट्ठे हुए। अब की बार पुलिस का एक अफसर आया और उन्हे पकड कर कचहरी मे ले गया। मेजिस्ट्रेट ने जिरह की, और सरकारी वकील ने अभियोग लगाया और जजो ने उन्हे अदालत के सुपुर्द किया। सरकारी वकील ने उन पर वह अभियोग लगाया जिसके लिए ठोस शहादत मौजूद थी–इजील। बस, उन्हे देश-निकाला दे दिया गया। कितनी भयानक बात है," नेख्लूदोव ने कहा, "क्या सचमुच ऐसी बातें हो सकती हैं?"

"इसमे हैरान होने की बात क्या है?"

"क्या, मैं तो सोचता हू इसकी हर बात विचित्र है। पुलिस के अफसर का रवैया तो मेरी समझ म आ सकता है, क्योकि वे लोग तो केवल हुक्म की तामील करना जानते ह, लेकिन सरकारी वकील तो एक पढा-लिखा आदमी होता है वह ऐसी नालिश लगाये "

"बस, यही हम लोग भूल कर जाते हैं। हम समझते हैं कि सरकारी वकील और सामान्यतया जज वगैरा उदार विचारो वाले लोग होगे। एक

जमाना था जब वे उदार हुआ करते थे, लेकिन अब वह बात नहीं रही। अब तो वे केवल सरकारी अफसर हैं, इससे ज्यादा कुछ नहीं, उन्हें तो केवल अपनी तनख्वाह से मतलब है। उन्हें तनख्वाहें मिलती हैं, मगर वे इससे भी ज्यादा पैसे चाहते हैं। बस, सिद्धान्त तो वहीं खत्म हो जाते हैं। जिस पर चाहें आप उनसे मुकद्दमा चलवा सकते हैं, अदालत में पेश करवा सकते हैं, सज़ा दिलवा सकते हैं।"

"हां, मगर ऐसा तो कोई कानून नहीं कि कुछ आदमी मिल कर इंजील पढ़ना चाहते हैं तो आप उन्हें पकड़ कर साइबेरिया भिजवा दें।"

"हां, कड़ी मशक्कत की सजा दिलवा कर साइबेरिया भेज सकते हैं। बस, केवल इतना भर साबित करने की ज़रूरत है कि इंजील की व्याख्या करते समय ऐसी बातें कही गईं जो चर्च द्वारा दी गई व्याख्या से पृथक हैं। यदि लोगों के सामने आप प्राचीन यूनानी चर्च की आलोचना करते हैं तो धारा १९६ के अनुसार आपको साइबेरिया में निर्वासित किये जाने की सज़ा होगी।"

"नामुमकिन है!"

"मैं ठीक कहता हूं, आप यकीन मानिये। मैं तो इन सज्जनों से, अपने जज भाइयों को हमेशा कहा करता हूं," वकील कहता गया, "कि मैं आपका एहसान माने बिना नहीं रह सकता क्योंकि मैं अभी तक जेलखाने से बाहर हूं। अगर हम और आप, और सब लोग जेलखाने से बाहर हैं तो उन्हीं की मेहरबानी से। वरना उनके इशारे भर की देर है कि हमारे अधिकार छीन कर हमें ये साइबेरिया भेज दें। दूर नहीं सही, साइबेरिया के नज़दीकी इलाकों में तो भेज ही देंगे।"

"अगर सब बात सरकारी वकील और उस जैसे अन्य अफसरों पर ही निर्भर है कि उनका मन आये तो कानून की पैरवी कराएं, वरना उसे भूले रहें तो फिर मुकद्दमे चलाने का मतलब ही क्या है?"

वकील ठहाका मार कर हंस पड़ा।

"आप भी अजीब सवाल पूछते हैं! भले आदमी, यह तो फिलासफी है, दर्शनशास्त्र की बात है। इस पर भी हम विचार कर सकते हैं। क्या आप शनिवार को हमारे यहां आ सकते हैं? वहां आपको वैज्ञानिक, साहित्यकार और कलाकार मिलेंगे। वहां पर हम इन आम विषयों पर विचार कर सकते हैं' वकील ने आम विषयों पर बल देते हुए कहा, मानो

व्यग से एक ग्राडम्बरपूर्ण शब्द का प्रयोग कर रहा हो। "ग्राप मेरी पत्नी से तो मिल चुके हैं न? जरूर ग्राइये।'

"शुक्रिया, मैं कोशिश करूगा," नेख्लूदोव ने कहा, मगर वह जानता था कि झूठ कह रहा है। अगर वह कोशिश करेगा तो इस बात की कि वकील की साहित्यिक गोष्ठी से तथा उसकी वैज्ञानिकों, साहित्यिकों और कलाकारों की मित्रमण्डली से दूर रहे।

जब नेख्लूदोव ने कहा कि अगर कानून की पैरवी कराने में जज लोग मनमानी कर सकते हैं तो फिर मुकद्दमे करने का कोई मतलब ही नहीं रह जाता तो जिस ढग से वकील ठहाका मार कर हसा था, और जिस लहजे में वह 'दर्शनशास्त्र' और "ग्राम विषय" शब्दों का उच्चारण कर रहा था, उसी से पता चल जाता था कि नेख्लूदोव, वकील और उसकी मण्डली से कितना दूर है। नेख्लूदोव का शेनबाक जैसे अपने भूतपूर्व साथियों से भी अब कोई मेल नहीं रह गया था लेकिन उनसे भी उसकी भिन्नता इतनी अधिक नहीं होगी जितनी कि वकील तथा उसकी मित्रमण्डली से।

१२

जेलखाना यहा से दूर था, और काफी देर हो चुकी थी इसलिए नेख्लूदोव बग्घी में बैठ गया। गाडीवान अधेड उम्र का आदमी था और शक्ल-सूरत से समझदार और दयालुस्वभाव का जान पडता था। एक सडक पर एक बहुत बडी इमारत बन रही थी। जब बग्घी उसके पास से गुजरी तो गाडीवान उसकी ओर इशारा करते हुए नेख्लूदोव को बोला—

"देखिये हुजूर कितनी शानदार इमारत बन रही है," उसने इस तरह गर्व से कहा मानो इमारत में उसका भी हाथ हो।

इमारत सचमुच बहुत बडी थी, और उसकी बनावट पेचीदा और मौलिक थी। इमारत के चारों तरफ देवदार की मजबूत बल्लियों की मजबूत मचान लग रही थी जिन्हें लोहे के शिकंजों से एक दूसरे के साथ बाधा गया था। सडक से इमारत को अलग रखने के लिए सडक के किनारे लकडी की एक दीवार खडी कर दी गई थी। मचान के तख्तों पर कामगार चीटियों की तरह इधर उधर आ जा रहे थे। उनके कपडे गारे में पुते हुए थे। उनमें से कुछ ईंटें लगा रहे थे, कुछ उन्हें तराश रहे थे, कुछ तसल

ग्रौर वाल्टिया ढो ढो कर उपर ले जा रहे थे ग्रौर उन्ह खाली कर कर के नीचे ला रहे थे।

मचान के पास ही एक मोटा-ताजा ग्रादमी, बढ़िया कपडे पहने उपर ऊपर की ग्रोर इशारा करता हुग्रा किसी ठेकेदार का कुछ समझा रहा था। यह ग्रादमी शायद गृहशिल्पी था। ठेकेदार व्लादीमिर गुर्वेनिया का एक वाला था ग्रौर बडे ग्रादर के साथ उसकी बाता को सुन रहा था। पास ही फाटक मे से इमारती सामान से लदे हुए छकडे ग्रन्दर जा रहे थे ग्रौर खाली छकडे बाहर निकल रहे थे।

"इन लोगो को पूरा पूरा विश्वास है—जो काम कर रह है उन्हें भी ग्रौर जो दूसरो से काम करवा रहे हैं, उन्ह भी—कि यह बडा शानदार काम हो रहा है। घर मे इनकी ग्रौरते, गभ मे बच्चे लिए, जी तोड मेहनत करती हैं, इनके बच्चे, सिर पर चिथडो की टोपिया पहने, भख से बिलख, धीरे धीरे मौत के मुह में जा रहे है, वे हसते भी हैं तो बूढ़ो की तरह ग्रौर बार बार उनकी टागें ऐंठ जाती हैं। लेकिन यहा इन लोगा को उम्र महल खडा करना है, एक बिल्कुल फिजूल ग्रौर मखतापूण महल, जिसे उतने ही फिजल ग्रौर बेसमझ ग्रादमी के लिए, वैसे ही किसी ग्रादमी के लिए जो इन्ह लूटता ग्रौर बरबाद करता है।"

"ठीक कहते हो, यह घर बनाना हिमाकत है," नेख्लूदोव न ग्रपने मन की बात खल कर कह दी।

"हिमाकत क्यो साहिब?" गाडीवान ने नाराज हा कर कहा, "इससे लोगो को रोजगार मिलता है, यह हिमाकत क्या है?"

"लेकिन इस काम का कोई फायदा नही।"

"फायदा न हो तो ये करे ही क्यो?" गाडीवान बाला। "लोगा को इससे रोटी मिलती है।"

नख्लूदोव चुप हो गया। या भी गाडी के पहिया की खडखड इतनी ज्यादा थी कि बातें करना मुश्किल हो रहा था। लेकिन जब वे जलखान के नजदीक पहुचे ग्रौर गाडी गोल पत्थरा वाली सडक से हट कर समतल सडक पर चलने लगी ता बात करना ग्रासान हो गया। गाडीवान न फिर नख्लूदाव को सबोधित किया—

"शहर मे इतन लाग बाहर स चल ग्रा रह हैं कि क्या कहू,' उसन कहा ग्रौर ग्रपनी सीट पर घूम कर किसान मजदूरा के एक दल की ग्रार

इशारा किया जो उनकी ओर चला आ रहा था। मजदूरो ने हाथो मे आरे और कुल्हाडिया उठा रखी थी और कन्धो पर अपने खाल के कोट और थैले बाधे हुए थे।

"क्या पिछले सालो से भी ज्यादा?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"कोई मुकाबिला नही, साहिब। शहर मे कोई जगह खाली नही मिलती। पूछिये मत क्या हो रहा है। मालिक लोग यो मजदूरो को इस तरह काम से बरखास्त करते हैं मानो चोकर साफ कर रहे हो। कही काम नही मिलता।"

"क्या?"

"आदमी बहुत ज्यादा आ गये हैं। इतने आदमियो के लिए गुजाइश नही है।"

"इतने ज्यादा लोग क्यो आ गये है? वे अपने गावो मे क्यो नही रहते?"

"गावो मे क्या करेगे। उन्हे जमीन ही जो नही मिलती।'

नेख्लूदोव को ऐसा लगा जैसे गाडीवान ने उसकी दुखती रग छेड दी हो। जिस अग पर हमे चोट लगी हो, हमे लगता है जैसे उसी पर सदा ठोकर लगती रहती है। लेकिन यह इसलिए कि अग दुखता है और उस पर लगी ठोकर को हम अधिक महसूस करते है, इसी कारण ऐसा सोचते हैं।

"क्या यह सभव है कि सब जगहो पर यही कुछ हो रहा है?" नेख्लूदोव सोचने लगा और गाडीवान से पूछने लगा कि उसके गाव मे कुल जमीन कितनी है, उसके अपने पास कितनी जमीन है, और वह गाव छोड कर क्यो चला आया है।

"हमारे गाव मे फी किसान एक देस्यातीना जमीन है, हुजूर, और हमारे घर वालो के पास तीन दस्यातीना हैं, तीन आदमियो का हिस्सा," गाडीवान बडे शौक से सुनाने लगा, "मेरा बाप और भाई गाव मे रहते हैं और खेती करते हैं, मेरा एक दूसरा भाई फौज मे है। पर खेती मे कुछ हो तब न! मेरा भाई भी मास्को चले आने की सोच रहा है।"

"क्या जमीन लगान पर नही मिल सकती?"

"आजकल लगान पर कस मिलेगी? जमीदारो ने तो अपनी जमीनें लुटा दी, और वे अब आ गई हैं व्यापारियो के हाथ। उनसे लगान पर जमीन नही मिल सकती, वे खुद काश्त करते है। हमारे गाव मे एक

फ़ासीसी साहिब की हुकूमत है। हमारे पहले ज़मीदार से उसने सारी ज़मीन जायदाद खरीद ली, अब वह आगे किसी को लगान पर नहा देता। बस, किस्सा खतम हुआ।"

"यह फ़ासीसी कौन है?"

"दुफ़ार है साहिब, इस फ़ासीसी का नाम। शायद आपने कहा सुना हो। बड़े थियेटर मे ऐक्टरो के लिए बनावटी बालो की टोपिया बना बना कर बेचता है। काम अच्छा है इसलिए उसने खूब पैसे बनाये है। हमारी मालकिन से उसने सारी की सारी जायदाद माल ले ली, अब हमे लताडता है, जैसे उसका मन चाहे। खुद आदमी बुरा नही है, शुक्र है भगवान का, मगर उसकी घर वाली, क्या कहू, ऐसी ज़ालिम है वह कि भगवान बचाये। रूसी औरत है वह। लोगो को तो बस लूटती है। बहुत बुरी हालत है। लीजिये साहिब, यह रहा जेलखाना। फाटक तक ले चलू? मगर मुझे डर है, वहा तक हम जाने नही देंगे।"

१३

बाहर के दरवाजे के पास पहुच कर नेख्लूदोव ने घण्टी बजायी। मगर यह सोच कर उसका दिल बैठ गया कि न मालूम आज मास्लोवा किस हालत म होगी। उसे मास्लोवा मे और जेल के सभी लोगो म किसी गूढ रहस्य का भास होता था, और उस रहस्य के बारे मे सोच कर उसका साहस टूट जाता था।

वाडर के दरवाजा खोलने पर नेख्लूदोव ने कहा कि वह मास्लोवा से मिलना चाहता है। वाडर ने अन्दर जा कर कुछ पूछ-ताछ की और फिर लौट कर कहा कि मास्लोवा अस्पताल मे है। नेख्लूदोव अस्पताल गया। वहा पर एक नेकदिल बूढा आदमी दरवाजे पर पहरी का काम कर रहा था। उसने फौरन् नख्लूदोव को अन्दर जाने दिया और यह पूछ कर कि वह किससे मिलना चाहता है, उसे सीधा बच्चो के वाड का रास्ता बता दिया।

गलियारे म पहुचा तो एक युवा डाक्टर बाहर निकल आया और बड़े रूखे ढग से नेख्लूदोव से पूछा कि क्या चाहता है। उससे कार्बोलिक एसिड की तीखी गध आ रही थी। यह युवा डाक्टर कैदियो का सहूलियत दिया करता था, इसी कारण उसकी जेल के अधिकारियो से, यहा तक कि बड

डाक्टर तक से मुठभेड होती रहती थी। उसे डर था कि नेख्लूदोव कोई नाजायज माग पेश करने आया है। वह उसे दिखाना चाहता था कि वह किसी का भी लिहाज नही करता, इसी लिए वह उसके साथ रुखाई से पेश आया।

"यहा पर औरतें-वौरते नही है। यह बच्चा का अस्पताल है।"

"हा, मैं जानता हू, लेकिन एक कैदी-औरत को यहा पर सहायक नस के काम पर रखा गया है।"

"हा, ऐसी दो औरते यहा पर काम करती है। आप क्या चाहते है?"

"उनमे से एक—मास्लोवा—के साथ मेरा नजदीक का सम्बध है," नेख्लूदोव ने जवाब दिया, "मैं उससे मिलना चाहता हू। मैं सेनेट के दफ्तर मे उसके मुकद्दमे की अपील दाखिल करने पीटसबग जा रहा हू। साथ ही मुझे उसको यह भी देना है। केवल एक तसवीर है, और कुछ नही," जेब मे से एक लिफाफा निकालते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

"अच्छी बात है, दे दो," डाक्टर ने पसीजते हुए कहा और एक बुढिया को सम्बोधित करते हुए जिसने सफेद एप्रन पहन रखा था कैदी मास्लोवा को बुलाने के लिए कहा। "आप यहा बैठेंगे या वेटिंग रूम म?" उसने पूछा।

"शुक्रिया," नख्लूदोव ने कहा, फिर यह देख कर कि डाक्टर का रुख बदल गया है, उसने अवसर का लाभ उठाते हुए पूछ लिया कि मास्लोवा काम कैसा करती है क्या वे उसके काम से सन्तुष्ट हैं।

"अच्छा काम करती है, जिस तरह की जिन्दगी वह पहले बिताती रही है उसे देखते हुए तो मैं कहूगा कि काफी अच्छा काम करती है। लीजिये वह आ गई।"

एक दरवाजे मे से बडी नस निकल कर आई और उसके पीछे मास्लोवा चली आ रही थी। मास्लोवा ने धारीदार पोशाक पहन रखी थी और उसके ऊपर सफेद एप्रन लगा रखा था। सिर पर रूमाल था, जिससे उसके बाल प्राय बिल्कुल ढक गये थे। नेख्लूदोव को देखते ही वह लजा गई, और खडी हो गई मानो सकोच कर रही हो। फिर उसने भौह सिकोडी, और नीचे की ओर देखते हुए गलियारे के बीचोबीच जहा छोटी सी दरी बिछी थी तेज तेज चलती हुई सीधी उसकी ओर आने लगी। पास पहुचने पर पहले तो नेख्लूदोव से हाथ नहीं मिलाना चाहती थी, फिर

मिला भी लिया, और उसका चेहरा लज्जा से और भी लाल हो गया।

नेख्लूदोव को उससे मिले काफी दिन हो गये थे। आखिरी बार उस दिन मिला था जब मास्लोवा ने उससे माफी मागी थी कि वह गुस्से में आ कर अट-सट बोलती रही थी। नेख्लूदोव का ख्याल था कि आज भी उसकी मन स्थिति वैसी ही होगी। मगर नही, आज वह बहुत कुछ बदली हुई थी। उसके चेहरे पर एक नया ही भाव नजर आ रहा था, एक प्रकार का सकोच और लज्जा का भाव और साथ ही, उसे लगा, जैसे उसके प्रति एक प्रकार का वैमनस्य का भाव भी है। नेख्लूदोव ने मास्लोवा से भी वही बात कही जो उसने डाक्टर से कही थी कि वह पीटर्सबर्ग जा रहा है। फिर उसने तसवीर वाला लिफाफा निकाल कर उसके हाथ में दिया जिसे वह पानोवो से लाया था।

"पानोवो मे मुझे यह तसवीर मिली—पुरानी तसवीर है—मैं इसे लेता आया। शायद तुम्हे अच्छी लगे। इसे ले लो।"

मास्लोवा ने भौंहे उठा कर नेख्लूदोव की ओर देखा। उसकी ऍंचाताना आखें आश्चर्य से उसकी ओर देख रही थी, मानो पूछ रही हो—"यह किस लिए?" बिना कुछ कहे उसने तसवीर ले ली और उसे अपने एप्रन की जेब मे रख लिया।

"वहा मैं तुम्हारी मौसी से मिला था," नेख्लूदोव बोला।

"अच्छा?" मास्लोवा ने उपेक्षा से कहा।

"यहा रहना अच्छा लगता है?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"हा, अच्छा है," मास्लोवा ने जवाब दिया।

"काम बहुत मुश्किल तो नही?"

"नही, मगर मुझे इस काम की अभी आदत नही है।"

"चलो, अगर तुम खुश हो तो मैं भी खुश हू। वहा से तो बेहतर है।"

"यहा से—वहा से?" वह बोली, और उसका चेहरा फिर लाल हो गया।

"वहा से—जेलखाने से," नेख्लूदोव ने फौरन जवाब दिया।

"बेहतर क्या?" मास्लोवा ने पूछा।

"मैं सोचता हू कि यहा पर ज्यादा अच्छे लोग मिलते होगे। जिस तरह के लोग वहां पर थे वैसे यहां पर नहीं होंगे।"

"वहा पर भी कई लोग बहुत अच्छे थे," वह बोली।

"मैं मेंशोव मा-बेटे के मुकद्दमे के बारे मे कोशिश कर रहा हू। ख्याल है उन्हें छोड दिया जायेगा," नेख्लदोव न कहा।

"भगवान् करें छूट जाय। वह बुढिया इतनी भली औरत है," बुढिया के बारे मे फिर एक बार मास्लोवा ने अपनी राय दोहरा दी। उसके होठो पर हल्की सी मुस्कान आ गई।

"मैं आज पीटसबर्ग जा रहा हू। जल्दी ही तुम्हारी अपील की सुनाई होगी, और मेरा ख्याल है कि सजा मसूख हो जायेगी।"

"मसूख हो या न हो अब कोई फरक नही पडता," वह बोली।

"अब क्यो?"

"यो ही," उसने कहा और झट से नेख्लूदोव की आखो मे देखा, मानो कुछ पूछ रही हो।

इस शब्द से और उसकी आखो के भाव से नेख्लूदोव ने यह मतलब निकाला कि मास्लोवा जानना चाहती है कि क्या मैं अपने निश्चय पर अब भी दृढ हू या मैं उसके इन्कार कर देने पर चुप हो गया हू।

"तुम कहती हो कि कोई फर्क नही पडता। मैं नही समझ सकता कि क्या," वह बोला, "जहा तक मेरा सम्बन्ध है, मुझे सचमुच कोई फर्क नही पडता कि तुम्हे छोडते है या नही। मैं तो हर हालत मे वही करूगा जो मैंने कहा था," उसने निश्चय से कहा।

मास्लोवा ने सिर ऊचा किया। उसकी काली ऐंचदार आखें एकटक नेख्लूदोव के चेहरे को देखने लगी चेहरे को ही नही, मानो उससे आगे भी वही देख रही हो। उसका चेहरा खुशी से चमक उठा। लेकिन जो भाव उसकी आखो मे था, वह उसके शब्दो से लक्षित नही हुआ।

"यह तुम व्यर्थ ही कह रहे हो," वह बोली।

"मैं तो इसलिए कह रहा हू कि तुम्हे पता चल जाय।"

"सब कुछ कहा जा चुका है, और कुछ कहने की कोई जरूरत नही है," बडी मुश्किल से अपनी मुस्कराहट दबाते हुए उसने कहा।

सहसा अस्पताल के अन्दर से शोर सुनाई दिया, फिर एक बच्चे के रोने की आवाज आई।

"शायद मुझे बुला रहे हैं," वह बोली और बेचैनी से मुड कर देखा।

"अच्छा, तो खुदा हाफिज," नेख्लूदोव ने कहा।

नेम्नूदोव ने हाथ आगे बढाया, लेकिन मास्लोवा बिना हाथ मिलाए घूम कर वापस जाने लगी, मानो उसने नेम्नदोव का हाथ बढ़ाना देखा ही न हो। उसका दिल बल्लियां उछल रहा था जिसे वह छिपाने की कोशिश कर रही थी। वह तेज तेज चलती हुई उसी छोटी सी दरी पर वापस जाने लगी।

"इसके दिल मे क्या है? वह क्या महसूस करती है? क्या वह मेरा इम्तहान लेना चाहती है या सचमुच वह मुझे माफ नही कर सकती? क्या अपने दिल की बात वह बता नही पा रही है, या बताना चाहती ही नहीं? उसका दिल पसीजा है या और भी कडा हो गया है?" नेम्ल्दोव मन ही मन सोचने लगा, मगर इन प्रश्नो का उसे कोई उत्तर नही मिला। वह केवल इतना ही जानता था कि मास्लोवा बदल गई है, उसकी आत्मा की गहराइयो मे कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है। और यह परिवर्तन उसे न केवल मास्लोवा के साथ ही परन्तु भगवान के साथ भी मिलाता था, उसी की दया से यह परिवर्तन हो रहा था। इस संयोग से उसका रोम रोम पुलकित हो रहा था।

मास्लोवा अपने वार्ड मे लौट कर आयी जहा आठ छोटी छोटी खाटे बिछी थी। नर्स ने उसे एक खाट का बिस्तर ठीक करने को कहा। बिस्तर की चादर ठीक करते समय वह बहुत ज्यादा आगे की ओर झुक गई जिस कारण उसका पांव फिसल गया और मुश्किल से गिरते गिरते बचा।

एक नन्हा सा लडका जिसके गले पर पट्टी बंधी थी, और जो बीमारी से अभी अभी उठा था, यह देख कर हंस पडा। मास्लोवा भी अपने को रोक न सकी और ठहाका मार कर हंस पडी। उसे हंसते देख कर कुछक और बच्चे भी हंसने लगे। नर्स गुस्से से डांटने लगी—

"क्या हुआ है जो खी खी कर रही हो। क्या इसे भी चकला समझ रखा है? जाओ और जा कर खाना लाओ।"

मास्लोवा चुप हो गई और बर्तन उठा कर बाहर जाने लगी। लेकिन जाते हुए उसकी नजर फिर उसी पट्टी वाले लडके से जा मिली जिसे हंसने की मनाही थी और वह फिर मुह दबा कर हंस दी।

जब कभी मास्लोवा अकेली होती तो वह लिफाफे में से तसवीर को थोडा सा खींच कर देख लेती और खुश हो लेती। लेकिन पूरी की पूरी तसवीर को वह केवल शाम के ही वक्त देख पायी जब ड्यूटी से फारिग

हो कर, वह अपने सोने वाले कमरे मे गई जिसमे वह बुढिया नस के साथ रहती थी। उसने लिफाफे मे से तसवीर निकाली और चुपचाप बैठ कर निहारने लगी, उसकी आखे तसवीर की एक एक चीज़ का सहलाने लगी—चेहरे, कपडे, बरामदे की सीढिया, पीछे की झाडिया जिनके आगे वह और नेख्लूदोव और उसकी फफियो के चेहरे थे। तसवीर पुरानी हो कर फीकी पड गई थी। वडी देर तक वह उसे दखती रही। उसकी आखें विशेषकर अपनी आकृति पर बार बार जाती। कितना प्यारा चेहरा था मेरा बचपन के दिनो मे! माथे पर घुघराले बाल बला करते थे। वह उसे देखने म इतनी खो गई कि जब उसकी साथिन-नस कमरे में आयी तो उसे पता ही नही चला।

"क्या दे गया है तुम्हे?" फाटा को झुक कर दखते हुए नस ने पूछा। नस मोटी-ताज़ी और अच्छे स्वभाव की थी। "यह कौन है? क्या तुम हो?"

"और कौन होगा?" मुस्करा कर अपनी साथिन के चेहरे की ओर देखते हुए मास्लोवा ने कहा।

"और यह कौन है—क्या वह है? और यह कौन है उसकी मा है?"

"नही, फूफी है। क्या तसवीर देख कर तुम मुझे पहचान पाती?'

"कभी नही। तुम्हारी शक्ल ता बिल्कुल बदल गई है। वक्त भी ता बहुत हो चुका है दस साल हो गये होगे?"

"दस साल क्या, जिन्दगी बीत गई है।" सहसा मास्लावा का दिल मसास उठा, चेहरा उदास हो गया और भौहा के बीच एक गहरी रेखा खिच गइ।

"क्या भला? तुम्हारे दिन तो बडे आराम से कटते रहे हागे?"

"आराम से ज़रूर," आखें बन्द कर सिर हिलाते हुए मास्लावा ने दोहराया। "नरक से भी बुरी जगह थी।'

"क्यो?"

"क्या? शाम के आठ बजे स लेकर सुबह चार बजे तक, हर रोज़।"

"तो औरत यह धधा छोड क्या नही देती?"

"छोडना चाह भी तो नही छोड सकती। लेकिन इन बाता मे क्या रखा है?" मास्लावा ने कहा और फाटा को मेज के दराज मे फेंकती हुई उठ खडी हुई। वह क्षुब्ध हो उठी और बडी मुश्किल से अपन आसू रोकत हुए अपन पीछे दरवाज़ा ज़ोर से बन्द करती हुई भाग कर बाहर बरामदे में चली गई।

तसवीर मे खडे सभी लोगा को देखते हुए वह अपन को उन जैसी महसूस करने लगी थी। मन ही मन कल्पना करन लगी था कि वह उन दिना कैसी हुआ करती थी, कितनी खुश थी वह तब और अब भी उसके साथ उसका जीवन सुखी हो सकता था। उसकी साथिन के प्रश्न ने उसे याद दिला दिया कि वह क्या है और "वहा" क्या रही थी और उसकी आखा के सामने अपने जीवन की सभी वीभत्सताए साकार हो गई, जिनका धमिल भास ता उसे हमेशा रहना था परन्तु जिनके बारे म कभी भी उस ध्यान से सोचने का साहस नही हुआ था। केवल आज वे भयानक रातें उसे स्पष्टता से याद आने लगी। उनमे से एक रात तो खास तौर पर भयानक थी। शीत-समाप्ति पर्व की रात थी और वह एक विद्यार्थी का इतजार कर रही थी। उसने उसे वचन दिया था कि वह पस द कर उसे चकले मे से छुडा ले जायेगा। उसे याद आया – रात के दो बजे का वक्त होगा जो लोग उसके साथ हम बिस्तरी करने आये थे, जा चुके थे। उसने नीचे गले का रेशमी फ्रॉक पहन रखा था, जिस पर जगह जगह शराब के धब्बे थे। बाल उलझे हुए थे और उनमे लाल फीता बधा हुआ था। थकी मादी, अग अग मे शिथिल, और कुछ कुछ नशे म वह अपनी आसामिया को विदा कह कर आयी थी और पियानो बजाने वाली के पास जा बैठी थी। उस वक्त नाच थोडी देर के लिए थम गया था। पियानो बजाने वाली औरत बडी दुबली पतली थी और उसके चेहरे पर दाग थे। वह पियानो पर वायलिन बजाने वाले का साथ देती थी। मास्लावा अपने असह्य कठोर जीवन की बात करने लगी थी। पियानो बजाने वाली औरत ने भी यही कहा, कि मैं भी परेशान हू और इस तरह की जिन्दगी को बदलना चाहती हू। सहसा क्लारा भी उनसे आ मिली, और तीनो ने अपनी जिदगी बदलने का निश्चय कर लिया। वे सोच रही थी कि अब चकले मे और कोई नही आयेगा, रात खत्म हो चुकी है। व अपने अपने कमरो म जाने ही वाली थी कि ड्योढी मे से कुछेक शराबियो की आवाज़ें आने लगी। वायलिन पर फिर धुन बजने लगी और पियानो बजाने वाली ने उसका साथ देते हुए क्वाड्रिल नाच की धुन बजानी शुरू कर दी। यह धुन किसी जोशीले रूसी गीत की थी। एक नाटा सा आदमी टुमगर कोट पहन और सफेद नकटाई लगाये मास्लावा की तरफ बढ आया। पसीने से तर, उसके मुह से शराब की बू आ रही थी। हिचकिया लेता हुआ

वह उसके पास आया और उसे बगल म भर कर नाचने लगा। जब नाच का पहला भाग खत्म हुआ तो उसने अपना कोट भी उतार दिया। इसी तरह एक मोटे से, दाढी वाले आदमी ने कनारा को पकड लिया। उसने भी डेग-कोट पहन रखा था (ये लोग सीधे एक नाच घर मे आ रहे थे), बडी देर तक वे नाचते, उछलते, चीखते चिल्लाते और शराब पीते रहे और इस तरह एक साल गुजर गया, फिर दूसरा साल, फिर तीसरा। उसका चेहरा बदलता नही तो क्या होता? और इस सब का मूलकारण नेख्लूदोव था। सहसा उसका मन नेख्लूदोव के विरुद्ध फिर पहली सी कटुता से भर उठा। उसका जी चाहा कि उसे जी भर कर गालिया दे, उसे बुरा भला कहे। उसे अफसोस होने लगा कि आज उसे क्या कुछ नही कहा। मुझे चाहिए था मैं उससे कहती कि मैं तुम्हे अच्छी तरह जानती हू अब तुम्हारे फास मे नही आऊगी। तुमने मेरे शरीर का तो उपभोग किया है, पर अब मैं तुम्हे अपनी आत्मा का उपयोग नही करने दूगी, तुम कभी भी मुझे अपनी उदारता का पात्र नही बना सकोगे। मास्लोवा को अपने आप पर तरस आने लगा। उसका जी चाहा कि कही से दो घूट शराब मिल जाय ताकि दिल म यह उठती हुई आत्मानुकम्पा की भावना तथा नेख्लूदोव के प्रति निरथक भत्सना की भावना दब जाय। जेलखाने मे होती तो वह जरूर अपना वचन तोड देती, लेकिन यहा शराब मिलती नही थी। उसे हासिल करने के लिए छोटे डाक्टर से दरखास्त करनी पडती थी। मगर मास्लोवा उससे डरती थी क्योकि वह उससे छेडछाड करने लगता था। पुरुषो के साथ अब किसी प्रकार का भी घनिष्ठ सम्पक रखने म उसे घृणा होती थी। थोडी देर तक वह बरामदे मे एक बेंच पर बैठी रही फिर अपने छोटे से कमरे मे लौट आयी। उसन अपनी साथिन के शब्दो की ओर कोई ध्यान नही दिया और बडी देर तक अपने बर्बाद जीवन के बारे म सोचती हुई आसू बहाती रही।

१४

पीटसबग मे नेख्लूदोव को तीन काम करने थे सेनेट म मास्लोवा की दरख्वास्त देना, अपील कमेटी म फेदोस्या बिर्युकोवा का मामला पेश करना, वेरा बोगोदूखोव्स्काया का काम उसकी मित्र शूस्तोवा को जेल

से रिहा करवाना, और जेंडामरी के दफ्तर मे जा कर इस बात की इजाजत हासिल करना कि एक मा को अपने बेटे से जेल मे मिलने दिया जाए। इन दो बातों को जिनके बारे मे वेरा ने उसे लिखा था, वह मन म एक ही समझता था। और चौथा मामला उस मण्डली का था जिन्हे अपने परिवारों से अलग कर के काकेशस मे निर्वासित किया जा रहा था क्योंकि उनके सदस्य इकट्ठे बैठ कर इंजील पढ़ते और उस पर विचार करते थे। इस मामले को निबटाने की उसने मन ही मन शपथ ले ली थी, हालाकि उस मडली को उसने कोई ऐसा वचन नही दिया था।

आखिरी बार मास्लेनिकोव को मिलने के बाद और गावो का दौरा करने के बाद नेख्लूदोव का मन उस समाज के प्रति घृणा से भर उठा था जिसमे वह आज तक रहता आया था। यह वह समाज था जो करोड़ो इसानो की यन्त्रणा को बडी सावधानी से छिपाये रहता है ताकि कुछ लोग ऐश आराम की जिन्दगी बसर कर सके। इस समाज मे रहने वाले लोग इन यन्त्रणाओ को नही देखते, न ही देख सकते हैं, न ही वे अपने जीवन की क्रूरता तथा दुष्टता को ही देख पाते हैं। समाज के प्रति नेख्लूदोव की यह भावना थी हालाकि इस सम्बध मे उसने कोई निश्चय नही किया था। अब इस समाज मे रहते हुए नेख्लूदोव को झेंप होती थी और उसका मन आत्मभर्त्सना से भर उठता था। फिर भी वह बार बार इसी समाज की ओर खिचा जाता था, क्योकि उसके मित्र और सम्बन्धी इसी समाज के रहने वाले थे, और उसे स्वय इस समाज म रहने की आदत पड गई थी। इस समय उसका सारा ध्यान एक ही बात पर केन्द्रित था कि वह किसी भाति मास्लोवा तथा अन्य दुखी जनो की सहायता कर सके। इस काम को करने के लिए भी यह जरूरी हो जाता था कि वह इन्ही समाज के लोगो से मिले और उनसे मदद मागे, हालाकि उनके प्रति उसके मन म कोई आदर का भाव नही उठता था। आदर ही क्या, उन्हें निरख कर उसके मन म क्रोध और घृणा पैदा होती थी।

पीटर्सबर्ग म पहुच कर नेख्लूदोव अपनी मौसी के यहा ठहरा। उसकी मौसी काउटेस चास्किया एक भूतपूर्व मन्त्री की पत्नी थी। यहा पहुच कर नेख्लूदोव ने फिर अपने को उसी कुलीन समाज म पाया जिससे वह मन ही मन दूर होता जा रहा था। यह उसे बडा अप्रिय लगा मगर करता क्या। अगर किसी होटल म रहता तो मौसी नाराज होती। इसके

अतिरिक्त उसकी मौसी का बडे बडे लोगो से सम्पर्क था, और जो काम नेख्लूदोव यहा करने आया था उसमे उसे मौसी से बडी मदद मिल सकती थी।

"जरा बताओ तो यह मैं क्या सुन रही हू। यह तुम क्या घोडे दौडाने लगे हो," नेख्लूदोव के पहुचने के फौरन ही बाद अपने भाजे को काफी पिलाते हुए काउटेस येकातेरीना इवानोव्ना चारस्काया ने कहा। "Vous posez pour un Howard!* मुजरिमो की मदद करते फिरते हो, जेलखाना के चक्कर काटते हो, सुधार का काम करने लगे हो।"

"नहीं नहीं, मैं सुधार क्या करूगा।"

"क्यो नहीं। बडी अच्छी बात है। पर मैं सुनती हू इस काम से कोई प्रेम कहानी भी जुडी हुई है। सुनाओ मुझे सारा किस्सा क्या है।"

मास्लोवा के साथ अपने सम्बन्ध की सारी कहानी नेख्लूदोव ने अपनी मौसी को सच सच सुना दी।

"हा मुझे याद है। तुम्हारी मा बेचारी ने मुझे बताया था। यह उन दिनो की बात है जब तुम उन बुढिया औरतो के पास रहते थे। उनकी जरूर यह इच्छा रही होगी कि तुम उनकी नौकरानी से शादी कर लो।" (काउटेस येकातेरीना इवानोव्ना को नेख्लूदोव की फूफियो से नफरत थी)। "तो यह वह लडकी है। Elle est encore jolie?"**

येकातेरीना इवानोव्ना साठ साल की हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ फुर्तीली और बातूनी औरत थी। कद की ऊची लम्बी और मजबूत थी, और होठो पर उसके हल्की सी काली मूछ थी। नख्लूदोव उसे बहुत चाहता था। बचपन से ही वह उसके हसमुख स्वभाव और ओजस्विता की ओर आकर्षित हुआ था।

"नहीं ma tante*** वह बात तो खत्म हो चुकी है। अब तो मैं केवल उसकी मदद करना चाहता हू क्योकि बिना किसी जुर्म के उसे जेल मे डाल दिया गया है। यह मेरे कारण हुआ है मैं ही उसके दुर्भाग्य का कारण हू। मैं सोचता हू यह मेरा कर्तव्य है कि जो भी उसके लिए कर सकू, करू।"

---

*तुम बडे हावर्ड बनने फिरते हो। (फ्रेंच)

**वह अभी भी सुदर है? (फ्रेंच)

***मौसी, (फ्रेंच)

"पर मैंने तो सुना है कि तुम उसके साथ शादी करने की सोच हो। क्या यह सच है?"

"हा, मेरा इरादा था, लेकिन वह शादी करना नही चाहतं

यकातेरीना इवानोव्ना आश्चर्यचकित रह गई। चुपचाप, भौंह चढाये आखें नीची किये वह अपने भाजे के चेहरे की ओर देखती रही। फिर उसके चेहरे का भाव बदल गया। वह अधिक खुश नजर आने लगा बोली—

"तो वह तुमसे ज्यादा समझदार है। तुम तो निरे पागल हो। क्या सचमुच उसके साथ शादी कर लेते?"

"जरूर।"

"यह जानते हुए भी कि उसकी जिन्दगी कैसी रही है?"

"यह जान कर तो और भी निश्चय से शादी करता, क्योंकि उसका कारण था।"

"तुम बहुत भाले हो," होठो पर आयी मुस्कान दबाते हुए मौसं कहा। "बहुत ही भोले हो, और इसी कारण मुझे इतने प्यार भी : हो ' उसने "भाले" शब्द को दोहराते हुए कहा, प्रत्यक्षत इसे बार कहना उसे अच्छा लग रहा था। ऐसा जान पडता था जैसे इस एक से उसे अपने भाजे की नैतिक स्थिति का ठीक ठीक पता चल रहा "क्या तुम जानते हो एलीन एक बहुत अच्छा आश्रम चला रही मैंग्डेलीन गह। यह तो वडा अच्छा हुआ जो मुझे तुमने यह बात दी। मैं एक बार वहा गई थी। उनमे जो लोग रहते हैं, उफ! क्या ब बेहद गद ह! घर लौट कर मुझे बार बार नहाना पडा। पर एलान मन से इस काम मे जुटी हुई है। हम उसे उसी आश्रम मे रख दें मेरा मतलब है, तुम्हारी उस लडकी को। अगर कही उसका सुधार सकता है तो एलीन के ही आश्रम मे, और कही नही।"

"पर उसे तो कडी मशक्कत की सजा मिल चुकी है। उसी की अ करने तो मैं यहा आया हू। इसके लिए मैं आपसे भी प्रार्थना करता च हूं।'

"अरे, और अपील कहा करोगे?"

"सेनेट मे।'

"आह, सेनट मे। मेरा चचेरा भाई लेव सेनेट म ही है लेकिन

ता बेवकूफो के विभाग – हैरल्डी डिपार्टमेंट – मे है। वहा के किसी अमली अधिकारी को तो मैं नही जानती। सनेट मे जमन ही जमन भरे पडे है – गे, फ़े, डे – tout l alphabet,* या सभी तरह के इवानोव, सेम्योनोव, निकोतन, और या फिर इवानेको, सिमोनको, निकोतेका pour varier ** भरे पडे हैं। Des gens de l autre monde *** फिर भी मैं तुम्हारे मौसा जी से बात करूगी। वह उन्हें जानते हैं। वह सब तरह के लोगो को जानते है। मैं उनसे जिक्र तो कर दूगी, लेकिन समझाना तुम्ही। वह मेरी बात कभी नही समझते। मैं कुछ भी कहू, वह यही रट लगाये रहते हैं कि उनके पल्ले कुछ नही पडा। C'est un parti pris **** बाकी सबके पल्ले पड जाता है, केवल इन्ही के पल्ले कुछ नहीं पडता।"

ऐन उसी वक्त मोजे पहने एक चोबदार ने कमरे म प्रवेश किया और चादी की रकाबी मे एक चिट्ठी ला कर मालकिन के सामने पेश की।

"लो, ख़ुद एलीन की ही चिट्ठी है। तुम्हें कीज़ेवेतेर का भाषण सुनने का भी मौका मिल जायेगा।"

"कीज़ेवेतेर कौन है?"

"कीज़ेवेतर? आज शाम मेरे साथ चलना, तुम्हे पता चल जायेगा कीज़ेवेतेर कौन है। उसकी वाणी म ऐसी शक्ति है कि बडे से बडा मुजरिम भी उसके सामने घुटनो के बल बैठ कर रोने लगता है और अपने पापो का प्रायश्चित्त करने लगता है।"

काउटेस येकातेरीना इवानोव्ना उन लोगो के मत की अनुयायी थी जो यह मानते हैं कि अपने पाप क्षालन म ईसाई धर्म का सार निहित है। यह बडी अजीब बात थी क्योंकि यकातेरीना इवानोव्ना का यह विश्वास उसके स्वभाव से मेल नही खाता था। उन दिनो इस मत का फैशन सा चल पडा था। जहा कही भी, जिस किसी सभा मे इसका प्रचार होता, येकातरीना इवानोव्ना वहा जा पहुचती। और इस मत के "अनुयाइयो" को अपने घर म भी सभाए करती। इस मत मे हर प्रकार की धार्मिक विधियो देव प्रतिमाओ, अनुष्ठानो इत्यादि का निषेध था, परन्तु यकातेरीना

*पूरी वर्णमाला, (फ्रेंच)

**विविधता के लिए। (फ्रेंच)

***दूसरी सोसाइटी के लोग। (फ्रेंच)

****यह तो उसने पहले से ही निश्चित कर रखा है। (फ्रेंच)

इवानोव्ना ने अपने सभी कमरो मे देव प्रतिमाए लटका रखी थी, यहा तक कि सोने वाले कमरे मे पलग के ऐन ऊपर भी दीवार पर एक देव प्रतिमा लटक रही थी। साथ ही वह चर्च की सभी विधिया अनुष्ठानो का पालन भी करती थी। उसे इसमे कोई असगति नजर नही आती थी।

"अगर तुम्हारी वह मैग्डेलीन उसका भाषण सुन पाये तो सचमुच उसके पाप धुल जायेंगे। वह बदल जायेगी," काउटेस ने कहा। "आज रात जरूर घर पर ही रहना। तुम उसका भाषण सुन पाओगे। वह बडा विलक्षण आदमी है।"

"मुझे इसमे कोई दिलचस्पी नही ma tante"

"लेकिन मैं जो तुम्हे कहती हू कि वह बडा दिलचस्प होगा। जरूर घर पहुच जाना। इसके अलावा तुम्हे मेरे साथ कौन सा काम है? Videz votre sac"*

"एक काम मुझे किले मे करवाना है।"

"किले मे? उसके लिए मैं तुम्हे बैरन क्रीगस्मथ के नाम चिट्ठी दे सकती हू। C'est un tres brave homme** लेकिन तुम भी तो उसे जानते हो, वह तुम्हारे पिता का अच्छा मित्र था। Il donne dans le spiritisme*** पर कोई फर्क नही पडता, वह अच्छा आत्मा है। वहा तुम्हे क्या काम है?"

"एक स्त्री के लिए इजाजत लेनी है कि वह जेलखाने मे अपने बच्चे से मिल सके। लेकिन मुझे मालूम हुआ है कि यह काम क्रीगस्मथ के बस का नही है केवल चेर्व्यान्स्की ही इसकी इजाजत दे सकता है।"

"दो कौडी का आदमी है चेर्व्यान्स्की। पर मेरियेट उसकी बीवी है न। मेरे कहने पर वह जरूर यह काम कर देगी। Elle est tres gentille"****

"मुझे एक दूसरी औरत के लिए भी अर्जी करना है। वह भी जेल मे बन्द है, उसे यह मालूम तक नही कि उसे क्यो बन्द किया गया।"

"रहने दो जी, उसे पता है मालूम होगा। ये बाल-कटी छोकरिया सब

---

*बता दो अपना मुद्दा। (फ्रेंच)

**वह बहुत नेक आदमी है। (फ्रेंच)

***उसे प्रेतवाद मे रुचि है। (फ्रेंच)

****वह बहुत भली है। (फ्रेंच)

अच्छी तरह जानती हैं कि इन्ह क्या कहा रखा हुआ है। जो हुआ है ठीक हुआ है। उन्ह अपने किये की मिल रही है।"

"यह तो मैं नहीं जानता कि ठीक हुआ है या नहीं, लेकिन वे बडे कष्ट मे हैं। आप तो मौसी ईसाई धर्म को मानने वाली हैं और इजील के सदुपदेशो मे विश्वास रखती हैं, फिर भी आपके दिल म दर्द नही है।"

"उसका इसके साथ क्या सम्बन्ध है? इजील इजील है और जो चीज बुरी है वह बुरी है। मैं तो दिखावे के लिए भी यह नही कह सकती कि मुझे नकारवादी अच्छे लगते हैं। खास तौर पर ये कटे बालो वाली नकारवादी छोकरियां तो मुझे फूटी आख नहीं सुहाती।'

"क्यो नही सुहाती?"

"पूछते हो क्यो? पहली मार्च के किस्से के बाद यह पूछते हो?"*

"हर किसी ने तो उसमे भाग नही लिया था।"

"भले ही न लिया हो। जो काम उनका नही उसम वे क्यो नाक घुसेडती है? ये काम औरतो के नहीं हैं।"

"पर आप मेरियेट के बारे मे तो समझती हैं कि वह काम कर सकती है।"

"मेरियेट? हा, मेरियेट आखिर मेरियेट ठहरी। वे छोकरिया भगवान जाने क्या हैं। हर किसी को सीख देती फिरती है।"

"सीख नही, वे तो जनता की मदद करना चाहती हैं।"

"उनके बिना भी हम जानती हैं किसकी मदद करे और किसकी न करें।"

"पर जनता की हालत तो बहुत बुरी है। मैं अभी देहात स आ रहा हू। कितना अन्याय है कि किसान तो खून पसीना एक करते रहे और फिर भी उन्हे भर-पेट खाना न मिले। और हम लोग गुलछर्रे उडाते रहे," नेख्लूदोव बोला। उसकी मौसी का स्वभाव बहुत अच्छा था। नेख्लूदोव निसकोच अपने मन की बात कहने लगा।

"तुम क्या चाहते हो? मैं भी काम करू और मेरे पास भी खाने पीने का कुछ न हो?"

---

*पहली मार्च, १८८१ को (पुराने कैलेंडर के अनुसार) जार अलेक्सादर द्वितीय की हत्या की गई थी।

"नहीं, मैं यह नहीं चाहता," नेख्लूदोव बरबस मुस्करा उठा, "मैं तो चाहता हूँ कि हम सभी काम पर और सभी आराम से रहें।"

मौसी ने फिर पहले की तरह भौंहें चढ़ायी, आँखें नीची कीं, और अनोखे ढंग से उसकी ओर देखा।

"Mon cher, vous finirez mal,"* वह बोली।

"पर क्यों?"

ऐन उसी वक्त काउंटेस चार्स्काया के पति ने कमरे में प्रवेश किया। ऊँचा-लम्बा, चौड़े कन्धों वाला जनरल, जो पहले मन्त्री के पद पर था।

"ओह दमीत्री, कहो कैसे हो?" उसने कहा और चुम्बन के लिए अपना गाल नेख्लूदोव के सामने कर दिया। वह अभी अभी दाढ़ी बना कर आया था।

"तुम कब आये?" और काउंट ने चुपचाप अपनी पत्नी को माथे पर चूमा।

Non, il est impayable"** पति को सम्बोधित करते हुए काउंटेस ने कहा। 'वह चाहता है कि मैं कपड़े धोया करूँ और आलू खा कर गुज़र करूँ। कैसा मूढ़ है। लेकिन फिर भी इसका काम कर देना। बड़ा भोला है," उसने लहजा बदल कर कहा। "तुमने सुना? कामेन्स्की की माँ बहुत कष्ट में है। लोग कहते हैं कि वह बचेगी नहीं," उसने अपने पति से कहा, "तुम्हें जा कर मिलना चाहिए।"

'हाँ, बहुत बुरी बात है," पति ने कहा।

"अब मुझे कुछ चिट्ठियाँ लिखनी हैं। तुम जाओ और इनसे बात करो।"

नेख्लूदोव ने बैठक में से निकल कर साथ वाले कमरे में कदम रखा ही था कि मौसी की आवाज़ आयी—

"तो फिर मेरियट को खत लिख दूँ?"

"ज़रूर, ma tante

"मैं खत में थोड़ी जगह खाली रख दूँगी। बाल-कटी छोकरी के बारे में जो कुछ लिखवाना चाहोगे मैं बाद में लिख दूँगी। मेरियट के हुक्म देने की देर है कि उसका पति तुम्हारा काम कर देगा। क्या तुम मुझे बुरी

---

*मेरे प्रिय तेरा अन्त बुरा होगा, (फ्रेंच)

**नहीं, यह बिल्कुल लाजवाब है, (फ्रेंच)

औरत समझते हो? जिन बाल-कटी छोकरियो की तुम मदद करना चाहते हो बडी भयानक होती है। पर je ne leur veux pas de mal* भगवान उनका मालिक है! अच्छा जाओ। मगर शाम का घर पर रहना, भूलना नही, कीजेवेतेर का उपदेश होगा, और हम प्रार्थना करेंगे। अगर कही तुम यो हठ न करो, पर ça vous fera beaucoup de bien** पर मैं जानती हू, तुम्हारी मा और तुम भी इन मामलो मे बहुत पिछडे हुए थे। अच्छा, अब जाओ।"

१५

काउट इवान मिखाइलोविच मन्त्री रह चुका था और विश्वास का बडा पक्का आदमी था।

एक तो उसे इस बात का दृढ विश्वास था कि जिस भाति पक्षी स्वभावत कीडे खाता है, मुलायम परो से अपने को ढके रहता है, हवा मे उडाने भरता है उसी भाति उसके लिए भी यह स्वाभाविक है कि वह सबसे लजीज और सबसे बढिया व्यजनो से भोजन करे, जिन्ह ऊची तनख्वाह पाने वाले बावर्चियो ने तैयार किया हो, सबसे उमदा और सबसे बढिया कपडे पहने, उसकी गाडी म सबसे सुदर और सबसे तेज भागने वाले घोडे जुते हो। अत उसका यह अधिकार है कि य सब चीजें उसके लिए जुटाई जाय। इसके अतिरिक्त काउट इवान मिखाइलोविच का विचार था कि सरकारी खजाने मे से उसे ज्यादा से ज्यादा रुपया बटोरना चाहिए, जसे भी बटोरा जा सके, ज्यादा से ज्यादा उपाधिया प्राप्त करनी चाहिए, यहा तक कि वह अधिकार चिन्ह भी, जिसमे हीरे जडे होते हैं, और ज्यादा से ज्यादा राज परिवार के लोगो—स्त्रियो और पुरुषो—के सम्पक म रहना चाहिए। इन धारणाओ की तुलना म बाकी सब चीजो को काउट इवान मिखाइलोविच तुच्छ और निरथक समझता था। बाकी चीजे वैसी की वैसी रहें या बदल जाए, उसे इनसे कोई सरोकार न था। इन्ही धारणाओ का अनुसरण करते हुए काउट इवान मिखाइलोविच पीटसबग मे पिछले चालीस

---

*मैं उनका बुरा नही चाहती। (फ्रेंच)

**तुम्हें इससे बहुत लाभ होगा। (फ्रेंच)

वप से रह रहा था और इस लम्बे अर्से के अन्त म मन्त्री के प" पर र पहुचा था।

वे कौन से प्रधान गुण थे जिनके वल पर वह इस प" पर प"चा? सबसे पहले तो यह गुण कि उसमे सभी सरकारी दस्तावेजो और ज्ञाप को समझने, तथा सरकारी दस्तावेज तयार करने की योग्यता थी। इ दस्तावेजो की भाषा भले ही भोडी हो, मगर समझ म आ जाती थी औ शब्दो के जोड ठीक होते थे। दूसरे, उसकी रोवीली चाल-ढाल। इसके क पर वह जरूरत पडने पर वेहद गर्वीला और शाहाना नजर आ सकता था, एक ऐसा व्यक्ति जिसके पास तक पहुचना कठिन हो। और वक्त श तकाजा होने पर वह चापलूसी और कमीनेपन की सभी सीमाए तोड सकता था। तीसरे, उसके कोई सामान्य नैतिक सिद्धान्त अथवा नियम नहा थ- न शासकीय, न व्यक्तिगत। इस गुण के वल पर वह जमाने का रुख देख लेता था और उसी के अनुसार लोगो से या तो महमत होता या उनका विरोध करता था। इस तरह का आचरण करते समय वह एक बात का ख्याल रखता शिष्टता का आवरण वना रहे, और लोगो को यह पता न चले कि उसके व्यवहार मे अस्थिरता है। उसे इस वात की कोई परवाह नही थी कि उसका आचरण अपने आप मे नतिक है अथवा अनतिक, और वह लोगो के लिए हितकर होगा अथवा समूचे रूसी साम्राज्य के लिए घोर हानि का कारण।

वह मन्त्री वना। लोगो ने समझा कि वह वडा चतुर राजनेता है। इनमे केवल वे लोग ही शामिल नही थे जो उस पर निभर हो (उनकी सख्या भी कम नही थी) अथवा उसके सम्पक मे हो, वल्कि कई अजनबी लोगो ने भी यही समझा। उसे स्वय भी अपने वारे मे यही विश्वास था। फिर वक्त गुजरा। इस वीच उसने कोई वडा काम नही कर दिखाया, न ही उसके द्वारा किसी महत्वपूण वात का स्पष्टीकरण हुआ। अव यहा पर उस जसे और भी कई रोवीले अफसर मौजूद थे जिनका जीवन न कोई उसूल नही था। इन लोगो ने भी दस्तावेज लिखना और पढना सीख लिया था। जीवन के सघप नियम के अनुसार काउट का धकेल कर उन्होने उसकी जगह सभाल ली। तव सव लोग समझ गये कि इस आदमी मे कोई चतुराई नहीं। वल्कि यह वडा ओछा, अशिक्षित और दम्भी आदमी है, और उसके विचारो का स्तर मुश्किल से उन सम्पादकीय लेखो के स्तर तक पहुच पाता

है जो सबसे घटिया, कट्टरपन्थी अखबारों में छपते रहते हैं। पता चल गया कि इस आदमी में कोई विशेषता नहीं। यह भी उन अशिक्षित और दम्भी अफसरों जैसा ही है जिन्होंने उसकी जगह संभाल ली है। उसे स्वयं भी इस बात का पता चल गया। पर फिर भी उसकी यह धारणा ज्यों की त्यों बनी रही कि उसे हर साल सरकारी खजाने में से बहुत सी रकम खींचनी है और अपनी पोशाकों के लिए नये नये पदक प्राप्त करते रहना है। उसकी यह धारणा इतनी दृढ़ थी कि किसी में भी यह साहस न था कि इन्हें देने से इन्कार कर सके। इस तरह वह हर साल हजारों रूबल वसूल कर लेता था। इनमें कुछ रकम तो उसकी पेंशन की थी, और कुछ किसी सरकारी संस्था के सदस्य होने के नाते तथा तरह तरह की कमेटियों और परिषदों का अध्यक्ष होने के नाते। इसके अतिरिक्त उसे यह अधिकार भी प्राप्त था—और इसे वह बहुत बड़ा अधिकार समझता था—कि वह तरह तरह की डोरी कन्धों और पतलूनों के साथ लगाता रहे और अपने कपड़ों को फीतों और इनेमल के सितारों से सजाता रहे। इस कारण काउंट इवान मिखाइलोविच की बड़े ऊंचे पदाधिकारियों तक पहुंच थी।

काउंट इवान मिखाइलोविच ने नेख्लूदोव की बात उसी ढंग से सुनी जिस ढंग से वह अपने विभाग के स्थायी सेक्रेटरी की रिपोर्टें सुनने का आदी था। जब सुन चुका तो कहने लगा कि वह उसे दो चिट्ठियां लिख कर देगा, एक तो अपील विभाग के सेनेटर वाल्फ के नाम।

"उसके बारे में तरह तरह की बातें सुनने में आती हैं, लेकिन dans tous les cas c'est un homme très comme il faut,"* वह बोला, "लेकिन मैंने उस आदमी पर बहुत एहसान किये हैं, इसलिए मेरी बात नहीं टालेगा। जो भी उससे बन पड़ा जरूर कर देगा।"

दूसरी चिट्ठी काउंट ने अपील कमेटी के एक सदस्य के नाम लिख दी जिसका बड़ा असर-रसूख था। नेख्लूदोव ने फ़ैदोस्या विर्युकोवा की कहानी सुनाई जिसे काउंट ने बड़ी दिलचस्पी से सुना। नेख्लूदोव ने कहा कि मैं इसके बारे में सीधे महारानी को दरख्वास्त देना चाहता हूं। सुन कर काउंट बोला कि कहानी सचमुच बड़ी दर्दनाक है, और मौका मिलने पर महारानी को सुनाई भी जा सकती है, लेकिन मैं इसका वचन नहीं

*जो भी हो वह आदमी बिल्कुल अच्छा है। (फ्रेंच)

दे सकता। वेहतर यही है कि दरख्वास्त जाब्ते के मुताबिक दाखिल कर दी जाय। मन ही मन उसने सोचा कि अगर मौका मिला, और अगर बृहस्पतिवार को ही petit comite* मे उसे बुलाया गया तो महाराजा से इस बारे मे बात हो जायेगी।

नेख्लूदोव ने दोनो चिट्ठिया ले ली। साथ ही एक चिट्ठी मेरियेट के नाम अपनी मौसी से भी ले ली और इन लोगो को मिलने के लिए निकल पड़ा।

सबसे पहले वह मेरियेट के घर गया। किसी जमाने मे नेख्लूदोव का उससे परिचय रहा था। तब वह १६ १७ बरस की लडकी थी। मेरियेट ऊचे खानदान की थी लेकिन उसके मा-बाप अमीर नही थे। उसकी शादी एक ऐसे आदमी से हुई थी जो नौकरी मे तो बडे ऊचे ओहदे तक जा पहुचा था लेकिन यो उसकी इज्जत नही थी। नेख्लूदोव ने उसके बारे मे बहुत कुछ सुन रखा था—विशेषकर यह कि वह राजनीतिक कैदियो पर जरा भी रहम नही करता था। सैकडो-हजारो उसके अधीन थे जिन पर जुल्म करना वह अपना सरकारी फर्ज समझता था। हमेशा की तरह अब भी नेख्लूदोव को यह बात नागवार गुजरी कि पीडितो की मदद करने के लिए उसे उत्पीडको का पक्ष लेना पड रहा है। अब जब वह उनके पास दरखास्त भी करने जाता कि कम से कम कुछ व्यक्तियो पर जुल्म कम करें तो उसे लगता जैसे वह उनके काम का समर्थन कर रहा है। जुल्म करने की अब उन्हे आदत पड गई थी, और सभवत इसका उन्हे आभास तक न होता था। ऐसी स्थिति मे उसके अन्दर द्वन्द्व होने लगता और उसका मन खिन्न हो उठता। वह द्विविधा मे पड जाता कि फरमाइश करे या न करे, पर अन्त मे हमेशा फरमाइश करने का ही निश्चय करता था। आखिर बात तो यही है न कि इस मरियेट और उसके पति के यहा जाना उसके लिए अप्रिय है कि उनके यहा वह घबराया हुआ सा और शर्मिदा महसूस करेगा, लेकिन इस सब के बदले हो सकता है एक अभागी, एकाकी कारावास में पड़ी लड़की रिहा हो जाय और उसकी तथा उसके घर वालो की यातनाएं समाप्त हो जाय। अपने को अब वह इन लोगो की श्रेणी का नही समझता था, इसलिए इनके साथ उठना-बैठना उसे असगत और अभद्र लगता था। लेकिन ये लोग उसे अब भी अपना ही समझते थे। इसलिए भी नेख्लूदोव

---

*मतरग बठक (फ्रेंच)

को महसूस होने लगता कि वह पुराने ही ढर्रे पर चला जा रहा है और अपनी धारणाओ के बावजूद उन्ही के से भाडे और अश्लील लहजे मे बातें करने लगता है। यह उसने अपनी मौसी के घर पर भी महसूस किया था। आज सुबह जब अत्यन्त गभीर बातो की चर्चा हो रही थी वह स्वय छिछले, मजाकिया लहजे मे बात करने लग गया था।

बडी मुद्दत के बाद वह पीटसबग आया था। इस बार भी यहा के वातावरण का वही आम प्रभाव उस पर पडा था। वह एक ओर तो शारीरिक स्फूर्ति, परतु दूसरी ओर नैतिक जडता का अनभव कर रहा था। यहा पर हर चीज़ साफ-सुथरी, आरामदह थी, हर बात मे करीना था। आचार सम्बन्धी बाता मे लोग उदार थे जिसस जीवन बडा सुभीते से चलता हुआ जान पडता था।

जिम गाडीवान की गाडी मे वह बैठा था, वह बडा साफ-सुथरा, चिकना चुपडा और मीठी मीठी बाते करने वाला आदमी था। वहा खडे सिपाही बडे चिकने-चुपडे, साफ-सुथरे और मधुरभाषी थे। जिन सडको पर उसकी गाडी बढ चली, वे भी बडी नफीस, साफ-सुथरी, पानी से धुली सडकें थी। सडको के किनारो पर के घर भी बढिया और साफ सुथरे थे। इन्ही मे से एक घर मे मेरियेट रहती थी।

फाटक के सामने एक फिटन खडी थी जिसम दो अग्रेज़ी घोडे जुते थे। उन पर लगा साज़ भी अग्रेज़ी था। बावर्दी कोचवान भी जो हाथ मे छाटा लिये अपनी सीट पर बडे गव से बैठा था, अग्रेज़ी जान पडता था। उसने बडे बडे गलमुच्छे उगा रखे थे जो उसकी आधी गालो को ढके हुए थे।

जिस दरबान ने ड्याढी का दरवाज़ा खोला, उसने भी बेहद साफ वर्दी पहन रखी थी। ड्याढी के अन्दर चोबदार खडा था। उसकी वर्दी दरबान की वर्दी से भी ज़्यादा साफ थी और उस पर सुनहरी डोरी लगी थी। मुह पर बडे रोबील गलमुच्छे थे जिन्ह उसने खूब कघी कर रखा था। उसके साथ एक अदली खडा था। अदली ने भी बढिया नई वर्दी पहन रखी थी।

"आज जनरल साहब किसी से नही मिलगे। मेम साहब भी नही मिल सकेगी। वे अभी बाहर जा रही हैं।"

नेख्लूदोव न येकातेरीना इवानोव्ना की चिट्ठी चोबदार को दे दी। एक मेज़ पर मुलाकातियो का रजिस्टर रखा था। नेख्लूदाव वहा जा बैठा

और अपना कार्ड निकाल कर उसके पीछे लिखने लगा कि खेद है पर मैं किसी से भी भेंट नही हो पायी। इतने मे चोबदार सीढियो की ओर आ गया, दरबान बाहर जा कर कोचवान को पुकारने लगा, और अर्दली तन कर खडा हो गया है। अर्दली की आखें सीढियो पर गडी था जिन पर से एक छोटी सी महिला तेज तेज कदम रखती हुई नीचे उतर रहा थी। उसकी शान शौक्त को देखते हुए उसका या तेज तेज उतरना बडा अज लग रहा था।

मेरियेट ने काले रग की पोशाक पहन रखी थी, ऊपर काले ही रग का केप था, सिर पर बडा सा टोप जिसमे पख लगे थे और हाथो मे नये काले रग के दस्ताने थे। चेहरे पर एक हल्की सी जाली लटक रही थी।

नेख्लूदोव को देख कर उसने चेहरे पर से जाली उठा दी, उसके पीछे से चमकती आखो वाला उसका सुदर चेहरा निकला, बडे कुतूहल से उसने नेख्लूदोव की ओर देखा।

"ओह, प्रिंस दमीत्री इवानोविच," कोमल, मधुर आवाज मे उसने कहा, "मैं जरूर पहचान जाती "

"अच्छा, आपको मेरा नाम भी याद है?"

"क्यो नही। मेरी बहिन और मैं तो तुमसे प्रेम भी करती थी," उसने फासीसी भाषा मे कहा। "लेकिन तुम तो बडे बदल गये हो। कबर, मुझे खेद है कि मुझे कही जाना है। मगर कोई बात नही, चलो आओ, ऊपर चले।" कहते हुए वह खडी हो गई और फिर द्विविधा में पड गई। फिर उसने घडी की ओर देखा। "नही, नही, मैं नही रुक सकती। मुझे कामेन्स्की के घर जाना है, वहा मृतक की आत्मा के लिए प्रार्थना होगी। मा बेचारी का बुरा हाल है।"

"कामेन्स्की कौन है?"

"क्या तुमने नहीं सुना? उनका बेटा द्वन्द्व युद्ध म मारा गया था। पोजेन के साथ उसकी लडाई हुई थी। मा-बाप का इकलौता बेटा था। बडा जुल्म हुआ है! मा बेचारी का तो बुरा हाल है।"

"हा, मैंने कुछ कुछ सुना है।"

"तो मैं चलूगी। तुम कल या आज शाम को ही आ जाना," उसने कहा और हल्के हल्के, तेज तेज कदम रखती हुई दरवाजे की ओर जाने लगी।

"आज शाम को तो मैं नही आ सकूगा ' उसके पीछे पीछे बाहर निकलते हुए वह बोल रहा था, "पर मैं तो आपके पास एक काम से आया था।" लाखी घोडो को फाटक के सामने लाये जाते देख कर उसने कहा।

"क्या, क्या हुआ?"

"यह मौसी ने आपके नाम एक चिट्ठी दी है एक छोटा सा लिफाफा उसके हाथ मे देते हुए नेख्लूदाव न कहा। लिफाफे पर वडी सी वश चिन्ह समत सील थी। "चिट्ठी म सब कुछ लिखा है।'

"काउटेस येकातेरीना इवानोव्ना सोचती हैं कि मरे पति मेरी बात सुनते हैं, कि काम-काज के मामलो मे मैं उनसे कुछ करवा सकती हू। यह उनकी सरासर भूल है। मैं कुछ भी नही कर सकती। न ही मैं उनके मामला म दखल देना चाहती हू। पर कोई बात नही, तुम्हारी खातिर और काउटेस की खातिर, मैं उपना असूल तोड दगी। काम क्या है? उसने कहा और अपना नन्हा सा हाथ जिस पर काला दस्ताना चढा था जेब म डालने का विफल प्रयास करने लगी।

"क़िले मे एक लडकी कैद है। वह बीमार है, और बेगुनाह है।'

'उसका नाम क्या है?"

"शूस्तोवा, लीदिया शस्तोवा। चिट्ठी मे लिखा है।"

"अच्छी बात है। मुझस जो वन पडा मैं करुगी। कहते हुए मेरियेट उछल कर अपनी गाडी मे जा बैठी। गाडी छोटी सी और ऊपर से खुली थी और उसमे नरम नरम गद्दे बिछे थे। गाडी के मड गाड ख व पालिश किये हुए थे और धूप म चमक रहे थे। गाडी म बैठते ही उसने अपनी छोटी छतरी खाल ली। चोबदार बॉक्स पर चढ गया और काचवान को गाडी चलाने का इशारा किया। गाडी चलने लगी। लकिन सहसा उसने छतरी की नोक कोचवान की पीठ म खोसी। पतली पतली टागो वाली सुन्दर लाखी घोडिया फौरन खडी हो गइ। लगाम खिंच जाने से उनकी गर्दनें कमान की तरह तन गई थी, और वे खडी खडी बार बार पाव बदलने लगी थी।

'मिलने जरूर आना, पर अपना स्वाथ ले कर नही," उसने कहा और नेख्लूदोव की ओर मुस्करा कर देखा। अपनी मुस्कान का प्रभाव वह जानती थी। इसके बाद उसने अपने चेहरे पर फिर जाली गिरा ली

मानो अभिनय समाप्त हो गया हो और नाटक पर पर्दा गिराने का वक्त आ गया हो। "अच्छा, चलो।" और उसने फिर छतरी की नोक कोचवान की पीठ मे खोभी।

नेख्लूदोव ने सिर पर से टोप उतार कर अभिवादन किया। नन्ही घोडिया हल्के से फडफडायी, फिर सडक के पत्थरो पर अपने खुर खटखटाती हुई चल निकली। गाडी नये रबड के टायरो पर तेज तेज और समतल गति से जाने लगी। केवल किसी किसी जगह, सडक ऊची-नीची होने के कारण गाडी हल्का सा हिचकोला खाती थी।

१६

मेरियेट की मुस्कराहट के जवाब मे नेख्लूदोव भी मुस्कराया था। उसे याद कर के नेख्लूदोव ने सिर हिला दिया।

"इस तरह की ज़िन्दगी मे से निकलने की अभी सोच ही रहा होता हू कि पाव फिर उसी की ओर खिच जाते हैं," वह सोचने लगा। उसके अन्दर फिर द्वन्द्व छिड गया और सशय उठने लगे। जब कभी उसे ऐसे लोगो की चापलसी करनी पडती जिनके लिए उसके दिल मे कोई इज्जत न थी, तो उसका मन इसी तरह की भावनाओ से विचलित हो उठता था।

यह सोचते हुए कि पहले कहा जाया जाये, कहा बाद मे, ताकि चक्कर न लगाना पडे नेख्लूदोव सबसे पहले सेनेट की ओर चला। उसे अन्दर दफ्तर तक ले जाया गया, जहा उसने आलीशान इमारत मे बडी सख्या मे बहुत ही सलीकेदार और साफ-सुथरे क्लर्को को बैठे पाया।

मास्लोवा की दरख्वास्त पहुच चुकी थी और उसी सेनेटर वोल्फ के पास उस पर विचार करने और रिपोर्ट देने के लिए भेज दी गई थी, जिसके नाम नेख्लूदोव अपने मौसा से सिफारिशी चिट्ठी लाया था।

"सेनेट की एक बैठक इसी हफ्ते मे होगी," एक अफसर ने नेख्लूदोव से कहा। "पर मास्लोवा का मुकद्दमा इस बैठक मे पेश नही होगा। हा, अगर खास तौर पर इसके लिए फरमाइश की जाय तो मुमकिन है बुधवार को ही इस पर विचार किया जा सके।"

मास्लोवा के मुकद्दमे के कागजात वगैरा निकलवाने मे कुछ देर लगी।

नेख्लूदोव दफ्तर म बैठा रहा। सेनेट के दफ्तर मे सभी लोग उसी द्वन्द्व युद्ध की चर्चा कर रहे थे, जिसमे युवा कामेन्स्की मारा गया था। उनकी बाते सुनते सुनते उसे इस घटना की पूरी तफसील मालूम हो गई। मारा पीटसवग उसी की वात कर रहा था। वात या हुई थी कुछ अफ्सर एक शरावखाने मे बैठे थे ऑयस्टर और शराब के दौर चल रहे थे। जैसा कि अवसर होता है सबने ख़ूब पी रखी थी। किसी ने कामेन्स्की की रेजिमेट के बारे म कुछ ऊच-नीच कह दिया। जवाब मे कामेन्स्की ने कहा कि तुम झूट बकते हो। कहन वाले ने कामेन्स्की का घसा दे मारा। बस दूसरे दिन दोना का द्वन्द्व युद्ध हो गया। कामेन्स्की को पेट म गाली लगी और दो घण्टे के वाद प्राण निकल गये। हत्या करने वाला और दोना के सहायक पकड लिये गये। उन्ह हिरासत म तो रखा गया लकिन सुनने म आ रहा था कि दो हफ्ते तक म उन्हे रिहा कर दिया जायेगा।

सैनेट म स निकल कर नेख्लूदोव अपील कमेटी के एक सदस्य बैरन वोरोन्योव को मिलने गया। वह वडे शानदार मकान म रहता था जो ज़ार की ओर से मिला हुआ था। दरवान ने वडे रूखे लहजे म नेख्लूदोव को जवाब दे दिया कि बैरन हर रोज़ नही मिल सकते, केवल मुलाकाता के दिन ही मिल सकते हैं। इस समय वह ज़ार से मिलने गये हैं और कल उन्ह कोई रिपोट पढनी है। नेख्लूदोव ने वह चिट्ठी दरवान के हाथ म दी जो वह अपने मौसा से लाया था और सीधा सनेटर वोल्फ से मिलने चला गया।

जब नेख्लूदोव अन्दर दाखिल हुआ तो वोल्फ उसी वक्त भाजन कर के हटा था, और आदत के मुताबिक सिगार सुलगाये कमरे म टहल रहा था। उसका विचार था कि इससे भोजन पचाने मे सहायता मिलती है। व्लादीमिर वासील्येविच वोल्फ सही माना मे un homme tres comme il faut था। इस गुण को वह अपनी वहुत वडी विशेषता समझता था, और इसी लिए वह औरो के साथ बडप्पन का व्यवहार भी करता था। यो इस गुण को विशेषता देना उसके लिए स्वाभाविक भी था, क्योकि केवल इसी की बदौलत वह ऊचे ओहदे पर पहुचा था। जीवन मे वह चाहता भी यही कुछ था। जिस जगह उसने व्याह किया वहा से उसे ऐसी सम्पत्ति हाथ लगी जिससे अठारह हज़ार रूबल सालाना की आमदनी होती थी। अपनी कोशिश से उसने सेनेटर का पद ग्रहण किया। वह अपने को केवल

un homme tres comme il faut ही नही समझता था बल्कि सही मानो मे ईमानदार भी मानता था। ईमानदारी से मतलब वह यह निकालता था कि स्वय किसी से भी चोरी छिपे रिश्वत नहीं लेता था। लेकिन सरकार से आग्रह कर के तरह तरह के भत्ते, किराये, सफ़र-खर्च इत्यादि ऐंठने को वह बेईमानी की बात नही समझता था। और अन्त मे जिस तरह का भी काम सरकार करने को कहे, बडी तत्परता से करता था। पहले वह पोलैण्ड के एक प्रान्त का गवनर हुआ करता था। उस समय उसने सैंकडो बेगुनाहो का सवनाश किया। उन्हे जेलो मे ठूसा, तथा जलावतन करवाया, इसलिए कि वे अपनी जनता तथा अपने पुरखाओ के धर्म से प्रेम करते थे। उसे वह बेईमानी की बात नही समझता था बल्कि उत्कृष्ट, वीरोचित तथा देशभक्ति का काम समझता था। वह अपनी पत्नी (जो उससे प्रेम करती थी) तथा उसकी बहिन की सारी सम्पत्ति हडप कर गया। इसे भी वह बेईमानी की बात नही समझता था। इसके विपरीत, उसका विचार था कि उसने बडे अच्छे ढग से अपने घरेलू मामलो की व्यवस्था कर दी है।

उसके परिवार के सदस्य थे उसकी सहमी हुई पत्नी, उसकी साली तथा बेटी। साली की सारी ज़मीन-जायदाद बेच कर जितना भी रुपया वसूल हुआ उसने अपने नाम पर जमा करवा लिया था। उसकी बेटी देखने मे साधारण, भीरु और विनीत स्वभाव की थी। उसका जीवन बिलकुल एकाकी और नीरस था, अत मन बहलाने के लिए उसने हाल ही में इवैंजेलिकल मत मे दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया था और एलीन तथा काउटेस येकातेरीना इवानोव्ना के यहा प्राथना-सभाओ मे जाने लगी थी।

वोल्फ के एक बेटा भी था। लापरवाह तबीयत का यवक पन्द्रह बरस की उम्र मे ही उसने दाढी रख ली, पीना पिलाना शुरू कर दिया और हर तरह के व्यसनो मे पड गया। बीस बरस की उम्र तक वह यही कुछ करता रहा और अन्त मे पिता ने उसे घर से निकाल दिया। वह पढ़ाई पूरी नही कर सका था और बुरे लोगो की सोहबत मे घूमता और कर्ज चढाता हुआ अपने पिता की इज्जत पर दाग लगाता रहा था। एक बार पिता ने उसका दो सौ तीस रूबल कज अदा किया, दूसरी बार छ सौ रूबल। पर इस बार उसे चेतावनी दे दी कि इसके बाद वह कोई कर्ज अदा नहीं करेगा। बेटे को डराया धमकाया कि सभल जाओ तो ठीक वरना घर के

बाहर निकाल दूगा और घर मे साथ कोई सबध नही रहने दूगा। लडका नही सुधरा, बल्कि अब की एक हजार रूबल कर्ज चढा आया और पिता को साफ साफ कह दिया कि घर मे रहना उसके लिए नरक भोगने के बराबर है। वोल्फ ने घोषणा कर दी कि आज से तुम मेरे बेटे नही हो, जहा जाना चाहो जा सकते हो। उस दिन से वोल्फ लोगो से यही कहता था कि उसके कोई बेटा नही है। घर मे भी बेटे के बारे म उसके साथ बात करने का किसी को साहस नही होता था। और व्लादीमिर वासील्येविच वोल्फ को पक्का विश्वास था कि उसने अपनी गृहस्थी सर्वोत्कृष्ट ढग से सभाली हुई है।

जब नेख्लूदोव अन्दर पहुचा तो वोल्फ चलते चलते रुक गया और मैत्रीपूर्ण ढग से मुस्करा कर नेख्लूदोव का स्वागत किया। इस मुस्कराहट मे व्यग का भी हल्का सा पुट था। इस तरह मुस्कराते हुए वह मानो लोगो को जताना चाहता था कि वह कितना comme il faut है, और अधिकाश लोगो से कितना ऊचा है। उसने वह चिट्ठी बडे ध्यान से पढी जो नेख्लूदोव न उसके हाथ मे दी थी।

"तशरीफ रखिये। आपकी इजाजत हो तो मैं कमरे मे टहलता रहू," कोट की जेबो मे हाथ डालते हुए और हल्के हल्के कदम रख कर टहलना जारी रखते हुए उसने कहा। यह उसका पढने का कमरा था जो काफी बडा और बिल्कुल मुनासिब ढग से सजाया गया था। "आपसे मिल कर बडी खुशी हुई। और जो काउट इवान मिखाइलोविच ने करने का हुक्म दिया है सिर आखो पर," मुह मे से सिगार का खुशबूदार नीला धुआ छोडते हुए वह बोला, फिर सिगार को बडे प्यार से मुह मे से निकाल लिया ताकि राख नीचे न गिरने पाये।

"मेरी केवल यही प्रार्थना है कि इस मुकद्दमे की सुनवाई जल्दी हो जाय, ताकि अगर कैदी को साइबेरिया भेजे जाना है तो वह जल्दी रवाना हो सके," नेख्लूदोव ने कहा।

"जरूर, जरूर, नीज्नी नवगोरोद से जो पहला जहाज जाय उसी म जा सकती है," बडप्पन के अन्दाज से मुस्कराते हुए वोल्फ ने कहा। उसे लोगो की फरमाइश का पहले ही पता चल जाता था। "कैदी का नाम क्या है?"

"मास्लोवा।"

वोल्फ मेज के पास गया और फाइल मे, कामकाज के अन्य कागजों मे से एक कागज उठा कर देखने लगा।

"हा, मास्लोवा, ठीक है। मैं और सदम्यो स बात करूगा। हम बुधवार के दिन इस मुकद्दमे पर विचार करेंगे।"

"तो क्या मैं वकील को तार दे दू?"

"ओह, आपने वकील कर रखा है? इसकी क्या जरूरत थी? पर खैर, अगर आप चाहते हैं तो बेशक तार दे दें।"

"अपील मे तक शायद काफी न हो," नेख्लूदोव ने कहा, "पर मैं समझता हू मुकद्दमे की फाइल देखने पर पता चल जायगा कि सजा गलतफ़हमी के कारण दी गई थी।"

"हा, हो सकता है। लेकिन सेनेट मुकद्दमे का फैसला गुण-दोष के आधार पर नही कर सकती।" वोल्फ ने रुखाई के साथ कहा। उसकी आखें सिगार की राख पर अटकी थी। "सेनेट केवल यह देखती है कि कानून ठीक तरह से लागू किया गया है या नही, और उसका ठीक ठीक मतलब निकाला गया या नही।"

"लेकिन मैं समझता हू कि यह असाधारण मुकद्दमा है।'

"मुझे मालूम है, मालूम है। सभी मुकद्दमे असाधारण होत हैं। हम अपना फर्ज निभायेंगे। बस।' सिगार के सिरे पर राख अब भी अटकी हुई थी, हालाकि उसमे दरार पड गयी थी, और डर था कि कहीं नीचे गिर न पडे। "आप पीटसबर्ग बहुत कम आते है, क्या?" सिगार को इस ढग से पकडे हुए कि राख गिरे नही, वोल्फ ने पूछा। पर राख हिलने लगी थी। वोल्फ ध्यान से चलते हुए उसे राखदानी तक ले आया, जहा पहुचते ही वह ढेर हो गई। "कामेन्स्की वाली घटना कितनी भयानक है!' वह बोला। 'कितना अच्छा लडका था! इकलौता बेटा। मा की हालत पर तो सचमुच रहम आता है।" उसके मुह से भी वही शब्द निकल रहे थे जो इस समय कामेन्स्की के बारे मे पीटसबर्ग म हर किसी की जबान पर थे।

कुछेक शब्द वोल्फ न काउटेस येकातेरीना इवानोव्ना के बारे म तथा उसके नये धर्म अनुराग के बारे म भी कहे। लेकिन सहमति अथवा विरोध प्रकट नही किया। इसकी जरूरत भी नही थी क्योकि वह ता comme il faut था। इसके बाद उसने घण्टी बजाई।

नेख्लूदोव ने झुक कर विदा ली।

"अगर तकलीफ न हो तो बुधवार के दिन भोजन मेरे साथ कीजिये। मैं इस बारे म पक्का जवाब भी दे सकूगा," अपना हाथ बढाते हुए वोल्फ ने कहा।

देर हो चुकी थी, इसलिए नेख्लूदोव सीधा अपनी मौसी के घर लौट गया।

१७

काउटेस यकातेरीना इवानोव्ना के घर शाम के भोजन का समय साढे सात बजे था। खाना परोसने का ढग नया था, जिसे नेख्लूदोव पहली बार देख रहा था। चोबदारो ने मेज पर प्लेटें वगैरा रखी, खाने का पहला व्यजन भी और फौरन् कमरे म से निकल गय, सो खाने वाले खुद ही खाना ले रहे थे। पुरुष स्त्रियो को किसी तरह का कष्ट नही उठाने देना चाहते थे और इसलिए खुद बडी मर्दानगी से उनके लिए और अपने लिए प्लेटो मे खाना डालने और जाम उडेलने का भार उठा रहे थे। मेज के साथ ही एक बिजली की घटी का बटन लगा था। जब एक व्यजन समाप्त हो जाता तो काउटेस बटन दबाती, चोबदार फिर हौले हौले चलते हुए कमरे मे आते, प्लेटें बदल देते, दूसरा व्यजन मेज पर रख देते और फिर पहले की तरह कमरे मे से निकल जाते। भोजन अत्यन्त स्वादिष्ट और शराबें बेहद महगी थी। एक फ्रासीसी सफेद लबादे पहने दो छोटे बावर्चियो के साथ खुले, रोशन रसोईघर मे काम कर रहा था। छ व्यक्ति भोजन कर रहे थे काउट तथा काउटेस, उनका बेटा, सदा नाराज सा रहने वाला एक आदमी जो गार्ड रजिमेट मे अफसर के पद पर था और इस समय मेज पर कोहनिया चढाये बैठा था, नेख्लूदोव, एक फ्रासीसी अध्यापिका, और काउट का मुख्य कारिंदा जो देहात से आया हुआ था।

यहा पर भी वार्तालाप द्वन्द्व युद्ध के ही बारे मे चल रहा था, और सभी अपनी अपनी राय दे रहे थे कि ज़ार के इस सम्बन्ध म क्या विचार होगे। इतना तो सब को मालूम था कि ज़ार की बेचारी मा के साथ बडी हमदर्दी है, सभी को उससे हमदर्दी थी। साथ ही लोगो को यह भी मालूम था कि ज़ार हत्या करने वाले को भी कडी सजा नही देना चाहते, क्योकि

जो विचार नेख्लूदोव के मन मे उठ रहे थे, उसने कह डाले। पहले तो ऐसा जान पडा जैसे उसकी मौसी येकातेरीना इवानोव्ना उससे सहमत है। पर फिर वह भी और लोगो की तरह बिल्कुल चुप हो गई, और नेख्लूदोव को भास होने लगा जैसे उसने कोई अनुचित बात कह दी हो।

शाम के समय, भोजन के फौरन् ही बाद, लोग कीज़ेवेतेर का भाषण सुनने आने लगे। नाचने वाले कमरे मे ऊची पीठ वाली कामदार कुर्सिया लाइनो की शक्ल मे जोड दी गई थी जैसा कि किसी मीटिंग के समय किया जाता है। एक ओर, एक छोटे से मेज पर वक्ता के लिए पानी का जग रखा गया था, और उसके साथ ही एक आराम कुर्सी रख दी गई थी।

बडी बडी शानदार गाडिया फाटक पर खडी थी। कमरे की सजधज चकाचौंध करती थी। स्त्रिया रेशमी और मखमली कपडे पहने, गोटे किनारी से सजी, सिर पर मसनूई बाल लगाये, बदन को गदराया दिखाने के लिए जगह जगह कपडो के अन्दर गद्दिया लगाये और नाजुक कमर को कस कर बाधे बैठी थी। उनके साथ आये पुरुष वर्दियो मे या शाम के कपडा मे लैस थे। इनके अतिरिक्त आधी दजन के करीब साधारण लोग भी थे दो घर के नौकर, एक दूकानदार, एक चोबदार, और एक कोचवान।

कीज़ेवेतेर हट्टा-कट्टा, पके बालो वाला आदमी था। वह अपना भाषण अग्रेज़ी म दे रहा था। साथ मे एक पतली सी छोटी उम्र की लडकी, जिसने आख पर बिना डण्डी के चश्मा चढा रखा था, उसके वाक्या का फ़ौरन रूसी भाषा मे अनुवाद करती जाती थी। अनुवाद अच्छा था।

वह कह रहा था कि हमने घोर पाप किये हैं, और उनकी हम बडी सज़ा मिलेगी। कोई छुटकारा नही। इस आने वाली सज़ा के बारे मे सोच कर जीना असभव हो जाता है।

"प्यारे भाइयो तथा बहिनो, ज़रा सोचिये तो कि हम कर क्या रहे हैं, कसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं, दयामय भगवान् की आज्ञा का किस भाति उल्लघन कर रहे हैं, यीशु को कितना दुखी कर रहे हैं। और हम यह समझे बिना नही रह सकते कि हम क्षमा के अधिकारी नही हैं, हमारे लिए कोई छुटकारा नही, कोई मुक्ति नही। हमारा सवनाश अनिवाय है। हम पर भयानक दुर्भाग्य—अनन्त दुर्भाग्य टूटेगा," वह कापती हुई, रोनी आवाज मे कह रहा था। "भाइयो, हम कैसे बच सकते हैं? इस भयानक आग से हम कैसे बच सकते हैं जो किसी के भी बुझाये बुझ

उसने अपनी वर्दी की इज्जत की रक्षा के लिए द्वन्द्व युद्ध लडा था। तब भी उस अफसर के प्रति दयावान थे क्योकि उसने अपनी वर्दी की इज्जत के लिए द्वद्व युद्ध लडा था। केवल काउटेस येकातेरीना इवानोव्ना ही इसका विरोध कर रही थी—

"पहले शराब पीते रहते हैं फिर भोले भाले युवको को मार डालते हैं। ऐसे लोगो को मैं किसी सूरत मे भी माफ नही करू," उसने कहा।

"अब यह बात मेरी समझ मे नही आ सकती " काउट बोला।

"मेरी बात तो तुम्हारी समझ मे कभी आ ही नही सकती। यह तो मैं जानती हू," काउटेस कहने लगी, फिर नेख्लूदोव की ओर घूम कर बोली, "सब को मेरी बात समझ आ जाती है, लेकिन मेरे पति को समझ नही आती। मुझे मा के साथ दिली हमदर्दी है, और मैं नही चाहती कि हत्यारा पहले तो कत्ल करे और फिर उसे कुछ कहा भी न जाय।"

इस पर उनका बेटा जो अब तक चुप बैठा था, हत्यारे का पक्ष ले कर बडी गुस्ताखी से मा का विरोध करने लगा। कहने लगा कि हत्यारे के लिए और कोई चारा ही न था, अगर वह लडता नही तो उसके साथी अफसर उसकी लानत मलामत करते और उसे रेजिमेट मे से निकाल देते। नेख्लदोव कान लगा कर वार्तालाप सुन रहा था लेकिन स्वय उसमे भाग नही ले रहा था। वह खुद फौज मे अफसर रह चुका था, इसलिए यह चार्स्की के तर्क को समझता था, हालाकि उसके साथ सहमत नहीं था। साथ ही उसे रह रह कर ख्याल आ रहा था कि इस अफसर के भाग्य से उस युवक का भाग्य कितना पृथक् है जिसे उसने जेल मे बन्द देखा था। उस पर भी यही इलजाम था कि उसने किसी आदमी से लडाई की थी और उसे मार डाला था। उसे कडी मशक्कत की सजा दी गई थी। दोनों ने शराब के नशे मे हत्या की थी। पर उस किसान को, जिसने आवेश मे आ कर आदमी को मार डाला था, अब बीवी-बच्चो से अलग कर के पावो म बेडिया पहना कर, और सिर मूड कर कडी मशक्कत करने साइबेरिया भेजा जा रहा है। और अफसर गार्ड-हाउस म एक सजे-सजाये कमरे म रखा गया है, उसे बढिया भोजन और शराब मिलती है, किताबें पढता है और दो-एक दिन मे उसे छोड भी दिया जायगा, ताकि वह फिर उसी तरह रह सके जैसे पहले रहा करता था। इस घटना की बदौलत लोगो की नजरो मे यह और भी रोचक व्यक्ति होगा।

जो विचार नेख्लूदोव के मन मे उठ रहे थे, उसने कह डाले। पहले तो ऐसा जान पडा जैसे उसकी मौसी येकातेरीना इवानाव्ना उससे सहमत है। पर फिर वह भी और लोगो की तरह बिल्कुल चुप हो गई, और नेख्लूदोव को भास होने लगा जैसे उसने कोई अनुचित बात कह दी हो।

शाम के समय, भोजन के फौरन् ही बाद, लोग कीज़ेवनेर का भाषण सुनने आने लगे। नाचने वाले कमरे मे ऊची पीठ वाली नक्काशीदार कुर्सिया लाइनो की शक्ल मे जोड दी गई थी जैसा कि किसी मीटिंग के समय किया जाता है। एक ओर, एक छोटे से मेज पर वक्ता के लिए पानी का जग रखा गया था, और उसके साथ ही एक आराम कुर्सी रख दी गई थी।

बडी बडी शानदार गाडिया फाटक पर खडी थी। कमरे की सजधज चकाचौंध करती थी। स्त्रिया रेशमी और मखमली कपडे पहने गोटे किनारी से सजी, सिर पर मसनूई बाल लगाये, बदन को गदराया दिखाने के लिए जगह जगह कपडो के अन्दर गद्दिया लगाये और नाजुक कमर का कस कर बाधे बैठी थी। उनके साथ आये पुरुष वर्दियो मे या शाम के कपडो मे लैस थे। इनके अतिरिक्त आधी दजन के करीब साधारण लोग भी थे दो घर के नौकर, एक दूकानदार, एक चोबदार और एक कोचवान।

कीज़ेवनेर हट्टा-कट्टा, पके बालो वाला आदमी था। वह अपना भाषण अग्रेज़ी मे दे रहा था। साथ मे एक पतली सी छोटी उम्र की लडकी, जिसने आख पर बिना डण्डी के चश्मा चढा रखा था, उसके वाक्यो का फौरन् रूसी भाषा मे अनुवाद करती जाती थी। अनुवाद अच्छा था।

वह कह रहा था कि हमने घोर पाप किये हैं, और उनकी हमे कडी सज़ा मिलेगी। कोई छुटकारा नही। इस आने वाली सज़ा के बारे मे सोच कर जीना असभव हो जाता है।

"प्यारे भाइयो तथा बहिनो, ज़रा सोचिये तो कि हम कर क्या रहे हैं, कैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं, दयामय भगवान् की आज्ञा का किस भाति उल्लघन कर रहे हैं, यीसु को कितना दुखी कर रहे हैं। और हम यह समझे बिना नही रह सकते कि हम क्षमा के अधिकारी नही हैं, हमारे लिए कोई छुटकारा नही, कोई मुक्ति नहीं। हमारा सर्वनाश अनिवार्य है। हम पर भयानक दुर्भाग्य—अनन्त दुर्भाग्य टूटेगा," वह कापती हुई, रोनी आवाज़ मे कह रहा था। "भाइयो, हम कैसे बच सकते हैं? इस भयानक आग से हम कैसे बच सकते हैं जो किसी के भी बुझाये बुझ

नही सकती। घर मे से आग के शोले निकल रहे हैं, इसम स भाग क कोई नही निकल सकता।"

कुछ देर तक वह चुप रहा। सचमुच के आसू उसके गालो पर बह र थे। पिछले आठ साल से जब भी वह भाषण करता हुआ इस स्थल प पहुचता तो उसका गला रुधने लगता और नाक मे खुजली सी होने लगतं और अपने आप आखो मे आसू आ जाते। भाषण का यह अश उसे स्व भी बहुत अच्छा लगता था। इन आसुओ से उसका हृदय और भी द्रवि हो उठता। कमरे म लोग सिसकिया लेने लगे। अपने सामने जडाऊ म पर दोनो कोहनिया रखे, हाथो पर सिर रखे, काउटेस येकातेरीना इवानोव झुकी हुई थी, और सिसकियो के कारण उसके मोटे मोटे कधे हिल रहे थे कोचवान भयातुर तथा विस्मयपूर्ण आखो से जमन वक्ता की ओर देख र रहा था। उसे लग रहा था जैसे उसकी गाडी आगे बढ रही है और उस यम से यह आदमी खदेडा जायेगा, मगर यह विदेशी आगे से हटने का नाम नही लेता। सभी लोग काउटेस की सी मुद्रा मे बैठे थे। वोल्फ की ब हाथो मे मुह ढापे घुटनो के बल बैठी थी। दुबली-पतली सी लडकी थी और बडे फैशनेबुल कपडे पहन हुए थी। उसकी शक्ल-सूरत अपने बाप से बहु कुछ मिलती थी।

वक्ता ने सहसा चेहरे पर से हाथ हटाया और मुस्कराने लगा। उसक मुस्कान सच्ची जान पडती थी, ऐसी मुस्कान जिससे नाटक के अभिनेत खुशी का भाव दर्शाते हैं। फिर बडी मधुर, विनम्र आवाज म कहने लगा-

"लेकिन बचाव का उपाय है। और यह उपाय आसान भी है और उल्लासपूर्ण भी। भगवान के इकलौते बेटे ने हमारी खातिर घोर यातनाए सही, हमारी मुक्ति उस खून म है जो उसने बहाया। उसकी यातनाए, उसका खून हमारी रक्षा करेगा। बहिनो तथा भाइयो," उसकी आवाज फिर कापने लगी, "आओ हम उस भगवान् की आराधना करें, जिसने अपना एक मात्र बेटा ससार को उबारने के लिए अर्पण कर दिया। उसका पवित्र रुधिर '

नेरूदोव के मन मे ऐसी घिन उठी कि वह चुपचाप उठ खडा हुआ और दबे पाव बाहर निकल गया और सीधा अपने कमरे म चला गया। उसकी भौंहे तनी थी और लज्जावश उसके मुह स एक आह सी निकल जा रही थी जिसे वह बडी मुश्किल स रोक पाया।

दूसरे दिन प्रातः नेख्लूदोव ने कपड़े पहने और नीचे जाने ही वाला था जब चोबदार ने आ कर उसे एक कार्ड दिया। कार्ड मास्लोवा के वकील की ओर से था। वकील अपने काम पर पीटर्सबर्ग आया था, और उसका ख्याल था कि अगर उसी समय मास्लोवा का मुकद्दमा भी पेश हो गया तो वह सेनेट में उपस्थित हो सकेगा। जब नेख्लूदोव ने तार भेजी तो वह मास्को से चल चुका था। जब नेख्लूदोव से उसे पता चला कि मास्लोवा का मुकद्दमा कब पेश होने वाला है और सेनेट के कौन कौन से सदस्य उस पर विचार करेंगे तो वह मुस्कराने लगा।

"तीनों प्रकार के सेनेटर वहां मौजूद होंगे," वह बोला, "वोल्फ पीटर्सबर्ग का अफसर है, स्कोवोरोद्निकोव कानून का विद्वान, और बे व्यावहारिक दृष्टि से विचार करने वाला, इसी लिए वह सबसे अधिक जानदार आदमी है," वकील ने कहा, "उसी से हमें सबसे ज्यादा उमीद हो सकती है। अब अपील कमेटी के बारे में कुछ बताइये।"

"आज मैं बैरन वोरोब्योव से मिलने जा रहा हूं। कल उनसे भेंट नहीं हो सकी," नेख्लूदोव ने बैरन शब्द पर बल देते हुए कहा। सेनेटर का नाम रूसी था मगर खिताब विदेशी।

"क्या आपको मालूम है उसे 'बैरन' का खिताब कहां से मिला?" नेख्लूदोव की आवाज़ में हल्के से व्यंग का भास पा कर वकील बोला, "उसके दादा को ज़ार पावेल ने यह खिताब इनाम में दिया था। मेरा ख्याल है वह दरबार में चोबदार था। ज़ार उससे किसी बात पर खुश हुआ था इसलिए उसे बैरन बना दिया। 'मेरी यही इच्छा है, इसका विरोध मत करो!' उसने कहा, और लीजिये आज यह 'बैरन' वोरोब्योव भी मौजूद हैं, जो इस खिताब पर इतना अकड़ते हैं। एकदम चालाक धूर्त है यह बूढ़ा!"

"आज मैं उसे मिलने जा रहा हूं," नेख्लूदोव बोला।

'अच्छी बात है, हम एक साथ चलेंगे। मैं अपनी गाड़ी में आपको वहां तक ले चलूंगा।"

वे घर से निकल ही रहे थे जब ड्योढ़ी में एक चोबदार ने नेख्लूदोव को एक चिट्ठी ला कर दी। चिट्ठी मेरियेट की ओर से थी—

"Pour vous faire plaisir, j'ai agi tout a fait contre mes principes, et j ai intercede aupres de mon mari pour votre protegee Il se trouve que cette personne peut etre relachee immediatement Mon mari a ecrit au commandant Venez donc, पर अपना स्वाथ ले कर नही। Je vous attend*
मे०।"

"देखा आपने?" नेख्लूदोव ने वकील से कहा। "कितनी भयानक बात है! सात महीने से एक लडकी को यह कैद-तनहाई मे रखे रहे हैं। और वह बेगुनाह निकली। बस कहलवाने भर की देर थी कि उस रिहा कर दिया गया।"

"यही कुछ हमेशा होता है। चलिये, आप अपने काम म सफल तो हो गये।"

"ठीक है, पर इस सफलता से मेरा मन और भी क्षुब्ध हो उठा है। जरा सोचो तो वहा पर कैसे कैसे काड होते होंगे। सरकार उसे क्यों कैद किये हुए थी?"

"इन बातो पर ज्यादा नही सोचा करते। कोई लाभ नही। तो चलिये, मेरी गाडी मे चलेगे न?" घर से बाहर कदम रखते हुए वकील ने कहा। एक बढिया गाडी जो वकील ने किराये पर ले रखी थी, फाटक के सामने आ कर खडी हो गई। "आप बैरन वोराब्योव से ही मिलने जा रहे हैं न?"

वकील ने गाडीवान से कह दिया कि कहा चलना है। दोनो घोडे बहुत बढिया थे। शीघ्र ही गाडी बैरन के घर के सामने जा पहुचा। बैरन घर पर ही था। बाहर वाले कमरे मे एक वावर्दी युवा अफसर और दो स्त्रिया थी। युवक की गरदन पतली और लम्बी थी और टेंटुआ ऊपर को बढा हुआ था। जब चलता तो बडे हल्के हल्के कदम रखते हुए।

"आपका शुभनाम?" बडे बाकेपन से स्त्रियो के पास से होते हुए आगे बढ कर उसने नेख्लूदोव से पूछा।

---

*आपकी प्रशसा के लिए मैंने अपना नियम तोड कर अपने पति से आपकी सरक्षिता की सिफारिश की है। इनका कहना है कि उसे फौरन रिहा किया जा सकता है। इन्होंने किले के कमाडेंट को लिख दिया है। सो, अब तो आना आपका इतजार करूगी। (फ्रेंच)

नेख्लूदोव ने अपना नाम बताया।

"बैरन आपका जिक्र कर रहे थे। जरा ठहरिये " युवक ने कहा और भीतर के एक दरवाजे में से निकल गया। जब वह लौट कर आया तो उसके साथ साथ एक स्त्री भी रोती हुई आयी जिसने मातमी कपडे पहन रखे थे। अपने आसू छिपाने के लिए वह महिला अपनी पतली सूखी हुई अगुलियों से चेहरे पर की जाली नीचे खीचने की कोशिश कर रही थी। जाली उलझी हुई थी।

"तशरीफ लाइये," युवक ने नेख्लूदोव से कहा और तनिक आगे बढ कर कमरे का दरवाजा खोल कर खडा हो गया।

जब नेख्लूदोव अन्दर पहुचा तो कमरे म एक मझोले कद का गठीला सा आदमी बडी सी मेज के पीछे आराम कुर्सी पर बैठा था। सिर पर छोटे छोटे बाल थ और फ्रॉक-कोट पहने हुए था। चेहरे का भाव बडा हसमुख था। सिर के बाल, मूछें तथा दाढी सब सफेद पड गये थे, लेकिन इसके विपरीत, चेहरा गुलाब की तरह लाल था और आखो स दयालुता टपक रही थी। दोस्तो की तरह मुस्कराते हुए उसने नेख्लूदोव को सम्बोधित किया—

"तुमसे मिल कर बडी ख़ुशी हुई। तुम्हारी मा से मेरी अच्छी जान-पहचान थी, अच्छी मैत्री थी। मैंने तुम्हें उस वक्त देखा था जब तुम छोटे से लडके थे। बाद में भी तुम्ह देखा जब तुम अफसर बन गये थे। आओ बैठो। बताओ क्या काम है हा, हा," जब नेख्लूदोव ने फेदोस्या की कहानी सुनानी शुरू की तो अपने सिर के छोटे छोटे सफेद बाल झटकते हुए कहने लगा, "कहो, कहो, कहते जाओ। ठीक कहते हो कहानी बडी दर्दनाक है। क्या तुमने दरख्वास्त दाखिल कर दी है?"

"दरख्वास्त मैं साथ लेता आया हू," जेब में से दरख्वास्त निकालते हुए उसने कहा, "पर मैंने सोचा आपसे पहले बात कर लू, इस आशा स कि इस तरह मुकद्दमे की ओर विशेष ध्यान दिया जायेगा।"

"तुमने ठीक ही किया। मैं ख़ुद इसकी रिपोर्ट दूगा," अपने हसमुख चेहरे पर अनुकम्पा का भाव लाने का विफल प्रयास करते हुए बैरन ने कहा। "बडी दर्दनाक कहानी है। साफ मालूम होता है कि वह बच्ची थी। पति ने उसके साथ बुरा व्यवहार किया जिससे उसके दिल में घृणा उठी, पर ज्यो ज्यो वक्त गुजरता गया वे एक दूसरे के निकट आने लगे और एक दूसरे से प्यार करने लगे। ठीक है, मैं इसकी रिपोर्ट दूगा।"

"बाउट इवान मिखाइलोविच कह रहे थे कि वे महारानी से इ
बारे में बात करेंगे।"

नेख्लूदोव के मुह से ये शब्द निकलने की देर थी कि बरन के चेहरे
का भाव बदल गया।

"तुम दरख्वास्त दफ्तर मे दे दो, फिर जो मुमकिन होगा किया
जायेगा," उसने कहा।

इसी वक्त युवा अफसर फिर कमरे मे दाखिल हुआ। जाहिर था कि
वह अपनी बाकी चाल दिखाना चाहता है।

"वही महिला फिर आपसे मिलना चाहती है। कहती है थोड़ी सी
बात और कहनी है।"

"भेज दो। ओह, mon cher, कितने लोगों की विपदा हमें देखनी
पड़ती है। काश कि हम सभी के आसू पोछ पाते। जो हमसे बन पड़ता
है, हम करते है।"

महिला अन्दर दाखिल हुई।

"मैं आपसे यह कहना भूल गई थी। मैं चाहती हू कि उस आदमी
बेटी को छोड़ देने की इजाजत नही दी जाय। वह तो तैयार है कि"

"मैंने आपसे पहले ही कह दिया है कि मुझसे जो कुछ भी बन पड़ा
कर दूगा।"

"भगवान् के लिए, बैरन, आप एक मा की रक्षा करेंगे।"

स्त्री ने बैरन का हाथ पकड़ लिया और उसे बार बार चूमने लगी।

"हर मुमकिन कोशिश की जायेगी।"

महिला के चले जाने पर नेख्लूदोव भी रुखसत लेने लगा।

"जो बन पड़ा किया जायेगा। मैं न्यायमन्त्रालय मे इस सम्बन्ध में
बात करूगा। उनका जवाब आने पर जो कुछ भी सभव हुआ जरूर किया
जायेगा।"

कमरे में से निकल कर नेख्लूदोव फिर दफ्तर मे गया। बड़ा ठाटदार
दफ्तर था, और उसमे भी, सेनेट के दफ्तर की तरह बांके अफसर बैठे
थे—साफ-सुथरे, मधुरभाषी, हर बात नियमानुकूल करने वाले। उनके
लिबास से, उनकी बोल-चाल से, शिष्टता टपकती थी।

"इन अफसरों का कोई अन्त नहीं, अनगिनत अफसर हैं। और सभी
कितने मोटे-ताजे हो रहे हैं। कमीजें कितनी साफ-सुथरी पहन रखी हैं,

कैदी दस साल के अन्दर ही अन्दर खत्म हो जाते थे, कुछ पागल हो जाते, कुछ तपेदिक का शिकार हो जाते, कुछ आत्महत्या कर लेते-भूखे रह कर, काच के टुकडो से अपनी नाडिया काट कर या अपने को आग लगा कर।

बूढा जनरल सब जानता था। ये बाते उसकी आखो के सामने घटती थी। पर इनका उसकी अन्तरात्मा पर कोई असर नही होता था। वह इन्हे उतना ही महत्व देता था जितना कि दुघटनाओ को जो आधी-तूफान या बाढ आने पर घट जाती हैं। "ऊपर से" ज़ार के नाम से जो नियम बन कर आते थे, वह उनका पालन करता था, और उन्ही के फलस्वरूप ये घटनाए हो जाती थी। इन नियमो का पालन करना अनिवाय था, इसलिए उनके पालन के परिणामस्वरूप होने वाली घटनाओ पर विचार करना व्यथ था। बूढा जनरल इसे एक सैनिक का देशभक्तिपूण कतव्य समझता था कि वह इन बातो के बारे मे सोचे तक नही, क्योकि बहुत सोचने से उसके सकल्प मे शिथिलता आ सकती थी जिससे वह अपनी जिम्मेवारिया ठीक तरह से नही निभा पायेगा।

हफ्ते मे एक दिन बूढा जनरल कैदियो की कोठरियो का दौरा करता था। यह भी उसका काम था। उस समय वह कैदियो से पूछता कि अगर कोई फरमाइश करनी हो तो कर सकते हो। कैदी तरह तरह की फरमाइश करते। वह चुपचाप उन्हे सुनता रहता। इस चुप्पी की कोई थाह नहीं पा सकता था। और सब सुन चुकने के बाद वह किसी एक फरमाइश को भी पूरा नही करता था। कारण, सभी फरमाइशें नियमो की दृष्टि से असगत होती थी।

नेख्लूदोव गाडी मे बूढे जनरल के मकान पर जा पहुचा। ऐन उसी वक्त मीनार पर के घटाघर से घटियो की सुरीली धुन बजी-"भगवान्, तेरी महिमा अपार है!" और उसके बाद घडी ने दो बजाये। घण्टियों की यह धुन सुन कर नेख्लूदोव को दिसम्बरवादियो* के सस्मरण याद हो

*दिसम्बरवादी-अभिजात वग के रूसी क्रातिकारी, उन्होंने सामतवादी और स्वेच्छाचारी शासन का विरोध किया। १४ दिसम्बर, १८२५ को उन्होंने सशस्त्र विद्रोह छेड दिया।

आये जो उसने किसी जमाने मे पढ थे। उनमे लिखा था कि जिन लोगो को उम्र भर कैद भोगनी हो, उनके दिल मे किस भाति एक एक घण्टे के बाद बजने वाली यह मधुर धुन बार बार गूजती है।

इस समय बूढा जनरल अपनी बैठक मे एक जडाऊ मेज के सामने बैठा था। कमरे मे अन्धेरा किया हुआ था। मेज पर एक कागज के ऊपर एक चाय की तश्तरी रखी थी। कमरे मे उसके साथ एक युवा कलाकार भी था जो जनरल के नीचे काम करने वाले एक अफसर का छोटा भाई था। कलाकार की पतली, नम, दुबल उगलिया बूढे जनरल की कक्श, झुरियां भरी, जोडों पर मस्ल पड गयी उगलिया मे गुथी हुई थी और ये जुडे हुए हाथ तश्तरी को लिये हुए झटको के साथ कागज पर चल रहे थे, जिस पर वर्ण-माला के सभी अक्षर लिखे थे। तश्तरी जनरल के प्रश्न के उत्तर मे बता रही थी कि मृत्यु के बाद आत्माए किस भाति एक दूसरी को पहचानती हैं।

एक अर्दली बाहर खडा चोबदार का काम कर रहा था। उसके हाथ जिस समय नेख्लदोव ने अपना कार्ड अन्दर भेजा उस समय तश्तरी के माध्यम से जोन ऑफ आर्क की आत्मा बोल रही थी। एक एक अक्षर जोड कर जोन ऑफ आर्क की आत्मा ने ये शब्द बना डाले थे—"उनके पहचानने का माध्यम " और ये शब्द बाकाइदा नोट कर लिये गये थे। जब अर्दली अन्दर आया उस समय तश्तरी "हो" और "गी" पर आ कर अटक गई थी, और इसके बाद कभी एक तरफ को और कभी दूसरी तरफ को हिचकोले खाने लगी थी। इन हिचकोलों का कारण यह था कि जनरल चाहता था कि तश्तरी "आ" की ओर मुडे, कि जोन ऑफ आर्क को यह कहना चाहिए कि आत्माओं के पहचानने का माध्यम होगी आन्तरिक शुद्धता, जो वे लौकिक जीवन के कलुष को धो कर प्राप्त करेंगी, या ऐसा ही कुछ। परन्तु कलाकार का यह मत नही था। वह चाहता था कि अगला अक्षर "ज्यो" हो, अर्थात आत्माए "ज्योति" द्वारा एक दूसरी को पहचानेंगी जो उनके अलौकिक प्रतिरूपों से फूट रही होगी। जनरल की सफेद, घनी भौहे चढी हुई थीं, और वह एकटक तश्तरी पर रखे हाथों की ओर देख रहा था। उसका ख्याल था कि तश्तरी अपने आप चल रही है, पर वास्तव मे वह उसे "आ" की ओर खीच रहा था। दुबला-पतला कलाकार, जिसने अपने पतले पतले बालों को

थानों के पीछे यघी थर रखा था, अपनी कान्तिहीन नीली आखा से कभ वे एक अधेरे कोने की ओर देखे जा रहा था, और तश्तरी को "ज्यो" अक्षर की ओर खीचे जा रहा था। उत्तेजना मे उसके हाथ फडफडा रहे थे।

अर्दली के या वीच मे आ टपकने पर जनरल ने मुह बनाया, लेकिन क्षण भर बाद उसके हाथ से काड ले लिया। फिर चश्मा लगा, बडबडाते हुए उठ खडा हुआ। उसकी पीठ मे दद था, फिर भी वह सीधा-सतर खडा हो गया, और अपनी ठिठुरती अगुलियो को एक दूसरी के साथ रगडने लगा।

"उन्ह पढने वाले कमरे मे ले चलो।"

"हुजूर की आज्ञा हो तो मैं अकेले ही इस सन्देश को प्राप्त कर लू" कलाकार ने कहा, "मुझे भास हो रहा है कि आत्मा उतर रही है।"

"अच्छी बात है, अकेले ही प्राप्त कर लो," जनरल ने दृढता से सख्ती भरी आवाज मे कहा, और वडे वडे, नपे-तुले कदम रखते हुए, चुस्ती से पढने वाले कमरे की ओर चला गया।

"आपसे मिल कर बडी खुशी हुई," जनरल ने नेख्लूदोव से कहा, और मेज़ की बगल मे रखी आराम-कुर्सी की ओर बटने का इशारा किया। जनरल के शब्द तो मैत्रीपूण थे लेकिन आवाज रूखी थी। "पीटसबग में आये बहुत दिन हो गये?"

नेख्लूदोव ने जवाब दिया कि नही, अभी अभी आया हू।

"आपकी मा, प्रिसेस, कैसी हैं?"

"मा का तो देहान्त हो चुका है।"

"क्षमा करना। मुझे बडा अफसोस है। मेरे बेटे ने मुझे बताया था कि वह आपसे मिला था।"

जनरल का बेटा भी नौकरी मे बाप की ही तरह आगे बढ़ता जा रहा था। फौजी अकादमी मे से निकलने के बाद वह अब गुप्त विभाग मे काम करता था, और उसे अपने काम पर बडा गव था। सरकारी गुप्तचर उसी के अधीन काम करते थे।

"मैं और आपके पिता एक साथ फौज म रहे। हमारी बडी गाढी दोस्ती थी, हम कॉमरेड थे। और आप क्या नौकरी म हैं?"

"जी नही।"

जनरल ने असम्मति प्रकट करते हुए अपना सिर एक तरफ को झुका दिया।

"मुझे आपसे एक दरख्वास्त करनी है।"

"बड़ी खुशी से, कहिये। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

"यदि मेरी दरख्वास्त नामुनासिब हो तो क्षमा कीजियेगा। मैं मजबूर हो कर आपके पास आया हूँ।"

"कहिये क्या है?"

"किले में एक गुर्केविच कैद है। उसकी मां चाहती है कि उसे बेटे से मिलने की इजाजत मिल जाय। और नहीं तो कम से कम उसे कुछ किताबें भेजने की इजाजत मिल जाय।"

नेख्लूदोव की प्रार्थना पर जनरल ने न तो सन्तोष प्रकट किया न असन्तोष ही। सिर एक ओर को टेढ़ा कर के उसने आंखें बन्द कर ली, मानो उस पर विचार कर रहा हो। लेकिन वास्तव में वह किसी बात पर भी विचार नहीं कर रहा था। न ही उसे नेख्लूदोव की दरख्वास्त में कोई दिलचस्पी थी। वह भली भांति जानता था कि जवाब वही होगा जिसकी कानून इजाजत देता है। वह तो केवल अपने दिमाग को आराम दे रहा था और कुछ भी नहीं सोच रहा था।

"देखिये," वह आखिर बोला, "यह मेरे बस की बात नहीं है। मुलाकातों के बारे में स्वयं जार द्वारा अनुमोदित एक नियम है, और जिस बात की उसमें इजाजत है, उसी की इजाजत मिल सकती है। जहां तक किताबों का सवाल है, हमारे पास पुस्तकालय है। जो जो किताबें पढ़ने की इजाजत है, वे मिल सकती हैं।"

"ठीक है, परन्तु वह विज्ञान की किताबें मंगवाना चाहता है। वह पढ़ाई करना चाहता है।"

"उसकी बातों में न आइये," जनरल ने कहा और थोड़ी देर के लिए चुप हो गया। "वह पढ़ाई करना नहीं चाहता। यह केवल बेचैनी है।"

"पर किया क्या जाय? उनका जीवन इतना कड़ा है कि वक्त काटने के लिए कुछ तो करना ही पड़ता है," नेख्लूदोव ने कहा।

"ये लोग हमेशा शिकायत करते रहते हैं," जनरल बोला, "हम उन्हें अच्छी तरह जानते हैं।" वह बंदियों के बारे में इस तरह बात कर

रहा था जैसे वे किसी खास, बहुत बुरी जाति के लोग हों। "जो आराम उन्हें यहां पर है वह शायद ही किसी दूसरे जेलखाने में मिले," जनरल कहता गया।

और अपनी सफाई सी देते हुए वह उन सुविधाओं को गिनाने लगा जो कैदियों को प्राप्त थीं, मानो इस संस्था का उद्देश्य कैदियों को आरामदेह घर प्रदान कर देना हो।

"किसी जमाने में जरूर वे तकलीफ में थे, लेकिन अब तो उनका बड़ी अच्छी तरह से ख्याल रखा जाता है," वह कह रहा था। "खाने के लिए उन्हें हमेशा तीन व्यंजन मिलते हैं, और उनमें से एक जरूर गोश्त होता है, चाहे कटलेट के रूप में हो या रिस्सोल के रूप में। इतवार के दिन चार व्यंजन दिये जाते हैं, एक मीठी चीज भी उन्हें मिलती है। भगवान करे हर रूसी को ऐसा खाना नसीब हो जो इन कैदियों को मिलता है।"

वृद्ध पुरुष जब भी अपने प्रिय विषय पर बातें करने लगते हैं तो उनके लिए रुकना कठिन हो जाता है। जनरल भी, एक के बाद एक, तरह तरह के सबूत दे रहा था, यह सिद्ध करने के लिए कि क़ैदियों की मांगें कितनी अनुचित है और वे कितने कृतघ्न लोग हैं। ये सबूत वह पहले भी कई बार दे चुका था।

"उन्हें धार्मिक पुस्तकें तथा पुराने रसाले दिये जाते हैं। हमने मुनासिब पुस्तकालय खोल रखा है। लेकिन वे लोग बहुत कम पढ़ते हैं। शुरू शुरू में तो वे बड़ी दिलचस्पी दिखाते हैं, लेकिन बाद में नई किताबें ज्यों की त्यों पड़ी रहती है, उनके आधे पन्ने काटे तक नहीं जाते। और पुरानी किताबों के पन्ने कोई उलटता ही नहीं। हमने यह आजमा कर देख लिया है," बूढ़े जनरल ने कहा, और उसके चेहरे का भाव कुछ बदला, मानो हल्की सी मुस्कान आई हो। "किताबों में हम जान बूझ कर कागज की छोटी छोटी निशानियां रख देते थे। और वे ज्यों की त्यों वहीं पड़ी रहतीं। लिखने की भी कोई मनाही नहीं है," वह कहता गया, "वहां एक स्लेट रख दी गई है और साथ में स्लेट-पेंसिल भी। मनबहलाव के लिए जो भर कर लिख सकते हैं। जब स्लेट भर जाय तो उसे पोंछ कर फिर लिख सकते हैं। मगर उन्हें लिखने का कोई शौक नहीं है। जल्दी ही वे शांत हो जाते हैं। शुरू शुरू में वे बेचैन होते हैं, लेकिन बाद में

तो वे मोटे होने लगते हैं और बड़े चुपचाप रहते हैं।" इस तरह की बातें जनरल कहे जा रहा था। वह सोच तक न सकता था कि उसके शब्दों का कितना भयानक अर्थ है।

नेख्लूदोव उसकी क्षीण फटी हुई आवाज़ को सुन रहा था, उसके कठोर पड़ गये अवयवों, सफ़ेद भौंहों के नीचे कान्तिहीन आंखों, तथा बूढ़े, सफाचट, लटकते गालों को जिन्हें उसकी फौजी वर्दी का कॉलर ऊपर उठाये हुए था, देखे जा रहा था। उसकी छाती पर सफ़ेद क्रॉस लटक रहा था जिस पर उसे बेहद गर्व था, मुख्यतया इस कारण कि इसे प्राप्त करने के लिए उसने बड़े विस्तृत पैमाने पर कत्लेआम किया था और जुल्म ढाये थे। नेख्लूदोव समझ गया था कि बूढ़े की बातों का जवाब देना या उसे यह बताना कि उसके शब्दों के पीछे कैसे भयानक अर्थ छिपे हैं, सर्वथा निरर्थक था। उसने फिर एक बार प्रयास किया और कैदी शूस्तोवा के बारे में पूछा जिसकी रिहाई का हुक्म जारी हो चुका था, जैसा कि उसे उसी दिन प्रातः मालूम हुआ था।

"शूस्तोवा—शूस्तोवा? कैदी इतने ज्यादा हैं कि मुझे हरेक का नाम कैसे याद रह सकता है?" उसने कहा मानो उनकी संख्या के लिए उनकी भर्त्सना कर रहा हो। उसने घण्टी बजायी और अपने सेक्रेटरी को बुलवा भेजा। जितनी देर सेक्रेटरी नहीं आया, वह नेख्लूदोव को समझाता रहा कि उसे सरकारी नौकरी करनी चाहिए, क्योंकि ईमानदार और कुलीन लोगों की (जिनमें वह अपने को भी शामिल करता था) ज़ार को, तथा देश को बहुत ज़रूरत है। ज़ाहिर था कि अन्तिम शब्द उसने केवल वाक्य का सुगठित रूप देने के लिए ही कहे थे।

"मैं बूढ़ा हो चला हूं, फिर भी यथाशक्ति सेवा किये जा रहा हूं।"

सेक्रेटरी आया। क्षीण, दुर्बल चेहरा, आंखों में बुद्धिमत्ता तथा बेचैनी झलकती थी। उसने रिपोर्ट दी कि शूस्तोवा किसी अजीब सी जगह पर बन्द है, और उसके बारे में अभी तक कोई आर्डर नहीं मिला।

"जिस दिन आर्डर मिला, हम उसी दिन उसे रिहा कर देंगे। हम उन्हें रखना नहीं चाहते। उन्हें अपने पास रखने की हमें बहुत चाह नहीं है," फिर एक बार चेहरे पर मीठी मुस्कान लाने की चेष्टा करते हुए जनरल ने कहा। लेकिन इस मुस्कराहट से उसका वृद्ध चेहरा और भी कुरूप हो उठा।

नेख्लूदोव उठ खडा हुआ। उसके मन मे इस भयानक वृद्ध पुरुष के प्रति घृणा और अनुकम्पा की मिश्रित सी भावना पैदा हो गई थी। लेकिन वह इस कोशिश मे था कि उसे जबान पर न लाये। दूसरी तरफ वृद्ध जनरल यह महसूस कर रहा था कि नेख्लूदोव के साथ बहुत रुखाई से पेश नही आना चाहिए। जाहिर है कि यह गुमराह, लापरवाह युवक है, लेकिन आखिर उसके साथी का बेटा है, इसलिए उसे सीधा रास्ता दिखाये बिना नही जाने देना चाहिए।

"अच्छा, तो चलते हो? मेरे कहे का बुरा नही मानना। मेरे दिल मे तुम्हारे लिए प्यार है इसी लिए यह दिया। इन लोगो का संग नहीं करो। इनमे कोई भी निर्दोष नही है। सबके सब बहुत गिरे हुए हैं। हम उन्हें खूब जानते हैं," उसने इस लहजे मे कहा जिसमे शक की कोई गुंजाइश ही न थी।

और उसके मन मे कोई संशय नही था। इसलिए नही कि यह बात सच थी, वरन इसलिए, कि यदि यह सच न होती, तो उसे मानना पड़ता कि वह कोई वीर नायक नही है जो अपने उत्कृष्ट जीवन के अन्तिम दिन व्यतीत कर रहा है, बल्कि एक महानीच आदमी है जिसने अपना ईमान बेच डाला है, और इस बुढापे मे भी इसे बेचे जा रहा है।

"सबसे अच्छी बात तो यह है कि तुम सरकारी नौकरी कर लो," वह कहता गया। "ज़ार को ईमानदार लोगो की जरूरत है—और देश को भी" उसने जोडा। "अगर मैं और अन्य लोग भी तुम्हारी तरह सेवा करना छोड दे तो क्या होगा? पीछे रह कौन जायेगा? यहा हम बैठे सरकार के प्रबंध की आलोचना कर रहे हैं, लेकिन सरकार की कोई मदद नही करना चाहते।"

नेख्लूदोव ने एक भरपूर ठण्डी सास ली, और झुक कर नमस्कार किया, फिर उसके बडे से, कर्कश हाथ से हाथ मिलाया, जो जनरल ने बडी कृपालुता से आगे बढा दिया था, और कमरे मे से बाहर निकल आया।

जनरल ने भर्त्सना मे सिर हिलाया, और पीठ मलते हुए बैठक मे वापस लौट गया जहा कलाकार उसका इन्तजार कर रहा था। उसने जोन ऑफ आर्क की आत्मा का पूरा उत्तर लिख दिया था। जनरल ने

चश्मा लगाया और पढने लगा। लिखा था–"उनके पहचानने का माध्यम होगी वह ज्योति जो उनके अलौकिक प्रतिरूपो से फूट रही होगी।"

"ओह्," जनरल ने समर्थन की आवाज़ मे कहा और आखे बन्द कर ली। "लेकिन यदि सबकी ज्योति एक जैसी हुई तो वे एक दूसरी को कैसे पहचान पायेंगी?" उसने पूछा और फिर तश्तरी पर कलाकार की अगुलियो मे अपनी अगुलिया गूथ कर बैठ गया।

गाडीवान ने गाडी चलाई और नेख्लूदोव को फाटक मे से बाहर ले आया।

"यहा पर बहुत ऊब उठती थी, हुजूर," नेख्लूदोव की ओर घूम कर वह कहने लगा। "मेरा तो जी चाहता था कि आपका इन्तज़ार किये बिना यहा से चल दू।"

"हा, जरूर ऊब उठती है," नेख्लूदोव ने सहमति प्रकट की और एक गहरी सास ली। आकाश मे भूरे रग के बादल उड रहे थे। नेवा नदी की सतह पर जहाज और किश्तिया चल रही थी जिनसे पानी मे उठती हुई हल्की हल्की लहरें सूरज की रोशनी में झिलमिला रही थी। इनकी ओर देखते हुए नेख्लूदोव के मन को कुछ चैन मिला।

२०

दूसरे दिन सेनेट मे मास्लोवा के मुकद्दमे की सुनाई थी। सेनेट भवन के शानदार फाटक के सामने बहुत सी गाडिया खडी थी। यही पर नेख्लूदोव और वकील एक दूसरे से मिले, और एक साथ सीढिया चढते हुए पहली मजिल पर पहुचे। इस भवन की सीढ़िया इतनी बढिया थी कि देखते आखें नही थकती थी। फानारिन इस घर के कोने कोने से वाकिफ था। ऊपर पहुच कर वे बाईं ओर घूम गये और एक दरवाज़े मे से अन्दर दाखिल हुए जिसके ऊपर बडे बडे अक्षरो मे वह तारीख लिखी थी जिस दिन से आज्ञा-प्रधान लागू हुआ था।

एक तग से कमरे मे फानारिन ने अपना ओवरकोट उतारा। वहा बडे कर्मचारी से उसे पता चला कि सभी सेनेटर पहुच चुके हैं। आखिरी सेनेटर को आये कुछ ही मिनट हुए थे। फानारिन ने अपना दुमदार कोट

पहन रखा था और सफेद कमीज़ पर सफेद नकटाई लगाये हुए था। उसके होठो पर आत्मविश्वास की मुस्कान खेल रही थी। वहा से निकल कर वह साथ वाले कमरे मे चला गया जहा दायें हाथ एक बडी सी अलमारी और एक मेज रखी थी और बायी ओर एक घुमावदार सीढी ऊपर को चली गयी थी। एक बाका सा सरकारी अफसर, बगल म बस्ता दबाये, सीढी पर से नीचे उतर रहा था। इस कमरे मे एक वयोवृद्ध पुरुष खडा था, जिसके सिर पर लम्बे लम्बे सफेद बाल थे। एक छोटा सा कोट और भूरे रग की पतलून पहने हुए, वह सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। उसके पास दो नौकर बडे अदब से खडे थे।

वयोवृद्ध पुरुष उस अलमारी के अन्दर चला गया और अन्दर से दरवाज़ा बद कर लिया।

फानारिन को एक साथी-वकील नजर आ गया, जिसने उसी की तरह सफेद नकटाई और ड्रेस-कोट पहन रखे थे और फौरन उसके साथ बडी गमजोशी से बाते करने लगा। इस बीच नेख्लूदोव कमरे म बैठे लोगो की जाच करने लगा। वहा पर लगभग पन्द्रह व्यक्ति बाहर के थे, जिनमें से दो स्त्रिया थी—एक तो छोटी उम्र की थी जिसने कमानीदार चश्मा लगा रखा था और दूसरी स्त्री बडी उम्र की थी, और उसके बाल सफेद हो रहे थे।

उस दिन किसी अखबार म छपे एक लेख के सबध म मानहानि के मुकद्दमे की सुनाई थी, जिसे सुनने के लिए बाहर से लोग अधिक सख्या मे आये हुए थे। इनमे से अधिकाश पत्रकारिता के धन्धे से सम्बन्ध रखते थे।

अदालत का पेशकार हाथ मे एक कागज उठाये फानारिन के पास आया। पेशकार लाल लाल गालो वाला एक सुन्दर आदमी था और बडी बढिया वर्दी पहने हुए था। फानारिन के पास पहुच कर उसने उसका नाम पूछा और यह सुन कर कि वह मास्लोवा के मुकद्दमे के सम्बन्ध मे आया है, कागज पर कुछ नोट कर के वहा से चला गया। इतने मे अलमारी का दरवाजा खुला और लम्बे लम्बे सफेद बालो वाले वृद्ध बाहर निकल आया। अब वह छोटा कोट पहने हुए नही था। उसने इसके पर उसने दूसरी पोशाक पहन रखी थी जिस पर सुनहरी गोटा लगा था और छाती पर धातु के चमकते पतरे लगे थे। इस लिबास म वह पक्षी सा लगता था।

यह अजीब सी पोशाक पहन कर वृद्ध को स्वय झेंप होने लगी थी। अपनी आम रफ्तार से तेज़ चलता हुआ वह जल्दी जल्दी सामने के दरवाजे म से बाहर निकल गया।

"यह वे था। उसकी बडी इज्जत है," फानारिन ने नेख्लूदोव से कहा, फिर उसे अपने सहकर्मी से मिलाया और उस मुकद्दमे की चर्चा करने लगा जो अभी पेश होने जा रहा था। कहने लगा कि वह बडा दिलचस्प मुकद्दमा है।

कुछ ही देर बाद मुकद्दमे की सुनवाई शुरू हो गई, और नेख्लूदोव, अन्य लोगो के साथ बाईं ओर अदालत के कमरे मे चला गया। अन्दर जा कर फानारिन समेत, सभी एक डण्डहरे के पीछे बैठ गये। केवल पीटसबर्ग का वकील डण्डहरे के सामने एक मेज़ पर जा बैठा।

आकार मे सेनेट का अदालती कमरा इतना बडा नही था जितना कि ज़िला-कचहरी। इसकी साज-सज्जा भी अधिक साधारण थी। हा, सेनेट के सामने रखे मेज़ का कपडा हरे रग का होने के बजाय गुलाबी मखमल का था और उसके किनारो पर सुनहरी गोटा लगा था। पर यहा पर भी वही चीज़ें रखी थी जो सभी न्यायालयो मे रखी रहती हैं बडा शीशा, देव प्रतिमा तथा ज़ार की तसवीर। उसी तरह गभीर आवाज़ म पेशकार ने पुकारा—"जज साहिबान तशरीफ ला रहे हैं।" उसी तरह सभी लोग खडे हो गये। वर्दी पहने सेनेटरो ने उसी तरह प्रवेश किया और ऊची पीठ वाली कुर्सियो पर बैठ कर, स्वाभाविक लगने की कोशिश मे मेज़ पर झुक गये।

वहा पर चार सेनेटर बैठे थे—निकीतिन, जो प्रधान की कुर्सी पर बैठा था, सफाचट, पतले चेहरे और कठोर आखो वाला आदमी था। दूसरा वोल्फ था। उसके होट एक विचित्र अर्थपूर्ण ढग से भिचे हुए थे। अपने छोटे छोटे सफेद हाथो से वह मुकद्दमो के कागजात के पन्ने उलट रहा था। तीसरा स्कोवोरोदनिकोव था, मोटा, बोझल सा व्यक्ति जिसके मुह पर चेचक के दाग थे। यह कानून का बडा विद्वान था। और चौथा बे था, लम्बे लम्बे सफेद बालो वाला आदमी जो सबसे आखिर मे पहुचा था।

सेनेटरो के साथ ही मुख्य सेक्रेटरी और सरकारी वकील भी अन्दर आ गया था। सरकारी वकील दुबला-पतला, मझोले कद का युवक था,

जिसने दाढी मूछ मूड रखी थी। चेहरा सावला और आखें स्याह तथा उदास सी थी। नेख्लूदोव ने उसे देखते ही पहचान लिया, हालाकि वह बडी अजीब सी वर्दी पहने हुए था और नेख्लूदोव को उससे मिले छ साल का अर्सा हो चुका था। पढाई के जमाने मे वह नेख्लूदोव के सब से गहरे मित्रो मे से था।

"क्या सरकारी वकील का नाम सेलेनिन है?" नेख्लूदोव ने वकील से पूछा।

"हा, क्यो, क्या बात है?"

"मैं उसे बहुत अच्छी तरह जानता हू। बहुत ही भला आदमी है।"

"अपने काम मे भी अच्छा है। इधर-उधर की बाते नही करता, मतलब की बात करता है। आपको इस आदमी से मिलना चाहिए था।"

"कोई डर नही, वह अपने जमीर के खिलाफ कोई काम नही करेगा, बडा ईमानदार आदमी है," नेख्लूदोव ने कहा। उसे सेलेनिन के साथ अपने घनिष्ठ सम्बध तथा मैत्री याद आ रही थी। और उसके व्यक्तित्व के विशेष गुण याद आ रहे थे। सेलेनिन बडे सच्चे दिल का, ईमानदार तथा शिष्ट युवक हुआ करता था।

"ठीक है, अब तो समय भी नही है," फानारिन ने फुसफुसा कर कहा। मुकद्दमा शुरू हो गया था और उसकी रिपोर्ट पढी जाने लगी थी। फानारिन का ध्यान रिपोर्ट की तरफ था।

मुकद्दमे मे अपील-न्यायालय के एक फैसले के विरुद्ध अपील की गई थी जिसमे उसने ज़िला-कचहरी के निणय की पुष्टि की थी।

नेख्लदोव भी ध्यान से सुनने और मामले को समझने की कोशिश करने लगा। लेकिन यहा पर भी उसे वही कठिनाई पेश आ रही थी जो ज़िला-कचहरी मे पेश आई थी। यहा पर भी असल बात को छोड कर इधर-उधर की गौण बातो पर विचार किया जा रहा था। मुकद्दमा एक अखबार के बारे मे था जिसमे एक लेख छपा था। अखबार मे किसी ज्वाइंट स्टॉक कम्पनी के डायरेक्टर की पोल खोली गयी थी जिसने कोई प्रपच रचा था। जान पडता था कि इस मुकद्दमे मे एक ही बात महत्व की है, यह देखना कि डायरेक्टर अपनी स्थिति का नाजायज फायदा उठा रहा है या नही, और यदि उठा रहा है तो उसे ऐसा करने से रोकना। लेकिन यहा पर और ही बातो पर विचार किया जा रहा था क्या अखबार के

सम्पादक को इस लेख के छापने का कानून की दृष्टि से अधिकार था या नही, और उसे छाप कर उसने कौन सा जुर्म किया है–मिथ्या निन्दा का या दोषारोप का–और कहा तक मिथ्या निन्दा मे दोषारोप का अश शामिल है, अथवा दोषारोप मे मिथ्या निन्दा का। इसके अतिरिक्त तरह तरह के कानूनो तथा फैसलो पर विचार किया जा रहा था जो किसी सार्वजनिक विभाग द्वारा पास किये गये थे लेकिन जो साधारण लोगो की समझ के बाहर थे।

नेख्लदोव की समझ म एक ही बात आई। बावजूद इस बात के कि एक ही दिन पहले वोल्फ बडे जोर से यह कह रहा था कि सेनेट किसी मुकद्दमे की जाच गुण-दोष के आधार पर नही कर सकती, यहा, प्रत्यक्षत इस मकद्दमे मे वह न्यायालय के निर्णय को रद्द करने के हक म था। और सेलेनिन, जो स्वभावत सयम से काम लेता था, यहा अप्रत्याशित रूप से बडे जोश-खरोश से इसके विरुद्ध बोल रहा था। आत्मानुशासी सेलेनिन के इस तरह जोश से बोलने का एक कारण था हालाकि उसे या बोलते देख कर नेख्लदोव हैरान हो रहा था। एक तो उसे मालूम हो गया था कि पैसे के मामले म डायरेक्टर साफ नही है। दूसरे, उसके कानो मे अचानक यह खबर पड गई थी कि कुछ ही दिन पहले इस धोखेबाज के घर मे एक बहुत बडी डिनर पार्टी हुई थी और उसम वोल्फ भी शरीक हुआ था। मुकद्दमे पर अपनी रिपोर्ट देते समय वोल्फ एक एक शब्द तौल तौल कर बोला, लेकिन इसके बावजूद साफ जाहिर हो रहा था कि वह डायरेक्टर का पक्ष ले रहा है। इससे सेलेनिन उत्तेजित हो उठा और बडे गुस्से से जिरह करने लगा। स्पष्टतया, सेलेनिन के भाषण से वोल्फ नाराज हो गया। उसका चेहरा तमतमा उठा, बार बार वह अपनी कुर्सी मे हिलने लगा, चुपचाप बैठे बैठे भी वह इस तरह के इशारे कर रहा था मानो हैरान हो रहा हो, और जब अन्य सेनेटरो के साथ वह उठ कर विचार-कक्ष मे गया तो बडे रोब के साथ और नाराज दिखते हुए।

"आप किस मुकद्दमे के सिलसिले मे यहा आये हैं?" फानारिन को सम्बोधित करते हुए पेशकार ने फिर पूछा।

"मैंने आपको बतला तो दिया है। मास्लोवा के मुकद्दमे के सिलसिले मे।"

"हा, ठीक है। उसकी सुनाई तो आज ही होगी, लेकिन "

"लेकिन क्या?" वकील ने पूछा।

"बात यह है कि सेनेटरो का विचार था कि उस मुकद्दमे पर कोई जिरह नही होगी। इसलिए, इस मौजूदा मुकद्दमे पर अपना निर्णय देने के बाद सेनेटर शायद फिर बाहर नही आयेंगे। लेकिन मैं जा कर उन्हें इत्तला किये देता हूं।"

"क्या मतलब?"

"मैं उन्हे इत्तला किये देता हू। अभी इत्तला किये देता हू।" और पेशकार ने फिर अपने कागज़ पर कुछ लिख लिया।

सेनेटरो का यही इरादा था। वे चाहते थे कि दोषारोप के मुकद्दमे का फैसला सुनायेंगे और उसके बाद विचार-कक्ष मे ही बठे बैठे, चाय सिगरेट पीते हुए बाकी काम–जिसमे मास्लोवा का मुकद्दमा भी शामिल था–निबटा देंगे।

२१

बहस के कमरे मे गोल मेज के इर्दगिर्द सभी सेनेटर बैठ गये। उनके बैठते ही वोल्फ बडी गमजोशी से तर्क पेश करने लगा कि सजा रद्द कर दी जानी चाहिए।

प्रधान चिडचिडे मिजाज का आदमी था। आज तो वह और दिना से भी ज्यादा बदमिज़ाज हो रहा था। अदालत मे सुनवाई के दौरान ही उसने इस केस पर अपनी राय तय कर ली थी और वोल्फ की बातो पर कोई ध्यान न देता हुआ वह अपने विचारो मे खोया बैठा था। उसे एक महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त किया जाना चाहिए था, लेकिन विल्यानोव को नियुक्त कर दिया गया था। इस घटना की चर्चा करते हुए जो शब्द कल उसने अपने सस्मरणो मे लिखे थे, वे अब उसके मन म बार बार घूम रहे थे। बडी मुद्दत से इस पद का उसे इन्तजार रहा था। प्रधान निकीतिन ऐसे पदाधिकारियो के सम्पर्क मे था जो सबसे ऊचे दो दर्जों म रखे गये थे। उसे सच्चे दिल से यह विश्वास था कि उन पदाधिकारियो के बारे मे उसकी राय भावी इतिहासकारो के लिए अमूल्य सामग्री का काम देगी। एक ही दिन पहले उसने एक अध्याय लिखा था जिसम उन

विशेष पदाधिकारियो की जी खोल कर भत्सना की थी और कहा था कि जब रूस के वतमान शासक देश को सवनाश की ओर ले जा रहे थे, उस समय इन पदाधिकारियो ने स्थिति को बचाने की कोई चेष्टा नही की, मतलब कि उसे ऊची तनख्वाह पर नियुक्त नही होने दिया। अब उसका विचार था कि आने वाली पीढियो के लिए यह अध्याय घटनाओ पर एक नयी रोशनी डालेगा।

"हा, ज़रूर," वोल्फ के सवाल के जवाब म, बिना उसका एक भी शब्द सुने, उसने कह दिया।

बे का मुह लटका हुआ था। वह वोल्फ की बात सुन रहा था, लेकिन साथ ही सामने रखे कागज़ पर एक हार बना रहा था। बे पक्का उदारवादी था। इस शताब्दी की सातवी दशाब्दी की उदारवादी परम्पराओ को वह पवित्र मानता था। आम तौर पर वह तटस्थ रहता, लेकिन जब कभी वह तटस्थता की दृढ सीमाओ को लाघता तो उदारवाद की ही दिशा मे। इस मुकद्दमे मे भी उसने ऐसा ही किया। एक तो धोखेबाज़ डायरेक्टर जिसने अपील कर रखी थी बडा दुष्ट आदमी था। इसके अलावा एक पत्रकार पर लिखित दोषारोप के जुर्म मे मुकद्दमा चलाना प्रेस स्वातन्त्र्य को सीमित करना था। इन्ही कारणो से बे की इच्छा थी कि अपील को रद्द कर दिया जाय।

वोल्फ ने अपना तर्क समाप्त किया। इस पर बे ने तसवीर बनाना बन्द कर दिया और बडी उदास और विनम्र आवाज़ मे, बडे स्पष्ट, सरल तथा विश्वासोत्पादक शब्दो मे यह साबित करने लगा कि अपील निराधार है (वह उदास इसलिए था कि उसे इन स्वत सिद्ध वचनो का समझाना पड रहा था)। इसके बाद उसने अपना सिर झुका लिया, जिस पर के बाल सफेद हो चुके थे और फिर से हार की तसवीर बनाने लगा।

स्कोवारोदनिकोव वोल्फ के ऐन सामने बैठा था और अपनी मोटी मोटी अगुलियो से दाढी और मूछो के बाल मुह मे घुसेड रहा था। बे के बोल चुकने पर उसने दाढी के बाल चबाना बन्द कर दिया और ऊची, कर्कश आवाज़ म अपनी राय देने लगा। अपील करने वाला बडा दुष्ट आदमी है, उसने कहा, लेकिन इसके बावजूद मैं उसकी सज़ा मनसूख करने को कहता यदि अपील किसी कानूनी आधार पर खडी होती। लेकिन चूकि कानूनी आधार बिलकुल कोई नही है, इसलिए मैं बे की राय का समथन

करता हूं। वापस के रास्ते में खड़ा प्रस्थान हुए स्कोवोरोदनिकोव मन ही मन खुश था। प्रधान ने स्कोवोरोदनिकोव की राय का समर्थन किया और अपील रद्द कर दी गई।

वोल्फ असन्तुष्ट था, विशेषकर इसलिए कि उसे लग रहा था जैसे रंगे हाथों पकड़ा गया हो, कि पक्षपात का कपट करते हुए लोगों ने देख लिया हो। इसलिए यह दिखाने की कोशिश करते हुए कि उसे इस मामले से कोई सरोकार नहीं उसने मास्लोवा के मुकद्मे की दस्तावेज़ निकाली और उसे पढ़ने में मगन हो गया। इस बीच सेनेटरों ने घण्टी बजाई और चाय लाने का आर्डर दिया। उन दिनों पीटर्सबर्ग में द्वन्द्व युद्ध की चर्चा सबकी ज़बान पर थी। साथ ही एक दूसरा विषय भी लोकप्रिय हो चला था। किसी सरकारी विभाग के अध्यक्ष ने धारा ९९५ के अन्तर्गत कोई जुर्म किया था।

"कितनी गन्दी बात है" बे ने घृणा से कहा।

"वाह, इसमें क्या बुराई है? मैं तुम्हें एक किताब दिखा सकता हूं जिसमें एक जर्मन लेखक ने इस सम्बन्ध में अपनी योजना दे रखी है। उसने बिना लाग-लपेट के यह सुझाव पेश किया है कि पुरुषों के बीच इस प्रकार के सम्बन्ध को जुर्म करार नहीं दिया जाना चाहिए, पुरुषों का पुरुषों के साथ विवाह करने की इजाजत होनी चाहिए," बड़े लोभ से सिगरेट का कश लेते हुए स्कोवोरोदनिकोव ने कहा और जोर जोर से हंसने लगा। सिगरेट तुड़-मुड़ चुका था लेकिन उसने उसे अपनी मोटी मोटी अंगुलियों में, हथेली के नज़दीक, दबा रखा था।

"नामुमकिन है!" बे बोला।

"मैं तुम्हें ला कर दिखा दूंगा," स्कोवोरोदनिकोव ने कहा और किताब का नाम, यहां तक कि उसके प्रकाशन का स्थान और तिथि तक बता दी।

"मैंने सुना है कि उसे साइबेरिया में किसी शहर का गवर्नर बना कर भेज दिया गया है।"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है! लाट पादरी बड़े ठाठ से उसका स्वागत करेगा। बस लाट पादरी भी कोई ऐसा ही आदमी होना चाहिए," स्कोवोरोदनिकोव ने कहा। "मैं एक पादरी की सिफारिश भी कर सकता हूं।" उसने सिगरेट चाय की तश्तरी में फेंक

दिया और फिर मूछों और दाढ़ी के जितने भी बाल ठूसे जा सकते थे, मुह मे ठूस कर उन्हे चबाने लगा।

पेशकार अन्दर आया और बोला कि नेम्लूदाव और वकील मास्लोवा के मकद्दमे की जाच के समय मौजूद होना चाहते है।

"यह मामला भी बडा रामाटिक है," वोल्फ बोला, और जो कुछ उस मास्लोवा और नेम्लूदोव के सम्बन्ध के बारे मे मालूम था वह सुनाया।

थोडी देर तक वे इसकी चर्चा करते रहे। फिर चाय सिगरेट पी चुकने पर वे उठे और अदालत के कमरे मे चले गये, पहले दापाराप के मुकद्दमे का फैसला सुनाया और फिर मास्लोवा की अपील सुनने लगे।

वोल्फ अपनी पतली सी आवाज मे मास्लोवा की अपील पर रिपोर्ट देने लगा। रिपोर्ट पूरी की पूरी थी पर इसमे भी पक्षपात की झलक मिलती थी और साफ जाहिर था कि वोल्फ चाहता है कि सजा मनसूख कर दी जाय।

"क्या तुम्हे कुछ कहना है?" फानारिन को सम्बोधित करते हुए प्रधान ने कहा।

फानारिन उठा और अपनी चौडी सफेद छाती फैला कर, जिरह करने लगा। एक एक नुक्ते को ले कर उसने बडे यथार्थ और प्रभावक ढग से यह साबित किया कि न्यायालय ने छ स्थानो पर कानून का गलत मतलब निकाला है। इसके अतिरिक्त, सक्षेप मे उसने मुकद्दमे के गुण-दोष की भी चर्चा की और कहा कि यह सजा दे कर न्यायालय ने घोर अन्याय किया है। उसका भाषण सक्षिप्त किन्तु युक्तियुक्त था। जिस लहजे मे वह बोला उसमे सेनेटरो के प्रति अनुनय का भाव पाया जाता था, मानो कह रहा हो कि आप कुशाग्र बुद्धि तथा न्याय के पारगत विद्वान है आप मुझसे अधिक इस मामले को देख-समझ सकते हैं, मैं तो यहा जिरह कर के केवल अपना कर्तव्य पूरा कर रहा हू।

फानारिन के भाषण के बाद ऐसा जान पडता था जैसे शक की कोई गुजाइश ही न रह गई हो, कि सेनेट जरूर न्यायालय के निर्णय को रद्द कर देगी। भाषण समाप्त करने के बाद फानारिन ने विजयोल्लास मे मुस्कराते हुए आस पास देखा। उसे देख कर नेख्लूदोव को यकीन हो गया कि मामला जीत लिया। परन्तु जब उसने गर्दन घुमा कर सेनेटरो की ओर देखा तो उसे लगा जैसे फानारिन अकेला ही अपनी विजय पर मुस्करा रहा हो। सेनेटर और सरकारी वकील के चेहरे पर विजय की मुस्कान

नही थी। इसके विपरीत सेनेटर तया सरकारी वकील थके हुए से लग रह थे। उनके चेहरे के भाव से लग रहा था मानो सोच रह हो – "हमन तुम जैसे लोगो के बहुत भाषण सुने है – पर यह सब व्यथ है।" उसके भाषण की समाप्ति पर ऐसा ज्ञान पडा जस उन्होंने चैन की सास ली हो, कि ग्रब ज्यादा देर यहा नही रुकना पडेगा। वकील का भाषण समाप्त होने के फौरन् ही बाद प्रधान न सरकारी वकील को बोलन के लिए कहा। सेलनिन थोडे से शब्दो मे बडी स्पष्टता से न्यायालय के फसल को बरकरार रखने के पक्ष मे बोला। उसने कहा कि फैसला रद्द करन के लिए जितने भी तक पेश किये गये हैं, सभी अपर्याप्त है। इस जिरह के बाद सभी सेनेटर बहस के कमरे मे चले गये। उनके मन अलग अलग थे। वोल्फ इस हक मे था कि अपील मजर की जानी चाहिए। वे न, मामला समझन के बाद, वाल्फ के पक्ष की बडे जोर से हिमायत की, और अपने साथियो के सामने न्यायालय के सारे दश्य का सजीव वणन किया, जिस भाति वह उसे अपनी कल्पना म साफ नजर आ रहा था। निकीतिन ने दूसरा पक्ष लिया, क्योकि सदा ही उसे दृढता और नियमिकता पसन्द थी। अब सारा मामला स्कोवोरोदनिकाव की वोट पर निभर था, और उसने अपना मत अपील को रद्द कर देने के हक न दिया। इसका मुख्य कारण यह था कि नेख्लूदाव का यह निश्चय कि वह नैतिक कारणो से प्रेरित हो कर मास्लोवा से शादी करेगा, उसे अत्यन्त घृणास्पद लगा।

स्कावारोद्निकाव भौतिकवादी था और डारविन के सिद्धात का अनुयायी था। इसलिए नैतिकता के प्रत्यक्ष भावात्मक रूप को – और इसस भी बुरा यह कि धम को – घृणास्पद मूखता समझता था। इतना ही नही इसे वह अपना अपमान समझता था। उसे यह निहायत बुरा लग रहा था कि एक वेश्या के मामले को ले कर इतना वावैला खडा किया गया है, और स्वय नख्लूदोव और एक प्रतिष्ठित वकील सेनट म आ पहुचे है। इसलिए उसन दाढी के बाल मुह मे खोस और तरह तरह क मुह बनाता रहा, और बडी चालाकी स यह दिखाते हुए कि इस मामले के बारे म उस केवल इतना ही मालूम है कि अपील के लिए जो आधार प्रस्तुत किये गये है वे अपर्याप्त है, उसने प्रधान के मत का समथन किया कि न्यायालय के निणय को बरकरार रखा जाय।

इस तरह मास्लोवा को दी गयी सजा बरकरार रही।

"घोर अन्याय है!" वकील के साथ वेटिंग रूम म जाते हुए नख्लदाव ने कहा। वकील अपने बस्ते मे कागजात ठीक कर रहा था। "एक ऐसे मामले म जो बिल्कुल साफ है, वे केवल नियमो को महत्व दिये जा रहे हैं, और दरखास्त देने मे इन्कार कर रहे हैं। उफ, कैसा घोर अन्याय है!"

"मुकद्दमा जो खराब हुआ है तो फौजदारी अदालत म" वकील बोला।

"और तो और, सेलेनिन भी इस हक मे था कि अपील को रद्द कर दिया जाय। उफ कैसा घोर अन्याय है!" नेख्लूदाव न फिर दोहराया। "अब कहो, क्या करना चाहिए?"

"हम जार से अपील करेंगे। आप खुद आजकल पीटसबग मे हैं, यह दरख्वास्त दाखिल करते जाइये। मैं इसे तैयार कर दूगा।"

इसी समय वोल्फ—छोटा सा कद, वर्दी चढाये हुए जिस पर सितारे चमक रहे थे—वेटिंग रूम म दाखिल हो कर नेख्लूदोव की ओर चला आया।

"हम लाचार थे, प्रिंस, अपील के लिए दिये गये आधार काफी नही थे,' अपने मकरे कधे विचका कर, आखे बन्द करते हुए उसने कहा और फिर वहा से चला गया।

वोल्फ के बाद सेलेनिन भी बाहर आया। उसे सेनेटरो से मालूम हो गया था कि उसका पुराना दोस्त नख्लूदाव यहा पर मौजूद है।

"मुझे तो ख्वाब-ख्याल भी न था कि तुम्हारे साथ यहा मुलाकात होगी," नख्लूदाव की ओर आते हुए उसने कहा। वह मुस्करा रहा था लेकिन उसकी मुस्कान केवल होंठो तक ही थी। आखो म अब भी उदासी का भाव था। "मुझे तो मालूम ही नही था कि तुम पीटसबग म हो।"

'मुझे भी मालूम नही था कि तुम सेनट में सरकारी वकील के पद पर हो।"

"मैं सहायक सरकारी वकील हू" सेलेनिन ने गलती ठीक करते हुए कहा यहा सेनेट म कैसे आना हुआ? मुझे इतना तो मालूम हो गया था कि तुम पीटसबग म हो। लेकिन यहा किस काम पर आये हो?"

"यहा ? यहा मैं न्याय की आशा ले कर आया था, ताकि एक बेगुनाह औरत को बचा सकू जिसे बडी सजा द दी गई है।'

"कौन सी औरत ?"

"वही जिसके मुकद्दमे का अभी अभी फैसला हुआ है।'

"ओह, मास्लोवा का मुकद्दमा," सेलेनिन को मुकद्दमे की याद आ गई। "अपील का तो कोई आधार ही नही था।"

"मैं अपील की नही, औरत की बात करता हू वह निर्दोष है, फिर भी उसे सज़ा दी जा रही है।"

सेलेनिन ने ठण्डी सास भरी।

"मुमकिन है, लेकिन "

"मुमकिन नही, सचमुच निर्दोष '

"तुम्हे कैसे मालूम है ?"

"क्योकि मैं जूरी मे था। मुझे मालूम है हमसे कसे भूल हुई।"

सेलेनिन सोच मे पड़ गया।

"तुम्हे उस वक्त एक बयान देना चाहिए था,' उसने कहा।

"मैंने बयान दिया था।"

"उसे सरकारी रिपोट मे दज करवाना चाहिए था। अपील की दरख्वास्त के साथ अगर वह जोड दिया गया होता ता '

सेलेनिन को अपन काम से सिर उठाने की फुसत नही होती थी, इसलिए वह सभा सोसाइटी मे बहुत कम आया जाया करता था। प्रत्यक्षत उसे नेख्लूदोव के प्रेम का कुछ भी मालूम नही था। नख्लूदोव न यह देख लिया, और मन ही मन निश्चय किया कि उसे मास्लोवा के साथ अपन निजी सबध के बारे मे बताने की कोई ज़रूरत नही।

"हा, फिर भी फैसला बिल्कुल बेहूदा दिया गया था। और यह आज भी जाहिर था।'

"सेनेट को यह कहन का काई अधिकार नही है। अगर सनट अपन मतानुसार यह दख कर कि अदालतो के फैसले जायज़ हैं या नाजायज़, उन्ह बदलन लगे, ता जूरी के फैसल का कोई मूल्य नही रह जायगा। यही नही, सेनट का कोई मतलब ही नही रहगा। यह सस्था न्याय का समथन करने के बजाय न्याय का उल्लघन करने लगेगी," जिस मुकद्दम की अभी अभी सुनाई हुई थी, उसे याद करत हुए सेलनिन न कहा।

"मैं तो केवल इतना जानता हूं कि यह औरत बिल्कुल निर्दोष है। और अब इस अनुचित दण्ड से उसे बचाने की एक मात्र आशा भी जाती रही है। सर्वोच्च न्यायालय ने घोर अन्याय का समर्थन किया है।"

"समर्थन नहीं किया है। सेनेट ने मुकद्दमे के गुण-दोष की जांच नहीं की, न ही कर सकती है," सेलेनिन ने आंखें मिचकाते हुए कहा। अपनी मौसी के पास ठहरे हो न?" उसने पूछा। ज़ाहिर था कि वह वार्तालाप का रुख बदलना चाहता था। "उन्होंने कल मुझे बताया कि तुम यहां पर हो। और मुझे शाम को घर पर भी आने के लिए कहा, कि कोई विदेशी उपदेशक भाषण देने के लिए आयेंगे, और वहीं पर तुमसे भी मुलाकात हो सकेगी" सिर्फ होंठों में मुस्कराते हुए सेलेनिन ने कहा।

'हां, मैं था, लेकिन मुझे बड़ी नफरत हुई और मैं वहां से उठ गया,' नेख्लूदोव ने खीज कर कहा। उसे इस बात का गुस्सा था कि सेलेनिन ने वार्तालाप का विषय ही बदल दिया है।

'क्या नफरत क्या हुई? आखिर यह भी धार्मिक भावना को व्यक्त करने का एक रूप है। हां, इतना मैं मानता हूं कुछ एकांगी और संकीर्ण ज़रूर है," सेलेनिन ने कहा।

"छि, यह केवल सनक और मूर्खता है, और कुछ नहीं।"

"अरे नहीं भाई, नहीं। विचित्र बात यह है कि हमें अपने ही चर्च के उपदेशों के बारे में बहुत कम जानकारी है। इसलिए जब हमारी ही मूल धारणाओं को किसी नये रूप में व्यक्त किया जाता है तो हम समझने लगते हैं कि यह कोई नया दैविक सन्देश है," सेलेनिन ने कहा। ऐसा लगता था मानो वह जल्दी से जल्दी अपने मित्र को अपनी नयी धारणाओं के बारे में बता देना चाहता हो।

नेख्लूदोव ने बड़े गौर और हैरानी से सेलेनिन की ओर देखा। सेलेनिन ने आंखें नीची नहीं कीं। इन आंखों में न केवल उदासीनता का ही वरन वैमनस्य का भी भाव झलकता जान पड़ता था।

'तो क्या तुम चर्च के सिद्धान्तों को मानते हो?' नेख्लूदोव ने पूछा।

"हां, ज़रूर मानता हूं," सेलेनिन ने अपनी कान्तिहीन आंखों से नेख्लूदोव की आंखों में सीधा देखते हुए जवाब दिया।

नेख्लूदोव ने ठण्डी सांस ली।

"अजीब बात है," वह बोला।

"हम इस बार म फिर किसी वक्त बात करेंगे," सेलेनिन न कहा। इसी बीच पशकार उसके पास आ कर बडे अदब मे खडा था। "मैं आ रहा हू," उसने पशकार से कहा। "ता हम जरूर फिर मिलना चाहिए," उसने ठण्डी उसास छोडते हुए कहा। "पर तुम मिलागे भी? मैं ता राज शाम का सात बजे भाजन के समय घर पर हाता हू। मेरा पता नाट कर ला। नादेज्दिस्काया।" उसने मकान का नम्बर बताया। "उफ, वक्त किसी का इन्तजार नही करता।' और वह घूम कर जाने लगा। अब भी उसकी मुस्कान केवल हाठो तक ही सीमित थी।

"हा सवा ता तुम्ह मिलने आऊगा," नेख्लूदाव न कहा। उसे महसूस हो रहा था कि यही आदमी जो एक दिन इतना निकट और प्यारा था आज सहसा अजनबी, दूर-पार का और अगम्य, यहा तक कि किसी हद तक विरोधी सा बन गया है।

२३

पढाई के दिना मे, जब नेख्लूदोव और सेलेनिन एक दूसर के मित्र थे, सेलेनिन का आचार-व्यवहार घर म सुपुत्र सा और बाहर सच्चे मित्र का सा था। उसकी अवस्था को देखते हुए वह एक सुशिक्षित युवक था। और साथ ही एक सुदर कमनीय तथा व्यवहार-कुशल युवक था, दिल का सच्चा और बेहद ईमानदार। पढाई मे उसने बडी प्रगति की, लेकिन बिना बहुत माथापच्ची किये और बिना किसी पर अपना पाडित्य बघारे। अपन निबधा पर सोने के तमगे प्राप्त करता रहा।

युवावस्था मे वह जन-सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य मानता था, और वह भी केवल शाब्दिक सदभावना के रूप मे नही, क्रियात्मक रूप मे। उसने देखा कि यदि मानवजाति की सेवा करनी हो ता राज्य की सेवा करनी चाहिए। इसलिए पढाई खत्म करने के बाद उसने बडे क्रमबद्ध तरीके से एक एक धधे की जाच की और अन्त मे फैसला किया कि वह चासलरी के द्वितीय विभाग म, जहा कानून बनाये जाते हैं, सबसे उपयागी सिद्ध हो सकता है। अत वह लोक-सेवा के इस विभाग मे नौकर हो गया। बडी ईमानदारी और सुतथ्यता से अपना काम करने लगा, एक एक बात की ओर ध्यान देता, लेकिन इसके बावजूद उसे आतरिक सन्तोष नहा

मिला, उसकी यह इच्छा पूरी नही हो सकी कि वह मानवजाति के लिए उपयोगी हो सके, न ही उसे विश्वास हो पाया कि वह ठीक रास्ते पर जा रहा है। जिस अफसर के अधीन उसे काम करना पडा वह इतना छोटे दिल का और दम्भी आदमी था, कि आये दिन सेलेनिन की उसके साथ छोटी मोटी झडपें हो जाती। इससे उसका असताप और भी बढ गया और सेलेनिन चासलरी छोड कर सेनट मे काम करने लगा। यहा पर स्थिति कुछ बेहतर थी लेकिन उसका असन्तोष फिर भी दूर नही हुआ। उसे महसूस होता रहता कि यह स्थिति भी उसकी आशाओं के अनुरूप नही और जैसा होना चाहिए था, वैसा नही हुआ।

सेनेट मे काम करते हुए, सम्बन्धियो की मदद से उसे जेंटलमैन आफ चैंबर्चैम्बर का पद मिल गया। नियुक्ति के बाद वह कामदार वर्दी पहने और ऊपर सफेद रग का एप्रन लगाये, गाडी मे बैठ कर तरह तरह के लोगो के घर जा कर उनका धन्यवाद करता फिरा, जिन्होंने उसे पिट्ठू के पद पर बिठा दिया था। हजार कोशिश करने पर भी उसकी समझ मे नही आया कि इस पद की उपयोगिता क्या है। और इस कारण सेनेट की नौकरी से भी अधिक असतुष्टि उसे हो रही थी और वह समझ रहा था कि "यह तो वह नही" है, जिसकी जीवन म उसे खोज है। पर वह इस पद को छोड भी नही सकता था। उसे डर था कि ऐसा करने से वे लोग नाराज़ हो जायेंगे जो यह समझे बैठे थे कि इस पद पर बिठा कर उन्होंने उसे असीम आनन्द पहुचाया है। साथ ही इस पद से उसकी निम्न कोटि की वत्तियो की तृप्ति होती थी। जब वह सुनहरी कढाई की वर्दी पहने शीशे के सामने खडा होता तो उसका दिल बाग बाग हो जाता। और कुछ लोगो से अदब और इज्जत पा कर भी वह खुश होता जो इसी पद के कारण उसका मान करते थे।

इसी तरह की बात उसके ब्याह के समय भी हुई। दुनियादारी की दृष्टि से उसके लिए एक बहुत बढिया लडकी चुनी गयी। और उसने शादी कर ली, मुख्यतया इस कारण कि यदि इकार कर देता तो एक तो उस लडकी को सदमा पहुचता जो उसके साथ शादी करना चाहती थी, और साथ ही वे लोग भी मायूस होते जिन्होंने इसकी व्यवस्था की थी। इसके अलावा कुलीन घराने की एक सुमुख लडकी से ब्याह करने से उसकी शान बढती थी और उसका दिल खुश होता था। पर शीघ्र ही उसे महसूस

होने लगा कि यहा पर भी "यह ता वह नहीं" है। बल्कि सरकारी नौकरी तथा न्यायालय के पद से भी कम सन्तोष इसमें मिलता था।

उनके एक बच्चा हुआ। पत्नी ने निश्चय कर लिया कि उस और बच्चा नहीं चाहिए और इसके बाद वह ऐश आराम और दुनियावी तडक भडक की जिन्दगी म पड गई। इस प्रकार के जीवन में उसे भी शरीक होना पडता था भले ही उसे पसन्द हो या न हो। सौन्दर्य की दृष्टि से उसकी पत्नी म कोई विशेषता नही थी, हा, वह पतिव्रता जरूर थी। उसे इस प्रकार के जीवन से थकावट के अलावा हाथ कुछ न लगता था। पर वह फिर भी ऐसे जीवन से बडे यत्न से चिपटी हुई थी और उसमें से निकलना नही चाहती थी, यह जानते हुए भी कि इससे उसके पति का जीवन नरक बन रहा था। पति ने उसकी जीवन चर्या बदलन की बडी कोशिश की लेकिन नाकाम रहा, मानो उसके सामने पत्थर की दीवार खडी हो जाती हो। पत्नी की धारणाए गहरी जड पकड चुकी थी। उसके रिश्तेदार भी उसकी पीठ ठोकते थे कि उस ऐसा ही जीवन व्यतीत करना चाहिए।

अपनी बेटी के साथ उसे कोई लगाव न था, क्योंकि जिस ढग से उसका लालन-पालन हो रहा था वह उसे पसन्द न था। छोटी सी लडकी जिसकी टागे उघडी उघडी रहती और सिर पर लम्बे सुनहरी बाल थे। पति पत्नी के बीच वही गलतफहमिया उठने लगी जो अक्सर उठती रहती है, दोनों तरफ से एक दूसरे का दष्टिकोण समझने की कोई कोशिश नही की जाती, फिर अन्दर ही अन्दर वैमनस्य की आग सुलगने लगी जो बाहर के लोगो को नजर नही आती थी, लेकिन जो शिष्टाचार के आवरण क नीचे और भी तज होती जा रही थी। इन कारणो से घर के अन्दर उसका जीना दूभर हो उठा था। इस तरह पारिवारिक जीवन म सरकारी नौकरी और दरबार की नियुक्ति से भी अधिक असतुष्ट वह अनुभव करने लगा कि 'यह तो वह नही है ।

परतु सबसे अधिक असतुष्टि की बात धम के प्रति उसका दष्टिकोण था। वह धार्मिक अन्धविश्वासो के वातावरण मे पला था। लेकिन होश सभालते ही अपने समय के अन्य हमजोलिया की तरह बिना किसी विशेष प्रयास के उसने इन अधविश्वासो की बेडिया काट डाली और आज़ाद हो गया। उसे यह भी मालूम न था कि किस समय उसने यह मुक्ति प्राप्त

की। जवानी के दिनो मे, जब वह नेटनूदोव का गहरा मित्र हुआ करता था वह इतना शुद्ध हृदय और ईमानदार युवक था कि किसी से यह बात नहीं छिपाता था कि राजकीय धम मे उसे कोई विश्वास नही रहा। पर ज्या ज्या वक्त गुज़रने लगा और वह सरकारी नौकरी मे तरक्की करन लगा तो यह मानसिक स्वतत्रता उसकी तरक्की के रास्ते मे रुकावट बनन लगी। यह विशेषकर उस समय हुआ जब समाज मे रूढिवाद की ओर प्रतिक्रिया हुई। एक तो उस पर घर वाला ने दबाव डाला, विशेषकर उस समय जब उसके पिता की मत्यु हुई, और मतक की आत्मा के लिए सम्मिलित उपासना का आयोजन हुआ। इसके अतिरिक्त उसकी मा की बडी इच्छा थी कि वह व्रत रखे। साथ ही समाज और सरकारी नौकरी का यह तकाजा था कि वह हर प्रकार की उपासनाओ, कासिक्रेशन तथा स्तुनिगान इत्यादि मे शामिल हो। आये दिन कोई न कोई धार्मिक उपचार निभाना पडता। इन उपासनाओ के सम्बध मे वह दो मे से एक ही रास्ता अपना सकता था। या तो वह सच को छिपा जाय, ऊपर स यह दिखावा करे कि मैं धम को मानता हू, और अन्दर ही अदर न माने। ऐसा वह नही कर सकता था क्योकि वह दिल का बडा सच्चा आदमी था। या फिर दिल मे यह धारणा पक्की करन के बाद कि सभी बाहरी उपचार आडम्बर मात्र है, वह अपनी जीवनचर्या को ऐसी दिशा मे ढाल कि उसे इन धार्मिक सस्कारो म उपस्थित न होना पडे। बात तो सीधी सी नजर आती थी लेकिन उसे निभाने मे बहुत बडी कीमत चुकानी पडती। एक तो निकट सम्बधियो का निरन्तर विरोध महन करना पडता। दूसरे अपन सार पद गौरव को तिलाजलि देनी पडती। नौकरी छोडनी पडती और ऐसा करन स वह मनुष्यजाति की जो उपयोगी सेवा कर रहा था (उस यही लगता था), और जो वह भविष्य म और भी बडे पैमान पर करना चाहता था, वह नही कर पायगा। यह कुर्बानी मनुष्य तभी कर सकता है जब उसके मन म यह पक्का विश्वास हो कि उसकी धारणाए सच्ची है। और उसे यह विश्वास था। हमारे ज़माने का कोई भी पढा-लिखा आदमी जिसन इतिहास का कुछ भी पठन-पाठन किया है जो यह जानता है कि आम तौर पर धर्मों का प्रादुर्भाव कसे हुआ, और विशेषकर गिरजा वाले ईसाई धम का प्रादुर्भाव किस भाति हुआ और विघटन किस भाति हुआ वह अपने मामाय बोध की सचाई म विश्वास किये बिना

रह भी नहीं सकता। वह यह स्वीकार करने पर विवश था कि गिरजे के उपदेशों को ठुकरा कर उसने ठीक ही किया है।

परन्तु दैनिक जीवन के दबाव में आ कर इस सच्चे आदमी ने एक छोटे से झूठ को मन में प्रवेश करने की इजाजत दे दी। उसने मन ही मन कहा कि इन्साफ का तकाजा है कि एक अनुचित चीज़ को भी ठुकराने से पहले उसे देख-परख लिया जाए। बस, इतना सा झूठ था लेकिन वह उसे एक और बड़े झूठ में धकेल ले गया, जिसमें आज वह डूब-उतरा रहा था।

वह रूढ़िवादी धर्म के वातावरण में पल कर बड़ा हुआ था। सभी लोग यह आशा करते थे कि वह इसे मानेगा। इसे माने बिना वह अपना काम भी नहीं कर सकता था जिसे वह मानवजाति के लिए इतना उपयोगी समझता था। क्या यह रूढ़िवादी धर्म सच्चा है? यह सवाल अपने मन से पूछने से पहले ही उसने इसका उत्तर स्थिर कर लिया था। अतः इस प्रश्न का समाधान करने के लिए वह वाल्तेयर, शोपिनहार, हर्बर्ट स्पेंसर अथवा कोंत की रचनाएं पढ़ने के बजाय हेगेल के दार्शनिक ग्रन्थ तथा विनेत और खोम्याकोव के धार्मिक ग्रन्थ पढ़ने लगा। और जो बात वह ढूंढ रहा था वह स्वभावतः उसे इन ग्रन्थों में मिल गई। वह मानसिक शान्ति चाहता था, वह उसे यहां पर मिल गई। जो धार्मिक शिक्षा उसे बचपन में दी गयी थी, उसे उसकी बुद्धि ने स्वीकार नहीं किया था परन्तु उसके बिना उसका सारा जीवन कटुता से भर गया, और इन ग्रन्थों में उस धार्मिक शिक्षा को सच्चा बताया गया था जिसे मान लेने से सारी कटुता एकदम दूर हो जाती थी। इस तरह वह ऐसे कुतर्कों को मानने लगा जो आम तौर पर पेश किये जाते हैं कि एक अकेले इन्सान की बुद्धि सत्य को नहीं समझ सकती कि सत्य का दर्शन मनुष्यों के समूह को हो सकता है, और वह भी केवल आकाशवाणी द्वारा, यह दैविक सन्देश चर्च के पास मौजूद है, इत्यादि। बस उसके बाद उसका मन शान्त हो गया और यह भावना जाती रही कि यह सब झूठ है। और वह मृतक के लिए आयोजित प्रार्थनाओं पर जाने लगा, पादरी के सामने अपने पाप कबूलने लगा, देवप्रतिमाओं के सामने खड़े हो कर क्रास के चिह्न बनाने लगा, और निश्चिन्त हो कर सरकारी नौकरी करने लगा, जिसे करते हुए उसे महसूस होता था कि वह मानवजाति की सेवा कर रहा है और

जिससे वह अपने पारिवारिक जीवन की कटुता को भूले रहता था। वह सोचता था कि वह धम और भगवान मे विश्वास करता है, किन्तु अपनी अतरात्मा मे वह बिल्कुल स्पष्टतया यह अनुभव कर रहा था कि और सब बातो से भी अधिक उसका यह विश्वास तो "वह नही है", और इसी कारण उसकी आखो मे उदासी छायी रहती थी।

आज नेख्लूदोव को मिलने पर उसे याद आ गया कि वह पहले क्या हुआ करता था। नेख्लूदोव से उसकी जान-पहचान उस समय से थी जब उसके मन मे ये झूठ जड नही पकड पाये थे। आज नखलूदोव से मिलन पर जब जल्दी जल्दी मे उसने अपनी वतमान धामिक धारणाओ का सकेत किया तो उसे पहले से भी अधिक कटुता के साथ यह अनुभव हुआ कि यह सब तो "वह नही है," और वह बेहद उदास हो गया। और जब अपने मित्र को मुद्दत के बाद मिलने की खुशी कुछ ठण्डी पडी तो नख्लूदोव को भी यह महसूस हुआ।

दोनो ने एक दूसरे से मिलने का वादा किया, लेकिन न एक न न दूसर ने मिलने की कोई कोशिश की। जितने दिन नेख्लूदोव पीटसबग म रहा, वे एक दूसरे से नही मिले।

२४

सेनेट मे से निकल कर वकील और नेख्लूदोव एक साथ पैदल जान लगे। वकील ने अपने गाडी वाले को पीछे पीछे चले आने को कह दिया। वकील उसे उस आदमी का किस्सा सुनाने लगा जिसकी चर्चा सेनेटर लोग कर रहे थे, और जो आदमी एक सरकारी विभाग का चीफ था। वकील ने बताया कि बात कैसे पकडी गई, और जिस आदमी को कानून के मुताबिक कडी सजा मिलनी चाहिए थी, उसे साइबेरिया के एक शहर का गवनर बना कर भेज दिया गया है। उसने यह कहानी मजा ले ले कर और गन्दी तफसीला के साथ सुनाई। इसके बाद वह एक स्मारक की चचा करने लगा जिसके पास से हो कर उसी दिन प्रात वे सेनेट भवन मे गये थे। वह स्मारक कब से बन रहा था और अभी तक मुकम्मल नही हो पाया था। स्मारक के लिए बहुत सा धन इकट्ठा किया गया लेकि

वडे ओहदो वाले लोग इस धन का वहुत सा हिस्सा ऊपर ही ऊपर स उडा गये। फिर सुनाने लगा कि अमुक व्यक्ति की रखैल ने स्टाक ऐक्सचेंज पर लाखा रुवल वनाये हैं, और अमुक ने अपनी बीबी का सौदा किया है और अमुक ने बीवी खरीद ली है। वकील और भी तरह तरह की ठगी और जुर्मो की कहानिया सुनाता रहा जो उन लोगा ने किय है जो वडे वडे ओहदा पर वैठे है। और उन्ह जेल मे भेजना तो दूर रहा वे आज भी विभिन्न सरकारी सस्थाओ मे अध्यक्षा की कुर्सिया पर वैठे हैं।

जान पडता था जैसे वकील ने इन कहानियो का जो जखीरा इक्ट्ठा कर रखा है वह कभी खत्म नही होगा। और वह वडा रस ल ले कर इन्हे सुना रहा था। उनसे साफ जाहिर हो रहा था कि पीटसवग के वड वडे अफसरो की तुलना मे वकील का पैसे वनाने का ढग वडा न्यायसगत और निर्दोष है। लेकिन अभी वकील वाते कर ही रहा था कि नख्लूदाव ने एक गाडी रोकी और झट से विदा ले कर उसमे वैठ गया। वकील हैरान रह गया।

नेख्लूदोव का मन उदास हो उठा। उदासी का सवसे वडा कारण तो यह था कि सेनेट ने अपील मसूख कर दी थी और इस तरह निर्दोष मास्लोवा को जो यातनाए विना किसी प्रयोजन के भुगतनी पड रही थी, उनका समथन कर दिया था। इस कारण भी वह उदास था कि इस नामजूरी के बाद उसके लिए मास्लोवा के जीवन के साथ अपना जीवन जोडना और भी कठिन हो गया था। आज की कुरीतिया की जो कहानिया वकील ने इतना मजा ले ले कर सुनाई थी, उनस उसकी उदासी और भी वढ गई थी। साथ ही, सेलेनिन की आखा म छाया निमम उपेक्षा का भाव देख कर भी वह उदास हो उठा था और वार वार वह उस याद आ रहा था। जमाना था जव यही सेलेनिन मदु स्वभाव निष्कपट और श्रेष्ठ व्यक्ति हुआ करता था।

घर पहुचा तो दरवान ने उसके हाथ म एक रुक्का दिया और वाला कि काई औरत आयी थी और डयोढी मे बठ कर यह रुक्का लिख गई थी। दरबान के लहजे मे कुछ कुछ घिन का आभास होता था। रुक्का शूस्तावा की मा की ओर से था। उसन रुक्के म अपनी वेटी के सहायक तथा रक्षक का धन्यवाद किया था और साग्रह अनुरोध किया था कि वह उन्ह इस पते पर मिलने जरूर आय वासील्येव्स्की, पाचवी कतार, घर

का नम्बर—। करा बागाद्रग्राम्नाया का ग्वातिर उन जरूर मिलना चाहिए। रात म इग बात का ग्राश्वासन दिया गया था कि हम मिलने पर ग्रापको बार बार धन्यवाद कह कर परेशान नहीं करेंगी। हम कुछ भी नहीं कहेंगी केवल ग्रापसे मिलना चाहती हैं। क्या यह सम्भव होगा कि ग्राप कल प्रात हमारे घर पधारें?

इन ग्वतों वागातिर्योव की ग्रोर स भी था। वोगानिर्योव नेख्लूदोव का पुराना साथी ग्रफसर था ग्रौर ग्रब जार का एडडिकाग था। जो दरख्वास्त नेख्लूदोव धार्मिक सम्प्रदाय की ग्रोर स जार के नाम लाया था, वह उसने वोगातिर्योव को द दी थी कि वह जार क हाथ म द दे। वोगातिर्योव ने मोटे मोटे ग्रक्षरों म—जैसा कि उसका लिखने का ढंग था—यह लिख कर उसे विश्वास दिलाया था कि वह जरूर जार को उसकी दरख्वास्त द देगा, पर साथ ही उसका ख्याल था कि बेहतर होगा ग्रगर नेख्लूदोव जा कर पहले उस व्यक्ति स मिल ले जिस पर यह काम निर्भर था।

जिस तरह के प्रभाव पिछले कुछ दिनों से उसके मन पर पड़ रहे थे उन्हें देखते हुए नेख्लूदोव बिल्कुल निराश हो उठा था, ग्रौर सोचता था कि कोई भी काम पूरा नहीं हो पायेगा। मास्को में जो योजनाएं वह बनाता रहा था, ग्राज वे उसे जवानी के स्वप्नों सी लग रही थीं जो जीवन से मुलाकात करने पर ग्रनिवार्यत छिन्न भिन्न हो जाते हैं। फिर भी उसने निश्चय किया कि चूंकि मैं पीटर्सबर्ग में मौजूद हूं मेरा फर्ज है कि जो जो काम यहां पर करने का इरादा कर के ग्राया था, उसे पूरा करूं। इसलिए कल ही वोगातिर्योव को मिल कर, उसके परामर्शानुसार वह उस व्यक्ति को मिलने जाऊंगा जिस पर धार्मिक सम्प्रदाय के लोगों का मुकद्दमा निर्भर है।

उसने ग्रपने बस्ते में से सम्प्रदाइयों की दरख्वास्त निकाली ग्रौर पढ़ने लगा। उसी वक्त दरवाजे पर दस्तक हुई ग्रौर एक चोबदार ने ग्रा कर कहा कि काउंटेस येकातेरीना इवानोव्ना बुला रही है, ग्रौर कह रही है कि चाय का प्याला हमारे साथ ग्रा कर पीजिये।

नेख्लूदोव ने कहा कि वह ग्रभी ग्रा रहा है। उसने कागजों को वापस बस्ते में रखा ग्रौर सीढ़ियां चढ़ कर मौसी की बैठक की ग्रोर जाने लगा। रास्ते में एक खिड़की में से बाहर नजर डाली ग्रौर देखा कि घर के सामने

मेरियट के लाखी घाड़ा की जोड़ी खड़ी है। देखते ही उसका मन खिल उठा और उसके होठों पर एक हल्की सी मुस्कान दौड़ गई।

काउटेस की आराम-कुर्सी की बगल में ही मेरियट बैठी थी, सिर पर टोप लगाये, और हाथ में चाय का प्याला पकड़े थी। आज उसने काले रंग की पोशाक नहीं पहन रखी थी, बल्कि विविध रंगों की कोई हल्की सी पोशाक पहने थी। वह किसी विषय पर काउटेस के साथ बतिया रही थी, और उसकी चमकती, सुंदर आंखों में हंसी फूट रही थी। अन्दर पहुंचते ही नेख्लूदोव ने देखा कि उसकी मौसी—मोटी-ताज़ी, नकचिढ़ी, हल्की हल्की मूछों वाली मौसी—हंसी से लोट-पोट हो रही है। और मेरियट चुपचाप मुस्कराती हुई उसके चेहरे की ओर देखे जा रही है। मेरियट के मुस्कराते होंठ एक ओर को खिंचे हुए थे और गर्दन तनिक एक ओर को झुकी थी। मेरियट के सजीव हंसते चेहरे पर एक अजीब शरारत का सा भाव था। ज़ाहिर था कि मेरियट ने काउटेस को कोई मज़ाकिया बात सुनाई थी जो कुछ कुछ अश्लील भी थी, जिसका अन्दाज़ा नेख्लूदोव को उस हंसी से ही लग गया था, जो उसने कमरे के अन्दर प्रवेश करते समय सुनी थी।

कुछ शब्द नेख्लूदोव के कान में भी पड़ गये थे, और उसने समझ लिया था कि बात साइबेरिया के नये गवर्नर के बारे में चल रही है, जो आजकल पीटर्सबर्ग में चर्चा का दूसरा लोकप्रिय विषय बना हुआ था। इसी के बारे में मेरियट ने कोई ऐसी मज़ाकिया बात कही थी कि बड़ी देर तक काउटेस अपनी हंसी को नहीं दबा पायी थी।

"तुम तो मुझे हंसा हंसा कर मार डालोगी," काउटेस ने खांसते हुए कहा।

नेख्लूदोव अभिवादन कर के बैठ गया। वह मन ही मन इस उच्छृंखलता के लिए मेरियट की भर्त्सना करने जा रहा था जब मेरियट की नज़र उसके गंभीर तथा कुछ कुछ असन्तुष्ट चेहरे पर पड़ी, और सहसा उसने चेहरे का भाव बदल लिया। चेहरे का भाव ही नहीं, अपनी मनःस्थिति भी बदल ली। उसने यह इसलिए किया कि जब से उसने नेख्लूदोव को देखा था, तब से मन ही मन वह उसे भाने को व्याकुल थी। उसने सहसा गंभीर मुद्रा धारण कर ली, अपने जीवन से असन्तुष्ट, मानो वह किसी चीज़ को ढूंढने तथा पाने के लिए व्याकुल हो। वह बन नहीं

रही थी, उसने सचमुच अपने मन को नेख्लूदोव की मन स्थिति के अनुरूप ढाल लिया था, हालांकि उस समय नेख्लूदोव के मन की क्या स्थिति थी इस शब्दों म व्यक्त करना उसके लिए असभव होता।

मरियट न नख्लूदोव म उन कामो क बारे म पूछा, जो वह पीटर्सबग म करन क लिए आया था। उसने सेनट का किस्सा और सेलेनिन से अपनी भेंट के बार म बताया।

"कितना नेक आदमी है! वह तो सचमुच a chevalier sans peur et sans reproche* है। बडा नक आदमी है," दोनो स्त्रियो ने एक साथ कहा। पीटसबग की सोसाइटी म सेलेनिन के लिए इसी विशेषण का प्रयोग किया जाता था।

"उसकी पत्नी कैसी औरत है?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"पत्नी? किसी क बारे म अच्छा या बुरा कहने का मेरा कोई अधिकार नही है लेकिन इतना जरूर कहूगी कि उसकी पत्नी उस समझ नही पाई। क्या यह मुमकिन है कि उसन भी यही राय दी हो कि अपील नामजूर कर दी जाय?" मेरियेट ने सच्ची सहानुभूति स पूछा। "बडी भयानक बात है। मुझे सचमुच उस लडकी पर दया आती है," उसने ठण्डी सास भर कर कहा।

नख्लूदोव की भौहे चढ गइ और वह बात बदल कर शूस्तोवा की चर्चा करने लगा। शस्तोवा किले म कद काट रही थी लेकिन मेरियट की मदद स उसे रिहा कर दिया गया था। नख्लूदोव ने इस सहायता के लिए मरियेट का धयवाद किया। वह कहन जा ही रहा था कि इस स्त्री को तथा उसके सारे परिवार को कितनी यातना सहनी पडी है, केवल इस कारण कि किसी न भी उनके बार म अधिकारियो को याद नही कराया। लेकिन मेरियेट बीच मे ही बात काट कर अपना राय प्रकट करने लगी—

"इसकी बात ही न करो,' वह कहन लगी। "जब मेरे पति ने मुझे कहा कि उस लडकी को रिहा किया जा सकता है, तो झट उसी वक्त मेरे मन मे ख्याल आया, अगर वह निर्दोष है तो उसे जेल मे रखा ही क्या गया था? मेरियेट ने मुह से वही शब्द निकाले जो नेख्लूदोव कहने जा रहा था। "कितनी घृणित बात है, घृणित!"

---

*निडर और निष्कलक वीर। (फ्रेंच)

मेरियेट का नेख्लूदोव के साथ चुहल करते देख, काउटेस के मन ने चुटकी ली। जब दोनो चुप हो गये तो कहने लगी--

"सुना, कल तुम एलीन के घर क्या नहीं चलते? कीज़ेवेतर भी वहीं पर होगा।" फिर मरियेट की ओर मुड कर बोली, "और तुम भी चलना।"

"Il vous a remarque,"* उसने अपने भाजे से कहा। "जो कुछ तुमने मुझे कहा था मने कीज़ेवेतेर को सुनाया। सुन कर वह कहने लगा कि यह बडा अच्छा लक्षण है, तुम अवश्य ईसा की शरण म आओगे। तुम्ह ज़रूर चलना चाहिए। इसे कहो, मेरियेट, और खुद भी ज़रूर आना।"

"काउटेस, पहली बात तो यह कि प्रिस को किसी किस्म की नसीहत करने का मुझे कोई अधिकार नही है" मेरियेट बोली, और साथ ही इस नज़र से नेख्लूदोव की ओर देखा जिससे यह बात एक तरह से तय हो गई कि दोनो की काउटेस के शब्दो के प्रति तथा सामान्यतया इवजेलिकल मत के प्रति एक ही राय है, "दूसरे, आप तो जानती हैं कि इसमें मेरी कोई रुचि नही है"

"हा, हा, मैं जानती हू, तुम हर बात गलत ढग से करती हो, हमेशा तुम्हारे विचार अनोखे रहे हैं।'

"अनोखे? मेरे तो वही विचार हैं जो साधारण से साधारण किसान स्त्री के होगे," मेरियेट ने मुस्करा कर कहा। "और तीसरे यह कि कल रात मैं फ्रासीसी नाटक देखन जा रही हू।"

"ओह! क्या तुमने उसे देखा है--क्या नाम है उसका?" काउटेस येकातेरीना इवानोव्ना ने नेख्लूदोव से पूछा। मेरियेट ने एक विख्यात फ्रासीसी अभिनेत्री का नाम बताया।

"तुम्ह ज़रूर दखना चाहिए। हर हालत मे। वह कमाल का अभिनय करती है।"

"मैं किसके शब्द पहले सुनू ma tante, अभिनेत्री के या उपदेशक के?" नख्लूदोव ने मुस्कराते हुए पूछा।

"वाक्छल मत करो।"

---

*उसका ध्यान तुम पर पडा है। (फ्रेंच)

"मैं सोचता हूँ पहले उपदेशक का व्याख्यान सुनूँ और बाद में अभिनेत्री का अभिनय देखूँ नहीं तो व्याख्यान सुनने के लिए मन में इच्छा ही नहीं रहेगी।'

'नहीं पहले मार्सीली नाटक देखो और बाद में प्रायश्चित करो।'

सुनो सुनो, मेरे साथ ठिठोली मत करो। उपदेशक अपनी जगह है और नाटक अपनी जगह। आत्मा की रक्षा के लिए जरूरी नहीं कि मनुष्य मुँह लटका कर रोता रहे। मन में विश्वास हो तो मनुष्य को जरूर खुशी मिलती है।"

'तुम तो ma tante उपदेशकों से भी अच्छा व्याख्यान देती हो।

"सुनो किनारे में पाई जाई सी मेरियट बोली "कल तुम मेरे ही बॉक्स में आ कर बैठना।

"मैं तो कल नहीं '

ऐन उसी वक्त चोबदार ने आ कर वार्तालाप में विघ्न डाल दिया। कोई आदमी मिलने आया है, उसने कहा। यह एक जन कल्याण संस्था का सेक्रेटरी था। काउंटेस उस संस्था की प्रधान थी।

उफ! बड़ा उबाऊ है। मैं सोचती हूँ मैं बाहर ही उससे मिल लूँगी। मेरियट नख्लूदोव को चाय पिलाना। मैं अभी लौट कर आती हूँ।' और डगमगाती हुई तेज तेज कदमों से वह बाहर निकल गई।

मेरियट ने दस्ताना उतारा। उसका हाथ खूब गठा हुआ किन्तु कुछ कुछ स्थूल था। चौथी अंगुली अंगूठियों से भरी थी।

"पियोगे?' उसने चाँदी की केतली उठाते हुए कहा जिसके नीचे स्पिरिट लैम्प जल रहा था। केतली उठाते हुए उसने अपनी छोटी अंगुली को अजीब अन्दाज से अलग सा रखा।

मेरियट का चेहरा उदास और गंभीर सा था।

मुझे इस बात का बड़ा खेद है कि वही लोग जिनकी राय की मैं कद्र करती हूँ मेरी स्थिति को मेरा असली रूप समझते हैं।"

अन्तिम शब्द कहते कहते तो जैसे उसका रोना निकलने लगा था। ध्यान से इन शब्दों का विश्लेषण करो तो कोई मतलब न निकलता था, कम से कम कोई स्पष्ट मतलब नहीं निकलता था। लेकिन नख्लूदोव पर मेरियट की चमकती आँखें ऐसा जादू कर रही थीं कि इस बनी ठनी युवा सुन्दरी के मुँह से निकले शब्द उसे बेहद सारपूर्ण, गहरे तथा उत्कृष्ट लगे।

नेग्नूदोव चुपचाप उसकी ग्रोर देखे जा रहा था। उसकी ग्राखें उसके चेहरे पर से हटाये न हटती थी।

क्या तुम सोचते हो मैं तुम्हे या तुम्हारी मन स्थिति को नही समझती ? सभी जानते हैं तुमने क्या कुछ किया है। C est le secret de polichinelle * ग्रौर तुम्हारे काम को देख कर मेरा मन बडा प्रसन्न होता है, मैं उसका पूरा पूरा समर्थन करती हू।'

"नही, इसमे प्रसन्नता की कोई बात नही। मैंने तो ग्रभी तक कुछ खास किया ही नही।"

"कोई बात नही। मैं तुम्हारी भावनाग्रो को समझती हू। ग्रौर उस लडकी को भी समझती हू। ठीक है, ठीक है। मै इस बारे मे ग्रौर बात नही करूगी,' नेख्लूदोव के चेहरे पर नाराजगी की झलक देख कर उसने कहा। "पर मै यह भी समझ सकती हू कि तुमने जेल के नरक कुड को देखा है ग्रौर उसमे ग्रभागे लोगो को जलते देखा है।" मेरियेट ने ग्रपनी स्त्री-सुलभ ग्रतःप्रेरणा से बूझ लिया कि नेख्लूदोव के लिए कौन सी चीज प्रिय ग्रौर महत्वपूर्ण है, ग्रौर उसी की चर्चा करते हुए उसके मन मे सिर्फ एक इच्छा थी—उसे ग्रपनी ग्रोर ग्राकर्षित करना। "जो लोग वहा यातनाए भोग रहे है तुम उनकी मदद करना चाहते हो। यह स्वाभाविक ही है। वे बेचारे ग्रौर लोगो के ग्रत्याचार ग्रौर उपेक्षा के शिकार बनते हैं। तुम उनके लिए ग्रपनी जिदगी तक कुर्बान करना चाहते हो। मैं इस भावना को समझती हू। इतने महान उद्देश्य के लिए, यदि मेरा बस चले तो मैं भी ग्रपना जीवन दे दू, पर हर ग्रादमी का ग्रपना ग्रपना भाग्य होता है।"

'क्या तुम ग्रपने भाग्य से सन्तुष्ट नही हो ?"

"मैं ?" मेरियेट ने कहा, मानो इस ग्रप्रत्याशित सवाल पर वह हैरान हो उठी हो। "मुझे सतोष करना पडता है, ग्रौर मैं सतुष्ट हू। पर कभी कभी, ग्रदर ही ग्रदर कोई जीव है जो जाग उठता है "

"उस जीव को जगाये रखना चाहिए, उसे फिर सोने नही देना चाहिए, उसकी ग्राज्ञा का पालन करना चाहिए,' नेख्लूदोव ने जाल मे फसते हुए कहा।

---

*यह तो ग्रब कोई रहस्य नही रहा। (फ्रेंच)

बाद म कई बार इस वार्तालाप को याद कर के नेम्लूदोव ने लज्जा का अनुभव किया। उसे मेरियेट के शब्द याद आते। वह न केवल झूठ ही बोल रही थी, उससे भी अधिक, वह नेख्लूदोव की नकल उतार रही थी। उसे मेरियेट का चेहरा याद आता। जेलों की भयानक स्थिति की चर्चा करते समय, या यह बताते समय कि देहात म उसने क्या कुछ देखा, नेम्लूदोव को लगता जैसे मेरियेट के चेहरे म सहानुभूति और उत्सुकता टपक रही है।

जब काउटेस लौट कर आई तो दोनों आपस म ऐसे घुलमिल कर बात कर रहे थे मानो वे पुराने मित्र ही नहीं, एक दूसरे के अनन्य मित्र हों, मानो आस-पास के लोग उन्हें समझने म असमर्थ थे और उनके दिल पूर्णतया एक दूसरे को समझ पाते हैं।

शासकों का अन्याय, अभागे लोगों का उत्पीडन, जनता की गरीबी—उनकी जबान पर तो इनकी चर्चा थी, लेकिन वार्तालाप के बीचोबीच उनकी आखें एक दूसरी से कुछ और ही पूछ रही थी—"क्या मुझे तुम्हारा प्यार मिल सकता है?' और जवाब मिलता, "हा, जरूर।" काम वासना, तरह तरह के अनोखे और आकर्षक रूप ले ले कर उन्हें एक दूसरे की ओर खींच रही थी।

विदा लेते वक्त मेरियेट कहने लगी कि मैं हर तरह से तुम्हारी सेवा करने के लिए तैयार हूं। फिर कहने लगी कि कल जरूर मुझे थियेटर में आ कर मिलना। भले ही क्षण भर के लिए आओ, मगर आना जरूर, मुझे तुमसे एक बहुत ज़रूरी बात कहनी है।

"कौन जाने, फिर कब मुलाकात हो," मेरियेट ने ठण्डी सास ले कर कहा, और अगूठियों से चमकते अपने हाथ पर दस्ताना चढाने लगी। "वचन दो कि तुम आओगे।"

नेख्लूदोव ने वचन दे दिया।

उस रात जब नेम्लूदोव अपने कमरे में अकेला रह गया तो उसने बत्ती बुझाई और सोने की चेष्टा करने लगा। मगर उसे नींद नहीं आयी। मास्लोवा, सेनेट का निर्णय, मास्लोवा के साथ साइबेरिया जाने का निश्चय, जमीन जायदाद का त्याग—ये बातें उसके मन म चक्कर काट रही थीं लेकिन अचानक, इस सबके उत्तर म मेरियेट का चेहरा, उसकी ठंडी सांस और उसकी नज़र, जब उसने कहा था—"कौन जाने, फिर कब मुलाकात

हो" और उसकी मुस्कान–सब कुछ इतनी स्पष्टता से उसकी आंखों के सामने घूम गया, मानो वह उसे प्रत्यक्षतः देख रहा हो और मुस्करा दिया। "क्या मैं साइबेरिया जा कर भूल तो नहीं कर रहा? क्या जमीन-जायदाद त्यागना गलती तो नहीं होगी?" उसने अपने आपसे पूछा।

पीटर्सबर्ग की उस रजत रात में, जिसका प्रकाश बारीक पर्दों में से छन छन कर आ रहा था, इन सवालों के बड़े अस्पष्ट से जवाब उसे मिले। उसे सारी स्थिति उलझी हुई सी लग रही थी। उसे याद आया कि पहले उसके मन की कैसी स्थिति थी, क्रमानुसार एक एक विचार याद आया जो उसके मन में उठा करते थे पर इन विचारों में अब पहले सी शक्ति न थी, न ही वे न्यायसंगत जान पड़ते थे।

"फर्ज करो कि यह सब मेरी कल्पना हो, और मैं उसे कार्यरूप नहीं दे पाऊं? या ठीक काम भी करूं और बाद में मुझे पछतावा हो?" नेख्लूदोव को इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं सूझ रहा था। उसका मन दुखी और निराश हो उठा। कभी पहले वह इतना बेचैन नहीं हुआ था। वह इन बातों के बारे में सोच ही रहा था जब उसे बोझिल नींद ने आ घेरा जैसी पहले दिनों में कभी जुए में बहुत बड़ी रकम हार जाने पर आया करती थी।

२५

दूसरे दिन जब नेख्लूदोव उठा तो उसे ऐसा लगा जैसे पिछले दिन उसने कोई बड़ी गंदी बात कर दी हो।

वह सोचने लगा। उसे याद नहीं आया कि उसने कोई गंदी बात की हो। उसने कोई बुरा काम नहीं किया था। परन्तु उसके मन में बुरे विचार आये थे। उसने सोचा था कि कात्यूशा से शादी करना, और जमीन जायदाद का त्याग करना–जितने भी निश्चय उसने इस समय किये थे, सभी स्वप्न मात्र हैं, जिन्हें व्यावहारिक रूप नहीं दिया जा सकता। उस प्रकार का जीवन उससे सहन नहीं हो सकेगा यह बनावटी है, अस्वाभाविक है, इसलिए यही उचित है कि वह उसी तरह रहता जाय जिस तरह आज तक रहता आया है।

उसने कोई बुरा काम तो नहीं किया था, पर जो बात उसने की वह बुरे काम से भी बुरी थी। उसने मन में बुरे विचारों को प्रोत्साहन दिया

था, और उन्ही से सभी बुरे कम जन्म लेत हैं। सभव है कि एक बार किया गया बुरा काम दोबारा न किया जाय, उसका पछतावा भी हो। परन्तु सभी बुरे कम बुरे विचारो से ही पैदा होते हैं।

एक बुरा काम और बुरे कामो के लिए रास्ता साफ करता है। बुरे विचार मनुष्य को उस रास्ते पर चलने के लिए विवश कर देते हैं।

जो विचार पिछले रोज नेख्लूदोव के मन म उठे थे, उन्ह याद कर के, उसे इस बात की हैरानी हुई कि वह उन पर यकीन कैसे कर पाया। जो काम करने का उसने निश्चय किया है, वह कितना ही अनोखा और दुष्कर क्या न हो, परन्तु फिर भी वही उसके जीवन का अब एकमात्र रास्ता होगा। फिर स पहला सा जीवन बिताना भले ही बडा आसान और स्वाभाविक हो, पर वह रास्ता मौत का रास्ता है। कई बार गहरी नींद सो चुकने के बाद हम थोडी देर और बिस्तर मे पडे रहना चाहते हैं। हम जानते हैं कि हम नींद पूरी कर चुके हैं, और अब उठ कर अपने काम म जुट जाना चाहिए, पर फिर भी आराम से लेटने का लोभ सवरण नही कर सकते। कुछ ऐसी ही भावना पिछले दिन के प्रलोभन ने नेख्लूदोव के मन म पैदा की थी।

पीटसबग मे आज नेख्लूदोव का आखिरी दिन था। सुबह के वक्त वह वासील्यव्स्की द्वीप की ओर शूस्तोवा को मिलने चल पडा।

शूस्तोवा पहली मजिल पर रहती थी। चौकीदार ने नेख्लूदोव को घर के पीछे की सीढिया दिखा दी, और उन्ह चढकर वह सीधा रसोईघर म जा पहुचा। रसोईघर के अन्दर बडी गर्मी थी और खाने-पीने की चीजो की तेज गध आ रही थी। एक बडी उम्र की औरत अगीठी के पास खडी बतन म कुछ बना रही थी। बतन मे से उफन उफन कर भाप निकल रही थी। औरत ने आखो पर चश्मा लगा रखा था, और एप्रन लगाये थी, और आस्तीनें चढा रखी थी।

"किसे मिलना चाहते हैं?" चश्मे के ऊपर से झाकते हुए उसने रुखाई से पूछा।

नेख्लूदोव अभी ठीक तरह से अपना नाम भी नही बतला पाया था जब औरत के चेहरे पर सहसा भय और उल्लास का भाव छा गया।

'ओह प्रिंस!" एप्रन पर हाथ पोछते हुए उसने चिल्लाकर कहा। "पर आप पीछे के रास्ते स क्यो आये? आप तो हमारे रक्षक हो। शूस्तोवा

मरी वेटी है। अधमरी वर ने उन्हाने मेरी वेटी या छोड़ा है। आपन हम हाथ द वर वचा लिया है," नम्त्लदोव या हाथ पक्ड कर उस चूमन की चेष्टा करते हुए उसने कहा। "मैं वन आपसे मिलन गई थी। मरी वहिन ने मुझे भेजा था। वह भी यही पर है। उधर चलिय, उधर स," शूस्तोवा की मा न कहा और आगे आगे चलती हुई नम्ल्यूदोव को अपन साथ ले जान लगी। एक तग से दरवाजे म से निकल कर वे एक अधर वरामद मे पहुचे। शूस्तावा की मा कभी अपन वालो को ठीक करती कभी स्कट को जिसका किनारा उसने मोड रखा था। "मेरी वहिन का नाम कर्नीलोवा है। आपन जरूर उसका नाम सुना होगा," एक वन्द दरवाज के वाहर रुक कर उसने नेख्लदोव से फुसफुसा कर कहा। "किसी राज नीतिक मामले म वह फस गई थी। वडी चतुर है!"

शूस्तोवा की मा ने दरवाज़ा खाला। एक छाटे से कमर मे, मज़ के सामने सोफे पर एक गोल मटोल और ठिगनी सी लडकी वैठी थी। सिर पर सुनहरी रग के घुघराले वाल थे जो उसके पीले, गोल चेहरे के आस पास फैले हुए थे। उसका चेहरा अपनी मा से वहुत मिलता था। वह सूती कपडे का धारीदार ब्लाउज पहन थी। उसके ऐन सामन एक आराम कुर्सी पर एक युवक दाहरा हो कर आगे की ओर झुका वैठा था। हल्की सी काले रग की दाढी और मूछ थी और वह रूसी ढग की कामदार कमीज पहने था। वे दोना वाते करने मे इतने मशगूल थे कि उन्हे नेख्लूदाव के आने का उस वक्त पता चला जव वह कमरे मे प्रवेश कर चुका था।

"लीदिया, प्रिस नेख्लूदाव! इन्होने ही ' मा ने कहा।

लडकी उछल कर खडी हो गई और घवरा कर वाला की लट कान के पीछे दबाने लगी। उसकी वडी वडी भूरे रग की आखे नवागन्तुक के चेहरे पर टिकी थी और उनमे भय छाया था।

"तो तुम वह खतरनाक औरत हो जिसके लिए वेरा ने मुझे सिफारिश करने के लिए कहा था?" नख्लूदोव ने मुस्कराते हुए कहा।

"हा, मैं ही हू," लीदिया शूस्तोवा ने कहा और उसके मुह पर वच्चो की सी सरल मुस्कान खिल उठी जिससे उसके खूवसूरत दाता की लडी नजर आने लगी। "मेरी मौसी आपसे मिलने के लिए वडी वेताव थी। मौसी!" उसने एक दरवाज़े मे से पुकारा। उसकी आवाज वडी मृदुल और मधुर थी।

"तुम्हारे जेल जाने पर वेरा को बहुत क्लेश हुआ," नेख्लूदोव ने कहा।

"यहा बैठिय। नही, बेहतर होगा इस कुर्सी पर बैठ जाइये," एक टटी फूटी आराम-कुर्सी की ओर इशारा करते हुए लीदिया ने कहा, जिस पर से युवक अभी अभी उठा था। "यह मेरा चचेरा भाई, जखाराव है" लीदिया ने कहा, जब उसन देखा कि नेख्लूदोव युवक की ओर देखे जा रहा है।

युवक न नख्लूदोव का अभिवादन किया। उसके चेहरे पर भी वैसी ही सदभावनापूण मुस्कान थी जैसी कि लीदिया के चेहरे पर। जब नेख्लूदोव बैठ गया वह अपने लिए एक कुर्सी उठा लाया और नख्लूदोव के पास आ कर बैठ गया। लगभग सोलह बरस का सुनहरी बालो वाला एक स्कूली लडका भी अन्दर आ गया और चुपचाप खिडकी के दास पर बैठ गया।

"वेरा बोगोदूखोव्स्काया मरी मौसी की बडी गहरी मित्र है। मैं तो उस बहुत कम जानती हू," शूस्तोवा ने कहा।

इसके बाद साथ वाले कमरे म से एक स्त्री न प्रवेश किया। उसका चेहरा खिला हुआ और बडा प्यारा सा था। वह सफेद रग का ब्लाउज पहने थी और कमर म पेटी लगाये थी।

"नमस्कार! आपने बडी कृपा की," साफे पर लीदिया के साथ बैठते ही उसने कहना शुरू किया। "वेरा कैसी है? आप उससे मिले हैं? अपनी हालत से परेशान तो नही?"

"वह शिकायत नही करती," नेख्लूदाव न कहा, "कहती थी डटी हुई हू।"

"वेरा यही कहेगी। मैं उसे जानती हू" मुस्करा कर सिर हिलाते हुए मौसी न कहा। "बहुत ऊचे चरित्र की लडकी है। उसे नजदीक स देखन पर ही उसे आदमी पहचान सकता है। औरो के लिए जान भी वार देगी, अपने लिए कुछ नही करेगी।"

"हा उसने अपने लिए कुछ भी करने को नही कहा। उसे केवल आपकी भाजी की चिन्ता थी। कहती थी निर्दोष लडकी को जेल म ठूस दिया गया है। इसी बात का उसे सबसे अधिक क्लेश होता था।"

"हा, ठीक बात है। जो कुछ हुआ बहुत भयानक हुआ है। वास्तव म इसे मेरे कारण इतनी यातना सहनी पडी।"

"नही मौसी, यह बात नही। अगर तुम न भी होती तो भी मैं वह कागजात पहुचाने जाती।"

"मैं तुमसे ज्यादा जानती हू, बेटी," मौसी कहने लगी। "सारी बात हुई ही इस कारण कि एक आदमी न मुझे कुछ देर के लिए अपने कागज रखने के लिए दिये। मेरा उस समय कोई घर-घाट नही था। मैं वे कागज उठा कर इसके पास ले आयी। उसी रात पुलिस ने इसके कमरे की तलाशी ली, कागजात भी उठा कर ले गई और इसे भी हिरासत मे ले लिया। और आज तक इसे बन्द रखा। उससे बार बार यही पूछते थे कि बताओ किस आदमी न तुम्हे ये कागज दिये हैं।"

"मगर मैंने नही बताया," लीदिया झट से बोल उठी। घबराहट मे उसने एक और लट खीच ली जो पहले अच्छी भली अपनी जगह पर थी।

"मैंने कब कहा है कि तुमने बता दिया?" मौसी ने कहा।

"अगर उन्होने मीतिन को पकडा है तो मेरे द्वारा नही," लीदिया ने कहा। शम से उसका चेहरा लाल हो गया और वह विचलित हो कर इधर-उधर देखने लगी।

"इसकी चर्चा ही नही करो, लीदिया" मां ने कहा।

"क्या नही करू? मैं बता दना चाहती हू," लीदिया बोली। अब उसके चेहरे पर से मुस्कान गायब हो गई थी। उसका चेहरा अधिकाधिक लाल होता जा रहा था। अब की, बालो की लट सभालने के बजाय वह उसे अपनी अगुली के इर्दगिर्द लपेटे जा रही थी।

"याद है न, कल इसकी बात करने पर क्या हुआ था?"

"नही नही, मुझे कुछ मत कहो, मा। मैंने नही बताया। मैं केवल चुप बनी रही। जब उसने मीतिन और मौसी के बारे मे पूछताछ की तो मैं कुछ नही बोली, बल्कि मैंने कह दिया कि मैं जवाब नही दूगी। उसके बाद यह पेत्रोव "

"पेत्रोव जासूस है, राजनीतिक पुलिस का आदमी है और बेहद नीच है," मौसी ने बीच म कहा ताकि नेख्लूदोव लीदिया की बात को स्पष्टतया समझ सके।

"फिर उसन मुझ पर डोरे डालन शुरू किये," लीदिया ने घबरा कर जल्दी जल्दी कहना शुरू किया। "वह मुझसे कहने लगा, 'जो कुछ

भी तुम मुझे बताओगी उससे किसी को नुक्सान नही पहुच सकता। इसके विपरीत यदि तुम हमे बता दोगी तो हम बहुत से निर्दोष लोगो को रिहा कर सकेंगे जिन्हे व्यर्थ मे हम परेशान कर रहे हैं।' इस पर भी मैंने कह दिया कि मैं नही बताऊगी। फिर वह बोला--'अच्छा कुछ भी मत बताओ, पर मैं अगर किसी का नाम लू तो तुम उसका निषेध नही करना।' और उसने मीतिन का नाम लिया।"

"इस बारे मे कुछ मत कहो," मौसी ने कहा।

"बीच मे नही बोलो, मौसी " और वह इधर-उधर देखती हुई अपने बालो की लट खीचती रही। "और उसके बाद दूसरे ही दिन, आप ख्याल कीजिये, उन्होंने मेरी कोठरी की दीवार खटखटा कर बताया कि मीतिन को पकड लिया गया है। मैं सोचती हू मैंने मीतिन के साथ विश्वासघात किया है। इस कारण मैं इतनी व्याकुल रहती, इतनी व्याकुल कि मैं पागल हो चली थी।"

"बाद मे पता चला कि तुम्हारे कारण उसे नही पकडा गया था," मौसी ने कहा।

'हा, पर मुझे तो मालूम नही था। मैं तो यही सोचती थी 'लो मैंने उसे धोखा दे दिया है।' मैं अपनी कोठरी मे चक्कर काटती रहती और बरबस यही सोचती, 'मैंने उसके साथ दगा की है।' मैं तख्ते पर लेट जाती, ऊपर से कम्बल ओढ लेती, फिर भी कोई आवाज मेरे कान म फुसफुसाती--'विश्वासघात! तुमने मीतिन के साथ विश्वासघात किया है! मीतिन के साथ विश्वासघात किया है!' मैं जानती थी कि यह मतिभ्रम है, पर फिर भी मेरे कानो म ये शब्द गजते रहते थे। मैं सोना चाहती थी लेकिन सो नही पाती। मैं इसके बारे मे कुछ भी सोचना नही चाहती थी, लेकिन फिर भी यही बात मेरे दिमाग म चक्कर लगाती रहती। कितनी भयानक बात है!" बाते करते करते लीदिया अधिकाधिक उत्तेजित होती जा रही थी अगुली पर कभी बालो की लट चढाती कभी उतार देती, और बार बार इधर उधर देखती।

"बस लीदिया, अपना मन शान्त करो," उसके कधे पर हाथ रखते हुए लीदिया की मा ने कहा।

लेकिन शूस्तोवा के लिए रुकना असभव हो रहा था।

"इससे भी भयानक बात यह थी " वह कहने लगी, लेकिन आगे

नही कह पायी, और सिसकी भरती हुई उठी और भागती हुई कमरे में से बाहर चली गई। उसकी मां उसके पीछे पीछे बाहर जाने लगी।

"इन पाजियों को फांसी लगा देना चाहिए," खिड़की के दासे पर बैठे स्कूली लड़के ने कहा।

"क्या कहा?" मां ने पूछा।

"मैंने केवल यही कहा है कि नहीं, नहीं, कुछ नहीं," लड़के ने जवाब दिया, और मेज पर से एक सिगरेट उठा कर पीने लगा।

२६

"छोटी उम्र वालों के लिए कैद-तनहाई जैसी भयानक चीज़ और कोई नहीं। यह ठीक बात है," मौसी ने सिर हिलाते हुए कहा। वह भी एक सिगरेट उठा कर सुलगाने लगी।

"जवानों के लिए ही क्या, मैं तो कहूंगा सभी के लिए भयानक है," नेख्लूदोव ने जवाब दिया।

"नहीं, सबके लिए नहीं," मौसी बोली। "मैंने सुना है कि सच्चे क्रांतिकारी तो कैद-तनहाई में बड़े सुख चैन से रहते हैं। जिस आदमी के पीछे पुलिस पड़ी हो, उसे तो हर वक्त चिंता रहती है, अपनी चिन्ता, अपने सगे-सम्बंधियों की चिंता, यह चिन्ता कि वह अपना फर्ज पूरा नहीं कर रहा है। ऊपर से पैसे की तंगी उसे परेशान किये रहती है। आखिर जब वह पकड़ा जाता है तो एक तरह से उसका छुटकारा हो जाता है, सारी जिम्मेवारी उस पर से हट जाती है यह चैन से कुछ देर आराम कर सकता है। मैंने तो यहां तक सुना है कि पकड़े जाने पर वे सचमुच खुश होते हैं। लेकिन युवा लोग जो निर्दोष हों जैसे लीदिया—उनके लिए तो पकड़े जाने का सदमा ही बहुत भयानक होता है। इसलिए नहीं कि जेल में आज़ादी नहीं होती, या खुराक बुरी मिलती है या हवा गन्दी होती है ये कोई बड़ी बात नहीं। असल बात तो यह है कि पहली बार पकड़े जाने पर उनको धक्का सा लगता है। अगर यह नैतिक सदमा न हो तो भले ही इनसे तिगुना यातनाएं उन्हें सहनी पड़ें, वे हंसते हंसते बरदाश्त कर सकें।'

"तो क्या आपको इसका अनुभव हो चुका है?"

"मुझे? मैं दो बार जेल जा चुकी हूं" मौसी ने कहा। उसके होठों पर एक मधुर, उदास सी मुस्कान आ गयी। "जब पहली बार मैं गिरफ्तार हुई तो मैंने कोई अपराध नहीं किया था। उस वक्त मेरी उम्र २२ बरस की रही होगी, मेरे एक बच्चा था और दूसरा होने वाला था। इसमें शक नहीं कि अपनी आजादी छिन जाने से, और अपने पति और बच्चे से बिछुड़ जाने का मुझे बेहद शोक हुआ। पर जो शोक मुझे यह जान कर हुआ कि अब मैं इन्सान नहीं रही बल्कि एक चीज़ बना दी गई हूं, वह असह्य था। मैं अपनी नन्ही बच्ची को आखिरी बार चूमना चाहती थी। मुझे कहा गया कि जाओ और जा कर गाड़ी में बैठ जाओ। मैंने पूछा कि मुझे कहां ले जाया जा रहा है? जवाब मिला कि जब वहां पहुंचोगी तो अपने आप पता चल जायेगा। मैंने पूछा कि मेरा अपराध क्या है। कोई जवाब नहीं मिला। फिर मेरी पूछताछ हुई, मेरे कपड़े उतार कर उन्होंने मुझे कैदियों के कपड़े पहना दिये जिन पर नम्बर लगे होते हैं। इसके बाद वे मुझे एक महराबदार तहखाने की ओर ले गये, और एक दरवाजा खोल कर मुझे अन्दर धकेल दिया, फिर दरवाज़े पर ताला चढ़ा कर वहां से चले गये। मैं अकेली रह गई। दरवाज़े के बाहर एक सन्तरी, बन्दूक उठाये, पहरा दे रहा था। किसी किसी वक्त वह रुक कर दरार में से अन्दर झांक कर देखता। मैं बेहद दुःखी हो उठी। एक बात मुझे बहुत अजीब लगी। राजनीतिक पुलिस के जिस अफसर ने मेरी जांच की थी, उसी ने मुझे एक सिगरेट भी पीने के लिए दिया था। इसका मतलब है कि उसे मालूम था कि लोगों को सिगरेट पीने की चाह होती है। अगर यह मालूम था तो यह भी मालूम होगा कि उन्हें आज़ादी और दिन के उजाले की भी चाह होती है, माताओं को अपने बच्चों की और बच्चों को अपनी माताओं की चाह होती है। तो फिर क्या कारण है उन लोगों ने इतनी बेरहमी के साथ मुझे उन सब चीज़ों से वंचित कर के जो मुझे प्रिय थीं, एक जंगली जानवर की तरह जेल की कोठरी में बन्द कर दिया? लाज़िमी था कि इस प्रकार के अनुभव का बुरा असर मुझ पर पड़ता। जिस किसी का भी भगवान् तथा इनसान में विश्वास हो और वह मानता हो कि मनुष्यों का एक दूसरे से प्रेम होता है, ऐसे अनुभव के बाद उसका विश्वास टूट जायेगा। उस दिन के बाद मेरा मानवीयता पर से ही विश्वास

उठ गया है और मन म कटुता आ गई है," उसने अत म मुस्करा कर कहा।

लीदिया की मा उसी दरवाज़े म म लौट कर आई जिसमे स लीदिया भाग कर गयी थी, और आ कर कहन लगी कि लीदिया बेहद परेशान है और लाट कर यहा नहीं आ पायगी।

"इस तरण जीवन का क्या नष्ट किया गया है?" मौसी न कहा। "मुझे सबसे बढ कर इस बात का दुख है कि अनजाने म मैं ही इसका कारण बनी।"

"इसे गाव भेज देंगे। भगवान की दया स वहा चगी हो जायेगी," लीदिया की मा ने कहा। "वहा इसका बाप है।"

"अगर आपन मदद न की हाती ता यह तो मर मिट जाती," मौसी ने कहा। "हम पर आपने बहुत बडा एहसान किया है। पर जिस काम के लिए मैने आपको तकलीफ दी है, वह कुछ और है। मैं एक चिट्ठी वेरा के नाम भेजना चाहती हू, क्या आप यह चिट्ठी उस तक पहुचा सकेंगे?" यह कहते हुए उसने जेब मे स एक लिफाफा निकाला। "मैंने लिफाफे को बन्द नही किया है। आप इसे पढ ले, और मन आये तो उसके हाथ मे दे दें और जो मन न आये तो इसे फाड डाले जसा भी आप ठीक समझे," उसने कहा, "इसमे कोई भी ऐसी बात नही है जिससे किसी को खतरा पहुच सके।"

नेख्लदोव ने चिट्ठी ल ली और आश्वासन दिया कि वह उस वेरा को दे देगा। इसके बाद वह विदा लेकर वहा से चला गया।

रास्ते मे उसने चिट्ठी को बिना पढे बन्द कर दिया, और निश्चय किया कि उसे ज़रूर पहुचा देगा।

२७

पीटसबग म नेख्लूदोव के सब काम समाप्त हो चुके थे, केवल एक ही काम करना बाकी रह गया था, वह था सम्प्रदाइया की दरख्वास्त ज़ार तक पहुचाना। यह काम वह अपने भूतपूव साथी अफसर, एड डि-कप बोगातिर्योव के द्वारा करवाना चाहता था। सुबह हाने ही यह बोगातिर्योव

वे घर जा पहुचा। बोगातिर्योव बाहर जाने के लिए तैयार था और उस समय नाश्ता कर रहा था। यह व्यक्ति ऊचा लम्बा तो नही था लेकिन इसका शरीर खूब गठा हुआ और बेहद मज़बूत था (यह घोड़े की नाल का हाथो से मोड सकता था)। स्वभाव का दयालु ईमानदार, निष्कपट और उदार पुरुष था। इन गुणो के बावजूद राज-दरबार स उसका घनिष्ठ सम्बध था और ज़ार तथा ज़ार के परिवार से बडा प्रेम था। इतनी ऊची सोसाइटी मे रहने हुए भी उसने ऐसा दृष्टिकोण अपना रखा था जिससे उसे इस सोसाइटी की अच्छाइया ही अच्छाइया नज़र आती थी। इसकी बुराइयो और भ्रष्टाचार से दूर रहता था। यह अपने म एक विचित्र स्थिति थी। वह कभी भी किसी व्यक्ति अथवा किसी भी कारवाई की निन्दा नही करता था। या तो चुप रहता, या फिर बडी ऊची, गूजती आवाज़ मे जो भी इसे कहना होता वह डालता। हसता भी तो इसी अदाज से, खब ठहाका मार कर। इसका यह व्यवहार कटनीतिज्ञ हाने के कारण नही था बल्कि उसका स्वभाव ही ऐसा था।

"बहुत अच्छा किया जो चले आये। नाश्ता करोगे? आओ बैठो, बीफ़स्टेक बहुत अच्छे बने हैं। नाश्ता करते वक्त मैं सबसे पहले जरूर कोई ठोस चीज़ खाता हू। और आखिर मे भी। हा हा हा! और नही ता थोडी शराब पी ला," क्लैरेट शराब की सुराही की ओर इशारा करते हुए उसने ऊची आवाज मे कहा। "मैं तुम्हारे बारे म सोचता रहा हू। मैं दरख्वास्त दे दूगा, मैं खुद ज़ार के हाथ मे दगा, विश्वास रखो। हा, पर मुझे यह ख्याल आया कि अगर तुम पहले तोपोरोव से मिल लो तो बहुत अच्छा होगा।"

तोपोरोव का नाम सुनते ही नेख्लूदोव की भवें चढ गयी।

"सारी बात उसी पर निर्भर करती है। ज़ार उससे परामर्श ज़रूर करेंगे। और क्या मालूम वह अपने आप ही तुम्हारा काम कर दे।"

"अगर तुम्हारी यही सलाह है तो मैं उससे जा कर मिल लेता हू।"

"मैं तो यही ठीक समझता हू। अच्छा अब बताओ पीटसबर्ग तुम्हे कैसा लगा?" बोगातिर्योव ने अपनी अक्खड, ऊची आवाज़ म पूछा, "बताओ, बताओ।"

"लगता है मैं तो होश म नही हू," नेख्लूदोव ने जवाब दिया।

"होश म नही हो!" बोगातिर्योव ने दोहरा कर कहा और ठहाका

मार कर हस पडा। "तुम कुछ भी नही खाग्रोगे क्या? जैसी तुम्हारी मर्जी," और उसने नैप्किन से अपनी मूछे पोछी। "तुम तोपारोव से मिलोग न? अगर वह तुम्हारा काम नही करे तो दरख्वास्त मुझे दे जाना, और मैं कल ही जार के हाथ मे दे दूगा," खूब ऊची आवाज़ म उसने कहा और उठ खडा हुआ। फिर उसने छाती पर क्रास का चिन्ह बनाया—उसी लापरवाही से जिस लापरवाही से उसने अपना मुह पोछा था—और कमर म तलवार बाधने लगा। "तो ख़ुदा-हाफिज़, मुझे जाना है।"

"मुझे भी जाना है," नख्लूदोव ने कहा और उसके साथ साथ चलता हुआ घर के बाहर निकल आया, और दरवाज़े पर उससे हाथ मिला कर अलग हो गया। बोगातिर्योव के चौडे, मजबूत हाथ से हाथ मिलाकर नेख्लूदोव को ख़ुशी हुई, मानो किसी ताजा और स्वस्थ चीज़ के साथ उसका सम्पर्क हुआ हो।

तापोरोव से मिलने का कुछ लाभ होगा, नेख्लदोव को ऐसी कोई उमीद न थी। पर बोगातिर्योव के परामर्श का अनुकरण करते हुए वह तोपारोव के घर की ओर चल दिया। सम्प्रदाइयो का भाग्य इसी आदमी पर निर्भर था।

तोपोरोव के पद पर केवल वही आदमी बैठ सकता था जो मन्दबुद्धि और नीच प्रकृति का हो क्योकि उस पद के उद्देश्य म ही विरोधाभास पाया जाता था। ये दोनो नकारात्मक गुण तोपोरोव मे विद्यमान थे। विरोधाभास यह था चर्च की अपनी घोषणा के अनुसार चर्च की स्थापना स्वय भगवान् ने की है। अत इसे न इसान की शक्ति और न शैतान की ताकत अपनी जगह से हिला सकती है। इसी चर्च को कायम रखना और उसकी रक्षा करना तोपोरोव का काम था और इस फर्ज को निभाने के लिए वह कोई भी साधन इस्तेमाल कर सकता था, हिसा तक का प्रयोग कर सकता था। भगवान द्वारा स्थापित इस दैवी तथा अविकल सस्था का कायम रखना तथा उसकी रक्षा करना एव मानवी सस्था के हाथ मे था जिसे पावन सिनाड कहते हैं। और इस सस्था का सचालन तोपोरोव तथा उसके कर्मचारी करते थे। यही विरोधाभास था और यह तोपोरोव को नज़र नही आता था न ही वह इसे देखना चाहता था। अत उसे सदा इस बात की चिन्ता रहती कि कोई रोमन कैथोलिक पादरी, कोई गिरजे का अध्यक्ष-पादरी या कोई सम्प्रदायवादी इस चर्च का नाश

ने कर दे जिसका नारकीय शक्तियां भी कुछ विगाड नही सकती थी। धर्म का सार इस भावना मे निहित है कि सब मनुष्य एक समान हैं और एक दूसरे के भाई-भाई हैं। परन्तु तोपोरोव को यह भावना छू तक न गई थी। अपने ही जैसे और लोगो की तरह उसे पूर्ण विश्वास था कि उसमे और साधारण लोगो मे आकाश-पाताल का अन्तर है। जिन चीजो की उन्हें जरूरत है, उनकी उसे कोई जरूरत नही। पर सच तो यह है कि उसे किसी चीज मे भी विश्वास नही था और इस स्थिति म वह बडे चैन और सुख से रह रहा था। पर उसे डर था कि कही और लोग भी उस जैसी स्थिति मे न पहुच जाय। इसलिए उनकी आत्मा की रक्षा करना वह अपना परम धर्म समझता था।

पाक-कला की किसी पुस्तक मे लिखा है कि केकडो को यदि जिन्दा उबाल कर पकाया जाय तो उन्हे बडा अच्छा लगता है। ऐसी ही तोपोरोव का भी मत था। उसका भी यही कहना था कि जनता को अन्धविश्वास के गर्त म रहना अच्छा लगता है। भेद केवल यह था कि पाक-कला की पुस्तक मे यह लाक्षणिक अर्थ मे लिखा था और तोपोरोव इसे वास्तविक सत्य समझता था।

जिस धर्म की रक्षा तोपोरोव कर रहा था, उसके प्रति उसका रवैया वैसा ही था, जैसा एक मुर्गी पालक को मुर्गियो को खिलाये जाने वाले मुर्दा पशुओ के मास के प्रति होता है मुर्दा पशुओ के मास से उसे घिन होती है, लेकिन मुर्गिया उसे शौक से खाती है, इसलिए उसे वह मास उन्हे खिलाना चाहिए।

नि:सन्देह माता मरियम की इवेरियाई, कज़ान तथा स्मालेन्स्क की प्रतिमाओ की आराधना करना मूर्तिपूजा है, और कुछ नही, लेकिन लोगो को मूर्तिपूजा अच्छी लगती है, उनका इसमे विश्वास है, इसलिए लाज़िमी है कि इस अन्धविश्वास को कायम रखा जाय। तोपोरोव का यही तर्क था। वह यह नही सोचता था कि लोगो को यदि अन्धविश्वास मे रहना पसन्द है तो उसका एक कारण है। ससार म हमेशा से ऐसे जालिम आदमी रहते चले आये है, और अब भी हैं—और तोपोरोव उन्ही मे से एक था—जो स्वय रोशन दिमाग होते हुए भी और लोगो को अज्ञान के गर्त म से नही निकालते। वल्कि इसके विपरीत उन्हे इस गर्त मे और भी गहरा धकेलते हैं।

जिस समय नेख्लूदोव ने प्रतीक्षा कक्ष मे कदम रखा उस समय तापोराव अपने दफ्तर मे बैठा मठ की प्रधान महन्तिन से बाते कर रहा था। यह महिला किसी कुलीन घराने की स्त्री थी और स्वभाव की बडी सजीव। पश्चिमी रूस मे आॅर्थोडॉक्स धम का प्रचार कर रही थी। इस क्षेत्र क लोगो को जबरन् आॅर्थोडॉक्स धम का अनुयायी बनाया जा रहा था।

प्रतीक्षा-कक्ष म एक कमचारी बठा था। उसने नेख्लूदोव से पूछा कि वह किस काम से मिलने आया है। जब उसे पता चला कि नख्लूदोव के पास ज़ार के नाम एक दरख्वास्त है तो उसने पूछा कि क्या वह इस दरख्वास्त को पढने के लिए दे सकता है। नेख्लूदोव ने दरख्वास्त उसके हाथ मे दे दी, और कमचारी उसे अन्दर ले गया। प्रधान महन्तिन सिर पर कनटोप और बदन पर महन्तिनो का लम्बा जामा पहन जो उसक पीछे पीछे फश पर घिसटता जा रहा था, और गोरे गोरे हाथो मे (जिन के नाखनो को खूब बनाया सवारा गया था) पुखराज के मनको की माला पकडे दफ्तर मे से निकली, और चलती हुई सीधी घर से बाहर चली गई। नेख्लूदोव को उसी समय अन्दर नही बुलाया गया। दफ्तर के अन्दर बैठा तोपोरोव दरख्वास्त पढ रहा था और बार बार सिर हिला रहा था। दरख्वास्त बडे स्पष्ट और प्रभावशाली शब्दो म लिखी थी। इससे उस हैरानी भी हुई, और कुछ कुछ अप्रिय भी लगा।

"अगर यह ज़ार के हाथ मे चली गई तो इससे कई प्रकार की गलतफहमिया पैदा हो सकती है, कई आडे सवाल पूछे जा सकत है," वह पढते पढते सोच रहा था। उसने दरख्वास्त को मेज पर रखा, घण्टी बजाई और नेख्लूदोव को अन्दर भेजने का हुक्म दिया।

उसे सम्प्रदाइयो के मुकद्दमे का पता था। उनकी ओर से पहले भी उसे एक दरख्वास्त मिली थी। मामला इस तरह था। ये सम्प्रदाई ईसाई धम के मानने वाले थे लेकिन आर्थोडॉक्स मत पर से उनका विश्वास उठ गया था। पहले तो उन्हे वापस लान का यत्न किया गया, उन्हे बडे उपदेश दिये गये, लेकिन जब वे न मान तो उन पर मुकद्दमा चलाया गया। लेकिन व बरी हो गये। इसके बाद लाट-पादरी और गवनर ने परामश किया, और इस मिथ्या तक के आधार पर कि उनकी शादिया गैर-कानूनी हैं, इन सम्प्रदाइयो—पतियो, पत्नियो और बच्चो को—अलग अलग स्थानो पर निर्वासित कर दिया। इस तरह य आदमी अपने बीवी

बच्चो स अलग कर दिये गय। अब पत्नियाँ और पति दरख्वास्त कर रहे थे कि उन्हें या एक दूसरे से अलग न किया जाय। तोपोरोव को याद आया कि पहले जब उसे इस मामले का पता चला तो इसकी इच्छा हुई थी कि इसे वही पर रोक दिया जाय, लेकिन वह द्विविधा म पड गया था। फिर उसने यही ठीक समझा कि इस निर्णय का समर्थन कर देने का और इस तरह एक एक परिवार के लोगो का एक दूसरे से अलग कर के निर्वासित कर देने का कोई दुष्परिणाम नही होगा। इसके विपरीत यदि इन्हें निर्वासित नही किया गया तो इसका बहुत बुरा प्रभाव उन लोगो पर पडेगा जो इन्ही किसान-सम्प्रदाइयो के आस-पास रहते है। वे लोग आर्थोडॉक्स मत स विमुख होने लगेंगे। साथ ही इस मामले म लाट-पादरी ने अपना धर्मानुराग दिखाया था। इसलिए तोपोरोव ने हस्तक्षेप नही किया और जैसा निर्णय हुआ था उसी के अनुसार इसे चलने दिया।

पर अब स्थिति कुछ और हो गई थी। तोपोरोव ने देखा कि नेख्लूदोव ने इन सम्प्रदाइयो का पक्ष ल लिया है और इस आदमी का पीटसबर्ग म काफी रसूख है। सम्भव है ज़ार के कान म यह बात कही जाय कि बहुत बडा जुल्म हुआ है, या इस मामले की रिपोर्ट विदेशी अखबारो मे जा छपे। इसलिए तोपोरोव ने फौरन अपना निश्चय बदल लिया, जिसकी पहले आशा नही की जा सकती थी।

"नमस्ते" उसने खडे हो कर नेख्लूदोव को इस ढग से स्वागत किया मानो बहुत ही व्यस्त रहने वाला आदमी हो और उसे सिर उठाने की फुर्सत न हो, और सीधा काम की बात करने लगा।

"मुझे यह मामला मालूम है। ज्यो ही मैंने दरख्वास्त म लिखे नाम पढे तो मुझे सारा किस्सा याद आ गया। बडी अफसोसनाक बात है," दरख्वास्त नेख्लूदोव को दिखाते हुए तोपोरोव ने कहा। "मैं आपका आभारी हू कि आपने मुझे यह बात याद करा दी। इस मामले म प्रान्तीय अधिकारियो ने ज़रूरत से ज्यादा उत्साह से काम लिया है।" नेख्लूदोव चुपचाप खडा तोपोरोव के चेहरे की ओर देख रहा था। चेहरा पीला और गतिहीन था मानो नकाब हो। नेख्लूदोव के मन म इस आदमी के प्रति कोई सदभावना नही थी। 'मैं हुक्म जारी कर दूगा कि इस निर्णय को रद्द किया जाय और लोगो को फिर से अपने अपने घरो म बसा दिया जाय।

"इसका मतलब है मुझे दरख्वास्त देने की कोई जरूरत नही रहेगी?"

"मैं आपको यकीन दिलाता हू और इस बात का वचन देता हू," मैं शब्द पर जोर देते हुए तोपोरोव ने कहा। ज़ाहिर है उसे इस बात का विश्वास था कि उसकी ईमानदारी और उसके वचन से बढ कर विश्वसनीय कुछ नही हो सकता। "सबसे अच्छा यही होगा कि इसे मैं अभी लिख दू। आप तशरीफ रखिये।'

वह एक मेज़ के सामने जा कर बैठ गया और आदेश लिखने लगा। नेख्लूदोव कुर्सी पर नही बैठा, बल्कि खडे खडे सकरी, गजी खोपडी की ओर तथा उस स्थूल हाथ की ओर देखने लगा जिसकी नीली नीली शिराए साफ नज़र आ रही थी और जो तेज़ तेज कागज पर कलम चला रहा था। नेख्लूदोव मन ही मन सोच रहा था कि क्या कारण है यह पत्थर दिल आदमी यह काम करने लगा है, और वह भी इतनी सावधानी के साथ।

"लीजिये, यह रहा,' लिफाफे पर मोहर लगाते हुए तोपोरोव ने कहा, "आप बेशक अपने मुवक्किलो को इसकी सूचना दे दीजिये।" और उसने अपने होठ फैलाए, मानो मुस्कराने की चेष्टा कर रहा हो।

"इन लोगो को इतने दु ख क्यो झेलने पडे हैं?" हाथ मे लिफाफा लेते हुए नेख्लूदोव ने पूछा।

तोपोरोव ने सिर ऊपर उठाया और मुस्करा दिया, मानो नेख्लूदोव का सवाल सुन कर उसे ख ुशी हो रही हो।

"यह मैं नही बता सकता। मैं इतना कह सकता हू कि धार्मिक मामलो मे अत्यधिक उत्साह दिखाना इतना खतरनाक या हानिकारक नही जितना कि उदासीनता जो आजकल इतनी फैल रही है। आप समझ सकते हैं कि जनता की हित रक्षा का हमारे लिए बडा महत्व है।"

"परन्तु क्या कारण है कि धर्म के नाम पर सदाचार के सर्वोपरि नियमो को भग किया जाता है–परिवार के सदस्यो को एक दूसरे से अलग किया जाता है?'

तोपोरोव मुस्कराये जा रहा था, एक कृपालुता भरी मुस्कान, ज़ाहिर है वह यही सोच रहा था कि नेख्लूदोव के ख्यालात बडे अजीब है। जो कुछ भी नेख्लूदोव कहता उसी के बारे मे तोपोरोव की यही राय होती कि ख्याल है तो बडा अजीब और एक-तरफा, परतु बातो को ठीक समझने के

लिए एक विस्तृत राजनीतिक दृष्टिकोण की जरूरत है जो कि उसी आदमी का हो सकता है जो मेरी तरह बुलन्दी पर खड़ा हो।

"व्यक्तिगत रूप से एक अलग आदमी को बात या नजर आ सकती है," वह कहने लगा, 'लेकिन राज्य की दृष्टि से देखने पर बात और बन जाती है। अच्छा, तो माफ कीजिये मैं ज्यादा देर आपको रोकना नही चाहता," तोपोरोव ने कहा और सिर झुका कर हाथ आगे बढ़ा दिया।

नेख्लूदोव ने चुपचाप हाथ मिलाया और तेज तेज कदम रखता हुआ बाहर निकल आया। उसे अफसोस हो रहा था कि उस शख्स के साथ क्यों हाथ मिलाया।

"जनता के हित!" उसने तोपोरोव के शब्द दोहराये। 'सब तेरे हित है, अकेले तेरे हित!" बाहर जाते हुए नेख्लूदोव मन ही मन कह रहा था।

एक एक कर के नेख्लूदोव की आखो के सामने वे व्यक्ति आने लगे जिनकी हित रक्षा उन सस्थाओ द्वारा हुई है जो न्याय पालन करती हैं और धर्म तथा शिक्षा की अलम्बरदार हैं। वह स्त्री जिसे गैरकानूनी शराब बेचने की सजा दी गई। उस लडके को चोरी करने की, उस आवारा आदमी को आवारा घूमने की, आग लगाने वाले को आग लगाने की बैंकर को गबन की और उस कम्नसीब लीदिया शूस्तोवा को महज इसलिए सजा दी गई कि शायद इससे कोई जरूरी सूचना मिल सके। फिर उसे सम्प्रदाइयो का ख्याल आया जिन्हे इसलिए सजा दी गई कि उन्होने ऑर्थोडॉक्स मत छोड दिया गुर्केविच को इसलिए कि वह चाहता था कि देश मे सावैधानिक सरकार हो। नेख्लूदोव को साफ नजर आ रहा था कि इन लोगो को जो तरह तरह की सजाए दी गई—जेल, हिरासत, निर्वासन—वो इसलिए नही कि इन्होने न्याय का उल्लघन किया था या अवैध व्यवहार किया था बल्कि केवल इसलिए कि ये उन सरकारी अफसरो और धनी लोगो के रास्ते मे रुकावट डाल रहे थे, जो उस सम्पत्ति का उपभोग करना चाहते है जो उन्होने जनता के हाथ से छीन रखी है।

वह स्त्री जो लाइसेंस के बिना शराब बेचती है, वह चोर जो शहर मे भटकता फिरता है, लीदिया शूस्तोवा जो घोषणापत्र छिपाये फिरती है, सम्प्रदायवादी जो अधविश्वास तोड रहे है, और गुर्केविच जो सविधान चाहता है, ये लोग सचमुच रुकावट डालने वाले है। नेख्लूदोव को साफ

नज़र आ रहा था कि सभी अफसर—उसके अपने मौसा से ले कर, सनटरा, तोपोरोव, तथा उन साफ-सुथरे, रोबदार कर्मचारियों तक जो मन्त्रालयों में मेज़ों के सामने बैठे होते हैं—इन सब लोगों को इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि बेगुनाह लोग दुख झेल रहे हैं, उन्हें केवल इस बात की चिन्ता थी कि सचमुच के खतरनाक लोगों को किस तरह रास्ते में से हटाया जाय।

नियम तो यह है कि किसी हालत में भी किसी निर्दोष आदमी को सज़ा न मिले, भले ही इससे दस मुजरिम बच निकलें। मगर यहां तो इसके उलट हो रहा है। एक सचमुच के खतरनाक आदमी से पिण्ड छुड़ाने की खातिर दस ऐसे आदमियों को सज़ा दी जाती है जो बिल्कुल निर्दोष हैं। यह तो वैसा ही हुआ जैसे किसी चीज़ का गला-सड़ा भाग काटते समय, आप चंगे भले हिस्से को भी साथ में काट डालें।

प्रश्न की यह व्याख्या नेख्लूदोव को बड़ी सीधी-सादी और स्पष्ट जान पड़ी। लेकिन इसकी अत्यधिक सरलता और स्पष्टता के ही कारण वह उसे स्वीकार करने से हिचकिचा रहा था। क्या यह सम्भव है कि इतनी उलझी हुई स्थिति की इतनी सीधी-सादी और भयानक व्याख्या हो? क्या यह सम्भव है कि न्याय, कानून, धर्म, भगवान् के बारे में जो इतना कुछ कहा जाता है वह केवल मात्र शब्दाडम्बर है, और उसके पीछे घृणित धन लोलुपता तथा अत्याचार छिपा हुआ है?

२८

नख्लूदोव उसी दिन शाम को पीटर्सबर्ग से चला जाता लेकिन उसने मेरियेट को वचन दे रखा था कि वह उसे थियेटर में मिलने ज़रूर आयेगा। अतः यह जानते हुए भी कि उसे यह वचन नहीं निभाना चाहिए वह मन ही मन यह कह कर अपने को धोखा देता रहा कि दिये गये वचन का पालन करना उसका कर्तव्य है।

"क्या मुझमें इन प्रलोभनों का मुकाबला करने की क्षमता है?" उसने अपने आपसे पूछा। लेकिन यह सवाल सच्चे दिल से नहीं पूछा गया था। "मैं अन्तिम बार आज अपना इम्तहान लूंगा।

शाम का लिबास पहन वह थियेटर जा पहुचा। उस समय नाटक का दूसरा ऐक्ट चल रहा था। वही नाटक था—"Dame aux camelias' जो हमेशा दिखाया जाता था जिसमे एक विदेशी अभिनेत्री फिर एक वार और नये ढग से यह दिखाने की चेष्टा करती थी कि तपेदिक की रोगी स्त्रिया कैसे जान देती है।

थियेटर काफी भरा हुआ था। नेख्लूदोव के पूछने पर फौरन और बडे अदब से उसे मेरियेट का बॉक्स दिखा दिया गया।

बॉक्स के बाहर, बरामदे म, एक बावर्दी नौकर खडा था। नख्लूदोव को देख कर उसने झुक कर अभिवादन किया मानो नेख्लूदोव को जानता हो, और बॉक्स का दरवाजा खोल दिया।

हॉल के दूसरी तरफ लोग बॉक्सो मे बैठे या खडे थे। इसी तरह हाल मे भी, और स्टेज के नजदीक भी। तरह तरह के लोग थे—किसी के सिर के वाल सफेद, किसी के खिचडी, कोई गजा, किसी के बाल घुघराले—सभी तल्लीन हा कर स्टेज पर आखें गाडे थे जिस पर दुबली पतली अभिनेत्री रेशमी और जालीदार कपडा म सजी धजी, और बडी अस्वाभाविक आवाज मे बोलती हुई स्टेज पर इधर-उधर ऐंठती हुई आ जा रही थी।

दरवाजा खुलन पर किसी न "श श श!" का शब्द किया। उसी वक्त हवा के दो झोके एक साथ नेख्लूदोव के मुह पर आ लगे—एक गरम और दूसरा ठण्डा। वाक्स मे मरियट और उसके जनरल पति के अलावा दो व्यक्ति और बठे थे—एक स्त्री और एक पुरुष। स्त्री ने लाल रग का केप पहन रखा था और सिर पर बोझल सा केश विन्यास बनाये थी। नेख्लूदोव उसे नही जानता था। पुरुष गोरे रग का था, जिसन मुह पर घने गल-मुच्छे उगा रखे थे, और गल-मुच्छो के बीच ठोडी की छोटी सी जगह मुडी हुई थी। जनरल ऊचा-लम्बा रूपवान पुरुष था, चेहरे से कठोरता तथा अगम्यता झलक रही थी, नाक रोमन ढग का और वर्दी म छाती के आस पास का हिस्सा गद्दिया दे कर फुलाया हुआ था।

नेख्लूदोव के अन्दर पहुचने पर मेरियेट न फौरन मुड कर उसकी ओर देखा, और मुस्करा दी। इस मुस्कराहट मे स्वागत तथा कृतज्ञता का भाव था, और साथ ही, नेख्लूदोव को लगा, जैसे उसमे एक और इशारा भी छिपा था। छरहरा, सुडौल वदन, कमनीय भाव भगिमा, मेरियेट नीचे गले की पोशाक पहने हुए थी, जिससे उसके सुडौल, गठे हुए, ढलुए कन्धे

तथा गर्दन के पास एक छोटा सा काला तिल नज़र ग्रा रहे थे। हाथ म उसने पखा उठा रखा था जिससे उसने नेख्लूदोव को अपने ऐन पीछे की कुर्सी पर बैठ जाने का इशारा किया।

मेरियेट का पति हर काम चुपचाप करने का आदी था। नेख्लूदोव की ओर भी उसने चुपचाप देखा और झुक कर अभिवादन किया। पति पत्नी की आखें मिली। पति की आखो मे वही भाव था जो एक ऐसे पुरुष की आखो मे होता है जो एक सुन्दर स्त्री का मालिक हो।

स्टेज पर अभिनेत्री का एकालाप समाप्त हुआ। हॉल तालियो से गज उठा। मेरियेट उठ खडी हुई और हाथो से अपनी रेशमी स्कर्ट को पकडे हुए बाक्स के पिछले हिस्से मे गई और नेख्लूदोव का अपने पति से परिचय कराया। जनरल की आखें अब भी मुस्करा रही थी। उसने कहा कि वह बहुत खुश है और फिर उसके चेहरे पर वही पहले सी दुर्बोध चुप्पी छा गई।

"मैं तो आज ही पीटर्सबर्ग से जाने वाला था, लेकिन मैंने आपको वचन दे रखा था," नेख्लूदोव ने मेरियेट से कहा।

"अगर मुझे मिलने का शौक नही है तो कम से कम एक अच्छी अभिनेत्री को तो देख पाओगे," नेख्लूदोव के शब्दो का मतलब समझ कर उनका जवाब देते हुए मेरियेट बोली। "पिछले सीन म उसने कितना बढिया काम किया है?" अपने पति को सम्बोधित करते हुए उसने कहा।

पति ने सिर हिला कर समर्थन किया।

"इस तरह के दृश्यो का मुझ पर कोई असर नही होता," नेख्लूदोव ने कहा। "मैंने असल यातनाओं के इतने हृदयविदारक दृश्य देखे है कि "

"बैठो, बैठो, बताओ मुझे।"

पति भी कान लगा कर सुनने लगा। उसकी आखे अब भी मुस्करा रही थी, और उनम व्यग का भाव उत्तरोत्तर बढ रहा था।

"आज मैं उस औरत से मिलने गया था जिसे रिहा किया गया है। बडी मुद्दत तक उसे जेल मे रखा गया था। उसका उन्होने बुरा हाल किया है।"

"यह वही औरत है जिसका मैंने आपसे जिक्र किया था ' मेरियेट ने अपने पति से कहा।

"हा हा, मुझे इस बात की बडी खुशी है कि उसे रिहा किया जा

सका," पति ने सिर हिलाते हुए, धीमी आवाज म कहा। मूछो के नीचे उसके होठ मुस्करा रहे थे और नेख्लूदोव को लगा जैसे उस मुस्कराहट म व्यग भरा हो। "मैं बाहर जा कर जरा सिगरेट पी आऊ।"

नेख्लूदोव इस इन्तजार म था कि अब मेरियेट वह महत्वपूण बात उसे बतायेगी जिसका कल उसने जिक्र किया था। पर मेरियेट ने कुछ नही कहा, उसकी चर्चा तक नही की, बल्कि सारा वक्त हस हस कर अभिनय की ही बाते करती रही। कहने लगी कि इस अभिनय का तो जरूर नेख्लूदोव के दिल पर असर होना चाहिए था।

नेख्लूदोव को पता चल गया कि मेरियेट को कुछ भी नही बताना है। वह तो केवल अपनी पोशाक की सज धज से उसे प्रभावित करना चाहती थी, जिसे पहन कर वह अपने कधे और नन्हा सा तिल दिखा सकती थी। नेख्लूदोव के मन को यह अच्छा भी लगा और इससे घृणा भी हुई।

इस प्रकार के व्यवहार का पहले तो एक रगीन पर्दा सा ढके रहता था जो नेख्लूदोव को सुन्दर लगता था। आज भी वह पर्दा मौजूद था लेकिन नेख्लूदोव को उसके पीछे की असलियत नजर आ गई थी। मेरियेट के सौदय से वह अब भी अभिभूत हुआ जाता था, लेकिन साथ ही उसे इस बात का भी एहसास था कि वह एक झूठी औरत है। उसका पति सैकडो-हजारो लागो को खून के आसू रुला कर एक बडे ओहदे से दूसरे बडे ओहदे पर तरक्की करता जा रहा था, और मेरियेट इसके प्रति बिल्कुल उदासीन थी। जो कुछ भी उसने कल रोज नेख्लूदोव से कहा था वह झूठा दिखावा था। वह केवल एक ही बात चाहती थी कि नेख्लूदोव उसके प्रेम-जाल मे फस जाय—और इस इच्छा का कारण न वह खुद जानती थी, न नेख्लूदोव जानता था। नेख्लूदोव इस व्यवहार के प्रति आकर्षित भी हुआ पर साथ ही उसका मन घृणा मे भी भर उठा। कई बार उसने विदा लेने के लिए अपनी टोपी उठायी, मगर फिर भी बैठा रहा।

मेरियेट का पति लौट कर आया। उसकी घनी मूछो से तम्बाकू की तेज गध आ रही थी। अन्दर आ कर उसने नेख्लूदोव की ओर इस नजर से देखा मानो उसे पहली बार देख रहा हो। उसकी आखो म कृपालुता और घृणा दोनो का भाव था। आखिर नेख्लूदोव उठ खडा हुआ और बॉक्स का दरवाजा बन्द होने से पहले ही बाहर निकल आया, अपना ओवरकोट लिया और थियेटर म से बाहर हो गया।

नेव्स्की सडक के रास्ते नेख्लूदोव पैदल अपने घर की ओर जाने लगा। चौडी पटरी पर चलते हुए उसकी नज़र एक लम्बे, छरहरे बदन की औरत पर गई जो शोख भडकीले कपडे पहने चुपचाप उसके आगे आगे चली जा रही थी। औरत के चेहरे से तथा अंग अंग से पता चल रहा था कि उसे अपनी घृणित शक्ति का ज्ञान है। जो कोई भी उसके पास से हो कर जाता या सामने से आता, ज़रूर उसकी ओर देखता। नेख्लूदोव की रफ्तार उस स्त्री की रफ्तार से तेज़ थी, और उसके पास से गुज़रते हुए उसकी भी आखें अपने आप उठ कर उसके चेहरे पर गयी। औरत का चेहरा खूबसूरत था, शायद उसने पाउडर-सुर्खी भी लगा रखे थे। औरत नेख्लूदोव की ओर देख कर मुस्कराई और उसकी आखें चमक उठी। उस समय, अकारण ही, नेख्लूदोव को मेरियेट याद आ गई। यहा पर भी वही कुछ हुआ जसा कि थियेटर म हुआ था। नेख्लूदोव आकर्पित भी हुआ और उसका मन घणा से भी भर उठा।

तेज़ तेज़ चलता हुआ नेख्लूदोव उससे आगे निकल गया। उसे अपने आप पर क्रोध आने लगा था। इस सडक पर से हट कर वह मोर्स्काया की ओर घम गया, और बध पर जाने लगा। वहा पर वह रुक गया और सडक की पटरी पर टहलने लगा। इस अप्रत्याशित व्यवहार से ड्यूटी पर खडा सन्तरी भी कुछ हैरान सा हो गया।

"उस दूसरी औरत ने भी मेरी ओर इसी तरह मुस्करा कर देखा था, जिस वक्त मैंने बॉक्स के अन्दर कदम रखा था" वह सोच रहा था। "दोनो मुस्कराहटो का मतलब एक ही था। फरक केवल इतना है कि इसने अपनी बात सीधे दो-टूक शब्दो मे कह दी—'तुम मुझे चाहते हो? मैं हाज़िर हू। अगर नही चाहते तो अपना रास्ता पकडो।' दूसरी स्त्री दिखावा तो इस बात का करती थी कि उसे इसका ख्याल तक नही है, और वह बड़े ऊचे और सुसस्कृत स्तर पर रहती है, लेकिन मूल म बात वहा पर भी यही थी। यह कम स कम सच तो बोलती थी उस दूसरी का तो एक एक शब्द सफेद झूठ था। इसके अतिरिक्त यदि यह औरत ऐसा काम करती है तो विवश हो कर, जरूरत ने इसे मजबूर किया है। लेकिन दूसरी औरत अपने मनबहलाव के लिए उस कामना के साथ खिलवाड करती है, जो इतनी आकर्षक है कि मनुष्य को वशीभूत कर लेती है, पर साथ ही घृणित, और भयानक भी है। सडको पर भटकने वाली यह वेश्या उस गन्दे जल

की तलैया के समान है जिस पर वे लाग पानी पीने जाते हैं जिनकी प्यास उनकी घृणा से प्रबल हैं। वह दूसरी औरत जो थियेटर मे बैठी है, विप के समान है जो अदृश्य रूप से जिस चीज को भी छूती है उसी को विषैला वना देती है।" नेख्लूदोव को अभिजातो के प्रधान की पत्नी के साथ अपना वह मामला याद आ गया, और उसकी आखा के सामने लज्जाजनक स्मृति चित्र घूम गये। "मनुष्य की पाशविक वृत्ति अत्यन्त घृणास्पद चीज है," वह सोच रहा था। "पर जब तक यह नग्न रूप मे हमारे सामने आती रहती है हम आध्यात्मकता के ऊचे स्तर से इसकी ओर देखते हुए इससे घणा करते है। और मनुष्य उस पर काबू पाने मे समथ हो या उसकी वेगवती लहर मे वह जाय, अपने मे वह वही कुछ रहता है जो पहले था। परन्तु जव यही पाशविक वत्ति कविता तथा ललित भावना की ओढनी ओढ कर हमारे सामने आती है, और हमसे यह आशा करती है कि हम उसकी पूजा करे, तब हम पूणतया इसमे डूब जाते है, और काम वासना की पूजा करते है, और हम अच्छाई और बुराई का अन्तर नही देख सकते। वह स्थिति अत्यन्त भयानक होती है।"

यह तथ्य नख्लदोव को उतनी ही स्पष्टता से नजर आ रहा था जिस स्पष्टता से उसे अपन सामने राज प्रासाद, सन्तरी, किला, नदी, किश्तिया तथा स्टॉक एक्स्चेज की इमारत नजर आ रहे थे।

उत्तरी प्रदेशो मे गर्मी के मौसम मे राते अधेरी नही हुआ करती। आज की रात वैसी ही थी। सृष्टि पर रात्रि का शान्तिप्रद और सुखद अधकार नही था। एक तरह की उदास, मन्द सी रोशनी, न मालूम कहा से आ कर, आकाश म छायी थी। यही स्थिति नेख्लूदोव की आत्मा की थी। इस पर से भी अज्ञान का शान्तिप्रद अधकार उठ गया था। सब बात साफ थी। स्पष्ट था कि हर वह चीज जिसे महत्वपूण और श्रेष्ठ माना जाता था, नगण्य और घृणित हो उठी थी। यह भी स्पष्ट था कि इस चमक-दमक और ऐशो आराम के पीछे वही पुराने चिरपरिचित अपराध छिपे हुए हैं, जिनकी कोई सजा न थी, अपितु जिनकी जय-जयकार होती है और जिन्ह लोग अपनी समस्त कल्पना शक्ति से मनोहरतम रूप देते आये हैं।

वह चाहता था कि यह सव भूल जाय, इसकी ओर आख तक न उठाय लेकिन रह रह कर उसकी नजर उसी ओर जाती थी। वह उस

प्रकाश के स्रोत को नही देख सकता था जिसने इस सच्चाई का उसकी आत्मा के सामने प्रकट किया था, ठीक उसी तरह जिस तरह वह उस प्रकाश के स्रोत को नही देख पा रहा था जो इस समय पीटसबर्ग शहर पर छाया हुआ था। यह प्रकाश उसे मन्द, उदास तथा अस्वाभाविक लगता था फिर भी जिन जिन चीजो को यह प्रकाश उदभासित कर रहा था, उन्हें देखे बिना वह न रह सकता था। इसी कारण वह मन ही मन खुश भी था और चिन्तित भी।

२६

मास्को लौट कर नेख्लूदोव सीधा जेल के अस्पताल की ओर चल दिया। वह मास्लोवा को यह बुरी खबर सुना देना चाहता था कि सेनेट ने न्यायालय के निर्णय का समर्थन किया है और अब उसे साइबेरिया जाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

जार के नाम वकील ने एक दरख्वास्त तो तैयार कर दी थी और उसे नेख्लूदोव अपने साथ लेता भी आया था, ताकि उस पर मास्लोवा का दस्तखत करवा ले, लेकिन उसे इससे कोई आशा न थी। और अजीब बात यह थी कि मन ही मन वह चाहता भी नही था कि वह मजूर हो। कल्पना मे वह बहुत दिनो से यही सोच रहा था कि वह साइबेरिया म जायेगा और वहा जलावतन और सजायाफ्ता लोगो के साथ रहेगा। इस तरह सोचने की उसे आदत सी पड गई थी। अब उसके लिए ऐसी स्थिति की कल्पना करना कठिन हो रहा था कि अगर मास्लोवा बरी हो गई तो दोनो के जीवन का रुख क्या होगा। जिन दिनो अमरीका मे दास प्रथा प्रचलित थी, वहा के एक लेखक थोरो न लिखा था जिस देश मे गुलामी को कानून की छत्रछाया प्राप्त हो, वहा के किसी भी ईमानदार नागरिक के लिए एकमात्र शोभनीय स्थान जेल ही है। नेख्लूदोव को थोरो के ये शब्द याद आ गये। उसका भी यही विचार था, विशेषकर पीटर्सबर्ग का दौरा करने के बाद जहा उसने बहुत कुछ देखा था।

"ठीक है, रूस म भी इस समय एक ईमानदार आदमी के लिए एकमात्र शोभनीय स्थान जेल ही है," वह सोच रहा था। गाडी म जेल के पास पहुचते हुए और उसकी दीवारो के अदर जाते हुए नेख्लूदोव इस बात का स्पष्टत अनुभव भी कर रहा था।

अस्पताल के दरवाजे पर खडे दरबान ने नेख्लूदोव को पहचान लिया, और झट कहने लगा कि मास्लोवा अब यहा पर नही है।

"तो कहा पर है?"

"उसे वापस जेल म भेज दिया गया है।"

"उसे यहा से क्यो हटा दिया गया है?"

"हुजूर क्या बताऊ, इन लोगो को तो आप जानते है" दरबान बोला। उसके होठो पर घृणा भरी मुस्कान थी। "छोटे डाक्टर से आखें लडाने लगी थी। इसलिए डाक्टर ने वापस भिजवा दिया।"

नेख्लूदोव को अब तक इस बात का भास नही हुआ था कि मास्लोवा और उसकी मन स्थिति का उसके लिए कितना महत्व है। खबर सुनते ही वह सुन सा खडा रहा। उसे गहरा आघात पहुचा, जिस तरह किसी अप्रत्याशित और विकट दुर्भाग्य की खबर मिलने पर होता है। सबसे पहले तो उसने लज्जा का अनुभव किया। वह इस भ्राति म था कि मास्लोवा का चरित्र-परिवर्तन हो रहा है, और वह बेहद खुश था। अब उसकी स्थिति उसकी अपनी नजरो म ही उपहासजनक लगने लगी थी। मास्लोवा कहा करती थी कि मैं तुमसे कोई कुर्बानी नही मागती हू, मेरी भर्त्सना किया करती थी, रोया करती थी। नेख्लूदोव को लगा जैसे ये सब एक नीच औरत का तिरिया चरित्र था। वह इन हथकण्डो से उसे अपने हाथ मे नचाना चाहती थी और अपना उल्लू सीधा करना चाहती थी। पिछली बार जब वह उससे मिलने आया था तो मास्लोवा मे उसे ढिठाई का भास हुआ था। यत्रवत् सिर पर टोपी रखते हुए जब वह अस्पताल से बाहर जाने लगा तो यह विचार उसके मन मे कौंध सा गया।

"अब मैं क्या करू? क्या मैं अब भी उसके साथ बधा हुआ हू? उसकी इस करतूत के बाद क्या मैं आजाद नही हो गया हू?" उसने अपने आपसे पूछा।

मन ही मन वह मास्लोवा को उसके किये की सजा देना चाहता था। लेकिन जब ये सवाल उसके मन मे उठे तो वह फौरन् समझ गया कि अगर वह अपने का आजाद समझे और मास्लोवा से किनारा कर ले तो वह उसे नही, अपने को सजा दे रहा होगा। यह सोच कर उसका मन त्रस्त हो उठा।

"नही, इस घटना से मेरा निश्चय शिथिल पडने के बजाय और भी

दृढ होना चाहिए। उसकी मन स्थिति उसे जिस ओर ले जाना चाहती है, ले जाय। अगर वह छोटे डाक्टर से आँखें लडाना चाहती है तो लडाये, यह उसका अपना काम है, मेरा इसके साथ कोई वास्ता नही। मुझे अपनी अंतरात्मा के आदेश का पालन करना होगा। और मेरी अन्तरात्मा का यह आदेश है कि मैं अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए अपनी आज़ादी कुर्बान कर दूं। उसके साथ शादी करने का मेरा निश्चय—भले ही वह शादी औपचारिक रूप मे ही क्या न हो—और जहां वह जाय, उसके साथ जाने का निश्चय अब भी ज्यों के त्यों कायम हैं। उनमे कोई तबदीली नहीं हो सकती," बडी ढिठाई और कटुता के साथ उसने अपने आपसे कहा और अस्पताल मे से निकल कर, जेल के बडे फाटक की ओर दृढता से जाने लगा।

फाटक पर एक वार्डर ड्यूटी दे रहा था। नेख्लूदोव ने उसे जा कर इन्स्पेक्टर को यह खबर देने को कहा कि वह मास्लोवा से मिलना चाहता है। वार्डर नेख्लूदोव को जानता था और एक जाने पहचाने आदमी के नाते उसे जेल की महत्वपूर्ण खबर सुना दी कि पहला इन्स्पेक्टर बदल गया और उसकी जगह एक नया अफसर आया है जो स्वभाव का बडा कठोर है।

"बहुत कडाई करने लगे हैं, साहिब, क्या बताऊं आपको!" वार्डर कहने लगा, "नये इन्स्पेक्टर दफ्तर में हैं, मैं अभी उन्हें खबर किये देता हूं।

नया इन्स्पेक्टर जेल के अन्दर था, और शीघ्र ही नेख्लूदोव से मिलने बाहर आ गया। उसका कद लम्बा और नाक-नक्श लम्बतरे थे, गालों की हड्डियां उभरी हुई थी, चाल-ढाल बहुत सुस्त और सूरत मनहूस थी।

"भेंट मुलाकातें कमरे मे ही की जा सकती है, और उसके लिए दिन मुकरर हैं," बिना नेख्लूदोव की ओर देखे उसने कहा।

"लेकिन ज़ार के नाम मेरे पास एक दरख्वास्त है जिस पर मुझे दस्तखत करवाना है।"

"दरख्वास्त आप मुझे दे सकते है।"

"मैं बंदी से खुद मिलना चाहता हूं। पहले मुझे कभी किसी ने नहीं रोका।"

"हां, मगर यह पहले की बात है,' इन्स्पेक्टर ने कहा और कनखियों से नेख्लूदोव की ओर देखा।

"मुझे गवर्नर की तरफ से इजाजत मिल चुकी है," नेख्लूदोव ने ज़ोर दे कर कहा, और जेब में से अपना बटुआ निकाला।

"लाइये," इन्स्पेक्टर ने कहा और अपना हाथ बढ़ा कर, जिसकी तर्जनी पर सोने की अंगूठी थी, नेख्लूदोव से इजाज़तनामा ले लिया। इन्स्पेक्टर के हाथ की अंगुलियां लम्बी लम्बी, गोरी और कठोर थीं। वह धीरे धीरे इजाज़तनामा पढ़ता रहा। "दफ्तर में तशरीफ ले चलिये," उसने कहा।

अब की बार दफ्तर में कोई नहीं था। इन्स्पेक्टर अपने मेज़ के सामने बैठ गया और उस पर रखे कागज़ों को छांटने लगा। प्रत्यक्षतः, भेंट के दौरान उसका इरादा वहीं बैठे रहने का था। नेख्लूदोव ने राजनीतिक कैदी वोगोदूखोव्स्काया से मिलने के लिए कहा। इन्स्पेक्टर ने छूटते ही इन्कार कर दिया।

"राजनीतिक बंदियों से भेंट करने की इजाजत नहीं है," उसने कहा और फिर अपने कागज़ों की ओर देखने लगा।

वोगोदूखोव्स्काया की चिट्ठी नेख्लूदोव के जेब में थी। उसे लगा जैसे उसने कोई जुर्म किया और अब उसका भण्डाफोड़ हो गया हो और मनसूबे खाक में मिला दिये गये हों।

मास्लोवा अन्दर आई। इन्स्पेक्टर ने सिर उठा कर ऊपर देखा, फिर बिना नेख्लूदोव या मास्लोवा की ओर देखे बोला—

"तुम लोग बातें कर सकते हो," और फिर अपने कागज़ों को छांटने लगा।

अब की बार भी मास्लोवा ने सफेद जाकेट और स्कर्ट पहन रखी थी और सिर पर रूमाल बांध रखा था। वह पास आई। नेख्लूदोव की आंखों में कठोरता तथा उपेक्षा का भाव देख कर मास्लोवा का चेहरा शर्म से लाल हो गया। हाथों में जाकेट का किनारा मरोड़ते हुए उसने आंखें नीची कर लीं। उसकी घबराहट देख कर नेख्लूदोव का शक और भी पक्का हो गया कि जो कुछ दरबान ने कहा था वह ज़रूर ठीक होगा।

नेख्लूदोव का इरादा तो मास्लोवा से पहले ही की तरह मिलने का था, लेकिन फिर भी उसके साथ हाथ मिलाने को उसका मन नहीं माना। उसके प्रति नेख्लूदोव का मन घृणा से भर उठा था।

"मैं तुम्हें बुरी खबर सुनाने आया हूं," उसने समतल, नीरस आवाज़

म कहा। नेख्लूदोव ने न ही मास्लोवा से हाथ मिलाया और न ही उसकी ओर आंख उठा कर देखा। "सेनेट ने अपील खारिज कर दी है।"

"मैं तो पहले से ही जानती थी यही कुछ होगा," मास्लोवा न अजीब सी आवाज़ मे कहा, मानो उसका सास फूल रहा हो।

अगर पहले कभी ऐसी चर्चा हुई होती तो नेख्लदोव उससे ज़रूर पूछता कि तुम्हे कैसे मालूम था यही कुछ होगा। पर अब वह कुछ नही बोला, और केवल उसके चेहरे की ओर देखा। मास्लोवा की आखें डबडबा आई थी।

यह देख कर भी नख्लूदोव का मन नही पसीजा। बल्कि उसकी खीज और भी बढ गई।

इन्स्पेक्टर उठ खडा हुआ और कमरे म टहलन लगा।

नेख्लूदोव के मन म मास्लोवा के प्रति तीव्र घृणा उठ रही थी। फिर भी उसने यही ठीक समझा कि सेनेट के निणय पर अपना अफसोस जाहिर करे।

"तुम्ह निराश नही होना चाहिए,' वह बोला, "क्या मालम जार के नाम दी गयी दरख्वास्त का अच्छा परिणाम निकले। और मुझे आशा है "

"मैं इसके बारे मे नही सोच रही हू," उसने दीनता भरी नज़र से नेख्लूदोव की ओर देखते हुए कहा। उसकी ऐंची आखें आसुआ से भरी थी।

"तो फिर क्या सोच रही थी?"

"तुम शायद अस्पताल गये होगे और वहा उन लोगा ने मेरे बारे म तुमसे कहा होगा कि '

"ता क्या हुआ? यह तुम्हारा काम है," नख्लूदोव ने उपेक्षापूण आवाज मे कहा और उसकी त्योरिया चढ गइ।

नेख्लूदोव के आत्म-गौरव को धक्का लगा था, लेकिन अब तक वह चुप रहा था। जब मास्लोवा ने अस्पताल का नाम लिया तो वह भावना और अधिक क्रूरता के साथ उसके हृदय मे भभक उठी। "आखिर मेरी भी कोई हैसियत है। अच्छे से अच्छे घर की लडकी मेरे साथ ब्याह करना अपना फखर समझेगी। लेकिन मैंने इस औरत का अपनी पत्नी बनाने का प्रस्ताव किया। इधर यह है कि इन्तज़ार तक नही कर सकी और छाटे डाक्टर से आखें लडाने लगी है।" यह सोच कर नख्लूदोव न बडी नफरतभरी निगाह से मास्लोवा की आर देखा।

"इस दरख्वास्त पर दस्तखत कर दो," नेख्लूदोव ने जेब मे से एक बड़ा सा लिफाफा निकाला, और दरख्वास्त मास्लोवा के सामने रख दी। सिर पर बधे रूमाल के एक कोने से मास्लोवा ने अपनी आखें पोछी और पूछा कि यहा पर क्या लिखना है।

नेख्लूदोव ने बताया। बायें हाथ मे दायें बाजू की आस्तीन ठीक करते हुए मास्लोवा लिखने बैठी। नेख्लूदोव उसके पीछे खड़ा चुपचाप उसकी पीठ की ओर देख रहा था जो अवरुद्ध रदन के कारण कभी कभी काप उठती थी। नेख्लूदोव के मन मे गर्व और कष्ट की भावनाओ के बीच सघर्ष उठ खड़ा हुआ। एक ओर आहत आत्माभिमान की भावना थी, दूसरी ओर इस दुखी स्त्री के प्रति अनुकम्पा की भावना। अन्त म अनुकम्पा की विजय हुई।

उसे याद नही था कि पहले क्या हुआ—उसके हृदय मे दया की भावना पहले उठी या उसे अपन पाप पहले याद आये—वसे ही घृणित कुकर्म जिनके लिए आज वह मास्लोवा को दोष दे रहा था? कुछ भी रहा हो, वह अपने को अपराधी महसूस करने लगा और उसके प्रति दयार्द्र हो उठा।

मास्लोवा ने दरख्वास्त पर दस्तखत किया, फिर अपनी अगुली को, जिस पर स्याही लग गई थी, अपनी स्कर्ट के साथ पोछ कर नेख्लूदोव की ओर देखा।

"कुछ भी हो जाय, इस दरख्वास्त का कुछ भी परिणाम निकले, मैं अपना निश्चय नही बदलूगा," नेख्लूदोव ने कहा।

यह सोच कर कि उसने मास्लोवा को क्षमा कर दिया है, उसका हृदय और भी अधिक अनुकम्पा और दयालुता से भर उठा। उसका मन चाहा कि उसे ढाढस बधाये।

"मैं अपने कहे पर अमल करूगा। वे लोग तुम्हे जहा कही भी ले गये, मैं तुम्हारे साथ जाऊगा।"

"इसका क्या लाभ?" वह जल्दी मे बीच मे बोल उठी। लेकिन उसका चेहरा खिल गया।

"तुम मुझे सोच कर बताओ कि तुम्हे रास्ते के लिए क्या दरकार होगा।"

"मेरे ख्याल म तो कुछ नही चाहिए। बहुत शुक्रिया।'

इन्सपेक्टर उनके सामने आ खड़ा हुआ। पेश्तर इसके कि वह कुछ कहे, नेख्लूदोव ने विदा ली और बाहर निकल आया। उस समय उसका हृदय शांति, आह्लाद तथा सकल प्राणीमात्र के प्रति अकथनीय वात्सल्य से भर उठा था। ऐसा उसने पहले कभी महसूस नही किया था। इस विश्वास से कि मास्लोवा कुछ भी करे, उसके प्रति उसके प्रेम मे रत्तीमात्र भी फर्क नही आयेगा, उसका हृदय उल्लसित हो उठा। उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे वह ऊपर उठ आया हो और ऐसे स्तर पर खड़ा हो जिस स्तर पर वह पहले कभी नही पहुंच पाया था। उसका मन चाहे तो बेशक छोटे डाक्टर से आंखें लड़ाये। यह उसका अपना काम है। वह अपनी खातिर मास्लोवा से प्रेम नही करता था बल्कि उसकी, मास्लोवा की खातिर, और भगवान की खातिर।

यह मामला क्या था, जिसके लिए मास्लोवा को अस्पताल में से बाहर निकाल दिया गया था, और जिसके बारे में नेख्लूदोव को विश्वास था कि वह सचमुच दोषी है? मामला इस तरह हुआ—अस्पताल की बड़ी नर्स ने मास्लोवा को दवाईखाने से जड़ी-बूटियों की चाय लाने को कहा। यह दवाईखाना बरामदे के एक सिरे पर था। मास्लोवा गई, लेकिन वहां पर पहुंची तो वहां छोटे डाक्टर के अलावा और कोई भी मौजूद न था। छोटा डाक्टर कद का ऊंचा-लम्बा आदमी था, और उसका चेहरा मुहासों से भरा था। यह आदमी बहुत दिनो से मास्लोवा को परेशान कर रहा था। वह फिर उसके पास आ धमका। उससे पीछा छुड़ाने के लिए मास्लोवा ने उसे इतने जोर से धक्का दिया कि उसका सिर पीछे तख्ते पर जा टकराया, और दवाई की दो बोतलें गिर कर टूट गयीं।

ऐन उसी वक्त अस्पताल का बड़ा डाक्टर उधर से गुज़रा, और कांच टूटने की आवाज़ उसके कान में पड़ी। इधर मास्लोवा, घबराई हुई भाग कर बाहर निकली। उसे देखते ही डाक्टर ने गुस्से से पुकार कर कहा—

"भली औरत, अगर यहां पर भी तुमने बदकारियां शुरू कर दी तो मैं कान पकड़ कर बाहर निकाल दूंगा . . . क्या बात हुई है?" अपने चश्मे के ऊपर से छोटे डाक्टर की ओर बड़ी कठोरता से देखते हुए उसने पूछा।

छोटा डाक्टर मुस्कराया और अपनी सफाई देने लगा। डाक्टर ने उसकी बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, और सिर ऊंचा उठाये—और अब की बार ऐनक के बीच में से देखते हुए—वार्ड के अन्दर चला गया।

इसी दिन उसने इन्स्पेक्टर को कह दिया कि मास्लोवा के स्थान पर किसी दूसरी सहायक नर्स या भेज दे जो ज्यादा ठहरी हुई तबीयत की हो।

बस, यही वह "झगड़ें लड़ाना" था जो मास्लोवा का छोटे डाक्टर के साथ हुआ। मुद्दत से मास्लोवा के मन में पुरुषों से सम्भोग-सम्पर्क रखने के प्रति घिन उठने लगी थी। और नेख्लूदोव से मिलने के बाद तो उसे यह और भी बुरा लगता था। इसलिए जब दुराचार का दोष लगा कर उसे बाहर निकाल दिया गया तो उसे बेहद दुख हुआ। वह सोचती कि हर किसी का ध्यान मेरे पिछले जीवन और वर्तमान स्थिति की ओर ही जाता है, और हर आदमी मेरा अपमान करना अपना हक समझता है। अगर मैं इन्कार कर दूं तो उसे अचम्भा होने लगता है। मुहासों वाला यह छोटा डाक्टर भी यही समझता है। उसका हृदय तीव्र वेदना से भर उठता, उसे अपने आप पर तरस आने लगता और आंखों से झरझर आंसू बहने लगते। जब वह नेख्लूदोव से मिलने आयी तो यह इरादा कर के कि मैं सारी बात उसे साफ साफ बता दूंगी ताकि उसे पता चल जाय कि मुझ पर झूठा इलजाम लगाया गया है। उसने जरूर इसके बारे में पहले से सुन रखा होगा। पर जब वह अपनी सफाई देने लगी तो उसने देखा कि नेख्लूदोव को उसकी बात पर विश्वास नहीं हो रहा, और अगर वह और दलीलें देती गई तो उसका सन्देह और भी पक्का होता जायेगा। इस पर उसे रुलाई आ गई, उसका गला रुंध गया और वह चुप हो गई।

मास्लोवा अब भी अपने मन को इस बात का भुलावा दिये जा रही थी कि उसने नेख्लूदोव को क्षमा नहीं किया और उससे घृणा करती है। दूसरी बार जब नेख्लूदोव उससे मिलने आया था तो उसने उसे यह भी कह दिया था। लेकिन सच तो यह था कि वह उसे फिर से प्रेम करने लगी थी। और इसी प्रेमवश वह अपने आप वही काम करने लगती जो नेख्लूदोव चाहता था। उसने शराब, तम्बाकू पीना छोड़ दिया, चुहलबाजी छोड़ दी। अस्पताल में भी इसी लिए काम करने लगी क्योंकि वह जानती थी कि नेख्लूदोव को यह पसन्द है। लेकिन नेख्लूदोव जब भी उससे शादी करने का जिक्र करता तो वह बड़ी दृढ़ता से इन्कार कर देती। इसका कारण यह था कि वह अपने वे गर्वीले शब्द दोहराना चाहती थी जो उसने पहली बार कहे थे। साथ ही वह यह भी जानती थी कि उसके साथ शादी कर के नेख्लूदोव दुख ही पायेगा। उसने पक्का निश्चय कर लिया था कि नेख्लूदोव

के आत्मबलिदान को स्वीकार नही करगी। परन्तु यह देख कर कि नेख्लूदोव उससे घृणा करता है, और अब भी उसे वही कुछ समझता है जा वह पहले थी, और उसम जो परिवतन हुआ ह उसे वह देख नही पाता मास्लोवा अत्यन्त दुखी हुई। सेनेट ने उसकी सज़ा पक्की कर दी, उसे यह जान कर इतना दुख नही हुआ, जितना इस बात से कि नेख्लूदोव शायद अब भी यही सोचता है कि अस्पताल की घटना मे उसी का कसूर था।

३०

सभव है मास्लोवा को कैदियो की पहली टोली के साथ ही साइबेरिया भेज दिया जाय, यह सोच कर नेख्लूदोव ने अपनी रवानगी की तयारी शुरू कर दी। परन्तु जाने से पहले उसे बहुत सा काम निबटाना था और उसने देख लिया कि सारा का सारा काम निबटाना असभव है, चाहे जितना भी समय वह उसमे लगाये। पहले से अब स्थिति बहुत कुछ बदल गई थी। पहले उसे अपने लिए काम ढूढ कर निकालने पडते थे और सभी कामो मे एक ही व्यक्ति का हित अभीष्ट रहता था और वह था—दमीत्री इवानोविच नेख्लूदोव। जीवन की सभी रुचिया आत्मतुष्टि पर केन्द्रित था। परन्तु ऐसा होते हुए भी ये सब काम उसके लिए अत्यन्त वाझल और नीरस हो उठते थे। अब स्थिति यह थी कि उसके सभी कामा का सम्बध, दमीत्री इवानोविच से न रह कर, और लोगा से हो गया था। अब ये सभी काम रुचिकर और आकपक हो उठे थे, और गणना म इनका कोई अन्त न था।

इतना ही नही, पहले अपने कामो से नख्लूदोव के मन में खीज उठा करती थी और वह क्षुब्ध हो उठता था। अब उसे अपन कामो से खुशी मिलती थी।

इस समय जा काम नेख्लूदोव कर रहा था उन्हे तीन हिस्सा मे बाटा जा सकता था। उसकी आदत थी कि छोटे से छोटा काम भी बडी बारीकी और नियमानुसार करता था। इसी आदतवश अब भी उसन स्वय अपन कामा को यो बाट रखा था और तदनुसार, प्रत्येक काम से सम्बधित कागजा का भी तीन अलग अलग बस्ता मे रखा था।

इनमे सबसे पहले काम था सम्बध मास्लावा मे था। इसम मुख्य काम जार के नाम दी गई दरख्वास्त के लिए महायता प्राप्त करना था और साथ ही सभावित साइबेरिया-यात्रा के लिए तैयारी करना था।

दूसरा काम जमीन जायदाद के मामला की व्यवस्था से सम्बधित था। नेख्लूदोव ने अपनी पानोवो वाली जमीन किसानो को इस शत पर दी थी कि जो रकम वे लगान के रूप में देंगे उसे उन्ही के सामूहिक हित के कामो पर खच किया जायेगा। परन्तु एक कानूनी दस्तावेज द्वारा इस प्रबध को पक्का करना जरूरी था। इसी के अनुसार उसे अपना दान-पत्र भी तैयार करना था। कुजिमस्कोये म अब भी यही व्यवस्था थी जिसे उसन पहले चालू किया था, कि वह लगान वसूल करेगा। लेकिन इस सम्बध मे शर्तों का फैसला अभी नही हुआ था। यह भी निश्चय करना बाकी था कि वसूली के रुपय मे से कितनी रकम वह अपने जीवन निर्वाह के लिए निकाला करेगा और कितनी किसानो के हित के लिए अलग रख देगा। उसने सारी की सारी आय को छोड दने का अभी फैसला नही किया था, क्याकि उसे मालम नही था कि साइबेरिया की यात्रा पर कितना खच होगा। लेकिन उसने इस आय म आधे की कमी कर देने का जरूर निश्चय कर लिया था।

तीसरे उन कैदिया की मदद करना था जिनकी ओर से उसे अधिकाधिक सख्या म दरख्वास्ते आ रही थी।

पहले पहल जब वह कदिया से मिला और व उससे मदद के लिए याचना करने लगे तो नेख्लूदोव फौरन् हर कैदी का काम करने के लिए चल पडता, ताकि उसके जीवन की कठिनाइया कुछ कम हो सकें। लेकिन शीघ्र ही इतनी अधिक सख्या मे दरख्वास्त आने लगी कि उन सबकी ओर ध्यान देना उसकी सामथ्य से बाहर की बात हो गयी। इसी स्थिति के परिणामस्वरूप वह एक नये प्रकार के काम म हाथ लगाने लगा और इसम उसकी रुचि उत्तरोत्तर बढने लगी, यहा तक कि पहल सभी कामा मे भी इतनी नही हो पायी थी।

यह नया काम था इन प्रश्ना का समाधान करना कि जाब्ता फौजदारी नाम की यह अनोखी सस्था वास्तव म है क्या जिसके कारण यह जेलखाना बना, जिसके बहुत से कदिया के बारे मे वह कुछ न कुछ जान गया था। यह जेलखाना ही नही, अय कितन ही ऐसे स्थानो के—पीटसबग मे स्थित

पीटर-पॉल के किले से लेकर सखालिन द्वीप तक जहा इस जान्ता फौजदारी के शिकार, सैकडा-हज़ारा कैदी अपनी जान ताड रहे थे। उस यह सस्था वडी विचित्र लगती थी। यह क्याकर बनी? इसका उदगम कहा म हुआ?

कैदियो के साथ उसका व्यक्तिगत सम्पक था। उसन कैदिया का फेहरिस्ते देखी थी। इस विषय पर वकील से, जेलखाने क पादरी तथा इस्पेक्टर से कई सवाल पूछे थे। इस तरह जितनी भी जानकारी उसे प्राप्त हुई थी उसके आधार पर वह इस नतीजे पर पहुचा कि कैदिया को-तथाकथित मुजरिमो का-पाच श्रेणिया मे वाटा जा सकता है।

पहली श्रेणी मे वे मुजरिम शामिल थे जो सवथा निर्दोष थे, लकिन जिह अदालती भूलो के कारण सजा दे कर यहा व द कर रखा था। इन्ही मे मेशोव मा वेटा, मास्लोवा तथा अय कैदिया की गणना की जा सकती थी। ऐसे कैदियो की सख्या वहुत नही थी-पादरी के अनुमानानुसार सात प्रतिशत से अधिक न होगी-लेकिन उनकी स्थिति विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करती थी।

दूसरी श्रेणी मे वे कैदी आते थे जिन्होने विशेष परिस्थितिया म जस उमाद, ईर्ष्या या नशे की हालत मे जुम किये थे। ऐसी परिस्थितिया थी जिनमे वे यायाधीश भी ज़रूर जुम कर सकते थे जिन्हाने इह सज़ा दे कर यहा डाल दिया था। अपने निरीक्षण के आधार पर नेख्लूदोव कह सकता था कि कुल कैदियो मे से ५० प्रतिशत इसी श्रेणी के अन्तगत आ जाता था।

तीसरी श्रेणी मे वे कैदी शामिल थे जिन्होने जुर्मो को जुम समझ कर नही किया, वल्कि यह समझ कर कि वे पूणतया स्वाभाविक तथा उचित काम थे। परतु कानून वनाने वालो की दप्टि मे उह जुम समझा जाता था। इन कैदियो म ऐसे लोगो की गणना की जा सकती थी जो लाइसस के विना शराब वना कर बेचत, बिना महसूल अदा किये, छिप-लुक कर माल वेचते, वडी वडी जागीरो तथा सरकारी जगला म से घास और लकडा काट लाते पहाडा पर रहन वाले डाकू तथा ऐसे नास्तिक लोग जो गिरजा को लूटा करते ह।

चौथी श्रेणी म व कैदी शामिल थ जिह केवल इसलिए जेल म डाल दिया गया था कि वे नैतिक दृष्टि से जनसाधारण स ऊचे थे। इनम धार्मिक सम्प्रदाई, पालैंड तथा चेर्केसिया के दशभक्त शामिल थे जो अपने अपन

देश के लिए पुन स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए विद्रोह कर रहे थ। इन्ही म राजनीतिक बंदी, समाजवादी तथा हडतालें करने वाले लोग शामिल थे। नख्लूदोव के निरीक्षण के आधार पर ऐसे व्यक्तियों की सख्या काफी अधिक थी, इनम कुछ तो ऐसे थे जिन्ह समाज क सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति कहा जा सकता है। इन लोगो को इसलिए सजा दी गई थी कि उन्होने अधिकारियों का विरोध किया था।

पाचवी श्रेणी उन लोगो की थी जिनके अपने पाप इतने बडे नही थ जितने वे पाप जो समाज न उन पर किये थे। ये वे लोग थ जिन्ह समाज ने ठुकरा दिया था, जो निरन्तर उत्पीडन तथा प्रलोभन क चगुल म उदभ्रान्त से घूमते थे, जसे वह नडका जिसन चटाइया चुरायी थी। इस जसे सैंकडो लोगो को नेख्लूदोव न न केवल जेलखान क अन्दर बल्कि बाहर भी देखा था। जिन परिस्थितियो म य लोग रहत थ वही उन्ह क्रमश ऐसे काम करन पर बाध्य करती थी जिन्ह जुर्म का नाम दिया जाता है। नख्लूदोव का अनुमान था कि इस श्रेणी म बहुत सी सख्या म चोर लुटेरे हत्यारे इत्यादि शामिल हैं। इनम स कुछेक हाल ही म उसक सम्पर्क म आये थे। इसी श्रेणी म वह उन लोगो की भी गणना करता था जिन्ह अपराध शास्त्र की नयी प्रणाली के अनुसार पतित तथा आचार-भ्रष्ट व्यक्ति कहा जाता है। मुख्यत इन्ही लोगो की उपस्थिति का हवाला दे कर ही यह साबित करन की कोशिश की जाती थी कि कानून फौजदारी तथा सजा आवश्यक हैं। नेख्लूदोव का विचार था कि यही वे तथाकथित पतित आचार भ्रष्ट तथा विकार-ग्रस्त लोग हैं जो समाज के पापो का शिकार बनते हैं। केवल अन्तर इतना ही था कि उन पर सीधा अत्याचार करने क बजाय समाज न इनके माता पिताओ तथा पुरखाओ पर अत्याचार किये थे।

इस पाचवी श्रेणी के लोगो म जिस आदमी न विशेष तौर पर नेख्लूदोव का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया वह था ओखोतिन नाम का एक पुराना चोर। किसी वेश्या का अवैध बालक, यह आदमी सरायो मे पल कर बडा हुआ था और तीस वर्ष की उम्र तक प्रत्यक्षत इसे कोई ऐसा आदमी नही मिला था जिसके आचार विचार किसी पुलिस के सिपाही स बेहतर हो। छोटी उम्र म ही वह चोरो के एक दल म जा मिला था। इस आदमी मे हास्य भावना कूट कूट कर भरी थी, और इसी कारण उसका व्यक्तित्व बेहद आकर्षक था। इस आदमी ने भी नख्लूदोव से मिल कर बीच-बचाव

की प्रार्थना की और सारा वक्त वकीलों, जेलखाने, तथा लौकिक और अलौकिक, सभी प्रकार के नियमों का और स्वयं अपने आपका मजाक उड़ाता रहा। इसके अतिरिक्त फ्योदोरोव नाम के एक दूसरे आदमी ने भी नेख्लूदोव का ध्यान आकृष्ट किया। यह आदमी बेहद सुंदर था, डाकुओं के एक दल का सरदार था, और अपने दल के अन्य डाकुओं के साथ एक वयोवृद्ध सरकारी अफसर की हत्या कर चुका था। यह आदमी एक किसान का बेटा था, जिससे उसका घर बड़े अवैध ढंग से छीन लिया गया था। बाद में वह फौज में भर्ती हो गया, और वहा पर भी अपने अफसर की रखैल के साथ प्रेम करने के कारण उसे बहुत कष्ट झेलने पड़े। यह आदमी स्वभाव से ही रसिक था। जीवन का आनन्द भोगने की इसमें उन्मत्त अभिलाषा थी। जीवन में उसे कभी कोई ऐसा आदमी नहीं मिला था जो आत्मनियन्त्रण में विश्वास रखता हो, न ही उसने कभी सुना था कि जीवन में आनन्दभोग के अलावा कोई दूसरा उद्देश्य भी हो सकता है। जिस भांति पौधों की देखभाल न करने से वे गल-सड़ जाते हैं, उसी भांति ये व्यक्ति भी उपेक्षा के कारण पंगु बन गये थे, हालांकि प्रकृति ने इन्हें बड़ी योग्यता दे कर भेजा था। नेख्लूदोव की भेंट एक आवारा आदमी से भी हुई और उस जैसी एक औरत से भी। दोनों परले दर्जे के जड़-बुद्धि और देखने में क्रूर थे—यहां तक कि नेख्लूदोव को उनसे घृणा होने लगी थी। पर इनमें भी उसे ऐसे कोई लक्षण नजर नहीं आये जिन्हें देख कर वह कह सकता कि वे "स्वभाव से ही अपराधी" हैं, और इस तरह इतालवी चिंतकों के मत का समर्थन कर पाता। उसे वे केवल व्यक्तिगत रूप से घृणास्पद लगे उसी तरह जिस तरह जेल से बाहर अपने मिलने वालों में उसे वे आदमी घृणास्पद लगते थे, जो दुमदार बढ़िया कोट पहने कंधों पर झब्बे लगाये, और गोटा किनारी से सजे घूमते थे।

क्या कारण है कि विभिन्न प्रकार के इन व्यक्तियों को तो जेल में डाल दिया गया है, और इन जैसे ही अन्य लोग बाहर स्वतन्त्र घूमते रहते हैं स्वतन्त्र ही नहीं, इनके ऊपर न्यायाधीश बन कर बैठते हैं? नेख्लूदोव इनकी तह में छिपे कारणों की खोज करना चाहता था। यह चौथा काम था जिसे उसने अपने ऊपर ले रखा था।

उसे आशा थी कि इस प्रश्न का उत्तर उसे पुस्तकों में मिल जायगा। अतः इस विषय पर जितनी भी किताबें उसे मिल सकीं, वह खरीद लाया।

लोम्ब्रोसो, गेरोफालो, फेर्री, लिस्त, मॉडस्ले, ताद, इत्यादि लेखको के ग्रथ वह उठा लाया और बडे ध्यान से उन्हे पढने लगा। पर जितना ही अधिक वह उन्हे पढता, उतना ही अधिक निराश हो उठता। वह इन वैज्ञानिक पुस्तको को इसलिए नही पढ रहा था कि वह खुद विज्ञान मे कोई भूमिका अदा करना चाहता था, कुछ लिखना चाहता था, या वाद-विवाद करना चाहता था, या किसी को सिखाना चाहता था। वह तो केवल रोजमर्रा के जीवन से सम्बधित एक साधारण से प्रश्न का उत्तर खोज रहा था। इसी कारण उसे निराशा भी हुई। विज्ञान से जाब्ता फौजदारी से सम्बध रखने वाले हजारो अन्य प्रश्नो के उत्तर मिल सकते हैं, जो अपने मे बडे जटिल और बारीक है, परन्तु जिस प्रश्न का उत्तर ढूढने की वह कोशिश कर रहा था वह उसे नहीं मिला।

प्रश्न बडा सीधा-सादा था, क्या कारण है, कि कुछ लोग अन्य लोगो को जेल मे ठूसते हैं, उन्हे यन्त्रणाए पहुचाते हैं, कोडे लगाते हैं, उन्हे मौत के घाट उतारते है, जब कि वे स्वय उन जैसे ही होते है? उन्हे ऐसा करने का क्या अधिकार है? जवाब मे उसे लम्बे लम्बे प्रबध पढने को मिलते कि मनुष्य मे सकल्प-स्वातन्त्र्य है या नही। मनुष्य की खोपडी को अगर मापे तो क्या पता चल सकता है कि अमुक व्यक्ति अपराधी है? अपराध मे वशानुगत गुणो का क्या हाथ होता है? क्या दुराचार की प्रवृत्ति वशानुगत हो सकती है? नैतिकता किसे कहते है? पागलपन क्या होता है? अध पतन क्या है? स्वभाव की क्या परिभाषा है? किस भाति जलवायु, खुराक, अज्ञानता, नकल करने की इच्छा, सम्मोहन अथवा उन्माद से अपराध करने की प्रेरणा मिलती है? समाज और उसके कर्तव्य क्या हैं? इत्यादि।

इन प्रबधो को पढते हुए नेख्लूदोव को एक छोटे से बालक की बात याद आ गई। एक बार एक छोटा सा लडका स्कूल से घर लौट रहा था जब रास्ते मे नेख्लूदोव की उससे भेंट हो गई। नेख्लूदोव ने उससे पूछा कि क्या तुमने हिज्जे करना सीख लिया है? "हा, कर सकता हू," लडके ने जवाब दिया। "अच्छा बताओ तो, 'टाग' के हिज्जे क्या है?" "किसकी टाग के, कुत्ते की टाग के?" शरारत भरी नजर से नेख्लूदोव की ओर देखते हुए उसने पूछा। बस, अपने बुनियादी सवाल के जवाब मे इन वैज्ञानिक पुस्तको से इसी तरह के उत्तर, प्रश्नो के रूप मे नेख्लूदोव को मिले।

इनमे वेशक बहुत सी ऐसी बात थी जो विवेकपूर्ण, विद्वत्तापूर्ण तथा रोचक थी। लेकिन मुख्य प्रश्न का उत्तर कि "कुछ लोगो का अन्य लोगो को सजा देने का क्यो अधिकार प्राप्त है?" इस प्रश्न का उत्तर उसे नही मिला। न केवल इसका उत्तर ही नही मिला, बल्कि जितने भी तर्क उसे पढने को मिले वे सभी सजा के हक मे सफाई देने और उसे न्यायसगत बताने के लिए दिये गये थे। सजा की आवश्यकता को तो स्वत सिद्ध माना गया था।

नेख्लूदोव ने बहुत कुछ पढा, लेकिन थोडा थोडा और अश अश कर के, और अपनी असफलता का कारण भी वह यही समझा कि ऊपरी ढग से पढता रहा है। उसे आशा थी कि बाद म उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा, यही कारण था कि जो उत्तर उस दिन प्रतिदिन नजर आने लगा था, उसकी सत्यता मे विश्वास करने से वह हिचकिचा रहा था।

३१

सजायाफ्ता मुजरिमो की जिस टोली के साथ मास्लोवा को जाना था, उसे ५ जुलाई को रवाना हो जाना था। नेख्लूदोव ने भी उसी दिन चल पडने की तैयारी कर ली।

उससे एक दिन पहले नेख्लूदोव की बहिन, अपने पति के साथ, शहर मे उसे मिलने आ पहुची।

नेख्लूदोव की बहिन, नताल्या इवानोव्ना रागोजिन्स्काया, अपने भाई से दस साल बडी थी। बचपन मे किसी हद तक उसी के प्रभाव के नीचे वह बडा हुआ था। बहिन को अपने छोटे भाई से बडा प्यार था, और बाद मे, जब वह बडा हुआ तो वे एक दूसरे के और भी निकट आ गये मानो वे एक-समान हो। यह बहिन की शादी से पहले की बात है। बहिन की उम्र पचीस की थी और भाई पद्रह साल का था। उन दिनो नेख्लूदोव का एक मित्र हुआ करता था जिसका नाम था निकोलेका इर्तेनेव। बहिन को उससे प्रेम हो गया था। लेकिन यह लडका मर गया। दोनो निकोलेका को बडा चाहते थे। निकोलेका मे, तथा एक दूसरे मे उन्हे जो अच्छाई नजर आती थी उसमे वे प्रेम करते थे। इस अच्छाई मे प्रेम ही मनुष्यो को एक दूसरे से मिलाता है।

परन्तु उसके बाद दोनो ही चरित्रहीन हो गये थे। नेख्लूदोव फौज मे चला गया और वहा भ्रष्टाचार म डूब गया, बहिन ने विषय भोग की लालसा से प्रेरित हो कर एक ऐसे आदमी से शादी कर ली जिसे नैतिक श्रेष्ठता तथा लोक-सेवा जैसी महत्वाकाक्षाओ मे कोई रुचि न थी और न ही वह उनका मूल्य जानता था। किसी जमाने म यही भावनाए उसे और उसके भाई को अत्यन्त प्रिय थी, और वे इन्हे पवित्र मानते थे। लेकिन उसका पति यह समझता था कि ये केवल दिखावे के लिए तथा समाज मे आगे बढने की उत्कट आकाक्षा से प्रेरित हैं। उनकी यही एक व्याख्या उसकी समझ मे आ सकती थी।

नताल्या के पति के पास न तो धन-दौलत थी, और न ही उसे कोई जानता था। लेकिन अपने काम म वह बडा चतुर और मझा हुआ आदमी था। हवा का रुख पहचानता था। उदारवाद और रूढिवाद, दोनो मे से देख लेता था कि किस प्रवृत्ति का पक्ष किस समय और किस अवसर पर लेना चाहिए, और इस तरह बडी सफाई से अपना उल्लू सीधा कर लेता था। साथ ही स्त्रियो को वश म करने का उसम विशेष आकर्षण था। इस तरह वह काफी हद तक कामयाब वकील बन गया था। नेख्लूदोव से उसका परिचय विदेश म हुआ। तब वह यौवन पार कर चुका था। नताल्या पर उसने ऐसे डोरे डाले कि वह उस पर मुग्ध हो उठी। नताल्या की अपनी उम्र भी उस समय काफी ज्यादा हो चुकी थी। इस तरह दोनो की शादी हुई, हालाकि इस विवाह का नताल्या की मा ने विरोध किया क्योकि वह समझती थी कि यह mesalliance* है। नेख्लूदोव को अपने बहनोई से नफरत थी, हालाकि इस भावना को वह अपने आपसे भी छिपाता रहता था और उसे मन म से निकालने का भरसक प्रयत्न करता रहता था।

रागोजिन्स्की बडी नीच प्रकृति का आदमी था। कुछ इस कारण और कुछ उसकी दम्भपूर्ण सकीर्णता के कारण, नेख्लूदोव को उससे घृणा हो गई थी। पर घृणा का मुख्य कारण स्वय उसकी बहिन नताल्या थी। नेख्लूदोव समझ नही पा रहा था कि उसकी बहिन, यह जानते हुए भी कि उसका पति सकीर्ण प्रकृति का आदमी है, क्योकर उसके पीछे उन्मत्त हो उठी है, और क्योकर उसका प्रेम इतना स्वार्थी और इतना पाशविक हो उठा है। उसकी

*बेमेल विवाह (फ्रेंच)

खातिर वह अपनी आन्तरिक श्रेष्ठता का गला घोट रहा था। रागोजिन्स्की की चाद ऊपर से गजी हो रही थी और वदन पर बाल ही बाल थे। यह सोच कर ही कि उसकी वहिन इस दभी आदमी की पत्नी है, उसका हृदय क्षुब्ध हो उठता। यहा तक कि जव उनके वाल-बच्चे हुए तो वह उनसे भी घृणा किये विना नही रह सका। और हर वार जव उसे मालूम होता कि उसकी वहिन के फिर बच्चा होने वाला है तो उसका हृदय शोकाकुल हो उठता। उसे ऐसा जान पडता जैसे फिर एक वार इस गैर आदमी ने उसकी वहिन को छूत की बीमारी द दी है।

रागोजिन्स्की दम्पती अकेले मास्को आये थे। अपने दोना बच्चो—एक लडका और एक लडकी—को वे घर छोड आये थे। मास्को म व सबसे बढिया होटल म आ कर ठहरे। पहुचते ही नताल्या अपनी मा के पुराने घर की ओर चल पडी। लेकिन वहा उसे आग्राफेना पेत्रोव्ना से पता चला कि उसका भाई घर छोड गया है और किराये पर कमर ले कर रह रहा है। इस पर, गाडी मे बैठ वह उस ओर चल दी। एक अधेरे, घुटन भरे बरामदे मे जिसमे एक लैम्प दिन भर टिमटिमाता रहता था उसे एक मैला कुचैला नौकर मिला। उससे उसे पता चला कि प्रिंस घर पर नही है।

नताल्या ने भाई के कमरे देखने की इच्छा प्रकट की और कहा कि वह उसके लिए एक चिट्ठी लिख कर छोड जाना चाहती है। नौकर उसे नेख्लूदोव के कमरो मे लिवा ले गया।

दो छोटे छोटे कमरो म उसका भाई रहता था। नताल्या ने बडे ध्यान से उनमे रखी एक एक चीज को देखा। हर चीज साफ-सुथरी और करीने से रखी थी। नताल्या जानती थी कि उसके भाई को स्वच्छता और व्यवस्था से विशेष प्रेम है। लेकिन जिस चीज ने सबसे अधिक उसे प्रभावित किया वह एक प्रकार की अनूठी सादगी थी, जिसकी झलक हर चीज मे मिलती थी। लिखने के मेज पर वही पुराना कागज-दाब रखा था जिसे वह अच्छी तरह जानती थी, जिसके ऊपर कासे का कुत्ता बना हुआ था। लिखने का सामान तथा वस्तु उसी तरह, सुपरिचित व्यवस्था के साथ रखे थे। कागजात भाग म लिखी, ताद की एक किताब मे उसका जाना-पहचाना हाथी दात का चम्मा तिरछी नाक वाला चाकू निशानी के तौर पर रखा था। इसी पुस्तक के साथ दण्ड के विषय पर बहुत सी किताबें रखी थी, और हैनरी जार्ज की एक अग्रेजी पुस्तक भी थी।

मेज के सामने बैठ कर उसने भाई को पत्र लिखा कि आज ही मुझे मिलने के लिए आओ, भूलना नही। फिर कमरो को एक नजर से देख कर, आश्चर्य से सिर हिलाती हुई, वह अपने होटल वापस चली गई।

अपने भाई के सम्बन्ध मे नताल्या का ध्यान इस समय दो प्रश्नो पर केंद्रित था, एक तो कात्यूशा के साथ उसके विवाह के प्रश्न पर। इसकी खबर उसे अपने शहर मे मिल गई थी—सभी लोग इसकी चर्चा करने लगे थे। दूसरा, किसानो को अपनी जमीन दे देने के बारे म। इसकी भी चर्चा लोगो मे चल रही थी, और कई लोगो को इसमे राजनीति की गध आती थी, और इसलिए वे इसे बडी खतरनाक हरकत समझते थे। कात्यूशा के साथ उसके शादी करने पर तो वह एक तरह से खुश थी। इससे नेख्लूदोव की जिस दृढता का पता चलता था, वह भाई-बहिन दोना के आचार म पाई जाती थी, विशेषकर उन हसी-खुशी के दिनो मे जब अभी नताल्या का ब्याह नही हुआ था। परन्तु जब वह कात्यूशा के बारे मे सोचती तो उसका मन सिहर उठता, कि भाई कैसी भयानक औरत से शादी करने जा रहा है। इन दोनो भावनाओ मे से पिछली भावना अधिक प्रबल थी, और उसने निश्चय कर लिया कि भाई को इस ब्याह से दूर रखने के लिए वह एडी-चोटी का जोर लगा देगी, हालाकि मन ही मन वह जानती थी कि इसमे सफलता प्राप्त करना आसान नही होगा।

जहा तक दूसरे मामले का सवाल था—किसानो को जमीन देने का—नताल्या ने इसकी बहुत परवाह नही की। परन्तु उसके पति का यह बहुत बुरा लगा था और वह चाहता था कि उसकी पत्नी अपने भाई को यह कदम उठाने से रोके। रागोजिन्स्की का कहना था कि इस हरकत से नेख्लूदोव की अस्थिरता, सनकीपन और दम का पता चलता है, कि वह यह काम दिखावे के लिए कर रहा है, ताकि लोग उसकी चर्चा कर और यह कि देखो कितना असाधारण आदमी है।

"इसम क्या तुक है कि जमीन किसानो का इस शर्त पर दी जाय कि वे लगान की अदायगी खुद को करे?" उसने कहा। "अगर वह जमीन देना चाहता ही है तो किसान बैंक की माफ्त उनको बेच ही क्या नही देता? इसका तो कुछ मतलब भी होता। इससे तो पता चलता है कि यह सचमुच नीम-पागल हो गया है।"

अब रागोजिन्स्की बडी सजीदगी के साथ यह सोचने लगा था कि उसे

नेख्लूदोव का अभिभावक बन जाना चाहिए, और इसलिए अपनी पत्नी से अपेक्षा करता था कि वह अपने भाई से इस विचित्र योजना के बारे में पूरी गंभीरता से बात करे।

३२

शाम को घर लौटने पर जब नेख्लूदोव को अपनी बहिन की चिट्ठी मिली तो वह उसी वक्त उसे मिलने चल पड़ा। जब से मां की मृत्यु हुई थी वे एक दूसरे से नहीं मिले थे। नताल्या कमरे में अकेली बैठी थी, उसका पति बगल वाले कमरे में आराम कर रहा था। नताल्या ने काले रंग की चुस्त रेशमी पोशाक पहन रखी थी, और गले पर लाल "बो" लगा रखी थी। उसके बाल काले थे और नये से नये फैशन के मुताबिक कुण्डल बना कर काढे हुए थे। उम्र में वह अपने पति जितनी थी। इसलिए साफ दिख रहा था कि उसे खुश रखने के लिए वह बन-संवर कर रहने की अत्यधिक कोशिश करती है।

भाई को देखते ही वह उछल कर खड़ी हो गई और भाग कर उसे मिलने के लिए आगे बढ़ आई। उसकी रेशमी पोशाक सरसरा उठी। दोनों ने एक दूसरे को चूमा और मुस्करा कर एक दूसरे की ओर देखते रहे। इस रहस्यपूर्ण नज़र में एक ऐसा तत्व, एक ऐसी सचाई छिपी थी जो बयान से बाहर है। इसके बाद होठों पर शब्द आये, परन्तु इनमें वैसी सचाई न थी।

"तुम तो पहले से भी अधिक स्वस्थ और छोटी नज़र आती हो!" नेख्लूदोव ने कहा।

खुशी से बहिन ने होंठ सिकोड़े।

"तुम कुछ दुबले हो गये हो।"

"और सुनाओ, तुम्हारे पति कैसे हैं?" नेख्लूदोव ने पूछा।

'वह आराम कर रहे हैं। रात भर सो नहीं पाये।"

कहने को कितना कुछ था। पर दिल की बात होठों पर नहीं आ पाती थी। लेकिन आंखों ही आंखों से वे बहुत कुछ एक दूसरे को कह रहे थे।

'मैं तुम्हारे यहां गई थी।"

"हा, मुझे मालूम है। मैंने अपना घर छोड दिया क्योंकि मेरे लिए वह वहुत वडा था। मैं बिल्कुल अकेला वहा रहता था, और मुझे वडी ऊब उठनी थी। वहा जो कुछ भी रखा है, अब मेरे किसी काम का नही। तुम सब ले लो, मेरा मतलब है, फर्नीचर और ऐसी चीजे।'

"हा, आग्राफेना पेत्राव्ना ने मुझसे कहा था। मैं वहा गई थी। शुक्रिया, लेकिन "

उसी वक्त होटल का बेरा चादी के सैट मे चाय ले कर आया।

जितनी देर वह मेज पर चाय लगाता रहा, दोनो चुप रहे। उसके चले जाने के बाद नताल्या मेज पर गई और चुपचाप चाय बनाने लगी। नेख्लूदोव भी चुप था।

आखिर नताल्या ने दृढता से बात शुरू की—

"दमीत्री, मुझे सारी बात का पता चल गया है।" कह कर वह उस के चेहरे की ओर देखने लगी।

"तो क्या हुआ? मुझे इस बात की खुशी है कि तुम्हे पता चल गया है।"

"उसका जैसा जीवन रहा है, क्या उसके बाद भी तुम उसे सुधारने की आशा करते हो?" उसने पूछा।

नेख्लूदोव छोटी सी कुर्सी पर सीधा बैठा था, और बडे ध्यान से अपनी बहिन की बात सुन रहा था, ताकि उसे ठीक ठीक समझ सके और उसका ठीक ठीक उत्तर दे सके। मास्लोवा से आखिरी मुलाकात के बाद उसका मन शान्त और आह्लादपूर्ण हो उठा था, और सकल प्राणीमात्र के प्रति सद्भावना से भर उठा था। वह मनःस्थिति अभी तक बनी हुई थी।

"मैं उसका नही, अपना सुधार करना चाहता हू," उसने जवाब दिया।

नताल्या ने उसास भरी।

"तो यह शादी के बिना भी किया जा सकता है।"

"पर मेरे विचार मे शादी सबसे अच्छा तरीका है। इसके अलावा, मैं ऐसे लोगो के बीच रहने लगूगा जिनकी मैं कुछ सेवा कर सकता हू।"

"मुझे विश्वास है कि इससे तुम्हे सुख नही मिलेगा," नताल्या ने कहा।

"मेरे सुख का यहा कोई सवाल ही पैदा नही होता।"

"बेशक, लेकिन यदि उस औरत के सीने मे दिल है, तो वह सुखी नही हो सकती। वह इसकी इच्छा तक नही कर सकती।"

"वह शादी करना नहीं चाहती।"

"मै समझ सकती हू। परन्तु जीवन "

"हा तो, जीवन?"

"जीवन की कुछ और ही माग होती है।"

"जीवन की एक ही माग होती है और वह यह कि हम ठीक काम करे," नताल्या के चेहरे की ओर देखते हुए नेख्लूदोव न कहा। नताल्या का चेहरा अब भी खूबसूरत था, हा, आखो और मुह के आस पास हल्की हल्की रेखाए पडने लगी थी।

'मै तुम्हारा मतलब नही समझी," उसन उसास भरते हुए कहा।

"हाय, यह मेरी प्यारी बहिन कितनी बदल गई है," नेख्लूदोव सोच रहा था। उसे वे दिन याद आ गये जब अभी नताल्या की शादी नहा हुई थी। तब यह कैसी हुआ करती थी। उसका दिल मधुर भावनाओ स भर उठा जिसमे बचपन की कितनी ही स्मृतिया गुथी थी।

उसी वक्त रागोजिन्स्की ने कमरे मे प्रवेश किया। छाती फुलाए, सिर पीछे को फेंके हुए वह अपनी आदत के मुताबिक हल्के हल्के, और धीमे धीमे कदम रखता हुआ चला आ रहा था। उसकी आखें, चश्मा, गजी चाद, स्याह दाढी, सभी चमक रहे थे।

"कहो भाई मिजाज तो अच्छा है?" "मिजाज ता अच्छा है?" शब्दा पर विशेष बल देते हुए उसने कहा।

दोना ने हाथ मिलाये। बिना किसी किस्म की आहट किये रागोजिन्स्की आराम-कुर्सी मे धस कर बैठ गया।

"मैं आप लोगो की बाता मे खलल ता नही डाल रहा हू?"

"नहीं, मैं किसी से भी छिपा कर कुछ कहना या करना नही चाहता।"

नेख्लूदोव की नजर उसके हाथा पर गई जिन पर बहुत अधिक बाल उग रहे थे। साथ ही काना म उसकी कृपालुता और दमपूर्ण आवाज पडी। उसी क्षण नेख्लूदोव का दब्बूपन जाता रहा।

"हा, हम यही बाते कर रहे थे कि भाई क्या करना चाहता है,' नताल्या बोली, "आप चाय लगे न?' चायदानी पर हाथ रखते हुए उसने पूछा।

"हा। कौन सी खास बात यह करना चाहते हैं?"

"मेरा इरादा बंदियों की एक टोली के साथ साइबेरिया जाने का है। इस टोली म एक औरत है जिसके साथ मैंने वडा अन्याय किया है," नख्लूदोव ने कहा।

"मैंन तो कुछ और भी सुना है। तुम उसके साथ जाना ही नही चाहत हो वल्कि कुछ और भी करने का इरादा रखते हो।"

"हा, यदि उसकी इच्छा हुई तो उसके साथ शादी भी करूगा।"

"खूब! लेकिन अगर बुरा न मानो तो क्या मैं इसका कारण जान सकता हू? मेरी समझ मे यह बात बैठ नही रही है।"

"कारण यही है कि इस स्त्री   इस स्त्री का अधःपतन जब शुरू हुआ   " नख्लूदोव को उपयुक्त शब्द नही मिल रहे थे, और उसे अपने आप पर गुस्सा आ रहा था, "कारण यह है कि वास्तव म अपराधी मैं हू, लेकिन सज़ा उसे दी जा रही है।"

"यदि उसे सजा दी जा रही है तो वह भी निर्दोष नही हो सकती।"

"वह विल्कुल निर्दोष है।"

और नेख्लूदोव ने अनावश्यक उत्तेजना के साथ सारा किस्सा कह सुनाया।

"हा, प्रधान जज न इस मामले मे लापरवाही की, और नतीजा यह हुआ कि जूरी ने भी उलटा-सीधा जवाव दे दिया। पर इस किस्म के मामले सेनट तक ले जाये जा सकते है।"

'सेनेट न अपील खारिज कर दी है।"

"अगर सेनेट ने अपील खारिज कर दी है तो जाहिर है अपील कमज़ोर हागी।" प्रत्यक्षत और लोगा की तरह रागोजिन्स्की का भी यही मत था कि सचाई का जन्म अदालती फैसला से होता है। "सेनेट का काम मुकद्दमे के गुण-दोष पर विचार करना नही है। अगर सचमुच कोई भूल हुई है तो ज़ार के सामने दरख्वास्त देनी चाहिए।"

"दरख्वास्त दी गई है लेकिन सफलता की कोई आशा नही। वे लोग मन्त्रालय से पूछेगे और वे लोग सेनेट से पूछेंगे और सेनेट अपना निर्णय दोहरा देगा, और जसा हमेशा होता है, निरपराध लोगा को सज़ा मिल जायेगी।"

"पहली बात तो यह कि मन्त्रालय वाले सेनेट की सलाह नही लगे,"

कृपालुता भरी मुस्कराहट के साथ रागोजिन्स्की ने कहा। "वे अपालन से असल कागजात मगवाने का हुक्म देगे, और अगर देखेगे कि सचमुच भूल हुई है तो वह उसी के अनुसार अपना फैसला देगे। दूसरी बात यह कि निर्दोप लोगो का कभी भी सजा नही दी जाती। या मिलती भी है तो बहुत ही विरले, किसी विशेप स्थिति मे। हमेशा अपराधियो को सजा दी जाती है," रागोजिन्स्की ने जोर दे कर कहा और उसके होठो पर आत्मतुष्टि की मुस्कान खेलने लगी।

"और मैं पक्की तरह से जानता हू कि बात इसके बिल्कुल उलट है," नेख्लूदोव ने कहा। उसके हृदय मे अपने बहनोई के प्रति द्वेप की भावना उठ रही थी। "मुझे यकीन है कि जितने लोगो को सज़ा मिलती है, उनमे से अधिकाश निर्दोप होते हैं।"

"किन मानो मे निर्दोप होते ह?"

"इस शब्द के असल मानो मे। जिस तरह इस औरत न किसी को ज़हर नही दिया और निर्दोप है उसी तरह वे भी निर्दोप होते हैं। जिस तरह उस किसान ने, जिसे मैं अभी अभी मिला हू, किसी की हत्या नही की और निर्दोप है, उसी तरह वे भी निर्दोप होते हैं। एक मा और वेटे को आग लगाने के जुर्म मे सज़ा मिलने जा रही है। सच यह है कि आग घर के मालिक ने खुद लगाई। जिस तरह इन लोगो का कोई दोप नही, वे लोग भी निर्दोप होते है।"

"इसमे क्या है, अदालतो मे हमेशा गलतिया होती रहती हैं और होती रहगी। हुआ क्या, आखिर इन्सान ही इन सस्थाओ मे काम करते है, ये पूणतया निर्दोप कैसे हो सकती है।"

"यही नही, बहुत से ऐसे लोगो को सज़ा दी जाती है जिन्होने अनजान मे जुर्म किये होते हैं। दरअसल जिन लोगो के बीच वे रहते है, उनमे ऐसे कामो का बुरा नही समझा जाता।"

"माफ करना यह तुम बिल्कुल गलत बात कह रह हो। चोर को अच्छी तरह *मालूम होता है कि चोरी करना बुरा है, कि हम चोरी नही करना चाहिए*, यह पाप है," रागोजिन्स्की ने कहा। उसके होठो पर वही पहले सी शात, दभपूर्ण, कुछ कुछ घृणा भरी मुस्कान आई, जो खास तौर पर नख्लूदोव को बुरी लगी। वह खीज उठा।

"नही, वह नही जानता। उसे कहा जाता है 'चोरी मत करो' लेकिन

वह देखता है कि फक्टरी का मालिक उसे कम पगार दे कर उसकी मेहनत चुराता है। सरकार, सारा वक्त तरह तरह के टैक्स लगा कर, अपने अफ्सरा द्वारा उसका धन चुराती रहती है।"

"यह ता अराजकतावाद है," रागाजिस्की न उसी तरह धीमी आवाज म अपने साले क शब्दा की व्याख्यावद्ध करते हुए कहा।

"मैं नहीं जानता इसे क्या कहत हैं, मै ता इतना जानता हू कि होता क्या है," नख्लूदाव कहता गया। "उस मालूम है कि सरकार उसका धन लूट लेती है। वह जानता है कि हम जमीदार लाग उस मुद्दत स तट रहे हैं, हमने उसकी जमीन चुरा ली है, वह जमीन जिसे सबकी साझी मिल्कियत होना चाहिए। अगर बाद म, उसी जमीन पर से जा हथिया ली गई है अगर वह कभी लकडी की खपच्चियाँ और टुकडे बटोर कर ले आता है ताकि उनसे आग जला सके तो उस जेल म डाल दिया जाता है, और उसे समझान की कोशिश की जाती है कि वह चोर है। वह बेशक जानता है कि वह चोर नही है, कि वास्तव म वे लोग चोर हैं जिन्हान उसकी जमीन उससे लूट ली है। अगर वह अपनी ही जमीन पर से कुछ उठा कर ले आता है ता यह उसका अपन परिवार के प्रति कतव्य है।"

"मैं तुम्हारी बात नही समझ सकता। और यदि समझता भी हू ता उससे सहमत नही हो सकता। जमीन का कोई ता मालिक हागा? अगर तुम उस बाट दो " रागाजीस्की ने धीमे धीमे कहना शुरू किया। उसे विश्वास था कि नख्लदोव समाजवादी है, और समाजवाद के अनुसार जमीन का समान रूप स बटवारा किया जाता है। और ऐसा करना निपट मूखता होगी। इसे वह बडी आसानी से साबित कर सकता है। "आज अगर तुम जमीन को बराबर बराबर हिस्सो मे बाट भी दा तो कल फिर जमीन उन लोगा के हाथ म चली जायगी जा सबमे अधिक मेहनती तथा कुशल हैं।"

"जमीन को बराबर हिस्सा म बाटने की बात कोई नही सोच रहा है। जमीन किसी की भी मिल्कियत नही होनी चाहिए। यह ऐसी चीज नही है जिस बेचा या खरीदा जाय या लगान पर दिया जाय।"

'सम्पत्ति का अधिकार मनुष्य का जन्मजात अधिकार है। अगर यह न होगा ता खेती करने की प्रेरणा ही न रहेगी। सम्पत्ति अधिकार का आप हटा दें तो हम फिर बबरता के स्तर पर जा पहुचेंगे," बडे अधिकारपूण

स्पर म रागोजिन्स्की ने कहा। भूमि के निजी स्वामित्व के पक्ष म यही तक बार बार दिया जाता है। और समझा जाता है कि यह अकाट्य तक है। यह तक इस अनुमान पर आधारित है कि चूंकि मनुष्य म सम्पत्ति ग्रहण करने की इच्छा होती है इसलिए यह साबित हुआ कि मनुष्य का सम्पत्ति ग्रहण करने का अधिकार है।

"नही नही, बल्कि स्थिति इसके उलट होगी। जब जमीन किसी की मिल्कियत म नही रहेगी तो वह खाली भी नही रहेगी, जसे कि आजकल पडी रहती है। जमीदार लोग खुद तो काश्त करना जानते नही, जो लोग जानते ह उन्ह भी हाथ नही लगाने देते। न करना, न करने देना।"

"कैसी बहकी हुई बात कर रहे हो, द्मीत्री इवानोविच! क्या आज के जमाने मे भूस्वामित्व का तुम खत्म कर सकते हो? मुझे मालूम है कि मुद्दत से यह सनक तुम्हारे सिर पर सवार है। लेकिन मैं साफ साफ तुम्हें कह देना चाहता हू " रागोजिन्स्की का चेहरा पीला पड गया और होंठ कापने लगे। प्रत्यक्षत इस सवाल ने उसे निजी तौर पर उद्वेलित कर रखा था। "मैं यह जरूर कहूगा कि इसे व्यावहारिक रूप देने से पहले तुम इस सवाल पर अच्छी तरह सोच लो।"

"क्या आप मेरे निजी मामलो के बारे मे कह रहे हैं?"

"हा। जिन विशेष परिस्थितियो म हम लोग रहते हैं, उनकी जिम्मेवारिया भी हम पर आयद होती हैं। जिस स्थिति में हमारा जन्म हुआ है वह हमारे पुरखाओ की देन है। हमारा कतव्य है कि हम अपनी विरासत सभाल कर रखे और जाते समय अपने बच्चो को सौप कर जायें।"

"मेरा कतव्य "

"माफ करना," रागोजिन्स्की ने नेख्लूदोव को बीच मे बोलने की मनाही करते हुए कहा। "मैं अपनी या अपने बच्चो की खातिर यह बात नही कह रहा हू। मेरे बच्चो की स्थिति सुरक्षित है। मेरी आमदनी अच्छी खासी है जिससे हम आराम से जिन्दगी बसर कर सकते हैं। और मुझे उमीद है कि मेरे बच्चे भी इसी तरह रहते रहेंगे। मैं जो तुम्हारे इस काम के बारे मे चिन्तित हू तो किसी निजी लाभ की खातिर नही। माफ करना, तुम यह कदम सोच-समझ कर नही उठा रहे हो। मेरा सिद्धान्तत तुमसे मतभेद है। तुम्ह इस बारे मे और सोचना विचारना चाहिए, पढना चाहिए "

"माफ कीजिये, मैं अपने काम मे किसी का हस्तक्षेप नही चाहता।

मुझे क्या पढ़ना चाहिए और क्या नही पढना चाहिए, इसका फैसला मैं ख़ुद कर सकता हू," नेख्लूदोव ने कहा। उसका चेहरा पीला पड गया। उसे महसूस हुआ जैसे उसके हाथ ठण्डे पडने लगे हैं और उसका मन बेकाबू होता जा रहा है। वह चुप हो गया और चाय पीने लगा।

३३

"कहो, बच्चे कैसे है?" मन कुछ स्थिर हुआ तो नेख्लूदोव ने बहिन से पूछा।

बहिन ने बताया कि बच्चे अपनी दादी के पास हैं। उसने चैन की सास ली कि दोनो मे बहस खत्म हो गई है। वह सुनाने लगी कि उसके बच्चे भी बिल्कुल वही खेल खेलते है जो बचपन मे नेख्लूदोव खेला करता था—वह भी एक बगल मे एक गुडिया दबा लिया करता था और दूसरी मे दूसरी, एक हबशी की और दूसरी जिसे वह फ्रांसीसी औरत कहा करता था, और दोनो को ले कर कहता था कि मैं सफर पर जा रहा हू।

"क्या सचमुच तुम्हे यह सब याद है?" नेख्लूदोव ने मुस्करा कर पूछा।

"हा तो। और ख्याल करो, वे खेलते भी बिल्कुल तुम्हारी तरह है।"

अप्रिय वाद विवाद समाप्त हो चुका था, और नताल्या आश्वस्त अनुभव करने लगी थी। लेकिन वह अपने पति की उपस्थिति मे भाई के साथ ऐसी बातो की चर्चा नही करना चाहती थी, जिन्हे केवल वही समझ सकता हो। इसलिए किसी ऐसे विषय पर बात शुरू करने की इच्छा से, जिसमे सबकी रुचि हो उसने कामेन्स्की की मा का जिक्र छेड दिया कि बेचारी कितनी दुखी है। उसका इकलौता बेटा द्वन्द्व युद्ध मे मारा गया था। पीटर्सबर्ग का यह लोकप्रिय विषय अब मास्को तक पहुच गया था।

रागोजिन्स्की कहने लगा कि मुझे यह स्थिति कतई पसन्द नही है कि एक आदमी द्वन्द्व युद्ध मे किसी को मार डाले और उसे साधारण मुजरिम न करार दिया जाय।

नेख्लूदोव ने फौरन इसका प्रतिवाद किया और दोनो मे फिर उसी विषय को ले कर बहस छिड गई। बहस मे किसी बात का भी खोल कर नही समझाया गया। प्रतिद्वन्द्वियो के मन मे क्या है, यह भी उन्होने पूरी तरह नही बताया केवल अपने अपने विश्वास पर अडे रहे और एक दूसरे के मत की निन्दा करते रहे।

रागोजिन्स्की को महसूस हुआ जैसे नेख्लूदोव उसकी निन्दा कर रहा है, जैसे उसके कामकाज से उसे घृणा है। वह उसे दिखा देना चाहता था कि उसके विचार सर्वथा अन्यायपूर्ण है। दूसरी तरफ नेख्लूदोव इस बात से खीज उठा था कि उसका बहनोई ज़मीन के मामले में दखल दे रहा है (अन्दर ही अन्दर वह जानता था कि उसकी बहिन, बहनोई और उनके बच्चे उसकी जमीन-जायदाद के उत्तराधिकारी है, और इस नाते उनका एतराज़ करना असगत नही है)। उसे गुस्सा था कि यह सकीर्ण मन का आदमी किस आत्मविश्वास के साथ उन बातो को बार बार न्यायपूर्ण और उचित कहे जा रहा है जब कि नेख्लूदोव निश्चित तौर पर जानता है कि वे सर्वथा अनुचित और अन्यायपूर्ण है। उसके स्थिर आत्मविश्वास का दम्भ कर नेख्लूदोव मन ही मन कुढ रहा था।

"कानून क्या कर सकता था?" उसने पूछा।

"कानून यह कर सकता था कि द्वन्द्व युद्ध लडने वालो मे से एक को बडी मशक्कत की सज़ा दे कर खाना मे भेज देता, जिस तरह साधारण हत्यारे को भेजा जाता है।"

नेख्लूदोव के हाथ फिर ठण्डे पडने लगे।

"उसका क्या लाभ होता?" उसने तुनक कर पूछा।

"यह इन्साफ होता।"

"जैसे इन्साफ करना कानून का मकसद हो,' नेख्लूदोव बोला।

"अगर यह नही तो और कौन सा मकसद है?"

"कानून का मकसद वर्ग हितो की रक्षा करना है। मैं समझता हूँ कि कानून केवल एक साधन मात्र है जिसके द्वारा हम मौजूदा व्यवस्था को बनाये रखना चाहते है, ताकि इससे हमारे वर्ग हितो को लाभ पहुँचता रहे।'

"यह अनोखा विचार है," रागोजिन्स्की ने कहा। उसके होठो पर आश्वस्त मुस्कान खेल रही थी। "सामान्यतया कानून का एक बिल्कुल ही दूसरा मकसद माना जाता है।'

"हाँ, लेकिन किताबो मे, व्यवहार मे नही। मैंने पढ़ लिया है। कानून का केवल एक ही लक्ष्य है और वह यह कि मौजूदा व्यवस्था को बनाये रखे। इसलिए जो लोग इस व्यवस्था को हटाना चाहते हैं जो योग्यता मे जनसाधारण से ऊँचे होते हैं—तथाकथित राजनीतिक अपराधी—

उन्हें तंग करता है और फांसी पर लटकाता है। इसी तरह उन लोगों को भी जो साधारण स्तर से नीचे के हैं तथाकथित अपराधी कोटि के लोग।"

"मैं तुमसे सहमत नहीं हूं। अव्वल तो मैं यह नहीं मान सकता कि राजनीतिक अपराधियों को इसलिए सजा दी जाती है कि वे असाधारण योग्यता के लोग होते हैं। उनमें से अधिकांश ऐसे होते हैं जिन्हें हम समाज का कचरा कह सकते हैं, उतने ही विकारग्रस्त जितने कि अपराधी कोटि के लोग जिन्हें तुम साधारण से निचले स्तर का कह कर पुकारते हो।"

"पर मैं ऐसे व्यक्तियों को जानता हूं जो नैतिक दृष्टि से उन लोगों से बहुत ऊंचे हैं जो उन पर न्यायाधीश बन कर बैठते हैं। सभी सम्प्रदाई सदाचारी, दृढ़ता "

परन्तु रागोजिन्स्की उन लोगों में से था जो किसी को बीच में बोलना बर्दाश्त नहीं कर सकते। नेख्लूदोव की बात को बिना सुने ही वह बोलता गया। नतीजा यह हुआ कि नेख्लूदोव और भी चिढ़ उठा।

"मैं यह भी नहीं मान सकता कि कानून का मकसद मौजूदा व्यवस्था को बनाये रखना है। कानून का लक्ष्य सुधार करना "

"वाह, क्या खूब सुधार है जो जेलों में हो रहा है!" नेख्लूदोव बोल उठा।

" या उन विकार-ग्रस्त तथा वहशी लोगों को हटाना है," रागोजिन्स्की अब भी धृष्टता से बोले जा रहा था, "जिनसे समाज को खतरा है।"

"बस, यही काम तो वह नहीं करता। समाज के पास साधन ही नहीं हैं।"

"यह तुम कैसे कह सकते हो? मैं नहीं समझ सकता," रागोजिन्स्की ने बनावटी हंसी हंसते हुए कहा।

"मेरा मतलब है कि केवल दो प्रकार का ही दण्ड ऐसा है जिसे हम उचित दण्ड कह सकते हैं और इसका प्रयोग पुराने जमाने में किया जाता था। एक, शारीरिक दण्ड और दूसरा प्राण-दण्ड। हम देखते हैं कि ज्यों ज्यों रीति रिवाज में अधिकाधिक मानवीयता आती गई, इनका प्रयोग कम होता गया," नेख्लूदोव ने कहा।

"तुम्हारे मुंह से यह नयी बात सुन कर सचमुच मुझे अचम्भा हो रहा है।"

"यदि कोई आदमी बुरा काम करता है, तो उसे शारीरिक कष्ट देना मैं तर्कसंगत मानता हूं, ताकि भविष्य में वह ऐसा काम नहीं करे। इसी तरह यदि किसी आदमी से समाज को नुकसान पहुंचता है, या समाज को उससे खतरा है तो उसका सिर कलम कर देना मैं तर्कसंगत मानता हूं। इन सजाओं का मतलब समझ में आ सकता है। लेकिन यदि आरामतलबी के कारण या किसी बुरे आदमी की देखादेखी कोई आदमी बुरे काम करने लगता है तो उसे जेलखाने में बन्द कर देने में क्या तुक है? वहां आप उसे खाना देते हैं, जबरदस्ती उसे निठल्ला बिठाये रखते हैं, और बुरे से बुरे लोगों के संग रखते हैं। इसे कौन समझदारी कहेगा? इसमें क्या तुक है कि सरकारी खर्च पर, और यह खर्च फी आदमी पांच सौ रूबल से अधिक बैठता है, एक आदमी को तूला से इर्कुत्स्क गुबेर्निया तक, या कूर्स्क से ..."

"हां, लेकिन फिर भी लोग इन यात्राओं पर ले जाये जाने से डरते हैं भले ही यह सरकारी खर्च पर है। और अगर इस प्रकार की यात्राएं और जेलखाने न होते तो हम लोग भी आज यहां न बैठे होते।"

"जेलखानों से हमारी सुरक्षा सुनिश्चित नहीं हो सकती क्योंकि कैदी हमेशा के लिए कैद नहीं रहते, उन्हें बाद में छोड़ दिया जाता है। इसके विपरीत इन संस्थाओं में लोग अत्यधिक भ्रष्ट और दुराचारी बनते हैं, इस तरह समाज के लिए खतरा बढ़ता है।"

"तुम्हारा क्या मतलब है कि जेल पद्धति में सुधार होना चाहिए?"

"इसमें सुधार नहीं हो सकता। जेलखानों को बेहतर बनाने पर इतना खर्च बैठेगा जितना लोगों की तालीम पर भी खर्च नहीं होता। ऐसा करने से जनता पर और भी बोझ पड़ेगा।"

"लेकिन अगर जेल पद्धति में त्रुटियां रह गई हैं तो इससे कानून तो गलत नहीं हो जाता," अपने साले की बात पर ध्यान दिये बिना रागोजिन्स्की कहता गया।

"इन त्रुटियों का कोई इलाज नहीं है," नेख्लूदोव ने चिल्लाकर कहा।

"तो क्या हुआ? क्या हम कैदियों को मार डालें? या जैसा किसी राजनीतिज्ञ ने सुझाव दिया था इनकी आंखें निकालनी शुरू कर दें?" विजयी मुस्कान के साथ रागोजिन्स्की बोला।

"हां, है तो निर्दयता लेकिन इसका असर होगा। जो कुछ आज किया

जा रहा है उसमें भी निदयता है, लेकिन न केवल यह कि उसका कोई असर नही होता, बल्कि वह इतना मूर्खतापूर्ण है कि हम समझ नही सकते कि सूझ-बूझ रखने वाले लोग ऐसा फौजदारी जैसे बेहूदा और जालिमाना काम म भाग कैसे ले सकते है।"

"मैं खुद इसम भाग लेता हू," रागोजिन्स्की ने कहा और उसका चेहरा पीला पड गया।

"आप जानें और आपका काम। मगर यह बात मेरी समझ के बाहर है।"

"यही नही, बहुत सी बातें है जो तुम्हारी समझ के बाहर हैं' रागोजिन्स्की ने कहा। उसकी आवाज काप रही थी।

"मैंने अपनी आखो से देखा, कि एक सरकारी वकील एक बदनसीब लडके को सजा दिलवाने की भरसक कोशिश कर रहा था। उस लडके को देख कर किसी भी आदमी को रहम आ जाता। हा, जिन लोगो का मन दूषित हो उठा है, उनकी बात और है। मैंने एक दूसरे सरकारी वकील को एक सम्प्रदाई के विरुद्ध जिरह करते सुना। इजील के पाठ को उसने सगीन जुर्म बना कर दिखा दिया। सच तो यह है कि कचहरियो मे इसी किस्म के मूढ और जालिमाना काम होते रहते हैं।"

"अगर मुझे ये काम इस तरह के लगते तो मैं कचहरी मे काम नही करता।"

नेख्लूदोव ने देखा कि उसके बहनोई की ऐनकें नीचे से, अजीब तरह से चमकने लगी थी। "क्या ये आसू तो नही?" उसने सोचा। वे सचमुच आसू ही थे—आहत स्वाभिमान के आसू। रागोजिन्स्की उठ कर खिडकी के पास चला गया और जेब मे से रूमाल निकाल कर पहले खासने लगा और फिर ऐनका के शीशे पोछने लगा, और पोछ चकने के बाद रूमाल से अपनी आखें पोछता रहा। फिर वह सोफे के पास लौट आया और सिगार सुलगा लिया। इसके बाद वह बिल्कुल चुप हो गया।

नेख्लूदोव बडा लज्जित और क्षुब्ध महसूस करने लगा कि मैंने नाहक अपने बहनोई और बहन को इतना अधिक नाराज कर दिया, विशेषकर जब मैं कल ही यहा से जा रहा हू और फिर उन्हें नही मिल पाऊगा।

विदा लेते समय उसे बडी झेंप हो रही थी। वहा से वह सीधा घर लौट आया।

"सभव है मैंने जो कुछ कहा वह ठीक हो। उसमे भी मेरी बातो का कोई जवाब नही बन पडा। लेकिन मेरे कहने का ढग गलत था। इसका मतलब है कि मुझमे कोई भी तबदीली नही आई जो मैं एक आत्मा से इतना द्वेष कर सकता हू कि उसे नाराज कर द और उसकी भावनाओं को ठेस पहुचाऊ। मैंने बेचारी नताशा को भी दुखी किया है," वह मनही मन सोच रहा था।

३४

कैंदियो की जिस टोली मे मास्लोवा शामिल थी उसे स्टेशन से तीन बजे दोपहर की गाडी से रवाना हो जाना था। टोली को जेल मे से निकलते देखने के लिए, तथा कैंदियो के साथ ही स्टेशन तक जा पाने के लिए नेख्लूदाव ने निश्चय किया कि वह बारह बजे तक जरूर जेल मे पहुच जायेगा।

पिछली रात अपना सामान बाधते तथा कागजात समेटते समय उसकी नजर अपनी डायरी पर पडी और वह उसमे इधर उधर लिखे कुछ अश पढने लगा। पीटसबग के लिए रवाना होने से पहले डायरी मे आखिरी शब्द ये थे—"कात्यूशा को मेरी कुर्बानी मजूर नही। वह स्वय कुर्बानी देना चाहती है। उसकी जीत हुई है, और मेरी भी। यह देख कर कि उसमे एक आतरिक परिवतन हो रहा है, मुझे बेहद खुशी होती है, हालाकि इस पर विश्वास करते डरता हू। विश्वास करते डर लगता है लेकिन फिर भी उसका पुनजम हो रहा है।" आगे चल कर एक जगह उसने पढा—"हाल ही मे मुझे अत्यन्त कठोर पर साथ ही अत्यन्त सुखद अनुभव हुए है। मुझे पता चला कि मास्लोवा का अस्पताल मे बहुत बुरा व्यवहार रहा है। यह सुन कर सहसा मुझे बेहद दुख हुआ। जब मैं उससे मिला तो मैं उसके साथ बडी घृणा तथा द्वेष से पेश आया। फिर सहसा मुझे ख्याल आया कि जिस अपराध के लिए मैं उससे इतनी घृणा कर रहा हू वह मैं स्वय कितनी बार कर चुका ह। आज भी मैं यह जुम करता हू, भले ही वह चिन्तन तक सीमित हो। यह सोचते ही मैं अपनी नजरो मे गिर गया, मुझे अपने आपसे घृणा होने लगी। उसके प्रति मेरा हृदय अनुकम्पा से भर उठा। इस तरह फिर मेरे मन मे खुशी का सचार हुआ। काश कि हम अपने दोष देख पाये, तो हम कितने दयालु हो उठेंगे।" इतना पढ चुकने

क बाद नेख्लदोव ने डायरी में लिखा—"मैं नताल्या से मिलने गया था। आत्मसन्तोष न मुझे फिर अनदार और द्वेषपूर्ण व्यवहार करने पर उकसाया। मेरे मन पर इस बात का बहुत बडा बोझ है। अब कोई चारा नही। कल मैं एक नये जीवन मे पदार्पण कर रहा हू। पुराने जीवन को अन्तिम बार विदा! मन मे तरह तरह के अनगिनत प्रभाव घूम रहे है। अभी उन्हे एकबद्ध करना मेरे लिए सभव नही।"

दूसरे दिन प्रात जब नेख्लदोव जागा तो उसका मन भारी था। बहनोई के साथ अपने व्यवहार पर उसे पश्चात्ताप हो रहा था।

"मुझे जरूर जा कर उन्हे मना लेना चाहिए," उसने सोचा, "मैं बिना मिले कैसे जा सकता हू।"

परन्तु घडी देखी तो पता चला कि कोई वक्त नही है। अगर टोली के चलने से पहले पहुचना है तो उसे जल्दी जल्दी तैयार हो जाना चाहिए। जल्दी जल्दी उसने तैयारी कर ली, सामान अपने नौकर और फेदोस्या के पति ताराम के हाथ स्टेशन पर भेज दिया—फेदोस्या का पति भी साथ चल रहा था—और फिर जो भी घोडा गाडी पहले नज़र आई, उसी पर चढ कर जेल की ओर चल पडा।

जिस गाडी मे वह खुद जा रहा था, उससे दो ही घण्टे पहले कैदियों की गाडी छूटती थी। इसलिए नेख्लदोव ने कमरो का किराया चुकाया और वहा से निकल आया।

जुलाई का महीना था। बडी तेज गर्मी पड रही थी। सडक के पत्थर तप रहे थे, दीवारो और लोहे की छतो से तपश बन्द हवा मे मानो बह बह कर गिर रही थी। पिछली रात की उमस मे भी ये ठण्डी नही हो पाई थी। किसी किसी वक्त कभी कोई हवा का हल्का सा झोका उठता लेकिन वह भी गर्म और गर्द से भरा होता, और उससे रोगन की बू आ रही होती। सडको पर बहुत कम लोग आ जा रहे थे, और वे भी एक तरफ साये मे रहने की कोशिश कर रहे थे। केवल सडक की मरम्मत करने वाले किसान धूप मे बैठे तपते बालू मे पत्थर कूट रहे थे। उनके तप हुए चेहरों का रग कासे का सा हो रहा था। पावो मे वे छाल के जूते पहने थे। सडक के बीचोबीच पुलिस के सिपाही, छोटा कोट पहने और नारगी रग की डोरी से रिवाल्वर लटकाये, उदास और निराश, मुह लटकाये

पडे थे। कभी एक पाव पर अपना बोझ डालते कभी दूसरे पर। धूप में चमचमाती सड़क पर घोड़ा-ट्राम, घंटियां बजाती आ-जा रही थी। घोड़ों के सिरों पर सफेद फुंदे लगे थे जिनसे धागे के लिए छेद किए हुए थे।

जब रेक्लावाव गाड़ी में बैठा जेलखाने के सामने पहुंचा तो टोली अभी जेल के आंगन से बाहर नहीं निकली थी। सुबह चार बजे से कैदियों की सुपुर्दगी और वसूली का काम चल रहा था। काम बेहद कठिन था और अभी तक समाप्त नहीं हो पाया था। टोली में ६२३ पुरुष और ६४ स्त्रियां थीं। एक एक कर के सभी को गिनना, फिर रजिस्ट्री-फर्हरिस्त से मिलाना, बीमार और कमज़ोर कैदियों को अलग करना, फिर सबको कानवाय के सुपुर्द करना था। नया इन्स्पेक्टर, उसके दो सहायक, डाक्टर, छोटा डाक्टर, कॉनवाय का अफसर और क्लर्क, सभी जेल के आंगन में, एक दीवार के साथ में मेज़ लगा कर बैठे थे। मेज़ पर कागज़ और लिखने का सामान रखा था। एक एक कर के वे कैदियों को बुलाते, उनकी जांच करते, उनसे सवाल पूछते और कागजों पर अपने टिप्पण लिखते जाते।

सूरज की किरणें धीरे धीरे मेज तक भी जा पहुंची थीं। हवा बन्द थी, कुछ इस कारण और कुछ पास में खड़ी कैदियों की भीड़ के श्वासों के कारण गर्मी असह्य हो उठी थी।

"हे भगवान, यह काम कभी ख़त्म भी होगा या नहीं!" कानवाय अफसर बोला। यह आदमी कद का ऊंचा-लम्बा और मोटा था, चेहरा लाल, कंधे ऊंचे और बाजू छोटे छोटे थे। बराबर सिगरेट पिये जा रहा था और धुआं अपनी घनी मूछों में छोड़े जा रहा था। एक लम्बा कश खींच कर बोला—"तुम लोग मुझे मार डालोगे। कहां से पकड़ लाये हो इन्हें? और कितने रह गये हैं?"

क्लर्क ने लिस्ट देखी।

"औरतों को छोड़ कर २३ आदमी अभी और बाकी हैं।

"वहां किस लिए खड़े हो? चलो इधर," कानवाय अफसर ने चिल्ला कर उन कैदियों को पुकारा जो अभी तक जांच के लिए नहीं आये थे, और जो एक के पीछे दूसरा भीड़ बना कर खड़े थे। पिछले तीन घण्टे से वे कतारें बांधे, चुनचुनाती धूप में खड़े अपनी अपनी बारी का इन्तज़ार कर रहे थे।

जहां आंगन में, जेल के अन्दर यह काम हो रहा था, वहां जेल के

वाहर, फाटक के सामने, जहा बन्दूक उठाये मन्तरी रोज की तरह खडा पहरा दे रहा था, वीसेक छकडे खडे थे। य कँदियो का सामान ढोने के लिए तथा ऐसे बंन्दियो को ले जाने के लिए खडे थे जो कमजोरी के कारण स्वय चल कर नही जा सकते थे। एक कोने म कँदियो के भाई-बन्द इस उमीद म खडे थे कि जब कैदी वाहर निकलेगे तो मौका देख कर य उनसे दुआ-सलाम कर सकेंगे और छोटी मोटी चीजें उन्ह दे सकेंगे। इन्ही लोगो के बीच नेख्लूदोव भी जा खडा हुआ।

घण्टा भर वहा खडा रहने के वाद उसके कानो म तरह तरह की आवाजें पडने लगी—वेडिया खनकने, लोगो के चलन, अफसरो की आवाजें, खासने खखारने तथा एक बहुत बडी भीड मे लोगो के बुदबुदाने की आवाजें आने लगी। लगभग पाच मिनट तक यही चलता रहा। इस बीच कुछेक वाडर फाटक म से वाहर और अन्दर आते-जाते रहे। अन्त म हुक्म सुनाया गया।

बडे शोर के साथ फाटक खुले। वेडियो-जजीरो की आवाज और भी ऊची हो उठी। कॉनवाय के सिपाही, सफेद वर्दी कोट पहन और कन्धो पर बन्दूकें रखे वाहर सडक पर आ गये और फाटक के सामने पूरा गोल चक्र बना कर खडे हो गये। प्रत्यक्षत इस तरह रस्मी तौर पर आ कर खडे होने का उन्ह काफी अभ्यास था। इसके वाद एक और आदेश दिया गया और दो दो कर के कैदी बाहर आने लगे। उनके घुटे हुए सिरो पर गोल चपटी टोपियां थी और कन्धो पर बोरियां थी। कैदियो के पावो मे बेडिया पडी थीं। एक हाथ से बोरी को थामे, दूसरी बाह झुलाते हुए, वे पाव घसीटते चल आ रहे थे। सबसे आगे वे कैदी वाहर निकले जिन्ह कडी मशक्कत की सजा दी गई थी। सभी न भूरे रंग की पतलूनें और कुर्ते पहन रखे थे जिनकी पीठ पर नम्बर लिखे थे। सभी कैदी तेज तेज कदम रखते हुए वेडिया खनखनाते और वाह झुलाते वाहर निकले मानो किसी लम्बे सफर पर जाने के लिए तैयार हो कर आये हों। इनम जवान भी थे और बूढे भी, पतले भी थे और मोटे भी, पीले चेहरो वाले, लाल चेहरो वाले और सवलाये चेहरो वाले भी थे, दाढी वाले और बिना दाढी के भी थे, रूसी, तातार और यहूदी—सभी तरह के लोग शामिल थे। तेज तेज चलते हुए वे वाहर निकले लेकिन दस कदम चलने के वाद वे सहसा रुक गये और बडी आज्ञाकारिता के साथ चार चार की लाइन बना कर एक दूसरे के पीछे खडे होने लगे। इसके बाद फौरन् ही और आदमी वाहर

निकलने लगे। उनके सिर भी मुडे हुए थे। इन्होने भी उसी तरह के कपडे पहन रखे थे। इनके पावो मे बेडिया नही थी, लेकिन इनके हाथ आपस मे हथकडियो के साथ बधे हुए थे। ये वे कैदी थे जिन्हे निर्वासन की सजा दी गई थी। ये कैदी भी तेज तेज चलते हुए आये और उसी तरह सहसा रुक गये और चार चार की लाइन बना कर खडे हो गये। इनके बाद वे कैदी बाहर निकले जिन्हे उनकी ग्राम-पचायतो ने निर्वासित कर दिया था। इसके बाद, इसी ढग से, औरते बाहर आयी। सबसे पहले वे औरते जिन्हे कडी मशक्कत की सजा दी गई थी। इन्होंने भूरे रग के लबादे और सिर पर रूमाल बाध रखे थे। इनके पीछे वे औरते जिन्हे निर्वासन की सजा मिली थी, और अन्त मे वे जो स्वेच्छा से अपने पतियो के साथ साइबेरिया जा रही थी। इन औरतो ने अपने नगर या गाव की पोशाके पहन रखी थी। कुछेक औरते अपने लबादो के अगले हिस्सो मे अपने बच्चो को लपेटे साथ लिये आ रही थी।

जिस भाति घोडो के एक झुण्ड मे बछेरे अपनी माओ की टागो के साथ सट कर भागे चले आते है, इसी तरह इन औरतो के साथ इनके बच्चे, लडके और लडकिया भी थी।

आदमी चुपचाप खडे थे। केवल किसी किसी वक्त खास देते या छोटी मोटी बात कह देते। औरते अनवरत बोले जा रही थी। जब वे बाहर निकल रही थी तो नेख्लूदोव को लगा जैसे उसने मास्लोवा को देखा हो, लेकिन शीघ्र ही मास्लोवा भीड मे खो गई, और उसे अपने सामने भूरे रग के कपडे ही कपडे नजर आने लगे—यह नही लगता था जैसे वे इन्सान हैं, या कम से कम औरतो वाली उनमे कोई बात न थी। पीठ पर बोरिया उठाये, उनके बच्चे उनकी टागो से चिपकते हुए, वे आयी और मर्दों के पीछे आ कर खडी हो गयी।

जेल मे से कैदी गिन कर भेजे गये थे। लेकिन बाहर पहुचने पर कॉनवाय वालो ने उन्हे फिर गिना और फहरिस्त मे दर्ज हुए नम्बरो के साथ नम्बर मिलाने लगे। इसमे बहुत देर लगी, खास कर इसलिए कि कुछ कैदी अपनी जगह छोड कर आगे-पीछे हो जाते थे जिससे कॉनवाय वालो की गणना मे गडबड हो जाती थी। कॉनवाय के सिपाही चिल्ला रहे थे और कैदियो को धकेल रहे थे। कैदी बडबडाते लेकिन फिर भी जहा कहे गये, खडे हो जाते थे। जब सभी गिन जा चुके तो कॉनवाय अफसर ने आज्ञा

दिया। आदेश देन की देर थी कि भीड म खलबली मच गई। मद, औरत और बच्चे, जो लोग शरीर के दुरस्त थे, छकडा की ओर भाग कर जान लगे, एक दूसरे से आगे निकलने की कोशिश करत हुए। छकडा म वे अपनी अपनी बोरिया फेंक ऊपर चढ़ने लगे। औरतें, अपन रोते चिल्लाते बच्चो को लिये, हसोड लडके छकडा म अपन लिए जगह बनाने क लिए छीना झपटी करते हुए, तथा सुध-बुध खोये, उदास कैदी छकडा म जा बैठे।

कुछेक कैदी चलते हुए कॉनवाय अफसर के पास आये और सिर पर से टोपिया उतार कर उससे कोई दरख्वास्त की। नेख्लूदोव को बाद म पता चला कि वे छकडो मे बैठने की इजाजत माग रहे थे। उस वक्त उसने इतना ही देखा कि अफसर न बिना कैदिया की ओर देखे सिगरेट का कश लिया और फिर सहसा एक कैदी की ओर घूसा दिखात हुए अपन छोटे से बाजू का झटका। कैदी न झट स अपना मुडा हुआ सिर कन्धो म छिपा लिया, मानो डर रहा हो कि अफसर उसे घूसा मार बैठेगा, और उछल कर पीछे हट गया।

"छकडा मे तुम्हे ऐसा बिठाऊगा कि उम्र भर याद रखोगे। चलो हटो यहा से, तुम्हे पैदल जाना होगा," अफसर चिल्लाया।

केवल एक आदमी को छकडे मे बठने की इजाजत दे दी गई। यह कोई बूढा आदमी था जिसके पावो म बेडिया पडी थी। नेख्लूदोव ने उसे छकडा की ओर जाते हुए देखा। उसने सिर पर से गोल चपटी टोपी उतार रखी थी और बार बार छाती पर क्रॉस का चिन्ह बना रहा था। बेडियो के कारण उसके लिए छकडे पर चढना मुश्किल हो रहा था, वह अपनी जीर्ण, दुबल टागो को ऊपर नही उठा पा रहा था। आखिर एक औरत ने, जो पहले से छकडे मे बैठी थी, उसका हाथ पकड कर उसे ऊपर खीच लिया।

जब छकडो पर बोरिया लद गइ और जिन लोगो को उनम बैठना था, बैठ गय, तो अफसर ने सिर पर से टोपी उतारी, अपने माथे, गजे सिर, और मोटी लाल गदन को पोछा और छाती पर क्रॉस का चिन्ह बनाया।

"मार्च!" उसने हुक्म दिया।

सिपाहियो की बन्दूक खडखडायी। कैदियो न सिरो पर स टोपिया उतारी और क्रास का चिन्ह बनाने लगे। जो लोग उन्ह छोडने आये थ उन्होने पुकार कर कुछ कहा। कैदियो न जवाब मे कुछ पुकार कर कहा।

औरतों में बड़ी उत्तेजना थी। इस तरह टोली आगे बढ़ने लगी। उनके सारा सामान गठरे गाड़ियों पर लदे हुए थे। कैदियों के पाँवों में पड़ी बेड़ियों से खनखन की आवाज उठने लगी। सबसे आगे सिपाहियों का दस्ता था। उनके पीछे वे कैदी थे जिन्हें कठोर सजा दी गई थी। उनके पाँवों में बेड़ियाँ खनखना रही थीं। उनके पीछे निर्वासित कैदी तथा बन्दी थे जिन्हें उनकी ग्राम-पंचायतों ने निर्वासित कर दिया था। दो दो करके इनकी कलाइयों पर हथकड़ियाँ लगी थीं। इनके पीछे औरतें थीं। उनके पीछे गाड़ियों में लदे छकड़ों पर दुबले और कमजोर कैदी बैठे थे। एक छकड़े में, गठरियों के ढेर के ऊपर एक औरत बैठी, जार जार रो रही थी और सिसकियाँ भर रही थी। उसने अपना बच्चा कपड़ों में लपेट रखा था।

३५

कैदियों का जुलूस इतना लम्बा था कि जब छकड़ों की बारी आया, जिनमें सामान लदा था तथा कमजोर कैदी बैठे थे, तो जुलूस का अगला सिरा आँखों से ओझल हो चुका था। जब आखिरी छकड़ा भी चल निकला तो नेख्लूदोव अपनी गाड़ी में आ बैठा जो खड़ी इन्तजार कर रही थी और गाड़ीवान को गाड़ी बढ़ा कर सबसे आगे चलने वाले कैदियों तक ले चलने को कहा। वह यह देखना चाहता था कि इस टोली में उसके कोई परिचित कैदी भी है या नहीं, साथ ही मास्लोवा से मिल कर यह पूछना चाहता था कि उसे वे चीजें मिल गई थीं या नहीं जो उसने भेजी थीं।

गर्मी बहुत थी। हवा बन्द थी। जुलूस सड़क के ऐन बीचोबीच चल रहा था। हजारों कदमों से उठती गर्द और धूल सारा वक्त टोली को ढँके हुए थी। कैदी तेज तेज चल रहे थे, इसलिए नेख्लूदोव की गाड़ी को आगे तक पहुँचने में काफी वक्त लगा, क्योंकि घोड़ा बहुत आहिस्ता चल रहा था। एक एक करके, वह इन विचित्र, भयानक दिखने वाले जीवों की पंक्तियाँ पीछे छोड़ता चला जा रहा था। इनमें से किसी को भी नेख्लूदोव नहीं जानता था।

जुलूस आगे बढ़ता गया। सभी कैदियों ने एक से जूते और कपड़े पहन रखे थे। हजारों कदम एक साथ चल रहे थे। सभी कैदी अपना स्वतन्त्र

वाजू खूब झुलाते हुए चल रहे थे, मानो वे अपना हौसला कायम रखना चाहते हों। अनगिनत कैदी, सभी एक जैसे, सभी की स्थिति एक जैसी, अजीब और असाधारण—नेख्लूदोव को लग रहा था जैसे ये लोग इंसान नहीं हैं, बल्कि किसी प्रकार के अनोखे, भयानक जीव हैं। उस वक्त तक उसे ऐसा ही प्रतीत होता रहा जब तक कि कैदियों की भीड़ में उसने दो-एक आदमी पहचान नहीं लिये। एक तो उनमें से फ्योदोरोव था जिसने हत्या की थी, दूसरा ओखोतिन, मसखरा, जो जलावतनों की लाइन में चल रहा था। एक तीसरा आवारा सड़क-सवार भी था जिसने नेख्लूदोव से सहायता की प्रार्थना की थी। लगभग सभी कैदियों ने घूम कर गाड़ी की ओर तथा गाड़ी में बैठे अमीर आदमी की ओर देखा। फ्योदोरोव ने नेख्लूदोव की ओर देख कर अपना सिर पीछे की ओर झटक दिया, जिसका मतलब यह दिखाना था कि मैंने आपको पहचान लिया है। ओखोतिन ने आंख मारी। पर दोनों में से किसी ने भी झुक कर अभिवादन नहीं किया, क्योंकि उनका ख्याल था कि इसकी इजाज़त नहीं होगी।

औरतों के नज़दीक पहुंचते ही नेख्लूदोव ने झट मास्लोवा को पहचान लिया। वह दूसरी लाइन में चल रही थी। लाइन के सिरे पर एक बड़ी कुरूप सी औरत चल रही थी, जिसकी टांगें छोटी छोटी, और आंखें काली थीं, और जिसने अपना लबादा कमरबन्द में खोंस रखा था। यह छबीली थी। उसके साथ वाली स्त्री गर्भवती थी, और बड़ी मुश्किल से पांव घसीटती चली जा रही थी। तीसरे नम्बर पर मास्लोवा थी। उसने अपनी बोरी को कंधे पर उठा रखा था और सीधे आगे की ओर देख रही थी। चेहरे से शान्ति तथा दृढ़ता झलक रही थी। लाइन में चौथे नम्बर पर एक खूबसूरत छोटी उम्र की औरत थी जो तेज़ तेज़ कदम रखती हुई चली जा रही थी। उसने छोटा सा लबादा पहन रखा था, और सिर पर इस ढंग से रूमाल बांध रखा था जिस ढंग से किसान औरतें बांधती हैं। यह फ़ेदोस्या थी।

नेख्लूदोव गाड़ी में से उतर कर औरतों की ओर बढ़ गया। वह मास्लोवा से पूछना चाहता था कि उसे चीज़ें मिलीं या नहीं, साथ ही यह भी कि उसका हाल चाल कैसा है। लेकिन कानवाय के सार्जेंट ने देख लिया जो इसी तरफ लाइन के साथ साथ चल रहा था और भागा हुआ नेख्लूदोव के पास आ गया।

"ग्राप ऐसा नही कर सकते। टोली के कैदियो से बात करने की इजाजत नही है," पास आते हुए सार्जेंट ने चिल्ला कर कहा।

फिर सहसा उसने नेख्लूदोव को पहचान लिया (जेल मे सभी लोग उसे जानते थे) और सलाम करते हुए पास आ कर बोला—

"इस वक्त नही जनाब, स्टेशन पर बात कर लीजिये। यहा पर बात करने की इजाजत नही है। पीछे मत रहो, चलो आगे, ए! मार्च!" उसने कैदियो से कहा और चुस्ती दिखाते हुए भाग कर अपनी जगह पर आ गया, हालाकि गर्मी बहुत थी, और उसने नये, बढिया बूट पहन रखे थे।

नेख्लूदोव पटरी पर चढ गया और गाडी वाले को पीछे पीछे गाडी से आने को कह पैदल चलने लगा ताकि टोली को देखता रह सके। जिधर से भी टोली गुजरती लोग मुड मुड कर उसकी ओर देखते, और उनकी आखो मे दया तथा भय के भाव छा जाते। जो लोग गाडियो म बठ पास से गुजरते वे गाडिया मे से सिर निकाल निकाल कर कैदियो की ओर देखते। पैदल जाने वाले आदमी रुक जाते और इस भयानक दृश्य को हैरान तथा भयातुर आखो से देखने लगते। कुछ लोग आगे बढ आते और कदिया को भीख देते, लेकिन इसे कॉनवाय के सिपाही वसूल करते थे। कुछ लोग तो मन्त्रमुग्ध की भाति टोली के पीछे पीछे चलने लगते, फिर सहसा रुक जाते, सिर हिलाते, और वही खडे खडे कदिया की ओर देखते रहते। जिस तरफ से भी यह भयानक जुलूस गुजरता, लोग फाटको और दरवाजो मे से बाहर निकल आते, और अन्य लोगा को भी बाहर आने के लिए कहते, या खिडकियो मे से बाहर सिर निकाले, चुपचाप, मूर्तिवत खडे इनकी ओर देखते रह जाते। एक चौराहे पर जुलूस के कारण एक बढिया गाडी को रुक जाना पडा। गाडी के बॉक्स पर एक स्थूलकाय कोचवान बैठा था जिसका चेहरा दमक रहा था और पीठ पर बटनो की दो पक्तिया लगी थी। गाडी के अन्दर एक दम्पती बैठे थे। पत्नी, पीतवर्ण, पतली सी औरत थी जिसने सिर पर हल्के से रग का टोप पहन रखा था और हाथ मे भडकीले रग का छाता पकडे हुए थी। पति ने टॉप हैट और हल्के रग का चुस्त, हल्का सा ओवरकोट पहन रखा था। उनके सामने वाली सीट पर उनके बच्चे बैठे थे। एक लडकी और एक आठेक साल का लडका। लडकी ने बहुत खूबसूरत कपडे पहन रखे थे, उसके सुनहरी बाल कधो पर गिर रहे थे और वह एक नयी खिली कली की तरह सुदर लग रही

थी। उसके हाथ मे भी भडकीले रग का छाता था। लडके की गरदन पतली थी और कधो के दोनो तरफ की हड्डिया नजर आ रही थी। उसने सिर पर जहाजिया की टोपी पहन रखी थी, जिसके साथ लम्बे लम्बे फीते लटक रहे थे।

बाप कोचवान को फटकारने लगा कि जब मौका था तो तुम जुलूस : आगे से क्यो नही निकल गये। मा ने भौह चढायी, और घृणा से अपनी आखें कुछ कुछ बन्द कर ली, और गद और धूप से अपने को बचाने के लिए अपना रेशमी छाता मुह के आगे कर लिया।

मालिक के इन अन्यायपूर्ण शब्दा पर मोटे नितब वाले कोचवान ने गुस्से स भौंह चढायी — मालिक ने खुद ही तो इस रास्ते से गाडी ले चलने का हुक्म दिया था। बडी मुश्किल से वह घोडो को काबू मे कर पा रहा था जो आगे बढने के लिए बेचैन थे। उनके मुह से झाग निकल रही थी। घोडे काले रग के थे और उनकी पीठ खूब चमक रही थी।

पुलिस का सिपाही जी-जान से इस बढिया गाडी के मालिक को खुश करना चाहता था। वह चाहता तो था कि टोली को रोक दे ताकि गाडी निकल जाये। लेकिन जिस भयानक सजीदगी से कैदियो का जुलूस चला जा रहा था, उसमे बाधा डालने की सिपाही को भी हिम्मत नही हुई। इसलिए चाहते हुए भी वह इस अमीर आदमी को खुश नही कर सका। उसने हाथ उठा कर सलाम किया ताकि धन ऐश्वय के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त कर सके, और घूर कर कदियो की ओर देखा, मानो गाडी म बैठे अमीरजादो को इस बात का वचन दे रहा हो कि हर हालत मे मैं इन लोगो से आपकी रक्षा करूगा। सो गाडी को उस वक्त तक खडे रहना पडा जब तक कि सारा का सारा जुलूस निकल नही गया और आखिरी छकडे, बोरिया और कैदिया से लदे, खडखडाते गुजर नही गये। जो औरत छकडे मे बैठी पहले चीख चिल्ला रही थी, अब शान्त हो गई थी। लेकिन इस अमीराना गाडी को देख कर वह फिर चीखने और सिसकिया भरने लगी। उसके बाद कोचवान ने रासो को हल्का सा झटका दिया और काले घोडे आगे को बढ निकले। उनके नाल गोल पत्थरा की बनी सडक पर खनखने लगे। गाडी के पहिया पर रबड के टायर चढे थे, हल्के हल्के झूलती हुई वह देहात की ओर जाने लगी जहा पति, पत्नी, लडकी और लडका — जिसके कधा की हड्डिया नजर आ रही थी — छुट्टी मनाने जा रहे थे।

"आप ऐसा नही कर सकते। टोली के कैदियों से बात करने की इजाज़त नही है," पास आते हुए सार्जेंट ने चिल्ला कर कहा।

फिर सहसा उसने नेख्लूदोव को पहचान लिया (जेल में सभी लोग उसे जानते थे) और सलाम करते हुए पास आ कर बोला–

"इस वक्त नही जनाब, स्टेशन पर बात कर लीजिये। यहा पर बात करने की इजाज़त नही है। पीछे मत रहो, चलो आगे, ए! मार्च!" उसने कैदियो से कहा और चुस्ती दिखाते हुए भाग कर अपनी जगह पर आ गया, हालांकि गर्मी बहुत थी, और उसने नये, बढिया बूट पहन रखे थे।

नेख्लूदोव पटरी पर चढ गया और गाडी वाले को पीछे पीछे गाडी ले आने को कह पैदल चलने लगा ताकि टोली को देखता रह सके। जिधर से भी टोली गुज़रती लोग मुड मुड कर उसकी ओर देखते, और उनकी आखो मे दया तथा भय के भाव छा जाते। जो लोग गाडियो मे बैठे पास से गुज़रते वे गाडियो म से सिर निकाल निकाल कर कैदियो की ओर देखते। पैदल जाने वाले आदमी रुक जाते और इस भयानक दृश्य को हैरान तथा भयातुर आखो से देखने लगते। कुछ लोग आगे बढ आते और कैदियो को भीख देते, लेकिन इसे कॉनवाय के सिपाही वसूल करते थे। कुछ लोग तो मन्त्रमुग्ध की भाति टोली के पीछे पीछे चलने लगते, फिर सहसा रुक जाते, सिर हिलाते, और वही खडे खडे कैदियो की ओर देखते रहते। जिस तरफ से भी यह भयानक जुलूस गुज़रता, लोग फाटको और दरवाज़ो मे से बाहर निकल आते, और अन्य लोगो को भी बाहर आने के लिए कहते, या खिडकियो मे से बाहर सिर निकाले, चुपचाप, मूर्तिवत खडे इनकी ओर देखते रह जाते। एक चौराहे पर जुलूस के कारण एक बढिया गाडी को रुक जाना पडा। गाडी के बॉक्स पर एक स्थूलकाय कोचवान बैठा था जिसका चेहरा दमक रहा था और पीठ पर बटनो की दो पंक्तियां लगी थी। गाडी के अन्दर एक दम्पती बैठे थे। पत्नी, पीतवर्ण, पतली सी औरत थी जिसने सिर पर हल्के से रग का टोप पहन रखा था और हाथ मे भडकीले रग का छाता पकडे हुए थी। पति ने टाप-हैट और हल्के रग का चुस्त, हल्का सा ओवरकोट पहन रखा था। उनके सामने वाली सीट पर उनके बच्चे बैठे थे। एक लडकी और एक आठेक साल का लडका। लडकी ने बहुत खूबसूरत कपडे पहन रखे थे, उसके सुनहरी बाल कधो पर गिर रहे थे और वह एक नयी खिली कली की तरह सुदर लग रही

थी। उसके हाथ मे भी भडकीले रग का छाता था। लडके की गरदन पतली थी और कधो में दोनो तरफ की हड्डिया नजर आ रही थी। उसने सिर पर जहाजियो की टोपी पहन रखी थी, जिसके साथ लम्बे लम्बे फीते लटक रहे थे।

बाप कोचवान को फटकारने लगा कि जब मौका था तो तुम जुलूस के आगे से क्यो नही निकल गये। मा ने भौह चढायी, और घृणा से अपनी आखें कुछ कुछ बन्द कर ली, और गर्द और धूप से अपने को बचाने के लिए अपना रेशमी छाता मुह के आगे कर लिया।

मालिक के इन अन्यायपूर्ण शब्दो पर मोटे नितब वाले कोचवान ने गुस्से से भौह चढायी—मालिक ने खुद ही तो इस रास्ते से गाडी ले चलने का हुक्म दिया था। बडी मुश्किल से वह घोडो को काबू मे कर पा रहा था जो आगे बढने के लिए बेचैन थे। उनके मुह से झाग निकल रही थी। घोडे काले रग के थे और उनकी पीठ खूब चमक रही थी।

पुलिस का सिपाही जी-जान से इस बढिया गाडी के मालिक को खुश करना चाहता था। वह चाहता तो था कि टोली को रोक दे ताकि गाडी निकल जाये। लेकिन जिस भयानक सजीदगी से कैदियों का जुलूस चला जा रहा था, उसमे बाधा डालने की सिपाही को भी हिम्मत नही हुई। इसलिए चाहते हुए भी वह इस अमीर आदमी को खुश नही कर सका। उसने हाथ उठा कर सलाम किया ताकि धन ऐश्वर्य के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त कर सके, और घूर कर कैदियो की ओर देखा, मानो गाडी मे बैठे अमीरजादो को इस बात का वचन दे रहा हो कि हर हालत में मैं इन लोगो से आपकी रक्षा करूगा। सो गाडी को उस वक्त तक खडे रहना पडा जब तक कि सारा का सारा जुलूस निकल नही गया और आखिरी छकडे, वारियो और कैदियो से लदे, खडखडाते गुजर नही गये। जो औरत छकडे मे बैठी पहले चीख चिल्ला रही थी, अब शात हो गई थी। लेकिन इस अमीराना गाडी को देख कर वह फिर चीखने और सिसकियां भरने लगी। उसके बाद कोचवान ने रासो को हल्का सा झटका दिया और काले घोडे आगे को बढ निकले। उनके नाल गोल पत्थरो की बनी सडक पर झनझने लगे। गाडी के पहियो पर रबड के टायर चढे थे, हल्के हल्के झूलती हुई वह देहात की ओर जाने लगी जहा पति, पत्नी, लडकी और लडका—जिनके कधो की हड्डिया नजर आ रही थी—छुट्टी मनाने जा रहे थे।

लडके और लडकी दोना ने यह अनोखा दृश्य देखा। लेकिन न तो मा ने और न ही उनके बाप ने इसके बारे मे उन्हे कुछ बताया। अत बच्चो को स्वय अपनी समझ के अनुसार इसका कुछ न कुछ मतलब निकालना पडा।

लडकी ने मा-बाप के चेहरे का भाव देखा और इस समस्या का समाधान यह सोच कर कर लिया कि ये बिलकुल भिन्न प्रकार के लोग हैं जिनका उसके मा-बाप तथा अन्य परिचित लोगो से कोई मेल नही। ये बुरे लोग हैं, इसी लिए उनके साथ ऐसा सुलूक किया गया है। यही कारण था कि लडकी इन्हे देख कर डर गई थी, और जब वे नजर से दूर हुए तो उसने चैन की सास ली।

परन्तु लडके की प्रतिक्रिया इससे भिन्न हुई। लम्बी पतली गर्दन वाला यह लडका भी जुलूस को एकटक देखता रहा था। उसे इस बात का दृढ विश्वास था, और स्वय भगवान ने उसके हृदय मे यह बात डाली थी कि ये लोग भी वैसे ही हैं जैसा कि वह खुद है, जैसे ससार मे अन्य लोग हैं। किसी ने इनके साथ कोई ऐसा अन्याय किया है जो नही करना चाहिए था। उसे इनकी स्थिति पर रहम आ रहा था। उनके मुडे हुए सिर और बेडिया-हथकडिया देख कर वह डर गया। और उन लोगो के बारे मे सोच कर भी वह डर गया जिन्होने उनके सिर मुडे थे और उनके पावो मे बेडिया डाली थी। इसी कारण इस दृश्य को देखते हुए उसके होठ अधिकाधिक फडफडाने लगे। परन्तु यह सोच कर कि इसे देख कर रोने लगना बडी लज्जा की बात होगी, वह अपनी रुलाई दबाने की भरसक चेष्टा करने लगा।

३६

कैदियो के साथ साथ नेख्लदोव भी तेज रफ्तार से चलता गया। हवा बन्द थी, और चिलचिलाती धूप मे वायुमण्डल धूल से अटा हुआ था। नेख्लूदोव ने बहुत कपडे तो नही पहन रखे थे लेकिन उसे बेहद गर्मी लग रही थी और इस हवा मे सास लेना असम्भव हो रहा था।

लगभग दो फलाँग चलते रहने के बाद वह गाडी म बैठ गया। लेकिन सडक के बीचोबीच गाडी मे बैठ कर जाते हुए उसे और भी गर्मी लगी।

उसे वह वार्तालाप याद हो आया जो गत रात बहनोई के साथ हुआ था, लेकिन इस वक्त उसके बारे म सोच कर उसका मन विचलित नही हुआ जैसा कि सुबह उठने वक्त हुआ था। टोली के जेलखाने से निकलने तथा उसके साथ साथ जाने स जो प्रभाव उसके मन पर अंकित हुए थे व अधिक प्रबल थे। पर मुख्य बात यह थी कि इस तेज़ गर्मी के कारण वह सब कुछ भूला हुआ था।

पटरी पर एक जगह, वृक्षो पत्ता के साये म, जो एक बाड पर से बाहर की ओर झाक रहे थे, दो स्कूली लडके एक बरफ बेचने वाले के पास खडे थे। बरफ़ बेचने वाला घुटनो के बल झुका हुआ था। एक लडका पहले ही हाथ मे सीग का चम्मच पकडे उसे चूस रहा था और आइसक्रीम का मजा ले रहा था। दूसरे के लिए खाचे वाला गिलास म कोई पीले रग का रस डाल रहा था।

नख्लूदोव को बेहद प्यास लग रही थी। उसने अपने गाडी वाले से पूछा—

"क्या यहा पीने के लिए कुछ मिल सकेगा?"

"यहा नजदीक ही एक अच्छी जगह है," गाडीवान ने जवाब दिया और मोड मुड कर एक ढाबे के सामने गाडी खडी कर दी, जिसके दरवाज़े के ऊपर बडा सा बोर्ड लगा था।

काउटर के पीछे एक मोटा सा बारमैन केवल एक कमीज़ पहने खडा था। बैरे मेज़ो के सामने कुसियो पर बैठे थे (उस वक्त दूकान म कोई इक्का-दुक्का ही ग्राहक आये तो आये)। किसी जमाने मे बैरो की वर्दिया साफ रही होगी, लेकिन इस वक्त तक वे काफी मैली हो चुकी थी। इस असाधारण ग्राहक के अन्दर चले आने पर वे बडे कुतूहल से उसकी ओर देखने लगे और सेवा करने के लिए उठ खडे हुए। नेख्लूदोव ने सोडा-वॉटर की एक बोतल लाने को कहा और खिडकी से थोडा हट कर एक छोटे से मेज़ के सामने बैठ गया जिस पर गदा सा कपडा बिछा था।

एक और मज पर दो आदमी बैठे बडे दोस्ताना ढग से कोई हिसाब जोड रहे थे। बार बार वे अपना माथा पोछते। उनके सामने, मेज़ पर, चाय का सामान और एक सफेद रग की बोतल रखी थी। उनम म एक काले बालो वाला था, जिसकी चाद गजी हो रही थी। केवल सिर के पीछे बालो की हल्की सी झालर उग रही थी, जिस तरह की रागोजिन्स्की के

सिर पर थी। उसे देख कर नेख्लूदोव को फिर बहनोई के साथ हुआ वार्तालाप याद आ गया और उसकी फिर इच्छा हुई कि उसे और अपनी बहिन से जा कर मिले।

"गाडी छूटने मे इतना कम समय रह गया है कि यह मुमकिन नहा हो सकेगा," वह सोचने लगा, "इससे बेहतर यही होगा कि मैं चिट्ठी लिख दू।" उसने कागज मागा, साथ ही लिफाफा और टिकट भी, और ठण्डे ठण्डे सोडा-वॉटर के घूट भरते हुए वह सोचने लगा कि क्या लिखे। लेकिन बार बार उसका मन भटक जाता और उसे सूझ न पडता कि किन शब्दो मे पत्र लिखे।

"प्रिय नताल्या, कल तुम्हारे पति के साथ जो वातालाप हुआ उससे मन बडा उदास हो उठा है। इस मन स्थिति म मेरे लिए यहा से चल जाना मुश्किल हो रहा है," उसने लिखा। "आगे क्या लिखू? जो कुछ कल मैंने उससे कहा, उसके लिए माफी मागू? पर मैंने वही कुछ कहा जो मैं महसूस करता हू। वह समझेगा कि मैं अपने शब्द वापस ले रहा हू। इसके अलावा उसका मेरे निजी मामलो मे दखल देना   नही, नही यह मुझसे न हो सकेगा।" और फिर उसके मन मे उस आदमी के प्रति घृणा उठने लगी, जो उससे इतना विभिन्न था। वह चिट्ठी को खत्म नहो कर पाया और कागज को तह कर के जेब मे डाल लिया। फिर बिल अदा कर के बाहर निकल आया और गाडी मे बैठ कदियो की टोली की ओर जाने लगा।

गर्मी और भी बढ गई थी। ऐसा जान पडता था जैसे सडक के पत्थरो और दीवारो मे से आग निकल रही हो। पटरी पर चलते हुए महसूस होता था जैसे पाव झुलस रहे हो। गाडी पर चढते समय जब उसने अपना हाथ गाडी के वार्निश हुए मड-गाड पर रखा तो उसे ऐसा जान पडा जैस उसने आग को छू लिया हो।

घोडा धीरे धीरे चला जा रहा था मानो थका हुआ हो। सडक ऊबड खाबड और धूल से भरी थी। घोडे के खुर एक ही नीरस लय मे सडक पर पड रहे थे। गाडीबान बार बार ऊघ जाता था। नेख्लूदोव भावशून्य आखो से सामने की ओर देखे जा रहा था। वह किसी चीज़ के बारे म भी नही सोच रहा था।

ढलुवा सडक के एक बडे से घर के फाटक के सामन कुछ लोग जमा

थे, पास ही मे एक कॉनवाय का सिपाही खडा था। नेख्लूदोव ने गाडीवान को रुकने के लिए कहा।

"क्या हुआ है?" उसने चौकीदार से पूछा।

"किसी कैदी को कुछ हो गया है।"

नेख्लूदोव गाडी पर से उतर पडा, और उन लोगो के पास जाने लगा। सडक के नुकीले पत्थरा पर एक बडी उम्र का कैदी पडा था—चौडे कधे, लाल दाढी, चिपकी नाक। उसके पाव ऊचाई पर थे और सिर नीचे की ओर लुढका हुआ था। उसका चेहरा बहुत लाल हो रहा था। भूरे रग का कुर्ता और पतलन पहने वह पीठ के बल लेटा था और चित्ती भरे हाथ जमीन के साथ लगे थे। उसकी लाल लाल आखें आकाश पर लगी थी। बडी बडी देर के बाद उसकी चौडी, ऊची छाती फूल उठती और वह कराह उठता। उसके पास एक चिडचिडा सा सिपाही, एक फेरीवाला, एक डाकिया, एक क्लर्क, छाता उठाये एक बुढिया औरत, और एक लडका जिसके हाथ मे खाली टोकरी थी, खडे थे। लडके के सिर पर छोटे छोटे बाल थे।

"ये लोग दुबले हो जाते हैं। जेलखाने मे बन्द पडे रहते हैं, इसलिए कमजोर हो जाते हैं। इन्हे जब बाहर भी लाते है तो ऐसी जलती धूप मे," क्लर्क ने नेख्लूदोव को सम्बोधित कर के कहा जो अभी अभी वहा पहुचा था।

"यह शायद बचेगा नही, मर जायेगा," छाते वाली बुढिया ने दर्द भरी आवाज मे कहा।

"इसके गले पर के फीते खोल देने चाहिए," डाकिया बोला।

सिपाही अपनी स्थूल, कापती उगलिया से, बडे भद्दे ढग से लाल, मासल गर्दन पर फीते खोलने लगा। प्रत्यक्षत वह उत्तेजित और घबराया हुआ था, फिर भी उसे यही ठीक लगा कि लोगो को वहा से हट जाने के लिए कहे—

"यहा भीड क्या लगा रखी है? इस आदमी की हवा रोक रहे हो, पहले ही गर्मी क्या कम है?"

"इन्हे भेजने से पहले इनकी डाक्टरी जाच की जानी चाहिए थी। और कमजोर कैदियो को नही लाना चाहिए था। अधमरा कर के इसे बाहर निकाला है," कानून की जानकारी बघारते हुए क्लर्क ने कहा।

पुलिस के सिपाही ने फीते खोल दिये और फिर सीधा हो कर इधर उधर देखने लगा।

"जाते क्या नही हो, मैं पूछता हू? तुम्हारा यहा क्या काम है? यहा कोई तमाशा हो रहा है, क्या?" उसने कहा और इस आशा से नेख्लूदोव की ओर देखा कि वह उसका समर्थन करेगा। लेकिन नेख्लूदोव से जब सहानुभूति प्राप्त नही हुई तो कॉनवाय के सिपाही की ओर घूम गया।

लेकिन कॉनवाय के सिपाही ने भी उस व्यग्रता की ओर कोई ध्यान नही दिया। वह अपने बूट की एडी उठा कर देख रहा था जो काफी घिस गई थी।

"जिन लोगो का यह काम है उन्हे कोई परवाह ही नही क्या लोगो को इस तरह जान से मार डालना चाहिए"

"मान लिया कैदी है, पर फिर भी इनसान है," भीड मे से लोगो की आवाजें आ रही थी।

"इसका सिर ऊचा उठा दो और इसके मुह मे थोडा पानी डालो," नेख्लूदोव ने कहा।

"पानी मगवा भेजा है," पुलिस के सिपाही ने कहा, फिर कैदी की बगलो के नीचे से हाथ दे कर, उसने बडी मुश्किल से उसके शरीर को खीच कर थोडा ऊपर किया।

"यह भीड यहा क्या बना रखी है?" एक दृढ, अफसराना आवाज सुनाई दी। और एक पुलिस अफसर बेहद साफ-सुथरा, चमकता कोट पहने और उससे भी ज्यादा चमकते टॉप-बूट लगाये भीड के पास आने लगा।

"चलो, चलो यहा से। यहा खडे रहने का कोई मतलब नहा है," उसने भीड मे खडे लोगो को चिल्ला कर कहा। लेकिन अभी उसे स्वय यह मालूम नही था कि भीड किस कारण वहा जमा थी।

जब नजदीक पहुचा और देखा कि एक कैदी मर रहा है तो उसने इस तरह सिर हिलाया मानो जो कुछ हो रहा है ठीक है और इसकी उसे पहले से ही आशा थी। फिर पुलिस के सिपाही को सबोधित कर के बोला—

"यह कसे हुआ है?"

पुलिस के सिपाही ने रिपोर्ट दी कि जब कैदियो का काफिला जा रहा था, तो एक कैदी लुढक कर गिर पडा। कॉनवाय अफसर ने उसे वही छोड जाने का हुक्म दिया।

"ता ठीक है। इसे थाने म पहुचाना होगा। एक गाडी बुलाग्रो।"

"एक चौकीदार गाडी लाने गया है," सैलूट मारते हुए सिपाही ने जवाब दिया।

मलक ने तपिश के बारे म कुछ कहना शुरू किया।

"तुम्हारा क्या दखल है जी इस मामले म? चलो, भागा यहा से," पुलिस अफसर ने कहा और इस कठोरता से उसकी ओर देखा कि मलक अपना सा मुह ले कर रह गया।

"इसे थोडा पानी दना चाहिए," नेख्लूदोव ने कहा।

पुलिस अफसर ने उसी कठोरता से नेख्लूदोव की ओर भी देखा मगर कहा कुछ नहीं। जब चौकीदार पानी का एक भरा हुआ जग उठा लाया तो पुलिस अफसर ने सिपाही को हुक्म दिया कि थोडा पानी कैदी को पिला दो। सिपाही ने कैदी का झुका हुआ सिर ऊपर को उठाया और उसके मुह म पानी डालने की कोशिश की, लेकिन कैदी निगल नही सकता था इसलिए पानी मुह मे से निकल कर उसकी दाढी से नीचे बहने लगा जिससे उसकी जॅकेट और गाढे की मैली कमीज भीग गई।

"इसके सिर पर डाल दो" अफसर ने हुक्म दिया। इस पर सिपाही ने कैदी के सिर पर से गोल, चपटी टोपी उतारी और उसके घुघराले लाल बालो तथा सिर के उस हिस्से पर जहा से बाल उडे हुए थे, पानी उडेलने लगा।

कैदी की आखें और अधिक खुल गइ, मानो वह भयभीत हो उठा हो, लेकिन उसकी स्थिति वैसी की वैसी ही बनी रही। उसके गद भरे चेहरे पर से मल की धारा बह निकली, पर उसका मुह अब भी पहले की तरह सास खीचने के लिए खुलता और इससे उसका सारा शरीर छटपटाने लगता।

"सुनते हो! इधर आओ, इस आदमी को ले चलो," पुलिस अफसर न नेख्लूदोव के गाडीवान को पुकार कर कहा। "इधर लाओ गाडी।"

"मेरी गाडी लगी हुई है," बिना सिर उठाये उदास आवाज मे गाडीवान ने जवाब दिया।

"यह गाडी मैंने ले रखी है। पर आप बेशक इसे इस्तेमाल कीजिये। मैं तुम्हें पैसे दे दूगा," मुड कर गाडीवान को सम्बोधित करते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

"खडे देख क्या रहे हो?" अफसर ने चिल्ला कर कहा, "उठाओ इसे।"

सिपाही, चौकीदार और कॉनवाय के सिपाही ने हाथ दे कर मृतप्राय कैदी को उठाया और उसे गाडी की सीट पर बिठाने लगे। लेकिन वह बैठ नही सकता था। उसका सिर पीछे की ओर लटक गया और शरीर सीट पर से लुढक कर नीचे आ पडा।

"इसे लिटा दो," अफसर ने हुक्म दिया।

"चिन्ता नही कीजिये हुजूर। मैं इसी तरह इसे थाने तक पहुचा दूगा," पुलिस के सिपाही ने कहा और खुद सीट पर बैठ कर, मरते कैदी को अपनी बगल मे बिठा लिया और अपनी मजबूत दायी बाह उसकी कमर मे डाल दी।

कानवाय के सिपाही ने कैदी के पैर उठा कर गाडी के अन्दर कर दिये। पैरों मे मोजे नही थे, केवल जेलखाने के जूते पडे थे।

पुलिस अफसर ने इधर उधर देखा। उसकी नज़र कैदी की गाल टोपी पर पडी। वह उसे उठा लाया और कैदी के सिर पर रख दी जिस पर से टप-टप पानी बह रहा था।

"चलो, जाओ!' उसने हुक्म दिया।

गाडीवान ने घूम कर गुस्से से देखा, सिर हिलाया और गाडी मोड कर धीरे धीरे वापस थाने की ओर जाने लगा। सीट पर बैठा पुलिस का सिपाही बार बार कैदी को ऊपर की ओर खीचता परन्तु बार बार वह फिर नीचे की ओर फिसल जाता था। उसका सिर दायें-बायें चल रहा था। कॉनवाय का सिपाही जो गाडी के साथ साथ चल रहा था, बार बार कैदी के पाव उठा कर गाडी के अन्दर करता। नेख्लदोव भी गाडी के पीछे पीछे जाने लगा।

३७

थाने के फाटक पर फायर ब्रिगेड का एक सिपाही सतरी की ड्यूटी दे रहा था। उसके पास से हो कर गाडी थाने के अहाते के अन्दर जा पहुची और एक दरवाजे के सामने जा कर रुक गई।

अहाते मे फायर ब्रिगेड के कुछ सिपाही, आस्तीनें चढाये, छकडे जैसी

किसी चीज़ को धो रहे थे, और ऊची ऊची आवाज़ म वतिया और हस रहे थे।

गाडी के अन्दर आने पर कुछेक सिपाही उसके आस-पास आ कर खड़े हो गये, और कैदी की निर्जीव देह को बगलों के नीचे से हाथ दे कर गाड़ी मे से निकालने लगे। उनके बोझ के नीचे गाडी की एक एक चूल चरमरा उठी।

जो सिपाही उसे थाने मे ले कर आया था, वह नीचे उतरा, पहले अपने सुन्न हुए बाज़ू को झटकता रहा फिर सिर पर से टोपी उतार कर क्रॉस का चिन्ह बनाया। लाश को दरवाज़े मे से ले जा कर सीढियो पर ले जाया गया। नेख्लूदोव भी पीछे पीछे जाने लगा। वे उसे एक मैले कुचैले कमरे म ले गये जिसमे चार खाटें बिछी थी। दो खाटो पर ढीला-ढाला लबादा पहने दो मरीज़ बठे थे। एक का मुह टेढा हो रहा था और गदन पर पट्टी बधी थी, दूसरा तपदिक का रोगी था। दो खाटें खाली पडी थीं। उनमे से एक पर कैदी को लिटा दिया गया। एक छोटे स कद का आदमी, जिसकी आखें चमक रही थी और जो बार बार भौंहें हिला रहा था, तेज़ तेज़ मगर हल्के हल्के क़दम रखते हुए उनके पास चला आया। उसने पहले कैदी की ओर देखा, फिर नेख्लूदोव की ओर और सहसा ज़ोर से ठहाका मार कर हसने लगा। यह आदमी पागल था जिसे थाने के अस्पताल म रखा हुआ था।

"वे मुझे डराना चाहते हैं, लेकिन वे मुझे कभी भी नही डरा पायेंगे," उसने कहा।

लाश उठाने वाले सिपाहियो के पीछे पीछे वही पुलिस अफसर और एक सहायक डाक्टर अन्दर चले आये।

सहायक डाक्टर ने पास आ कर कैदी का चित्ती भरा हाथ उठाया। हाथ अब भी नरम था, हालांकि बेहद पीला और ठण्डा पड चुका था। क्षण भर तक उसने उसे अपने हाथ मे उठाये रखा, फिर छोड दिया। निर्जीव मास की लोथ की तरह वह मृतक के पेट पर जा गिरा।

"खत्म हो गया," सहायक डाक्टर ने कहा, फिर भी औपचारिकता निभाने के लिए उसने उसकी पानी से भरी, अनधुली कमीज़ के फीते खोल, फिर अपने घुघराले बाल पीछे को झटक कर कैदी की छाती पर कान लगा कर उसके दिल की धडकन सुनने लगा। कैदी की चौडी छाती पीली,

शिथिल पड गई थी। सब आदमी चुपचाप खडे थे। सहायक डाक्टर फिर उठा, सिर हिलाया और अपनी अगुलियो से एक एक कर के कैदी की पलको को छुआ। नीली आखें खुली थी और एकटक देख रही थी।

"मैं नही डरता, मैं नही डरता," पागल बार बार कहे जा रहा था और सहायक डाक्टर की ओर थक रहा था।

"कहो?" पुलिस अफसर ने पूछा।

"कहना क्या है?" सहायक डाक्टर ने जवाब दिया, "इसे मुर्दाखाने मे ले जाना होगा।"

"ठीक तरह जानते हो न?" अफसर ने पूछा।

"अब तक भी नही जानगा?" लाश की छाती पर कमीज़ नीचे खीचते हुए सहायक डाक्टर ने कहा। "फिर भी मैं मात्वेई इवानोविच को बुला भेजता हू। वह भी आ कर देख ले। पेत्रोव, जा कर उन्हें बुला लाओ।" और सहायक डाक्टर लाश के पास से हट गया।

"इसे मुर्दाखाने मे ले जाओ," पुलिस अफसर ने हुक्म दिया, "उसके बाद सीधे दफ्तर मे पहुचो, वहा तुम्हे दस्तखत करना होगा," उसने कॉनवाय के सिपाही से कहा, जो घडी भर के लिए भी लाश से अलग नही हुआ था।

"जी, जनाब," सिपाही ने जवाब दिया।

पुलिस के सिपाही फिर लाश को उठा कर नीचे ले चले। नेख्लूदोव उनके पीछे पीछे जाना चाहता था लेकिन पागल ने उसे रोक लिया।

"तुम मेरे खिलाफ साजिश मे नही हो, मैं जानता हू। इसलिए तुम मुझे एक सिगरेट दे दो।"

नेख्लूदोव ने अपना सिगरेट-केस निकाल कर एक सिगरेट दे दिया। पागल सारा वक्त बडी तेज़ी से अपनी भौह हिला रहा था। वह नेख्लूदोव को अपनी वार्ता सुनाने लगा कि किस तरह विचार-सकेत द्वारा वे उसे यातना पहुचा रहे है।

"सब मेरे खिलाफ ह, सभी नये नये तरीको से मुझे सताते हैं, मुझे परेशान करते हैं।"

"माफ कीजिये," नेख्लूदोव ने कहा और बिना कुछ और सुने कमरे मे से निकल कर बाहर अहाते म चला गया। वह देखना चाहता था कि लाश का कहा रखा जायेगा।

सिपाही अपना बोझ उठाये अहाता पार कर चुके थे और एक तहखाने के दरवाजे म से अन्दर जा रहे थे। नेख्लूदोव उनके पास जाना चाहता था लेकिन पुलिस अफसर ने उसे रोक दिया—

"क्या काम है?"

"कुछ नही।"

"कुछ नही? तो जाओ यहा से।"

नेख्लूदोव चुपचाप अपनी गाडी के पास वापस चला आया। गाडीवान बैठा ऊघ रहा था। नेख्लूदोव ने उसे उठाया और वे फिर स्टेशन की ओर जाने लगे।

अभी वे सौ गज तक का फासला भी तय नही कर पाये होगे जब उन्होंने एक छकडा आते देखा। उसके साथ साथ भी एक कॉनवाय का सिपाही, बन्दूक उठाये चला आ रहा था। छकडे के ऊपर एक और कैदी लेटा था। प्रत्यक्षत वह अभी तक मर चुका था। छकडे मे वह पीठ के बल लेटा था। हर हिचकोले पर उसका मुडा हुआ सिर, जिस पर से गोल, चपटी टोपी खिसक कर नाक तक आ गई थी, झटकता और छकडे से टकराता। गाडीवान, मोटे मोटे बूट पहने, रासे हाथ म पकडे, छकडे के साथ साथ पैदल चल रहा था। पीछे पीछे पुलिस का एक सिपाही भी चला आ रहा था। नेख्लूदोव ने अपने गाडीवान के कधे को छुआ।

"देखिये ये लोग क्या कर रहे हैं," घोडा खडा करते हुए गाडीवान ने कहा।

नेख्लूदोव नीचे उतर पडा, और छकडे के पीछे जाते हुए फिर एक बार सन्तरी के पास से हो कर थाने के फाटक मे स अन्दर चला गया। आग बुझाने वाले सिपाही छकडा धो चुके थे, और अब उनकी जगह एक ऊचा-लम्बा, दुबला-पतला फायर ब्रिगेड का कप्तान जेबो मे हाथ डाले खडा था और बडी कठोर नजरो से एक लाल भूरे रग के मोटे-ताजे, खूब पले हुए घोडे को देखे जा रहा था, जिसे एक फायरमैन अहाते मे ऊपर-नीचे चला रहा था। यह आदमी फायर-ब्रिगेड का कप्तान था, इसकी टोपी पर नीले रग का फीता लगा था। घोडे का एक अगला पाव लगडा रहा था। पास मे ही एक सलोतरी खडा था, जिसे कप्तान बडे गुस्से से कुछ कह रहा था।

पुलिस अफसर भी वही पर खडा था। एक और मुर्दे को अन्दर लाते देख कर वह कॉनवाय के सिपाही के पास गया।

"इसे कहा से उठा लाये हो?" झुझलाहट से सिर हिलाते हुए उसने पूछा।

"*गोर्वातोव्स्काया* पर से," सिपाही ने जवाब दिया।

"कैदी है?" फायर ब्रिगेड के कप्तान ने पूछा।

"जी।"

"ग्राज यह दूसरी लाश है," पुलिस ग्रफसर ने कहा।

"ग्रजीव इतजाम है इन लोगो का! मगर ग्राज गर्मी भी तो बहुत पड रही है," कप्तान ने कहा, फिर फायर मैन को सम्बोधित करते हुए जो लगडे घोडे को चला रहा था, चिल्ला कर बोला,—

"इसे ले जाग्रो ग्रौर कोने वाले कटघरे मे बाध दो। ग्रौर, तुम, सुग्रर के बच्चे, मैं तुम्हे ग्रच्छी तरह सिखाऊगा किस तरह चगे भले घोडो को लगडा करते है। शैतान कही के, इनकी कीमत तुमसे ज्यादा है।"

सिपाहियो ने छकडे मे से लाश निकाली, उसी तरह जसे पहली लाश निकाली गई थी ग्रौर सीढिया चढ कर ग्रस्पताल मे ले गये। मन्त्रमुग्ध की तरह नेख्लूदोव भी उनके पीछे पीछे हो लिया।

"क्या काम है?" एक सिपाही ने पूछा।

लेकिन नेख्लूदोव ने कोई उत्तर नही दिया ग्रौर उसी तरफ चलता गया जिधर लाश को ले जाया जा रहा था।

पागल खाट पर बैठा, बडे चाव से सिगरेट के कश लगा रहा था जो नेख्लूदोव ने उसे दिया था।

"ग्रोह, तुम फिर ग्रा गये हो!" उसने कहा ग्रौर हसने लगा। जब उसकी नजर लाश पर गई तो उसने मुह बनाया ग्रौर कहने लगा, "फिर ले ग्राये! उफ, मैं तग ग्रा गया हू! पर मैं ग्रब बच्चा तो नही हू, क्यो?" ग्रौर प्रश्नसूचक मुस्कान के साथ वह नेख्लूदोव की ग्रोर देखने लगा।

नेख्लूदोव मृतक के चेहरे को ग्रोर देखे जा रहा था जो पहले टोपी के कारण नजर नही ग्रा रहा था। जितना ही पहला कैदी कुरूप था उतना ही यह कैदी रूपवान था। उसका चेहरा ग्रौर शरीर दोनो सुन्दर थे। उसका शरीर पूरे जोबन पर था। सिर ग्राधा मुडा होने के कारण उसकी ग्राकृति कुछ बिगड गई थी, लेकिन फिर भी, काली निर्जीव ग्राखो के ऊपर उसका ललाट जो बहुत चौडा नही था ग्रौर हल्का सा खम खाता था, बडा सुन्दर था। इसी तरह काली काली मूछो के ऊपर उसकी पतली

नाक बडी सुन्दर लगती थी। होठ नीले पडने लगे थे, मगर अब भी उन पर हल्की सी मुस्कान खेल रही थी। चेहरे के निचले हिस्से पर छोटी सी दाढी थी। जिस जगह सिर मुडा हुआ था, वहा उसका एक कान नजर आ रहा था जिसका आकार सुगठित और सुदर था। उसका चेहरा शान्त, गभीर तथा दयालुता का भाव लिये हुए था।

इस मनुष्य मे आत्मोत्सग की सभी सभावनाओ को कुचल दिया गया था। उसके सुगठित हाथो और वेडी लगे पावो को देखते हुए तथा उसके सुडौल शरीर के एक एक अग की मजबूत मासपेशियो को देखते हुए साफ नजर आ रहा था कि यह कितना सुदर, शक्तिशाली तथा फुर्तीला मानव-जन्तु रहा होगा, और एक जन्तु के रूप मे वह उस भूरे घोडे से कही अधिक सम्पूर्ण था जिसके लगडे हो जाने पर फायर ब्रिगेड का कप्तान इतना झुझला रहा था। फिर भी उन्होने इसे मार मिटाया था। एक इसान मार डाला गया था, इसका तो उन्ह अफसोस क्या होगा, उन्ह तो इस बात का भी अफसोस नही था कि एक काम करने वाला पशु मारा गया था। अगर किसी के दिल मे कोई भावना उठी भी थी ता झुझलाहट की, कि एक और बखेडा खडा हो गया, और किसी तरह इस लाश को गलने-सडने से पहले किनारे लगाना हागा।

थाने के इन्स्पेक्टर के साथ डाक्टर तथा सहायक डाक्टर अस्पताल म आये। डाक्टर गठीले बदन का आदमी था, जिसने बढिया पागी सिल्क का सूट पहन रखा था। उसकी पतलून उसकी मासल जाघा के साथ चिपकी हुई थी। इस्पेक्टर छोटे कद का स्थूलकाय आदमी था, चेहरा गेंद की तरह गोल और लाल। उसकी एक आदत थी कि वह गालो म हवा भर कर धीरे धीरे उसे छोडता था, जिससे उसका चेहरा और भी गोल और लाल हो उटता था। डाक्टर मतक के साथ खाट पर बैठ गया, उसी ढग से उसके हाथ उठा कर देखे जिस तरह पहले सहायक डाक्टर ने देखे थे, मृतक के दिल पर कान रखा और फिर अपनी पतलून ठीक करते हुए उठ खडा हुआ।

"इससे अधिक मरा हुआ क्या होगा," वह बोला।

इस्पेक्टर ने मुह म हवा भरी और धीरे धीरे उसे बाहर निकालने लगा।

"किस जेलखाने का कैदी है?" उसने कॉनवाय के सिपाही से पूछा।

सिपाही ने नाम बताया, साथ ही याददहानी के लिए कहा कि कैदी के पावो मे अब भी वेडिया पडी है।

"मैं अभी उतरवा देता हू। भगवान की कृपा से लोहार तो हैं ही," इन्स्पेक्टर न कहा। उसने गालो मे फिर हवा भर ली थी और धीरे धीरे उसे निकालता हुआ दरवाजे की ओर जाने लगा।

"यह क्याकर हुआ है?" नेख्लूदोव न डाक्टर से पूछा।

डाक्टर ने ऐनको मे से नेख्लूदोव की ओर देखा।

"क्या हुआ है? तुम जानना चाहते हो कि लू लग जाने से ये क्यो मरते हैं? सुनो। सर्दी का सारा मौसम यह बिना रोशनी के और बिना व्यायाम के पडे रहते है। फिर किसी आज के से दिन सहसा इन्हे बाहर धूप मे निकाल लाया जाता है। बहुत बडी भीड मे ये चलते हैं जिससे इन्हे ताज़ा हवा नही मिलती। नतीजा होता है कि लू लग जाती है।"

"यह बात है तो क्यो इन्हे इस तरह बाहर निकाला जाता है?"

"यह पूछना हो तो उन लोगो से जा कर पूछो जो इन्हे भेजते हैं। पर क्या मैं पूछ सकता हू कि तुम कौन हो?"

"मैं, यो ही, इधर से गुज़र रहा था।"

"ओह, तो नमस्ते, मेरे पास वक्त नही है," डाक्टर ने चिढ कर कहा। फिर पतलून को नीचे की ओर खीचते हुए वह मरीज़ो की खाटो की ओर जाने लगा।

"कहो कैसी तबीयत है?" उसने पीले चेहरे वाले मरीज़ स पूछा जिसका मुह टेढा हो रहा था और गर्दन पर पट्टी बधी थी।

इस बीच, पागल आदमी ने सिगरेट खत्म कर दिया था और अब खाट पर बैठा डाक्टर की दिशा मे बराबर थूके जा रहा था।

नेख्लूदोव नीचे उतर कर अहाते मे आ गया, जहा आग बुझाने वाला के घोडे और कुछ मुर्गिया घूम रही थी। फिर पीतल की टोपी वाले सन्तरी के पास से हो कर फाटक के बाहर हो गया और गाडी म जा बैठा। गाडीवान फिर सो गया था।

३८

जब नेख्लूदोव स्टेशन पर पहुचा तो सभी कैदी गाडी मे बैठ चुके थे। गाडी के डिब्बो की खिडकियो म सीखचे लगे थे। कुछ लोग जो कैदियो से मिलने आये थे प्लेटफार्म पर खडे थे, मगर उन्हे डिब्बो के नज़दीक जाने की इजाज़त नही थी।

कॉनवाय के सिपाही उस दिन बड़े परेशान थे। जेलखाने से स्टेशन को जाते हुए रास्ते में तीन और कैदी लू लग जाने से गिर कर मर गये थे। ये उन दो कैदियों के अलावा थे जिनकी लाशें ख़ुद नेख्लूदोव ने देखी थीं। एक कैदी की लाश नज़दीक वाले थाने में पहुंचा दी गयी थी। दो कैदी स्टेशन पर मरे थे।* कॉनवाय के सिपाहियों को इसकी कोई चिन्ता नहीं थी कि पांच आदमी जो उनके दायित्व में थे, ज़िन्दा रह सकते थे, लेकिन वे मर गये। इसकी तो उन्हें कोई परवाह नहीं थी, हां, इस बात की चिन्ता ज़रूर थी कि कानूनी कार्यवाही करने में, जिसकी इन मामलों में ज़रूरत रहती है, कोई भूल न हो। लाशों को ठीक जगह पर पहुंचाना, कैदियों के कागज़ात और सामान हवाले करना, फ़ेहरिस्त में से उनके नाम काटना—जिस फ़ेहरिस्त के मुताबिक उन्हें नीज़्नी नोवगोरद सौंपना था—ये सब काम परेशानी के थे, विशेषकर ऐसे दिन जब कि इतनी तेज़ गर्मी पड़ रही थी।

इसी काम में कॉनवाय के आदमी व्यस्त थे। और जब तक यह सब ख़त्म नहीं हो जाय वे नेख्लूदोव तथा उन लोगों को जो कैदियों से मिलने की इजाज़त मांग रहे थे डिब्बों के नज़दीक नहीं जाने दे सकते थे। लेकिन नेख्लूदोव ने एक सॉर्जेंट के हाथ गर्म किये और उसने फ़ौरन् जाने दिया। सॉर्जेंट ने जाने तो दिया मगर साथ ही कह दिया कि जितनी जल्दी हो सके, अपनी बात ख़त्म कर ले ताकि कहीं अफ़सर उन्हें देख न लें। कुल मिला कर अठारह डिब्बे थे। इनमें अफ़सरों के एक डिब्बे को छोड़ कर, बाकी सभी डिब्बे कैदियों से भरे पड़े थे। डिब्बों के सामने से गुज़रते हुए नेख्लूदोव कान लगा कर सुनने लगा कि कैदी क्या बातें कर रहे हैं। सभी डिब्बों से शोर-गुल और गाली-गलौच के बीच बेड़ियों के खनकने की आवाज़ आ रही थी। लेकिन कहीं भी उसने कैदियों को अपने मृत साथियों की चर्चा करते नहीं सुना। बातें चल रही थीं तो बोरियों की, पीने के लिए पानी की, बैठने की जगह की कि कौन किस सीट पर बैठे।

नेख्लूदोव ने एक डिब्बे में झांक कर देखा। दो कानवाय सिपाही कैदियों

---

*सन १८८० के आस-पास मास्को में एक दिन में पांच कैदी लू लग जाने से मर गये थे, जब उन्हें बुतीर्स्काया जेल से नीज़्नी नोवगोरोद लाइन के स्टेशन तक ले जाया जा रहा था। (लेव तोलस्तोय)

की कलाइया पर से हथकडिया उतार रहे थे। कैदी अपने बाजू आगे को बढाते, एक सिपाही चाबी से हथकडी खोल देता, दूसरा हथकडियां संभाल रहा था।

मद कदियो के डिब्बे पीछे छूट गये। अब स्त्रिया के डिब्बे शुरू हुए। इनमे से दूसर डिब्बे मे से एक औरत के कराहने की आवाज आ रही थी– "उफ, उफ, उफ! हे भगवान! उफ, ओह! हे भगवान!"

इस डिब्बे को लाघ कर नेख्लूदोव तीसर डिब्बे की सिपाही द्वारा दिखायी खिडकी के पास जा खडा हुआ। खिडकी के पास मुह ले जाते ही उसे अन्दर से आती, पसीने की गध से बोझल गरम गरम हवा महसूस हुई और औरतो की ऊची ऊची चीखती चिल्लाती आवाजें साफ सुनाई दन लगी।

सभी सीटा पर औरते बैठी थी, उनके चेहरे लाल और पसीने से तर हो रहे थे और सभी ऊची ऊची आवाज मे बाते कर रही थी। सभी ने कैदियो के लबादे और सफेद रग के जाकेट पहन रखे थे। खिडकी पर नेख्लूदोव को खडे देख कर सभी का ध्यान उसकी ओर खिच गया। जो औरते सबसे नजदीक बैठी थी उन्होंने बोलना बन्द कर दिया और उसके पास आ गयी। मास्लोवा सामन वाली खिडकी के पास बठी थी। उसने सफेद जाकेट पहन रखी थी और सिर नगा था। गोरी चिट्टी फेदोस्या, जो हर वक्त मुस्कराती रहती थी, नेख्लूदोव से थोडा नजदीक बठी थी। उसे पहचानते ही उसने मास्लोवा को कोहनी मारी और खिडकी की आर इशारा किया।

मास्लोवा झट उठ खडी हुई और अपने काले बालो पर रूमाल बाधता हुई खिडकी के पास आ गई और एक सीखचे को पकड कर खडी हो गई। उसका चेहरा गर्मी के कारण लाल हो रहा था।

"आज बडी गर्मी है," खुशी से मुस्कराते हुए उसने कहा।

"तुम्हे चीजें मिल गइ?"

"हा, शुक्रिया।"

"किसी और चीज की जरूरत तो नही?' नेख्लूदोव ने पूछा। डिब्बे मे से ऐसी गम हवा आ रही थी, मानो आग की भट्टी मे से आ रही हो।

"मुझे किसी चीज की जरूरत नही, शुक्रिया।"

"अगर पानी मिल सके तो," फेदोस्या बाली।

"हा, अगर पानी मिल जाय तो बहुत अच्छा हो," मास्लोवा ने भी कहा।

"क्या, क्या तुम्हारे डिब्बे म पानी नही है?"

"था, मगर चुक गया है।"

"मैं अभी किसी कॉनवाय के आदमी से कहता हू। हम अब नीज्नी नोवगोरोद पहुच कर ही मिल पायेंगे।"

"क्या, क्या तुम भी चल रहे हो?" मास्लोवा न कहा, मानो उसे मालूम ही न हो, और नेख्लूदोव की ओर देखा। उसका चेहरा ख़ुशी से चमक रहा था।

"मैं दूसरी गाडी से आऊगा।"

मास्लोवा कुछ नही बोली, केवल एक ठण्डी सास भरी।

"जनाब, क्या यह ठीक है कि बारह कैदी मार गये हैं?" एक बुढिया कदी ने पूछा जिसका चेहरा बडा कठोर और आवाज आदमियो की आवाज की तरह गहरी थी।

यह कोराब्ल्योवा थी।

"मैंने बारह आदमियो का तो नही सुना। हा, दो कैदियो को मैंने मरे देखा है," नेख्लूदोव ने कहा।

"लोग कहते हैं कि बारह आदमियों को मार डाला है। क्या मारने वालो को सजा नही मिलेगी? जरा सोचो तो! शैतान कही के!"

"क्या कोई भी औरत बीमार नही पडी?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"औरतें ज्यादा मजबूत होती हैं," एक ठिगने से कद-बुत की औरत ने जवाब दिया और कह कर हसने लगी। "केवल एक औरत ने यहा बच्चा जनने की ठान ली है। वहा पर है," उसने बगल वाले डिब्बे की ओर इशारा करते हुए कहा, जहा से कराहने की आवाज आ रही थी।

"तुमने पूछा है कि हमे कुछ चाहिए या नही," अपनी आह्लादपूर्ण मुस्कान छिपाने की कोशिश करते हुए मास्लोवा ने कहा, "क्या कोई ऐसा इन्तजाम नही हो सकता कि इस औरत को यही रख लिया जाय? वह इस वक्त बडी तकलीफ म है। अगर तुम अफसरो स कहोगे तो "

"हा, मैं बात करूगा।"

"एक और बात। क्या यह अपने पति–तारास–से नही मिल सकती?" आखो से मुस्कराती फेदोस्या की ओर इशारा करते हुए उसने पूछा। "वह भी तुम्हारे साथ जा रहा है न?"

"जनाव, बाते करने की इजाज़त नही है," एक कॉनवाय-सार्जेंट न कहा। यह वह सॉर्जेंट नही था जिसने नेख्लूदोव को निकल जान दिया था।

नेख्लूदोव डिब्बे के पास से हट गया और कॉनवाय अफसर को ढूंढने गया ताकि उससे प्रसव वाली औरत तथा तारास के बारे म पूछ सके। लेकिन वह कही भी नज़र नही आया, न ही कानवाय के किसी दूसरे आदमी से उसका पता चल सका। सब इधर उधर भाग-दौड रह थे, कुछ लोग किसी कैदी को कही ले जा रहे थे, कुछ अपने लिए रसद लेने भागे जा रहे थे, कुछ सिपाही अपना सामान डिब्बो म टिका रहे थे या एक महिला की सेवा करने मे व्यस्त थे जो कॉनवाय अफसर के साथ जा रही था। बडी उपेक्षा से वे नेख्लूदोव के सवालो का जवाब देते।

जब दूसरी घण्टी हो गई तब कही नेख्लूदोव को कॉनवाय अफसर नज़र आया। छोटे छोटे बाजुओ वाला यह अफसर ठूठ जसे हाथ से अपनी मूछो को पोछ रहा था जो उसके मुह पर लटक रही थी, और कधे बिचकाते हुए किसी बात पर एक कॉर्पोरल पर नाराज़ हो रहा था।

"आपको क्या कहना है?" उसने नेख्लूदोव से पूछा।

"यहा एक कैदी औरत है जिसे प्रसव पीडा हो रही है। मैं सोच रहा था अगर "

"होने दो प्रसव पीडा। बाद मे हम देख लगे।" और तेज़ी से अपने छोटे छोटे बाजू झुलाता हुआ वह भाग कर अपने डिब्बे की ओर जाने लगा।

उसी समय रेलगाडी का गाड, हाथ मे सीटी पकडे, सामने से गुज़रा। तीसरी घण्टी बजायी गई। प्लेटफॉर्म पर खडे लोगो तथा स्त्रियो के डिब्बो की ओर से रोने की आवाज़े आने लगी। गाडी चल दी। नेख्लूदोव तारास के साथ खडा, एक एक डिब्बे को जाते देख रहा था जिनमे मुडे हुए सिरो वाले कैदी खिडकियो के सीखचो को पकडे खडे थे। आदमियो के डिब्बो के बाद औरतो का पहला डिब्बा सामने से गुज़रा। खिडकियो पर स्त्रियो के सिर नज़र आ रहे थे, कुछ ने रूमाल बाध रखे थे, कुछ नगे सिर थी। फिर दूसरा डिब्बा गुज़रा, जिसमे से कराहने की आवाज़ अब भी आ रही थी। इसके बाद वह डिब्बा जिसम मास्लोवा थी। और स्त्रियो के साथ वह भी खिडकी पर खडी थी, और उसके होठो पर दयनीय मुस्कान खेल रही थी।

नेख्लूदोव की गाडी छूटने मे अभी दो घण्टे बाकी थे। उसे पहले ख्याल आया था कि इस बीच अपनी बहिन से जा कर मिल आऊगा, लेकिन आज सुबह से जो कुछ वह देख रहा था, उससे वह इतना उद्विग्न और क्लान्त महसूस करने लगा था कि फर्स्ट क्लॉस के रिफ्रेशमेट रूम मे जा कर एक सोफे पर बैठने ही उसे नीद ने आ घेरा। उसे स्वय भी ख्याल न था कि वह इतना थक चुका है। वही बैठे बैठे उसने करवट बदली और सिर के नीचे अपनी कोहनी रख कर सो गया।

एक बैरे ने उसे जगाया, जिसने ड्रेस-सूट पहन रखा था और हाथ म नेप्किन उठाये हुए था।

"हुजूर, क्या आप ही प्रिस नेख्लूदोव हैं? एक महिला आपको ढूढ रही हैं।"

नेख्लूदोव चौंक कर उठ बैठा, और आखें मलते हुए याद करने लगा कि वह कहा पर है और सुबह क्या कुछ घटा था।

उसे अपनी कल्पना मे बदियो का काफिला नजर आया, फिर लाशें, रेल के डिब्बे जिनकी खिडकिया पर सीखचे लगे थे और अन्दर स्त्रिया बद थी। एक स्त्री प्रसव-पीडा से परेशान थी लेकिन उसके पास कोई मदद करने वाला नही था, दूसरी सीखचो के बीच से उसे देख रही थी और उसके होठो पर दयनीय मुस्कान थी। लेकिन जो सचमुच उसके सामने था वह सर्वथा भिन्न था। एक मेज पर बोतलें और गुलदान रखे थे, आतिशदान और प्लेट-प्याले सजे थे। उसके आस-पास फुर्तीले बैरे घूम रहे थे। कमरे के एक सिरे पर एक बडी आलमारी रखी थी जिसमे बोतलो की कतारे लगी थी, फलो से भरे तश्तरियाँ रखे थे और काउटर के पीछे बारमैन खडा था। बार पर खडे मुसाफिरो की पीठें नजर आ रही थी।

नेख्लूदोव उठ बैठा और अपने विचारो को व्यवस्थित करने लगा। उसने देखा कि कमरे मे सभी लोगो की आखे बडे कुतूहल से दरवाजे पर लगी हैं, जहा पर कुछ हो रहा था। एक जुलूस सा अदर चला आ रहा था। कुछ आदमी एक कुर्सी उठाये हुए थे जिस पर एक महिला बैठी थी। महिला का सिर किसी बेहद महीन कपडे म लिपटा हुआ था। सबसे आगे आगे कुर्सी को थामे एक चोबदार चला आ रहा था, जो नेख्लूदोव को

जाना-पहचाना लगा। सबसे पिछले आदमी को भी वह जानता था, जिसकी टोपी पर सुनहरी डोरी लगी थी। वह दरबान था। कुर्सी के पीछे पीछे एक बडी सलोनेदार, घुघराले वालो वाली नौकरानी एप्रन लगाये चली आ रही थी। हाथ मे एक पासल, छाते और चमडे के गोल से बग मे कोई चीज रखे लिये आ रही थी। इसके बाद प्रिस कोर्चागिन ने कमरे मे प्रवेश किया, लटकते गाल, मिरगी की मारी गदन, वह सिर पर सफरी टोपी लगाये हुए था। उसके पीछे मिस्सी, उसका चचेरा भाई मीशा और नेख्लदोव का एक परिचित ओस्टन चले आ रहे थे। यह ओस्टन कूटनीतिज्ञ था, लम्बी गदन, टेंटुआ बाहर को निकला हुआ, बडी हसोड तबीयत का आदमी था, उसके चेहरे पर से भी हर वक्त विनोदप्रियता झलकती थी। वह बडे जोरदार किन्तु मजाकिया तरीके से मिस्सी को कोई बात सुना रहा था और मिस्सी मुस्करा रही थी। पीछे पीछे डाक्टर गुस्से से सिगरट के कश लगाता चला आ रहा था। '

कोर्चागिन परिवार की शहर के निकट जमीन-जायदाद थी। उसे छोड कर परिवार प्रिसेस की बहिन की जागीर मे रहने जा रहा था, जो नीज्नी नोवगोरोद रेलमाग पर स्थित थी।

जुलूस—कुर्सी उठाने वाले, नौकरानी तथा डाक्टर—स्त्रियो के प्रतीक्षा कक्ष म गायब हो गया। कमरे मे बैठे लोग अब भी बडे कुतूहल और आदर के साथ उस ओर देखे जा रहे थे। बूढा प्रिस कमरे मे ही रुक गया और एक मेज के सामने बैठ, बैरे को बुलाया और भोजन तथा शराब लाने को कहा। मिस्सी तथा ओस्टन भी रिफ्रेशमेट रूम मे ही रुक गये। वे दोनो भी बठने ही वाले थे जब उन्हे दरवाजे के पास अपना कोई परिचित नजर आ गया और वे उसकी ओर चले गये। दरवाजे पर नताल्या रागोजिन्स्काया खडी थी।

नताल्या कमरे के अन्दर चली आई। उसके साथ आग्राफेना पेत्रोव्ना थी। दोनो कमरे मे इधर-उधर देखने लगी। नताल्या को एक साथ ही मिस्सी और अपना भाई नजर आ गये। भाई की ओर सिर हिला कर उसने अभिवादन किया और पहले मिस्सी से मिलने चली गई। परन्तु उसे चूमने के फौरन् ही बाद भाई की ओर मुड गई।

'आखिर तुम मिल ही गये," वह बोली।

मिस्सी, मीशा और ओस्टन से मिलने के लिए नख्लूदोव उठ खडा हुआ। मिस्सी से उसे मालूम हुआ कि व अपनी मौसी के घर रहने के लिए

इसलिए जा रहे हैं कि उनके देहात वाले घर मे आग लग गई थी। ओस्टन किसी दूसरे अग्निकाण्ड के बारे मे कोई मज़ाकिया किस्सा सुनाने लगा।

नेख्लूदोव ने काई ध्यान नही दिया और बहिन से बाते करने लगा।

"तुम आ गयी, मुझे बेहद खुशी हुई है।"

"मुझे तो आये काफी देर हो गई है," उसने कहा, "आग्राफेना पेत्रोव्ना मेरे साथ आयी है।" और आग्राफेना पेत्रोव्ना की ओर इशारा किया जो बरसाती-कोट पहने और सिर पर बानेट लगाये कुछ दूर खडी थी, ताकि भाई-बहिन की बाता म बाधक न बने। उसने स्नेहपूर्ण तथा मर्यादित ढग से झुक कर नेख्लूदोव का अभिवादन किया। "हमने सब जगह तुम्हें तालाश किया।"

"और मैं यहा सोया पडा था। मुझे बेहद खुशी है कि तुम आयी," नेख्लूदोव ने दोहरा कर कहा। "मैंने तुम्हे एक पत्र लिखना शुरू किया था।"

"क्या, सच?" उसने कहा और डर सी गयी। "किस बारे मे?"

मिस्सी तथा उसके साथ के दोनो सज्जन यह देख कर कि भाई-बहिन के बीच किसी निजी मामले पर बातचीत होने जा रही है, वहा से हट गये। नेख्लूदोव और उसकी बहिन खिडकी के पास एक सोफे पर जा बैठे, जिस पर मखमल लगी थी और एक कम्बल, एक बक्स तथा कुछ और सामान रखा थे।

"कल तुम्हारे घर से लौटने के बाद मेरा मन करता था कि तुम्हारे पास लौट कर जाऊ और माफी मागू, लेकिन मेरी समझ मे नही आ रहा था कि तुम्हारे पति क्या सोचेगे," नेख्लूदोव ने कहा, "कल तुम्हारे पति के साथ मेरा बर्ताव अच्छा नही था, और बाद मे मुझे इसका बडा खेद हुआ।"

"मैं जानती थी, मुझे यकीन था कि तुम्हारा मतलब यह नही है," उसकी बहिन कहने लगी। "तुम जानते हो "

उसकी आखो मे आसू आ गये और उसने अपना हाथ भाई के हाथ पर रख दिया।

वाक्य स्पष्ट नही था, परन्तु नेख्लूदोव पूर्णतया उसका अभिप्राय समझ गया, और उससे उसका दिल भर आया। अभिप्राय यही था कि जहा मैं अपने पति के प्रेमपाश म बधी हू, वहा तुम्हारे प्रति भी मेरा प्रेम बडा गहरा और महत्वपूर्ण है। इसलिए तुम दोनो के बीच कोई गलतफहमी पैदा हो जाय ता मेरे दिल को बहुत कष्ट पहुचता है।

"धन्यवाद, धन्यवाद! उफ, तुम नही जानती आज मैंने क्या देखा है!" नेख्लूदोव ने कहा। सहसा उसे दूसरे मृतक बंदी का चेहरा याद हो आया। "आज दो बंदी मारे गये।"

"मारे गये? कसे?"

"हा, मारे गये। इस तपती धूप मे वे उन्हे बाहर ले आये, और दो को लू लग गई जिससे वे मर गये।"

"नामुमकिन है! क्या, आज? अभी?"

"हा, अभी। मैंने लाशें देखी हैं।"

"पर मारे कैसे गये? किसने उन्हे मारा?" नताल्या ने पूछा।

"जिन लोगो ने धकेल कर उन्हे बाहर निकाला, वे ही उनके कातिल थे," नेख्लूदोव ने चिढ कर कहा। उसे महसूस हो रहा था कि वह भी इस बात को अपने पति की ही नजरो से देख रही है।

"हे भगवान!" आग्राफेना पेत्रोव्ना के मुह से निकला, जो उनके पास चली आयी थी।

"इन बदनसीब लोगो के साथ क्या बीत रही है, हमे इसका कुछ भी मालूम नही। लेकिन इसका पता चलना चाहिए," नेख्लूदोव ने कहा और बूढे कोर्चागिन की ओर देखा, जो गले के साथ नेप्किन लगाये, सामने बोतल रखे बैठा था। उसी समय उसकी भी नजर नेख्लूदोव पर गई।

"नेख्लूदोव," उसने पुकारा, "आओ और मेरे साथ बैठ कर थोडा खा पी लो। लम्बे सफर से पहले यह अच्छा होता है।"

नेख्लूदोव ने इन्कार कर के मुह फेर लिया।

"पर तुम करोगे क्या?" नताल्या कह रही थी।

"जो बन पडेगा, करूगा। मैं कुछ नही जानता, लेकिन इतना जरूर महसूस करता हू कि कुछ करना होगा। और जो कुछ भी हो सका मैं करूगा।"

"हा, मैं समझती हू। और उनके बारे मे?' मुस्करा कर कोर्चागिन की ओर इशारा करते हुए उसने पूछा। "क्या सचमुच तुम्हारा अब इनसे कोई वास्ता नही रहा है?"

"बिल्कुल। और मैं समझता हू दोनो तरफ से किसी को भी इसका अफसोस नही होगा।"

बडे अफसोस की बात है। मुझे इसका बडा खेद है। मुझे मिस्सी

बडी प्यारी लगती है। पर, मान लिया कि तुम यहा रिश्ता नही करना चाहते, पर तुम अपने को बाधना क्यो चाहते हो?" उसने शर्मा कर पूछा। "तुम जा क्यो रहे हो?"

"मैं जा रहा हू क्योंकि यह मेरा कर्तव्य है," नेख्लूदोव ने गभीर आवाज मे रुखाई के साथ कहा, मानो इस वार्तालाप को खत्म कर देना चाहता हो।

पर उसे फौरन अपने रूखेपन पर लज्जा होने लगी। "जो कुछ मेरे मन मे है, मैं इसे क्यो न बतला दू। बेशक आग्राफेना पेत्रोव्ना भी सुन ले," बुढिया नौकरानी की ओर देखते हुए वह सोचने लगा। उसके वहा मौजूद होने के कारण उसकी इच्छा और भी तीव्र हो गयी कि मैं अपना निश्चय बहिन को बता दू।

"तुम्हारा मतलब है मैं कात्यूशा के साथ क्यो विवाह कर रहा हू? बात यह है कि मैंने तो निश्चय कर लिया था परन्तु वह इकार कर रही है, बडी दृढता से इकार कर रही है," उसने कहा और उसकी आवाज कापने लगी। जब कभी भी वह इस विषय की चर्चा करता था तो उसकी आवाज कापने लगती थी। "उसे मेरा कुर्बानी करना मजूर नही, पर वह स्वय कुर्बानी कर रही है। और उसकी स्थिति मे यह बहुत बडी बात है। और मैं इस कुर्बानी को स्वीकार नही कर सकता, यदि यह क्षणिक आवेश है। इसलिए मैं उसके साथ जा रहा हू। जहा पर वह रहेगी, वही पर मैं भी रहूगा, और जहा तक बन पडा, मैं उसके बोझ को हल्का करने की कोशिश करूगा।"

नताल्या कुछ नही बोली। आग्राफेना पेत्रोव्ना ने प्रश्नसूचक नेत्रो से नेख्लूदोव की ओर देखा और सिर हिला दिया। ऐन इसी वक्त स्त्रिया के प्रतीक्षा-कक्ष से फिर वही जुलूस निकला। वही रूपवान चोबदार फिलिप तथा दरबान प्रिसेस कोर्चागिना को उठाये ला रहे थे। उसने अपने वाहको को रुक जाने को कहा और इशारे से नेख्लूदोव को अपने पास बुलाया, फिर बडे दयनीय तथा अलसाये ढग से अपना गोरा, अगूठिया भरा हाथ नेख्लूदोव की ओर बढाया, इस आशा और डर से कि नेख्लूदोव के हाथ मे उसका हाथ दब कर रह जायेगा।

Epouvantable!* उसने कहा। उसका अभिप्राय गर्मी से था।

---

*तोबा! (फ्रेंच)

"मुझसे बर्दाश्त नही हो सक्ती। Ce climat me tue"* फिर कुछ देर तक वह जलवायु की चर्चा करती रही कि रूस की जलवायु बड़ी भयानक है। इसके बाद नेख्लूदोव को योता दिया कि हमे मिलने जरूर आना, और फिर अपने नौकरो को आगे बढने का इशारा करन लगी। "जरूर आना, भूलना नही," अपना लम्बूतरा चेहरा नेख्लदोव की ओर घुमा कर उसने कहा। और नौकर, पालकी उठाये, आगे बढ गये।

प्रिसेस का जुलूस दायी ओर को घूम गया जिस तरफ फर्स्ट क्लास के डिब्बे थे। नेख्लूदोव, एक कुली से अपना सामान उठवा कर बायी ओर जाने लगा। तारास भी उसके साथ था। उसने पीठ पर अपना झोला उठा रखा था।

"यह मेरा साथी है," तारास की ओर इशारा करते हुए नख्लूदोव ने अपनी बहिन से कहा। तारास की कहानी वह उसे पहले ही सुना चुका था।

"थर्ड क्लास मे सफर करोगे क्या?" नताल्या ने कहा जब उसने देखा कि नेख्लदोव एक तीसरे दर्जे के डिब्बे के सामने रुक गया है और तारास और सामान वाला कुली डिब्बे के अन्दर चले गये हैं।

"हा, मुझे यही पसन्द है। मैं तारास के साथ जा रहा हू," उसने कहा। "एक बात और। अभी तक मैंने अपनी कुज़्मिस्कोये वाली ज़मीन किसानो को नही दी है। इसलिए अगर मैं मर गया तो मेरे बाद तुम्हारे बच्चे उस ज़मीन के वारिस होगें।"

"ऐसी बातें नही कहो, द्मीत्री!' नताल्या बोली।

"अगर मैं उसे दे भी दू तो बाकी सब कुछ उन्ही का होगा। क्योंकि उमीद नही कि मैं शादी करू। जो शादी कर भी लू तो मेरे बच्चे-बाले नही होगें। इसलिए "

"द्मीत्री, ऐसी बात मुह से मत निकालो," नताल्या ने कहा। पर नेख्लूदोव ने देखा कि उसे यह सुन कर ख़ुशी हुई है।

कुछ दूर आगे, फर्स्ट क्लास के एक डिब्बे के सामने कुछ लोग अब भी उस पालकी को देखे जा रहे थे जिसमे प्रिंसेस बैठ कर आई थी। बहुत से मुसाफिर बैठ चुके थे। देर से आनेवाले मुसाफ़िर भागते हुए प्लेटफ़ार्म

*यह मौसम तो मेरी जान ही ले कर रहेगा। (फ्रेंच)

के तख्तो पर पाव खटखटाते गाडी की ओर लपक रहे थे। गाड डिब्बो के दरवाज़े वन्द करने लगे, मुसाफिरो को अन्दर वैठने के लिए और जिन्हे सफर नही करना था उन्हे डिब्बो मे से वाहर निकलने के लिए कहने लगे।

नेख्लूदोव डिब्बे के अन्दर दाखिल हुआ। डिब्बा तप रहा था और उसमे से दुर्गन्ध आ रही थी। फौरन् ही वह डिब्बे को लाघ कर, सिरे पर बने छोटे से प्लेटफॉर्म पर जा खडा हुआ।

आग्राफेना पेत्रोव्ना के साथ नताल्या, नये फैशन का वॉनेट और केप लगाये, डिब्बे के नजदीक खडी थी। प्रत्यक्षत वह इस कोशिश मे थी कि कोई वात करे।

जव लोग एक दूसरे से जुदा होते हैं तो अवसर ecrivez"* कहते हैं। लेकिन दोनो भाई-वहिन इस शब्द का मज़ाक उडाया करते थे। इसलिए इस समय यह शब्द भी नताल्या मुह से नही निकाल सकती थी। आत्मीयता की जिन कोमल भावनाओ से उनके दिल भर उठे थे, उन्ह पैसे के मामलो की चर्चा ने एक क्षण म छिन्न भिन्न कर डाला था। वे फिर एक दूसरे से दूर हो गये थे। इसलिए जव गाडी चली और उदास, प्यार भरे मुख से मात्र "अलविदा, दमीत्री, अलविदा!" कहने का समय आया, तो उसे खुशी ही हुई। लेकिन डिब्बे के आगे निकलते ही उसने सोचा कि कैसे वह अपने पति को भाई के साथ हुआ वार्तालाप सुनायेगी और उसका चेहरा गभीर और उद्विग्न हो उठा।

नेख्लूदोव के हृदय मे अपनी वहिन के प्रति कोमलतम भावनाए थी। उसने उससे कोई वात छिपायी भी नही थी। परन्तु फिर भी अव उसकी उपस्थिति म वह उदास और खाया खोया सा महसूस करने लगा था। इसलिए जव गाडी चली तो उसने भी चैन की सास ली। उसे महसूस हुआ कि पहले वाली नताल्या, जो कभी उसके इतने निकट थी, अव नही रही, और उसके स्थान पर अव एक दासी खडी है जिसने अपने को एक अपरिचित अप्रिय, काले वालो से भरे आदमी के हाथो सौंप दिया है। इस तथ्य का प्रमाण उसे उस समय स्पष्ट मिल गया जव उसने किसानो को जमीन देने

---

* लिखना। (फ्रेंच)

तथा अपनी विरासत की चर्चा की, और नताल्या का चेहरा उसे सुन कर खिल उठा था क्योंकि यह बात उसके पति के लिए विशेषतया रुचिकर थी।

इस कारण नेख्लूदोव का दिल उदास हो उठा।

४०

तीसरे दर्जे के जिस डिब्बे मे नेख्लूदोव सफर कर रहा था वह आकार मे काफी बडा था। दिन भर चिलचिलाती धूप मे खडे रहने के कारण डिब्बा इस कदर तप रहा था कि नेख्लूदोव अदर नही जा सका, और पीछे ही छोटे से प्लेटफॉर्म पर खडा रहा। लेकिन यहा पर भी हवा का नाम न था। केवल उस वक्त जब शहर की इमारते पीछे छूट गयी तो हवा का थाका आया, और तब कही नेख्लूदोव को राहत मिली।

"हा, मारे गये," उसने फिर वही शब्द दोहराये जो उसने अपनी बहिन से कहे थे। उसकी कल्पना मे, उन सभी दृश्या के बीच जो आज उसने देखे थे, दूसरे मृत कैदी का चेहरा अपूर्व स्पष्टता से उभर आया। कैसा सुदर नौजवान था वह। उसके होठो पर की मुस्कान, माथे से झलकता गभीर भाव, मुडी हुई, नीलावण खोपडी, छोटा सा सुगठित कान, उसके चेहरे का एक एक नक्श स्पष्ट नजर आने लगा।

"उसकी हत्या तो की गई है लेकिन यह कोई नही जानता कि किसने हत्या की है।" वह सोच रहा था। "यही सबसे भयानक बात है। उसकी हत्या हुई है। सभी कैदियो की तरह उसे भी मास्लेन्निकोव के हुक्म पर बाहर लाया गया था। निश्चय ही मास्लेनिकोव अपने को इसका अपराधी नही समझता होगा। उसने तो रोज की तरह यह आर्डर भी जारी कर दिया होगा। एक कागज पर, जिसके ऊपर शिरोनामा छपा होगा बेतुके ढग से रेखाए खीचते हुए उसने अपना दस्तखत कर दिया होगा। जेलखाने का डॉक्टर तो अपने को उससे भी कम कसूरवार समझता होगा, जिसने कैदियो को जाच कर के भेजा था। उसने तो बडी यथार्थता से अपना फर्ज निभाते हुए कमजोर कैदियो को अलग कर दिया था। उसे कैसे मालूम हो सकता था कि आज इतनी भयानक गर्मी पडेगी, या उन्हे धूप तेज हो जाने पर बाहर भेजा जायेगा, वह भी इतना बडा हुजूम बना कर? जेलखाने का इन्स्पेक्टर? लेकिन जेल के इन्स्पेक्टर न तो केवल हुक्म की

तामील की है कि ग्रमुक दिन, इतने जलावतनो ग्रौर इतने कैदियो को—जिनमे इतनी स्त्रिया ग्रौर इतने पुरुप होगे—रवाना कर दिया जाय। कॉनवाय-ग्रफसर का भी कोई दोप नही। उसका काम तो केवल निश्चित स्थान से ग्रमुक सख्या मे लोगो को लेना ग्रौर दूसरे स्थान पर उतनी ही सख्या मे पहुचा देना था। वह उन्हे उसी ढग से ले गया जैसे हमेशा ले जाया जाता है। उसे क्या मालूम था कि उन जैसे हट्टे कट्टे ग्रादमी गर्मी बर्दाश्त नही कर सकेगे ग्रौर मर जायेंगे। किसी का भी दोप नही। तिस पर भी इन ग्रादमियो की हत्या हुई है, ग्रौर हत्या करने वाले यही ग्रादमी हैं जिन्हें हत्या का दोप नही दिया जा सकता।

"इस सारी बात का मूल कारण यह है," वह सोच रहा था, "कि ये लोग—गवनर, इन्स्पेक्टर, पुलिस ग्रफसर, पुलिस के सिपाही—यह समझते है कि कई ऐसी परिस्थितिया होती हैं जिनमे मनुष्यो के बीच मानवीय सम्बन्धो की जरूरत नही रहती। ग्रगर यही लोग—मास्लेन्निकोव, इन्स्पेक्टर तथा कॉनवाय ग्रफसर—वास्तव मे गवनर, इन्स्पेक्टर, ग्रफ़सर इत्यादि न होते तो इतने बडे हुजूम को ऐसी चिलचिलाती धूप मे भेजने से पहले बीस बार सोचते, रास्ते मे बीस बार रुकते, यदि किसी को लडखडाते देखते, किसी की सास फूलती देखते, तो उसे साये मे ले जाते, उसके मुह मे पानी डालते, उसे ग्राराम करने देते, ग्रौर यदि फिर भी दुघटना हो जाती, तो उस पर दुख प्रकट करते। लेकिन न केवल उन्होने स्वय दुख प्रकट नही किया, उन्होने ग्रौर लोगो को भी नही करने दिया। कारण, इन्सानो के बारे मे तथा इन्सानो के प्रति ग्रपने कतव्य के बारे मे उन्हें कोई चिन्ता नही थी। वे तो केवल ग्रपने ग्रोहदो की सोचते थे जिन पर वे चढे बैठे थे। इन ग्रोहदो पर उनके जो फर्ज होते है, उन्हे वे मानवीय सम्बन्धो से ऊचा समझते थे। मूल कारण यही है," नेख्लूदोव के विचारो का ताता जारी रहा। "यदि एक बार हम इस बात को स्वीकार कर ले—घण्टे भर के लिए ही सही, ग्रपवाद स्वरूप ही सही—कि मानव प्रेम से ग्रधिक महत्वपूर्ण कोई चीज हो सकती है, तो हम निश्चिन्त हो कर कोई भी ग्रपराध करने पर उतारू हो सकते हैं, ग्रौर हमारे हृदय मे ग्रपराधी होने की भावना तक नही उठेगी।"

नेख्लूदोव ग्रपने विचारो मे यहा तक डूबा हुग्रा था कि उसे मौसम के बदल जाने का पता ही न चला। इस बीच एक बादल के टुकडे ने सूरज

को ढक लिया था। पश्चिम की ओर से हल्के भूरे रंग की घटा तेजी से बढ़ती चली आ रही थी, और दूर खेतों तथा जंगलों पर अभी से मूसलाधार बारिश होने लगी थी। इस घटा से हवा में गुनकी आ गई थी। किसी किसी वक्त बिजली कौंध जाती और गाड़ी की खड़खड़ से बादलों का गर्जन मिलने लगता। बादल अधिकाधिक नज़दीक आ रहा था। वर्षा की तिरछी बूंदें, जिन्हें हवा उड़ा लायी थी, प्लेटफॉर्म तथा नेख्लूदोव के कोट पर गिरने और अपने निशान बनाने लगी। नेख्लूदोव हट कर प्लेटफॉर्म के दूसरे सिरे पर जा खड़ा हुआ। ताजा, नमदार हवा में अनाज तथा भीगी धरती की गन्ध थी, जो मुद्दत से बारिश के लिए तरस रही थी। नेख्लूदोव वहां खड़ा था और उसकी आंखों के सामने से बाग, जंगल, राई के पीतवर्ण खेत, जई के हरे हरे खेत, आलुओं की खेती के लहलहाते गहरे हरे रंग के टुकड़े गुज़रते जा रहे थे। ऐसा लगता था जैसे हर चीज़ पर वार्निश कर दी गई हो। हरा रंग और भी गहरा हरा हो गया था, पीला और भी गहरा पीला, काला और भी गहरा काला।

"बरसो! खूब बरसो!" नेख्लूदोव बोला। प्राणदायिनी वर्षा से प्रफुल्लित बागों और खेतों को देखते हुए नेख्लूदोव का रोम रोम पुलकित हो उठा।

परन्तु बारिश का छींटा ज्यादा देर तक नहीं रहा। बादल का कुछ हिस्सा तो बारिश में निचुड़ गया, बाकी आकाश में तिरता हुआ आगे निकल गया। शीघ्र ही गीली धरती पर फुहार की अन्तिम बूंदें पड़ने लगीं। सूरज फिर चमकने लगा, हर चीज चमक उठी, और पूर्व में—क्षितिज से कुछ ही ऊपर—उज्ज्वल इन्द्रधनुष खिंच गया, जिसमें बैंगनी रंग बड़ा स्पष्ट नज़र आ रहा था। केवल एक सिरे पर इन्द्रधनुष टूट गया था।

"हां, तो मैं क्या सोच रहा था?' नेख्लूदोव ने मन ही मन कहा जब प्रकृति में ये परिवर्तन होने बन्द हो गये और गाड़ी एक दर्रे में से गुज़रने लगी जिसके दोनों ओर ऊंची ढलानें थीं। "मैं यही सोच रहा था कि ये सब लोग—इन्स्पेक्टर, कॉनवाय के आदमी—सभी सरकारी नौकर—अधिकतर अच्छे दिल के लोग होते हैं। यदि ये जुल्म करते हैं तो इसलिए कि ये सरकारी नौकरी करते हैं।"

उसे याद आया किस उपेक्षा से मास्लेन्निकोव ने उसकी बात सुनी थी जब उसने उसे बताया कि जेल में क्या कुछ होता है। इन्स्पेक्टर की

कठोरता, कॉनवाय अफसर की क्रूरता जिसने उन लोगों को छकडो पर बैठने की इजाजत नही दी जो उसके सामने हाथ जोडते रहे थे कि उन्हे बैठने दिया जाय। उसने इस बात की परवाह नही की कि एक स्त्री गाडी मे प्रसव-पीडा मे छटपटा रही है। "दया की साधारणतम भावना इनके दिल को छू नही पाती, उनके हृदय कठोर और अभेद्य बन चुके हैं, इसलिए कि वे सरकारी अफसर हैं। सरकारी अफसर होने के कारण उनके हृदय मे अनुकम्पा की भावना उसी भाति प्रवेश नही कर पाती जिस भाति पत्थरो के इस फर्श मे बारिश का पानी रिस नही पाता," दर्रे की दोनो ओर की ढलानो को देखते हुए, जिन पर तरह तरह के रगो के पत्थर लगाये गये थे, नेख्लूदोव सोच रहा था। पानी अन्दर रिसने के बजाय ऊपर से ही अनगिनत धाराओ के रूप मे वह रहा था। "शायद ढलानो पर तो पत्थरो के फर्श बाधने की जरूरत हो, पर जिस धरती पर पेड-पौधे न उग पाते हो, उसे देख कर तो दिल निराश हो उठता है। इसी धरती से अनाज, घास, पौधे-झाडिया, या वैसे ही पेड उग सकते हैं जैसे कि इस दर्रे की चोटी पर उग रहे हैं। यही स्थिति इन्सानो की भी है," नेख्लूदोव सोच रहा था। "शायद इन गवनरो, इन्स्पेक्टरो, पुलिस के सिपाहियो की जरूरत रहती हो। पर यह स्थिति सचमुच बडी भयानक है जब मनुष्य एक दूसरे के प्रति प्रेम तथा सद्भावना के मुख्य मानवीय गुण से वचित हो।"

"बात यह है," वह सोच रहा था, "कि ये लोग उस चीज़ को नियम मानते हैं जो वास्तव मे नियम नही है, लेकिन उस अमर तथा सनातन नियम को जो भगवान् ने मनुष्य के हृदय पर अकित कर दिया है, नियम नही मानते। यही कारण है कि जब मैं इन लोगो के साथ होता हू तो मन उदास हो उठता है। मुझे इनसे डर लगता है। और वे सचमुच बडे भयानक लोग हैं, डाकुओ से भी अधिक भयानक। एक डाकू के दिल मे शायद फिर भी तरस हो, लेकिन इनके दिल मे कोई तरस नही। जिस भाति इन पत्थरो पर किसी पौदे का अकुर नही फूट सकता, इसी भाति इन लोगो के दिल मे तरस नही उठ सकता। इसी कारण ये लोग इतने भयानक हैं। लोग कहते हैं कि पुगाचोव तथा राजिन* भयानक थे। परन्तु ये उनसे हज़ार

*रूस मे हुए दो किसान विद्रोहो के नेता। राजिन १७वी शताब्दी मे, और पुगाचोव १८वी शताब्दी मे हुआ।

गुना ज्यादा भयानक हैं," वह मन ही मन सोचे जा रहा था। "अगर यह मनोवैज्ञानिक प्रश्न पूछा जाय कि कौन सा तरीका अपनाने से हम अपने समय के ईसाई, दयालु स्वभाव परोपकारी लोगों को भयानक से भयानक अपराध करने पर उतारू कर सकते हैं, ताकि वे अपने को अपराधी न समझें, तो इसका एक ही जवाब है, कि मौजूदा व्यवस्था को बनाये रखिये, यह अपने आप होता जायेगा। जरूरत केवल इस बात की है कि इन लोगों को गवर्नर, इन्स्पेक्टर, पुलिस अफसर बनाया जाय, यानी उन्हें पहले तो पूरा विश्वास हो कि सरकारी नौकरी नाम के धन्धे में काम करने वाले मनुष्यों को इस बात की खुली इजाजत है कि वे अन्य मनुष्यों के साथ जड़ पदार्थों का सा व्यवहार करें, कि उनके साथ भाइयों का सा सम्बन्ध न रखें। और दूसरे यह सरकारी नौकरी उन्हें एक दूसरे के साथ इस भांति जोड़े रहे कि उनके अनेक कारनामों के नतीजों की जिम्मेवारी उनमें से किसी पर भी व्यक्तिगत रूप से न आये। यदि ये शर्तें न हों तो जो भयानक काम आज मैंने होते देखे हैं वे हमारे इस जमाने में असंभव होते। इसका मूल कारण यही है कि लोग समझते हैं कि कई ऐसी परिस्थितियां भी होती हैं जिनमें हम इन्सानों के साथ बिना प्रेम के सलूक कर सकते हैं। पर वास्तव में ऐसी कोई परिस्थितियां नहीं हैं। हम जड़ पदार्थों के साथ, बिना प्रेम के व्यवहार कर सकते हैं—पेड़ काट सकते हैं, इंटें बना सकते हैं, बिना किसी प्रेम भावना के लोहे पर हथौड़ा चला सकते हैं, लेकिन हम मनुष्यों के साथ प्रेम के बिना व्यवहार नहीं कर सकते। उसी भांति जिस भांति बिना सावधानी बरते हम मधुमक्खियों की देख रेख नहीं कर सकते। यदि कोई आदमी मधुमक्खियों के साथ लापरवाही बरते तो उन्हें भी कष्ट देगा और स्वयं भी कष्ट उठायेगा। यही स्थिति मनुष्यों की है। इसके विपरीत हो भी नहीं सकता, क्योंकि पारस्परिक प्रेम मानवजीवन का बुनियादी नियम है। यह सच है कि एक मनुष्य अपने को काम करने पर तो मजबूर कर सकता है परन्तु प्रेम करने पर मजबूर नहीं कर सकता। पर इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि मनुष्यों के साथ हमारा व्यवहार प्रेमशून्य हो, विशेषकर उस स्थिति में जब हम उनसे किसी चीज की आशा हो। यदि तुम्हारे हृदय में प्रेम नहीं है तो चुपचाप बैठे रहो," नेख्लूदोव सोच रहा था, "जड़ पदार्थों के साथ काम करो, अपने आपमें मगन रहो, और जो कुछ भी चाहो करो, केवल इन्सानों से कोई वास्ता नहीं रखना।

जब तुम भूख लगने पर ही भोजन करते हो तो तुम्हें लाभ होता है, कोई हानि नही पहुचती, इसी भाति हृदय मे प्रेम होने पर ही तुम्हारा वर्ताव मनुष्यों से उपयोगी भी होगा और उनसे किसी का हानि भी नही पहुचेगी। परन्तु जब भी तुम बिना प्रेम की भावना के किसी मनुष्य के साथ व्यवहार करोगे—जैसा कि कल मैंने अपने बहनोई के साथ किया—तब और लोगो के प्रति तुम्हारे अत्याचार तथा बबरता की कोई सीमा नही रहेगी। इसका एक उदाहरण आज मैंने अपनी आखो से देखा है। इतना ही नही, तुम्हारी अपनी यातना की भी कोई सीमा नही होगी। मेरा अपना जीवन इसका प्रमाण है। हा, हा, यही बात है," नेख्लूदोव सोच रहा था। "यह सच है, हा, बिल्कुल सच है!" उसने दोहरा कर कहा। चिलचिलाती गरमी के बाद अब नेख्लूदोव ताजा हवा का आनन्द ले रहा था। वह यह भी महसूस कर रहा था कि उसने एक ऐसे सवाल को पूर्ण स्पष्टता से समझ लिया है जिसके साथ वह मुद्दत से जूझ रहा था।

४१

गाडी के जिस डिब्बे मे नेख्लुदोव सफर कर रहा था, वह मुसाफिरो से आधा भरा था। नौकर, कामगार, फैक्टरी मजदूर, कसाई, यहूदी, दुकानदार, कामगारो की पत्निया, एक फौजी, दो महिलाए—एक छोटी उम्र की दूसरी बडी उम्र की, जिसकी नगी बाहो पर कगन चमक रहे थ, और एक सज्जन जो कठोर मुद्रा धारण किये और तुर्रे वाली काली टोपी लगाये बैठा था, ये लोग सफर कर रहे थे। सीटो पर बैठने से पहले जो शोर-गुल होता है वह कब का शान्त हो चुका था, और अब सभी लोग चुपचाप बैठे थे, कुछ लोग सूरजमुखी के बीज खा रहे थे, कुछ सिगरेट पी रहे थे, कुछ बाते कर रहे थे।

तारास गलियारे के दायें हाथ बैठा था और बडा खुश नजर आ रहा था। नेख्लूदोव के लिए उसने सीट रख छोडी थी, और अपने सामने बैठे एक हट्टे-कट्टे आदमी के साथ जो सूती कपडे का कोट पहने हुए था, चहक चहक कर बाते कर रहा था। नेख्लूदोव को बाद मे मालूम हुआ कि यह शख्स कोई माली था जो किसी नई जगह पर काम करने जा रहा था।

नेख्लूदोव गलियारे मे चला आया, और पेश्तर इसके कि ताराम के पास पहुच कर उसके साथ बैठ जाय, वह रास्ते मे ही रुक गया, जहा एक सफेद दाढी वाला बुजुर्गाना शकल का बूढा आदमी बैठा एक युवा स्त्री स बाते कर रहा था। बुजुग ने नैनकीन का कोट पहन रखा था, और स्त्री किसानो के लिबास मे थी। स्त्री की बगल मे, सातेक साल की एक छोटी सी, सुनहरी बालो वाली लडकी बैठी थी जिसने नई देहाती पोशाक पहन रखी थी और सिर पर रूमाल बाधे थी। वह सूरजमुखी के बीज खा रही थी। बूढे ने जब घूम कर देखा तो उसकी नज़र नेख्लूदोव पर पडी। अपने कोट के लटकते किनारो को सभाल कर वह आगे खिसक गया ताकि नेख्लूदोव के लिए उस चमकती सीट पर जगह बन जाय, और बडे मैत्रीपूण लहजे मे बोला –

"आइये, यहा जगह है।"

धयवाद कह कर नेख्लूदोव बैठ गया। स्त्री ने फिर से अपनी आपबीता सुनानी शुरू कर दी जिसमे थोडी देर के लिए बीच मे बाधा पड गई थी। उसका पति शहर मे था और उससे मिल कर वह अब गाव को लौट रही थी। वह बता रही थी कि शहर मे उसके पति ने किस भाति उसका स्वागत किया।

"मैं जाडे के आखिर मे त्योहार पर भी वहा गई थी, फिर भगवान की कृपा से अब भी मिलने गई," वह कह रही थी, "और भगवान ने चाहा तो क्रिसमस के समय फिर जाऊगी।"

"बिल्कुल ठीक है," एक नज़र नेख्लूदोव की ओर दख कर वृद्ध कहने लगा, "सबसे अच्छा तरीका यही है कि उसे जा कर खुद मिल आओ, वरना शहर मे तो जवान आदमी को बिगडते देर नही लगती।"

"नही जी, मेरा आदमी ऐसा नही है। फिजूल बातो की तरफ उसका ध्यान ही नही जाता। वह तो बिल्कुल गौ है। जितने पैसे कमाता है, एक एक कोपेक तक घर भेज देता है। यह हमारी लडकी है। क्या बताऊ आपको अपनी बेटी से मिल कर वह कितना खुश हुआ " औरत ने कहा और मुस्कराने लगी।

छोटी लडकी ने जो चुपचाप बठी अपनी मा की बात सुन रही थी, सिर उठा कर वद्ध और नेख्लूदोव की ओर दखा, मानो अपनी मा की बात का समथन करना चाहती हो। उसकी आखो मे स्थिरता तथा चतुराई

यलक रही थी। वह सूरजमुखी के बीज चबा रही थी और छिलके थूकती जा रही थी।

"और भी अच्छी बात है अगर वह इतना सियाना-समझदार आदमी है, तो," बूढ़े ने कहा। "वैसी करतूत तो नही करता न?" एक पति पत्नी की ओर इशारा करते हुए उसने पूछा जो डिब्बे के दूसरी ओर बैठे थे और प्रत्यक्षत फैक्टरी-मजदूर थे।

पति, सिर पीछे की ओर झुकाये और हाथ मे बोतल पकडे, अपने मुह मे वोद्का उडेल रहा था। पत्नी हाथो मे बैग उठाये, जिसमे से बोतल निकाली गई थी, बडे दत्तचित्त नेत्रो से पति की ओर देखे जा रही थी।

"नही मेरा घर वाला तो शराब को हाथ नही लगाता। वह तो सिगरेट भी नही पीता," औरत ने कहा। वह खुश थी कि अपने पति की प्रशसा करने का उसे एक और मौका मिल गया था। "उस जैसे तो विरले ही आदमी आपको मिलेगे, ऐसा आदमी है वह," नेख्लूदोव को भी सबोधित करती हुई वह बोली।

"इससे अच्छा और क्या होगा?" फैक्टरी मजदूर की ओर देखते हुए बूढे ने कहा।

मजदूर ने जितनी शराब पीनी थी, पी ली और बोतल पत्नी के हाथ मे दे दी। औरत हसी, सिर हिलाया, और खुद भी बोतल को मुह से लगा लिया। नेख्लूदोव और बढे को अपनी ओर देखते हुए पा कर मजदूर नेख्लूदोव से कहने लगा—

"क्या बात है, हुजूर? हम पी रहे हैं, इसलिए? लोग यह तो नही देखते कि हमे कैसा काम करना पडता है, मगर हम पीते कैसे हैं, यह सभी देखते हैं। मैं अपने पैसे से पी रहा हू, साहिब। खुद भी पी रहा हू, और अपनी बीवी को भी पिला रहा हू। और मुझे किसी का डर नही है।"

"हा, हा," नेख्लूदोव ने झेंप कर जवाब दिया। उसकी समझ मे नही आ रहा था कि क्या कहे।

"यह सच है हुजूर? मेरी बीवी बडी समझदार औरत है। मैं इससे सन्तुष्ट हू, क्योकि इसके दिल मे मेरे लिए दद है। क्यो, मावा, मैं जो कुछ कह रहा हू, ठीक है न?"

"यह लो, मुझे और नही चाहिए," बोतल वापस लौटाते हुए उसकी पत्नी ने कहा, "और यह बक बक क्या लगा रखी है?" वह बोली।

"लो देखो! यह बडी अच्छी औरत है, बहुत अच्छी, पर फिर झट से चीखने चिचियाने लगती है। वह गाडी का पहिया होता है न, उसे ग्रीस नही दो तो जैसे चिचियाने लगता है। क्यो, मात्रा, मैं जो कहता हू, ठीक है न?"

मात्रा हसने लगी और हाथ को इस तरह झटका, माना नशे म हो।

"लो, फिर लेक्चर देने लगा।"

"लो देखो! बडी अच्छी औरत है यह, बहुत अच्छी है। मगर एक बार बिगड जाय तो आसमान सिर पर उठा लेती है। क्यो मात्रा, मैं जो कुछ कह रहा हू, ठीक है न? माफ कीजिये हुजूर, मैंने थोडी पी रखी है। किया क्या जाय?" फैक्टरी-मजदूर ने कहा और सोने की तैयारी करते हुए उसने अपनी मुस्कराती बीवी की गोद मे सिर रख दिया।

नेस्लूदोव थोडी देर तक उसी वृद्ध के पास बैठा रहा, और वद्ध ने उसे अपनी सारी कहानी कह डाली। वद्धा अलाव घर बनाता था, पिछले ५३ साल से अलाव घर बना रहा था। इतने अलाव घर बना चुका था कि उसे उनकी गिनती तक याद नही थी। अब वह आराम करना चाहता था, मगर उसे फुसत नही थी। अपने लडका को काम पर लगवाने के लिए शहर आया था, और अब घर के बाकी लोगो से मिलन गाव जा रहा था। बूढे की कहानी सुन चुकने के बाद नेस्लूदाव वहा से उठ कर अपनी जगह पर चला गया जो तारास ने उसके लिए सभाल कर रखी था।

"आइये, हुजूर, आइये, बोरी यहा रख देते हैं," नेस्लूदोव की ओर देखते हुए बडे दोस्ताना लहजे मे माली ने कहा जा तारास के सामन बैठा था।

"आइये बैठिये, जगह की क्या है। दिल मे जगह होनी चाहिए," तारास ने मुस्कराते हुए कहा, और बोरी उठा कर खिडकी की ओर ले गया। बोरी का वजन कम से कम एक मन रहा होगा, लेकिन वह उसे इस तरह उठा ले गया मानो फूल की सी हल्की हो। "बहुत जगह है। न भी हो तो आदमी कुछ देर खडा रह सकता है, सीट के नीचे घुस कर लेट सकता है। वहा बडे आराम से सफर किया जा सकता है। लडन-झगडन की कोई जरूरत नही," तारास ने कहा। मैत्री और सद्भावना से उसका चेहरा दमक रहा था।

अपने बारे मे तारास कहा करता था कि जब तक मैं दो घूट शराब

न पी लू मेरी जवान नही चलती। शराब पी लू तो मुझे ठीक ठीक शब्द मिलते रहते हैं, तब मैं किसी बात का भी ब्योरा दे सकता हू। और वास्तव मे यह ठीक भी था। जब तारास नशे मे नही होता, तो चुपचाप बैठा रहता। पर पी कर—और वह केवल कभी कभी और खास खास मौको पर ही पिया करता था—वह मजे से चहकने लगता। तब वह खूब बोलता, बडी सरलता और सचाई के साथ, और सबसे बडी बात बहुत ही प्यार से जो उसकी नीली नीली, कोमलता भरी आखो और उसके होठो से कभी न उतरने वाली स्नेह भरी मुस्कान से झलक रहा होता।

आज भी वह मस्ती मे था। नेख्लूदोव के चले आने पर उसकी बातो का ताता थोडी देर के लिए टूट गया था। लेकिन बोरी को अपनी जगह पर टिका लेने के बाद तारास फिर बैठ गया, और अपने मजबूत हाथो को घुटनो पर टिकाये, और माली के चेहरे पर आखें गाडे, वह फिर अपनी कहानी कहने लगा। वह इस आदमी को, जिसके साथ उसका अभी अभी परिचय हुआ था अपनी पत्नी के बारे मे बता रहा था, और एक एक बात का पूरा ब्योरा दे कर—उसे साइबेरिया क्यो भेजा जा रहा था और वह क्यो उसके पीछे वहा जा रहा था।

यह किस्सा नेख्लूदोव ने पहले कभी भी विस्तार के साथ नही सुना था, इसलिए वह बडे ध्यान से सुनने लगा। जब वह पहुचा तो तारास कहानी के उस हिस्से तक पहुच चुका था जब ज़हर देने की कोशिश सर अजाम हो चुकी थी और घर वालो को पता चल गया था कि यह फ़ेदोस्या की करतूत है।

"मैं अपना दुखडा रो रहा हू," मित्रो की सी सद्भावना के साथ नेख्लूदोव को सम्बोधित करते हुए तारास ने कहा। "ऐसा भला आदमी मिल गया है, बस बाते चल पडी, सो अब इसे सारी कहानी सुना रहा हू।"

"ठीक है," नेख्लूदोव ने कहा।

"अच्छा तो, मैं कह रहा था, कि मामला इस तरह पता चल गया। मा ने वह रोटी उठा ली। 'मैं तो पुलिस अफ्सर के पास जा रही हू।' पर मेरा बाप बडा इसाफ-पसन्द आदमी है। 'मत जाओ, बीबी,' उसने कहा, 'लडकी तो अभी बच्चा है, उसे खुद भी मालूम नही था कि वह क्या करने जा रही है। हमें दिल म से रहम का निकाल नही देना चाहिए। उसे अक्ल आ जायेगी।' पर हे भगवान्! मा कहा सुनती थी। 'हम इसे

घर मे रखेंगे तो यह हम सबको कीडे-मकोडो की तरह मार डालेगी।' तो भाई मेरे, तुम्हे क्या बताऊ, वह सीधे पुलिस अफसर से मिलने चली गई। वह तो फौरन घमक पडा। गवाहो को बुलाने लगा।"

"और तुम?" माली ने पूछा।

"मैं तो, भाई मेरे, उस वक्त पेट मे दद के मारे तडप रहा था और कै पर कै कर रहा था। मेरी तो अन्तडिया बाहर आ रही थी। अब बाप ने क्या किया, उसने गाडी जोडी, छकडे मे फेन्नेस्या को बिठाया और पहले थाने और फिर मजिस्ट्रेट के पास जा पहुचा। और मेरी बीवी ने सारी की सारी बात मजिस्ट्रेट को बता दी—उसे संखिया कहा से मिला, रोटी म कैसे गूध कर मिलाया। 'यह काम तुमने क्या किया?' मजिस्ट्रेट ने उससे पूछा। कहने लगी, 'क्या न करती? इस आदमी से मुझे नफरत है। साइबेरिया मे रहना मजूर, मगर इस आदमी के साथ मैं एक पल के लिए भी न रहूगी,' वह मेरे बारे मे कह रही थी," तारास ने मुस्करा कर कहा। "इस तरह उसने सब बात कबूल कर ली। इसके बाद बस, जेलखाना, और क्या। बाप मेरा अकेला घर लौट आया। ऊपर से फसल पकने के दिन आ गये। इधर घर मे मेरी मा ही अकेली औरत रह गई। और वह भी दुबली हो रही थी। अब हम सोच म पड गये कि करे तो क्या करें। क्या ऐसा नही हो सकता कि उसे ज़मानत पर छुडा ले? तो बाप किसी अफसर से जा कर मिला। कुछ काम नही बना। फिर दूसरे के पास गया। इस तरह, मैं सोचता हू वह पाच अफसरो के पास गया। हम तो तग आ गये, सोचा छोड दें। पर एक दिन क्या हुआ कि हमारी मुलाकात एक दफ्तर के बाबू से हो गई। ऐसा चतुर आदमी कि क्या कहू। 'मुझे पाच रूबल दो और मैं उसे छुडवा दूगा,' कहने लगा। आखिर तीन पर मान गया। मैंने क्या किया, बीवी के कपडे उठाये, जो उसने अपने हाथ से बुने थे, और गिरवी रख कर पैसे बाबू के हाथ मे दे आया। बस उसके कागज़ लिखने की देर थी," तारास इस तरह बोला, मानो गोली चलने की बात सुना रहा हो, "फौरन काम बन गया। उस वक्त तक मेरी सेहत ठीक हो गई थी और मैं खुद बीवी को लिवाने गया। तो क्या बताऊ, भाई मेरे, मैं शहर गया, घोडी एक जगह बाधी, हाथ म कागज लिया और सीधा जेलखाने के बाहर जा पहुचा। 'क्या काम है?' 'काम यह है,' मैंने कहा, 'मेरी घर वाली को इधर तुमने जेल मे रखा हुआ है।' 'तुम्हारे

पास कागज है?' मैंने कागज उसके हाथ मे दिया। उसने उसे देखा। 'यही ठहरो,' वह बोला। मैं बेंच पर बैठ गया। उस वक्त दोपहर हो गई थी। एक अफसर बाहर आया। 'तुम्हारा नाम विर्युकोव है?' 'जी।' 'ले जाओ इसे।' बस, दरवाजे खुल गये और वह बाहर आ गई। उसने अपने ही कपडे पहन रखे थे। 'चलो मेरे साथ।' 'क्या तुम पैदल आये हो?' 'नही घोडे पर आया हू।' बस, मैंने सराय मे जा कर अस्तबल वाले को पैसे दिये, घोडी खोली, छकडा जोडा, जितनी घास बच रही थी उठा कर छकडे मे रखी, ऊपर टाट बिछाया ताकि बीवी उस पर बैठ सके। वह ऊपर चढ आई, और शाल लपेट कर बैठ गई। और हम निकल पडे। वह भी चुप और मैं भी चुप। जब हम घर के पास पहुचे तो कहती है, 'मा कैसी है? जीती है?' 'हा, जीती है।' 'और बापू? जीता है?' 'हा, जीता है।' 'मुझे माफ कर दो, तारास,' कहने लगी, 'मुझसे बडी भूल हुई। मुझे खुद भी मालूम नही था मैं क्या कर रही हू।' मैंने जवाब दिया, 'बीती पर क्या रोना, मैंने तो कब का तुम्हे माफ कर दिया है।' बस, मैं और कुछ नही बोला। हम घर के अन्दर गये, और वह सीधी मा के पाव पड गई। मा कहने लगी, 'भगवान् तुझे बख्श देंगे।' और बाप ने नमस्ते की और बोला, 'जो होना था हो गया। अब अच्छी तरह रहो। अभी यह सब बाते करने का वक्त नही है। अभी फसल काटनी है।' उसने कहा, 'भगवान् की दया से जिस जमीन को खाद दी थी, वहा रई की भरपूर फसल हुई है, इतनी घनी कि हसुआ नही चल सकता। डण्ठल एक दूसरे मे उलझे हुए हैं, और बालिया अपने ही बोझ से दबी जाती हैं। फसल काटनी होगी। तुम और तारास कल जाओ और यह काम सभालो।' तो भाई मेरे, क्या बताऊ तुम्हे, उस घडी से वह काम मे जुटी, और ऐसी जुटी कि सभी दग रह गये। उस समय हमने तीन देस्यातीना भूमि लगान पर ली थी, और भगवान् की किरपा से जई और रई दोनो की भरपूर फसल हमने काटी। मैं काटता हू तो वह गट्ठे बाधती है, और कभी कभी हम दोनो फसल काटते हैं। काम पर मेरा हाथ अच्छा चलता है, मैं काम से डरता नही हू, पर वह मुझसे भी अच्छी है, जिस काम को हाथ लगाये, सोना सोना बना देती है। बडी चुस्त औरत है, छोटी उम्र की है, बडी जिन्दा दिल है। और काम करने के लिए तो उसके दिल म ऐसी उमग उठी कि मुझे उसका हाथ रोकना पडा। हम घर लौटते हैं तो हमारी

उगलिया सूजी हुई हैं, वाजू दुखते हैं, पर वह है कि वजाय आराम करने के भागी हुई खत्ती में जा पहुचती है और अगले दिन के लिए गट्ठे वाधने की पट्टिया तैयार करने लगती है। उसमें ऐसी तबदीली आयी कि क्या कहू।"

"तो क्या तुम्हारे साथ भी प्यार मुहब्बत से पेश आयी?"

"जरूरी बात है। वह सारा वक्त मेरे साथ जुड कर रहती जैसे हम एक जान हो। मेरे मन मे जो भी ख्याल उठे, उसे पहले पता चल जाय। यहा तक कि मा भी—उसे वडा क्रोध था—कहने लगी, 'हमारी फेदास्या तो इतनी वदल गई है कि पहचानी नही जाती। यह तो कोई दूसरी ही औरत जान पडती है।' एक वार हम दो छकडे लाये—गट्ठा को लाद कर ले जाना था। वह और मैं आगे वाले छकडे मे थे। मैंने पूछा, 'तुमने वह काम क्यो किया, तुम्हे ख्याल ही कैसे आया, फेदोस्या?' तो कहती है, 'ख्याल कैसे आया? सुनो, मैं तुम्हारे साथ नही रहना चाहती थी। मैं सोचती थी, मैं मर जाऊगी मगर तुम्हारे साथ नही रहूगी।' मैंने कहा, 'और अब, फेदोस्या?' वोली, 'अब तो तुम मेरे दिल मे वसते हो।'" तारास चुप हो गया। खुशी की मुस्कान उसके होठो पर खेलने लगी। फिर उसने सिर हिलाया, मानो हैरान हो उठा हो, "हम फसल काट कर घर लाये ही होगे, और मैं सन भिगोने गया। जव लौट कर घर आया "

वह चुप हो गया और क्षण भर के लिए रुक गया, "तो आगे सम्मन आया पडा था। उसे अदालत के सामने पेश होना होगा। और हम भूल भी चुके थे कि किस वात के लिए उसे पेश होना है।"

"जरूर शैतान की शरारत है," माली कहने लगा, "भला कभी कोई इन्सान भी किसी जीव की आत्मा को नष्ट करेगा? हमारे यहा एक आदमी हुआ करता था " माली कोई कहानी सुनाने जा ही रहा था जव गाडी की रफ्तार सुस्त पड गई।

"जान पडता है कोई स्टेशन आ गया है," वह वोला, "मैं जा कर जरा गला तर करूगा।"

वातचीत खत्म हो गई, और माली के पीछे नेख्लूदोव भी चलता हुआ स्टेशन के गीले प्लेटफॉम पर उतर आया।

उतरने से पहले नेख्लूदोव ने देखा था कि स्टेशन के मैदान में कुछेक शानदार घोडा-गाडियां खडी हैं, किसी के साथ तीन घोडे जुते हैं, और किसी के साथ चार। घोडे खूब पले हुए थे और उनके साजों पर घण्टियां लगी थी जो बार बार खनक उठती थी। गीले, काले पड गये तखतों के प्लेटफ़ॉर्म पर उतर कर उसने देखा कि फर्स्ट क्लास के डिब्बे के सामने कुछ लोग भीड बनाये खडे हैं। उनमें खास तौर पर नेख्लूदोव की नज़र एक मोटी-ताज़ी महिला पर पडी, जिसने बरसाती कोट पहन रखा था और टोप में बडे कीमती पंख लगा रखे थे। उसके साथ एक ऊंचे कद का युवक खडा था। युवक की टांगें पतली पतली थी और उसने साइकल चलाने वाला की पोशाक पहन रखी थी। वह अपना भीमकाय, खूब पला हुआ कुत्ता साथ लाया था जिसके गले में कीमती पट्टा पडा था। इनके पीछे चोबदार, छाते और बरसातियां इत्यादि उठाये खडे थे। एक कोचवान भी उनके साथ था। ये सब लोग किसी को लेने आये थे। मोटी-ताज़ी महिला से ले कर कोचवान तक, जो अपना ओवरकोट उठाये खडा था, इस दल में खडे सभी के चेहरों पर धन ऐश्वर्य और आत्मतुष्टि की छाप थी। उन्हें देखने के लिए फौरन ही भीड जमा हो गई, कुछ लोग अपना कुतूहल शान्त करने के लिए इकट्ठे हो गये, और कुछ चापलूसी करने के लिए। लाल टोपी वाला स्टेशन मास्टर, एक पुलिस का सिपाही, एक दुबली पतली युवती जो रूसी पोशाक पहने थी, और गले में मनकों का हार डाले थी (यह युवती गर्मियों का सारा मौसम, हर गाडी के आने पर स्टेशन पर पहुंचती रही थी), एक तार बाबू, तथा कुछ मुसाफिर—स्त्रियां और मर्द—सभी इस भीड में शामिल थे।

नेख्लूदोव ने कुत्ते वाले युवक को पहचान लिया। वह छोटा कोर्चागिन था जो स्कूल में पढता था। मोटी महिला प्रिंसेस की बहिन थी और इसी के घर कोर्चागिन परिवार अब रहने के लिए आया था। गाडी के बडे गार्ड ने, जो सुनहरी डोरी लगाये था और चमकते बूट पहने था, डिब्बे का दरवाज़ा खोला, और बडे अदब से उसे पकडे रहा। प्रिंसेस की सवारी बाहर निकली। लम्बूतरे मुंह वाली प्रिंसेस एक कुर्सी पर बैठी थी, जिसे तह किया जा सकता था, और जिसे फिलिप और एक सफेद एप्रन वाले

चोवदार ने उठा रखा था। बड़े ध्यान से कुर्सी बाहर लाई गई। बहिन एक दूसरी से मिली, और वार्तालाप में फ्रांसीसी वाक्यों की फुलझड़ियाँ छूटने लगीं। क्या प्रिंसेस बन्द गाड़ी में बैठ कर घर जाना पसन्द करेंगी या खुली गाड़ी में? आखिर जुलूस उस दरवाज़े की ओर जाने लगा जिसमें से निकल कर लोग स्टेशन से बाहर जाते थे। सबसे पीछे प्रिंसेस की घुंघराले बालों वाली नौकरानी छाता और चमड़े का बैग उठाये चली जा रही थी।

नेख्लूदोव दरवाज़े तक पहुंचने से पहले ही रुक गया और जुलूस के निकल जाने का इन्तज़ार करने लगा। वह इन लोगों से दोबारा नहीं मिलना चाहता था, क्योंकि मिलने पर उनसे फिर नये सिरे से विदा लेने का कष्ट उठाना पड़ेगा।

आगे आगे प्रिंसेस, उसका बेटा, मिस्सी, डॉक्टर, नौकरानी बाहर निकले। बूढ़ा प्रिंस और उसकी साली पीछे रुक गये और आपस में बातें करने लगे। नेख्लूदोव इनसे काफी हट कर खड़ा था, इसलिए उनके वार्तालाप में से कुछेक टूटे-फूटे फ्रांसीसी वाक्य ही वह सुन पा रहा था। लेकिन, जैसा कि अक्सर होता है, एक वाक्य उसे बड़ी स्पष्टता से अब भी याद था, जो प्रिंस ने बोला था। न केवल वाक्य ही बल्कि उसका लहजा और प्रिंस की आवाज़ तक उसे याद रही थी।

'Oh! il est du vrai grand monde, du vrai grand monde"* अपनी साली के साथ स्टेशन से बाहर निकलते हुए ऊंची, आत्मविश्वस्त आवाज़ में प्रिंस किसी के बारे में कह रहा था। पीछे पीछे गाड़ी के गार्ड और कुली बड़े अदब से चले आ रहे थे।

ऐन इसी वक्त, स्टेशन के पीछे से, कामगारों का एक समूह निकला। छाल के जूते पहने और पीठ पर अपनी बोरियां और बकरी की खाल के कोट उठाये, वे अन्दर चले आये। हौले-हौले मगर दृढ़ता से कदम रखते हुए वे सबसे नज़दीक वाले डिब्बे की ओर लपके, लेकिन अन्दर घुसने से पहले ही एक गार्ड ने फौरन् उन्हें रोक दिया और आगे जाने को कहा। कामगार रुके नहीं, तेज़ तेज़ चलते हुए और एक दूसरे को धक्के देते, अगले डिब्बे की ओर बढ़ गये, और एक एक कर के उसके अन्दर घुसने लगे। पीठ

---

*ओह! वह तो सचमुच ऊंची सोसाइटी का आदमी है, सचमुच ही ऊंची सोसाइटी। (फ्रेंच)

पर से लटकती बोरिया दरवाजे के साथ अटक अटक जाती। लेकिन स्टेशन के दरवाजे पर खडे किसी दूसरे गाड की नजर उन पर पड गई और वही से चिल्ला कर उसने उन्हे अन्दर जाने से रोक दिया। कामगार अन्दर जा चुके थे। मगर उसकी आवाज सुनते ही बाहर निकल आये, और फिर पहले की तरह तेज तेज चलते हुए और हौले हौले दृढता से कदम रखते हुए, अगले डिब्बे की ओर जाने लगे। यह वही डिब्बा था जिसमे नेख्लूदोव बैठा था। यहा पर भी एक गाड उन्हे रोकने लगा, लेकिन नख्लूदोव बोल उठा कि अन्दर बहुत जगह है, और कामगारो को अन्दर जाने के लिए कहा। नेख्लूदोव की बात मान कर वे अन्दर घुस आये। पीछे पीछे नेख्लूदोव अन्दर आ गया। कामगार सीटो पर बैठने ही वाले थे जब तुर्रे वाली टोपी पहने सज्जन और दोनो स्त्रिया जिन्होंने अपनी टोपी मे रिब्बन लगा रखा था, बिगड उठी। कामगारो का उस डिब्बे मे उनके साथ बैठना उन्हे अपना अपमान लगा। बडे गुस्से मे वे बोलने लगे और इन्हें बाहर निकालने की कोशिश करने लगे। थके-हारे कामगार, दुबले पतले चेहरे धूप म तपे फिर अपना सामान उठा कर बाहर जाने लगे। फिर उनकी बोरिया कभी सीटो के साथ, कभी दीवारो और दरवाजो के साथ उलझने लगी। उनकी सख्या बीस के करीब रही होगी, और उनमे बूढे और जवान, कई तो बहुत ही छोटी उम्र के तरुण युवक, शामिल थे। प्रत्यक्षत उन्हे महसूस हो रहा था जसे वही कसूरवार हो, और कही भी जा कर बैठने के लिए तैयार हो, भले ही वह जगह दुनिया के दूसरे कोने मे ही क्यो न हो, नुकीली सलाखो पर ही क्यो न हो।

"अब कहा भागे जा रहे हो? गधे कही के! बैठ जाओ यही पर!" एक गाड उन्हे जाते देख कर चिल्लाया।

'Voila encore des nouvelles!"* दो महिलाओ मे से छोटी ने कहा। उसे पूर्ण विश्वास था कि इतनी अच्छी फ्रासीसी बोल कर वह जरूर नेख्लूदोव का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर पायेगी। जिस महिला ने कगन पहन रखे थे, बडी देर तक नाक भौंह चढाती रही, और कुछ इस किस्म की बात भी कही कि उसकी किस्मत मे इन बदबूदार किसानो के साथ ही सफर करना लिखा था।

---

*यह क्या बला है! (फ्रेंच)

जिस भाति कोई खतरा टल जाने से मन मे खुशी और सन्तोप का सचार हो जाता है, कामगार भी ऐसी ही भावनाओं का अनुभव करते हुए, कधो पर से बोझल बोरिया उतार उतार कर सीटो के नीचे टिकाने लगे।

जो माली अपनी जगह छोड कर तारास के साथ बाते करने आ बैठा था, अब उठ कर अपनी सीट पर वापस चला गया। इस तरह तारास के सामने दो आदमियो के बैठने की जगह खाली थी, और उसकी बगल में एक आदमी की। इन जगहो पर तीन कामगार आ कर बैठ गये। लेकिन जब नेख्लूदोव वहा बैठने आया तो उसके कुलीनो के से कपडे देख कर वे बेहद घबरा गये, और वहा से उठने लगे। लेकिन नेख्लूदोव ने उन्हे रोक दिया, और खुद एक सीट की बाजू पर, जो गलियारे की ओर थी, बैठ गया।

इस पर एक कामगार ने, जिसकी उम्र लगभग ५० वर्ष की थी, एक युवा कामगार की ओर देखा। दोनो की आखें मिली। वयस्क आदमी की नज़र मे हैरानी थी। कुलीन आदमी तो फौरन् डाटने लगते हैं और धक्के दे कर उठा देते है, मगर यह आदमी उन्ह अपनी सीट दे रहा है, यह देख कर वे घबरा गये थे। यहा तक कि उन्ह डर लगने लगा था कि इसका कोई बुरा नतीजा भी निकल सकता है। परतु जब नेख्लूदोव बडे सीधे-सादे ढग से तारास के साथ बात करने लगा, तो उन्हें शीघ्र ही यकीन हो गया कि इसके पीछे कोई साज़िश नही छिपी है। वे आश्वस्त महसूस करने लगे और एक लडके को सीट पर से उठ कर बोरी पर बैठ जाने को कहा और नेख्लूदोव से अपनी सीट पर बैठने का आग्रह करने लगे। शुरू शुरू मे तो वयस्क कामगार, जो नेख्लूदोव के ऐन सामने बैठा था, सकुचाता रहा, और डर कर छालदार जूतो समेत अपने पैर पीछे हटाता रहा कि कही वे इस कुलीन से न छू जाय, लेकिन थोडी देर बाद वह खुलने लगा, और आत्मीयता से बाते करने लगा, यहा तक कि वह दोस्तो की तरह नेख्लूदोव के घुटने पर अपना हाथ तक मार देता ताकि वह ध्यान से उसकी बात को सुने। उसने अपनी सारी राम कहानी कह डाली। वह पीट के दलदलो मे काम करता था, और अब वही से आ रहा था। ढाई महीने तक काम करने के बाद अब अपनी पगार जेब मे डाल वह घर जा रहा था। पगार केवल दस रूबल बनती थी, क्योकि काम शुरू करते समय वह कुछ पसे पेशगी ले चुका था। अपने काम के बारे म बताते हुए वह कहने

लगा कि सुबह से शाम तक चौदह चौदह सोलह-सोलह घंटे वे लोग सारा वक्त पानी मे खडे रहते हैं, केवल बीच मे दो घण्टे के लिए खाना खाने की छुट्टी होती है।

"जिन लोगो को इसकी आदत नही उन्ह जरूर तकलीफ होती है" वह कहने लगा, "पर आदत पड जाने पर कुछ पता नही चलता। हा, खुराक अच्छी मिलनी चाहिए। शुरू शुरू मे खुराक बहुत बुरी मिलती थी। बाद मे लोगो ने शिकायत की तो खाना अच्छा मिलने लगा, फिर काम करने मे कोई तकलीफ न होती थी।"

फिर वह सुनाने लगा कि पिछले २८ बरस से वह बाहर काम कर रहा है, और हर महीने अपनी कमाई के सारे पैसे घर भेजता रहा है। पहले बाप को भेजता था, फिर अपने बडे भाई को और अब अपने भतीजे को जो घर चला रहा था। साल भर मे वह ५०–६० रूबल कमा लेता था, लेकिन अपने पर वह इनमे से केवल दो या तीन रूबल ही खर्च करता था–तम्बाकू या दियासलाई जैसी मनबहलाव की चीजो पर।

"मैं पापी हू। जब थक जाता हू तो कभी कभी वोद्का भी पी लेता हू," उसने अपराधियो की तरह मुस्करा कर कहा।

फिर वह इधर-उधर की बाते सुनाने लगा कि घर पर औरते कैसे काम करती है, और आज सुबह ठेकेदार ने रवाने से पहले उन्ह आधी बाल्टी वोद्का पीने को दी। और किस तरह एक कामगार मर गया था और दूसरा बीमार घर लौट रहा था। जिस बीमार मजदूर की वह बात कर रहा था, वह उसी डिब्बे के एक कोने मे बैठा था। वह छोटा सा युवक था, जद-पीला चेहरा और लगभग नीले होठ। बार बार मलेरिया होने से उसकी हालत बुरी हो गई थी। नेख्लूदोव उठ कर उसके पास चला गया, लेकिन नेख्लूदोव को देख कर वह इतना व्याकुल हो उठा, और इतनी रुखाई से नेख्लूदोव की ओर देखा कि नेख्लूदोव ने उससे सवाल पूछ कर उसे परेशान करना नही चाहा। उसने केवल उसके बडी उम्र के साथी से कहा कि उसे कुनीन दे, और एक कागज पर कुनीन का नाम भी लिख दिया। वह उसके लिए पैसे भी देना चाहता था लेकिन बूढे कामगार ने नही लिये, और बोला कि वह खुद दवाई के पैसे देगा।

"मैं भी बहुत घूमा हू, बहुत दुनिया देखी है पर ऐसा कुलीन कभी नही देखा। बजाय घूसा रसीद करने के इसने अपनी सीट तक हमे दे

दी," बूढे ने तारास से कहा। "जान पडता है कि कुलीन भी सब एक जैसे नही होते।"

और उनकी ओर देखते हुए नेख्लूदोव सोच रहा था, "हा, यह बिल्कुल दूसरा, बिल्कुल नया ससार है।" इन पतले किन्तु बलिष्ठ शरीरा, मोटे मोटे, घर के बने कपडो, धूप मे तपे, थके हुए, प्यार भरे चेहरा को देख रहा था और यह अनुभव कर रहा था कि वह एक नयी ही तरह के लोगो से घिरा है, जिनकी मेहनत मशक्कत की जिदगी सही माना में इसान की जिदगी है, जिसमे उनकी अपनी सजीदा दिलचस्पिया, खुशिया और अपने ही दुख है।

"यह है वास्तव मे le vrai grand monde," प्रिस कोर्चागिन के शब्द याद करते हुए नेख्लदोव ने मन ही मन कहा। उसकी आखा के सामने कोचागिन जैसे लोगो की निकम्मी, आरामतलब जिन्दगी का नक्शा घूम गया। कितनी तुच्छ और ओछी हैं इनकी दिलचस्पिया।

नेख्लूदोव को लगा जैसे कोई नया, अनजाना, और खूबसूरत ससार उसकी आखो के सामने खुल गया हो, और उसका मन खुशी से भर उठा।

दूसरा भाग समाप्त

तीसरा भाग

१

वंदियो की जिस टोली के साथ मास्लोवा को भेजा गया था, उसने ३ हज़ार मील तक का सफर तय किया। पेम शहर तक मास्लोवा ग्राम मुजरिमो के साथ सफर कर रही थी जिन्हे ज़ाब्ता फौजदारी मे सज़ाए दी गयी थी। नेख्लदोव को वेरा बोगोदूखोव्स्काया ने यह परामर्श दिया था कि बेहतर होगा यदि मास्लोवा राजनीतिक कैदियो के साथ सफर करे। उसे स्वय भी राजनीतिक कैदियो के साथ ही ले जाया जा रहा था। लेकिन पेम तक पहुच कर कही नेख्लदोव ऐसा करने म सफल हुग्रा, ग्रौर ग्रागे का सफर मास्लोवा राजनीतिक कैदियो के साथ जाने लगी।

पेम तक का सफर मास्लोवा के लिए वडा कठिन रहा था, शारीरिक दृष्टि से भी ग्रौर नैतिक दृष्टि से भी। शारीरिक दृष्टि से इसलिए कि डिब्बे म भीड वहुत थी, गन्द था, ग्रौर कीडे मकोडे थे जिन्होने उसे चैन से नही वैठने दिया। नैतिक दृष्टि से इसलिए कि उसके साथ ग्रादमियो का व्यवहार भी कीडे मकोडो की तरह घृणित रहा था। हर स्टेशन पर नये नये लोग उसके पीछे पड जाते, उसे घेर लेते ग्रौर परेशान करते। कैदी ग्रौरतो ग्रौर कैदी मर्दों, वार्डरो तथा कानवाय के सिपाहियो के बीच लपट सबध तो एक रिवाज ही वन गये थे। इसलिए जो स्त्री ग्रपने को बचाय रखना चाहती हो ग्रौर ग्रपने शरीर का व्यापार न करना चाहती हो, उसे हर वक्त ग्रत्यधिक सावधान रहना पडता था। मास्लोवा की स्थिति वडी कठिन थी। एक तो वह देखने मे ग्रच्छी थी, दूसरे, लोगो को उसका ग्रतीत मालूम था, इसलिए ग्रादमियो की नज़र विशेषतया उस पर ग्रधिक जाती। सारा वक्त उसका दिल धक् धक करता रहता, ग्रौर ग्रपने को बचाये रखने के लिए उसे विकट सघर्ष करना पडता। ग्रौर

अब जब वह दृढता से आदमियो का मुकाबला करती तो वे बिगड उठते। अब एक और भावना भी मास्लोवा के प्रति उनके मन मे जागने लगी, वह थी द्वेष की भावना। परन्तु फेनेत्स्या और तारास के साथ घनिष्ठता होने से स्थिति कुछ आसान हो गई थी। जब तारास को पता चला कि उसकी पत्नी को परेशान किया जा रहा है तो नीज्नी नोवगोरोद मे जान बूझ कर उसने अपने को पकडवा दिया ताकि वह अपनी पत्नी का बचाव कर सके। और इस तरह अब वह भी कैदियो की तरह टोली के साथ सफर कर रहा था।

और जब मास्लोवा को राजनीतिक कैदियो के साथ जाने की इजाजत मिल गई तब तो उसकी स्थिति हर तरह से सुधर गई। राजनीतिक कैदियो को सफर का ज्यादा आराम था, उन्हे जगह ज्यादा मिलती थी, भोजन बेहतर था और लोग भी उनके साथ इतनी रुखाई से पेश नही आते थे। इसके अतिरिक्त मर्दो ने उसे परेशान करना छोड दिया और अब उसे उसके अतीत की याद दिलाने वाला कोई न था, जिसे वह भूलने को इतनी आकुल थी। परन्तु सबसे बडा लाभ जो उसे हुआ वह यह था कि वह कुछेक ऐसे लोगो के सम्पर्क मे आयी जिनका प्रभाव उसके आचार विचार पर बहुत ही अच्छा और निर्णयात्मक रहा।

हर पडाव पर मास्लोवा राजनीतिक कैदियो के साथ रह सकती थी। लेकिन शरीर की मजबूत और स्वस्थ होने के कारण, जब कैदियो को एक पडाव से दूसरे पडाव तक पैदल ले जाया जाता तो उसे भी साधारण मुजरिमो के साथ पैदल चलना पडता था। इस तरह, तोम्स्क तक का सारा रास्ता उसने पैदल तय किया। टोली के साथ दो राजनीतिक कैदी भी थे। इनमे से एक तो मारीया पाव्लोव्ना श्चेतोनिना थी। यह वही सुदर और हल्के भूरे रग की आखो वाली लडकी थी जिसकी ओर नेख्लूदोव का ध्यान उस रोज़ आकृष्ट हुआ था जब वह वेरा से जेल मे मिलने गया था। दूसरा सिमनसन नाम का एक युवक था, अस्त-व्यस्त बाल, सावला चेहरा और धसी हुई आखें। इसे भी नेख्लूदोव ने वहा उसी दिन देखा था। यह आदमी अब याकूत्स्क प्रदेश को जा रहा था, जहा इसे निर्वासित किया गया था। मारीया पाव्लोव्ना इसलिए पैदल चल रही थी कि उसने छकडे मे अपना स्थान एक आम मुजरिम औरत को दे दिया था, जो गर्भवती थी। और सिमनसन इसलिए कि जो गहनत

उस अपने वग के कारण मिल रही थी उसका वह लाभ नही उठाना चाहता था। सुबह तडके ही आम मुजरिम कैदियो के साथ व तीनो पैदल चल देते। बाद म राजनीतिक कदी छकडो म बठ कर आते। सफर की आखिरी मजिल भी इसी नियम के अनुसार तय हुई और टोली एक बडे शहर म जा पहुची जहा उसका दायित्व किसी नय कानवाय अफसर को सौंप दिया गया।

सुबह का वक्त था, और सितम्बर का महीना। कभी बारिश पडने लगती, कभी बफ, और किसी किसी वक्त सहसा तेज ठण्डी हवा के झोके आने लगते। पडाव घर के आगन म कैदियो की टोली (लगभग चार सौ आदमी और पचास औरतें) अभी से खडी थी। कुछ कैदी कानवाय अफसर के इदगिद भीड लगाये थे जो कैदियो के मुखिया को दो दो दिन का जब खच दे रहा था। बाकी कदी खाने वाली स्त्रिया से खाने की चीजें खरीद रहे थे, जिन्ह आगन म आ कर सौदा बेचने की इजाजत दे दी गई थी। पैसो के खनकने, कैदियो की आवाजो सौदा बचने वाली औरतो की चीख-पुकार से वातावरण गूज रहा था।

कात्यूशा और मारीया पाब्लोव्ना भी घर के अन्दर से निकल कर आगन म आ गई। दोनो न ऊचे बूट और फर के छोटे छोटे कोट पहन रखे थे और सिर पर शाल लपेटे हुए थी। यही पर खोचे वाली औरत, तेज हवा से बचने के लिए आगन की उत्तरी दीवार की ओर म खोचे लगाय बैठी थी, और अपना अपना सौदा बेचने की फिक्र म एक दूसरी से लड-झगड रही थी। ताजा पाव रोटी, गोश्त के समोसे, मछली, सेमिसेली, दलिया, कलेजी गोमास अण्डे दूध—ये चीजें वे बेच रही थी। एक औरत तो पूरा का पूरा सुअर भून कर ले आयी थी।

टोली के चलने के इतजार म सिमनसन भी आगन मे खडा था। उसने रबड की जॉकेट, और रबड के गैलाश चढा रखे थे और उन्ह तस्मो के साथ अपने ऊनी मोजो से बाधा था (सिमनसन मास नही खाता था, इसलिए जानवरो को मार कर उनके चमडे से तैयार की गयी चीजो का इस्तेमाल नही करता था)। सायवान के पास खडा वह अपनी नोट-बुक म एक बात दज कर रहा था जो उसे अभी अभी सूझी थी। उसने लिखा—"यदि कोई कीटाणु मनुष्य के नाखून का निरीक्षण करने की क्षमता रखता हो तो वह उसे निष्प्राण पदार्थ कहेगा। इसी तरह हम पृथ्वी

की ऊपरी कठोर परत को देख कर हम मानव उसे निष्प्राण कह देते है। यह गलत है।"

मास्लोवा न अण्डे, पाव रोटी, मछली, और रस्क खरीदे, और वह उन्हे अपने बैग म डाल ही रही थी, उधर मारीया पाव्लोव्ना खोंचे वाली औरतो को पैसे दे रही थी जब कैदियो मे हलचल सी मच गई। सभी एकदम चुप हो गये और अपनी अपनी जगह पर लाइनो म खडे हो गये। अफसर बाहर निकल आया और रवानगी से पहले आखिरी हुक्म दे दिये।

सब बात रोज़ की तरह चल रही थी। कैदियो की गणना कर ली गई, उनके पावो मे पडी बेडियो को अच्छी तरह से ठोक-बजा कर देख लिया गया। जिन कैदियो को दो दो की लाइन मे जाना था, उनके हाथ एक दूसरे से हथकडिया द्वारा बाध दिये गये। परन्तु सहसा अफसर की क्रोध भरी, अफसराना आवाज़ सुनाई दी, और साथ ही किसी को घसा पडने की, और एक बच्चे के रोने चिल्लाने की। क्षण भर के लिए सभी चुप हो गये, फिर लोगो के धीरे धीरे बडबडाने की खोखली सी आवाज़ सुनाई देने लगी। मास्लोवा और मारीया पाव्लोव्ना उस ओर गयी जहा से आवाज़ आयी थी।

२

वहा पहुचने पर मारीया पाव्लोव्ना और कात्यशा न यह दृश्य देखा अफसर—सुनहरी रग की मूछो वाला, हट्टा-कट्टा आदमी—भाह सिकोडे, अपने दाये हाथ की हथेली मल रहा था, और अश्लील गालिया बक रहा था क्योकि उसने अभी अभी एक कैदी के मुह पर थप्पड रसीद किया था जिससे उसके हाथ को चोट पहुची थी। उसके सामन एक ऊचे कद का दुबला पतला कैदी खडा एक हाथ से अपने मुह पर स खून पोछ रहा था और दूसरे हाथ स एक चीखती चिल्लाती लडकी को उठाय हुए था। लडकी शाल मे लिपटी हुई थी। कैदी का सिर आधा मुडा हुआ था, उसका कोट और पतलून कद के लिए बहुत छोटे थे।

'मैं दूगा तुम्हे (इसके बाद अश्लील गालिया)। मैं तुम्हे बताऊगा आगे स जवाब कैसे दिया जाता है (और गालिया)। इसे औरतो के हवाले कर दो!" अफसर ने चिल्ला कर कहा, "फौरन् पहनो!

तोम्म्क से चलने के वाद से वह कैदी सारा रास्ता अपनी नन्ही बेटी ो उठा कर ला रहा था (इस कैदी को इसकी गार की पचायत न निर्वासन की सजा दी थी)। तोम्म्क म उसकी पत्नी टाइफस स मर गई थी। अब अफसर ने हुक्म दे दिया था कि कैदी को हथकडिया डाल दी जाय। कैदी ने हुज्जत की और कहा कि हथकडिया लगाय हुए वह बच्चे को नही उठा सकेगा। अफसर का मिजाज बिगडा हुआ था वह चिढ उठा और कैदी को पीट दिया।*

जिस कैदी को चोट लगी थी उसके पास एक कानवाय का सिपाही और एक काली दाढी वाला कैदी खडे थे। कैदी के एक हाथ पर हथकडी लगी थी, और वह भौंहो के नीचे से, उदास आखो मे कभी अफसर की ओर और कभी जख्मी कैदी की ओर–जिसने लडकी को उठा रखा था–देखे जा रहा था। अफसर न फिर सिपाही को हुक्म दिया कि लडकी को ले ले। कैदी और भी अधिक बडबडाने लगे।

"तोम्म्क से ले कर यहा तक सारा रास्ता तो हथकडिया नही पहनायी गयी हैं, और अब " पीछे कही से किसी न फटी आवाज म कहा।

"आखिर यह बच्ची है, पिल्ला तो नही।

"बच्ची का क्या करे?"

"यह कानून नही है," कोई और बोला।

"किसने कहा है?" मानो अफसर को साप न डस लिया हो उसन चिल्ला कर कहा और कैदियो की भीड के अन्दर घुस गया। 'मैं तुम्ह कानून सिखाऊगा। किसने कहा है? तुमने? तुमने?'

"सभी यही कह रहे है, क्योकि " एक छोटे कद के, चौडे मुह वाले कैदी ने कहा।

उसके मुह से ये शब्द निकल नही पाये थे कि अफसर ने दोनो हाथो स उसके मुह पर प्रहार किया।

"बगावत? हैं? मैं तुम्ह सिखाऊगा बगावत किसे कहते है। मैं तुम

---

*इस घटना का विवरण द० अ० लिन्येव न अपनी पुस्तक 'देश निकाला' म दिया है। (लेव तोलस्तोय)

सबको कुत्तों की तरह गोली से मरवा डालेगा, और अफसर मर इस काम पर घ ृणा होगे। ले लो लडकी को।"

भीड चुप हो गई। एक सिपाही ने चिल्लाती लडकी को खींच कर उठा लिया, दूसरे सिपाही ने कैदी को हथकडी लगा दी। कैदी ने चुपचाप हाथ आगे कर दिये।

"इसे औरतो के पास ले जाओ!" अपनी तलवार की पटी ठीक करते हुए अफसर ने चिल्ला कर कहा।

नन्ही लडकी अब भी जार जार से चिल्लाये जा रही थी, और शाल में नीचे से अपने बाजू छुडाने की कोशिश कर रही थी। उसका चेहरा लाल हो रहा था। भीड में से मारीया पाव्लोव्ना निकल कर आगे आ गई और अफसर के पास जा कर बोली–

"आप इजाजत दें तो मैं लडकी को उठा लू।"

"तुम कौन हो?"

"राजनीतिक कैदी।"

मारीया पाव्लोव्ना के सुन्दर चेहरे और बडी बडी आकर्षक आखो का प्रत्यक्षत उस पर असर हुआ (पहले भी अफसर ने उसे देखा था जब कैदी उसे सौपे जा रहे थे)। वह चुपचाप उसकी ओर देखता रहा, मानो कुछ सोच रहा हो, फिर बोला–

"मुझे कोई एतराज नही। उठाना चाहती हो तो बेशक उठाओ। बडा रहम दिखाने चली हो। लेकिन अगर कैदी भाग जायेगा तो कौन इसका जिम्मेवार होगा?"

"बच्चे को उठाये हुए कौन भाग सकता है?" मारीया पाव्लोव्ना ने कहा।

"तुम्हारे साथ बहस करने के लिए मेरे पास वक्त नही है। उठा लो अगर उठाना चाहती हो।"

"लडकी इनके हवाले कर दू?" सिपाही ने पूछा।

"हा, दे दो।"

"आओ मेरे पास आओ," बच्ची को पुचकारते हुए मारीया पाव्लोव्ना ने कहा।

लेकिन लडकी अपने बाप की ओर बाहें फैलाये चिल्लाये जा रही थी। मारीया पाव्लोव्ना के पास वह नही जाना चाहती था।

"जरा ठहरो, मारीया पाव्लोव्ना," बैग मे से एक रस्क निकालते हुए मास्लोवा ने कहा, "यह मेरे पास आ जायेगी।"

बच्ची मास्लोवा को जानती थी। उसके चेहरे की ओर देख कर और उसके हाथ में रस्क को देख कर, वह मास्लोवा के पास आ गई।

सब चुप हो गये। फाटक खोल दिये गये। टोली बाहर निकल आई और कैदी लाइनो मे खडे हो गये। कॉनवाय ने फिर एक बार कदियो की गिनती की। छकडो मे बोरियां को लाद दिया गया और उनके ऊपर कमजोर कदी बैठ गये। औरतों की टोली म मास्लोवा लडकी को उठाये, फेदोस्या के साथ जा खडी हुई। सिमनसन, जो सारा वक्त इस दृश्य का देखता रहा था, लम्बे लम्बे डग भरता हुआ, बडी दृढता मे अफसर के पास जा पहुचा। अफसर अपने आदेश दे चुकने के बाद अपनी गाडी मे बैठने जा रहा था।

"आपने बहुत बुरा काम किया है," सिमनसन बोला।

"जाओ अपनी लाइन मे। तुम्हारा इसके साथ कोई मतलब नही है।"

"हा, मतलब है, मैं तुम्ह बता देना चाहता हू कि आपने बहुत बुरा काम किया है," अपनी घनी भौंहा के नीचे से अफसर के चेहरे की ओर एकटक देखते हुए सिमनसन ने कहा।

"रेडी! मार्च!" सिमनसन की ओर कोई ध्यान न दते हुए, और गाडीवान के कधे को पकड कर गाडी मे चढते हुए अफसर ने कहा।

टोली चलने लगी, और बडी सडक पर पहुच कर फैल गई। सडक पर कीच ही कीच था और उसके दोनो ओर पानी के नाले थे। और यह एक घने जगल म से हो कर गई थी।

३

राजनीतिक कैदियो की स्थिति कठिनाइयो से भरी थी, लेकिन उनके साथ रहना कात्यूशा को अच्छा लगा। पिछले छ साल से शहर म उसका जीवन विकृत, अकर्मण्य तथा भ्रष्ट रहा था और पिछले दो महीना से वह मुजरिम कैदियो के साथ रहती आ रही थी। कात्यूशा का स्वास्थ्य बेहतर होन लगा। हर रोज इह पन्द्रह-बीस मील पैदल चलना पडता था, और खुराक अच्छी मिलती थी। कदी दो दिन चलते और एक दिन आराम

करते थे। इन नये साथियो की सगति मे उसकी रुचि नयी नयी चीज़ों मे पैदा होने लगी जिसका उसे पहले स्वप्न मे भी ख्याल नही आया था। कितन प्यारे लोग हैं ये (वह कहा करती थी) जिनके साथ मैं आजकल रहती हू। ऐसे लोग मैंने पहले कभी नही देखे, देखना ता दूर रहा, मैंने कभी कल्पना भी नही की थी कि ससार मे ऐसे लोग हो सकते हैं।

"और मैं हू कि सजा मिलने पर रोने लगी थी!" वह कहती। "मुझे तो चाहिए कि इसके लिए भगवान का हज़ार हज़ार शुक्र करू। जिन बातो का मुझे यहा आ कर पता चला है, वे मुझे कभी भी मालूम न हो पाती।"

जिन उद्देश्या से ये लोग उत्प्रेरित थे, उन्ह समझने म कात्यूशा को कोई कठिनाई नही हुई, न ही उसे कोई विशेष प्रयास करना पडा। और चूकि वह स्वय जनता की कोख मे से जन्मी थी, इसलिए उसके हृदय मे उन उद्देश्या के प्रति पूरी पूरी सहानुभूति थी। वह जानती थी कि ये लोग जनता के हितैषी हैं और उच्च वर्गो का विरोध करते है, स्वय उच्च वर्गो मे पैदा हुए हैं, फिर भी जनता की खातिर अपने सब विशेषाधिकार, अपनी आजादी तथा जीवन तक कुर्बान किये हुए हैं। इस बात से, कात्यूशा की नज़रा मे वे विशेषतया ऊचे और सम्मानयोग्य हो उठे थे।

यो तो सभी नये साथी उसे अच्छे लगते थे, परन्तु मारीया पाब्लोव्ना के प्रति वह विशेषतया आकृष्ट हुई थी। उसकी सगति मे उसे रहना केवल अच्छा ही नही लगता था, उसके प्रति कात्यूशा का प्रेम एक विशेष प्रकार का आदरभाव तथा श्रद्धा की भावना लिये हुए था। कात्यूशा को इस बात न बहुत प्रभावित किया कि यह लडकी, जो इतनी सुन्दर है, तीन भाषाए जानती है, एक अमीर जनरल की बेटी है, एक साधारण कामगार स्त्री की तरह रहती है। जितने भी पैसे इसका अमीर भाई इसे भेजता है, सभी गरीबो को द देती है। इसके कपडे सादा ही नही, गरीबो जैसे हैं। अच्छी लगती है या बुरी, इसकी इसे तनिक परवाह नहीं। इसमे कोई शोखी नही, कोई त्रिया चरित्र नही, यह देख कर वह विशेषकर हैरान और प्रभावित हुई। मारीया पाव्लोव्ना जानती थी कि वह सुन्दर है, और यह जान कर उसके मन को खुशी भी होती थी, परन्तु मास्लोवा ने देखा कि उसके सौन्दय का जो प्रभाव पुरुषो पर पडता, उससे वह तनिक भी खुश नही होती थी। बल्कि उसे डर लगता था, और उन सभी

लोगों के प्रति उसका हृदय अत्यधिक घृणा तथा भय से भर उठता था, जो उसके प्रति प्रेम प्रदर्शित करने लगते थे। उनके पुरुष साथी यह बात जानते थे, इसलिए कभी भी उस पर अपना प्रेम प्रकट नहीं करते थे, और उसके प्रति वैसा ही व्यवहार करते थे जैसा पुरुष पुरुषों के प्रति करते हैं। परन्तु अजनबी आदमी अक्सर उसके पीछे पड़ जाते थे। लेकिन मारीया पाव्लोव्ना के शरीर में इतनी ताकत थी कि वह भली भांति ऐसे लोगों से साथ निबट लेती थी। और इस शारीरिक बल पर उसे गर्व भी था। "एक बार ऐसा हुआ" वह हंस कर सुनाया करती, 'कि मैं एक सड़क पर चली जा रही थी जब एक आदमी मेरा पीछा करने लगा। उससे पल्ला छुड़ाना मुश्किल हो गया, किसी तरह भी वह हटता नहीं था। आखिर मैंने उसे पकड़ कर ऐसा झंझोड़ा कि वह डर कर भाग गया।"

बचपन से ही उसे जनसाधारण के जीवन से प्रेम और अमीरों के जीवन से घृणा थी। वह कहा करती थी कि इसी कारण उसने क्रांति का पथ ग्रहण किया। बचपन में उसे हमेशा इस बात पर डांट पड़ती रहती थी कि वह बैठक में बैठने के बजाय नौकरों के कमरे में, रसोईघर तथा अस्तबल में अपना समय व्यतीत करती थी।

"*कार्यचियों तथा कोचवानों के साथ बात करने में मुझे मज़ा आता था, लेकिन कुलीन पुरुषों और स्त्रियों के साथ बैठ कर मैं ऊब उठती थी,*" वह कहती। "फिर जब मैं बड़ी हुई तो मैंने देखा कि हमारा जीवन बिल्कुल ग़लत रास्ते पर चल रहा है। मेरी मां मर चुकी थी और पिता के साथ मेरा कोई लगाव नहीं था, इसलिए मैं घर से निकल आयी, और अपनी एक सहेली के साथ एक फैक्ट्री में काम करने लगी। उस समय मेरी उम्र उन्नीस बरस की थी।"

जब फैक्ट्री में काम करना छोड़ा तो मारीया पाव्लोव्ना एक गांव में जा कर रहने लगी। उसके बाद वह वापस शहर में चली गयी और एक ऐसे घर में रहने लगी जिसमें पोशीदा तौर पर वे एक छापाखाना चला रहे थे। वहां पर वह गिरफ्तार हो गयी और उसे बड़ी मशक्कत की सजा मिली। इसकी चर्चा स्वयं मारीया पाव्लोव्ना ने कभी नहीं की। लेकिन कात्यूशा ने और लोगों के मुंह से सुना कि जब पुलिस उस घर की तलाशी ले चुकी तो अंधेरे में किसी क्रान्तिकारी ने गोली चला दी। मारीया पाव्लोव्ना ने सारा ज़िम्मा अपने ऊपर ले लिया और इस कारण उसे सजा दे दी गयी।

जब कात्यूशा मारीया पाव्लोव्ना को अधिक घनिष्टता से जानने लगी तो उसने देखा कि जिस किसी स्थिति म भी मारीया पाव्लोव्ना हो वह कभी भी अपने बारे मे नही सोचती थी, बल्कि सेवा करने के लिए तत्पर रहती थी, काम छोटा हो या बडा हो, वह जरूर किसी की मदद करने के लिए चिन्तित रहती थी। उसका एक साथी जो इन दिनो उनके साथ था, कहा करता था कि मारीया पाव्लोव्ना उसी तरह उपकार का काम करती है जिस तरह शिकारी शिकार खेलता है। और यह ठीक भी था। जिस तरह शिकारी हर वक्त अपने शिकार की ताक मे रहता है, मारीया पाव्लोव्ना इसी तरह उन अवसरो की ताक मे रहती थी जब वह और लोगो की सेवा कर सके। उसके सारे जीवन का यही मुख्य उद्देश्य था। और इस शिकार की उसे आदत हो गई थी, यह उसके जीवन का एकमात्र व्यापार बन गया था। और वह अपना सेवा-कार्य इतनी स्वाभाविकता से करती कि जो लोग उसके परिचित थे वे यहा तक इसके अभ्यस्त हो गये थे कि उनके हृदय मे उसके प्रति कृतज्ञता का भाव तक नही उठता था।

जब मास्लोवा राजनीतिक कैदियो के बीच आ कर रहने लगी तो मारीया पाव्लोव्ना को बुरा लगा। वह उससे दूर रहना चाहती थी। कात्यूशा ने यह देख लिया, पर साथ ही उसने यह भी देखा कि मारीया पाव्लोव्ना इन भावनाओ को दबाने की कोशिश कर रही है और इसके बाद उसका व्यवहार उसके प्रति विशेष तौर पर विनम्र और सदभावनापूर्ण हो उठा है। ऐसी असाधारण लडकी की सदभावना और विनम्रता ने मास्लोवा को ऐसा प्रभावित किया कि वह उसे अपना दिल दे बैठी। अनजान म ही उसने मारीया पाव्लोव्ना की धारणाओ को अपना लिया, और हर बात मे उसकी नकल करने लगी। दूसरी ओर मारीया पाव्लोव्ना कात्यूशा के इस गहरे अनुराग से प्रभावित हुए बिना न रह सकी और बदले म उससे प्रेम करने लगी।

और उन्हे आपस म मिलाने वाली एक और चीज भी थी—दोनो को कामुक प्रेम से घृणा थी। एक को इसलिए कि उसे इस प्रेम के भयानक अनुभव हो चुके थे, दूसरी को इसका अनुभव नही हुआ था और उसके लिए यह कोई समझ से बाहर की, बहुत ही घृणित चीज थी, मानव गौरव के लिए अपमान की बात थी।

जिन लागा के प्रभाव का मास्लोवा ने दिल खोल कर कबूल किया था उनमे से एक मारीया पाव्लोव्ना का था। इसका कारण यह था कि मास्लोवा मारीया पाव्लोव्ना से प्रेम करती थी। दूसरा प्रभाव सिमनसन का था। और इसका कारण यह था कि सिमनसन मास्लोवा से प्रेम करता था।

ससार मे सभी लोग किसी हद तक अपने और किसी हद तक दूसरो के विचारो के आधार पर जीवन निर्वाह करते है। इसी के अनुसार हम एक मनुष्य को दूसरे से अलग भी करते हैं, कि वह कहा तक अपने और कहा तक दूसरो के विचारो की प्रेरणा से रहता और काम करता है। कुछ लोगो के लिए सोचना एक मानसिक खेल के समान होना है। अधिकतर वे लोग अपनी बुद्धि का उस गतिपालक चक्र के समान इस्तेमाल करते हैं, जिसका पट्टा उतार लिया गया हो। ऐसे लोग सदा और लोगो के विचारा का प्रेरणा से काम करते है रीति रिवाज, प्रथा, कानून इत्यादि की प्रेरणा से। कुछ अन्य लोग ऐसे होते हैं जो हर काम केवल अपने विचारा से प्रेरित हो कर करते हैं। ये लोग अपने तक की आवाज को सुनते हैं और उसका आदेश मानते हैं। केवल कभी कभार ही ये और लोगा के विचारा को स्वीकार करते हैं और वह भी अच्छी तरह माप-तौल कर। सिमनसन ऐसा ही आदमी था। यह हर तथ्य का अपने मस्तिष्क की कसौटी पर परखता था और इसी के अनुसार निश्चय करता था। और निश्चय कर लेने पर उसी के अनुसार आचरण करता था।

उसका पिता सेना रसद विभाग या एक अफसर था। अभी सिमनसन स्कूल म ही पढता था जब वह इस नतीजे पर पहुचा कि उसके पिता की कमाई सच्ची मेहनत की कमाई नही है, बल्कि झूठ और बेईमानी की कमाई है, तो उसने पिता से साफ साफ कह दिया कि उन्ह यह धन जनता का दे देना चाहिए। पिता ने बेटे के परामर्श पर ध्यान ता क्या देना था, उल्टा उसे डाटा फटकारा जिस पर सिमनसन न घर छोड दिया, और पिता के पैसा से कोई सरोकार न रखा। इसी तरह उसकी यह धारणा बनी कि तत्कालीन सभी बुराइया का मूल कारण जनता का अज्ञान है। अत विश्वविद्यालय म से शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह सीधा नरोदवादिया

में जा कर शामिल हो गया, गांव के किसी स्कूल में पढ़ाने लगा। अपनी दृष्टि के अनुसार जिस बात को वह सच समझता, बेधड़क हो कर अपने विद्यार्थियों और किसानों में उसका प्रचार करता, और जिस बात को झूठ और अन्यायपूर्ण समझता उसका डट कर खुल्लमखुल्ला विरोध करता।

उसे पकड़ कर अदालत के सामने पेश किया गया।

मुकद्दमे के दौरान वह इस नतीजे पर पहुंचा कि उन जजों को उसका मुकद्दमा करने का कोई अधिकार नहीं और यह बात उसने उनको साफ़ साफ़ कह दी। जजों ने उसकी बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और मुकद्दमा करते गये। जब सिमनसन ने यह देखा तो चुप्पी साध ली और निश्चय कर लिया कि अब उनके सवालों का कोई जवाब नहीं दूंगा। जब भी वे कोई सवाल पूछते तो वह बुत बना खड़ा रहता। उसे आर्खांगेल्स्क गुबेर्निया में निर्वासित कर दिया गया। वहां पर उसने एक धार्मिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया और उसके बाद उसके सभी कर्म इसी सिद्धान्त की प्रेरणा से किये जाने लगे। सिद्धान्त की तह में यह धारणा थी कि ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु में जीव है, जड़ पदार्थ कोई नहीं। जिन चीज़ों को हम जड़ अथवा निर्जीव समझते हैं, वे वास्तव में एक विराट चेतन शरीर के अंग हैं। मनुष्य इस विराट शरीर को पूर्णतया समझने में असमर्थ है, परन्तु इसका अंग होने के नाते उसका कर्तव्य है कि वह उसके जीवन को तथा उसके सभी जीवित अंगों के जीवन को कायम रखे। इस तरह वह किसी भी जीव की हत्या को जुर्म समझता था, जंग, प्राण-दण्ड तथा हर प्रकार की हत्या का विरोध करता था, न केवल इन्सानों की हत्या का बल्कि पशु-पक्षियों की हत्या का भी। विवाह के प्रश्न पर भी उसका अपना सिद्धान्त था। उसका विश्वास था कि प्रजनन मनुष्य के जीवन की एक गौण क्रिया है, मुख्य क्रिया पहले से विद्यमान जीवित प्राणियों की सेवा करना है। इस सिद्धान्त की पुष्टि वह इस तथ्य से किया करता था कि खून में फ़ैगोसाइट पाये जाते हैं। उसकी दृष्टि में ब्रह्मचारी लोगों की स्थिति फ़ैगोसाइटों की सी है जिनका काम शरीर के दुर्बल तथा रुग्ण अंगों की सहायता करना है। ज्यों ही वह इस निश्चय पर पहुंचा तो उसने अपने जीवन को भी इसी के अनुसार ढालना शुरू कर दिया, हालांकि जवानी के दिनों में वह विलासिता में डूबा रहा था। अब वह

समयता था कि वह और मारीया पाल्नोव्ना मनुष्य के रूप मे फगोसाइटा का काम कर रहे है।

उमे वात्यशा स प्रेम था, परन्तु यह प्रेम इस धारणा का उल्लघन नही करता था, क्योकि यह निष्काम प्रेम था। उसे विश्वास था कि ऐसा प्रेम उसकी फैगोसाइट सरीखी क्रियाश्रो म बाधक नही बनेगा बल्कि प्रेरणा का काम करेगा।

वह न केवल नैतिक वल्कि व्यावहारिक प्रश्नो पर भी अपने ही ढग से निश्चय किया करता था। सभी व्यावहारिक मामलो के बारे म भी उसका एक अपना सिद्धान्त था। कितने घण्टे काम करना चाहिए, कितना आराम, भोजन कैसा होना चाहिए, पोशाक कैसी, घरो मे रोशनी का प्रबन्ध कसा होना चाहिए, और उन्हे गम कैसे रखना चाहिए—इन सब बातो के बारे मे उसने अपने नियम बना रखे थे।

यह सब होते हुए भी सिमनसन बडा शर्मीला और विनम्र स्वभाव का व्यक्ति था। हा, एक बार निश्चय कर लेने के बाद ससार की कोई भी चीज उसे डावाडोल नही कर सकती थी।

उसके प्रेम का मास्लोवा पर निश्चित तौर पर प्रभाव पडा। नारी सुलभ अन्त प्रेरणा से मास्लोवा को शीघ्र ही पता चल गया कि वह उससे प्रेम करता है। यह सोच कर कि वह उस जसे आदमी के हृदय म अपने प्रति प्रेम जागत कर पायी है, मास्लोवा अपनी नजरो म उठने लगी। यदि नेख्लूदोव ने उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखा था तो इसलिए कि वह उदारहृदय व्यक्ति है, और पीछे जो कुछ हुआ वह उसे धो देना चाहता है। लेकिन सिमनसन तो उस मास्लोवा से प्रेम करता था जो आज उसके सामने थी। और उसके प्रेम का और कोई कारण न था, केवल प्रेम ही था। मास्लोवा को ऐसा महसूस होता जैसे सिमनसन उसे विलक्षण नारी समझता है जिसमे विशेष, उच्च कोटि के नैतिक गुण हो। वह स्पष्टतया नही जानती थी कि कौन से ऐसे गुण सिमनसन को उसमे नजर आये हैं, लेकिन वह नही चाहती थी कि उसे निराशा हो, इसलिए वह अपने अन्दर उन सभी सर्वोत्कृष्ट गुणो को जगाने का भरसक प्रयास करती जिनकी वह कल्पना कर सकती थी।

यह प्रक्रिया तभी स शुरू हो गई थी जब वे अभी जेल ही मे थे। तभी एक दिन मास्लोवा ने उसे अपनी ओर घूरते हुए देखा था, घनी

भौंहों के नीचे से उसकी सद्भावनापूर्ण, गहरी नीली आखें उसे देखे जा रही थी। उस दिन मुलाकातिया स मिलन का दिन था। तब भी उसे नजर आ गया था कि यह व्यक्ति कोई असाधारण आदमी है, और वह असाधारण ढग स उसकी ओर देखे जा रहा है। उसके उलझे हुए बालो और चढी हुई भौंहो स दृढता का भास होता था, पर साथ ही चेहरे पर बच्चा की सी सरलता और सद्भावना झलक रही थी। इसके बाद मास्लोवा उसे तोम्स्क मे मिली थी जहा वह राजनीतिक कैदियो के साथ रहने लगी थी। दोनो ने एक दूसरे से कुछ नही कहा, लेकिन उनकी नजर म इस बात की स्वीकृति थी कि वे एक दूसरे का जानते हैं, और उनके लिए एक दूसरे का महत्व है। इसके बाद भी उनके बीच कोई गभीर वार्तालाप नही हुआ, परन्तु मास्लोवा ने यह महसूस किया कि जब कभी उसकी उपस्थिति म सिमासन कुछ कहता तो उसके शब्द उसी को सम्बोधित होते थे, और वह जो कुछ कहता उसी की खातिर कहता था। अपने भाव वह स्पष्टतम शब्दो मे व्यक्त करने की कोशिश किया करता था। परन्तु वास्तव मे उनकी घनिष्ठता उस समय बढने लगी थी जब सिमनसन आम मुजरिम कैदियो के साथ एक पडाव से दूसरे पडाव तक पैदल जाने लगा था।

५

पेम से चलने से पहले नेख्लूदोव केवल दो बार कात्यूशा स मिल पाया—एक बार नीजनी नोवगोरोद मे जब कैदी एक जाली लगे बड़े में ले जाये जाने वाले थे और दूसरी बार पेम मे जेल के दफ्तर में। दोनो बार मास्लोवा गुपचुप रही और उसके साथ रुखाई से पेश आयी। जब नेख्लूदोव ने पूछा कि तुम्हे किसी चीज की जरूरत तो नही, तुम आराम से तो हो, तो मास्लोवा ने कोई सीधा जवाब नही दिया, सकुचाती और टालमटोल करती रही। नेख्लूदोव का उसके व्यवहार मे उसी विरोधपूर्ण भत्सना का भास मिला जो कुछेक बार पहले उसे मिला था। उसे उदास देख कर नेख्लूदोव का मन विचलित हो उठा था, हालाकि उसकी उदासी का केवल यही कारण था कि उस समय मर्द-कैदी उसे बेहद परेशान कर रहे थे। नेख्लूदोव को डर था कि इन कठोर और भ्रष्टकारी परिस्थितियो के प्रभाववश, जिनमे मास्लोवा यात्रा कर रही थी, कही उसका मन

फिर पहले सा निराश और विक्षिप्त न हो उठे, जब वह उसके साथ रुखाई से बातें करने लगती थी, और सब कुछ भूलने के लिए तम्बाकू और शराब पीने लगती थी। पर यात्रा के इस भाग में वह मास्लोवा की कोई भी मदद नहीं कर सकता था, क्योंकि वह उसे कभी भी मिल नहीं पाता था। जब मास्लोवा राजनीतिक कैदियों के साथ रहने लगी तो नेख्लूदोव ने जाना कि उसके संशय सर्वथा निर्मूल और निराधार हैं। जिस आन्तरिक परिवर्तन को वह मास्लोवा में देखने का इतना अधिक इच्छुक हुआ करता था, अब हर भेंट में अधिकाधिक निश्चित रूप में उसे नजर आने लगा। जब तोम्स्क में वह उसे पहली बार मिला तो उसका व्यवहार फिर पहले सा ही था, जैसा मास्को से रवाना होते समय रहा था। उसने भौंहें नहीं चढ़ायीं, उसे मिलने पर घबरायी भी नहीं, बल्कि बड़ी खुश खुश और सहज भाव से मिली, नेख्लूदोव की मेहरबानियों के लिए उसका धन्यवाद किया, विशेषकर उसे इन लोगों के बीच लाने के लिए जिनमें वह उस समय रह रही थी।

टोली के साथ दो महीने तक चलते रहने के बाद मास्लोवा के आन्तरिक परिवर्तन की झलक उसके चेहरे पर भी नजर आने लगी। धूप में उसका चेहरा सँवला गया, वह दुबली हो गयी, उम्र में बड़ी लगने लगी, कनपटियों पर और मुँह के आस-पास झुर्रियाँ नजर आने लगीं। अब वह माथे पर कुण्डल नहीं बनाती थी, उसके बाल रूमाल के नीचे छिपे रहते थे। जिस ढंग से वह अपने बाल बनाती या कपड़े पहनती, उसमें अब नाज़-नखरे का लेश मात्र भी नहीं था। इस परिवर्तन को देख कर, जिसकी प्रक्रिया अब भी बराबर चल रही थी, नेख्लूदोव बेहद खुश हुआ।

नेख्लूदोव के हृदय में मास्लोवा के प्रति ऐसी भावना उठने लगी जिसका अनुभव उसे पहले कभी नहीं हुआ था। यह भावना उस कवित्वपूर्ण प्रेम भावना से पृथक थी जिसका अनुभव उसे सबसे पहले हुआ था। यह उस कामवासना से भी बहुत कुछ पृथक थी जिसका अनुभव उसे बाद में हुआ। और कर्तव्य-पूर्ति पर सन्ताप और आत्मश्लाघा की उस भावना से भी, जिसके साथ उसने मुकद्दमे के बाद उससे विवाह करने का निश्चय किया था। अब जो भावना उसके हृदय को उद्वेलित कर रही थी वह केवल अनुकम्पा और दयालुता की भावना थी। यह भावना उस समय

उसके हृदय मे उठी थी जब वह पहली बार उससे जेल म मिला था और फिर एक नयी शक्ति के साथ तब उठी थी जब हस्पताल से लौट कर उसने अपनी घृणा पर काबू पा कर उसे छोटे डाक्टर वाले कापनिक निम्म पर क्षमा कर दिया था (यह तो उसे बाद म ही पता लगा था कि किस्सा सरासर गढा था)। फरक केवल इतना था कि पहले जहा यह क्षणिक हुआ करती अब वह स्थायी रूप से हृदय म रहती थी। अब उसके प्रत्येक विचार और प्रत्येक काम मे यही अनुकम्पा और दयालुता की भावना निहित रहती थी, और यह न केवल मास्लोवा के प्रति बल्कि सभी के प्रति रहती थी।

ऐसा जान पडता था जैसे इस भावना ने प्रेम का बाध तोड डाला हो जो नेख्लूदोव की आत्मा म अभी तक बन्द पडा था। अब जिस किसी से भी नेख्लूदोव मिलता उसी के प्रति यह प्रेम छलछला उठता।

यात्रा के दौरान नेख्लूदोव का हृदय इन भावनाओ से इतना उद्वेलित हो उठा था कि वह हर किसी स प्रत्यधिक सदभावना और विनम्रता स मिलता, भले ही वह कोई कोचवान हो या काँनवाय का सिपाही, जेल का इन्स्पेक्टर हो या गवनर।

मास्लोवा के राजनीतिक कैदियो के बीच रहने के कारण नेख्लूदोव का भी परिचय बहुत से राजनीतिक कैदियो के साथ हो गया। यह परिचय पहले येकातेरीनबुग मे हुआ जहा इन्हे काफी आजादी मिली हुई थी, और वे सबके सब एक बडी कोठरी म रखे गये थे। बाद म रास्ते म उसका परिचय उन पाच पुरुषो और चार स्त्रियो के साथ हुआ जिनके सग मास्लोवा को लगा दिया गया था। इस तरह राजनीतिक निर्वासितो के साथ सम्पक मे आने से नेख्लूदोव के विचार उनके बारे म बिल्कुल बदल गये।

जब से रूस मे क्रान्तिकारी आदोलन शुरू हुआ, और विशेषकर उस पहली माच के दिन से जब अलेक्सान्द्र द्वितीय की हत्या की गयी थी नेख्लूदोव क्रान्तिकारियो को अवमान और घृणा की दृष्टि स देखता रहा था। उनकी क्रूरता को देख कर, सरकार के विरुद्ध अपने सघष मे लुक छिप कर काम करने के उनके तरीको को देख कर, पर विशेषकर उस बबरता को देख कर जिससे वे हत्याए किया करते थ, उसके हृदय म गहरी नफरत उठा करती थी। साथ ही ये लोग अपने तुल्य किसी को नही समझते और उनके स्वभाव का यह दोष भी नेख्लूदोव को अरुचिकर

लगता था। पर जब वह उन्हे समीप से जान पाया जब पता चला कि सरकार के हाथो उन्हें कितना कुछ सहन करना पडा है, तो वह समझ गया कि वे जो कुछ हैं अपनी परिस्थितिया के बनाये हुए हैं, इससे भिन्न वे नही हो सकते थे।

यह ठीक है कि तथाकथित जरायम पेशा मुजरिम कैदियो को बडी भयानक और फिजूल यातनाए पहुचाई जाती थी। फिर भी उन्हे सज़ा मिलने से पहले और बाद मे उनके साथ अदालती कारवाई तो की जाती थी, इन्साफ का दिखावा तो किया जाता था। लेकिन राजनीतिक कैदियो के साथ तो यह दिखावा भी नही किया जाता था। यह बात नेख्लदोव ने न केवल शुस्तोवा के बारे मे ही बल्कि अपने कितने ही नये परिचितो के बारे मे देखी थी। जिस तरह मछलिया को जाल मे पकड लिया जाता है, इसी तरह राजनीतिक कैदियो के साथ व्यवहार किया जाता था। पहले जो कुछ भी जाल मे फस जाय उसे खीच कर किनारे ले आते है, बाद मे बडी बडी मछलियो को, जिनकी ज़रूरत होती है चुन चुन कर अलग कर दिया जाता है, और छोटी छोटी मछलिया को वही किनारे पर गलने-सडने के लिए छोड दिया जाता है। सरकार सैकडो ऐसे लोगो को पकड कर जेल मे फेंक देती जो प्रत्यक्षत निर्दोष होते और जिनसे कोई खतरा नही पहुच सकता था। फिर साल-दर साल तक वे वही पडे रहते, कुछ तपेदिक के शिकार हो जाते कुछ पागल हो जाते कुछ आत्महत्या कर लेते। उन्हे आज़ाद कर देने की अधिकारियो को कोई प्रेरणा नही होती थी। वे समझते थे कि यदि यही पडे रहे तो कभी किसी अदालती जाच के समय किसी नुक्ते को साफ करने मे इनसे मदद मिलेगी। सरकार की दृष्टि से भी ये लोग अक्सर निर्दोष होते थे। लेकिन इनका भाग्य पुलिस या खुफिया पुलिस के किसी अफसर, किसी सरकारी वकील किसी मैजिस्ट्रेट, गवनर या मन्त्री की सनक पर निर्भर रहता। उसका मन आये, या वक्त हो तो इन्हे छोड दे वरना वही पडे रहे। इनमे से किसी अफसर का मन कभी ऊब उठा, या शोहरत हासिल करने की ख्वाहिश उठी तो कुछ लोगो को गिरफ्तार करने का हुक्म दे दिया। फिर जैसा मन हुआ, या जैसे ऊपर के अधिकारियो का मन हुआ इन्हे जेल मे फेंक दिया या छोड दिया। ऊपर के अधिकारी भी इसी तरह की प्रेरणा के अनुसार या किसी मन्त्री के साथ अपने सम्बन्ध के प्रभाववश लोगो

उसके हृदय में उठी थी जब वह पहली बार उससे जेल में मिला था और फिर एक नयी शक्ति के साथ तब उठी थी जब हस्पताल से लौट कर उसने अपनी घृणा पर काबू पा कर उसे छोटे डाक्टर वाले काल्पनिक किस्से पर क्षमा कर दिया था (यह तो उसे बाद में ही पता चला था कि किस्सा सरासर झूठा था)। फरक केवल इतना था कि पहले जहां यह क्षणिक हुआ करती अब वह स्थायी रूप से हृदय में रहती थी। अब उसके प्रत्येक विचार और प्रत्येक काम में यही अनुकम्पा और दयालुता की भावना निहित रहती थी, और यह न केवल मास्लोवा के प्रति बल्कि सभी के प्रति रहती थी।

ऐसा जान पड़ता था जैसे इस भावना ने प्रेम का बांध तोड़ डाला हो जो नेख्लूदोव की आत्मा में अभी तक बन्द पड़ा था। अब जिस किसी से भी नेख्लूदोव मिलता उसी के प्रति यह प्रेम छलछला उठता।

यात्रा के दौरान नेख्लूदोव का हृदय इन भावनाओं से इतना उद्वेलित हो उठा था कि वह हर किसी से अत्यधिक सदभावना और विनम्रता से मिलता, भले ही वह कोई कोचवान हो या कॉनवाय का सिपाही, जेल का इंस्पेक्टर हो या गवर्नर।

मास्लोवा के राजनीतिक कैदियों के बीच रहने के कारण नेख्लूदोव का भी परिचय बहुत से राजनीतिक कैदियों के साथ हो गया। यह परिचय पहले येकातेरीनबुर्ग में हुआ जहां इन्हें काफी आजादी मिली हुई थी, और वे सबके सब एक बड़ी कोठरी में रखे गये थे। बाद में रास्ते में उसका परिचय उन पांच पुरुषों और चार स्त्रियों के साथ हुआ जिनके संग मास्लोवा को लगा दिया गया था। इस तरह राजनीतिक निर्वासितों के साथ सम्पर्क में आने से नेख्लूदोव के विचार उनके बारे में बिल्कुल बदल गये।

जब से रूस में क्रान्तिकारी आन्दोलन शुरू हुआ, और विशेषकर उस पहली मार्च के दिन से जब अलेक्सान्द्र द्वितीय की हत्या की गयी थी, नेख्लूदोव क्रान्तिकारियों को अपमान और घृणा की दृष्टि से देखता रहा था। उनकी क्रूरता को देख कर, सरकार के विरुद्ध अपने संघर्ष में लुक छिप कर काम करने के उनके तरीकों को देख कर, पर विशेषकर उस बर्बरता को देख कर जिससे वे हत्याएं किया करते थे, उसके हृदय में गहरी नफरत उठा करती थी। साथ ही ये लोग अपने तुल्य किसी को नहीं समझते और उनके स्वभाव का यह दोष भी नेख्लूदोव को अरुचिकर

लगता था। पर जब वह उन्हें समीप से जानने लगा तब पता चला कि सरकार के हाथों उन्हें कितना कुछ सहन करना पड़ा है तो वह समझ गया कि वे जो कुछ हैं अपनी परिस्थितियों के बनाये हुए हैं, उससे भिन्न वे नहीं हो सकते थे।

यह ठीक है कि तथाकथित जरायम पेशा मजरिम कैदियों को बड़ी भयानक और फिजूल यातनाएं पहुंचाई जाती थीं। फिर भी उन्हें सजा मिलने से पहले और बाद में उनके साथ अदालती कार्रवाई तो की जाती थी, इंसाफ का दिखावा तो किया जाता था। लेकिन राजनीतिक कैदियों के साथ तो यह दिखावा भी नहीं किया जाता था। यह बात नरदेव ने न केवल शुस्तावा के बारे में ही बल्कि अपने जितने इन नये परिचितों के बारे में देखी थी। जिस तरह मछलियों को जाल में पकड़ लिया जाता है इसी तरह राजनीतिक कैदियों के साथ व्यवहार किया जाता था। पहले जो कुछ भी जाल में फंस जाय उसे खींच कर किनारे ले आते हैं बाद में बड़ी बड़ी मछलियां को जिनकी जरूरत होती है चुन चुन कर अलग कर दिया जाता है, और छोटी छोटी मछलियों को वहीं किनारे पर गलने-सड़ने के लिए छोड़ दिया जाता है। सरकार सैकड़ों ऐसे लोगों को पकड़ कर जेल में फेंक देती जो प्रत्यक्षत निर्दोष होते और जिनसे कोई खतरा नहीं पहुंच सकता था। फिर साल-दर-साल तक वे वहीं पड़े रहते, कुछ तपेदिक के शिकार हो जाते कुछ पागल हो जाते कुछ आत्महत्या कर लेते। उन्हें आजाद कर देने की अधिकारियों को कोई प्रेरणा नहीं होती थी। वे समझते थे कि यदि यहीं पड़े रहे तो कभी किसी अदालती जांच के समय किसी नुकते को साफ करने में इनसे मदद मिलेगी। सरकार की दृष्टि से भी ये लोग अक्सर निर्दोष होते थे। लेकिन उनका भाग्य पुलिस या खुफिया पुलिस के किसी अफसर किसी सरकारी वकील किसी मजिस्ट्रेट, गवर्नर या मन्त्री की सनक पर निर्भर रहता। उसका मन आये, या वक्त हो तो इन्हें छोड़ दे वरना वहीं पड़े रहें। इनमें से किसी अफसर का मन कभी ऊब उठा या शोहरत हासिल करने की ख्वाहिश उठी तो कुछ लोगों को गिरफ्तार करने का हुक्म दे दिया। फिर जैसा मन हुआ, या जैसे ऊपर के अधिकारियों का मन हुआ इन्हें जेल में फेंक दिया या छोड़ दिया। ऊपर के अधिकारी भी इसी तरह की प्रेरणा के अनुसार या किसी मन्त्री के साथ अपने सम्बन्ध के प्रभाववश लोगों

को दुनिया के दूसरे कोने म निवासित कर के भेज देते, कद-तनहाई म डाल देते, साइबेरिया मे भेज देते, कडी मशक्कत की, या मौत की मज़ा दे देते, या फिर किसी महिला के कहने पर उन्ह रिहा कर देते।

उनके साथ वैसा ही सलूक किया जाता था जैसा जग म दुश्मनो के साथ किया जाता है। और यह स्वाभाविक ही था कि जवाब म व भी उन्ही हथियारो का प्रयोग करे जिनका प्रयोग उनके खिलाफ किया जाता था। जग के दिनो मे एक ऐसा लोकमत उठ खडा होता है जो फौजी लोगो की नजरो से उनके भयानक कृत्यो का दोष छिपाये रहता है। छिपाता ही नही, उनके कृत्यो को वीरता के कारनामे कह कर पुकारता है। इसी तरह राजनीतिक मुजरिम भी, अपने जैसे लोगो के बीच रहते हुए इसी प्रकार के लोकमत से घिरे रहते है। खतरे का सामना करते हुए, अपनी आजादी और जीवन तक को जोखिम मे डाल कर किये गये इनके कुकृत्य उन्ह बुरे तो दूर, गौरवपूर्ण तक प्रतीत होते थे। इसी मे नेख्लूदोव के लिए उस आश्चर्यजनक स्थिति की व्याख्या हो सकती थी कि ऐसे विनम्र स्वभाव लोग भी जो किसी को यातना पहुचाना तो दूर रहा, किसी जीव को दुखी देख तक नही सकते थे, चुपचाप हत्या करने पर तैयार हो जाते है। उनमे से लगभग सभी यह मानते थे कि किसी किसी मौके पर हत्या करना उचित और वैध होता है, जैसे आत्मरक्षा के लिए, या जनकल्याण के अपने महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए। यदि क्रातिकारी अपने उद्देश्य को और तदनरूप अपने आपको इतना महत्व देते थे तो इसका कारण यही था कि सरकार उनके कामो को महत्व देती थी, और उनके लिए उन्ह जालिमाना सजाए देती थी। जो यातनाए इन्ह पहुचाई जाती था, उन्ह सहन करने के लिए यह जरूरी था कि ये लोग अपने आपको असाधारण कोटि के माने।

जब नेख्लूदोव ने उन्हे ज्यादा नजदीक से देखा तो उसे विश्वास हो गया कि ये लोग न तो नीच है जैसा कि कुछ लोग इन्ह समझते हैं, और न ही ऐसे वीर हैं जैसे कि कुछ और लोगो की इनके बारे म धारणा है। ये लोग भी साधारण लोगो की ही तरह है जिनमे अच्छे, बुरे और मध्यम कोटि के, सभी तरह के व्यक्ति पाये जाते हैं। कुछ लोगो ने तो क्रान्ति का पथ इसलिए अपनाया कि वे सचमुच, बडी ईमानदारी से यह समझते थे कि मौजूदा बुराइयो के विरुद्ध सघर्ष करना उनका कर्तव्य है। परन्तु

का एक धनी जमींदार था। अभी वह बच्चा ही था जब उसके पिता का देहान्त हो गया। मा-बाप का वह इकलौता बेटा था। पिता की मृत्यु के बाद मा ने उसे पाल कर बड़ा किया। क्रिलत्सोव पढ़ाई म अच्छा था और पहले स्कूल मे और बाद म विश्वविद्यालय म, बड़ी सुगमता से वह जमात चढ़ता रहा। विश्वविद्यालय की परीक्षा म वह गणित म सभी छात्रो म पहले नम्बर पर आया। विश्वविद्यालय की ओर से उसे वज़ीफा भी दिया गया कि वह विदेश मे जा कर अपनी पढाई जारी रखे। लेकिन वह बहुत देर तक किसी निश्चय पर नही पहुच सका। उन दिनो वह एक लड़की से प्रेम करता था, और उससे विवाह करने और कृषि प्रबन्ध मे भाग लेने के सपने देखा करता था। वह हर काम मे हाथ डालना चाहता था, इसी लिए किसी एक काम को अपनाने का निश्चय नही कर सका। उन्ही दिनो उसके कुछ सहपाठियो ने उससे कुछ पैसे मागे। कहने लगे कि जन कल्याण के किसी काम के लिए जरूरत है। उसे मालूम था कि यह रुपया क्रान्तिकारी काम के लिए मागा जा रहा है, जिसमे उस समय उसकी कोई रुचि नही थी। लेकिन उसने पैसे दे दिये, कुछ साथी होने के नाते, और कुछ दम्भ मे ताकि कोई यह न सोचे कि वह इन कामो के लिए पैसे देने से डरता है। बाद म, जिन लोगो ने पैसे लिये थे, वे पकड़े गये। उन्ही के पास से एक पुर्ज़ा मिला जिससे अधिकारियो को पता चल गया कि पैसे क्रिलत्सोव ने दिये थे। उसे गिरफ्तार कर लिया गया, पहले उसे थाने मे ले गये और बाद मे जेलखाने म डाल दिया गया।

"जेल मे हमारे साथ कोई खास सख्ती नही बरती जाती थी," अपनी कहानी जारी रखते हुए क्रिलत्सोव ने कहा। वह घुटनो पर कोहनियां रखे, अपने सोने वाले ऊंचे तख्ते पर बैठा था, छाती अन्दर को धसी हुई थी, और आखें बीमारी की उत्तेजना के कारण चमक रही थी। "हम एक दूसरे से बात कर सकते थे—न केवल दीवारो को खटखटा कर ही बल्कि अन्य तरीको से भी—बरामदो मे घूम फिर सकते थे, खाने पीने की चीज़ें और तम्बाकू एक दूसरे से बांट सकते थे, यहा तक कि शाम के वक्त मिल कर गाया भी करते थे। मेरी आवाज़ बड़ी सुरीली हुआ करती थी। मुझे यदि कोई चिन्ता थी तो अपनी मा की, वह मेरे कारण बेहद दुखी थी। यह न होता तो वहा सब कुछ ठीक चल रहा था, यहा तक कि वहा रहने मे मुझे मज़ा आ रहा था। यही पर मेरा परिचय

सुप्रसिद्ध पेत्रोव से तथा अन्य लोगो से हुआ। बाद मे पेत्रोव ने काच का एक टुकडा ले कर आत्महत्या कर ली थी। यह घटना किने मे घटी थी। परन्तु उस वक्त तक मैं क्रान्तिकारी नही बना था। मेरा परिचय अपने दो पडोसिया से भी हुआ जो मेरी ही कोठरी के नजदीक रहन थे। उन दोना को एक ही जुर्म मे पकडा गया था दाना के पास से पारिश घोषणापत्र बरामद हुए थे। और दोना पर इस अपराध के लिए मुकद्दमा चलाया गया था कि रेलवे-स्टेशन की ओर जाते हुए उन्होन कानवाय म से भाग निकलने की कोशिश की थी। उनमे से एक पालैंड का रहने वाला था, जिसका नाम लोजीन्स्की था, और दूसरा यहूदी था उसका नाम रोज़ोव्स्की था। हा। यह रोज़ोव्स्की बच्चा ही था। कहा करता था कि मेरी उम्र सत्तरह बरस की है, लेकिन लगता पन्द्रह बरस का था। दुबला पतला सा लडका, छोटा सा कद, बडा फुर्तीला काली चमकती आख थी उसकी। और अधिकाश यहूदियो की तरह सगीत का बडा शोकीन था। अभी उसकी आवाज भारी होने लगी थी, लेकिन फिर भी वह बहुत अच्छा गाता था। जब उन पर मुकद्दमा चला तो मैंने दोना को अदालत म लिये जाते हुए देखा। सुबह का वक्त था जब उन्हे ले जाया गया। शाम को वे लौट कर आये और आ कर कहने लगे कि उन्हे मौत की सजा दी गयी है। किसी को ख्याल नही था कि यह सजा मिलेगी। इतना मामूली सा तो उनका जुर्म था। यही न कि कानवाय स उन्होन भागने की कोशिश की थी। किसी को चोट तक उन्होने नही पहुचायी थी। और फिर रोज़ोव्स्की तो बिल्कुल बच्चा था। उसे फासी लगाना तो कितनी अस्वाभाविक सी बात लगती है। जेल मे हम सबने यही समझा कि उन्हे केवल डराने के लिए धमकी सी दी गयी है और यह सजा कभी भी पक्की नही की जायेगी। पहले तो हम बहुत उत्तेजित हुए थे लेकिन बाद मे हमने अपने को ढाढस दिया और चुप हो गये और जीवन पहले की सी गति से चलने लगा। हा। एक दिन शाम को चौकीदार मेरी कोठरी के दरवाजे के पास आया और बडी दबी भेद भरी आवाज मे कहने लगा कि बढई आ गये हैं और फासी का तख्ता तैयार कर रहे ह। पहले तो उसकी बात मेरी समझ मे नही आयी। कौन सा फासी का तख्ता? पर चौकीदार इतना उत्तेजित था कि मैं शीघ्र ही समझ गया कि वह हमारे ही दो लडको के लिए होगा। मेरी इच्छा हुई कि दीवार खटखटा

का एक धनी जमींदार था। अभी वह बच्चा ही था जब उसके पिता का देहान्त हो गया। मा-बाप का वह इकलौता बेटा था। पिता की मृत्यु के बाद मा ने उसे पाल कर बडा किया। क्रिलत्सोव पढाई में अच्छा था और पहले स्कूल मे और बाद मे विश्वविद्यालय मे, बडी सुगमता से वह जमातें चढता रहा। विश्वविद्यालय की परीक्षा मे वह गणित के सभी छात्रो मे पहले नम्बर पर आया। विश्वविद्यालय की ओर से उसे वजीफा भी दिया गया कि वह विदेश मे जा कर अपनी पढाई जारी रखे। लेकिन वह बडी देर तक किसी निश्चय पर नही पहुच सका। उन दिनो वह एक लडकी से प्रेम करता था, और उससे विवाह करने और कृषि-प्रबन्ध मे भाग लेने के सपने देखा करता था। वह हर काम मे हाथ डालना चाहता था, इसी लिए किसी एक काम को अपनाने का निश्चय नही कर सका। उन्ही दिनो उसके कुछ सहपाठियो ने उससे कुछ पैसे मागे। कहने लगे कि जन कल्याण के किसी काम के लिए जरूरत है। उसे मालूम था कि यह रुपया क्रान्तिकारी काम के लिए मागा जा रहा है, जिसमे उस समय उसकी कोई रुचि नही थी। लेकिन उसने पैसे दे दिये, कुछ साथी होने के नाते, और कुछ दम्भ मे ताकि कोई यह न सोचे कि वह इन कामो के लिए पैसे देने से डरता है। बाद मे, जिन लोगो ने पैसे लिये थे, वे पकडे गये। उन्ही के पास से एक पुर्जा मिला जिससे अधिकारियो को पता चल गया कि पैसे क्रिलत्सोव ने दिये थे। उसे गिरफ्तार कर लिया गया, पहले उसे थाने मे ले गये और बाद मे जेलखाने मे डाल दिया गया।

"जेल मे हमारे साथ कोई खास सख्ती नही बरती जाती थी," अपनी कहानी जारी रखते हुए क्रिलत्सोव ने कहा। वह घुटनो पर कोहनिया रखे, अपने सोने वाले ऊचे तख्ते पर बैठा था, छाती अन्दर को धसी हुई थी, और आखें बीमारी की उत्तेजना के कारण चमक रही थी। "हम एक दूसरे से बाते कर सकते थे—न केवल दीवारो को खटखटा कर ही बल्कि अन्य तरीको से भी—बरामदे मे घूम फिर सकते थे, खाने-पीने की चीजें और तम्बाकू एक दूसरे से बाट सकते थे, यहा तक कि शाम के वक्त मिल कर गाया भी करते थे। मेरी आवाज बडी सुरीली हुआ करती थी। मुझे यदि कोई चिन्ता थी तो अपनी मा की, वह मेरे कारण बेहद दुखी थी। यह न होता तो वहा सब कुछ ठीक चल रहा था, यहा तक कि वहा रहने मे मुझे मजा आ रहा था। यही पर मेरा परिचय

कर अपने साथियो को वता दू लेकिन मैं रुक गया, इस डर से कि वे दानो सुन लेगे। हमारे साथी भी चुप थे। ज़ाहिर था कि खवर सव तक पहुच चुकी है। उस शाम वरामदे मे और सभी कोठरिया मे मौत का सा सन्नाटा था। न किसी ने दीवार खटखटायी, न कोई गीत गाया। दस वजे चौकीदार ने आ कर बताया कि मास्को से एक जल्लाद आ गया है। यह कह कर वह चला गया। मैं उसे वापस वुलाने लगा। सहसा मुझे राजोव्स्की की आवाज आयी, वह वरामदे की दूसरी ओर से मुझे पुकार कर कह रहा था—'क्या वात है? उसे क्यो वुला रहे हो?' जवाव म मैंने उसे कुछ कहा कि मेरे लिए तम्बाकू ला द, लेकिन जान पडता था जैस वह भाप गया है, और वह पूछन लगा—'आज हम गा क्यो नही रहे? दीवारा पर खटखट क्यो नही करते?' मुझे याद नही मैंने उसे क्या कहा, और पीछे हट गया ताकि उससे वाते न करनी पडें। वडी भयानक रात थी वह। रात भर मेरे कान एक एक शब्द का सुनते रहे। सुवह होने जा रही थी, जब सहसा आवाज़े आने लगी। दरवाज़े खुलन लगे और कोई चला आ रहा था—एक नही, बहुत स आदमी आ रहे थे। मैं दरवाज़े के छेद के पास जा पहुचा और आख लगा कर वाहर देखन लगा। बरामदे म एक लैम्प जल रहा था। पहले इन्स्पेक्टर आया। गठीले वदन का आदमी था और साधारणतया वडा दृढ और आत्मविश्वास स भरा लगता था। लेकिन आज उसका चेहरा वेहद पीला पड गया था, आखे नीची किये हुए था, ऐसा लगता था जैसे डरा हुआ हो। उसके पीछे पीछे उसका सहायक आया, उसका चेहरा उतरा हुआ था लेकिन उस पर दृढता थी। और सबके पीछे पीछे फौजी सिपाही थे। मेरे दरवाज़ के पास से हो कर व साथ वाली कोठरी के सामने खडे हो गये। फिर मैंने सुना, सहायक इन्स्पेक्टर कह रहा था—'लोज़ोव्स्की उठो और साफ कपडे पहन कर तैयार हो जाओ।' उसकी आवाज़ अजीव सी हो रही थी। इसके वाद दरवाज़ा चरचरा कर खुलन की आवाज़ आयी। वे उसकी कोठरी के अन्दर चले गये। फिर लाज़ोव्स्की व कदमा की आवाज़ आयी, वह वरामद के दूसरी ओर जा रहा था। मैं केवल इन्स्पेक्टर का देख पा रहा था। उसका चेहरा पीला हो रहा था, और वह कभी अपन कोट के वटन खालता कभी उन्हे वन्द करता, और कभी विचकाता। हा। वह फिर रास्ते म से हट गया मानो डर गया हो।

वह लोजीन्स्की के रास्ते मे से हट गया था, जो मेरे दरवाजे के सामने आ गया था। बडा खूबसूरत युवक था, वैसा ही जसे पोलैंड के लाग होते है, चौडा, खला माथा, सिर पर घुघराले बाल, और सुदर नीली आखे। खिला हुआ चेहरा, इतना ताज़ा और स्वस्थ! वह ऐन मेरे दरवाज़े के छेद के सामने खडा था, इसलिए मुझे उसका सारा का सारा चेहरा नजर आ रहा था। पीला जद चेहरा, पतला और भयानक। 'त्रित्सोव, क्या तुम्हारे पास सिगरेट है?' मैं उसे सिगरेट देना चाहता था लेकिन सहायक इस्पेक्टर ने झट से अपना सिगरेट-केस निकाल कर उसके सामने बढा दिया। उसने एक सिगरेट लिया, फिर सहायक ने दियासलाई जलाई। लोजीन्स्की सिगरेट सुलगा कर कश लेने लगा। मुझे ऐसा लगा जैसे वह कुछ सोचने लगा है। फिर सहसा वह बोलने लगा, मानो उसे कुछ याद आ गया हो—'यह जुल्म है, अन्याय है। मैंने कोई जुम नही किया। मैने ' उसके गोरे गोरे तरुण गले म कोई चीज़ कापती हुई मुझे नजर आयी, और मैं उस पर से अपनी आखें नही हटा सका। फिर वह चुप हो गया। हा। उसी वक्त मैंने सुना कि रोजोव्स्की चिल्लाने लगा है। उसकी आवाज़ ऊची और यहूदियो जैसी थी। लोज़ीन्स्की ने सिगरेट फेंक दिया और दरवाजे के सामने से हट गया। अब वहा पर, मेरे छेद के सामने राजोव्स्की आया। बच्चा का सा उसका चेहरा लाल हो रहा था और नमी से तर था और स्वच्छ काली आखें चमक रही थी। उसने भी धुले हुए कपडे पहन रखे थे। पतलून बहुत चौडी थी जिसे वह बार बार खीच कर ऊपर उठाता। सिर से पाव तक उसका शरीर काप रहा था। उसका चेहरा कितना दयनीय लग रहा था। अपना मुह मेरे छेद के पास ले जा कर बोला—'त्रित्सोव, यह ठीक है न कि डाक्टर ने मुझे खासी की दवाई लिख कर दी है? मेरी तबीयत अच्छी नही। मुझे कुछ देर और दवाई पीने की ज़रूरत है।' किसी न कोई जवाब नही दिया, और वह प्रश्नसूचक नेत्रो से कभी मेरी ओर, कभी इस्पेक्टर की ओर देखने लगा। उसके इस वाक्य का मतलब कभी भी मेरी समझ मे नही आया। हा। सहसा इस्पेक्टर न कठोर मुद्रा बनायी, और फिर पहले सी चीखती आवाज़ म बोला—'यह क्या मज़ाक है? चलो।' जान पडता था जैसे राज़ोव्स्की को कुछ भी मालूम नही था कि उसके साथ क्या होन वाला है। बरामदे म वह सबसे आगे आगे तेज़ तेज़ कदम रखते हुए जाने लगा, यहा तक

कि भागने लगा। पर फिर वह पीछे हट गया और मुझे उसके चीखने और चिल्लाने की आवाज़ आने लगी। फिर बहुत से लागा के कदमा की आवाज और भीड का सा शोर सुनाई दिया। इस पर उसकी चीखोपुकार और राना। धीरे धीरे आवाज़ दूर होन लगी, और अन्त मे दरवाज़ा बन्द होने की आवाज आयी और सब चुप हो गया हा। दोनो का फासी पर चढा दिया गया। दानो का रस्सी मे गला घोट दिया गया था। एक चौकीदार ने—यह कोई दूसरा चौकीदार था—यह सारा काड दखा। उसने मुझे बताया कि लोज़ोन्स्की ने कोई प्रतिराध नही किया, लेकिन रोज़ोव्स्की वडी देर तक सघप करता रहा, यहा तक कि उन्हे उसे घसाट कर फासी के तख्ते पर चढाना पडा और जवदस्ती उसका सिर फन्दे मे डालना पडा। हा। यह चौकीदार कुछ कुछ वेवकूफ था। कहने लगा—'जनाव, मुझे तो वताया गया था कि वह बडा भयानक नजारा होगा, लेकिन वह ता बिल्कुल भयानक नही था। जब उन्हे फासी पर लटका दिया गया तो, सिफ दो बार उन्होने कन्धे बिचकाये—इस तरह—वस।' उसने मुझे नकल उतार कर दिखाया कि किस भाति उनके कन्धे छटपटाये थे। 'फिर जल्लाद ने रस्सी को थोडा सा खीचा ताकि फदा और कस जाय, और बस, खेल खत्म हो गया, इसके बाद वे नही हिले-डुले।'"

और क्रिलत्सोव ने चौकीदार के शब्दो को दोहरा कर कहा—"बिल्कुल भयानक नही था।" और मुस्कराने की कोशिश की लेकिन फफक फफक कर रोने लगा। इसके बाद वडी दर तक वह चुप बैठा रहा, उसके लिए सास लेना कठिन हो रहा था। बार बार उसे रुलाई आ जाती जिसे वह दबाने की चेष्टा करता।

"उस वक्त से मैं क्रातिकारी बना, हा," जब वह कुछ शात हुआ तो उसने कहा। उसके बाद कुछेक शब्दा मे ही उसने अपनी कहानी समाप्त कर दी।

वह नरोदवादी पार्टी का सदस्य था, और उपद्रवकारी दल का मुखिया तक था, जिसका काम आतक फैलाना था ताकि सरकार अपने आप अपनी सत्ता जनता के हवाले कर दे। इसी उद्देश्य से सम्बधित काम के सिलसिले मे वह पीटसवग, कीयेव, ओदस्सा, तथा विदश म घूमा करता था, और जहा जाता कामयाब होता था। एक आदमी न, जिस पर उसे पूरा भरोसा था, उसके साथ दगा किया। उसे गिरफ्तार कर लिया गया, फिर

मुकद्दमा चला और दो साल तक जेल मे रखे जाने के बाद उसे फासी की सजा दी गई। लेकिन बाद मे सजा कम कर दी गई और फासी की जगह उसे उम्र भर कडी मशक्कत की सजा दे दी गयी।

जेल मे ही उसे तपेदिक का रोग हो गया। जिन स्थितियो मे वह अब रह रहा था इनमे वह छ महीने से अधिक नही जी पायेगा। यह वह जानता था लेकिन उसे अपने किये पर पछतावा नही था। वह कहता कि अगर मुझे फिर इन्सान का जीवन मिले तो मैं उसे उन कारणो का नाश करने मे लगा दूगा जिनसे ऐसी ऐसी चीजे पैदा होती है जिन्हे मैंने अपनी आखो से देखा है।

इस आदमी की कहानी से तथा उसके साथ घनिष्ठता होने पर, नेख्लूदोव को बहुत सी बातो का स्पष्टीकरण हुआ जिन्हे वह पहले ठीक तरह नही समझ पाया था।

७

जिस रोज एक पडाव पर बच्चे वाली घटना हुई थी और कॉनवाय अफसर ने कैदियो से बुरा भला कहा था, उस रोज नेख्लूदोव ने एक सराय मे रात बितायी और प्रात देर से उठा। उठने के बाद वह बडी देर तक चिट्ठिया लिखता रहा, इस ख्याल से कि जब आगे किसी बडे शहर मे पहुचेगा तो वहा उन्हे डाक मे डाल देगा। इस कारण वह सराय मे से काफी देर से रवाना हुआ और उस रोज वह रास्ते मे ही कैदियो के कारवा को नही पकड सका, बल्कि अगले पडाव पर उस वक्त पहुचा जब शाम पड चुकी थी और अधेरा होने लगा था।

वह एक सराय मे ठहरा जिसकी मालकिन बेहद मोटी गोरी गर्दन वाली अधेड उम्र की भरी-पूरी औरत थी। नख्लूदोव ने अपने कपडे सुखाये और चाय पीने के लिए एक कमरे मे गया। कमरा साफ-सुथरा और बहुत सी तस्वीरो और देव प्रतिमाओ से सजा था। चाय पीने के बाद वह जल्दी से निकल कर बाहर आ गया ताकि अफसर से मिल कर कात्यूशा से भेंट करने की इजाजत ले सके।

पिछले छ पडावो पर उसे कात्यूशा से भेंट करने की इजाजत नही मिली थी। हालाकि कई बार अफसर बदलते रहे थे फिर भी किसी अफसर ने नेख्लूदोव को पडाव के अन्दर घुसने नही दिया। इस तरह एक सप्ताह

से भी अधिक समय से वह कात्यूशा से नहीं मिल पाया था। इस कठोरता का कारण यह था कि जेलखाने का कोई बडा अफसर उस रास्ते से गुजरने वाला था। अब वह अफसर, बिना टोली की ओर आख तक उठाये, उस रास्ते से चला जा चुका था, इसलिए नेख्लूदोव का आस बधन लगी थी कि जिस अफसर ने आज प्रात टोली की कमान अपने हाथ म ली है वह उसे कैदियो से मिलने देगा, जिस तरह पहले अफसर मिलने दिया करते थे।

पडाव गाव के दूसरे सिरे पर था। सराय की मालकिन ने अपनी घोडा गाडी नेख्लूदोव को पेश कर दी कि उसमे बैठ कर वह पडाव तक चला जाय, लेकिन नेख्लूदोव को पैदल जाना अधिक पसन्द था। एक हट्टा कट्टा, चौडे कधो वाला मजदूर उसे रास्ता दिखाने के लिए साथ हो लिया। मजदूर ने खूब ऊचे ऊचे घुटनो तक के बूट पहन रखे थे, जिन्हे उसने हाल ही म तारकोल से रोगन किया था, जिस कारण उनसे तारकोल की तीखी गध आ रही थी। गहरी धुध छायी थी, जिस कारण आसमान नजर नही आ रहा था। अधेरा इतना था कि यदि वह युवा मजदूर तीन कदम भी आगे निकल जाता तो वह नजर नहीं आता था, केवल उसी वक्त नजर आता था जब किसी खिडकी मे से रोशनी उस पर पडती। लेकिन उसके बोझल बूटो की आवाज बराबर आ रही थी जो गहरे, चिपचिपे कीच मे छप छप करते आगे बढ रहे थे।

गिरजे के सामने खुला मैदान था। मैदान लाघ कर नेख्लूदोव लम्बी सडक पर आ गया। सडक के दोनो तरफ मकानो की खिडकिया थी जिनकी रोशनी अधेरे मे खूब चमक रही थी। अपने पथ दर्शक के पीछे पीछे चलता हुआ नेख्लूदोव गाव के बाहर जा पहुचा, जहा पर घुप्प अधेरा था। परन्तु यहा पर भी पडाव घर के सामने लैम्प लगे थे जिनकी रोशनी धुध मे से छन छन कर आ रही थी। ज्यो ज्यो वे नजदीक जाने लगे, रोशनी के लाल लाल पुज आकार म बडे होने लगे। आखिर पडाव घर की बाड के डण्डे, बाहर पहरे पर इधर-उधर टहलता हुआ सन्तरी, एक खम्भा जिस पर काली-सफेद धारिया पुती थी, और सतरी की चौकी नजर आने लगे। जब वे नजदीक पहुचे तो सतरी ने हमेशा की तरह आवाज लगाई—"कौन है?" फिर जब देखा कि आगतुक बिल्कुल अजनबी हैं तो इतनी कडाई से पेश आया कि इन्हे बाड के नजदीक तक खडा हो

कर इन्तज़ार करने की इजाजत नही देता था। पर इस कडाई का नेम्लूदाव के गाइड पर कोई असर नही हुआ।

"क्या बात है यार, इतनी सख्ती क्या करते हो? तुम जा कर अपने अफसर का बुला लाओ, हम यहा खडे इन्तज़ार करते है।"

सन्तरी ने कोई जवाब नही दिया, परन्तु फाटक मे से चिल्ला कर अदर कुछ कहा और फिर इस चौडे कधो वाले युवा मजदूर की ओर घूर घूर कर देखने लगा जो अब हाथ मे लकडी की एक खपची लिये लैम्प की रोशनी मे नेख्लदोव के बूटो पर से कीच साफ करने लगा था। बाड के पीछे से औरतो और मर्दो की आवाजे सुनाई दे रही थी। लगभग तीन मिनट के बाद किसी चीज़ के खडखडाने की आवाज़ आयी, फाटक खला, और एक सॉर्जेंट, कधे पर अपना भारी काट डाले अधेरे मे से निकल कर लैम्प की रोशनी मे आया और पूछने लगा कि क्या काम है। सॉर्जेट इतनी कठोरता से पेश नही आया जितनी कठोरता से सन्तरी पेश आया था, लेकिन वह सवाल पर सवाल पूछन लगा। तुम कौन हो, अफसर से क्यो मिलना चाहते हो, तुम्ह क्या काम है, इत्यादि। जाहिर था कि उसे यहा से बख्शीश पाने की उम्मीद होने लगी थी और वह इस मौके को हाथ से नही जाने देना चाहता था। नेख्लूदोव ने कहा कि वह एक खास काम से आया है और सॉर्जेंट का ज़रूर खुश कर देगा, और क्या सार्जेंट मेहरबानी कर के अफसर के पास उसका एक पुर्ज़ा ले जा सकता है? सॉर्जेंट ने पुर्ज़ा हाथ मे लिया, सिर हिलाया और वहा से चला गया।

कुछ देर बाद फाटक म फिर खडखड हुई और स्त्रिया टोकरिया, डिब्बे, जग, बोरे इत्यादि उठाए बाहर निकली। सभी ऊची आवाज म, अपनी विशेष साइबेरियाई बोली म बतिया रही थी। किसी ने भी देहातिया-किसानो की पाशाक नही पहन रखी थी, सभी शहरियो के से कपडे पहने थी जाकेट और क्लोक जिनके नीचे फर लगी थी। उन्होने अपने घाघर काफी उपर तक मोड रखे थे, और सिरो पर शाले बाध रखी थी। लैम्प की रोशनी म व नेम्लूदोव और उसके गाइड को बडे गौर से देखती रही। चौडे कधो वाले मजदूर को देख कर एक औरत तो प्रत्यक्षत बडी खुश हुई और बडे दुलार से उसे खालिस साइबेरियाई ढग से गालिया देने लगी—

"अरे मलमुहे, यहा क्या कर रहा है? शैतान उठा ले जाये तुझे!" औरत ने मजदूर को सबोधित कर के कहा।

"मैं इस मुसाफिर को रास्ता दिखाने आया हू," युवक ने जवाब दिया। "और तुम यहा क्या लायी थी?"

"दूध मक्खन। कल सुबह और लाने को कहा है।"

"और रात रहने के लिए नही कहा? क्या?" युवक ने पूछा।

"तुम जाओ जहन्नुम मे, झूठें कही के!" उसने हस कर कहा। "पर हमारे साथ गाव तक तो चलो।"

जवाब मे गाइड ने कोई ऐसी बात कही जिस पर न केवल सभी औरते बल्कि सन्तरी भी हसने लगा। फिर नेख्लूदोव की ओर घूम कर बोला –

"अब तो अपने आप रास्ता ढूढ लोगे न? गुम तो नहीं हो जाओगे?"

"नही, मैं ढूढ लूगा।"

"गिरजे से आगे जा कर, दोमजिला मकान के साथ वाला घर है। और लो, यह मेरी लाठी ले लो।" कहते हुए उसने नेख्लूदोव के हाथ मे वह लाठी दे दी जो वह उठाये हुए था। लाठी उसके कद से भी लम्बी थी। फिर अपने बडे बडे बूटो से कीचड मे से जाते हुए, स्त्रिया के साथ अधेरे मे खो गया।

धुध मे से अब भी उसकी आवाज आ रही थी जो औरतो की आवाजो मे घुल मिल गई थी। फाटक खडखडा कर खुला और सॉर्जेंट निकल कर नेख्लूदोव के पास आया और उसे अफसर के पास ले गया।

८

पडाव घर साइबेरिया की सडक पर बने सभी पडाव घरो जसा था नुकीले लट्ठो की बाड से घिरे आगन म तीन एकमजिला मकान थे। सबस बडे मकान की खिडकिया पर सीखचे लगे थे, यहा कदी रखे जाते थ। दूसरा मकान कॉनवाय के सिपाहिया के लिए था और तीसर म दफ्तर था। इसी म कॉनवाय का अफसर भी रहता था। तीना मकाना की खिडकियो म रोशनी थी, ऐसी रोशनी जिसे देख कर लगता है कि इन

घरो के अन्दर आराम और आसाइश वसती होगी। यहा पर यह मिथ्या भ्रम विशेप रूप से अधिक होता था। मकानो के वाहर सायवानो मे लैम्प जल रहे थे, इनके अतिरिक्त पाच लैम्प दीवारा के माथ लगे थे जिनस सार आगन म काफी राशनी हो रही थी। मैदान के बीचाबीच एक लम्बा तख्ता रखा था जिस पर से चलते हुए सार्जेंट, नेख्लूदोव को सवस छोटे मकान की ओर ले गया। मकान के बाहर सायवान की तीन सीढिया चढ कर सॉर्जेंट रुक गया और अदब से नेख्लूदोव को डयोढी के अन्दर चलने को कहा जिसम एक छाटा सा लैम्प जल रहा था। डयोढी से धुए की गध आ रही थी। एक सिपाही, गाढे की कमीज, और काले रग की पतलून पहने और नकटाई लगाय, फूकें मार मार कर समोवार सुलगा रहा था। उसने एक पाव म टॉप-बूट चढा रखा था, और दूसरे बट से भाथी का काम ले रहा था। नेख्लूदोव पर आख पडते ही सिपाही समोवार को छोड कर आगे बढ आया, नेख्लूदोव का चमडे का ओवरकोट उतरवाया, और उसके बाद साथ वाल कमरे मे चला गया।

"वह आ गया है हुजूर।'

"अन्दर भेज दो,' गुस्से से भरी आवाज़ आयी।

"इस दरवाज़े मे से अन्दर चले जाइये," सिपाही ने कहा और फिर समोवार सुलगाने म लग गया।

साथ वाले कमरे म एक लैम्प छत पर से लटक रहा था। नीचे खाने का मेज़ रखा था जिसके सामने, आस्ट्रियाई फैशन की जाकेट पहने एक अफसर बैठा था। मेज़ पर भोजन की बची-खुची चीज़े और दो बोतले रखी थी। अफसर का चेहरा बहुत लाल हो रहा था और मूछें सुनहरी रग की थी। आस्ट्रियाई जॅकिट उसकी चौडी छाती और चौडे कधो पर खूब चुस्त वठी थी। हवा म तम्बाकू तथा किसी सस्ते इत्र की तीखी गध फैली थी। कमरा खूब गरम हो रहा था। नेख्लूदोव का देख कर अफसर उठ खडा हुआ और व्यग और सशय की दृष्टि से इस नवागन्तुक की ओर देखते हुए बोला—

"कहिये, क्या काम है?' और बिना जवाब या इन्तज़ार किये, खुल दरवाज़े म स चिल्ला कर बोला—"वेर्नोव! समोवार को क्या हो गया, लाते मरते क्यो नही हो?"

"अभी लाया हुजूर।'

"'अभी' या अच्चा। वहा तू वर क्या रहा है?" अफसर चिल्लाया और उसकी आखें गुस्से स चमकन लगी।

"आया हुजूर!" सिपाही न पुकार कर कहा और समावार अन्दर ले आया।

सिपाही न समावार मेज पर रखा और बाहर जाने लगा। अफसर की छोटी छोटी क्रूर आखें सिपाही की पीठ पर गडी थीं, मानो उस बेचारे के लिए निशाना ढूढ रही हो। सारा वक्त नख्लूदोव खडा रहा। अफसर एक चौरस शक्ल की ब्राडी से भरी बोतल उठा लाया, फिर अपने सफरी थैले मे से कुछ एल्वर्ट बिस्कुट निकाले और चाय बनाने लगा। सब चीजें मेज पर रखने के बाद वह नख्लूदोव की ओर घूम कर बोला—

"कहिये, मैं आप की क्या खिदमत कर सकता हू?"

"मैं एक बंदी से मिलने की इजाजत चाहता हू," नख्लूदोव न खडे खडे जवाब दिया।

"क्या कोई राजनीतिक बंदी है? उसकी तो कानून इजाजत नही देता,' अफसर ने कहा।

"जिस बंदी औरत का मैं जिक्र कर रहा हू वह राजनीतिक बंदी नही है" नख्लूदोव ने कहा।

"हा, पर आप तशरीफ तो रखिये," अफसर बोला।

नेख्लूदोव बैठ गया।

"वह राजनीतिक बदी तो नही है," उसने फिर कहा, "पर मेरी दरख्वास्त पर बडे अफसरो ने उसे राजनीतिक बंदियो के साथ रहने की इजाजत दे दी थी।"

"हा हा, मैं जानता हू," अफसर ने बात काटते हुए कहा। "छोटी सी, काले बालो वाली। हा। इसका तो इन्तजाम हो सकता है। आप सिगरेट पीजिये।"

अफसर ने सिगरेटो का डिब्बा नेख्लूदोव की ओर बढाया, फिर दो गिलासो म चाय ढाल कर एक गिलास नख्लूदोव के सामने रखा।

"शौक फर्माइये।"

"शुक्रिया मैं चाहता हू कि "

"अभी बहुत वक्त है, रात लम्बी है। मैं अभी हुक्म दिये देता हू कि उसे रात को आपके पास भेज दिया जाय।"

"क्या मैं उसी के पास जा कर उसे नही मिल सकता? उसे मेरे पास भेजने की क्या जरूरत है?" नख्लूदाव ने कहा।

"जहा राजनीतिक कैदी रहते है? यह कानून के खिलाफ है।"

"पहले तो मुझे कई बार इजाजत दी जाती रही है। अगर मेरा इरादा राजनीतिक कैदियो को कुछ देने का हो तो वह तो मैं उसके जरिये भेज सकता हू।'

"नही नही, उसकी तलाशी ली जायेगी," अफसर ने कहा और बडे अप्रिय ढग से हसने लगा।

"तो आप मेरी ही तलाशी क्यो न ले ले।"

"चलो, छोडो, इसके बिना ही चला लेगे, अफसर ने कहा और बोतल खोलकर नेख्लूदोव का गिलास भरना चाहा। "लीजिये! नही? जैसी आपकी इच्छा। यहा साइबेरिया मे रहते हुए अगर कोई पढा लिखा आदमी मिल जाय तो हम शुक्र गुजारते हैं। हमारा काम बडा क्लेश से भरा है, आप तो जानते है, और जिसे आराम से रहने की आदत हो उसके लिए बडी कठिनाई होती है। लोग हमारे बारे मे सोचते हैं कि कानवाय अफसर बडे अभद्र और अशिक्षित लोग होते हैं। किसी को यह याद नही रहता कि हमारा जन्म इससे कही बेहतर स्थिति के लिए हुआ है।"

नेख्लूदोव को यह अफसर अपने लाल लाल चेहरे, कपडो पर छिडके इत्र, अगुली मे पहनी अगूठी और विशेषकर उसकी भौंडी हसी के कारण बहुत बुरा लगा। परन्तु आज भी उसकी मानसिक स्थिति वैसी ही गभीर और दत्तचित्त बनी थी जैसी कि इस सारी यात्रा मे रही थी, जिस कारण वह किसी मनुष्य के साथ घृणा तथा अवमान के साथ पेश नही आ सकता था। इसके विपरीत वह यह महसूस करता था कि सबके साथ "सम्पूर्णता" से बातचीत करने की जरूरत है। मनुष्यो के साथ अपने इस व्यवहार को वह 'सम्पूर्णता' कह कर व्यक्त करता था। अफसर की बात सुन कर वह मन ही मन इस नतीजे पर पहुचा कि इस अफसर को अपने अधीन रखे गये कैदियो को दुख देना बुरा लगता है।

"मैं सोचता हू कि इस स्थिति मे भी यदि आप दुखी लोगो की सहायता करे तो आपके मन को सन्ताप मिलेगा," नेख्लूदोव ने गभीरता से कहा।

"उनका दुख क्या है? आप इन लोगो को जानते नही है।"

"ये और लोगों से भिन्न तो नहीं हैं," नेख्लूदोव ने कहा, "ये भी और लोगों जैसे ही है, और इनमें से कुछ तो निर्दोष है।"

"बेशक, इनमें तरह तरह के लोग शामिल है, और यह स्वाभाविक ही है कि इनके प्रति मन में दया उठती है। हममें से कुछ अफसर जरूर उनके साथ कड़ाई से पेश आते है, पर मैं, जहा भी मुमकिन हो, उनका बोझ हल्का करने की कोशिश करता हू। मैं तो खुद कष्ट उठा लेता हू ताकि उन्हें कष्ट न पहुचे। और अफसर हैं कि जरा कुछ हुआ नहीं, फौरन कानून चलाते हैं, ज्यादा हुआ तो–शूट, पर एक मैं हू, मुझे तरस आता है इन पर। आप और चाय लीजिये," उसने कहा और नेख्लूदोव के गिलास में और चाय डाली। "और यह औरत कौन है जिससे आप मिलना चाहते है?" उसने पूछा।

"यह एक बदनसीब औरत है जो भटकती हुई चकले में जा पहुची थी। वहा इस पर जहर देने का झूठा इलजाम लगाया गया। लेकिन यह बडी अच्छी औरत है," नेख्लूदोव ने जवाब दिया।

अफसर ने सिर हिलाया।

"हा, ऐसी बाते हो जाती है। मैं आपको एक औरत का किस्सा सुना सकता हू जो कज़ान में रहा करती थी। उसका नाम एम्मा था। वह पैदा तो हगरी मे हुई थी लेकिन उसकी आखे बिल्कुल ईरानी थी," वह कहता गया। उस औरत को याद कर के उसके होठो पर मुस्कराहट आ गयी जिसे वह रोक नहीं सका। "उसमे इतना बाकापन था कि जैसे कोई काउटेस हो ..."

नेख्लूदोव ने अफसर की बात बीच मे ही काट दी और वार्तालाप का पहले विषय पर ले आया।

"मैं सोचता हू कि जितनी देर ये लोग आपके अधीन हैं, आप इन्हें जरूर सुख पहुचा सकते है, और मुझे विश्वास है कि ऐसा करने में आपको बडी प्रसन्नता होगी," नेख्लूदोव ने एक एक शब्द बडी स्पष्टता से बोलते हुए कहा, मानो किसी विदेशी से या किसी बच्चे से बात कर रहा हो।

अफसर की आखें चमक रही थी, उसने बडी बेताबी से नेख्लूदोव की ओर देखा, कि कब वह यह किस्सा समाप्त करे और वह उस हगरी की लडकी की बात सुना सके जिसकी आखें ईरानियों जैसी थी। जान पडता

था कि उस औरत का मुखडा वडा सजीव हो कर उसकी आखो के सामने घूम रहा था और उसका सारा ध्यान उसी पर लगा हुआ था।

"हा, यह सव तो आप ठीक कहते हैं," वह वोला, "और मुझे सचमुच उन पर दया आती है। पर मैं आपको इस एम्मा का किस्सा सुनाना चाहता हू। आप जानते हैं उसने क्या किया "

"मुझे इसमे कोई दिलचस्पी नही," नेख्लूदोव ने कहा, "और मैं यह भी साफ साफ आपको वता दू कि मैं खुद पहले किसी दूसरी तरह का आदमी रहा हू लेकिन अव मुझे स्त्रिया के साथ इस तरह का सम्वध रखने से घृणा है।"

अफसर ने इस तरह नेख्लूदोव की ओर देखा मानो डर गया हो।

"आप और चाय पीजिये," उसने कहा।

"नही, शुक्रिया।"

"वेर्नोव!" अफसर ने आवाज़ लगाई, "साहिब को वाकूलोव के पास ले जाओ। कहो कि इन्हे राजनीतिक कैदिया के अलग कमरे मे ले जाय। वहा यह जाच के वक्त तक वैठ सकते हैं।"

६

नेख्लूदोव अदली के साथ हो लिया और वाहर मैदान मे आ गया। लैम्पो की लाल लाल रोशनी के कारण मैदान मे कुछ कुछ उजाला था।

"कहा जा रहे हो?" कॉनवाय के एक सिपाही ने अदली से पूछा।

"पाच नम्वर वाले अलग कमरे मे।"

"इस तरफ से नही जा सकोगे। वहा ताला चढा है। पीछे से घूम कर जाओ।"

"क्या?"

"वडे साब गाव चले गये है और चाभी साथ लेते गये हैं।"

"तो आइये, इस तरफ से जायेंगे।"

अदली नेख्लूदोव को दूसरी तरफ से ले गया। कुछेक तख्ता पर से चलते हुए ये लोग एक दूसरे फाटक के सामने जा पहुचे। अभी वे आगन मे ही थे कि नेख्लूदोव को अन्दर के शोर-गुल की आवाजें सुनाई देने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे मधुमक्खियो के छत्ते म मधुमक्खिया प्रजनन की

तैयारी कर रही हो। पर जब वे नजदीक पहुचे, और दरवाजा खुला तो यह शोर और भी ऊचा हो गया और उसमे चिल्लाने, गालिया बकने और हसने की साफ आवाजे आने लगी। नेख्लूदोव के कान म बेडियो खनखन की आवाज आयी और उसी बदबू की लपटें आयीं जिसस वह भली भाति परिचित था।

सदा की तरह यह शोर, बेडियो की खनखन, और घुटन भरी बदबू नेख्लूदोव को व्याकुल करने लगी। उसके मन मे पहले तो नैतिक घिन सी उठी और फिर सचमुच उबकाई आने लगी। दोनो भावनाए मिल कर एक दूसरी को तीव्रतर बनाने लगी।

अदर प्रवेश करते ही जिस चीज पर सबसे पहले नेख्लूदोव की नजर गयी वह एक बडा सा, बदबूदार टब था, जिसके किनारे पर एक औरत बैठी थी, और उसके सामने एक आदमी खडा था। आदमी ने अपने मुडे हुए सिर पर गोल चपटी टोपी टेढी कर के पहन रखी थी। दोनो किसी विषय पर बात कर रहे थे। नेख्लूदोव को देख कर आदमी ने आख मारी और बोला—

"खुद जार भी इस पानी को बहने से नही रोक सकता।"

पर औरत ने फौरन अपने लबादे के किनारो को नीचे खीच लिया और शरमिदा सी हो गयी।

अदर दाखिल होने वाले दरवाजे से शुरू हो कर एक बरामदा सीधा चला गया था जिसमे बहुत से दरवाजे खुलते थे। पहला कमरा परिवारो के लिए था। उसके आगे अनब्याहे लोगो का, और आखिर म दो छोटे छोटे कमरे राजनीतिक कैदियो के लिए अलग रख दिये गये थे।

इस मकान मे एक सौ पचास कैदियो के लिए स्थान था लेकिन इस समय चार सौ पचास कैदी भरे पडे थे। मकान इस कदर ठसाठस भरा था कि सभी कैदियो के लिए कमरो मे जगह नही थी, कई कैदी गलियारे मे पडे थे। कुछ फर्श पर लेटे या बैठे थे, कुछेक हाथो मे चायदानिया उठाये उबलता पानी लेने जा रहे थे या ले कर आ रहे थे। लौटने वाले आदमियो मे तारास भी था। वह चलता हुआ नेख्लूदोव के पास आ पहुचा और बडे स्नेह से अभिवादन किया। तारास का सद्भावनापूर्ण चेहरा इस समय काले काले चोट के निशानो से विकृत हो रहा था। निशान तारास के नाक पर और आख के नीचे थे।

"तुम्हें क्या हुआ है?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"एक झगड़ा हो गया था," तारास ने मुस्करा कर कहा।

"ये लोग हमेशा लड़ते रहते हैं," कॉनवाय का सिपाही बोला।

"सारा झगड़ा एक औरत पर हुआ," एक क़ैदी ने कहा जो तारास के पीछे पीछे चला आया था, "अन्धे फेदका के साथ इसकी लड़ाई हुई है।"

"फ़ेदास्या कैसी है?"

"ठीक है। मैं उसी की चाय के लिए पानी ले जा रहा हूं," तारास ने जवाब दिया और उस कमरे के अन्दर चला गया जिसमें क़ैदी अपने परिवारों के साथ रहते थे।

नेख्लूदोव ने दरवाज़े में से अन्दर झांक कर देखा। कमरा मर्दों और औरतों से ठसाठस भरा था। उनमें से कुछेक या तो सोने वाले तख्तों के ऊपर या उनके नीचे लेटे हुए थे। कमरे में गीले कपड़े सूखने के लिए डाले हुए थे जिस कारण वहां भाप ही भाप फैली थी। औरतों की चटर-पटर रुकने में न आती थी। अगला दरवाज़ा अनब्याहे लोगों के कमरे में खुलता था। यहां पहले कमरे से भी ज्यादा भीड़ थी, यहां तक कि दरवाज़े के बीच और गलियारे में भी वे रास्ता रोके बैठे थे, और गीले कपड़े पहने, ऊंची आवाज़ में बहस कर रहे थे, जैसे किसी निश्चय पर पहुंचने की कोशिश कर रहे हों या कुछ न कुछ काम कर रहे थे। कॉनवाय के सार्जेंट ने बताया कि जिस क़ैदी को रसद खरीदने का काम सौंपा गया था वह यहां बैठा रसद के पैसों में से एक जुएबाज़ का उधार चुका रहा है (जुएबाज़ ने कुछेक से पैसे जीत रखे थे या कुछेक को उधार दे रखा था), और उससे ताश के पत्तों से बने छोटे छोटे टिकट ले रहा है। जब उनकी नज़र कॉनवाय के सार्जेंट तथा एक कुलीन पर पड़ी तो जो क़ैदी सबसे नज़दीक बैठे थे वे चुप हो गए और द्वेष भरी नज़रों से उनकी ओर देखने लगे। इन्हीं में नेख्लूदोव को मुजरिम फ्योदोरोव नज़र आया जो साइबेरिया में बड़ी मशक्कत पर जा रहा था। फ्योदोरोव हर वक्त अपने साथ एक मैले-कुचैले गोरे नौजवान को साथ रखता था जिसका मुंह सूजा रहता और भौंहें चढ़ी रहती थीं, और एक और मुजरिम को भी, जिसे देख कर नेख्लूदोव को सदा घिन उठती थी। इस आदमी की नाक कटा हुआ और मुंह पर चेचक के दाग थे। क़ैदियों में भी यह आदमी बदनाम था, रहा

जाता था कि एक बार जब यह भागने की कोशिश कर रहा था तो इसने अपने किसी साथी को जगल मे मार डाला था और उसका मास तक खाता रहा था। एक कधे पर से अपना गीला लवादा लटकाये वह गलियार मे वडी निडर और व्यगपूर्ण नजरो से नेख्लूदोव की ओर दखता खडा रहा और रास्ता रोके रहा। नेख्लूदोव उसके पास से हो कर निकल गया।

इस तरह के दृश्य वह कई बार देख चुका था। पिछले तीन महीनो के दौरान वह इन चार सौ पचास ग्राम मुजरिम कैदियो को बार बार विभिन्न परिस्थितियो में देख चुका था सडक पर चिलचिलाती धूप म, जब ये अपनी बेडिया घसीटते और गर्द के ववण्डर उडाते चले जा रहे थे, रास्त मे जगह जगह जब ये आराम के लिए रुकते थे, पडाव घरो के अन्दर, और गर्मी के मौसम मे बाहर, पडाव घरो के आगना मे, जहा व्यभिचार के ऐसे बीभत्स दृश्य उसने देखे थे जिससे रोगटे खडे हो जाय। फिर भी हर बार जब वह इनके बीच आता, और वे बडे ध्यान से उसकी ओर देखने लगत, जिस तरह वे अब देख रहे थे, तो नेख्लूदोव मन ही मन लज्जित और व्याकुल हो उठता। उसे लगता जैसे उसने उनके विरुद्ध कोई पाप किया है। एक तरफ तो यह लज्जा और जुर्म की भावना होती, दूसरी तरफ उसका मन घृणा और भय से भर उठता, जिसे दबाना असभव हो जाता था। यह जानते हुए भी कि जिन परिस्थितियो मे ये लोग रहते हैं, उनमे उनका आचार इससे बेहतर नही हो सकता, फिर भी वह अपनी घृणा को दबा नही पाता था।

"इनके तो मजे हैं हरामखोरो के," राजनीतिक कैदियो के कमरे के पास पहुच कर नेख्लूदोव ने सुना, "इनका कुछ बिगडता थोडे ही है। पेट थोडे ही फूलेगा इनका," किसी ने फटी आवाज मे, पीछे से कहा और साथ ही भद्दी सी गाली जोड दी। नेख्लूदोव की पीठ के पीछे कैदी ठहाका मार कर हसे और उनकी व्यग तथा द्वेषपूर्ण हसी गूज उठी।

१०

जब नेख्लूदोव और सॉर्जेंट अनब्याहे कैदियो के कमरे को पार कर चुके थे तो सॉर्जेंट यह कह कर वापस लौट गया कि जाच से पहले वह उसके पास आ जायेगा। सॉर्जेंट के चले जाने की देर थी कि एक कैदी

नगे पावो, अपनी बेडिया ऊपर को उठाये हुए, तेज तेज कदम रखता हुआ नेख्लूदोव के पास आया। उससे पसीने की तेज, तीखी गंध आ रही थी। आगे बढ कर बडी रहस्यपूर्ण आवाज मे फुसफुसा कर बोला—

"मामला अपने हाथ मे लीजिये, हुजूर। इन्होंने लौंडे का बेवकूफ बना दिया है। उसे शराब पिला दी, और आज जाच के वक्त उसने अपना नाम भी कार्मानोव बता दिया। इसे रोकिये, हुजूर। हमारी हिम्मत नही पडती, ये लोग हमे जान से मार डालेंगे।" और फिर घबरा कर इधर-उधर देखते हुए वहा से चला गया।

बात यो हुई थी। कार्मानोव नाम के एक मुजरिम को खानो मे बडी मशक्कत की सजा मिली थी। कैदियो मे एक युवक भी था जिसकी शक्ल बहुत कुछ कार्मानोव से मिलती थी, और जिसे निर्वासन की सजा मिली थी। कार्मानोव ने उस युवक को फुसला कर इस बात पर रजामद कर लिया कि वह उससे अपना नाम बदल ले और उसकी जगह खानो पर काम करने चला जाय, जब कि कार्मानोव खुद निर्वासन मे चला जायेगा।

नेख्लूदोव यह मामला जानता था। इसी बंदी ने उसे इसके बारे मे हफ्ता भर पहले बता दिया था। उसने सिर हिला दिया ताकि कैदी को पता चल जाय कि उसने सुन लिया है और जो कुछ बन पडा वह कर देगा, और बिना मुड कर देखे आगे की ओर चलता गया।

जिस कैदी ने नेख्लूदोव से यह बात कही थी उसे वह अच्छी तरह से जानता था। और उसके इस काम पर वह हैरान हुआ था। जब कैदी येकातरीनबुर्ग म थे तो इस आदमी ने नेख्लूदोव से अनुरोध किया था कि वह उसे अपनी पत्नी को भगवाने की इजाजत ले दे। यह आदमी बिल्कुल साधारण सा किसान लगता था, उम्र लगभग तीस साल रही होगी, और कद दमियाना था। इसे इस जुर्म के लिए बडी मशक्कत की सजा मिली थी कि इसने कत्ल करने तथा डाका डालने की कोशिश की थी। नाम माकार देव्किन था। इसका जुर्म बडा अजीब सा था। जब वह नेख्लूदोव को इसका ब्योरा दे रहा था तो कहता कि यह जुर्म उसने नही, शैतान ने किया है। कहने लगा कि एक बार एक मुसाफिर उसके पिता के घर आया और एक स्लेज गाडी किराये पर ली। उसे वहा से छब्बीस मील दूर किसी गाव को जाना था। माकार के बाप ने उसे यात्री को गाडी मे ले जाने को कहा। माकार ने घोडे पर साज लगाया, कपडे पहने और

यात्री के साथ बैठ कर चाय पीने लगा। अजाबी ने चाय पीते समय बताया कि वह शादी करने जा रहा है और इस वक्त उसके पास पूरे पाच सौ रूबल की रकम है जो उसने मास्को मे कमाई है। जब माकार ने यह सुना तो उठ कर बाहर आगन मे आ गया और एक कुल्हाडी उठा कर स्लेज गाडी मे भूसे के नीचे रख दी।

"मुझे खुद उस वक्त मालूम नही था कि मैं यह कुल्हाडी क्या ले रहा हू," उसने कहा। "शैतान मेरे कान मे कह रहा था, 'कुल्हाडा उठा लो,' और मैने कुल्हाडी उठा ली। हम गाडी म बैठ कर जाने लगे। पहले तो ठीक चलते रहे। मुझे कुल्हाडी भूल ही गयी। इसी तरह हम गाव के नजदीक जा पहुचे, गाव वहा से केवल चारेक मील दूर रह गया होगा। चौराहे से बडी सडक तक पहुचने के लिए पहाडी पर चढ कर जाना पडता था। मैं गाडी पर से उतर आया, और स्लेज के पीछे पीछे चलने लगा। शैतान मेरे कान मे फुसफुसाने लगा, 'तुम सोच क्या रहे हो? पहाडी की चोटी पर पहुचोगे तो बडी सडक पर तुम्हे लोग मिलने लगेंगे। आगे गाव आ जायेगा। यह अपना रुपया अपने साथ ले जायेगा, अगर कुछ करने का इरादा है तो यही वक्त है।' मैं स्लेज की ओर झुका, जैसे भूसा ठीक करने लगा होऊ, और कुल्हाडी मेरे हाथ मे अपने आप आ गयी। यात्री मेरी ओर घूमा। 'क्या कर रहे हो?' मैंने कुल्हाडी उठाई और एक ही वार मे उसका काम तमाम करना चाहता था, लेकिन वह तेज निकला, झट से उछल कर नीचे आ गया और मेरे दोनो हाथ पकड लिये। 'शैतान के बच्चे, क्या कर रहे हो?' उसने कहा और मुझे नीचे बरफ पर गिरा दिया। मैंने हाथ पाव तक नही हिलाये, फौरन् ही हार मान ली। उसने मेरे बाजू अपने कमरबन्द के साथ बाध दिये, मुझे उठा कर गाडी मे डाल दिया और सीधा मुझे थाने मे ले गया। गाव वालो ने मेरा सिफारिश की, कहा कि मेरा चालचलन अच्छा है, मैं भला आदमी हू और मुझे किसी ने कोई बुरा काम करते नही देखा। मेरे मालिका ने भी, जिनके पास मैं काम करता था, मेरी तारीफ की, पर वकील करने के लिए हमारे पास पैसे नही थे इसलिए मुझे चार साल कडी मशक्कत की सजा मिल गई।"

अब यही आदमी, अपने गाव के एक साथी को बचाने के लिए, अपनी जान जोखिम मे डाल कर, कैदियो का भेद नाजूदार को दे रहा था। वह जानता था कि अगर कैदियो को इस बात का पता चल गया तो वे जरूर इसका गला घोट देंगे।

राजनीतिक बंदियो का दो कमरा मे रखा जाता था जिनके दरवाज़े गलियारे के एक हिस्से मे खुलते थे, जहा पार्टीशन डाल कर उन्ह बाकी कमरा से अलग कर दिया गया था। जब नेख्लूदाव गलियारे के इस हिस्से मे पहुचा ता उसे सिमनसन नजर आया। रबड की जाकेट पहने और देवदार की लकडी का एक कुदा हाथ मे लिये वह अलावघर के सामने झुका हुआ था। अलावघर का ढकना आग की तपिश के कारण बार बार काप उठता था।

जब नेख्लूदोव अन्दर आया तो उसने बैठे बैठे ही, अपनी घनी भौहा के नीचे से आखे उठा कर उसकी ओर देखा, और हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढा दिया।

"अच्छा हुआ आप आ गये। मुझे आपसे कुछ कहना है," नेख्लूदोव की आखा मे आखे डाल कर बडे महत्वपूण ढग से सिमनसन ने कहा।

"क्या बात है?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"बाद मे बताऊगा। इस वक्त मुझे काम है।"

और सिमनसन फिर अलावघर की ओर घूम गया। वह अपने ही किसी फारमूले के मुताबिक अलावघर गरम कर रहा था ताकि कम से कम तपिश जाया हो।

नेख्लूदोव पहले दरवाज़े मे से अन्दर जाने लगा था जब मास्लोवा झाड़ू लगाती हुई दूसरे दरवाज़े म से बाहर निकली। हाथ मे झाड़ू पकडे वह कूडे और गद के एक ढेर पर झुकी हुई थी और उसे धकेलती हुई स्टोव के पास ले जा रही थी। उसने सफेद रग की जाकेट पहन रखी थी और अपना घाघरा ऊपर को खास रखा था। सिर पर रूमाल था, जिसे उसने माथे पर भौहा तक बाध रखा था ताकि उसके बाल गद से बचे रह। नेख्लूदोव को देख कर वह बडी खुश हुई और उसका चेहरा लाल हो गया। उसन झाड़ू फेंक दिया और घाघरे पर हाथ पोछते हुए उसके ऐन सामने खडी हो गयी।

"झाड पोछ कर रही हो?" हाथ मिलाते हुए नेख्लूदोव ने कहा।

"हा, यह तो मेरा पुराना काम है," मास्लोवा मुस्कराई, "पर उफ! कितनी गदगी है यहा। बार बार साफ करो फिर भी जगह वैसी

की वैसी हो जाती है।" फिर सिमनसन की ओर घूम कर बोली, "कम्बल सूख गया है?"

"हां, लगभग सूख गया है," सिमनसन ने मास्लोवा की ओर विलक्षण ढंग से देखते हुए जवाब दिया। उसकी यह नज़र नेख्लूदोव से छिपी नहीं रही।

'अच्छी बात है, मैं अभी आ कर ले जाऊंगी और फिर ओवरकोट सुखाने के लिए ले आऊंगी।" फिर पहले दरवाज़े की ओर इशारा करती हुई नेख्लूदोव से बोली, "हमारे सभी आदमी इसी कमरे में हैं।" और वह खुद दूसरे दरवाज़े के अन्दर चली गयी।

दरवाज़ा खोल कर नेख्लूदोव अन्दर दाखिल हुआ। कमरा छोटा सा था। दीवार के साथ नीचे की ओर एक तख्ते पर टीन का छोटा सा लैम्प टिमटिमा रहा था। यही तख्ता यहां सोने के लिए लगाया गया था। कमरे में सीलन थी, सर्दी थी, धूल की गन्ध आ रही थी (धूल अभी तक बैठ नहीं पायी थी), और तम्बाकू का धुआं छाया हुआ था। टीन के लैम्प की रोशनी में उसके आस-पास बैठे लोगों के चेहरे चमक रहे थे, लेकिन सोने वाले तख्तों पर अंधेरा था। दीवारों पर साये कांप रहे थे।

अधिकांश राजनीतिक कैदी इस छोटे से कमरे में जमा थे। दो आदमी, जिन पर खाने पीने की चीज़ लाने का ज़िम्मा था, रसद और चाय के लिए उबलता पानी लेने गये हुए थे। यहीं पर वेरा बैठी थी, जिसके साथ नेख्लूदोव की पुरानी जान-पहचान थी। वेरा पहले से दुबली और पीली लग रही थी, आंखें बड़ी बड़ी और सहमी हुई सी, छोटे छोटे बाल, और माथे पर एक नस उभरी हुई। उसने सलेटी रंग की जाकेट पहन रखी थी, और अपने सामने अखबार का कागज़ बिछाये, कागज़ की नलियों में तम्बाकू भर भर कर सिगरेट बना रही थी, और ऐसा करते हुए उसके हाथ झटक से जाते थे।

यहीं पर एमीलिया रान्त्सेवा भी थी जिसे नेख्लूदोव राजनीतिक कैदियों में सबसे प्रिय समझता था। उसका काम "घर" का इन्तज़ाम करना था, और जो कठिनतम परिस्थितियों में भी घर का सा स्निग्ध तथा आकर्षक वातावरण बना देती थी। आस्तीनें चढ़ाये वह लैम्प के पास बैठी, प्याले और गिलास पोंछ पोंछ कर तख्ते पर रख रही थी जिस पर एक तौलिया बिछा हुआ था। उसके सुन्दर, धूप में सवलाये हाथ बड़ी दक्षता

से काम कर रहे थे। शक्ल-सूरत से रात्सवा एक साधारण सी युवती थी और उसके चेहरे पर मृदुता तथा योग्यता का भाव रहता। जब वह मुस्कराती तो उसका चेहरा सहसा खिल उठता, और बडा सजीव और आकर्षक हो उठता। इस समय भी नेख्लूदोव का स्वागत करते हुए उसके चेहरे पर ऐसी ही मुस्कान खेल रही थी।

"वाह, हमने तो सोचा आप रूस लौट गये होंगे," वह बोली।

इसी कमरे के एक अंधियारे कोने मे मारीया पाव्लोव्ना बैठी एक छोटी सी, सुनहरी बालो वाली लडकी को कुछ कर रही थी। लडकी बराबर अपनी तुतलाती जबान मे प्यारी प्यारी बात किये जा रही थी।

"बहुत अच्छा हुआ जो आप आ गये," मारीया पाव्लोव्ना बोली, "कात्यूशा से आप मिले हैं?" फिर नन्ही लडकी की ओर इशारा करते हुए बोली, "यह देखिये, हमारे यहा एक नयी मेहमान आयी है।"

यही पर, दूर एक कोने मे अनातोली क्रिलत्सोव पाव समेटे बैठा ठिठुर रहा था। पावो पर उसने फेल्ट के बूट पहन रखे थे, और अपने दोनो हाथ ओवरकोट की आस्तीनो के अन्दर दबाये हुए था। वह नेख्लूदोव की ओर बराबर देखे जा रहा था और उसकी आखें बुखार के कारण लाल हो रही थी। नेख्लूदोव सीधा उसके पास जाना चाहता था लेकिन दरवाजे के पास ही दायी ओर एक आदमी को बैठे देख कर रुक गया। यह प्रसिद्ध क्रातिकारी नोवोद्वोरोव था। लाल घुघराले बाल, आखो पर चश्मा, रबड की जाकेट पहने हुए, वह बैठा ग्राबेत्स से बात कर रहा था। सुन्दरी ग्राबेत्स मुस्करा रही थी। नेख्लूदोव जल्दी जल्दी उसे मिलने चला गया, कारण, सभी राजनीतिक कैदियो मे वही एक आदमी था जो नेख्लूदोव को बुरा लगता था। नोवोद्वोरोव ने त्योरिया चढा कर नेख्लूदोव की ओर देखा और चश्मे के पीछे उसकी नीली आखे चमकने लगी, फिर हाथ मिलाने के लिए अपना पतला सा हाथ आगे बढाया।

"कहिये, आपका सफर तो मजे मे कट रहा है?" उसने कहा। उसकी आवाज मे प्रत्यक्षत व्यग की झलक थी।

"जी, बहुत सी बात मुझे यहा बडी दिलचस्प लगती है," नेख्लूदोव न जवाब म कहा मानो उसका ध्यान नोवोद्वोरोव के व्यग की ओर गया ही न हो, बल्कि उसे उसने शिष्टतापूर्ण प्रश्न समझा हो। इसके बाद नेख्लूदोव क्रिलत्सोव की ओर जाने लगा।

प्रकट मे तो जान पडता था जैसे नेख्लूदोव को इसकी कोई परवाह न हो, लेकिन वास्तव मे इन शब्दो को सुन कर नेख्लूदोव का मन बहुत विचलित हुआ था। जाहिर था कि नोवोद्वोरोव कोई अप्रिय बात कहना या करना चाहता है। नेख्लूदोव का मन जो इन दिनो हरेक के प्रति सदभावनाओ से ओत प्रोत था, खिन्न उदास हो उठा।

"कहो कैसे हो?" क्रिलत्सोव का ठण्डा, ठिठुरता हाथ दबाते हुए नेख्लदोव ने कहा।

"अच्छा हू, केवल मेरा बदन गरम नही हो पाता। मेरे कपडे नीचे तक भीग गये थे," क्रिलत्सोव ने जवाब दिया और झट से अपने दोनो हाथ फिर लबादे की आस्तीनो के अन्दर रख लिये। "यहा पर भी कडाके की सर्दी पड रही है। वह देखो, खिडकी के शीशे टूटे हुए है।" और सीखचो के पीछे उसने टूटे शीशो की ओर इशारा किया। "तुम अपनी सुनाओ, इतने दिन से हमे मिलने क्यो नही आये?"

"मुझे इजाजत कहा मिलती थी। अफसर लोग टस से मस न होते थे। आज अफसर ने कुछ उदारता दिखायी।"

"उदारता! खूब!" क्रिलत्सोव ने टिप्पणी कसी, "मारीया से पूछो आज अफसर ने क्या किया।"

कोने मे बैठी हुई मारीया पाव्लोव्ना सुनाने लगी कि आज सुबह जब पडाव घर से चलने लगे थे तो इस छोटी लडकी के साथ क्या गुजरी थी।

"मै समझती हू कि यह बेहद जरूरी हो गया है कि हम सब मिल कर इसका विरोध करे" वेरा ने दृढता से कहा। परन्तु उसकी आखे अब भी सदिग्ध और डरी हुई थी और कभी एक के चेहरे की ओर और कभी दूसरे के चेहरे की ओर देख रही थी। "व्लादीमिर सिमनसन ने विरोध जरूर किया है परतु वही काफी नही है।"

"तुम कैसा विरोध चाहती हो?" क्रिलत्सोव चिढ कर, त्योरिया चढाते हुए बडबडाया। वेरा जब बात करती तो कृत्रिम ढग से, उसमे सरलता का अभाव था, और वह हर वक्त घबरायी सी रहती थी। ये बाते प्रत्यक्षत बहुत दिनो से क्रिलत्सोव को अखरती रही थी। "तुम कात्यूशा से मिलने आये हो?" क्रिलत्सोव ने घूम कर नेख्लूदोव से पूछा। "वह तो सारा वक्त काम करती रहती है। वह मर्दो का कमरा साफ कर

चुकी है, और अब स्त्रिया वाला कमरा साफ कर रही है। लेकिन यहा से पिस्सुओं को कोई कैसे साफ कर सकता है? वे तो इन्सान को जिन्दा चस जायेंगे। मारीया वहा बैठी क्या कर रही है?' कोने मे बैठी मारीया पाव्लोव्ना की ओर सिर हिला कर निलत्सोव ने पूछा।

"बाल काढ रही है अपनी गोद ली हुई बेटी के' रान्तसेवा ने जवाब दिया।

"कही जुए तो नहीं फैलायेगी हम सब पर? निलत्सोव ने पूछा।

"नही, नहीं, मै बडे ध्यान से अपना काम कर रही हू। बच्ची भी अब बडी साफ-सुथरी हो गयी है। अब तुम इसे ले जाओ मारीया ने रान्तसेवा से कहा, 'मैं जा कर जरा कात्यूशा की मदद करूगी और निलत्सोव के लिए कम्बल भी लेती आऊगी।'

रान्तसेवा ने नन्ही लडकी को गोद मे बिठा लिया और मा की तरह प्यार से लडकी को दोना गुदगुदी, नगी बाहे अपनी छाती से लगा ली, और चीनी का एक टुकडा उसे खाने को दिया।

जब मारीया पाव्लोव्ना कमरे मे से चली गयी तो दो आदमी कमरे मे दाखिल हुए। वे हाथो मे खाने-पीने का सामान और उबलते पानी से भरी चायदानिया उठाये हुए थे।

१२

इन दो नवागन्तुको मे से एक तो पतला सा मझले कद का युवक था जो घुटनो तक के ऊचे बूट और भेड की खाल का कोट पहने हुए था। कोट पर कपडा चढा हुआ था। बडी चुस्ती से हल्के हल्के कदम रखते हुए वह अन्दर दाखिल हुआ। उसके हाथो मे दो चायदानिया थी जिनमे से खूब भाप निकल रही थी, और बगल मे, एक कपडे मे लिपटी डबलरोटी उठाये हुए था।

"यह लो, आखिर प्रिंस भी आ गये," तख्ते पर प्याला के साथ चायदानिया रखते हुए और डबलरोटी रान्तसेवा के हाथ मे देते हुए उसने कहा। 'हम बहुत बढिया चीज खरीद कर लाये है,' उसने कहा और अपना खाल का कोट उतार कर बैठे लोगो के सिरो के ऊपर से एक कोने मे फेंका। "मार्केल ने दूध और अण्डे खरीदे हैं। वाह, आज तो

खूब जश्न होगा। और राल्सेवा की सफाई से तो कमरे चमचमा रहे हैं," उसने मुस्करा कर राल्सेवा की ओर देखा। "और अब यह चाय बनायेगी।"

इस आदमी के रोम रोम से, उसकी एक एक हरकत से, उसकी आवाज, और नजर से ओज और आनन्द फूट पडता था। दूसरा आदमी इसके बिल्कुल उलट था, उसका चेहरा निराश और उदास लग रहा था। वह आदमी कद का मझला, और हड्डियों का ढांचा भर था, गालों की हड्डियां खूब उभरी हुई थीं, चेहरा पीला और होंठ पतले थे, लेकिन एक दूसरी से दूर जडी उसकी हरी आंखें बडी सुन्दर थीं। वह एक पुराना रूईदार कोट पहने हुए था, पांव पर लम्बे बूट थे जिन पर गैलोश चढा रखे थे। उसके हाथों में दूध के दो बर्तन और बर्च की छाल के बने दो गोल डिब्बे थे, जो उसने राल्सेवा के सामने रख दिये। नेख्लूदोव का अभिवादन उसने केवल गर्दन झुका कर किया और उसकी ओर घूर घूर कर देखता रहा। फिर, अनिच्छा से उसने अपना नमीभरा हाथ आगे बढाया और नेख्लूदोव से हाथ मिला कर रसद का सामान बाहर निकालने लगा।

ये दोनों राजनीतिक बंदी जनता में से आये थे। पहला आदमी किसान था, और उसका नाम नावातोव था, दूसरा फैक्ट्री का मजदूर था और उसका नाम मार्केल कोन्द्रात्येव था। मार्केल उस समय क्रान्तिकारियों में शामिल हुआ जब उसकी उम्र काफी बडी हो चुकी थी—३५ वर्ष। लेकिन नावातोव १८ वर्ष की अवस्था में ही उनमें जा मिला था। गांव की पाठशाला की पढाई पूरी करने के बाद, प्रतिभासम्पन्न विद्यार्थी होने के नाते, उसे हाई स्कूल में दाखिला मिल गया। जितनी देर वह वहां पढता रहा, साथ में अन्य लडकों को पढा कर वह अपनी रोजी कमाता रहा। स्कूल छोडने पर उसे सोने का तमगा मिला। वह विश्वविद्यालय में दाखिल नहीं हुआ। अभी स्कूल की अन्तिम श्रेणी में पढ ही रहा था कि उसने निश्चय कर लिया कि वह जनता में जा कर अपने उपेक्षित भाइयों को ज्ञानदान देगा। और यही उसने किया भी। एक बडे से गांव में जा कर वह सरकारी दफ्तर में क्लर्क हो गया। शीघ्र ही उसे गिरफ्तार कर लिया गया। वह किसानों को किताबें पढ कर सुनाता था, साथ ही किसानों की उपज को बढाने तथा उसे बेचने के लिए उसने एक सहकारी संगठन की व्यवस्था की थी। अधिकारियों ने आठ महीने तक उसे जेलखाने में रखा। रिहाई

के बाद भी उस पर पुलिस की निगरानी रही। जब उसे छोड दिया गया तो नावातोव एक दूसरे गाव मे जा कर रहने लगा, एक स्कूल मे अध्यापक का काम ले लिया और फिर से वही काम करने लगा जो वह पहले गाव म करता रहा था। उसे फिर गिरफ्तार कर लिया गया और अब की बार चौदह महीने तक जेल में रहा। जेल मे उसकी राजनीतिक धारणाए और भी दृढ हो गयी।

इसके बाद उसे पम गुबेनिया म निर्वासित कर के भेज दिया गया। यहा से वह भाग गया। पकडे जाने पर उसे सात महीने कैद की सज़ा हुई और कैद से निकलने पर इसे निर्वासित कर के आर्खांगेल्स्क गुबेनिया भेज दिया गया। और वहा से याकूतिया म निर्वासित किया गया, क्योंकि उसने नय जार के प्रति प्रजा भक्ति की शपथ लेन मे इन्कार कर दिया था। इस तरह उसकी जवानी का आधा हिस्सा जेलो और जलावतनी मे कट गया था। परन्तु इन सब अनुभवो के बावजूद उसके स्वभाव म कटुता या उत्साह मे शिथिलता नही आ पायी। बल्कि इनसे उसे और भी प्रोत्साहन मिला। वह बडा सजीव आदमी था, उसकी पाचन शक्ति अदभुत थी, हर वक्त खुश, सक्रिय और ताज़ादम रहता था। उसे कभी भी किसी बात पर पश्चात्ताप नही होता था, न ही वह कभी भविष्य की चिन्ता करता था। अपनी सारी शक्ति, योग्यता तथा व्यावहारिक ज्ञान इस हेतु लगा देता था कि वह वतमान मे सक्रिय हो सके। जब जेल के बाहर होता तो वह अपने ध्येय की पूर्ति मे सचेष्ट रहता, मेहनतकश लोगो को, विशेषकर किसानो को शिक्षा देने तथा सगठित करने का काम करता। जब जेल मे होता तो उसी स्फूर्ति और व्यावहारिक कुशलता से बाहर की दुनिया से सम्पक स्थापित करने तथा अपने और अपने दल के जीवन को यथासम्भव सुखी बनाने म लगा रहता। उसका सबसे बडा गुण यह था कि वह एक सामाजिक व्यक्ति था। ऐसा जान पडता जैसे वह अपने लिए कुछ भी नही चाहता हो, वह थोडे म ही सन्तुष्ट था, परन्तु अपने साथियो के दल के लिए अत्यधिक चीज़ो की माग करता था और उनके लिए दिन-रात भूखे और उनीदे रह कर काम कर सकता था, भले ही यह काम शारीरिक हो या मानसिक। किसान होने के कारण उसमे कडी मेहनत करने की क्षमता थी, चीज़ो को बडे ध्यान से देखता था और अपना काम बडी कुशलता से करता था। सयत प्रकृति, तथा स्वभाव का विनम्र

थागि था। व रैयत नागा री दुरवस्था की चार ही बल्कि उनकी राय की भार भी अराधित ध्यान दता था। उगरी गिरफ्तार, अप्रसिद्धाना ग प्रगित विपरना की मां घर भी जीवित थी। ताताव मन भी ग्यारा गतागता गिरा रगता था। जब जेल म बाहर होता तो अक्सर ज्ञार पा जा कर रहता था। जितनी दर घर पर रहता, गाती मा व प्रकार काम म वहीं रहि के भार हाथ बटाता था। वहां वह अपने पुराने साथियों से मिलता, जिनके साथ वह बड़ा हुआ था। उनके साथ बैठ कर सस्ते तम्बाकू व दम लगाता, उनकी मुठभेड़ों म भाग लेता, और उन्हें सविस्तार समझाता कि किस भांति उन सबका आगे म ग्जा जा रहा है, और किस भांति व इस लूट व जाल को तोड़ कर बाहर निकल। क्रांति के बारे म उसके विचारों तथा नारों के पीछे यही धारणा रहती थी कि जनता को—जिसम म वह स्वयं जन्मा था—उसी स्थिति म रहने दिया जायगा जिसम वह अब है, केवल लोगों को पर्याप्त जमीन मिलगी, और उनके ऊपर जमींदार व सरकारी अफसर नहीं होंगे। उसके मतानुसार क्रांति के बाद लोगों के जीवन के आधारभूत स्वरूप को नहीं बदलना चाहिए, सारे ढांचे को नहीं तोड़ डालना चाहिए, केवल इस सुदृढ़, विशाल और सुन्दर इमारत की अन्दर वाली दीवारों को बदल देना चाहिए। इस पुरानी इमारत से नावातोव को मोह था। इस दृष्टि से उसका मत नावोद्वाराव तथा उसके अनुयायी मार्केल कोन्द्रात्येव के मत से पृथक था।

धर्म के सवाल पर भी उसके विचार बिल्कुल किसानों जैसे ही थे। आध्यात्मिक प्रश्नों—जैसे सभी स्रोतों का मूल स्रोत क्या है, या परलोक इत्यादि के बारे में उसने कभी सोचा तक न था। भगवान को वह कल्पना के समान समझता था, (अरागो की तरह) और इसकी उसे अभी तक आवश्यकता महसूस नहीं हुई थी। विश्व का उदगम कैसे हुआ, मूसा ठीक कहता है या डार्विन, इसकी उसे कोई चिंता नहीं थी। उसके साथी डार्विनवाद को बड़ा महत्व देते थे, लेकिन नावातोव की नजरों में वह भी मन का वैसा ही खिलौना मात्र था जैसी कि यह धारणा कि विश्व की रचना छ दिन के अन्दर हो गयी थी।

इस प्रश्न में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी कि संसार का उदगम कैसे हुआ। कारण, उसके सामने हर समय यही सवाल रहता था कि इस संसार में अच्छे से अच्छे ढंग से कैसे जिये। भविष्य के बारे में उसने

कभी नहीं सोचा था। कारण, उसकी आत्मा की गहराइयों में यह शान्त और अटल आस्था जड़ जमाये हुए थी कि जिस भांति पशु पक्षिया तथा पेड़-पौधा के संसार में कोई चीज मरती नहीं, केवल अपना रूप बदलती रहती है—खाद अनाज में, अनाज मुर्गी में, मेढक का लार्वा मेढक में, तितली का लार्वा तितली में, ओक वृक्ष का बीज ओक वृक्ष में इत्यादि—इसी तरह मनुष्य भी नहीं मरता, केवल उसका रूप बदलता रहता है। यह धारणा जो धरती पर पसीना बहाने वाले सभी किसानों में पायी जाती है, नाबातोव ने अपने पुरखाओं से ग्रहण की थी। इसी विश्वास के कारण उसे मृत्यु का कोई भय न था, और वह उन यन्त्रणाओं को बड़ी निडरता से सहन करता था जो उसे मृत्यु की ओर ले जा रही थी, परन्तु वह यह नहीं जानता था कि ऐसी चीजों को किन शब्दों में व्याख्या करे। काम से उसे प्रेम था और वह हमेशा किसी न किसी व्यावहारिक काम में लगा रहता था। वह अपने साथियों को भी सदा काम करने की प्रेरणा दिया करता था।

दूसरा राजनीतिक कैदी—मार्केल कोन्द्रात्येव—इससे बहुत ही भिन्न प्रकार का आदमी था। वह भी जनता में से निकल कर आया था। पन्द्रह बरस की उम्र में वह काम करने लगा था। उसी समय उसके मन में एक धूमिल सी भावना उठी थी कि उसके साथ अन्याय किया जा रहा है। इस भावना को दबाने के लिए उसने तम्बाकू और शराब पीना शुरू कर दिया। अन्याय का भास सबसे पहली बार उसे उस क्रिसमस के दिन हुआ जब फैक्ट्री के मालिक की पत्नी ने क्रिसमस के पेड़ को सजाने का आयोजन किया और उस पर फैक्ट्री के बच्चों को निमन्त्रित किया था। वहां पर उसे एक सस्ती सी सीटी, एक सेब, एक वरक चढ़ा अखरोट और एक इंजीर दी गयी, जबकि फैक्ट्री मालिक के बच्चों को ऐसे सुंदर उपहार दिये गये जो लगता था जैसे परी-लोक से आये हों। बाद में उसे मालूम हुआ कि उन पर पचास रूबल से अधिक रकम खर्च हुई थी। जब वह बीस बरस का हुआ तो उनकी फैक्ट्री में एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी महिला आयी और फैक्ट्री में ही मजदूरों की तरह काम करने लगी। कोन्द्रात्येव की योग्यता को देख कर उसने उसे किताबें और पैंफलेट देना शुरू कर दिया, उससे राजनीतिक मसलों पर बात करने लगी, उसे उसकी स्थिति की व्याख्या और उसे बदलने के उपाय बताने लगी। जब उसके दिमाग

मे यह बात साफ हुई कि उत्पीडन से उसके और अन्य लोगो को छुटकारा पाने की सभावना हो सकती है तो वतमान व्यवस्था का अन्याय उस और भी क्रूर और भयानक नज़र आने लगा। और उसके हृदय मे न केवल मुक्ति के लिए तडप उठने लगी, बल्कि उन लोगो को सज़ा देने के लिए भी, जिन्होंने इस क्रूर अन्याय की व्यवस्था की थी और इसे कायम रखे हुए थे। उसे बताया गया कि यह सभावना ज्ञान से पैदा होती है। अत कोन्द्रात्येव पूरे तन मन से ज्ञान सचय करने मे जुट गया। यह बात उसके दिमाग मे साफ नही थी कि किस भाति ज्ञान द्वारा समाजवादी आदर्श को क्रियान्वित किया जा सकता है। पर उसे यह विश्वास था कि जिस ज्ञान से उसे अपने जीवन की वतमान परिस्थितिया मे छिपे अन्याय का पता चला है, उसी ज्ञान से स्वय इस अन्याय का भी नाश होगा। इसके अतिरिक्त वह समझता था कि ज्ञानार्जन कर के वह औरो से ऊपर उठ जायेगा। इसलिए उसने तम्बाकू और शराब का सेवन छोड दिया, और अपना सारा खाली वक्त (जो स्टॉकरूम मे तबादला हो जाने के बाद उसे अधिक मिलने लगा था) अध्ययन मे व्यतीत करने लगा।

क्रान्तिकारी महिला उसे पढाने लगी। हर प्रकार के विषय के प्रति कोन्द्रात्येव की ज्ञान पिपासा तथा उसकी योग्यता देख कर वह हैरान रह गयी। दो साल के अन्दर ही अन्दर उसने बीजगणित, रेखागणित तथा इतिहास (जिसमे उसकी विशेष तौर पर रुचि थी) मे दक्षता प्राप्त कर ली। साथ ही कविता, गल्प, आलोचनात्मक, और विशेषकर समाजवादी साहित्य की जानकारी प्राप्त कर ली।

क्रान्तिकारी महिला पकडी गयी। उसके साथ कोन्द्रात्येव भी पकडा गया, क्योंकि अवैध किताबें उसके पास पायी गयी थी। दोनो कैद कर दिये गये और बाद मे उन्हे वोलोग्दा गुबेर्निया म निवासित कर के भेज दिया गया। यहा पर कोन्द्रात्येव का परिचय नोवोद्वोरोव से हुआ। उसने यहा और भी अधिक क्रान्तिकारी साहित्य पढा, और जो कुछ पढा उसे याद रखा, और उसकी समाजवादी धारणाए और भी पक्की हो गयी। जलावतनी से लौटने के बाद उसने एक बहुत बडी हडताल का नेतत्व किया, जिसमे फैक्ट्री को नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया और उसके सचालक को मार डाला गया। उसे फिर गिरफ्तार कर के जलावतन कर दिया गया।

जिस भांति मौजूदा आर्थिक व्यवस्था के बारे में उसके विचार नकारात्मक थे, उसी भांति धर्म के सम्बन्ध में भी उसके विचार नकारात्मक थे। जब उसे धर्म की, जिसकी उसे जन्मघुट्टी मिली थी, निरर्थकता का पता चला, तो उसने बड़े प्रयत्न से उसे अपने दिल और दिमाग में से निकाला—पहले डरते हुए और बाद में गहरे आनन्द का अनुभव करते हुए। अब वह पादरियों और धार्मिक सिद्धान्तों का बड़े क्रोध और विषैले ढंग से मज़ाक उड़ाया करता था, मानो उस कपट का बदला लेना चाहता हो जो धर्म द्वारा उस पर और उसके पुरखाओं पर किया गया था।

उसका रहन-सहन तपस्वियों का सा था, थोड़े में सन्तुष्ट। जो लोग बचपन से ही काम करने के आदी होते हैं, और जिनके पट्ठे खूब मजबूत हो गये होते हैं उनकी तरह कोन्द्रात्येव भी बहुत देर तक और बड़ी सुगमता से काम कर सकता था। हर प्रकार का शारीरिक श्रम बड़ी स्फूर्ति से कर सकता था। परन्तु जो चीज़ उसे सबसे ज्यादा पसन्द थी वह अवकाश था और यह उसे जेलखानों और पड़ाव घरों में मिल जाता था। इसमें वह अपना पठन पाठन जारी रख सकता था। आजकल वह मार्क्स के सकलन का पहला ग्रन्थ पढ़ रहा था, जिसे वह अपने थैले में छिपाये रहता था, मानो कोई बहुत बड़ा खज़ाना हो। नोवोद्वोरोव को छोड़ कर अपने सभी साथियों के साथ उसका रवैया रुखाई और उदासीनता का था। नोवोद्वोरोव पर उसे बड़ी निष्ठा थी सभी विषयों पर उसके तर्कों को वह अकाट्य सत्य मानता था।

स्त्रियों से उसे अत्यधिक घृणा थी। उसका मत था कि स्त्रियां हर प्रकार के उपयोगी काम में बाधक बनती हैं। परन्तु मास्लोवा पर उसे रहम आता था और उसके साथ वह बड़ी नर्मी से पेश आता था। कारण उसके विचार में मास्लोवा एक जीवन्त उदाहरण थी जिससे इस बात का पता चलता था कि किस भांति उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग के लोगों का शोषण करते हैं। इसी कारण वह नेख्लूदोव से भी घृणा करता था। नेख्लूदोव से वह बहुत कम बोलता था हाथ मिलाते वक्त कभी भी उसका हाथ नहीं दबाता था, केवल अभिवादन करते समय अपना हाथ आगे बढ़ा देता ताकि नेख्लूदोव उसे दबा दे।

आग जलने लगी जिससे अलावघर गरम हो गया। चाय तयार हो गयी और दूध मिला कर प्यालो और गिलासो मे डाल दी गयी। तख्ते पर बिछे तौलिये के ऊपर रस्क, ताजा गेहू की डबलरोटी, मक्खन, उबले हुए अण्ड, बछडे का सिर और टागें रख दी गयी। सब लोग तख्ते के उस हिस्से के पास आ गये जिससे खाने वाली मेज का काम लिया जाता था, और खाने बतियाने लगे। रान्त्सेवा एक बक्से पर बैठ कर चाय डाल डाल कर देन लगी। क्रिल्त्सोव को छोड कर सभी लोग उसके इर्दगिर्द जमा हो गये थे। क्रिल्त्सोव ने गीला ओवरकोट उतार दिया था और अब अपना सूखा कम्बल लपेटे अपनी जगह पर लेटा नेख्लूदोव से बात कर रहा था।

ये लोग सर्दी और बारिश म दिन भर चलते रहे थे। जब यहा पहुचे तो गदगी और कूडा-करकट से यह स्थान भरा पडा था। बडी मेहनत और कठिनाई से उन्होंने इसे साफ किया और जगह का रहने योग्य बनाया। और इसके बाद अब पेट भरने और गरम गरम चाय पीने के बाद व बड खुश थे और हसने चहकने लगे थे।

दीवार के पीछे से मुजरिम कैदियो के कदमो की आवाजें, उनके चीखने चिल्लाने और गालिया बकने की आवाजें आ रही थी, मानो इन राजनीतिक कैदियो को याद दिला रही हो कि वे कहा पर हैं, लेकिन वे इस वक्त मजे मे थे, इन आवाजो को सुन कर इनका आराम कम होने के बजाय कुछ बढता ही जान पडता था। समुद्र में किसी द्वीप पर पडे लोगो की तरह, ये लोग भी कुछ देर के लिए अपने को उस अपमान और क्लेश से बचे हुए महसूस कर रहे थे जो उन्ह चारो ओर से घेरे हुए था। इससे वे और भी अधिक खुश और उत्तेजित थे। उनकी वतमान स्थिति तथा आगे जो उनके साथ होगा, इन विषयो को छोड कर वे अन्य सभी विषयो पर बातें कर रहे थे। नौजवान पुरुषो और स्त्रियो के बीच, विशेषकर जब विवश हो कर उन्ह एक साथ रहना पडता हो जसा कि य लोग रह रह थ, तरह तरह के अनाखे रूप से मिश्रित आकषण पदा हो जाते हैं। यहा पर भी ऐसा ही हुआ था। लगभग सभी किसी न किसी से प्रेम करते थे। नावाद्वोरोव को सुदर युवती ग्राबेत्स से प्रेम था जिसके चेहरे पर हर वक्त मुस्कान खेला करती थी। ग्राबेत्स एक युवा, लापरवाह

लडकी थी जिसे क्रान्ति सम्बन्धी प्रश्नो से कभी कोई सरोकार न रहा था, परन्तु पढाई के दिनो मे तत्कालीन वातावरण के प्रभाव मे ग्रा कर वही कोई भूल कर बैठी, जिससे पकडी गई ग्रौर निर्वासित कर के भेज दी गयी। जिन दिनो उस पर मुकद्दमा चल रहा था उन दिनो ग्रौर बाद मे जेल तथा निर्वासन के दिनो मे उसे सबसे ग्रधिक रुचि इस बात मे थी कि वह पुरुषो को ग्रपनी ग्रोर ग्राकर्षित कर पाये। पहले भी, जिन दिनो ग्राजाद घूमा करती थी, तब भी उसके जीवन की मुख्य रुचि यही हुग्रा करती थी। ग्रब सफर के दौरान उसे इस बात से ढाढस मिलता था कि नावोद्वोराव उसे पसन्द करने लगा है ग्रत वह भी उससे प्रेम करने लगी। वेरा के हृदय मे प्रेम करने की ललक हर समय रहती परन्तु वह पुरुषो को ग्राकर्षित नही कर पाती थी। फिर भी उसके हृदय मे ग्राशा बनी रहती कि वह ग्रौर उसका प्रेमी गहरे ग्रनुराग से एक दूसरे से प्रेम करेगे। ग्रत वह कभी नाबातोव से ग्रौर कभी नोवाद्वोरोव से प्यार करने लगती। प्रेम से मिलती-जुलती ही भावना क्रिलत्सोव के हृदय मे मारीया पाव्लोव्ना के प्रति भी थी। वह उससे पुरुषो की तरह प्रेम करता था, मगर जानता था कि ऐसा प्रेम मारीया पाव्लोव्ना को पसन्द नही था। इसलिए वह ग्रपनी भावनाग्रो को उससे छिपाये रहता था, ग्रौर जब वह बडी कोमलता ग्रौर सहानुभूति से उसकी देखभाल करती तो वह इसे मैत्री ग्रौर कृतज्ञता का रूप दे कर व्यक्त किया करता था। नाबातोव ग्रौर रात्सेवा के प्रेम मे बडी जटिलता ग्रौर उलझाव था। जिस प्रकार मारीया पाव्लोव्ना कुमारी थी, उसी प्रकार रात्सेवा ग्रपने पति के प्रति पूर्णतया एकनिष्ठ थी।

ग्रभी उसकी ग्रायु केवल १६ वर्ष की थी ग्रौर वह स्कूल मे पढती थी जब वह रात्सेव से प्रेम करने लगी। रात्सेव उस समय पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय का छात्र था। विश्वविद्यालय की परीक्षा पास करने से पहले ही दोनो की शादी हो गयी। उस समय इस लडकी की उम्र १६ वर्ष की थी। जब उसका पति विश्वविद्यालय की चौथी कक्षा मे पढता था तो वह विद्यार्थियो के किसी ग्रान्दोलन की लपेट मे ग्रा गया। उसे पीटर्सबर्ग से निर्वासित कर दिया गया जिस पर वह क्रान्तिकारी बन गया। रात्सेवा उस समय डॉक्टरी की पढाई कर रही थी। उसने ग्रपनी पढाई छोड दी ग्रौर पति के साथ चली गई ग्रौर स्वयं भी क्रान्तिकारी बन गयी। वह ग्रपने पति को सबसे योग्य ग्रौर सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति मानती थी। यदि ऐसा

न मानती तो उससे प्रेम ही न करती। और जो प्रेम नही करती तो उससे शादी भी नही करती। पर जब उस सर्वोत्कृष्ट और सबसे योग्य व्यक्ति से प्रेम किया, और शादी की तो यह स्वाभाविक ही था कि जीवन तथा जीवन के ध्येय के बारे में भी उसके वही विचार हो जो उस सर्वोत्कृष्ट और सबसे योग्य व्यक्ति के थे। पहले इस पुरुष की दृष्टि मे ज्ञानोपार्जन जीवन का ध्येय था। अतः रात्सेवा ने भी यही ध्येय अपना लिया था। जब पति क्रान्तिकारी बना तो यह भी क्रान्तिकारी बन गयी। वह बड़ी स्पष्टता से यह सिद्ध कर दिखाता था कि मौजूदा व्यवस्था हमेशा नही चल सकती कि प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह इस व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष करे, और ऐसी राजनीतिक तथा आर्थिक हालत पैदा करने का प्रयत्न करे जिनमे व्यक्ति स्वच्छन्दता से विकास कर सके, इत्यादि। रात्सेवा समझती थी कि उसकी भी सचमुच यही धारणाए तथा भावनाए हैं, परन्तु वास्तव मे वह केवल अपने पति के विचारो को परम सत्य मानती थी। उसकी एक मात्र इच्छा थी कि उसके और उसके पति के एक ही विचार हो, उसकी आत्मा और उसके पति की आत्मा मिल कर एक हो जाय। इसी एक स्थिति मे ही उसे पूर्ण नैतिक सन्तोष प्राप्त हो सकता था।

अपने पति और बेटे से अलग रहना उसके लिए घोर यन्त्रणा के समान था (बच्चे को उसकी मा ने अपने पास रख लिया था), पर उसने यह भी दृढ़ता और शान्ति से सहन किया क्योकि वह जो कुछ कर रही थी वह अपने पति की खातिर था, और एक ऐसे ध्येय की खातिर जिसे वह निःसन्देह श्रेयस्कर मानती थी क्योकि उसका पति उसके लिए काम कर रहा था। उसका पति हर वक्त उसके हृदय मे विचरता था, इसलिए उससे दूर रहते हुए भी वह किसी अन्य व्यक्ति से प्रेम नही कर सकती थी, ठीक उसी तरह जिस तरह वह उसके संग रहते हुए किसी अन्य व्यक्ति से प्रेम नही कर सकती थी। परन्तु नावातोव के अनुरक्त तथा पवित्र प्रेम से उसका हृदय प्रभावित हुए बिना न रह सका। यह नेक, दृढ़ विचारो वाला पुरुष उसके पति का मित्र था और उससे अपनी बहिन की तरह व्यवहार करता था। परन्तु इस व्यवहार मे कोई और तत्व भी आने लगा था जिससे दोनो डर से गये थे, फिर भी इससे उनका यातनापूर्ण जीवन अधिक रोचक हो उठा था।

इस तरह इस सारी मण्डली मे केवल मारीया पाव्लोव्ना और कान्द्रत्येव ही दो ऐसे व्यक्ति थे जो प्रेम से अछूते रहे थे।

त्रिनत्सोव के पास बैठा नख्लूदोव बात कर रहा था। उसे आशा थी कि हमेशा की तरह आज भी चाय के बाद कात्यूशा से मिल कर बात कर सकेगा। और विषयों पर चर्चा करने के अलावा नख्लूदोव ने क्रिलत्सोव को माकार के जुर्म की कहानी सुनाई और उससे माकार ने जो प्रार्थना की थी वह भी कह सुनाई। क्रिलत्सोव बड़े ध्यान से सब सुनता रहा उसकी कान्तिपूर्ण आँखें सारा वक्त नख्लूदोव के चेहरे पर लगी रहीं।

"हां," क्रिलत्सोव ने सहसा कहा "मेरे मन में अक्सर यह विचार उठता है कि इस यात्रा में हम सारा वक्त उनके साथ चलते हैं—और ये कौन लोग हैं? ये वही लोग हैं जिनकी खातिर हम जा रहे हैं फिर भी हम उन्हें नहीं जानते। जानते ही नहीं, हम उन्हें जानना चाहते भी नहीं। और इससे भी बुरी बात यह है कि ये हमसे नफरत करते हैं, और हमें अपना दुश्मन समझते हैं। कितनी भयानक स्थिति है!

"इसमें भयानक क्या है?" जब नोवोद्वोरोव के कानों में बात पड़ी तो वह बोल उठा। "जनता हमेशा शक्ति की पूजा करती है, केवल शक्ति ...। आज सरकार के पास ताकत है तो वह सरकार की पूजा करती है और हमसे नफरत करती है। कल हमारे पास ताकत होगी तो वह हमारी पूजा करने लगेगी," उसने अपनी तड़कती आवाज़ में कहा।

उसी वक्त दीवार के पीछे से गालियों की बौछाड़ और बेड़ियां खनकने की आवाज़ आयी। कोई चीज़ दीवार से टकरा रही थी साथ ही रोने और चीखने की आवाज़ आ रही थी। किसी को पीटा जा रहा था और कोई चिल्ला चिल्ला कर पुकार रहा था "मार डाला! मदद करो! कोई मदद करो!"

"ज़रा सुनो! ये इंसान हैं या दरिन्दे! भला इनमें और हममें क्या मेल हो सकता है?" नोवोद्वोरोव ने स्थिर आवाज़ में कहा।

"तुम उन्हें दरिन्दे कहते हो, और यहां अभी नेख्लूदोव मेरे सामने किसी ऐसी ही घटना का ज़िक्र कर रहा था," क्रिलत्सोव ने चिढ़ कर कहा और माकार का किस्सा सुनाने लगा कि किस तरह वह अपने गांव के एक आदमी की जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल रहा है। "यह दरिन्दों का काम नहीं, यह सच्ची वीरता का काम है।"

न मानती तो उससे प्रेम ही न करती। और जो प्रेम नही करती तो उससे शादी भी नही करती। पर जब उस सर्वोत्कृष्ट और सबसे योग्य व्यक्ति से प्रेम किया, और शादी की तो यह स्वाभाविक ही था कि जीवन तथा जीवन के ध्येय के बारे मे भी उसके वही विचार हो जो उस सर्वोत्कृष्ट और सबसे योग्य व्यक्ति के थे। पहले इस पुरुष की दृष्टि म धनोपार्जन जीवन का ध्येय था। अत रालेका ने भी यही ध्येय अपना लिया था। जब पति क्रान्तिकारी बना तो यह भी क्रान्तिकारी बन गयी। वह बडी स्पष्टता से यह सिद्ध कर दिखाता था कि मौजूदा व्यवस्था हमेशा नही चल सकती कि प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह इस व्यवस्था के विरुद्ध सघर्ष करे, और ऐसी राजनीतिक तथा आर्थिक हालत पैदा करने का प्रयत्न करे जिनमे व्यक्ति स्वच्छन्दता से विकास कर सके, इत्यादि। रालेका समझती थी कि उसकी भी सचमुच यही धारणाए तथा भावनाए हैं, परन्तु वास्तव मे वह केवल अपने पति के विचारो को परम सत्य मानती थी। उसकी एक मात्र इच्छा थी कि उसके और उसके पति के एक ही विचार हो, उसकी आत्मा और उसके पति की आत्मा मिल कर एक हो जाय। इसी एक स्थिति मे ही उसे पूर्ण नैतिक सन्तोष प्राप्त हो सकता था।

अपने पति और बेटे से अलग रहना उसके लिए घोर यन्त्रणा के समान था (बच्चे को उसकी मा ने अपने पास रख लिया था), पर उसने यह भी दृढता और शान्ति से सहन किया क्योंकि वह जो कुछ कर रही थी वह अपने पति की खातिर था, और एक ऐसे ध्येय की खातिर जिसे वह निसन्देह श्रेयस्कर मानती थी क्योंकि उसका पति उसके लिए काम कर रहा था। उसका पति हर वक्त उसके हृदय म विचरता था, इसलिए उससे दूर रहते हुए भी वह किसी अन्य व्यक्ति से प्रेम नहीं कर सकती थी, ठीक उसी तरह जिस तरह वह उसके साथ रहते हुए किसी अन्य व्यक्ति से प्रेम नहीं कर सकती थी। परन्तु नावातोव के अनुरक्त तथा पवित्र प्रेम से उसका हृदय प्रभावित हुए बिना न रह सका। यह नेक, दृढ विचारो वाला पुरुष उसके पति का मित्र था और उसके साथ अपनी बहिन की तरह व्यवहार करता था। परन्तु इस व्यवहार म कुछ और तत्त्व भी आने लगा था जिससे दोनो डर से गये थे, फिर भी इससे उनका पारस्परिक जीवन अधिक सरस हो उठा था।

इस तरह इस सारी मण्डली म केवल मारीया पाब्लोब्ना और कोन्द्रात्येव ही दो ऐसे व्यक्ति थे जो प्रेम से अछूते रहे थे।

त्रिलत्सोव के पास बैठा नेख्लूदोव बात कर रहा था। उसे आशा थी कि हमेशा की तरह आज भी चाय के बाद कात्यूशा से मिल कर बात कर सकेगा। और विषयों पर चर्चा करने के अलावा नख्लूदोव ने त्रिलत्सोव को माकार के जुर्म की कहानी सुनाई और उससे माकार ने जो प्रार्थना की थी वह भी कह सुनाई। त्रिलत्सोव बड़े ध्यान से मन सुनता रहा, उसकी कान्तिपूर्ण आंखें सारा वक्त नेख्लूदोव के चेहरे पर लगी रहीं।

"हां," त्रिलत्सोव ने सहसा कहा, "मेरे मन में अक्सर यह विचार उठता है कि इस यात्रा में हम सारा वक्त उनके साथ चलते हैं—और ये कौन लोग हैं? ये वही लोग हैं जिनकी खातिर हम जा रहे हैं फिर भी हम उन्हें नहीं जानते। जानते ही नहीं, हम उन्हें जानना चाहते भी नहीं। और इसमें भी बुरी बात यह है कि ये हमसे नफरत करते हैं, और हमें अपना दुश्मन समझते हैं। कितनी भयानक स्थिति है।"

"इसमें भयानक क्या है?' जब नोवोद्वोरोव के कानों में बात पड़ी तो वह बोल उठा। "जनता हमेशा शक्ति की पूजा करती है, केवल शक्ति की। आज सरकार के पास ताकत है तो वह सरकार की पूजा करती है और हमसे नफरत करती है। कल हमारे पास ताकत होगी तो वह हमारी पूजा करने लगेगी," उसने अपनी तड़कती आवाज़ में कहा।

उसी वक्त दीवार के पीछे से गालियों की बौछाड़ और बेड़ियां खनकने की आवाज़ आयी। कोई चीज़ दीवार से टकरा रही थी, साथ ही रोने और चीखने की आवाज़ आ रही थी। किसी को पीटा जा रहा था और कोई चिल्ला चिल्ला कर पुकार रहा था, "मार डाला! मदद करो! कोई मदद करो!"

"ज़रा सुनो! ये इन्सान हैं या दरिन्दे! भला इनमें और हममें क्या मेल हो सकता है?" नोवोद्वोरोव ने स्थिर आवाज़ में कहा।

"तुम उन्हें दरिन्दे कहते हो, और यहां अभी नेख्लूदोव मेरे सामने किसी ऐसी ही घटना का ज़िक्र कर रहा था,' त्रिलत्सोव ने चिढ़ कर कहा और माकार का किस्सा सुनाने लगा कि किस तरह वह अपने गांव के एक आदमी की जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल रहा है। "यह दरिन्दों का काम नहीं, यह सच्ची वीरता का काम है।'

"छिछली भावुकता!" नोवोद्वोरोव ने तिरस्कारपूर्ण स्वर में जोड़ा। "हमारे लिए यह समझना बड़ा कठिन है कि इन लोगों की क्या भावनाएं हैं, या इनकी हरकतों के पीछे कौन सी प्रेरणा काम करती है। तुम्हें इसमें उदारता नज़र आती है, पर क्या मालूम यह काम उस दूसरे मुजरिम के प्रति ईर्ष्यावश किया जा रहा हो।"

"क्या कारण है कि तुम किसी में भी कोई अच्छाई देखना नहीं चाहते?" सहसा मारीया पाव्लोव्ना गरम हो कर बोल उठी।

"जो चीज़ मौजूद ही न हो उसे देखा कैसे जा सकता है?"

"मौजूद तो है ही जब एक आदमी ऐसी भयानक मौत का खतरा मोल ले रहा है।"

"मेरे विचार में," नोवोद्वोरोव बोला, "यदि हम कुछ करना चाहते हैं तो उसके लिए सबसे पहली शर्त यह है" (कोंद्रात्येव जो लैम्प की रोशनी में बैठा किताब पढ़ रहा था, किताब नीचे रख कर बड़े ध्यान से अपने गुरू का एक एक शब्द सुनने लगा) "कि हम कपोल-कल्पना को छोड़ कर वास्तविकता को देखें। यथाशक्ति हमें जनता के लिए सब कुछ करना चाहिए, और बदले में उससे किसी चीज़ की भी आशा नहीं करनी चाहिए। जब तक जनता उस जड़ता की स्थिति में रहे जैसी कि वह इस समय है, तो हम उसके लिए काम करेंगे, वह हमारे कामों में हमारे साथ भाग नहीं ले सकेगी।" वह इस तरह बोल रहा था जैसे भाषण दे रहा हो। "इसलिए जनता से यह उम्मीद करना कि वह हमारी सहायता करेगी, जब कि उसके विकास की प्रक्रिया शुरू नहीं हो पायी—जिस प्रक्रिया के लिए हम उसे तैयार कर रहे हैं—तो यह अपने को धोखा देना होगा।"

"किस विकास की प्रक्रिया?" क्रिल्त्सोव ने पूछा। उसका चेहरा गुस्से से लाल हो रहा था। "हम कहते तो यह हैं कि हम निरंकुश तानाशाही का विरोध करते हैं, मगर यह तानाशाही नहीं तो क्या है? इससे भयानक तानाशाही क्या होगी?'

"इसमें कोई तानाशाही नहीं है," नोवोद्वोरोव ने धीरे से कहा। "मैं केवल यह कहता हूँ कि मैं उस रास्ते को जानता हूँ जिस पर जनता को चलना चाहिए, और उसे वह रास्ता मैं दिखा सकता हूँ।'

'पर तुम्हें इस बात का यकीन कैसे हो गया कि जो रास्ता तुम दिखाओगे वही सही रास्ता है? क्या यह वैसी ही तानाशाही नहीं जैसी

कि फ्रासीसी क्रान्ति के समय हुई थी जब इन्क्विज़ीशन और कामिया का बोलबाला होने लगा था। वे भी तो जानते थे कि केवल उन्ही का रास्ता सही रास्ता है, और विज्ञान द्वारा सुझाया हुआ है।

"उनसे भूल हुई तो इसका यह अर्थ नही कि मैं भी भूल कर रहा हू। इसके अलावा सिद्धान्तवादियो के प्रलाप और उन तथ्यो के बीच बडा फरक है जो ठोस आर्थिक विज्ञान पर आधारित है।"

नोवोद्वारोव की आवाज कमरे म गूज रही थी। सभी चुप थे, केवल वही बोले जा रहा था।

"ये लोग सारा वक्त झगडते रहते है," क्षण भर के लिए जब शान्ति हुई तो मारीया पाव्लोव्ना ने कहा।

"तुम्हारी अपनी राय इस बारे म क्या है, तुम खुद क्या सोचती हो?" नेख्लूदोव ने मारीया पाव्लोव्ना से पूछा।

"मेरे विचार म क्रिलत्सोव ठीक कहता है कि हम जनता पर अपने विचार नही ठोसने चाहिए।"

"और तुम्हारा क्या विचार है कात्यूशा?" नेख्लूदोव ने मुस्करा कर पूछा और उसके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। उसे डर था कि कही कात्यूशा कोई बेढब सी बात न कह दे।

"मैं सोचती हू कि साधारण लोगो के साथ जुल्म होता है' कात्यूशा बोली और उसका चेहरा लाल हो गया, "मेरा ख्याल है उनके साथ बहुत भयानक जुल्म होता है।"

"ठीक है, मास्लोवा तुम बिल्कुल ठीक कहती हो,' नावातोव ने चिल्ला कर कहा। "जनता के साथ भयानक जुल्म होता है, यह जुल्म बन्द होना चाहिए, और इसे बन्द करना ही हमारा एकमात्र कर्तव्य है।'

"क्रान्ति के उद्देश्य की यह अनोखी परिभाषा है,' नोवोद्वारोव ने चिढ कर कहा और चुपचाप सिगरेट पीने लगा।

"इसके साथ बात करने को मेरा जी नही चाहता," क्रिलत्सोव ने फुसफुसा कर कहा और चुप हो गया।

'बाते करने का कोई लाभ भी नही," नेख्लूदोव बोला।

गभी श्रान्तिकारी नावाद्वाराव को बड़ी इज्जत करते थ। वह बड़ा विद्वान ग्रादमी था ग्रौर सभी उस बड़ा बुद्धिमान समझते थे। फिर भी नेग्नूदाव उसकी गणना उन क्रातिकारियों म करता था जिनका नैतिक स्तर श्रौसत स्तर स नीचा होते हुए उसके स्तर स बहुत ही नीचा था। इस ग्रादमी म प्रखर बौद्धिक शक्ति थी, परन्तु आत्मश्लाघा इसस भी कहा बढ चढ कर थी। वह उसकी बौद्धिक शक्ति स कहीं ज्यादा बढ चुकी थी।

अपन ग्रात्मिक जीवन म यह सिमनसान क बिल्कुल उलट था। सिमनसन मूलत पुरुषसुलभ चरित्र वाले उन लोगो म स था जो हर काम ग्रपनी बुद्धि के ग्रनुसार करते हैं, ग्रौर उनकी बुद्धि ही उन कामो का निश्चय भी करती है। इसके विपरीत नोवोद्वाराव उन लोगो म से था,—य मूलत नारी चरित्र के होते है,—जो हर काम भावनाग्रो की प्रेरणा म करते हैं, ग्रौर ग्रपनी बुद्धि का किसी हद तक उन्ह क्रियान्वित करने मे ग्रौर किसी हद तक उन्ह सच्चा ठहराने के लिए तर्क करने म लगाते है।

नोवाद्वोराव ग्रपने क्रान्तिकारी काम की बडी वाक्पटुता तथा प्रभावशाली ढग से व्याख्या किया करता था। परन्तु नेग्नूदोव के विचार म यह सारा क्रातिकारी काम स्वय ऊचा उठने ग्रौर सबसे ऊपर का स्थान ग्रहण करने की लालसा पर ग्राधारित था। शुरू शुरू म लोगो के विचार ग्रात्मसात करने ग्रौर उन्ह यथार्थ शब्दो म व्यक्त करने की ग्रपनी क्षमता के कारण उसे हाई स्कूल तथा विश्वविद्यालय के छात्रो तथा ग्रध्यापको मे सर्वोच्च स्थान मिला क्योकि वहा पर ऐसी क्षमता की बेहद कद्र होती है। नावोद्वोरोव सन्तुष्ट था। परन्तु जब उसने पढाई खत्म कर ली ग्रौर डिप्लोमा ले लिया, ग्रौर यह सर्वोच्च स्थिति छूट गई, तो उसने फौरन ग्रपने विचार बदल लिये ताकि किसी दूसरे क्षेत्र मे यही सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर सके (क्रिलत्सोव का यही कहना था जिसे नोवोद्वोरोव ग्रच्छा नहीं लगता था)। पहले नोवोद्वोरोव नरम उदारवादी हुग्रा करता था, ग्रब बदल कर नरोदवादियो का कट्टर ग्रनुयायी बन गया। नोवाद्वोराव का स्वभाव उन नैतिक तथा ललित भावनाग्रो स सर्वथा शून्य था जिनसे मनुष्य के मन मे सन्देह तथा सकोच पैदा होते है। इसलिए शीघ्र ही

क्रान्ति जगत में उसने ऐसा स्थान प्राप्त कर लिया जिससे उसे सन्तोष हुआ। यह स्थान पार्टी लीडर का था। एक बार अपना मार्ग चुन लेने के बाद उसने कभी सन्देह अथवा संकोच नहीं किया, इसलिए उसे पूर्ण विश्वास था कि उसने कभी कोई भूल नहीं की। उसे हर चीज बिल्कुल सरल, स्पष्ट तथा निश्चित नज़र आती थी। और उसके विचार इतने संकीर्ण तथा एकांगी थे कि यह स्वाभाविक भी था। बस, केवल तर्कसंगत होने की ज़रूरत थी, जैसे कि वह स्वयं कहा करता था। उसमें आत्मविश्वास की मात्रा इतनी अधिक थी कि या तो लोग उससे दूर हट जाते थे या फिर उसकी सत्ता स्वीकार कर लेते थे। उसका कार्यक्षेत्र तरुण युवकों तथा युवतियों के बीच था। वे लोग इसके असीम आत्मविश्वास को विद्वत्ता और गहराई समझ बैठते थे। अधिकांश उसकी धाक मान लेते जिस कारण क्रान्तिकारी मंडलियों में उसे बहुत सफलता मिली थी। उसका काम एक ऐसे विद्रोह के लिए ज़मीन तैयार करना था जिसमें सत्ता उसके हाथ आ जायगी, और वह एक विधान-सभा की व्यवस्था करेगा। विधान-सभा में उसके द्वारा तैयार किया गया कार्यक्रम प्रस्तुत होगा। उसे यकीन था कि उसका यह कार्यक्रम सभी समस्याओं का समाधान कर देगा और अनिवार्यतः यह क्रियान्वित होगा।

उसकी दृढ़ता तथा साहस के लिए उसके साथी उसका मान करते थे, परन्तु उससे प्रेम नहीं करते थे। उसे किसी से भी प्रेम नहीं था, और प्रत्येक प्रतिभावान् व्यक्ति को वह अपना प्रतिद्वन्द्वी समझता था। और यदि उसका वश चलता तो सभी के साथ ऐसा ही व्यवहार करता जैसे बन्दरों में बूढ़ा नर बन्दर छोटे बन्दरों से करता है। यदि उसका वश चलता तो अन्य लोगों की खोपड़ी में से वह उनका दिमाग नोच निकालता, उनकी क्षमता निकाल देता ताकि वे इसके दिमागी करिश्मों में बाधा न डाल पायें। उसका व्यवहार केवल उन लोगों के प्रति अच्छा होता था जो उसके आगे सिर नवाते थे। आजकल, इस यात्रा में उसका व्यवहार कोंद्रात्येव से जिस पर उसके प्रचार का बड़ा प्रभाव था, तथा वेरा बोगोदूखोव्स्काया और नन्हीं सुन्दरी ग्राबेत्स से अच्छा था जो दोनों उससे प्रेम करती थीं। सिद्धान्ततः तो वह स्त्री-आन्दोलन के हक में था, लेकिन मन की गहराइयों में वह सभी स्त्रियों को मूर्ख और नगण्य समझता था, केवल उन स्त्रियों को छोड़ कर जिनसे वह भावुकतावश प्रेम करने लगता था, जिस तरह

आजकल वह ग्रावेत्स से करता था। ऐसी स्त्रिया उसे विलक्षण लगती थी और वह मानता था कि अकेले उसी मे उनके सूक्ष्म गुणो का पहचानने की क्षमता है।

स्त्रिया और पुरुषो के बीच कैसा सम्बध होना चाहिए? यह प्रश्न भी अन्य प्रश्नो की तरह उसे बहुत सरल और स्पष्ट जान पडता था और उसने इसका पूरा पूरा हल ढढ लिया था, और वह था स्वतन्त्र सभोग।

उसके दो पत्निया थी, एक जो केवल नाममात्र से पत्नी थी, और दूसरी वास्तव मे पत्नी थी, परन्तु उससे वह अलग हो चुका था, क्योकि उसे विश्वास हो गया था कि उनके बीच सच्चा प्रेम नही है। इसलिए अब वह ग्रावेत्स के साथ स्वतन्त्र सभोग का सम्बध स्थापित करने की सोच रहा था।

नोवोद्वोरोव को नेख्लूदोव से घृणा थी। वह कहा करता कि नेख्लूदोव मास्लोवा से "चोचले ले रहा है", पर घृणा का मुख्य कारण यह था कि नेख्लूदोव बडे स्वतत्र मन से मौजूदा व्यवस्था के दोषो तथा उन्हें दूर करने के साधनो पर विचार किया करता था। नेख्लूदोव का विचार करने का ढग नोवोद्वोरोव के ढग से पृथक था और बिल्कुल अपना था, एक प्रिंस का अर्थात एक मूर्ख का ढग था। नेख्लूदोव नोवोद्वोरोव के इस रवय का जानता था। इस यात्रा मे उसके मन की स्थिति सामान्यत बडी सदभावनापूर्ण थी। इसके बावजूद वह इस आदमी के साथ "जैसे को तैसे" का व्यवहार करता था और उस घृणा को दबा नही पाता था जो उसके मन मे नोवोद्वोरोव के प्रति उठती थी। इसी कारण मन ही मन वह दुखी था।

१६

साथ वाले कमरे मे से सरकारी कर्मचारियो की आवाजे आने लगी। सभी कैदी चुप हो गये। एक सॉर्जेंट कमरे मे दाखिल हुआ, और उसके पीछे पीछे दो कॉनवाय के सिपाही अन्दर आये। जाच का वक्त हो गया था। सॉर्जेंट ने एक एक कर के सभी कैदियो को गिना। जब नेख्लूदोव की बारी आयी तो बडे दोस्ताना ढग से बोला—

"जाच के बाद आप यहा नही ठहर सकते, प्रिंस। आपको अब चले जाना चाहिए।"

नेख्लूदोव जानता था कि इसका क्या मतलब है। वह सार्जेंट के पास गया और तीन रूबल का एक नोट उसके हाथ में रख दिया।

"ओह, आप जैसों का कोई क्या इलाज करे। अगर मन चाहता है तो बेशक थोडी देर और रुक जाइये।"

सार्जेंट कमरे में से बाहर जाने ही वाला था जब एक और सार्जेंट ने कमरे में प्रवेश किया। उसके पीछे पीछे एक कैदी चला आ रहा था। कैदी पतले छरहरे बदन का आदमी था, मुंह पर छोटी सी दाढी और एक आख के नीचे चोट का निशान था।

"मैं लडकी को लेने के लिए आया हूं," कैदी ने कहा।

"ओह, पिता जी आ गये!" एक बच्चे की खिलखिलाती आवाज सुनाई दी। फिर रात्सेवा के पीछे से एक सुनहरी बालों वाला सिर नमूदार हुआ। रात्सेवा लडकी के लिए कात्यूशा तथा मारीया पाव्लोव्ना की मदद से अपने ही एक पेटीकोट में से एक कुर्ता बना रही थी।

"हां, बेटी, मैं ही आया हूं," कैदी ने प्यार से कहा। उसका नाम बुज़ोव्किन था।

"यहां यह बडे आराम से रहती है," बुज़ोव्किन के छिले पिटे चेहरे की ओर दयापूर्ण आखों से देखते हुए मारीया पाव्लोव्ना ने कहा, "इसे हमारे पास ही रहने दीजिये।"

"रानी दीदी मेरे लिए नये कपडे बना रही है" रात्सेवा के हाथ में कपडे को दिखाती हुई लडकी बोली, "कितने अच्छे कपडे बना रही है, कितने सुदर!" लडकी बोलती गई।

"तुम हमारे पास सोना चाहती हो?" रात्सेवा ने लडकी को सहलाते हुए पूछा।

"हां, सोना चाहती हूं। और पिता जी भी।"

रात्सेवा के चेहरे पर मुस्कराहट खिल उठी।

"नहीं, पिता जी नहीं सो सकते। तो हम इसे यहीं पर रखेंगे।" पिता की ओर घूम कर रात्सेवा ने कहा।

"अच्छी बात है, इसे यहीं छोड जाओ," पहले सार्जेंट ने कहा और दूसरे सार्जेंट को साथ ले कर बाहर चला गया।

ज्यों ही सार्जेंट बाहर निकले तो नाबातोव बुज़ोव्किन के पास गया, और उसका कंधा थपथपा कर बोला—

"कहो दोस्त, क्या यह ठीक है कि कार्मानोव अपनी जगह बदलना चाहता है?"

क्रुजोल्त्सिन का विनम्र, दयालुतापूर्ण चेहरा सहसा उदास हो उठा, और एक धुंधला सा पर्दा उसकी आंखों के आगे छा गया।

"हमने कुछ नहीं सुना," उसने धीरे से कहा, फिर उसी धुंधलके मे देखते हुए उसने बच्ची की ओर घूम कर कहा, "अक्स्यूत्का, तो जान पड़ता है तुम अपनी रानियां के साथ ही रहना चाहती हो।" और जल्दी जल्दी बाहर चला गया।

"तबादले की बात ठीक है, और उसे यह अच्छी तरह पता है," नाबातोव ने कहा। "तुम क्या करोगे?"

"अगले शहर पहुंच कर मैं अधिकारियों को बता दूंगा। मैं दोनों कैदियों को पहचानता हूं," नेख्लूदोव ने कहा।

सभी चुप हो गये। उन्हे डर लगन लगा कि वादविवाद फिर शुरू हो जायेगा।

सिमनसन सिर के नीचे दोनो बाजू रखे चुपचाप लेटा हुआ था। अब वह उठ खड़ा हुआ और बैठे हुए लोगों के इर्दगिर्द बड़े ध्यान से चक्कर काट कर, नेख्लूदोव के पास गया।

"क्या इस वक्त मैं तुमसे बात कर सकता हूं?"

"जरूर," और नेख्लूदोव उठ कर उसके पीछे पीछे जाने लगा।

कात्यूशा ने आंख उठा कर ऊपर देखा। उसके चेहरे पर हैरानी का भाव था। जब उसकी आंखें नेख्लूदोव की आंखों से मिली तो वह शर्मा गयी और सिर हिला दिया।

"मैं इस बारे मे तुमसे बात करना चाहता हूं," जब दोनों गलियारे मे आ गये तो सिमनसन ने कहना शुरू किया। गलियारे मे कैदियों की आवाजें और चिल्लाहट और भी ऊंची सुनाई दे रही थी। नेख्लूदोव ने मुंह बनाया लेकिन सिमनसन इस शोर से बिल्कुल विचलित नहीं हुआ जान पड़ता था। "मैं मास्लोवा और तुम्हारे सम्बन्धों को जानता हूं," अपनी स्नेहसिक्त आंखों से बड़े ध्यान से सीधे नेख्लूदोव की आंखों में देखते हुए उसने आगे कहा। "इसलिए मेरा कर्तव्य है कि " वह अपनी बात जारी रखना चाहता था, किंतु उसे रुकना पड़ा क्योंकि दरवाजे के पास ही दो आदमी सहसा झगड़ने और चिल्लाने लगे थे।

"मैंने वह जो दिया है गधे रही पर वे मर नहीं थे!" एक आदमी ने चिल्ला कर कहा।

"ख़ुदा तुम्हें गारत करे, शैतान कहीं के!" दूसरा आवाज़ में ज़ोर से चिल्ला रहा था।

इसी वक्त मारीया पाव्लोव्ना बाहर गलियारे में आ गया।

"यहां कोई कैसे बात कर सकता है?" उसने कहा। "तुम इस कमरे में चले जाओ। अकेली वेरा ही उस कमरे में है।" कहती हुई वह दूसरे दरवाज़े में से जा कर एक छोटे से कमरे में दाखिल हुई। प्रत्यक्षतः यह कमरा कैद-तनहाई के लिए बनाया गया था लेकिन इस समय राजनीतिक महिला कैदियों को दे दिया गया था। वेरा बोगोदूखोव्स्काया मुंह सिर लपेटे, बिस्तर पर लेटी थी।

"उसका सिर दुख रहा था इसलिए सो गयी है। वह तुम्हारी बात नहीं सुन सकती, और मैं यहां से जा रही हूं," मारीया पाव्लोव्ना ने कहा।

"नहीं नहीं, बल्कि तुम यहीं पर रहो," सिमनसन बोला। "मेरा कुछ भी किसी से छिपा हुआ नहीं है—कम से कम तुमसे तो बिल्कुल ही नहीं।"

"अच्छी बात है," मारीया पाव्लोव्ना ने कहा और बच्चों की तरह अपना सारा शरीर दायें-बायें झुलाती हुई वापस सोने वाले तख्ते के पास जा पहुंची और उनकी बातें सुनने के लिए बैठ गयी। उसकी सुन्दर भूरी आंखें दूर किसी जगह पर लगी हुई थीं।

"तो सुनो, मुझे तुमसे यह काम है," सिमनसन ने दोहरा कर कहा। "कात्यूशा मास्लोवा के साथ तुम्हारे सम्बन्ध का मुझे मालूम है। इसलिए मेरा यह फ़र्ज़ हो जाता है कि मैं उस स्त्री के साथ अपने सम्बन्ध के बारे में तुम्हें साफ़ साफ़ बता दूं।"

नेख्लूदोव मन ही मन उस सादगी और साफ़गोई का आदर किए बिना न रह सका जिससे सिमनसन बात करने लगा था।

"क्या मतलब?" उसने पूछा।

"मेरा मतलब यह है कि मैं कात्यूशा मास्लोवा से शादी करना चाहता हूं।"

"क्या कहा!" मारीया पाव्लोव्ना ने हैरान हो कर कहा और सिमनसन की ओर देखने लगी।

"मैंने निश्चय किया है कि उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखूगा,' सिमनसन कहता गया।

"तो इसमे मैं क्या कर सकता हू ? यह उसका अपना मामला है,' नेख्लूदोव ने कहा।

"पर वह तुम्हारे बिना किसी निश्चय पर नही पहुच पायेगी।"

"क्यो ?"

"क्योकि जब तक उसके साथ तुम्हारे सम्बन्ध का कोई फैसला नहीं हो जाता, वह कोई फैसला नही कर सकती।"

"जहा तक मेरा ताल्लुक है, इसका फैसला हो चुका है। मैं केवल अपना फर्ज अदा करना चाहता हू, और उसके दुर्भाग्य का बोझ हल्का करना चाहता हू। पर मैं किसी सूरत मे भी उस पर कोई दबाव नही डालगा।"

"हा, लेकिन वह तुम्हारी कुर्बानी कबूल करना नही चाहती।'

"यह कोई कुर्बानी नही है।"

"और मैं जानता हू कि यह मास्लोवा का आखिरी फैसला है।"

"तो फिर मेरे साथ इसकी चर्चा करने की कोई जरूरत नही," नेख्लूदोव ने कहा।

"वह चाहती है कि तुम इस बात को स्वीकार करो कि तुम्हारा भी वही विचार है जो उसका है।"

"मैं यह कैसे स्वीकार कर लू कि जिस काम को मैं अपना कर्तव्य समझता हू, उसे नही करू ? मैं केवल इतना कह सकता हू कि मैं आज़ाद नही हू, पर वह आज़ाद है।"

सिमनसन चुप रहा। फिर, थोडी देर तक सोचने के बाद बोला—

"अच्छी बात है, तो मैं उससे बात करूगा। तुम यह मत समझो कि मैं उस पर फिदा हू," वह कहता गया, "मैं उससे इस नाते प्रेम करता हू कि वह एक श्रेष्ठ और विलक्षण नारी है जिसने बहुत दुख सहन किये हैं। मैं उससे कुछ भी नही चाहता। मेरे हृदय म यही तीव्र लालसा है कि मैं उसकी सहायता करू ताकि "

सिमनसन की आवाज़ लडखडा गयी, जिसे देख कर नेख्लूदोव को बडी हैरानी हुई।

" उसकी स्थिति को कुछ आसान कर पाऊ,' सिमनसन कहता

गया। "यदि मास्लोवा को तुम्हारी सहायता मजूर नही तो वह मेरी सहायता स्वीकार कर ले। अगर वह मान जाय तो मैं दरख्वास्त द दूगा कि मुझे भी उसी जगह रखा जाय जहा उस रखा जायगा। चार साल कोई बहुत लम्बा अर्सा नही है। मैं उसके समीप रहगा और शायद उसके दुर्भाग्य का बोझ हल्का कर पाऊ "

वह फिर बोलते बोलते चुप हो गया। वह इतना उत्तेजित हो उठा था कि उसके लिए बोलना कठिन हो गया था।

"मैं क्या कहू?" नेख्लूदोव ने कहा। "मुझे इस बात की खुशी है कि उसे तुम जैसा रक्षक मिला है "

"मैं यही जानना चाहता था," सिमनसन बीच म बोल उठा, "तुम उससे प्रेम करते हो, उसका सुख चाहते हो इसी लिए मैं जानना चाहता था कि यदि मैं उसस शादी करू तो तुम इसे मास्लोवा के लिए हितकर समझोगे या नही?"

"हा, जरूर " नेख्लूदोव ने निश्चयात्मक स्वर म कहा।

"सब बात मास्लोवा पर निर्भर है। मैं तो केवल यही चाहता हू कि उसकी दुखी आत्मा को शान्ति मिले ' बच्चा की सी मदुता के साथ सिमनसन ने कहा, जिसकी इतने गभीर दिखने वाले व्यक्ति स आशा नही हो सकती थी।

सिमनसन उठ कर नेख्लूदोव के पास गया और शम से मुस्कराते हुए उसका मुह चूम लिया।

"मैं मास्लोवा से यह कह दूगा उसन कहा और वहा से चला गया।

१७

"वाह यह खूब रही!' मारीया पाव्लोव्ना ने कहा। 'इसे तो प्रेम हो गया है! सचमुच प्रेम हो गया है! किस उमीद थी कि व्लादीमिर सिमनसन प्रेम करने लगेगा, और वह भी पागलो की तरह, बिल्कुल लडका की तरह! कितनी अजीब बात है! और सच पूछो तो मुझे तो इसका अफसोस हुआ है," उसन उसास भरी।

"पर वह–कात्यूशा? तुम्हारा क्या ख्याल है, वह इस बारे म क्या सोचती होगी?" नख्लूदोव न पूछा।

"मैंने निश्चय किया है कि उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखूंगा," सिमनसन कहता गया।

"तो इसमे मैं क्या कर सकता हूं? यह उसका अपना मामला है," नख्लूदोव ने कहा।

"पर वह तुम्हारे बिना किसी निश्चय पर नहीं पहुंच पायेगी।"

"क्यो?"

"क्योंकि जब तक उसके साथ तुम्हारे सम्बंध का कोई फैसला नहीं हो जाता, वह कोई फैसला नहीं कर सकती।"

"जहां तक मेरा ताल्लुक है, इसका फैसला हो चुका है। मैं केवल अपना फर्ज़ अदा करना चाहता हूं, और उसके दुर्भाग्य का बोझ हल्का करना चाहता हूं। पर मैं किसी सूरत मे भी उस पर कोई दबाव नहीं डालूंगा।"

"हां, लेकिन वह तुम्हारी कुर्बानी कबूल करना नहीं चाहती।"

"यह कोई कुर्बानी नहीं है।"

"और मैं जानता हूं कि यह मास्लोवा का आखिरी फैसला है।"

"तो फिर मेरे साथ इसकी चर्चा करने की कोई ज़रूरत नहीं," नख्लूदोव ने कहा।

"वह चाहती है कि तुम इस बात का स्वीकार करो कि तुम्हारा भी वही विचार है जो उसका है।"

"मैं यह कैसे स्वीकार कर लूं कि जिस काम को मैं अपना कर्तव्य समझता हूं, उसे नहीं करूं? मैं केवल इतना कह सकता हूं कि मैं आज़ाद नहीं हूं, पर वह आज़ाद है।"

सिमनसन चुप रहा। फिर, थोडी देर तक सोचने के बाद बोला—

"अच्छी बात है, तो मैं उससे बात करूंगा। तुम यह मत समझो कि मैं उस पर फिदा हूं," वह कहता गया, "मैं उससे इस नाते प्रेम करता हूं कि वह एक श्रेष्ठ और विलक्षण नारी है जिसने बहुत दुख सहन किये है। मैं उससे कुछ भी नहीं चाहता। मेरे हृदय मे यही तीव्र लालसा है कि मैं उसकी सहायता करूं ताकि "

सिमनसन की आवाज़ लडखडा गयी, जिसे देख कर नेख्लूदोव को बडी हैरानी हुई।

" उसकी स्थिति को कुछ आसान कर पाऊं " सिमनसन कहता

गया। "यदि मास्लोवा को तुम्हारी सहायता मंजूर नहीं तो वह मेरी सहायता स्वीकार कर ले। अगर वह मान जाय तो मैं दरख्वास्त दूंगा कि मुझे भी उसी जगह रखा जाय जहां उसे रखा जायगा। चार साल कोई बहुत लम्बा अरसा नहीं है। मैं उसके समीप रहूंगा और शायद उसके दुर्भाग्य का बोझ हल्का कर पाऊं

वह फिर बोलते बोलते चुप हो गया। वह इतना उत्तेजित हो उठा था कि उसके लिए बोलना कठिन हो गया था।

"मैं क्या कहूं?" नेख्लूदोव ने कहा। मुझे इस बात की खुशी है कि उसे तुम जैसा रक्षक मिला है "

"मैं यही जानना चाहता था सिमनसन बीच में बोल उठा तुम उससे प्रेम करते हो, उसका सुख चाहते हो इसीलिए मैं जानना चाहता था कि यदि मैं उससे शादी करूं तो तुम इसे मास्लोवा के लिए हितकर समझोगे या नहीं?"

"हां जरूर " नेख्लूदोव ने निश्चयात्मक स्वर में कहा।

"सब बात मास्लोवा पर निर्भर है। मैं तो केवल यही चाहता हूं कि उसकी दुखी आत्मा को शान्ति मिले बच्चों की सी सरलता से भरे सिमनसन ने कहा, जिसकी इतने गंभीर दिखने वाले व्यक्ति से आशा नहीं हो सकती थी।

सिमनसन उठ कर नेख्लूदोव के पास गया और शर्म से मुस्कराते हुए उसका मुंह चूम लिया।

'मैं मास्लोवा से यह कह दूंगा उसने कहा और वहां से चला गया।

१७

"वाह यह खूब रही! मारीया पाव्लोव्ना ने कहा। इसे तो प्रेम हो गया है! सचमुच प्रेम हो गया है! किसे उम्मीद थी कि व्लादीमिर सिमनसन प्रेम करने लगेगा, और वह भी पागलों की तरह बिल्कुल लड़कों की तरह! कितनी अजीब बात है! और सच पूछो तो मुझे तो इसका अफसोस हुआ है," उसने उसांस भरी।

'पर वह–कात्यूशा? तुम्हारा क्या ख्याल है वह इस बारे में क्या सोचती होगी?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"वात्यशा?" मारीया पाव्लोव्ना रुक गयी। ज़ाहिर था कि वह सोच कर, यथासभव ठीक ठीक उत्तर देना चाहती थी। "वह? बात यह है कि उसका अतीत चाहे जैसा भी रहा हो, परतु जहा तक उसके स्वभाव का सवाल है, उसम अधिक नतिक स्त्री शायद ही कोई हो। बडी कोमल भावनाओ वाली स्त्री ह। वह तुमसे प्रेम करती है, और बहुत अच्छी तरह से प्रेम करती है। वह नही चाहती कि तुम्हारा जीवन उसके साथ उलझ जाय। उसे इसी बात की खुशी है कि वह तुम्ह ऐसा करने से रोके रहेगी। तुम्हारे साथ शादी कर के वह अपनी नजरो मे गिर जायगी। और यह यत्रणा उसके लिए उन सब यन्त्रणाओ से भयानक होगी जिन्ह वह पहले सहन कर चुकी है। इसलिए वह इस पर कभी भी रज़ामद नही होगी। पर इसके बावजूद तुम्हारे यहा मौजूद रहने से वह विचलित होती है।"

"तो फिर मैं क्या करू? क्या यहा से गायब हो जाऊ?"

मारीया पाव्लोव्ना के होठो पर बच्चो की सी मधुर मुस्कान आयी। वह बोली—

"हा, किसी हद तक।"

"किसी हद तक कोई कसे गायब हो सकता है?"

"मैं यो ही कह गई। पर जहा तक मास्लोवा का ताल्लुक है, मैं कहूगी कि वह भी शायद समझती है कि सिमनसन का इस तरह उन्मादियो की तरह उसे प्यार करना बेवकूफी है। इससे वह खुश भी होती है और डरती भी है। सिमनसन ने उससे अभी बात नही की। तुम जानते हो मैं इन बातो म कोई फसला देने की योग्यता नही रखती। फिर भी मैं समझती हू कि सिमनसन की भावनाए उसके प्रति एक साधारण पुरुष की सी भावनाए है, हालाकि वे प्रकट मे ऐसी नज़र नही आती। वह कहता तो है कि इस प्रेम से उसके शरीर मे ओज का सचार होता है, और यह पवित्र प्रेम है, पर मैं जानती हू कि विलक्षण होते हुए भी, इसकी तह म वही गदगी है वही जो नावोद्वोरोव और ग्राबेत्स के प्रेम मे है।"

मारीया पाव्लोव्ना जिस बात को ले कर चली थी, वह उसे भूल गयी, और इस चहेते मज़मून पर बोलने लगी।

"तो बताओ मैं क्या करू?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"मैं सोचती हू तुम्ह मास्लोवा से खुल कर सारी बात कर लनी चाहिए। सब बात साफ होनी चाहिए, हमेशा यही अच्छा होता है। तुम

उससे बात कर लो। मैं उसे बुलाती हू। बुलाऊ?" मारीया पाव्लोव्ना ने कहा।

"हा, धयवाद।"

मारीया पाव्लोव्ना बाहर चली गयी।

जब नेख्लदोव इस छोटे स कमरे मे अकेला रह गया तो विचित्र सा महसूस करने लगा। वेरा सो रही थी। उसके धीमे धीमे मास लेने की आवाज़ नेख्लूदोव के कानो म पड रही थी। किसी किसी वक्त वह कराह सी उठती। दो दरवाज़ा के पीछे स, जो उसे मुजरिम कदियो मे अलग किये हुए थे, बराबर शार-गुल की आवाज़ आ रही थी।

सिमनसन की बात ने उसे उस कतव्य से मुक्त कर दिया था जो नेख्लदोव ने अपने ऊपर ले रखा था। जब कभी उसम दुबलता आती तो यह कतव्य उसे बडा अजीब और कठिन लगा करता था। लेकिन इस समय उसके मन म जो भावना उठी वह न केवल अप्रिय ही थी बल्कि दुखद भी थी। उस ऐसा महसूस हो रहा था जैसे सिमनसन के प्रस्ताव ने उसकी विलक्षण कुर्बानी को मिट्टी म मिला दिया है, जिसस उस कुर्बानी का मूल्य उसकी नज़रा मे तथा अय लोगो की नजरा म कम हो गया है। यदि सिमनसन जसा भला आदमी जिसका मास्लोवा क प्रति कोई दायित्व नही, अपनी किस्मत उसकी किस्मत के साथ जोडना चाहता है तो फिर उसकी कुर्बानी तो सचमुच कोई बडी कुर्बानी नही थी। सभव है इस भावना म साधारण ईर्ष्या का भी हल्का सा पुट रहा हो। वह मास्लोवा े प्रेम का इतना आदी हो गया था कि वह स्वीकार नही कर सकता था ि वह किसी दूसरे से भी प्रेम कर सकती है। इतना ही नही। नेख्लूदोव जो यह योजना बना रखी थी कि जहा पर मास्लोवा रहेगी उसी के 'दीक वह भी रहेगा, वह योजना भी अब किसी काम की न रही थी। र सिमनसन के साथ उसने शादी कर ली तो उसकी वहा कोई ज़रूरत . रहेगी, और उसे अपने लिए कोई और रास्ता अख्तियार करना पड़ेगा।

अभी वह अपनी भावनाओ की माप-तौल भी पूरी तरह नही कर पाया था कि दरवाज़ा खुला और कात्यूशा अन्दर आ गयी। दरवाज़ा खुलने की देर थी कि कदियो का शोर-गुल सुनाई देने लगा (आज कोई खास बात उनके याच हो गयी थी)।

बड़ी चुस्ती से कदम रखती हुई कात्यूशा सीधी नेख्लूदोव के पास जा खड़ी हुई।

'मारीया पाव्लोव्ना ने मुझे भेजा है," उसने कहा।

"हां, मुझे तुमसे दो बात करनी है। बैठो। अभी अभी व्लादीमिर सिमनसन मेरे साथ बातें कर रहा था।"

कात्यूशा बैठ गयी थी, और अपने दोनों हाथ जोड़ कर गोद में रख लिये थे। वह काफी शांत नजर आती थी, लेकिन नेख्लूदोव के मुंह से ज्यों ही सिमनसन का नाम निकला, तो कात्यूशा का चेहरा लाल हो गया।

"क्या कहता था?" उसने पूछा।

"कहता था कि वह तुमसे शादी करना चाहता है।"

सहसा उसका चेहरा मुर्झा गया, उस पर वेदना झलकने लगी। पर वह कुछ भी बोली नहीं, केवल आंखें नीची कर लीं।

"वह मुझसे मेरी रजामंदी मांगता है या यह कि मैं कुछ मशिवरा दूं। मैंने उसे कह दिया है कि सारी बात तुम पर निर्भर करती है। इसका निश्चय तुम्हें करना है।"

"उफ, इस सब का क्या मतलब है? क्यों?" कात्यूशा बुदबुदायी, और नेख्लूदोव की आंखों में आंखें डाल कर देखा। उस समय उसकी आंखों में वह ऐंचापन था जो हमेशा नेख्लूदोव को अजीब ढंग से विचलित कर दिया करता था। कुछ क्षणों तक वे चुपचाप बैठे एक दूसरे को देखते रहे। इस नजर ने बहुत कुछ एक दूसरे से कहा।

"तुम्हें फैसला करना होगा,' नेख्लूदोव ने दोहरा कर कहा।

"मैं क्या फैसला करूं? सब बातों का कब से फैसला हो चुका है।"

"नहीं, तुम्हें इस बात का फैसला करना होगा कि तुम्हें सिमनसन का प्रस्ताव मंजूर है या नहीं,' नेख्लूदोव ने कहा।

"मैं तो सजायाफ्ता मुजरिम हूं। मैं किसी की क्या बीवी बनूंगी? क्या मैं व्लादीमिर सिमनसन की जिन्दगी को भी बरबाद करूं?" उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

"और अगर सजा मंसूख हो जाय तो?'

"आह, छोड़िये भी ये बातें, मुझे और कुछ नहीं कहना है,' कात्यूशा ने कहा और उठ कर कमरे से जाने लगी।

कात्यूशा के पीछे पीछे नेख्लूदोव भी मर्दों के कमरे मे वापस लौट आया। वहा पर सभी लोग वडे उत्तेजित हो रहे थे। नावातोव अभी अभी एक खबर लाया था, जिसे सुन कर सभी चकरा गये थे। नावातोव सब जगह घूमता, लोगो से दोस्तिया गाठता था, और कोई बात उससे छिपी न रहती थी। खबर यह थी कि उसने एक दीवार पर एक सन्देश लिखा देखा था। यह सन्देश क्रान्तिकारी पेत्लिन की ओर से था जिसे कडी मशक्कत की सज़ा मिली थी। सब लोग समझे बैठे थे कि वह कब का कारा पहुच चुका होगा, लेकिन अब पता चला कि वह कुछ ही दिन पहले इस तरफ से गुज़रा है। सज़ायाफ्ता मुजरिमो मे वही अकेला राजनीतिक बदी था।

"सत्तरह अगस्त के दिन," नोट मे लिखा था, "मुझे आम मुजरिमो के साथ अकेले भेजा गया। नेवेरोव भी मेरे साथ था लेकिन कज़ान मे पहुच कर उसने पागलखाने मे आत्महत्या कर ली। मेरा स्वास्थ्य ठीक है और उत्साह भी ज्यो का त्यो कायम है। मुझे पूर्ण आशा है कि भविष्य उज्ज्वल होगा।" सभी लोग पेत्लिन की स्थिति और नेवेरोव की आत्महत्या की बात कर रहे थे। वे सोच रहे थे कि इस आत्महत्या के पीछे क्या कारण रहे होगे। केवल क्रिल्तसोव चुपचाप बैठा कुछ सोच रहा था। उसकी आखें चमक रही थी और एकटक सामने की ओर देखे जा रही थी।

"मेरे पति ने मुझसे एक दिन कहा था कि जब नेवेरोव अभी पीटर पॉल किले मे बन्द था तो उसे प्रेत दिखाई देने लगे थे," रान्त्सेवा ने कहा।

"हा, वह तो कवि था, ख्वाब देखने वाला आदमी था। ऐसे लोग कैद-तनहाई बर्दाश्त नही कर सकते," नोवोद्वोरोव ने कहा। "मुझे याद है जब मै कैद-तनहाई मे था तो मैंने कभी भी अपनी कल्पना की बाग-डोर ढीली नही पडने दी। मैं एक एक दिन का कार्यक्रम वडे बाकाइदा तौर पर निश्चित कर लिया करता था, इसलिए कैद-तनहाई वडे आराम से बितायी।"

"बिताता भी क्यो न? मैं तो खुश था जब उन्होने मुझे कैद-तनहाई मे रखा," नाबातोव ने चहक कर कहा ताकि बोझल वातावरण किसी तरह

हल्का हो। "पहले तो आदमी को हर बात से डर लगता रहता है, कहीं खुद पकड़ा न जाय, और उसके अन्य साथी भी लपेट मे न आ जाय, और सारा काम खटाई मे न पड़ जाय। पर जब वह पकड़ा जाता है तो उसकी सारी ज़िम्मेवारी खत्म हो जाती है, और वह आराम कर सकता है—मज़े से बैठे और सिगरेट के कश लगाये।"

"क्या तुम उसे अच्छी तरह जानते थे?" मारीया पाव्लोव्ना न त्रिलत्सोव की ओर चिन्तित नज़रो से देख कर पूछा। त्रिलत्सोव का चेहरा उतरा हुआ था और बहुत बदल गया नज़र आता था।

"क्या तुम समझते हो नेवेरोव ख्वाब देखने वाला आदमी था?" सहसा त्रिलत्सोव बोल उठा। उसका सास फूला हुआ था मानो बड़ी देर तक बोलता या गाता रहा हो। "नेवेरोव एक सच्चा इन्सान था, एक ऐसा इन्सान 'जिस सरीखे बहुत कम इन्सान धरती पर जन्म लेते हैं'—जसे कि हमारा चौकीदार कहा करता था। उसका मन शीशे की तरह साफ था, इतना निष्कपट कि तुम उसके अन्दर झाक कर देख सकते थे। वह कभी झूठ नही बोल सकता था। बहाना तक नहीं बना सकता था। न सिर्फ यह कि उसकी चमड़ी पतली थी, बल्कि यह कहना चाहिए कि उसके स्नायु तक साफ नज़र आते थे, मानो उसकी चमड़ी उतार ली गयी हो। उसकी प्रकृति बड़ी जटिल, बड़ी सम्पन्न थी। ऐसी नही जसी कि पर बहुत बाते करने का क्या लाभ?' वह रुक गया, फिर गुस्से से त्योरिया चढ़ा कर बोला, "हम तो बहसे करते रहते है कि क्या हमे पहले जनता को शिक्षित करना चाहिए और बाद मे समाज का स्वरूप बदलना चाहिए, या पहले समाज का स्वरूप बदले। फिर हम ये बहसे करते हैं कि हमारा सघर्ष किस प्रकार का होना चाहिए, शान्तिपूर्ण प्रचार द्वारा या आतकवाद द्वारा। हम बहसे करते रहते हैं। लेकिन वे लोग बहस नही करते। वे अपना काम जानते है। उन्हे इस बात की कोई परवाह नही कि यहा बीसियो, सैकड़ो आदमी तिल तिल कर मर जाय। और आदमी भी कैसे! नही, वे तो चाहते ही यह हैं कि अच्छे से अच्छे आदमी मर जाय। हर्ज़न ने ठीक ही कहा था कि जब दिसम्बरवादी लोगो के बीच म से उठ गये तो हमारे समाज का सामान्य स्तर गिर गया था। उसने सचमुच ठीक कहा। उसके बाद स्वय हर्ज़न और उसके साथी उठा लिये गये। और अब नेवेरोव और उस सरीखे लोग "

"सब का खात्मा नही करेंगे," नाबातोव ने अपने प्रफुल्लित स्वर मे कहा, "नस्ल कायम रखने के लिए कुछ न कुछ तो बच रहेंगे।"

"नही बचेंगे, अगर हम हाकिमो से सहानुभूति दिखाने लगेंगे तो कभी नही बचेंगे," बिना किसी को बोलने का मौका दिये क्रिलत्सोव कहता गया, उसकी आवाज और भी ऊची हो गयी। "एक सिगरेट देना मुझे।"

"ओह, अनातोली, मत सिगरेट पियो, यह तुम्हारे लिए अच्छा नही," मारीया पाव्लोव्ना ने कहा, "मत पियो सिगरेट।"

"मुझे कुछ मत कहो," उसने गुस्से से कहा और एक सिगरेट सुलगाया, पर फौरन् ही खासने लगा। बार बार उसे उबकाई आने लगी, मानो कै करने लगा हो। जब गले मे से बलगम निकल गयी तो वह फिर बोलने लगा, "हम गलत रास्ते पर चलते रहे है। हमारा काम बहसे करना नही है। हमारा काम यह है कि हम सब सगठित हो ताकि उनका नाश कर सके।"

"पर वे भी तो इन्सान है," नेख्लूदोव ने कहा।

"नही, वे इन्सान नही है। जैसे काम वे कर रहे हैं, वैसे काम इन्सान नही करते नही सुनते है कि कोई बम और बैलून ईजाद हुए है। हमे बैलून पर चढ कर इन लोगो पर ऊपर से बम छिडकने चाहिए, मानो ये खटमल हो, ताकि सब के सब मर जाय हा। क्योकि " उसने जारी रखने की कोशिश की लेकिन उसका चेहरा लाल हो गया, और फिर खासी का दौरा पड गया, जो पहले से भी तेज था, और मुह मे से खून की धार बह निकली।

नाबातोव भागा हुआ बर्फ लाने गया। मारीया पाव्लोव्ना वलेरियन ले आयी और उसे देने लगी, लेकिन उसने अपना पतला पीला हाथ उठा कर मारीया पाव्लोव्ना को परे हटा दिया और आखें बन्द किये बैठा रहा। उसकी सासो की गति तेज और बोझल हो रही थी। बर्फ और ठण्डे पानी से उसकी हालत कुछ सुधरी, उसे कम्बलो मे लपेट कर सोने के लिए लिटा दिया गया। नेख्लूदोव ने विदा ली और सार्जेंट के साथ जो थोडी देर से खडा उसका इतजार कर रहा था, बाहर निकल आया।

मजरिम अब शात हो गये थे और उनमे से अधिकाश सो रहे थे। बंदी तख्तो पर, तख्तो के नीचे और तख्तो के बीच की जगहो पर पडे सो रहे थे। इसके बावजूद वे सब कमरो मे नही समा पाये थे। कितने ही

बंदी गलियारे में, अपने गीले लबादे ओढ़े हुए और सिरों के नीचे हाथ रखे हुए पड़े सो रहे थे।

खर्राटे भरते, कराहते और नींद में बड़बड़ाने की आवाज़ें खुले दरवाज़ों और गलियारे में से आ रही थीं। हर ओर इन्सानों के ढेर के ढेर, जेलखाने के लबादों में ढके हुए पड़े थे। मगर कोई नहीं सो रहा था तो अनब्याहे बंदियों के कमरे में कुछेक आदमी, जो मोमबत्ती जलाये उसके पास बैठे थे (लेकिन सार्जेंट को आता देख कर उन्होंने वह भी बुझा दी)। या फिर गलियारे में लैम्प के नीचे एक बूढ़ा नंगे बदन बैठा था और अपनी कमीज़ में से जुएं बीन रहा था। यहां इतनी बदबू और घुटन थी कि उसके मुकाबिले में राजनीतिक बंदियों के कमरे की गन्दी हवा भी स्वच्छ लगती थी। लैम्प धुआं छोड़ रहा था और उसकी रोशनी मद्धिम थी मानो धुन्ध से घिरी हो। सांस तक लेना कठिन हो रहा था। गलियारे में इतनी खाली जगह भी नहीं थी कि आदमी खुली तरह चल सके। एक एक कदम देख देख कर रखना पड़ता था। तीन आदमी ऐसे भी थे जिन्हें प्रत्यक्षतः गलियारे में भी लेटने की जगह नहीं मिली थी और वे ड्योढ़ी में, बदबू से भरे और चूते हुए टब के पास लेटे हुए थे। उनमें से एक तो वही बूढ़ा पागल था जिसे नेख्लूदोव ने कई बार टोली के साथ साथ मार्च करते हुए देखा था। दूसरा एक लड़का था, जिसकी उम्र दस बरस की रही होगी, जो बाकी दो कैदियों के बीच, एक की जांघ पर सिर रखे पड़ा सो रहा था।

फाटक में से बाहर निकल कर नेख्लूदोव ने लम्बी सांस ली और बड़ी देर तक पाले भरी हवा में लम्बी लम्बी सांसें लेता रहा।

१९

आसमान साफ हो गया था और तारे चमक रहे थे। किसी किसी जगह को छोड़ कर जहां कीचड़ जम कर कठोर हो गया था, सभी तरफ बरफ ही बरफ थी। नेख्लूदोव वापस अपनी सराय में लौटा और एक अंधेरी खिड़की को खटखटाया। चौड़े कंधों वाले मजदूर ने नंगे पांव आ कर दरवाज़ा खोला। नेख्लूदोव अन्दर दाखिल हुआ। दायीं ओर के एक दरवाज़े में से, जहां से पिछवाड़े को जाने का रास्ता था, गाड़ीवानों के

खर्राटो की ऊची ऊची आवाजे आ रही थी। आगन मे से बहुत से घोडो के जई चबाने की आवाज आ रही थी। सामने वाले कमरे म देव प्रतिमाओ के सामने लाल रग का लैम्प जल रहा था। कमरे मे से चिरायते और पसीने की गध आ रही थी। पार्टीशन के पीछे कोई आदमी बराबर सुड सुड करता खर्राटे भर रहा था, जिनको सुनते हुए लगता था कि उसके फेफड़े बहुत ही मजबूत रहे होगे। नेख्लूदोव ने कपडे उतारे, रोगनी कपडा चढे सोफे पर अपना कम्बल बिछाया, और चमडे का अपना सफरी सिरहाना रखा और लेट गया। उस दिन जो कुछ उसने देखा या सुना था, उसी के बारे म उसके मन मे विचार उठ रहे थे। बदबूदार टब और उसमे स चूता हुआ गदा पानी, और इसके पास दो कैदियो के बीच एक की जाघ पर सिर रखे सोया हुआ बालक—सभी दृश्यो मे से यह दृश्य नख्लूदोव का सबसे अधिक भयानक लग रहा था।

जो बात आज सिमनसन और कात्यूशा से उसकी हुई थी वे बडी अप्रत्याशित और महत्वपूण थी। लेकिन नेख्लूदोव उनके बारे मे नही साच रहा था। इस सम्बध मे उसका रवैया इतना जटिल और अनिश्चित था कि उसने इस बारे मे सोचना ही छोड दिया था। लेकिन इन बदनसीब कदियो की तसवीर, विशेषकर उस भोले भाले बालक का चेहरा जो कैदी की जाघ पर सिर रखे उस गन्दी हवा म, गदे पानी मे लेटा सो रहा था, पहले से भी अधिक सजीव हो कर उसकी आखो के सामने घूम रही थी, और हटाये नही हटती थी।

सुनने और अपनी आखो से देखने मे बडा फरक है। इतना भर जान लना कि दूर कही कुछ ऐसे लोग हैं जो अय लोगो पर जुल्म ढाते हैं, उहें अपमानित करते हैं, उन पर अमानुषिक यन्त्रणाए पहुचाते हैं, यह एक बात है। और खुद अपनी आखो से तीन महीने तक इस अत्याचार और अपमान को हर वक्त देखते रहना, बिल्कुल दूसरी बात है। और नेख्लदोव का हृदय इस बात को महसूस करता था। इन महीनो म, एक बार नही कई बार उसने अपने आपसे यह सवाल किया—"क्या मैं पागल हो गया हू जो मुझे ऐसी बाते नजर आती हैं जो औरो को नजर नही आती? या क्या वे लोग पागल हो गये है जो ऐसी बाते करते हैं जिन्ह मेरी आखें देखा करती हैं?" लेकिन यह मानना कठिन है कि व लोग—और उनकी सख्या भी कम नही है—पागल होगे, क्योकि ये काम वे इतने

आत्मविश्वास के साथ, इसे वडा जरूरी और महत्वपूर्ण और लाभदायक समझ कर कर रहे थे। न ही नेख्लूदोव अपने को पागल समझ सकता था, क्योंकि जो कुछ वह सोच रहा था वह इतना स्पष्ट था। अत सारा वक्त उसका मन उलझा सा रहता।

पिछले तीन महीनो म जो कुछ उसन देखा था, उसकी छाप या उसके मन पर पडी थी सरकार जनता मे से उन लोगो को चुन चुन कर पकडती थी जो स्वभावतया सबसे अधिक घबराने वाले, तेज़ मिज़ाज, जल्दी उत्तेजित होने वाले, सबसे अधिक प्रतिभावान और सबसे अधिक मजबूत लोग थे, पर साथ ही जो सबसे कम सावधान तथा चालाक थे। इन्हे वह मुकद्दमो तथा शासकीय आज्ञप्तिया द्वारा पकडती थी। ये लोग उन लोगो से जो आज़ाद घूमते थे, तनिक भी अधिक दोषी और खतरनाक नही थे। पर इन्हे या तो जेल की कालकोठरी म वन्द कर दिया जाता था या साइवेरिया भेज दिया जाता था। वहा इन्हे रोटी कपडा मिल जाता लेकिन महीनो, बल्कि सालो तक, ये वहा निठल्ले पडे रहते—प्रकृति से दूर, अपने परिवारो से दूर तथा हर प्रकार के उपयोगी काम से दूर—अर्थात उन सब स्थितियो से दूर जो एक स्वाभाविक तथा नतिक जीवन के लिए आवश्यक होती है। यह थी पहली बात जो नेख्लूदोव के मन मे उठती थी। दूसरी यह कि इन संस्थाओ मे इन लोगो को हर तरह से अपमानित किया जाता था जिसकी कोई जरूरत नही थी, हथकडिया और वेडिया पहनायी जाती, सिर मूड दिये जाते, लज्जाजनक वर्दिया पहनने को दी जाती, मतलब कि उन्हे उन मुख्य बातो से वचित कर दिया जाता जिनसे दुर्वल व्यक्तियो को भले आदमियो की तरह रहने की प्रेरणा मिलती है। और ये बाते हैं यह भावना कि लोग क्या कहते है, लज्जा की भावना तथा मानव गौरव की भावना। तीसरी यह कि कैदखानो मे इन्हे हर वक्त जान से हाथ धोने का डर रहता—छूत की बीमारी लगने के कारण या शारीरिक दण्ड और थकान के कारण (यह कहने की ज़रूरत नही कि कई लोग लू लगने से, या डूब कर या आग मे भस्म हो कर जान दे देते थे)। इसलिए सारा वक्त ये लोग ऐसी स्थिति म रहते जिसम भले से भले और नेक से नेक लोग भी, आत्मरक्षा के लिए अत्यन्त बर्बर और भयानक काम करने पर उतारू हो जाते है और उन लोगो को क्षमा भी कर देते हैं जो ऐसे काम करते है। चौथी यह कि इन लोगो का ऐसे लोगो

के साथ रहने पर मजबूर किया जाता था जो बहुत ही पतित होते थे। इनका पतन भी विशेषतया इन्ही संस्थाओं द्वारा हो चुका होता था। इन भ्रष्टाचारी लोगों, हत्यारों और बदमाशों के साथ रहने से उन पर भी वही असर होता जो गूंधे हुए आटे पर खमीर का होता है। पांचवी यह कि सरकार को जब अपना उल्लू सीधा करना होता तो वह न केवल हर प्रकार की हिंसा, अत्याचार, और बर्बरता को दरगुजर ही करती है बल्कि इसकी खुली इजाजत भी देती है। इस तथ्य पर इन सब लोगों का अनिवार्यतः विश्वास हुआ, क्योंकि इन पर अमानुषिक जुल्म किया जाता था, बच्चों, स्त्रियों और बूढ़ों पर जुल्म होता, डण्डों और चाबुकों से इन्हें पीटा जाता, कोई कैदी भाग जाता तो उसे पकड़ कर वापस लाने के लिए—जिन्दा या मरा हुआ—इनाम रखे जाते, पति-पत्नी को एक दूसरे से अलग कर दिया जाता और उन्हें दूसरों की स्त्रियों और पतियों के साथ व्यभिचार करने पर मजबूर किया जाता, लोगों को गोली से उड़ा दिया जाता और फांसी पर लटका दिया जाता। इसलिए यदि वे लोग हिंसात्मक कारवाइयां करें जिनकी आजादी छीन ली गयी हो और जिन्हें अभाव और हीनता की स्थिति में रखा जाता हो तो यह और भी क्षम्य जान पड़ता है।

ऐसा जान पड़ता था जैसे इन सब संस्थाओं को बनाया ही इसलिए गया हो कि वे भ्रष्टता और दुराचार फैलायें। और इस केन्द्रीभूत भ्रष्टता और दुराचार को सारी आबादी में फैलाने के लिए इससे अधिक व्यापक साधन और कोई न होगा।

"ऐसा लगता है मानो इस सवाल का हल ढूंढने का बीड़ा उठाया गया हो कि कौन सा उपाय है—सबसे अच्छा और सबसे सक्षम—जिसके द्वारा अधिक से अधिक संख्या में लोगों को भ्रष्ट बनाया जा सके!" जेलखानों और पड़ावघरों में जो कुछ घटता है इसके बारे में सोचते हुए नेख्लूदोव ने मन ही मन कहा। हर साल लाखों लोगों को पतन के निचले से निचले स्तर तक पहुंचा दिया जाता था, और जब वे बिल्कुल भ्रष्ट हो जाते तो उन्हें छोड़ दिया जाता ताकि जो रोग उन्हें जेलखाने में चिपटा था उसे और लोगों में फैला सकें।

समाज ने जो लक्ष्य अपने सामने रखा जान पड़ता था उसे वह किस सफलता से क्रियान्वित कर रहा है, यह नेख्लूदोव ने त्युमेन, येकातेरीनबुर्ग

तथा तोम्स्क के जेलखानो मे देख लिया था। सीधे-सादे लोगो ने साधारण रूसी सामाजिक, ग्रामीण तथा ईसाई नैतिकता को त्याग कर एक नयी नैतिकता को अपना लिया है जो इन जेलो मे पनपती है और जो मुख्यत इस विचार पर आधारित है कि इन्सानो के साथ किसी प्रकार की भी हिंसा और अत्याचार करना उचित है यदि उससे अपने को लाभ पहुच सकता हो। जेलखानो मे रह चुकने के बाद इन लोगो का रोम रोम यह समझने लगता है कि जैसा व्यवहार उनके साथ हुआ है उसे देखते हुए, यथार्थ जीवन मे वे सारे के सारे नैतिक नियम जिनका उपदेश गिर्जों म तथा सन्तो महात्माओ द्वारा दिया जाता है–कि लोगो के साथ आदर तथा सहानुभूति से पेश आओ–ताक पर रख दिये जाते हैं। इसलिए उन्ह भी इन नियमो का पालन करने की कोई जरूरत नही। जितने भी कैदियो को नेख्लूदोव जानता था–फ्योदोरोव, माकार, यहा तक कि तारास पर भी–उन सब पर जेल के जीवन का असर हुआ था। तारास केवल दो महीने तक ही कैदियो के बीच रह पाया था लेकिन फिर भी उसके तर्कों म नैतिकता के अभाव से नेख्लूदोव दग था। सफर के दौरान उसे मालम हुआ था कि कई कैदी जो भाग कर टैगा जगलो मे चले जाते थे वे अपने साथ अपने अन्य साथियो को भी बरगला कर ले जाते थे और वहा पर उन्ह मार कर उनका मास खा कर जीते थे। उसने ऐसे ही एक जीते-जागते आदमी को देखा था जिस पर यह दोष लगाया गया था, और उसने इसे स्वीकार किया था। और सबसे भयानक बात यह थी कि मनुष्य भक्षण का यह एकमात्र उदाहरण नही था, अक्सर इस तरह की बात होती रहती थी।

केवल बुराइयो के विशेष सपोषण द्वारा ही, जैसा कि इन सस्थाओ म किया जा रहा था, एक रूसी को नैतिक पतन की चरम सीमा तक ढकेल कर इन जैसा आवारा बनाया जा सकता था। ये लोग यही मानते थे कि हर काम की खुली छुट्टी है, किसी बात की कोई मनाही नही, और इसमे वे नीत्शे के नवीनतम उपदेश का मानो पहले ही जा कर अनुकरण कर रहे थे और इसका प्रचार पहले कैदियो म और बाद म जनसाधारण म कर रहे थ।

इस सबकी सफाई म केवल यह कहा जाता था कि इसका उद्देश्य अपराधो को रोकना है, लोगो के दिल म डर पैदा करना है, मुजरिमो

को सीधे रास्ते पर लाना और सजा के रूप मे उन्हे उनके कुकर्मों का नियमित प्रतिफल देना है, जैसा कि पुस्तको मे कहा गया है। पर वास्तव मे जो परिणाम निकलते थे उनका इनसे कोई भी मेल नही था। बल्कि व इनके उलट निकलते थे। भ्रष्टता रकने के बजाय और फैलती थी। अपराधियो के दिल मे डर बैठाना तो दूर रहा उनका साहस और बढता था। कितने ही आवारा खुद-बखुद जेलखाना म लौट आते थे। सीधे रास्ते पर आने के बजाय लोगो को हर प्रकार की भ्रष्टता बडी बाकाइदगी से सिखायी जाती थी। और जहा तक सजा देने की भावना का सवाल है, यह सरकार की दड प्रणाली से कमजोर पडने के बजाय उन लोगा के दिला मे जड पकडती थी जिनमे यह पहले कभी नही थी।

"तो फिर यह सब क्यो किया जाता है?' नख्लूदोव न अपन आपसे पूछा। पर उसे कोई उत्तर नही मिला।

सबसे आश्चयजनक बात यह थी कि ये कारवाइया आकस्मिक तौर पर या किसी भूलवश नही की जा रही थी। न ही ये इक्के दुक्के मामले थ, बल्कि सदियो से यह व्यापार चला आ रहा था। भेद केवल इतना था कि पहले लोगो के नाक और कान काट दिये जाते थे, बाद मे वक्त आया जब लोगा के शरीर तप हुए लोहे से दागे जात थे, और लोहे की सलाखो के साथ उन्हे बाध दिया जाता था जहा आज उन्ह हथकडिया लगायी जाती हैं और उन्ह छकडा म एक जगह से दूसरी जगह भेजने के बजाय भाप मे चलने वाली गाडिया म भेजा जाता है।

सरकारी अफसरो का यह तक है कि जिन बाता को देख कर क्रोध उठना है उनका कारण यह था कि जेलखानो के प्रबन्ध मे बडी त्रुटिया पायी जाती थी, और ये सब दूर हो सकती है यदि आधुनिक ढग के जेलखाने बनाये जाय। पर इस तर्क से नख्लूदोव को सन्तोष नही होना था। उसके मन मे जो घृणा उठती थी उसका कारण जेलखाना का अच्छा या बुरा प्रबन्ध नही था। उसने ऐसे आदश जेलखाना के बारे म पढ रखा था जिनम बिजली की घण्टिया लगी रहती हैं, और जहा लोगा को बिजली द्वारा फासी दी जाती है, जिसका ताद ने सुझाव दिया है परन्तु इस प्रकार की सुधार हिंसा से नेख्लूदोव के मन मे उससे भी अधिक घृणा उठती थी।

परन्तु सबसे अधिक घृणा उसके मन मे यह देख कर उठती थी कि कचहरिया और मन्त्रालयो मे ऐसे लोग रहते हैं जिन्ह इन कामो के लिए

बडी बडी तनख्वाह मिलती हैं जो तनख्वाह जनता के जेब मे से आती हैं। इन लोगो के पास किताबें होती हैं जो इन्ही जैसे अन्य अफसरा ने इन्ही के से उद्देश्या से प्रेरित हो कर लिख रखी होती हैं। इस तरह की पुस्तको मे कानून लिखे होते हैं। और जब इस तरह लिखी गयी पुस्तका के अनुसार किसी कानून का उल्लघन होता है तो ये लोग इन पुस्तका मे झाकते हैं, एक या दूसरे किसी कानून से उसे जोडने की चेष्टा करते हैं, और फिर इन्ही कानूना का अनुकरण करते हुए, अपराधियो को ऐसे स्थानो पर भेज देते हैं, जहा वे फिर इन्हे कभी नही देख पाते, परन्तु जहा पर वे ऐसे इन्सपेक्टरो, वाडरो और कॉनवाय सिपाहिया के रहम पर जीते हैं जो क्रूर और जुल्म करने के आदी होते हैं। वहा लाखो-करोडा आदमियो का न केवल शारीरिक बल्कि आत्मिक दृष्टि से भी मलियामेट कर दिया जाता है।

अब नेख्लूदोव जेलखाना को अधिक नजदीक से जानता था। उसे मालूम हो गया कि कैदियो मे जितनी भी बुराइया फैलती हैं—शराबखोरी, जुएबाजी, बबरता, भयानक जुम करने की प्रवत्ति, यहा तक कि मनुष्य भक्षण भी—ये सब आकस्मिक नही होती न ही नैतिक अध पतन, मानसिक विकारो अथवा जन्मजात अपराध प्रवृत्ति के परिणाम हैं, जसा कि उन मूढ वैज्ञानिको का कहना है जो सरकार के पिट्ठू बनते है। यह सभी बुराइया इस भ्रम का अनिवाय परिणाम हैं कि मनुष्यो को एक दूसरे को दण्ड देने का अधिकार है। नेख्लदोव ने देखा कि मनुष्य भक्षण टैगा जगलो से शुरू नही होता बल्कि मन्त्रालयो, समितियो तथा राज्य विभागा से शुरू होता है। टैगा मे तो वह केवल सपन्न होता है। उसने देखा कि उसके बहनोई को मिसाल के तौर पर, या बहनोई को ही क्या, पेशकार से ले कर मन्त्री तक सभी वकीला और अधिकारियो को न्याय की तनिक भी चिन्ता नही होती, न ही जनकल्याण की जिसकी वे बात करते हैं, बल्कि केवल अपने रूबला की चिन्ता होती है जो उन्हे ये कारवाइया करने के लिए मिलते है जिनके कारण यह सब पतन और क्लेश पैदा होते हैं। यह तथ्य बिल्कुल स्पष्ट है।

"तो फिर क्या इस सबको तह म कोई गलतफहमी रही है? क्या ऐसी व्यवस्था नही की जा सकती कि सभी अधिकारिया की तनख्वाह भी सुनिश्चित रह, बल्कि इनके अलावा इन्हे बट्टा भी मिले, और ये वे सब

काम न करे जो आजकल करते हैं?" नेख्लूदोव ने सोचा। बाहर मुर्गे दूसरी बार बाग दे चुके थे। जब भी नेख्लूदोव करवट बदलता या हरकत करता तो उसके चारो ओर पिस्सू यो दौडते, जसे फौवारे मे से पानी की धाराए निकल रही हो। पर इनके बावजूद, इन्ही विचारो मे खोया हुआ नेख्लूदोव गहरी नीद सो गया।

२०

जब नेख्लूदोव जागा तो छकडो वाले कब के जा चुके थे। सराय की स्थूलकाय मालकिन चाय पी चुकी थी। हाथ मे रूमाल लिये अपनी मोटी गदन से पसीना पोछते हुए वह अन्दर आयी और नेख्लूदोव से कहा कि एक सिपाही पडाव घर से उसके नाम कोई चिट्ठी लाया है। चिट्ठी मारीया पाव्लोव्ना की ओर से थी। लिखा था कि क्रिलत्सोव को खासी का बहुत बुरा दौरा पडा है, हमे उमीद न थी कि उसकी हालत इतनी चिन्ताजनक हो जायेगी। "पहले तो हमारी यही इच्छा थी कि इसे यही पर रहने दें, और अधिकारियो से इजाजत माग ले कि कोई आदमी इसके साथ रह सके, लेकिन इसकी इजाजत नही मिली। अब हम इसे साथ ही ले जायेंगे। लेकिन इसकी स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। कृपया ऐसा प्रबन्ध करो कि इसे शहर मे छोडा जा सके, और हममे से एक आदमी इसके साथ रह सके। यदि इजाजत हासिल करने के लिए इस बात की जरूरत हो कि मैं इसके साथ शादी कर लू तो बेशक, मैं यह करने के लिए तैयार हू।"

नेख्लूदोव ने युवा मजदूर को फौरन घोडा चौकी पर घोडों का प्रबन्ध करने के लिए भेज दिया और जल्दी जल्दी अपना सामान बाधने लगा। अभी वह चाय का दूसरा गिलास भी नही पी पाया था कि सायबान मे तीन घोडो वाली गाडी घटिया खनकाती आ पहुची। जमे हुए कीच पर उसके पहिये इस तरह खडखड करते चले आ रहे थे जैसे पत्थरो पर चल रहे हो। नख्लूदोव ने पैसे निकाले और मोटी गदन वाली मालकिन का हिसाब चुकाया, फिर भागा हुआ बाहर आया और गाडी पर पैर रखते ही गाडीवान को हुक्म दिया कि गाडी भगा कर कैदियो की टोली के पास ले चले। पचायती चरागाह के फाटको के कुछ ही आगे वे गये होगे कि उन्हें कैदियो के छकडे मिल गये जिनमे बोरे और बीमार कैदी भरे पडे थे। छकडो के पहिये जमे कीच पर खडखडाते चले जा रहे थे, जो अब

उनके बोझ के नीचे धीरे धीरे हमवार होता जा रहा था। अफसर वहा पर नही था, वह आगे चला गया था। सडक के किनारे किनारे कुछ सिपाही हसते बतियाते चले जा रहे थे, जो प्रत्यक्षत शराब पिये हुए थे। छकडे सख्या मे बहुत थे। अगले छकडा म, एक एक छकडे पर छ छ बीमार कैदी बठे थे, जो मुश्किल स उनम समा पाये थे। पिछल तीन छकडो पर, हरक मे तीन तीन राजनीतिक कैदी थे। एक मे नोवोद्वोरोव, ग्रावेत्स और कान्द्रात्येव थे, दूसरे मे रात्सेवा, नावातोव और वह स्त्री जिसे मारीया पाव्लोव्ना ने अपनी जगह दे दी थी, बैठे थे। तीसरे छकड मे क्रिलत्सोव भूसे के ढेर पर सिर के नीचे सिरहाना रखे लेटा हुआ था और छकडे के सिरे पर मारीया पाव्लोव्ना उसके पास बैठी थी। नख्लूदोव ने गाडीवान को गाडी रोकने के लिए कहा और उतर कर क्रिलत्सोव के पास गया। एक शराबी सिपाही न उसे रोकने के लिए हाथ हिलाया लेकिन नेख्लूदोव ने कोई परवाह न की और छकडे के साथ साथ, एक हाथ से उसे पकडे हुए क्रिलत्सोव के निकट चलने लगा। क्रिलत्सोव ने भेड की खाल का कोट और सिर पर फर की टोपी पहन रखी थी। मुह पर रूमाल बधा हुआ था। पहले से कही अधिक पीला और दुबला लग रहा था। उस की सुन्दर आखे बडी बडी लग रही थी और उनमे विचित्र चमक थी। छकडे म हिचकोला के कारण उसका शरीर कभी एक तरफ को, कभी दूसरी तरफ को झूल जाता। लेकिन उसकी आखें एकटक नेख्लूदोव को देखे जा रही थी। जब नेख्लदोव ने उससे स्वास्थ्य के बारे मे पूछा तो उसने केवल आखें बन्द कर ली और गुस्से से सिर हिला दिया। जान पडता था कि छकडे के हिचकोले बर्दाश्त करने के लिए उस शरीर की सारी शक्ति लगा देने की जरूरत है। मारीया पाव्लोव्ना दूसरी तरफ बठी थी। उसने नेख्लूदोव की ओर बडे सारपूण ढग से देखा ताकि उसे क्रिलत्साव की चिताजनक स्थिति का पता चल जाय, फिर हस हस कर बात करने लगी।

"जान पडता है अफसर को शम आ गयी," उसने चिल्ला कर कहा ताकि पहियो की खडखड के बीच उसकी आवाज सुनाई दे सके। "बुजोव्किन की हथकडिया उतार दी गयी हैं, अब वह अपनी बेटी का खुद गोद मे उठा कर ले जा रहा है। कात्यूशा और सिमनसन उसके साथ हैं, और वेरा भी। वेरा ने मेरी जगह ले ली है।"

क्रिल्सोव कुछ बोला लेकिन शोर के कारण उसकी आवाज सुनाई नही दी। उसे खासी उठने लगी और उसने भौह चढा कर उसे दबाने की चेष्टा करते हुए सिर हिलाया। नेख्लूदोव आगे की ओर झुक कर उसकी बात सुनने की चेष्टा करने लगा। क्रिल्त्सोव किसी तरह रूमाल म से मुह निकाल कर फुसफुसाया –

"पहले से तबीयत बहुत अच्छी है। बस, सर्दी नही लगनी चाहिए।"

नेख्लूदोव ने समथन म सिर हिलाया। फिर एक बार मारीया पाव्लोव्ना और नेख्लूदोव की नजरे मिली।

"तीन नक्षत्रा का क्या बना?" बडी कठिनाई से मुस्कराने की चेष्टा करते हुए क्रिल्त्सोव ने फुसफुसा कर कहा। "क्या उनका मसला हल करना बहुत मुश्किल है?"

बात नेख्लूदोव की समझ मे नही आयी, लेकिन मारीया पाव्लोव्ना ने समझाया कि क्रिल्त्सोव का मतलब गणित के उस सुपरिचित प्रश्न से है जिसमे सूय, चद्रमा तथा पथ्वी के आपसी सम्बध का जिक्र है और यह उससे तुम्हारी, सिमनसन और कात्यशा की स्थिति की तुलना कर रहा है। इस पर क्रिल्त्सोव ने सिर हिला कर हामी भरी कि मारीया पाव्लोव्ना न उसके मजाक को ठीक समझा है।

"इस प्रश्न का हल मेरे हाथ मे नही है," नेख्लूदोव ने कहा।

"क्या तुम्ह मेरी चिट्ठी मिल गयी है? क्या यह काम करोगे?" मारीया पाव्लोव्ना न पूछा।

"जरूर," नेख्लूदोव ने जवाब दिया। फिर जब उसने देखा कि क्रिल्त्सोव नाराज नजर आ रहा है तो घूम कर सीधा अपनी गाडी म जा बठा, और हिचकोला से बचने के लिए दोनो तरफ से उसे पकड लिया। कच्ची सडक की लीका पर गाडी झूलती हिचकोले खाती कैदियो की टोली स आगे बढने लगी, जो अपने भूरे लबादो, भेड की खाल के कोटा, बेडिया और हथकडिया को पहने सडक पर छ फर्लांग आगे तक फैली हुई थी। सडक की दूसरी तरफ नेख्लूदोव को कात्यशा का नीले रग का शाल, वेरा का काला कोट और सिमनसन की बुनी हुई टोपी और सफेद लम्बे मोजे नजर आये जिन पर उसने फीते बाध रखे थे जैसे सैंडला पर लगाये जाते हैं। सिमनसन दोनो औरतो के साथ साथ चल रहा था और किसी मसले पर बडे जोश से बहस कर रहा था।

नेख्लूदोव को देख कर तीनो ने उसका झुक कर अभिवादन किया, और सिमनसन ने बडी गभीरता से सिर पर से टोपी उतारी। नेख्लूदोव रुका नही क्योंकि उसे उन्हे कुछ भी कहना नही था, और शीघ्र ही आगे निकल गया। थोडी देर के बाद सडक के ज्यादा हमवार हिस्से पर पहुच कर गाडीवान ने गाडी और भी तेज कर दी, पर बार बार उसे लीका पर से हट जाना पडता था क्योकि सडक पर दोनो तरफ से छकडा की कतारे आ-जा रही थी।

सडक देवदार के एक घने जगल मे से हो कर गयी थी जिसमे कही कही बच और लाच के वृक्ष भी खडे थे और जिनके पीले पत्ते अभी तक गिरे नही थे और झिलमिला रहे थे। सडक के बीचाबीच गाडियो के पहियो की गहरी लीके खिची थी। आधे रास्ते पर जगल खत्म हो गया। अब सडक के दोनो तरफ दूर दूर तक खेत फैले हुए थे। दूर किसी मठ के गुम्बद और क्रॉस नजर आये। बादल छितर गये थे और मौसम अच्छा हो गया था। जगल के ऊपर सूरज चमकने लगा था जिसकी रोशनी मे पेडो के पत्ते, गड्ढो मे जमा हुआ पानी और मठ के सुनहरी क्राम और गुम्बद चमकने लगे थे। थोडा दायी ओर दूर क्षितिज के ऊपर जहा आकाश का रग भरा-सुरमई हो रहा था बरफ से लदे पहाडो की सफेदी झिलमिलाने लगी। गाडी ने एक बडे से गाव मे प्रवेश किया। सडक पर रूसी तथा अन्य जातियो के बहुत से लोग विचित्र से लबादे और टोपिया पहने घूम रहे थे। दूकानो, शराब घरो और छकडो के आस-पास मर्दों और औरतो की भीड लगी थी, जिनमे से कई एक ने शराब पी रखी थी। इस सबसे पता लगता था कि नजदीक ही कोई शहर है।

गाडीवान ने रास झटकी, अपने दायें हाथ वाले घोडे पर चाबुक चलायी, और रासो को ढीला छोड कर सीट के दायें सिरे पर बैठ गया, और लोगो पर रोब कसने के लिए गाडी को तेज तेज चलाता हुआ, नदी की ओर ले जाने लगा। नदी को बेडे पर पार किया जाता था। नदी मे बेडा उन्ही की दिशा मे बहता आ रहा था, और नदी के मध्य तक पहुच चुका था। किनारे पर लगभग बीस छकडे नदी पार करने के इन्तजार मे खडे थे। नेख्लूदोव को बहुत देर इन्तजार नही करना पडा। नदी का बहाव तेज था साथ ही बेडे को धार के ऊपर काफी दूर तक ले जाया जा चुका था, जिस कारण शीघ्र ही वह घाट के साथ आ लगा।

नाविक वडे ऊचे ऊचे कद के, चौडे क-धों वाले, मासल और चुपचाप काम करन वाले व्यक्ति थे। सभी न भेड की खाल के कोट पहन रखे थे। किनारे पर पहुच कर उन्होंने अपने अभ्यस्त हाथो से रस्से फेंक कर बेडे का किनारे से बाधा, फिर जिन छकडो का उस पार स ढा कर लाय थे उन्हें किनार पर उतारा और किनारे पर खडे छकडो को बेडे मे लादने लगे। छकडो और घोडो से सारा बेडा भर गया। पानी को देख कर घोडे बेचन होन लगे। बेडे के पाश्व पर चौडी, वेगवती नदी के थपेडे लग रहे थे जिससे रस्से और भी तन गये थे। बेडा भर गया नेख्लूदाव की गाडी मे स घोडे खोल दिये गय थे और उसे बेडे के एक तरफ बहुत स छकडा के बीच खडा कर दिया गया था। नाविको ने और छकडा का अदर आना बद कर दिया, और रस्से खोल कर बेडा खेन लगे। बहुत से लाग जिन्ह बेडे पर जगह नही मिली थी, चिल्लाने और मिन्नत करने लगे लेकिन नाविका न उनकी ओर कोई ध्यान नही दिया। बेडे पर मौन छा गया। नाविको के कदमो आर घोडो के खुर पटकने की आवाजा के अतिरिक्त कोई आवाज़ सुनाई नही पडती थी।

२१

बेडे के किनारे पर खडा नेख्लूदोव विशाल नदा का दृश्य देख रहा था। उसके मन मे दो चित्र बार बार उभर रहे थे। कभी उसे आक्रोश से भरपूर, ससार से विदा होते क्रिलत्सोव का गाडी के हिचकोले से इधर-उधर थटकता सिर दिखाई देता और कभी कात्यूशा, जो दढता से डग भरती हुई सिमनसन के साथ साथ चली जा रही थी। क्रिलत्सोव इस तरह अचानक मरना नही चाहता था, इसलिए इस चित्र से नेख्लूदोव का मन खिन्न और उदास हुआ। कात्यूशा के राम राम स ओज फूट रहा था, उसे सिमनसन जैसे व्यक्ति का प्रेम प्राप्त हुआ था, साथ ही वह भलाई के सच्चे माग पर दृढतापूवक चली जा रही थी। इस चित्र से नख्लूदोव को खुश होना चाहिए था, किन्तु इससे भी उसका मन उदास हुआ और इस उदासी को वह दूर नही कर सका।

नगर की ओर से कासे के किसी बडे घटे की आवाज़ गूजती हुई आयी। नेख्लूदोव के गाडीवान ने तथा बेडे म खडे अन्य लागो ने सिर

पर से टोपियां उतारीं और छाती पर क्रॉस का चिह्न बनाया। लेकिन बिल्कुल पास खड़े एक छोटे से बिखरे बालों वाले बूढ़े ने, जिसकी ओर नख्लूदोव का ध्यान पहले नहीं गया था, क्रॉस का चिह्न नहीं बनाया, बल्कि सिर ऊंचा कर के नख्लूदोव की ओर देखने लगा। बूढ़ा बदन पर टाकियां लगा कोट, सूती पतलून और पैरों में फटे-पुराने, टाकियां लगे बूट पहने था। पीठ पर एक छोटा सा सफरी थैला लटकाए और सिर पर एक फटी-पुरानी फर की ऊंची सी टोपी पहने हुए था।

"तुम प्रार्थना क्यों नहीं कर रहे हो, बड़े मियां?' नख्लूदोव के गाड़ीवान ने सिर पर टोपी रख कर ठीक करते हुए उससे पूछा। 'क्या तुम्हारा बपतिस्मा नहीं हुआ?

"प्रार्थना किस की करूं?' एक एक शब्द पर बल देते हुए, रूखी आवाज़ में उस फक्कड़ बूढ़े ने पूछा।

"भगवान की, और किस की?" गाड़ीवान ने तुनक कर कहा।

"दिखाओ तो, तुम्हारा यह भगवान है कहां पर?'

वृद्ध के चेहरे पर कुछ ऐसी गम्भीरता तथा दृढ़ता का भाव था कि गाड़ीवान कुछ झेंप गया। वह समझ गया कि आज किसी सख्त मिज़ाज आदमी से वास्ता पड़ा है। लेकिन भीड़ खड़ी देख रही थी, और वह नहीं चाहता था कि उसके सामने दब्बू बन और शर्मिन्दा हो। इसलिए अपनी झेंप छिपाने की कोशिश करते हुए झट से बोला—

"कहां है? स्वर्ग में है और कहां होगा?"

"तो तुम वहां हो आये हो क्या?"

"मैं वहां हो आया हूं या नहीं सभी जानते हैं कि भगवान की प्रार्थना करनी चाहिए।"

"आज तक कभी किसी आदमी ने भगवान् को नहीं देखा। केवल भगवान का एकमात्र बेटा, जो उसी के हृदय में बसता है प्रगट हुआ था," उसी तरह त्योरियां चढ़ाये वृद्ध ने तेज़ बोलते हुए कहा।

"ज़ाहिर है तुम ईसाई नहीं हो, तुम तो यों ही बे सिर पैर चीज़ को भगवान मानते हो, उसी की पूजा करते हो गाड़ीवान ने चाबुक का दस्ता पेटी में खोंसते हुए और एक घोड़े पर का साज़ सीधा करते हुए कहा।

भीड़ में से कोई हंसने लगा।

"तुम्हारा धम क्या है वडे मिया?" अधेड उम्र के एक आदमी ने पूछा जो वेडे के उसी तरफ अपने छकडे के पास खडा था।

"मेरा कोई भी धम नही, क्योकि मेरा किसी म भी विश्वास नही है—मेरा विश्वास केवल अपने आप पर है ' उसी दृढता और तेजी के साथ वृद्ध ने जवाब दिया।

"अपन पर विश्वास कैसे हो सकता है?" वाद विवाद म भाग लेते हुए नेख्लूदोव न पूछा, "तुम भूल भी तो कर सकते हो।'

"नामुमकिन है," सिर हिला कर वद्ध न दृढता स जवाब दिया।

"ता फिर लागा के अलग अलग धम क्या हैं?" नख्लूदोव ने पूछा।

"केवल इसलिए कि लोग औरा म विश्वास करते है अपन आप पर विश्वास नही करते। इसी लिए ससार मे अलग अलग धम हैं। मैंन भी पहल लोगा मे विश्वास किया था यहा तक कि मैं दलदल मे फस गया। मुझे कोई वाहर निकलने का रास्ता ही नही मिलता था। कट्टरपथी और नवीनपथी, जूडामवादी और ख्रिस्ती, पोपोव्त्सी और वेजपोपोव्त्सी, अवस्त्रियाक और मालोकान, और स्कोप्त्सी — सभी धम अपने ही गुण गाते हैं। यही कारण है कि सभी अन्धे पिल्ला की तरह रगते रहत है। धम तो बहुत हैं परन्तु आत्मा तो एक ही है—मुझमे, तुमम उसम। इसलिए अगर हर आदमी अपन म विश्वास करन लगेगा, तो सबमे एकता आ जायगी। सभी लाग अपने प्रति सच्चे रह तो सभी मिल कर एक हो जायेंगे।'

वद्ध वडी ऊची आवाज मे बोल रहा था, और बार बार अपने इर्दगिर्द दखता था। प्रत्यक्षत उसकी इच्छा थी कि अधिक से अधिक लोग उसकी वात सुनें।

"क्या तुम्हारा यह मत बहुत दिना से है?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"मेरा? हा, बहुत दिना से। पिछले २३ बरस से वे मेरे पीछे पडे हुए हैं।"

"पीछे पडे हुए हैं? वह कैसे?"

"जिस तरह उन्होने यीसु मसीह पर जुल्म किये उसी तरह मुझ पर भी जुल्म कर रहे है। मुझे पकड लेते है और अदालतो के सामने, पादरियो, कानूनदानो, और पाखण्डियो के सामने पेश करते रहते हैं। एक बार उन्होने मुझे पागलखाने म बद कर दिया। पर वे मेरा क्या विगाड सकते हैं? म तो

आजाद जीव हू। वे मुझसे पूछते है—'तुम्हारा नाम क्या है?' वे समझते हैं कि मैं अपना नाम बतलाऊगा। पर मेरा कोई नाम ही नही है। मैंने सब कुछ त्याग दिया है। मेरा न कोई नाम है, न स्थान, न देश, मेरा कुछ भी नहीं। मैं बस, केवल स्वय हू। 'तुम्हारा नाम क्या है?' 'इसान।' 'तुम्हारी उम्र कितनी है?' मैं जवाब देता हू, 'मैं अपनी उम्र के साल नही गिनता, गिन सकता भी नही, क्योकि मैं सदा से था और सदा रहूगा।' 'तुम्हारे मा-बाप कौन है?' 'मेरे कोई मा-बाप नही, भगवान और धरती माता के अतिरिक्त मेरा कोई नही। भगवान मेरा पिता है, धरती—माता है।' 'और ज़ार? क्या तुम ज़ार को मानते हो?' वे पूछते है। मैं जवाब देता हू, 'क्यो नही। वह अपना ज़ार है, मैं अपना ज़ार हू।' 'तुम्हारे साथ मगज़पच्ची करने का क्या लाभ?' वे कहते हैं। और मैं कहता हू, 'मैं कब तुमसे कहता हू कि मेरे साथ मगज़पच्ची करो।' इस तरह वे लोग मुझे परेशान करते हैं।"

"अब कहा जा रहे हो?" नख्लूदोव ने पूछा।

"जहा भगवान ले जाय। जहा मुझे काम मिल जाय वहा काम करता हू। जो काम नहीं मिले तो भीख मागता हू।"

वृद्ध ने देखा कि बेडा किनारे पर पहुचने वाला है इसलिए उसने अपनी बात खत्म की और बडे गर्व के साथ आस पास खडे लोगो की ओर देखा, मानो मैदान मार लिया हो।

बेडा दूसरे किनारे पर जा लगा। नेख्लूदोव ने अपना बटुआ निकाला और कुछ पैसे बूढे को दिये। लेकिन उसने लेने से इकार कर दिया। बोला—

"मैं इस तरह की चीज नहीं लेता, केवल रोटी लेता हू।

"अच्छा तो, अलविदा, माफ करना।'

"माफ करने की इसमे क्या बात है। आपने मेरा कोई अपमान नहीं किया, और मेरा अपमान किया भी नही जा सकता।" और बूढे ने अपनी पीठ पर सफरी थैला फिर रख लिया जो पहले उसने उतार दिया था।

इस बीच गाडी किनारे पर उतार दी गयी थी और उसमे घोडे जोत दिये गये थे।

"मैं तो हैरान हो रहा था, हुज़ूर, कि आप उस आदमी के साथ

बातें करने लगे थे," जब नेख्लूदोव तगड़े नाविकों को पैसे दे कर गाड़ी में बैठा तो गाड़ीवान ने कहा, "यह तो किसी काम का आदमी नहीं, बिल्कुल आवारा है।"

२२

नदी की ढलान पर चढ़ कर जब वे ऊपर पहुंचे तो गाड़ीवान बोला—

"किस होटल में ले चलूं, हुजूर?"

"सबसे अच्छा कौन सा होटल है?"

"'साइबीरियन' से अच्छा कोई होटल नहीं है, लेकिन 'दयूकोव' भी बुरा नहीं है।"

"तुम्हारा जहां मन चाहे ले चलो।"

गाड़ीवान फिर सीट के एक तरफ हो कर तिरछा बैठ गया, और पहले से भी अधिक तेज़ गाड़ी चलाने लगा। यह शहर भी अन्य शहरों जैसा ही था। वैसे ही घर, हर घर की छत हरे रंग की और ऊपर बरसाती, वैसा ही गिरजा, बड़ी सड़क पर वैसी ही छोटी-बड़ी दूकानें, यहां तक कि वैसे ही पुलिस के सिपाही भी थे। परन्तु लगभग सभी घर लकड़ी के बने थे और सड़कें कच्ची थीं। एक सड़क पर पहुंच कर, जिस पर काफी रौनक थी, गाड़ीवान एक होटल के सामने रुका। लेकिन कोई भी कमरा खाली नहीं था, इसलिए वह दूसरे होटल की ओर गाड़ी ले चला। यहां पर, दो महीने के बाद, नेख्लूदोव को वैसी जगह रहने को मिली जिसका वह आदी था, जो काफी साफ और आरामदेह थी। कमरा साधारण ही उसे मिला लेकिन दो महीने तक छकड़ों पर हिचकोले खाने के बाद तथा गांवों की सरायों और पड़ाव घरों में रहने के बाद उसने चैन की सांस ली। पड़ाव घरों से उसे जुएं पड़ गयी थीं जिनसे वह कभी भी पूर्णतया छुटकारा नहीं पा सका था, इसलिए उसने पहला काम यह किया कि अपने बदन और कपड़ों को साफ किया। सामान खोलने के बाद वह पहले रूसी हमाम में गया, उसके बाद अपने शहरी कपड़े पहन—कलफ लगी कमीज़, पतलून जिस पर कुछ कुछ सिलवटें पड़ गयी थीं, फ्राक-कोट, उस पर ओवरकोट और इलाके के गवर्नर को मिलने के लिए चल पड़ा। होटल वाले ने एक गाड़ी मंगवा दी जिसका घोड़ा तो खूब पला हुआ किरगीज़ घोड़ा था लेकिन गाड़ी के चूल चलते

हुए चरमर करते थे। शीघ्र ही गाडी एक विशाल और भव्य इमारत के वडे से सायवान मे जा कर खडी हो गयी। सायवान के सामने सन्तरी और एक पुलिस का सिपाही पहरा दे रहे थे। भवन के सामने और पीछ एक बाग था, ऐस्पन और वच वक्षो के वीच, जिनकी पल्लवहीन टहनिया फैल रही थी, देवदार और फर के घन पेड गहरे हरे रग की ओढनी ओढे खडे थे।

जनरल बीमार था और मुलाकातियो से नही मिल रहा था। फिर भी नेख्लूदोव ने चोवदार से अपना काड अदर ले जाने को कहा, और चोवदार अदर से सन्तोषप्रद जवाव ले कर आया।

"अदर तशरीफ ले चलिये।"

हाल, चोबदार, अरदली, सीढिया, नाचने वाला कमरा जिसका फश खूव चमक रहा था—सभी वैसे ही थे जसे कि पीटसवग मे। लेकिन यहा उनका रोव ज्यादा था, और वे गदे भी उससे ज्यादा थे।

नेख्लूदोव को पढने वाले कमरे मे ले जाया गया।

जनरल एक फूला हुआ लेकिन जिदादिल आदमी था, उभरी हुई नाक, माथे पर जगह जगह सूजन, आखो के नीचे का मास फला हुआ और गजा सिर, वह तातारी सिल्क का ड्रेसिग-गाउन पहने हुए था, और चादी के होल्डर मे चाय का गिलास थाम चाय की चुस्किया ले रहा था और सिगरेट के कश लगा रहा था।

"मिजाज शरीफ, मेहरबान, आइय। माफ करना मैं ड्रेसिग गाउन चढाय हुए हू। पर न मिलने से तो यो मिलना ही अच्छा है,' अपनी स्थूल गदन पर ड्रेसिग-गाउन चढाते हुए, और गदन के पिछले भाग को गाउन की सिलवटो से ढकत हुए, उसन कहा, 'मेरी तबीयत कुछ अच्छी नही, इसलिए घर स वाहर नही निकलता। कहो, हमारे इतन दूर दराज इलाके म कैसे आना हुआ?"

"मैं कैदियो की एक टोली के साथ साथ जा रहा हू। इसम एक व्यक्ति है जिसके साथ मरा निकट का सम्बध है, नख्लूदाव न कहा "और मैं हुजूर की खिदमत म कुछ तो उस व्यक्ति की खातिर और कुछ एक दूसरे मतलब क लिए हाजिर हुआ ह।'

जनरल ने एक और कश लगाया और चाय की चुस्की ली सिगरेट को मलाकाइट की बनी राखदानी मे रखा और दत्तचित हो कर नख्लूदोव

की वात मुनने लगा। उसकी चमकती ग्राखें जा फूल हुए घेरों म छोटी छोटी दरारा सी लगती थी नख्लूदाव के चेहरे पर टिकी थी। केवल एक वार उसन नेख्लूदाव को टोका और वह भी सिगरेट पेश करने के लिए।

जनरल एक मुसस्कृत व्यक्ति था और फौज के उन अफसरा मे से था जिनका यह विश्वास है कि अपने पशे के साथ उदार तथा मानवीय विचारा का मेल बैठाया जा सकता है। लेकिन स्वभाव का सदभावनाशील तथा समझदार होने के कारण उसे शीघ्र ही पता चल गया कि यह सधि मिलाप असम्भव है। अत अन्दर ही अन्दर वह अशात रहने लगा और इस आन्तरिक अशान्ति को भुलान के लिए उसन शराव की शरण ली। यह शरावखारी की आदत फौज के लागा म वहुत पायी जाती है। धीरे धीरे वह इसमे अधिकाधिक डूवता गया, यहा तक कि ३५ वप तक फौज की नौकरी करने के वाद डॉक्टरा की परिभाषा म वह विल्कुल "अलकाहली" हो गया। अल्कोहल उसक अग अग म रच गया था यहा तक कि अगर वह किसी प्रकार का भी तरल पदाथ पी ले तो उस चढ जाती थी। शराव के विना वह रह न सकता था, वह उसके लिए अनिवाय वन गयी थी। शाम को हर रोज वह नशे म चूर होता। लेकिन इसकी भी उस ऐसी आदत पड गयी थी कि न ही वह लडखडाता था और न ही मुह स कोई ऊल-जलूल वात कहता। और यदि कोई ऊल-जलूल वात कह भी जाता ता उसे वडी विद्वत्तापूण वात समझा जाता क्योकि वह वडे ऊचे और महत्वपूण पद पर था। केवल सुवह के वक्त—उस वक्त जव नख्लूदाव उससे मिलने आया था—उसका दिमाग ठीक काम करता और जो कुछ उससे कहा जाता उसे ठीक समझता था। एक मुहावरा दोहरान की उसे वडी आदत थी और वास्तव मे उसी मुहावरे की वह खुद जीती जागती मिसाल भी था। वह कहा करता—"वह नशे म है पर साथ ही अक्लमन्द भी है, इसलिए उसके सग बैठ कर दो मजे मिलते है।' ऊचे अधिकारिया को मालूम था कि वह पियक्कड है लेकिन वह अन्य लोगा से ज्यादा पढा लिखा था—हालाकि उसकी शिक्षा उस समय खत्म हो गयी थी जव उसे पीने की लत्त लगी। साहसी और चतुर आदमी था चाल-ढाल का रोवीला, नशे म भी चतुराई की वात करता, इसलिए उसे इतनी वडी जिम्मेदारी वाले पद पर नियुक्त किया गया था और इस पद पर वह अब भी कायम था।

नेख्लूदाव ने उसे बताया कि जिस कैदी म उसकी दिलचस्पी है वह एक स्त्री है, और यह कि उसके साथ अन्याय हुआ है, और उसकी ओर से एक अपील ज़ार के पास भेजी गयी है।

"अच्छा, तो फिर?" जनरल बोला।

"पीटसबग मे मुझसे कहा गया था कि एक महीने के अन्दर अन्दर इस दरख्वास्त का फसला मेरे पास यहा भेज दिया जायेगा '

जनरल जोर ज़ोर से खासन लगा और अपना हाथ मेज़ की ओर बढाया और वहा पर रखी घटी का अपनी गठीली उगलियो से बजाया। उसकी आखें अब भी नख्लूदोव के चेहरे पर लगी थी और वह बराबर सिगरेट के कश लगाये जा रहा था।

"मेरी यह दरख्वास्त है कि इस औरत का उस वक्त तक यही पर रहने की इजाजत दी जाय जब तक कि इसकी अपील का जवाब नही आ जाता।"

एक अदली ने जो वर्दी पहने था कमरे म प्रवेश किया।

"दर्यापत करो कि आन्ना वासील्येव्ना जाग गयी है या नही," जनरल ने अदली से कहा। "और थोडी चाय और ले आओ।" फिर, नेख्लदोव की ओर घम कर बोला, "हा, तो और क्या बात है?"

"मेरी दूसरी दरख्वास्त एक राजनीतिक कैदी के बारे मे है। वह भी इसी टोली म जा रहा है।'

"यह बात है!" जनरल ने कहा और बडे महत्वपूण ढग स सिर हिलाया।

"वह बहुत सख्त बीमार है—मर रहा है—शायद उसे या भी यहा अस्पताल मे छोड जायगे। इ ही राजनीतिक कैदियो म से एक स्त्री उसकी टहल-सेवा करने के लिए उसके साथ रहना चाहती है।"

"क्या वह उसकी रिश्तेदार है?'

"नही, लेकिन वह उसके साथ शादी कर लेगी, अगर शादी कर लेने से उस यहा रुकने की इजाजत मिल सकती हो।"

जनरल की चमकती आखें अब भी नख्लूदाव के चेहरे पर लगी थी। वह चुपचाप सिगरेट के कश लगाता हुआ उसकी ओर देखे जा रहा था ताकि मुलाकाती विचलित हो जाय।

जब नख्लूदोव अपनी बात कह चुका तो जनरल न मेज़ पर मे एक

किताव उठायी, अगुली को लव स तर किया और जल्दी जल्दी पन्ने उलटते हुए यह पन्ना निकाल कर पढने लगा जिस पर शान्दियो क वारे म सरकारी कानन दज था।

' उस औरत को क्या सज़ा दी गयी है ? किताब पर स सिर उठाते हुए उसने पूछा।

"कडी मशक्कत की।"

'जिसे कडी मशक्कत की सज़ा दी गयी हो उसकी स्थिति शादी द्वारा वेहतर नहीं वनायी जा सकती।"

"यह तो ठीक है, लेकिन '

"माफ कीजिये। यदि कोई आज़ाद आदमी भी उसके साथ व्याह करेगा उस हालत म भी उस अपनी सजा भुगतनी पडेगी। ऐसी स्थिति म देखना यह होता है कि किसको ज्यादा कडी सज़ा मिली है—आदमी को या औरत को।"

"दोना को एक जैसी कडी मशक्कत की सज़ा मिली है।

"वस फिर दोना बरावर हो गये! जनरल ने हस कर कहा। जो मर्द को मिला है, वही औरत को भी मिला है। पर चूकि मर्द वीमार है उस यही पर छोडा जा सकता है। उसकी देखभाल क लिए जो कुछ भी जरूरी हुआ किया जायेगा। लेकिन जहा तक उस स्त्री का सवाल है, यदि वह उसस शादी कर भी ल तो भी उसके साथ पीछे नही रह सकती।

"मालकिन काफी पी रही है " अर्दली न आ कर कहा।

जनरल न सिर हिलाया और अपनी वात जारी रखत हुए कहा—

"अच्छा, मैं सोचूगा। उनके नाम क्या हैं? यहा कागज़ पर लिख दो।"

नेख्लूदोव न उनक नाम लिख दिय।

इसके वाद नेख्लदोव ने मरणासन्न कैदी स मिलन की इजाजत मागी।

"नही, इसकी इजाज़त भी मैं नही दे सकता ' जनरल ने जवाव दिया, "मुझे तुम पर शक तो विल्कुल नहीं है लेकिन तुम उसम और अन्य कदियो म दिलचस्पी रखते हो और तुम्हार पास पैसा है। और यहा, जिसके जेव म पसा हो वह सव कुछ कर सकता है। मुझसे कहा जाता है "रिश्वतखोरी को बन्द कराओ।' मगर मैं रिश्वतखोरी को कैस बन्द करा सकता हू जव सभी रिश्वत लेते हैं? जितना छोटा अफसर होगा उतना

ही जल्दी रिश्वत के लिए हाथ फैलायेगा। और तीन हजार मील के लम्बे चौडे इलाके मे इसका पता भी कैसे लगाया जा सकता है? बाहर तो हर अफसर जार बना हुआ है, जिस तरह मैं यहा पर हू," उसने हस कर कहा। "और शायद तुम राजनीतिक बंदियो से मिल भी चुके हो। बस, पैसे दिये होगे और इजाजत मिल गयी होगी, क्यो?" वह मुस्करा रहा था। "क्या, ठीक है न?"

"हा, ठीक है।"

"मैं समझ सकता हू कि इसके बिना तुम्हारे लिए कोई चारा न था। तुम्हारे दिल म राजनीतिक बंदी के लिए दद उठता है और तुम उससे मिलना चाहते हो। दूसरी तरफ इन्स्पेक्टर या कॉनवाय का सिपाही इसलिए रिश्वत ले लेता है क्योंकि उसे केवल ४० कोपेक रोजाना के हिसाब स तनख्वाह मिलती है, और उसके बाल-बच्चे हैं। वह अपनी जगह लाचार है। अगर मैं तुम्हारी जगह पर होऊ, या उसकी जगह पर, तो मैं भी यही कुछ करूगा। पर अपनी जगह पर यहा मैं कानन से एक इच भी इधर से उधर नही हो सकता। मैं इसकी अपने को इजाजत ही नही देता, क्योकि मैं इन्सान हू और मुझ पर भी भावुकता का असर हो सकता है। मैं तो ख द प्रशासन मे हू और मेरे हाथ म एक जिम्मेवारी का काम सौंपा गया है, जिसकी अपनी खास शर्तें हैं, और मुझे इन शर्तों को हर हालत मे पूरा करना है अच्छा, अब यह काम तो खत्म हुआ। अब कुछ राजधानी की खबर सुनाओ।" और जनरल बहुत कुछ पूछन और सुनाने लगा। वह खबरे भी सुनना चाहता था और साथ ही अपन प्रभुत्व और दयालुता का रोब भी गाठना चाहता था।

२३

"तुम ठहरे कहा हो?" जब नेख्लूदोव विदा होने लगा तो जनरल ने पूछा। 'दयूकोव होटल म? जगह तो बकार ही है। आज शाम को पाच बजे मेरे साथ खाना खाओ। तुम अग्रेजी जानते हो?"

'जी जानता हू।

'यह बहुत अच्छा हुआ। अभी अभी यहा एक अग्रेज यात्री पहुचा है। वह निर्वासन के विषय पर अध्ययन कर रहा है और साइबेरिया के

जेलखाना की जाच करने आया है। आज वह हमारे यहा खाना खाने आ रहा है। जरूर आना। हम पाच बजे मेज पर बैठ जाते है और मेरी पत्नी वक्त की बडी पाबन्द है। मैं उस वक्त तुम्हे उस औरत और बीमार कैदी के बारे मे भी अपना जवाब बता दूगा। शायद बीमार के पास किसी को छोडना सभव हो जाय।"

जनरल से विदा ले कर नेख्लूदोव गाडी मे बैठ डाकखाने की ओर जाने लगा। वह एक नयी उत्तेजना भरी स्फूर्ति का अनुभव कर रहा था।

डाकखाना नीची छत के एक मेहराबदार कमरे म था। काउटर के पीछे कुछेक कर्मचारी बैठे काम कर रहे थे और काउटर के सामने लोगो की भीड लगी थी। एक कर्मचारी सिर एक ओर को झुकाये चिट्ठिया पर मोहर लगा रहा था। बडी फुर्ती से उसके हाथ चल रहे थे। नख्लूदोव को ज्यादा देर इतजार नही करना पडा। उसने अपना नाम बताया तो फौरन ही उसकी डाक उसके हाथ मे दे दी गयी। डाक मे बहुत कुछ था कई चिट्ठिया, रुपया किताबे, "ओतेचेस्त्वेनिये जापीस्की" पत्रिका का नया अक। नेख्लूदोव इन्हे उठा कर लकडी के एक बेंच पर जा बैठा जिस पर कोई फौजी हाथो मे किताब पकडे, पहले से बैठा इन्तजार कर रहा था। नख्लूदोव उसके पास ही बैठ गया और अपनी चिट्ठिया छाटने लगा। चिट्ठिया म एक रजिस्ट्री चिट्ठी थी, जिसका लिफाफा बहुत बढिया था और ऊपर साफ चमकती लाल रग की मोहर लगी थी। नेख्लूदोव न मोहर को तोडा। अन्दर सेलेनिन की एक चिट्ठी थी जिसके साथ कुछेक सरकारी कागज उसने भेजे थे। देखते ही नेख्लूदोव का चेहरा लाल हो गया, और दिल धडकने लगा। कात्यूशा की अपील का जवाब आया था। यह जवाब कैसा होगा? कही अपील को रद्द तो नही कर दिया गया। नख्लूदोव न जल्दी जल्दी खत पढ डाला, जो बडी बारीक लिखावट मे लिखा था। शब्दो की बनावट दृढ थी किन्तु व बहुत ही एक दूसरे के साथ जुडे हुए थे। खत को पढना मुश्किल हो रहा था। उसे पढते ही नख्लूदोव न चैन की सास ली। जवाब उत्साहवर्द्धक था।

'प्रिय मित्र,' सेलेनिन न लिखा था, "आखिरी बार जब तुम मुझसे मिले तो तुम्हारी बातो का मुझ पर गहरा असर हुआ। मास्लोवा के बारे म जो कुछ तुमने बताया वह ठीक था। मैंने मुकद्दमे की फाइल को ध्यान से पढा है और देखता हू कि उस पर घोर अन्याय हुआ है। जिस अपील

कमेटी का तुमने उसकी दरख्वास्त पेश की थी, वही इसका निर्णय कर सकती थी। मुकद्दमे की जांच में मैंने भी सहायता की। इस चिट्ठी के साथ उस हुक्मनामे की नकल भेज रहा हूं जिसके अनुसार उसकी सजा बहुत कम कर दी गयी है। तुम्हारी मौसी काउंटेस येकातेरीना इवानाव्ना से मुझे तुम्हारा पता मिला और इसी पर में तुम्हें यह नकल भेज रहा हूं। असल दस्तावेज उस जगह पर भेज दिया गया है जहां पर मुकद्दमे से पहले उसे रखा गया था। वहां से सम्भवत फौरन ही साइबेरिया के मुख्य सरकारी दफ्तर में भेज दिया जायेगा। इस शुभसमाचार को फौरन तुम तक पहुंचाने के लिए यह खत लिख रहा हूं। सप्रेम—तुम्हारा, सेलेनिन।'

सरकारी हुक्मनामा इस तरह था—"महाराजाधिराज के अपील कार्यालय से जहां महाराजाधिराज के नाम दी हुई दरख्वास्तें ली जाती हैं।' आगे तारीख तथा अन्य कानूनी बातें लिखी थीं। "महाराजाधिराज के अपील कार्यालय के मुख्य अधिकारी की ओर से मश्चाका येकातेरीना मास्लोवा को सूचित किया जाता है, कि महाराजाधिराज ने उसकी दरख्वास्त पर विचार कर के उसे मंजूर करने की कृपा की है, और हुक्म फर्माया है कि कड़ी मशक्कत की सजा के स्थान पर साइबेरिया के किसी निकटवर्ती स्थान पर केवल निर्वासित कर दिया जाय।"

बड़ी अच्छी खबर थी और महत्वपूर्ण। जिस चीज़ की नेख्लूदोव अपने लिए तथा कात्यूशा के लिए आशा करता था वही पूरी हो गयी थी। यह ठीक है कि मास्लोवा की इस नयी स्थिति के कारण उनके आपसी सबंधों में नयी उलझनें पैदा हो गयी थीं। जितनी देर तक उस पर कड़ी मशक्कत की सजा लागू है उतनी देर तक उसके साथ शादी भी सच्ची शादी नहीं होगी। और सिवाय इसके कि वह इस द्वारा उसकी यातना को हल्का बना सके उसका कोई अर्थ भी नहीं होगा। पर अब दोनों के एक साथ रहने में कोई रुकावट नहीं थी। और इसके लिए नेख्लूदोव तैयार नहीं था। यही नहीं, सिमनसन के साथ मास्लोवा के सम्बन्ध का क्या होगा? जो शब्द कल मास्लोवा ने कहे थे, उनका क्या अर्थ था? और यदि वह सिमनसन के साथ शादी करने पर रज़ामन्द हो गयी तो यह अच्छा होगा या बुरा? नेख्लूदोव के लिए इन सवालों की गुत्थी सुलझाना आसान नहीं था इसलिए उसने इनके बारे में सोचना छोड़ दिया। "अपने आप कोई रास्ता निकल आयेगा,' उसने सोचा इस समय इस उधेड़बुन में नहीं

पडना चाहिए। इस वक्त तो मुझे जितनी जल्दी हो सके यह खुशखबरी मास्लोवा को सुनानी चाहिए और उसे कैद से छुडाना चाहिए। उसका ख्याल था कि हुक्मनामे की नक्ल से ही यह सभव हो जायगा। इसलिए डाकखाने मे से निकलते ही उसने गाडीवान को जेलखाने की तरफ चलने को कहा।

जेलखाने के भीतर जाने की उसने गवर्नर से उस रोज इजाजत नही ली थी। लेकिन अपने अनुभव से वह जानता था कि जिस बात की इजाजत बडे अफसर नही देते वह छोटे अफसरो से आसानी से पूरी हो जाती है। अब उसका यही इरादा था कि कोशिश करके जेल के अन्दर चला जाय और कात्यूशा को यह शुभसमाचार सुनाये और हो सके तो उसे फौरन छुडवा दे। साथ ही वह क्रिलत्सोव की सेहत के बारे मे दर्याफ्त करना चाहता था और जो कुछ गवर्नर ने कहा था वह उसे तथा मारीया पाव्लोव्ना को बता देना चाहता था।

जेल इन्स्पेक्टर ऊचा-लम्बा रोबीला आदमी था। मूछे और गलमुच्छे दोनो का रुख उसके होठो के कोनो की ओर था। नख्लूदोव के साथ वह बडी रुखाई से पेश आया और साफ साफ कह दिया कि चीफ के विशेष आर्डर के बिना वह बाहर के किसी भी आदमी को कैदियो से मिलने की इजाजत नही दे सकता। जब नेख्लूदोव ने कहा कि उसे तो राजधानी तक मे कैदियो से मिलने की इजाज़त मिलती रही है तो बोला—

"जी ठीक होगा, लेकिन मैं तो इजाज़त नही दे सकता। उसके लहजे से जान पडता था मानो वह कह रहा हो, "शहरो के अमीरजादे समझते हैं कि हम पर रोब गाठ कर हमे हतबुद्धि कर सकेगे। पर हम पूर्वी साइबेरिया मे रहते हुए भी कानून से अच्छी तरह वाकिफ है बल्कि हम उन्हे कानून सिखा सकते हैं।

न ही जेल इन्स्पेक्टर पर हुक्मनामे की उस नकल का ही कोई असर हुआ जो सीधी महाराजाधिराज के अपने दफ्तर से आयी थी। उसने दृढता से कह दिया कि वह नेख्लूदोव को जेलखाने की चारदीवारी मे नही घुसने देगा। वह नेख्लूदोव के भोलेपन पर बडी घृणा से मुस्करा दिया जो यह समझे बैठा था कि मास्लोवा को जेल से छुडाने के लिए यह नकल ही काफी है। उसने साफ साफ कह दिया कि अपने से बडे अधिकारी की ओर से सीधा हुक्म मिलने पर ही वह किसी कैदी को रिहा कर सकता

है। हा, इस बात का उसने आश्वासन दिया कि वह मास्लोवा से कह दगा कि उसके लिए सज़ा कम करने का हुक्म आ गया है, और ज्यो ही उसके चीफ से उसे आदेश मिला वह मास्लोवा को फौरन रिहा कर देगा, उसे बिल्कुल नही रोकेगा।

क्रिलत्साव की भी कोई खबर वह दने के लिए तैयार न था। वह यह भी बताने के लिए तैयार नही था कि इस नाम का कोई कैदी जेलखाने म है भी या नही। इस तरह नख्लदोव के कुछ भी हाथ नही लगा और वह गाडी म बैठ कर वापस अपन होटल की ओर रवाना हो गया।

इन्स्पक्टर की कठोरता का एक कारण था। जेलखाने म टाइफ्स की बीमारी फैल गयी थी क्योकि जेलखाने मे जितने कैदियो क लिए जगह थी उससे दुगुने भर पडे थे। गाडीवान ने नेख्लूदोव को बताया कि "हर रोज कितने ही लाग जेलखान म मर जाते हैं। कोई भयानक रोग उन्ह लग गया है। एक एक दिन मे बीस बीस लाशो को दफनाया जाता है।"

२४

जेलखान मे तो नेख्लदोव नाकामयाब रहा, मगर इसके बावजद वह उसी स्फूर्ति और उत्साह के साथ गवनर के दफ्तर की ओर यह पता लगाने के लिए चल पडा कि मास्लोवा के लिए असल हुक्मनामा पहुचा है या नही। वह नही पहुचा था। वहा मे नख्लूदोव सीधा अपने होटल को गया और उसी वक्त सेलेनिन तथा अपने वकील को इस बार म खत लिख दिये। खत लिख चुका तो घडी देखी। गवनर के घर जान का समय हो गया था।

रास्त म फिर उस यही खयाल आन लगा कि जब कात्यूशा को पता चलेगा कि उसकी सज़ा कम कर दी गयी है तो उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी। अब उस कहा रहना पडेगा? यदि नख्लदोव उसके साथ रह तो उनके बीच कैसा सम्बध होना चाहिए? और सिमनसन? वह उसक बारे म क्या सोचती है? उसे याद आया कि मास्लोवा बदल गयी है और इस परिवतन के बारे म सोचते हुए उसे मास्लोवा के अतीत की याद आने लगी।

"फिलहाल मुझे इन बातो के बारे मे नही सोचना चाहिए,' उसने सोचा और मास्लोवा को मन मे से निकालने की चेष्टा करने लगा। "जब वक्त आया तो देख लेगे," उसने मन ही मन कहा और यह सोचने लगा कि उसे गवनर से क्या कहना चाहिए।

जनरल के घर भोजन का प्रबन्ध उसी शानोशौकत से हुआ था जिसका नेख्लूदोव अभ्यस्त रहा था। अमीरो और बडे बडे अफसरो के घरो मे ऐसा ही आयोजन किया जाता है। नेख्लूदोव को बहुत आनन्द आया, विशेषकर जब कि आराम आसाइश तो दूर, वह मुद्दत से साधारण आराम मे भी वचित रहा था।

घर की मालकिन पीटसबर्ग की रहने वाली पुराने ढग की grande dame* थी, जार निकोलाई प्रथम के दरबार की कुलीन सेविका थी फ्रासीसी भाषा बडे स्वाभाविक ढग से और रूसी भाषा बडे अस्वाभाविक ढग मे बोलती थी। वह सारा वक्त सीधी तन कर रहती और जब हाथो को हिलाती तो कोहनियो को कमर के साथ जोडे रखती। पति के प्रति उसका आदर भाव सयत और उदासी का पुट लिये था। मेहमानो के प्रति वह अत्यन्त सदभावनापूर्ण थी हालाकि प्रत्येक के प्रति उसकी स्थिति के अनुसार, उसके व्यवहार मे हल्का सा फरक होता। नेख्लूदोव से वह इस तरह मिली जैसे घर का आदमी हो। इतने सुचारु ढग से बिना पता चले, उसने नेख्लूदोव की तारीफ की कि नेख्लूदोव को फिर एक बार अपने गुणो का आभास होने लगा और उसका हृदय सतोष से भर उठा। उस स्त्री ने नेख्लूदोव को महसूस कराया जैसे उसे मालूम हो कि वह क्यो साइबेरिया मे आया है, जैसे वह जानती हो कि जो कदम उसने उठाया है वह अनठा होते हुए भी सच्चे दिल से उठाया गया है, जैसे वह उसे कोई विलक्षण पुरुष समझती हो। इस चतुर चापलूसी तथा गवनर के घर की कमनीयता और ठाठ-बाट ने नेख्लूदोव को अभिभूत कर दिया। इस घर के सुन्दर वातावरण, स्वादिष्ट व्यजन, तथा सुशिक्षित लोगो के साथ आराम से बैठ कर वार्तालाप करने के आनन्द मे वह बिल्कुल खो गया। उसे ऐसा जान पडने लगा जैसे वह वातावरण जिसमे वह पिछले महीने रहता रहा है एक स्वप्न था जिसमे से अब वह जाग कर वास्तविकता से साक्षात कर रहा है।

---

*ऊचे समाज की महिला (फ्रेंच)

घर के लोगों के अतिरिक्त—जिनमें जनरल की बेटी, दामाद तथा एड डि-कम्प शामिल थे—वहां पर एक अंग्रेज सज्जन, एक व्यापारी जिसका सोने की खानों से सम्बन्ध था, तथा साइबेरिया के एक दूरस्थ नगर के गवनर मौजूद थे। नेख्लूदोव को सभी लोग बडे रुचिकर लगे।

अंग्रेज सज्जन की बात बडी रोचक थी। सेहत अच्छी, और गालों का रंग लाल, यह सज्जन फ्रांसीसी भाषा तो बहुत बुरी बोलता था लेकिन अपनी भाषा वह खूब जानता था, और एक प्रभावशाली वक्ता था। दुनिया का उसने बहुत कुछ देखा था और अमरीका, भारत, जापान, तथा साइबेरिया के बारे में बडी रोचक बातें सुनाता था।

नेख्लूदोव को वह युवा व्यापारी भी बहुत अच्छा और रुचिकर लगा, जिसका सोने की खानों से सम्बन्ध था। वह एक किसान का बेटा था। लन्दन का सिला सायंकालीन सूट पहन कर आया था, और कमीज में हीरों के स्टड लगा रखे थे। उसके पास पुस्तकों का बहुत अच्छा संग्रह था, जनकल्याण के कामों में खुले दिल से पैसे दिया करता था। उसके विचार यूरोपीय उदारवादी थे। नेख्लूदोव को इसमें एक प्रकार की नवीनता और श्रेष्ठता नजर आयी। वह उन स्वस्थ और भोले भाले किसानों में से था जो यूरोप की सभ्यता और संस्कृति की कलम लग जाने से निखर उठते हैं।

साइबेरिया के दूरस्थ नगर का गवनर वही आदमी था—सरकारी विभाग का भूतपूर्व डायरेक्टर—जिसकी पीटर्सबर्ग में उन दिनों बडी चर्चा थी जब नेख्लूदोव वहां पर था। स्थूलकाय आदमी था, बारीक घुंघराले बाल, हल्की नीली आंखें, गोरे हाथ जिन पर बहुत सी अंगूठियां थीं, बडी नफासत से तराशे हुए नाखून, और चेहरे पर मृदु मुस्कान। उसके जिस्म का निचला हिस्सा खासा भारी भरकम था। जनरल को अपना यह साथी बहुत पसन्द था, क्योंकि जहां चारों ओर सभी अधिकारी घूस लेते थे, वहां पर यही एक आदमी था जिसके हाथ बिल्कुल साफ थे। घर की मालकिन भी इसकी बडी कद्र करती थी। मालकिन को संगीत का शौक था और वह बहुत अच्छा पियानो बजाती थी। वे दोनों मिल कर चार हाथों से पियानो बजाते थे। इस समय नेख्लूदोव का मन इतना खुश था कि उसे यह आदमी भी बुरा नहीं लगा।

नेख्लूदोव को एड डि-कैम्प भी अच्छा लगा। खिला हुआ चेहरा, फुर्तीला बदन, ठोडी का रग कुछ कुछ नीला और भूरा यह आदमी स्वभाव का इतना अच्छा था कि आगे बढ बढ कर सबकी सेवा कर रहा था।

परन्तु सबसे अधिक उस जनरल की बेटी और उसका पति पसन्द आये। यह जोडी बडी प्यारी थी। लडकी शकल की सीधी-सादी और मन की सरल थी, और अपने दो बच्चो म दुनिया को भूले हुए थी। शादी से पहले इस युवक से उसे गहरा प्रेम रहा था और ब्याह करने के लिए उसे अपने मा-बाप के साथ बडी जद्दोजहद करनी पडी थी। उसका पति उदार विचारो का युवक था, मास्को विश्वविद्यालय का स्नातक था और पठन पाठन मे रुचि रखता था। अब सरकारी नौकरी कर रहा था और सांख्यिकीय विभाग मे काम करता था। उसका काम मुख्यतया गैररूसी जातियो से सम्बन्धित था, उनम उसकी गहरी रुचि थी और वह उन्हे नेस्तानाबूद हो जाने से बचाना चाहता था।

सभी लोग नेख्लूदोव के साथ बडी सदभावना से पेश आये, उसकी एक एक बात को बडे ध्यान मे सुनते। इतना ही नही व उसे एक नये और दिलचस्प व्यक्ति के नाते भी मिल कर खुश हुए थे। जनरल भोजन पर अपनी वर्दी पहन कर आया जिस पर सफेद क्रास चमक रहा था। वह नेख्लूदोव से दोस्तो की तरह मिला और फिर सब मेहमानो को न्योता दिया कि आइये दो दो घूट वोद्का के पी ले, और उन्हे साथ वाले छोटे से मेज की ओर ले गया जिस पर शराब वगैरा रखी थी। जनरल ने नेख्लूदोव से पूछा कि मेरे यहा से जा कर दिन भर क्या करते रहे हो। नेख्लूदोव ने बताया कि वह डाकखाने गया था जहा उसे यह खबर मिली कि जिस व्यक्ति के बारे म उसने जिक्र किया था, उसकी सजा बहुत कम कर दी गयी है। नख्लूदोव ने दोबारा जेलखाने मे जा कर कैदियो म मिलने की इजाजत मागी।

जनरल की भौह चढ गयी पर वह बोला कुछ नही। जाहिर है उसे इस वक्त काम-काज का पचडा ले बैठना अच्छा नही लगा।

"वोदका पियेंगे आप?" जनरल ने फ्रासीसी भाषा मे अग्रेज से पूछा जो अभी अभी मेज के पास आया था। अग्रेज न वोद्का पी, फिर बताने लगा कि वह उस रोज गिरजा और फैक्ट्री देखने गया था, लेकिन वह

बड़ा जेलखाना देखना चाहता था जहा निर्वासित किय जाने वाले कैदियो को रखा जाता है।

"तब तो बात बन गयी," जनरल ने नेख्लूदोव से कहा, "आप दोना एक साथ जा सकेगे। इह एक पास बना दो," उसने एड डि-कम्प से घम कर कहा।

"आप कब जाना चाहते ह?" नेख्लूदोव ने पूछा।

"अक्सर मुझे शाम को जेलखाना मे जाना ज्यादा अच्छा लगता है,' अग्रेज ने कहा, "सभी कैदी अ दर होते हैं, और पहले से किसी किस्म की तैयारी नही की होती। कैदियो को आप उनके असली रूप म देखत है।"

"ख़ूब, हमारे मित्र उ ह अपने पूरे जोवन पर देखना चाहते हैं। देखें, ज़रूर देखे। मै कई बार लिख चुका हू, लेकिन वे लोग कोई ध्यान नही देते। अब उ ह विदेशी पत्रिकाओ से इसका पता चलेगा," जनरल ने कहा और चलता हुआ खाने की मेज़ के पास जा पहुचा जहा मालकिन मेहमानो को अपने अपने स्थान पर बिठा रही थी।

नेख्लदोव के एक तरफ मालकिन और दूसरी तरफ अग्रेज सज्जन थे। उसके सामने जनरल की बेटी और सरकारी विभाग का भूतपूर्व डायरेक्टर बैठे थे। मेज पर वार्तालाप उखडा उखडा सा रहा, अब अग्रेज सज्जन ने हि दुस्तान के बारे मे कुछ कहा तो फिर जनरल ने टाकिन अभियान की चर्चा की और कहा कि वह उसके बिल्कुल हक म नही है, फिर साइबेरिया मे व्यापक घूस और भ्रष्टाचार की बात चली। इन सब विषयो मे नेख्लदोव की रुचि नही थी।

लेकिन भोजन के उपरा त, कॉफी पीते समय, घर की मालकिन, नेख्लदोव और अग्रेज सज्जन के बीच बडी दिलचस्प बातचीत होन लगी। विषय था ग्लैड्स्टन। नेख्लूदोव को लगा जैसे उसके मुह मे से बडी विद्वत्तापूण बाते निकल रही है जिनसे उसके साथी काफी प्रभावित हो रहे है। भोजन बहुत अच्छा था। और भोजन के बाद आराम-कुर्सी पर इन कुलीन, मिलनसार लोगा के बीच बठ कर कॉफी की चुस्किया लेते हुए, नख्लूदोव का और भी अच्छा लग रहा था। इसके बाद अग्रेज सज्जन ने मालकिन से पियानो बजाने की दरख्वास्त की। मालकिन और भतपूव डायरेक्टर बडे अभ्यस्त ढग से पियानो पर बीथोवन की पाचवी सिम्फनी

बजाने लगे। उसे सुनते हुए नेख्ल्यूदोव पूर्ण आत्मसन्तोष का अनुभव करने लगा। मुद्दत से वह इस सन्तोष से अनभिज्ञ रहा था, मानो उसने अभी अभी जाना हो कि वह कितना अच्छा आदमी है।

ग्रैंड पियानो बहुत बढ़िया था और सिम्फनी बड़ी कुशलता से बजायी गयी थी। कम से कम नख्ल्यूदोव को ऐसे ही लग रहा था। उसे यह सिम्फनी पसन्द थी और उससे वह परिचित भी था। जब "अन्दान्त" बजाया जाने लगा तो नेख्ल्यूदोव का हृदय अपने बहुसंख्यक गुणों का भास पा कर इतना उद्वेलित हो उठा कि उसके नाक में खारिश होने लगी।

नेख्ल्यूदोव ने मालकिन का धन्यवाद किया, और कहा कि आज उसने उस आनन्द का अनुभव किया है जिससे वह बहुत दिनों से वंचित रहा था। जब वह विदा लेने लगा तो मालकिन की बेटी उसके पास आयी – उसके चेहरे पर दृढ़ता का भाव था – और शर्मा कर कहने लगी –

"आपने मेरे बच्चों के बारे में पूछा था। उन्हें देखना पसन्द करेंगे?"

"यह समझती है कि हर कोई इसके बच्चे देखने के लिए मचल रहा है," अपनी बेटी के इस प्यारे भोलेपन को देख कर मालकिन ने मुस्करा कर कहा। "प्रिंस को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है।"

"नहीं नहीं, इसके बिल्कुल उलट, मुझे इसमें बेहद दिलचस्पी है," नेख्ल्यूदोव ने कहा। इस छलकती आनन्द विभोर ममता ने उसके दिल को अभिभूत कर दिया था। "ज़रूर मुझे उनके पास ले चलिये।"

"प्रिंस को अपने बच्चे दिखाने ले जा रही है!" जनरल ने हंसते हुए खूब ऊंची आवाज़ में कहा। वह एक मेज़ पर बैठा, अपने दामाद, सोने की खानों के मालिक और एड-डि-कैम्प के साथ ताश खेल रहा था। "जाइये, जाइये, अपना फ़र्ज़ निभा आइये।"

लड़की तेज़ तेज़ चलती हुई भीतर के कमरों की ओर जाने लगी। वह बड़ी उत्तेजित थी कि अभी उसके बच्चों पर निर्णय दिया जायेगा। पीछे पीछे नेख्ल्यूदोव जा रहा था। वे तीसरे कमरे में पहुंचे। कमरा विशाल और ऊंचा था, दीवारों पर सफ़ेद कागज़ लगा था, एक तरफ़ एक लैम्प जल रहा था जिस पर शेड लगा था। दो पालने थे, जिनके बीच एक आया कंधों पर सफ़ेद रंग का केप डाले बैठी थी। आया के चेहरे पर मृदुता का भाव था और उसकी शक्ल-सूरत खास साइबेरिया के लोगों की सी थी, गालों की हड्डियां उभरी हुई थीं। वह उठ खड़ी हुई और

झुक कर अभिवादन किया। मा एक पालने के पास जा कर उसके ऊपर झुकी। पालने मे दो बरस की एक लडकी आराम से सो रही थी। उसका मुह खुला था और लम्बे लम्बे घुघराले बाल सिरहाने पर छितर हुए थे।

"इसका नाम कात्या है," बच्ची का सफेद और नीले रग का बुना हुआ कम्बल ठीक करते हुए मा ने कहा, जिसके नीचे से बच्ची का एक गोरा गोरा पैर बाहर निकला हुआ था। "सुन्दर है न? अभी केवल दो बरस की है।"

"बडी सुदर है!"

"और यह वास्युक है। इसके नाना ने इसका यह नाम रखा है। यह बिल्कुल और तरह का है। इसकी शकल साइबेरिया के लोगो जैसी है। क्यो, है नही?"

"बडा प्यारा बच्चा है।" नख्लदोव ने कहा। गोल मटोल बालक, पेट के बल मजे से सो रहा था।

"हा?" मा बोली। उसके चेहरे पर गर्वपूर्ण मुस्कान खेलने लगी।

नेख्लूदोव को याद आया हथकडिया-बेडिया, मुडे हुए सिर, लडाई झगडा, भ्रष्टाचार के दृश्य, मरणासन्न क्रिल्त्सोव, कात्यूशा और उसका सारा अतीत। उसका मन ईर्ष्या से भर उठा। उसका मन इस सुख के लिए ललक उठा जो उसे स्वच्छ और सुसस्कृत लग रहा था।

उसने बार बार बच्चो को सराहा जिससे किसी हद तक जरूर मा को सन्तोष हुआ होगा, क्योकि वह सराहना का एक एक शब्द बडी आतुरता से सुन रही थी। इसके बाद दोना बठक मे लौट आये। यहा, जैसा कि प्रबध किया गया था, अग्रेज जेलखाने म चलने के लिए नेख्लूदोव का इन्तजार कर रहा था। घर के लोगो—बूढा और छोटा—सभी से विदा ले कर अग्रेज और नख्लूदाव दोनो घर के बाहर ओसारे मे आ गये।

मौसम बदल गया था। बरफ पड रही थी, जिसके बडे बडे फाहा से सडक, मकानो की छत, बाग के पेड, ओसारे की सीढिया, तथा गाडी की छत और घोडे की पीठ तक सभी ढक गये थे। अग्रेज के पास अपनी गाडी थी। उसके गाडीवान को जेलखाने की ओर ले चलने को कह कर नेख्लूदोव अपनी गाडी म अकेला बैठ गया और अग्रेज की गाडी के पीछे पीछे चल दिया। उसका दिल बोझल हो रहा था, मानो कोई अप्रिय सा कर्तव्य निभाने जा रहा हो। नरम नरम बर्फ पर गाडी कठिनाई से चल रही थी।

यद्यपि जेलखाने का ओसारा, छत, दीवारें—सभी कुछ बरफ की साफ, सफेद चादर से ढका हुआ था, फिर भी फाटक पर खड़े संतरी और ऊपर से लटकते लैम्प समेत यह मनहूस इमारत और उसकी रोशन खिड़कियों की कतार सुबह से भी अधिक मनहूसी फैला रही थी।

जेलखाने का रोबीला इन्स्पेक्टर फाटक पर आया। लैम्प की मद्धिम रोशनी में उसने उस प्रवेशपत्र को पढ़ा जो अंग्रेज और नेख्लूदोव का दिया गया था। हैरान हो कर उसने अपने सुगठित कंधे बिचका दिये परन्तु आदेश का पालन करते हुए उन्हें अन्दर चलने को कहा। आंगन लांघ कर उसने दायें हाथ एक दरवाजे में प्रवेश किया फिर सीढ़ियां चढ़ कर उन्हें अपने दफ्तर में ले गया। उसने उन्हें बैठने को कहा फिर पूछा कि उनकी क्या खिदमत कर सकता है। नेख्लूदोव ने कहा कि वह फौरन मास्लोवा से मिलना चाहता है। इस पर इन्स्पेक्टर ने एक वार्डर को हुक्म दिया कि मास्लोवा को लिवा लाये और स्वयं अंग्रेज के सवालों का जवाब देने को तैयार हो गया। अंग्रेज तुरंत ही उससे सवाल पूछने लगा। नेख्लूदोव दोनों के बीच दोभाषिये का काम कर रहा था।

"यह जेलखाना कितने कैदियों को रखने के लिए बनाया गया है?" अंग्रेज ने पूछा। "इस समय यहां पर कितने कैदी मौजूद हैं? आदमी कितने? औरतें कितनी हैं? बच्चे कितने हैं? कितने कैदियों को कड़ी मशक्कत की सजा मिली है? जलावतनी की सजा वाले कितने हैं? बीमार कितने हैं?"

नेख्लूदोव यंत्रवत अंग्रेज के प्रश्नों और इन्स्पेक्टर के उत्तरों का अनुवाद करता जा रहा था। उनके अर्थों की ओर उसका ध्यान नहीं था। मास्लोवा के साथ होने वाली भेंट के बारे में सोच कर सहसा उसका मन विचलित हो उठा था। इसकी उसे तनिक भी आशा नहीं थी। अंग्रेज के किसी वाक्य का वह अनुवाद कर रहा था जब कदमों की आवाज आयी, फिर दरवाजा खुला, और जैसा कि पहले भी कई बार हो चुका था, पहले एक वार्डर ने और उसके पीछे पीछे कात्यूशा ने प्रवेश किया। कात्यूशा ने सिर पर रूमाल बांध रखा था और कैदियों की जाकेट पहने हुए थी। उसे देखते ही नेख्लूदोव का मन उदास हो उठा।

"मैं जीना चाहता हू। मैं चाहता हू मेरे परिवार हो, बच्चे हा, मैं इन्साना की तरह जीना चाहता हू।" सहसा यह विचार नख्लूदाव के मन म कौंध गया, जब आखें नीची किये, तज तज डग भरती हुई कात्यूशा कमरे मे दाखिल हुई।

वह उठ खडा हुआ और उसे मिलने के लिए कुछ कदम आगे बढ आया। उसे कात्यूशा का चेहरा कठोर और अप्रिय लगा, वैसा ही जसा उस दिन लगा था जब कात्यूशा ने उसे बुरा भला कहा था। वह झेंप गयी और उसका रग पीला पड गया, घबराहट म उसकी अगुलिया जाकेट के एक कोने को बार बार मरोड रही थीं। उसने एक बार नेख्लूदाव की ओर देखा, फिर आखें नीची कर ली।

"तुम्हे मालूम है कि तुम्हारी सजा कम कर दी गयी है?"

"हा, मुझे वाडर न बताया था।"

"ज्या ही हुक्मनामे की असली कापी पहुचेगी तुम बाहर आ सकती हा और जहा भी रहना चाहो उसका फैसला कर सकती हो। हम इस पर विचार कर लग "

सहसा कात्यूशा बीच मे बोल उठी—

"मुझे क्या विचारना है? जहा व्लादीमिर सिमनसन जायेंगे, उनके पीछे पीछे मैं जाऊगी।"

वह उत्तेजित थी, फिर भी उसने आख उठा कर नख्लूदोव की ओर देखा और जल्दी जल्दी किन्तु बडी स्पष्टता स ये शब्द बोल गयी, मानो पहले से ही यह सोच कर आयी हो कि क्या कहेगी।

"क्या सच?"

"सुनो दमीत्री इवानाविच, वह चाहता है कि मैं उसके साथ रहू " वह डर कर रुक गयी और फिर अपनी भूल सुधारती हुई बाली—"उसकी इच्छा है कि मैं उसके नजदीक रहू। मेरे लिए इससे अच्छी बात क्या हो सकती है? मुझे तो इसे ही अपना सुख मानना चाहिए। इसके अलावा मेरे लिए और है ही क्या? "

"दा मे से एक ही बात है या तो यह सिमनसन स प्रेम करने लगी है और मेरी कुर्बानी बिल्कुल चाहती ही नही थी, वह कुर्बानी जिसकी मैं कल्पना करता रहा हू कि इसके लिए कर रहा हू। या फिर यह है कि यह अब भी मुझसे प्रेम करती है, और मेरी ही खातिर मुझे छोडे जा रही

है। और अब सिमनसन के साथ शादी कर के अपना सर्वस्व एक ही दाव पर लगा देना चाहती है," नेख्लदोव ने सोचा। उसे अपने आप पर शर्म आने लगी। उसे अपना चेहरा लाल पड़ता जान पड़ा।

"अगर तुम उससे प्रेम करती हो " उसने कहा।

"प्रेम करना, ना करना, ये बात मैंने भुला दी है। और फिर व्लादीमिर सिमनसन बहुत विलक्षण आदमी हैं।'

"हां, वह तो है ही," नेख्लूदोव कहने लगा "बहुत अच्छा आदमी है, और मैं सोचता हूं "

पर कात्यूशा ने फिर उसकी बात काट दी, मानो डर रही हो कि या तो नेख्लूदोव बहुत कुछ कह जायगा या उसे स्वयं सारी बात कहने का मौका नहीं मिलेगा।

"नहीं द्मीत्री इवानोविच, मुझे माफ कर दो जो मैं तुम्हारी इच्छा का पालन नहीं कर रही हूं," उसने कहा और अपनी ऐंची आंखों से, जिनकी थाह पाना असम्भव था, नेख्लदोव की ओर देखा। "जाहिर है ऐसा ही होना चाहिए। तुम्हें भी जीना चाहिए।"

कात्यूशा ने वही बात कही थी जो कुछ ही क्षण पहले स्वयं उसके मन में उठी थी। परन्तु अब यह विचार उसके मन में नहीं उठ रहा था। अब तो बिल्कुल भिन्न विचार उसके मन में उठ रहे थे। वह न केवल लज्जित ही अनुभव कर रहा था बल्कि उसे इस बात का खेद था कि कात्यूशा के चले जाने से वह जीवन में कितना कुछ खो बैठेगा।

"मुझे इसकी आशा नहीं थी," उसने कहा।

"तुम क्या यहां रहो और यातना भोगो। तुम पहले ही काफी यातना भोग चुके हो," कात्यूशा ने कहा और एक अनूठी सी मुस्कान उसके होंठों पर कांप गयी।

"मैंने कोई यातना नहीं भोगी है। इसमें मेरा हित था और मैं अब भी चाहता हूं कि जैसा बन पड़े मैं तुम्हारी सेवा करता जाऊं।"

"हमें " "हमें" शब्द कहते ही कात्यूशा ने नेख्लूदोव की ओर देखा, "हमें कुछ नहीं चाहिए। तुम पहले ही कितना कुछ मेरे लिए कर चुके हो। अगर तुम न होते ' वह कुछ कहना चाहती थी परन्तु उसकी आवाज़ लड़खड़ा गयी।

'मेरा तो शुक्रिया अदा तुम्हें नहीं करना चाहिए," नेख्लदोव ने कहा।

"लेखा करने का क्या लाभ? भगवान् हमारा लेखा-जोखा करेंगे," उसने कहा और उसकी काली काली आंखों में आंसू चमकने लगे।

"तुम कितनी अच्छी स्त्री हो!" उसने कहा।

"मैं? मैं कहा अच्छी हू?" उसने झरते आंसुओं के बीच कहा। एक दयनीय सी मुस्कान उसके होंठो पर आयी और उसका चेहरा खिल उठा।

'Are you ready?"* अंग्रेज ने पूछा।

"Directly"** नेख्लदोव ने जवाब दिया और कात्यूशा से क्रिल्त्सोव के बारे में पूछा।

उसकी उत्तेजना विलीन हो गई और स्थिर आवाज़ में जो कुछ भी उसे मालूम था उसने बता दिया। क्रिल्त्सोव बहुत ही कमज़ोर पड गया है और उसे अस्पताल में भेज दिया गया है। मारीया पाव्लोव्ना को बडी चिन्ता हो रही है और उसने दरख्वास्त की है कि उसे एक नर्स के नाते अस्पताल में रहने दिया जाय, लेकिन उसे इजाज़त नहीं दी गयी।

"तो मैं चलू?" कात्यशा ने यह देख कर कि अंग्रेज खडा इन्तज़ार कर रहा है, नेख्लूदोव से पूछा।

"मैं तुमसे अभी विदा नही हो जाऊगा। मैं तुमसे फिर मिलूगा," नेख्लूदोव ने कहा।

"मुझे माफ कर देना," कात्यशा ने कहा, उसकी आवाज़ इतनी धीमी थी कि नेख्लदोव बडी मुश्किल से सुन पाया। उनकी आखें मिलीं। उसकी ऐंची आखो मे अनोखा भाव था, और ये शब्द कहते हुए उसके होंठो पर दयनीय सी मुस्कान आ गयी थी। नेख्लदोव समझ गया कि उसके निर्णय के पीछे जिन दो कारणों का मैं सोच रहा था, उनमें से दूसरा ही सच है। यह मुझसे प्रेम करती है और समझती है कि अगर मेरे साथ चली आयी तो उससे मेरा जीवन खराब होगा। सिमनसन के साथ जाने से, यह समझती है कि मुझे आज़ाद कर देगी। यह काम करते हुए वह खुश भी है, परंतु फिर भी मुझसे विदा होते समय वह व्याकुल हो रही है।

---

*आप तयार है? (अंग्रेजी)

**अभी, (अंग्रेज़ी)

मात्यशा ने उसका हाथ दबाया, फिर झट स घूम कर कमरे से बाहर हो गयी।

नेख्लूदोव चलने के लिए तैयार था, मगर यह देख कर कि अंग्रेज़ बैठा अपनी टिप्पणियां लिख रहा है, उसने उसे बुलाना नहीं चाहा, और दीवार के साथ रखे एक लकड़ी के बेंच पर बैठ गया। सहसा उसे महसूस होने लगा जैसे वह थक कर चूर हो गया है। उसकी थकान का कारण यह नहीं था कि वह रात भर सोया नहीं था, न ही सफर के कारण, न ही इस उत्तेजना के कारण। वह जीने से थक गया था। बेंच की पीठ के साथ उसने टेक लगायी, आंखें बन्द कर ली, और क्षण भर म ही गहरी नींद सो गया।

"अगर आप चाहे तो अब चल कर जेलखाने की कोठरियां देख सकते हैं," इन्स्पेक्टर ने कहा।

नेख्लूदोव ने आंखें खोली। वह अपने को उस जगह बैठा देख कर हैरान रह गया। अंग्रेज़ अपनी टिप्पणियां लिख चुका था और कोठरियों को देखने के लिए जाना चाहता था। नेख्लूदोव उसके पीछे पीछे चल पडा। वह थका हुआ था और इस काम में उसकी कोई रुचि नहीं थी।

२६

इन्स्पेक्टर तथा वार्डरों के साथ नेख्लूदोव और अंग्रेज़ जेलखाने में दाखिल हुए। ड्योढ़ी लांघ कर वे बरामदे में पहुंचे। बरामदे में से बदबू की लपटें उठ रही थी और दो कैदी फर्श पर पेशाब कर रहे थे, नेख्लूदोव और उसके साथी देख कर हैरान रह गये। बरामदे में से गुज़र कर वे पहले वार्ड में गये जिसमे उन कैदियों को रखा गया था जिन्हे कडी मशक्कत की सज़ा दी गयी थी। वार्ड के बीचोंबीच सोने के लिए तख्ते लगे थे। उन पर अभी से कैदी लेटे हुए थे। लगभग ७० कैदी रहे होंगे। सिर के साथ सिर जोड कर तथा साथ साथ वे लेटे हुए थे। इनके प्रवेश करने पर सभी उछल कर तख्तों के सामने खडे हो गये। बेडियां खनकी और आधे मुंडे सिर चमक उठे। केवल दो कैदी नहीं उठे। एक युवक था जिसे तेज़ बुखार हो रहा था, दूसरा कोई बूढ़ा कैदी था जो लेटे लेटे कराहे जा रहा था।

"लेखा करने का क्या लाभ? भगवा
उसने कहा और उसकी काली काली आखें
"तुम कितनी अच्छी स्त्री हो!" उस
"मैं? मैं बहुत अच्छी हू?" उसने
एक दयनीय सी मुस्कान उसके होठों पर
उठा।

"Are you ready?" * अंग्रेज़ ने पूछ
"Directly," ** नेख्लदोव ने जवाब
के बारे मे पूछा।

उसकी उत्तेजना विलीन हो गई औ
उसे मालूम था उसने बता दिया। क्रिलत
है और उसे अस्पताल मे भेज दिया गया
चिंता हो रही है और उसने दरख्वास्त
अस्पताल मे रहने दिया जाय, लेकिन उ
"तो मैं चलू?" कात्यूशा ने यह दे
कर रहा है नेख्लूदोव से पूछा।
"मैं तुमसे अभी विदा नही हो ज
नख्लूदोव ने कहा।
"मुझे माफ कर देना' कात्यूशा
धीमी थी कि नख्लूदोव बडी मुश्किल से
उसकी ऐंची आखो म अनोखा भाव था
होठो पर दयनीय सी मुस्कान आ गयी थी,
निर्णय के पीछे जिन दो कारणो का मैं
ही सच है। यह मुझसे प्रेम करती है और
चली आयी तो उससे मेरा जीवन खराब ह
से, यह समझती है कि मुझे आजाद कर दे
खुश भी है, परन्तु फिर भी मुझसे विदा होत
है।

---

*आप तैयार है? (अंग्रेजी)
**अभी (अंग्रेज़ी)

तीसरे कमरे में से चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें आ रही थी। इन्स्पेक्टर ने दरवाज़ा खटखटाया और चिल्ला कर कहा–"शोर बन्द करो!" जब दरवाज़ा खुला तो कैदी यहा भी उसी तरह खम्भा के सामने तन कर खडे थे। कुछेक बीमार होने के कारण नही उठे और दो एक दूसरे के साथ गुत्थमगुत्था हो रहे थे। दोनो के चेहरे क्रोध से विकृत हो रहे थे, दोनो ने एक-दूसरे का पकड रखा था, एक ने बालो से, दूसरे ने दाढी से। जब इन्स्पेक्टर लपक कर उनके पास गया तभी उन्होंने एक दूसरे को छोडा। एक के नाक में से घूसा पडने के कारण टप टप खून बह रहा था। साथ ही कफ और लार भी निकल रही थी। इसे वह अपने लबादे की आस्तीन के साथ पोछ रहा था। दूसरा अपनी दाढी म से उखडे बाल निकाल रहा था।

"मुखिया!" इन्स्पेक्टर ने कडक कर कहा।

एक हृष्ट-पुष्ट, सुदर जवान आगे बढ आया।

"मैं इन्हे नही छुडा सका, हुजूर," उसने कहा। आमोदवश उसकी आखें चमक रही थी।

"मैं इन्हे सीधा कर दूगा!" इन्स्पेक्टर ने तेवर चढाते हुए कहा।

"What did they fight for?' अग्रेज ने पूछा।

नेख्लूदोव ने मुखिया से सवाल किया।

"एक ने दूसरे के चिथडे चुरा लिये थे," मुखिया ने जवाब दिया। वह अब भी मुस्करा रहा था। "पहले इसने घूसा मारा, और जवाब मे दूसरे ने लगाया।"

नेख्लूदोव ने अग्रेज को बता दिया।

"मैं इन लोगो से कुछ कहना चाहता हू," अग्रेज ने इन्स्पेक्टर से कहा।

नेख्लूदोव ने अनुवाद किया।

"कहिये," इन्स्पेक्टर ने कहा। इस पर अग्रेज ने अपनी इजील निकाली जिस पर चमडे की जिल्द चढी थी।

"कृपया अनुवाद कीजिये," उसने नेख्लूदोव से कहा। "तुम्हारे बीच झगडा हुआ तो तुम मार पिटाई पर उतर आये। परंतु ईसा ने–जिन्होने

---

*ये क्यो लड रहे थे? (अग्रेजी)

अंग्रेज के पूछने पर कि क्या युवक बहुत दिन से बीमार है, इन्स्पेक्टर ने जवाब दिया कि नही, उसी रोज सुबह से उसे बुखार आने लगा है। हा, बड़े को बहुत दिनो से पेट म दर्द की शिकायत है, लेकिन अस्पताल म बिल्कुल जगह न होने के कारण यही पडा है। अंग्रेज ने सिर हिला कर अपनी असम्मति प्रकट की और कहा कि वह इन लोगो से दो शब्द कहना चाहता है। नेख्लूदाव से उसने अनुवाद करने को कहा। मालूम हुआ कि अंग्रेज केवल साइबेरिया के जेलो और जलावतनो को रखे जाने के स्थानो का अध्ययन करने के लिए ही नही निकला है। वह साथ साथ एक और काम भी कर रहा है। वह जहा जाता है लोगो को यह उपदेश देता है कि ईसा पर ईमान लाओ, अपने पापो का प्रायश्चित करो ताकि तुम्हे मुक्ति प्राप्त हो सके।

"इन्हे कहिये," वह बोला, "ईसा के हृदय म इनके लिए दया तथा प्रेम था। इन्ही के लिए उन्होने अपनी जान दी थी। यदि इस सत्य मे ये विश्वास करेंगे तो भगवान् इनकी रक्षा करेंगे।" जितनी देर वह बोलता रहा, कैदी अपने बाजू सीधे लटकाये, खडे सुनते रहे। "इन्हे बताइये कि इस पुस्तक मे सब कुछ लिखा है," वह कहता गया, "क्या इनमे से कोई पढना जानता है?"

बीस से अधिक कैदी पढना जानते थे।

अंग्रेज ने बैग मे से सजिल्द इंजील की कुछ प्रतिया निकाली। बहुत से हाथ आगे बढ आये। दृढ-कठोर हाथ, जिनके नाखून काले और कठोर पड गये थे, कमीजो की खुरदरी आस्तीनो के नीचे से निकले और बंदी एक दूसरे को धक्के देते हुए आगे बढ आये। इस वार्ड मे अंग्रेज ने इंजील की दो प्रतिया भेंट कर दी।

दूसरे वार्ड मे भी यही कुछ हुआ। यहा पर भी बदबू की लपटे उठ रही थी, उसी तरह खिडकियो के बीच देव प्रतिमा लटक रही थी, दरवाजे के बायी ओर वैसा ही टब रखा था। सभी कैदी साथ साथ जुड कर लेटे हुए थे। उसी तरह वे उछल कर सीधे खडे हो गये और बाजू सीधे कर लिये। तीन कैदी नही खडे हुए। उनमे से दो उठ कर बैठ गये लेकिन तीसरा ज्यो का त्यो लेटा रहा, बल्कि नवागतुको की ओर आख उठा कर देखा भी नही। ये तीनो भी बीमार थे। यहा पर भी अंग्रेज ने वैसी ही तकरीर की और इंजील की दो प्रतिया दे दी।

तीसरे कमरे मे से चीखने-चिल्लान की आवाजें आ रही थी। इस्पेक्टर ने दरवाज़ा खटखटाया और चिल्ला कर कहा—"शोर बद करो!" जब दरवाज़ा खुला तो कैदी यहा भी उसी तरह तख्तो के सामने तन कर खडे थे। कुछेक बीमार हाने के कारण नही उठे, और दो एक दूसरे के साथ गुत्थमगुत्था हो रह थे। दोना के चेहरे क्रोध स विकृत हो रहे थे, दोनो ने एक-दूसरे का पकड रखा था, एक ने बाला से, दूसरे ने दाढी से। जब इस्पेक्टर लपक कर उनके पास गया तभी उन्हाने एक दूसरे को छोडा। एक के नाक मे स घसा पडने के कारण टप टप खून वह रहा था। साथ ही कफ और लार भी निकल रही थी। इह वह अपने लबाद की आस्तीन के साथ पोछ रहा था। दूसरा अपनी दाढी मे से उखडे बाल निकाल रहा था।

"मुखिया!" इस्पेक्टर ने कडक कर कहा।

एक हृष्ट-पुष्ट, सुदर जवान आगे बढ आया।

"मैं इहे नही छुडा सका, हुजूर," उसने कहा। आमादवश उसकी आखे चमक रही थी।

"मैं इह सीधा कर दगा!" इस्पेक्टर ने तेवर चढाते हुए कहा।

"What did they fight for?' अग्रेज ने पूछा।

नेख्लूदोव ने मुखिया से सवाल किया।

"एक ने दूसर के चियडे चुरा लिये थे," मुखिया ने जवाब दिया। वह अब भी मुस्करा रहा था। "पहले इसने घसा मारा, और जवाब मे दूसरे ने लगाया।"

नेख्लूदोव ने अग्रेज को बता दिया।

"म इन लोगा से कुछ कहना चाहता ह," अग्रेज न इस्पेक्टर से कहा।

नेख्लूदोव ने अनुवाद किया।

"कहिये," इस्पेक्टर ने कहा। इस पर अग्रेज़ ने अपनी इजील निकाली जिस पर चमडे की जिल्द चढी थी।

"कृपया अनुवाद कीजिये," उसने नेख्लूदोव से कहा। "तुम्हारे बीच झगडा हुआ तो तुम मार पिटाई पर उतर आये। परन्तु ईसा ने—जिन्होने

---

*ये क्यो लड रहे थे? (अग्रेजी)

हमारी खातिर अपने प्राण निछावर किये थे—हमे झगडे निवटाने का एक दूसरा तरीका बताया है। इनसे पूछिये कि ईसा के उपदेशो के अनुसार हम उन लोगो के साथ कैसा बरताव करना चाहिए जो हमारे साथ बुरी तरह पेश आते हैं।"

नेख्लूदोव ने अंग्रेज़ के वाक्यो तथा उसके प्रश्न का अनुवाद कर दिया।

"साहब से शिकायत करो, वह निवटारा करा देगा। क्या यही उपदेश है?" एक कैदी ने कनखियो से इन्स्पेक्टर के रोबीले डील डौल की ओर देखते हुए कहा।

"मुह पर एक घूसा जड दो, दोबारा कोई बुरी तरह पेश नही आयेगा," दूसरा बोला।

कमरे मे हसी की एक हल्की सी लहर दौड गयी। लोगो को यह जवाब पसन्द आया था।

जो कुछ इन आदमियो ने कहा, नेख्लूदोव ने अनुवाद कर सुनाया।

"इनसे कहिये कि ईसा के आदेशानुसार इनका व्यवहार बिल्कुल इसके उलट होना चाहिए। अगर कोई तुम्हारे एक गाल पर तमाचा मारे तो तुम्हे चाहिए कि तुम अपना दूसरा गाल उसके सामने कर दो," अंग्रेज़ ने अपना गाल सामने कर के दिखाते हुए कहा।

नेख्लूदोव ने अनुवाद किया।

"यह खुद आज़मा कर देखे," कैदियो मे से किसी की आवाज़ आयी।

"अगर वह दूसरे गाल पर भी तमाचा जड दे तो फिर सामने क्या करोगे?" एक बीमार कैदी ने पूछा।

"फिर वह सिर से पाव तक तुम्हारा भुरता बना देगा।"

"बना के देखे तो!" किसी ने ठहाका मार कर कहा। कमरे मे सभी जोर जोर से हसने लगे। जिस आदमी के नाक मे से खून बह रहा था वह भी, खून और कफ की परवाह न कर के हसने लगा। इस हसी मे बीमार कैदी भी शामिल हो गये।

परन्तु अंग्रेज़ ज़रा भी विचलित नही हुआ। उसने नेख्लूदोव से यह कहने को कहा कि जिन लोगो के हृदय मे सच्चा विश्वास है उनके लिए जो कुछ असभव जान पडता है वही सभव और आसान हो जाता है।

"इनसे पूछिये कि क्या ये शराब पीते हैं?"

"जरूर!" किसी ने कहा और इसके बाद फिर ठहाका और नाक सुड़कने की आवाजें आने लगी।

उस कमरे में चार कैदी बीमार थे। अंग्रेज ने पूछा कि क्या कारण है, सभी बीमार कैदियों को एक ही वार्ड में क्यों नहीं रखा जाता। जवाब में इन्स्पेक्टर ने कहा कि वे खुद अलग रहना नहीं चाहते, उन्हें छूत की बीमारी नहीं है, सहायक डॉक्टर उनकी पूरी पूरी देखभाल करता है और उनकी हर जरूरत पूरी करता है।

"उसकी सूरत देखे दो हफ्ते गुज़र चुके हैं," किसी ने बड़बड़ा कर कहा।

इन्स्पेक्टर ने कोई जवाब नहीं दिया और अगले वार्ड की ओर उन्हें ले चला। यहां पर भी उसी तरह दरवाज़ा खोला गया, सभी उठ कर चुपचाप खड़े हो गये। यहां पर भी अंग्रेज ने इंजील की प्रतियां बांटीं। पांचवें और छठे और बाकी सभी वार्डों में भी यही कुछ हुआ।

कड़ी मशक्कत वाले कैदियों के वार्ड देख चुकने के बाद, वे जलावतनों के वार्ड देखने गये। वहां से वे उन कैदियों के वार्ड में गये जिन्हें उनकी पंचायतों ने निर्वासित किया था, फिर उन लोगों के वार्ड में जो अपनी खुशी से कैदियों के साथ साथ जा रहे थे। हर वार्ड में उन्हें वही कुछ नज़र आया: ठिठुरते, भूखे, निठल्ले कैदी, रोगग्रस्त, अपमानित और बेड़ियों में जकड़े हुए। उन्हें यों दिखाया जा रहा था मानो वन्य पशु हों।

इंजील की जितनी प्रतियां अंग्रेज को देनी थीं, दे चुकने के बाद, उसने और देना बन्द कर दिया और भाषण भी देना बंद कर दिया। उस जगह के दृश्य इतने निराशाजनक थे, और वातावरण में तो विशेषतया इतनी घुटन थी कि उसका भी उत्साह शिथिल पड़ गया। वह भी अब एक कोठरी से दूसरी कोठरी में जाते हुए, इन्स्पेक्टर की रिपोर्ट के जवाब में केवल 'all right'* कहे जा रहा था। नेख्लूदोव उनके पीछे पीछे चला जा रहा था। उसे लगा जैसे वह स्वप्न देख रहा है। वह न और देखने से इन्कार कर पा रहा था, न ही उसमें इतनी शक्ति थी कि वहां से बाहर निकल जाय। उसका भी शरीर शिथिल और मन निराश हो रहा था।

---

*ठीक है, (अंग्रेजी)

२७

जलावतनो के एक वाड मे, अचानक नटनूदोव को वह विचित्र बूढा नज़र आया जिसने उसी दिन प्रात उसके साथ बेडे मे नदी पार की थी। फटे-हाल और मुह पर झुरिया पडी हुइ, वह तख्ता के बीच फश पर बैठा था। नगे पाव, बदन पर एक मैली, सुहागे के रग की कमीज़ और उसी रग की पतलून पहने था। कमीज़ एक कधे पर से फटी थी। नवागन्तुको की ओर उसने बडे कठोर तथा प्रश्नसूचक नेत्रो से दखा। मैली-कुचैली और जगह जगह से फटी कमीज मे से उसका कृश शरीर झाक रहा था परन्तु उसका चेहरा पहले से भी अधिक सजीव और गभीर नज़र आ रहा था। अय वार्डो की तरह यहा पर भी अफसरो के अन्दर आने पर सभी कैदी उछल कर सीधे खडे हो गये। लेकिन बूढा बैठा रहा। उसकी आखे चमक रही थी और भौहे क्रोध से सिकुडी हुई थी।

"खडे हो जाओ!" इन्स्पेक्टर ने उसे पुकार कर कहा।

बढा नही उठा, केवल घृणा से मुस्कराने लगा।

"तेरे चाकर तेरे सामने खडे हैं, मैं तेरा चाकर नही हू। वह निशान तेरे " इन्स्पेक्टर के माथे की ओर इशारा करते हुए बूढे ने कहा।

"क्या आ आ?" इन्स्पेक्टर ने धमकाते हुए कहा और उसकी ओर कदम बढाया।

"मैं इस आदमी को जानता हू," नेम्लूदोव बोला, "इसने क्या कसूर किया है?"

"इसके पास पासपोट नही है, पुलिस वाला ने इसे पकड कर यहा भेज दिया है। हम कई बार उह कह चुके हैं कि ऐसे लोगा को हमारे पास मत भेजा करो लेकिन वे फिर भी भेज देत हैं," इन्स्पेक्टर ने गुस्से से, बूढे की ओर कनखिया से देखते हुए कहा।

"मालूम पडता है तू भी ईसा के दुश्मना के साथ मिल गया है?" बूढे ने नेख्लूदोव से कहा।

"नही, मैं तो जेलखाना देखने आया हू।'

"क्या यह देखने आया है कि ईसा का दुश्मन इन्सानो पर किस तरह जुल्म करता है? हजारो इन्सानो को इसन पिजडे म बन्द कर रखा है। भगवान् ने कहा है कि इन्सान अपन पसीने की कमाई स अपना पेट

मरे। पर ईसा के दुश्मन ने उन्हें बन्द कर रखा है ताकि वे निठल्ले बैठे रहें। उनके सामने इस तरह रोटी फेंकता है जिस तरह जानवरों के सामने फेंकी जाती है, ताकि ये भी जानवर बन जायें।"

"यह आदमी क्या कह रहा है?" अंग्रेज ने पूछा।

नेख्लूदोव ने बताया कि बूढ़ा इन्स्पेक्टर को दोष दे रहा है कि उसने इन्सानों को जेलखाने में बन्द कर रखा है।

"उससे पूछिये यह क्या कहता है कि अगर कोई आदमी कानून तोड़े तो उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए?" अंग्रेज ने कहा।

नेख्लूदोव ने प्रश्न का अनुवाद किया।

बूढ़ा विचित्र ढंग से हंसने लगा। उसके दांतों की बनावट बड़ी अच्छी थी।

"कानून?" बूढ़े ने घृणा से कहा। "पहले ईसा के दुश्मन ने सब को लूटा, सारी पृथ्वी पर कब्जा कर लिया इन्सानों के सब अधिकार छीन लिये—सभी अपने पास रख लिये, अपने सभी विरोधियों को मौत के घाट उतार दिया, फिर कानून बनाने बैठ गया कि चोरी करना और हत्या करना जुर्म है। उसे चाहिए था कि ये कानून पहले बनाता।"

नेख्लूदोव ने अनुवाद किया। अंग्रेज मुस्कराने लगा।

"अच्छा तो इससे पूछिये कि अब क्या करना चाहिए—डाकुओं और हत्यारों के साथ कैसा सलूक करना चाहिए?"

नेख्लूदोव ने फिर उसके प्रश्न का अनुवाद किया।

"इससे कहो कि ईसा विरोधी की जो मोहर उस पर लगी है उसे मिटा दे" बूढ़े ने बड़ी दृढ़ता से भौंहें चढ़ा कर कहा। "तब उसे न डाकू नजर आयेंगे और न ही हत्यारे। इसे यह कह दो।"

He is crazy"* नेख्लूदोव के अनुवाद करने पर अंग्रेज ने कहा और कन्धे बिचकाते हुए कमरे में से बाहर चला गया।

"तू अपना काम देख, औरों को मत तंग कर। हर कोई अपनी गठरी खुद उठाये। भगवान् जानते हैं किसे सजा देनी है और किसे क्षमा करना है। हम इन्सान कुछ नहीं जानते," बूढ़े ने कहा। "तू अपना अफसर खुद बन, फिर अफसरों की जरूरत नहीं रहेगी। जा, जा," गुस्से से भौंहें

---

*यह पागल है, (अंग्रेजी)

सिकोड़ते हुए, और चमकती आखो से नेख्लूदोव की ओर देखते हुए जो अभी तक वाड मे ही खडा था, बूढा कहता गया। "क्या तुझे और कुछ देखना बाकी है? देख नही रहा है किस तरह ईसा के दुश्मन के चाकर इसाना के खून पर जुए पाल रहे है? जा, चला जा।"

नख्लूदोव वाड मे से निकल गया और अग्रेज के साथ जा मिला जो इस्पेक्टर के साथ एक खुले दरवाजे के पास खडा था। अग्रेज इन्स्पेक्टर से पूछ रहा था कि यह कौन सा कमरा है।

"मुर्दाखाना है।"

"ओह!" अग्रेज ने कहा और कहा कि वह कमरा देखना चाहता है।

साधारण सा कमरा था, बहुत बडा भी नही था। दीवार से एक छोटा सा लैम्प लटक रहा था, उसकी मद्धिम सी रोशनी मे एक कोने म रखे कुछ बोरे और लकडी के कुदे नजर आ रहे थे। दायी ओर सोने वाले तख्तो पर चार मुर्दे पडे थे। पहली लाश किसी ऊचे लम्बे आदमी की थी, मुह पर छोटी सी दाढी और आधा सिर मुडा हुआ था। गाढे की मोटी कमीज और पतलून पहने था। लाश अकड चुकी थी। नीले नीले हाथ जिन्हे प्रत्यक्षत छाती पर जोडा गया था, अब एक दूसरे से अलग हो गये थे। टागें भी बिखर गयी थी और नगे पाव बाहर निकले हुए थे। उससे आगे एक बुढिया की लाश रखी थी, पैर नगे और सिर भी नगा था। सफेद जाकेट और पेटीकोट पहने थी। बाला की पतली सी चोटी कपडे के नीचे से झाक रही थी। मुह पिचका हुआ और पीला था और नाक तीखी। उससे परे एक और आदमी की लाश रखी थी जिसने बैगनी से रग के कपडे पहन रखे थे। इस रग को देख कर नेख्लूदोव को किसी चीज की याद आयी।

उसने और भी नजदीक जा कर लाश को देखा।

छोटी सी नोकदार दाढी ऊपर को उठी थी। मजबूत, सुगढ नाक, ऊचा, सफेद माथा, पतले घुघराले बाल—नेख्लूदोव ये परिचित नाक-नक्श देख कर ही पहचान गया, लेकिन उसे अपनी आखो पर विश्वास नही हो रहा था। कल इसी चेहरे पर कितना क्रोध, कितनी उत्तेजना और यन्त्रणा नजर आ रही थी, परन्तु इस समय शान्त, निश्चल और बेहद सुदर लग रहा था।

[illegible] ही था, या यों कहें उसके पार्थिव जीवन के अवशेष [illegible]।

"[illegible] उसने दुःख झेले? क्या जिया? क्या इसका भेद अब इसने [illegible] है?" नेख्लूदोव सोचने लगा लेकिन इसका कोई भी उत्तर उसे [illegible]। मौत के अलावा और कुछ नज़र नहीं आ रहा था। नेख्लूदोव [illegible] लगा, जैसे बेहोश होने लगा हो।

[illegible] से कहा कि मुझे बाहर आँगन में ले चलो। और बिना [illegible] वह गाड़ी में बैठ कर होटल के लिए रवाना हो गया। [illegible] में बैठ कर उन सब बातों के बारे में सोचना चाहता था जो [illegible] थी। यह उसके लिए अत्यावश्यक हो गया था।

२८

[illegible] आया नहीं, बड़ी देर तक कमरे में चक्कर लगाता रहा। [illegible] अब उसे कोई काम न रहा था। कात्यूशा को अब उसकी [illegible] नहीं थी और यह सोच कर वह उदास और लज्जित अनुभव [illegible] रहा था। लेकिन उसका मन इस कारण विचलित नहीं था। उसका [illegible] अभी खत्म नहीं हुआ था। न केवल खत्म ही नहीं हुआ था, [illegible] वचन दिये हुए था, और नेख्लूदोव से यह [illegible] कि वह [illegible] से कोई काम करे।

[illegible] में वह जिस घोर दुष्टता को देख रहा था और [illegible] था—और विशेषकर आज जिससे उसका उस भयानक [illegible] हुआ था, जिसने हाथों उस अतिप्रिय क्रिल्त्सोव की [illegible] था, उसी की विजय हुई [illegible] कोई सम्भावना नज़र नहीं आ रही थी कि कभी उस [illegible] है, या बस पाया जा सकता है।

[illegible] के सामने दस सहस्र, हज़ारों अपमानित इन्सानों का [illegible] में बन्द हैं। और जो लोग उन्हें [illegible], सरकारी वकील तथा इन्स्पेक्टर—[illegible] नहीं है। [illegible]

सिकोड़ते हुए, और चमकती आँखों से नेख्लूदोव की ओर देखते हुए जो अभी तक वार्ड में ही खड़ा था, बूढ़ा कहता गया। "क्या तुझे और कुछ देखना बाकी है? देख नहीं रहा है किस तरह ईसा के दुश्मन के चाकर इन्सानों के खून पर जुए पाल रहे हैं? जा, चला जा।"

नेख्लूदोव वार्ड में से निकल गया और अंग्रेज के साथ जा मिला जो इन्स्पेक्टर के साथ एक खुले दरवाज़े के पास खड़ा था। अंग्रेज इन्स्पेक्टर से पूछ रहा था कि यह कौन सा कमरा है।

"मुर्दाखाना है।"

"ओह!" अंग्रेज ने कहा और कहा कि वह कमरा देखना चाहता है।

साधारण सा कमरा था, बहुत बड़ा भी नहीं था। दीवार से एक छोटा सा लैम्प लटक रहा था, उसकी मद्धिम सी रोशनी में एक कोने में रखे कुछ बोरे और लकड़ी के कुन्दे नजर आ रहे थे। दायीं ओर सोने वाले तख्तों पर चार मुर्दे पड़े थे। पहली लाश किसी ऊँचे-लम्बे आदमी की थी, मुँह पर छोटी सी दाढ़ी और आधा सिर मुंडा हुआ था। गाढ़े की मोटी कमीज और पतलून पहने था। लाश अकड़ चुकी थी। नीले नीले हाथ जिन्हें प्रत्यक्षतः छाती पर जोड़ा गया था, अब एक दूसरे से अलग हो गये थे। टाँगें भी बिखर गयी थीं और नंगे पाँव बाहर निकले हुए थे। उससे आगे एक बुढ़िया की लाश रखी थी, पैर नंगे और सिर भी नंगा था। सफेद जाकेट और पेटीकोट पहने थी। बालों की पतली सी चोटी कपड़े के नीचे से झांक रही थी। मुंह सिकुड़ा हुआ, और पीला था और नाक तीखी। उससे परे एक और आदमी की लाश रखी थी जिसने बैंगनी से रंग के कपड़े पहन रखे थे। इस रंग को देख कर नेख्लूदोव को किसी बात की याद आयी।

उसने और भी नजदीक जा कर लाश को देखा।

छोटी सी नोकदार दाढ़ी ऊपर को उठी थी। मजबूत सुन्दर नाक, ऊँचा, सफेद माथा, कम घुंघराले बाल—नेख्लूदोव ने परिचित नाक-नक्श देख कर ही पहचाना, यद्यपि उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। कल इसी चेहरे पर कितना क्रोध, कितनी उत्तेजना और सन्ताप नजर आ रहा थी, परन्तु इस समय शान्त, निश्चल और बेहद सुन्दर लग रहा था।

वह क्रिलत्सोव ही था, या यो कहे उसके पार्थिव जीवन के अवशेष पड़े थे।

"उसने क्यो इतने दुख झेले? क्यो जिया? क्या इसका भेद अब इसने पा लिया है?" नेख्लूदोव सोचने लगा लेकिन इसका कोई भी उत्तर उसे नही मिला। मौत के अलावा और कुछ नजर नही आ रहा था। नेख्लूदोव का जी घबराने लगा, जैसे बेहोश होने लगा हो।

इन्सपेक्टर से उसने कहा कि मुझे बाहर आगन मे ले चलो। और बिना अंग्रेज से विदा लिये वह गाडी मे बैठ कर होटल के लिए रवाना हो गया। वह निराले म बैठ कर उन सब बातो के बारे म सोचना चाहता था जो आज शाम को उसने देखी थी। यह उसके लिए अत्यावश्यक हो गया था।

२८

नेख्लूदोव सोया नही, बडी देर तक कमरे म चक्कर लगाता रहा। कात्यूशा के साथ अब उसे कोई काम न रहा था। कात्यूशा को अब उसकी जरूरत नही थी और यह सोच कर वह उदास और लज्जित अनुभव कर रहा था। लेकिन उसका मन इस कारण विचलित नही था। उसका दूसरा काम अभी खत्म नही हुआ था। न केवल खत्म ही नही हुआ था, बल्कि उसे पहले से कही अधिक बेचैन किये हुए था, और नेख्लूदोव से यह माग कर रहा था कि वह सक्रिय रूप से कोई काम करे।

पिछले कुछ दिनो से वह जिस घोर दुष्टता को देख रहा था और जिसको उसने जाना था—और विशेषकर आज जिससे उसका उस भयानक जेल मे साक्षात्कार हुआ था, जिसके हाथो उस अतिप्रिय क्रिलत्सोव की हत्या हुई थी, उसी दुष्टता का चारो ओर राज था, उसी की विजय हुई थी। नेख्लूदोव को कोई सभावना नजर नही आ रही थी कि कभी उस पर विजय पायी जा सकती है, या कैसे पायी जा सकती है।

उसकी आखो के सामने उन सैकडो, हजारो अपमानित इन्सानो का चित्र घूम गया जो दुर्गन्ध भरे जेलखाना मे बन्द हैं। और जो लोग उन्हे बन्द करते हैं—जनरल, सरकारी वकील तथा इन्स्पेक्टर—उन्ह इन इन्साना की तनिक भी परवाह नही है। उसकी आखो के सामने उस विचित्र बूढे आदमी का चेहरा घूम गया जो आजाद था और अधिकारियो का

परदाफाश कर रहा था, इसलिए उसे पागल ठहराया जाता था। उसकी आखो के सामने, उन लाशो के बीच, क्रिल्त्सोव का सुदर चेहरा, जो मानो मोम का बना हो, घूम गया, जो मरने से पहले क्रुद्ध हो रहा था। एक बार फिर वही सवाल नेख्लदोव के मन म उठने लगा क्या मैं पागल हू या वे लोग पागल है जो ये दुष्कर्म करते हुए भी समझे बैठे हैं कि उनके दिमाग ठीक काम कर रहे है। यह प्रश्न पहले से भी अधिक आग्रह के साथ उसके मन मे उठा और उससे इसका उत्तर मागने लगा।

वह कमरे में इतनी देर तक चलता रहा था और इतना अधिक सोचता रहा था कि वह थक गया और लैंम्प के निकट सोफे पर बैठ गया। यो ही उसने इजील को मेज पर से उठाया और उसके पन्ने उलटने लगा। यह इजील अग्रेज ने उसे भेंट की थी, और बाहर से लौट कर उसने अपने जेब खाली करते समय इसे भी निकाल कर मेज पर रख दिया था।

"लोग कहते है कि हर प्रश्न का उत्तर इस पुस्तक म मिल जाता है," वह सोचने लगा, और जो पन्ना सामने आया उसी को पढने लगा। पन्ना मत्ती अध्याय १८ पर खुला था।

१ उसी घडी चेले यीशु के पास आ कर पूछने लगे, कि स्वग के राज्य मे बडा कौन है?

२ इस पर उसने एक बालक को पास बुला कर उनके बीच म खडा किया।

३ और कहा, मैं तुमसे सच कहता हू यदि तुम न फिरो और बालको के समान न बनो तो स्वग के राज्य मे प्रवेश करने नही पाओगे।

४ जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा वह स्वग के राज्य मे बडा होगा।

"हा हा, यह ठीक बात है," नेख्ल्दोव ने सोचा। उसे याद आया कि उसके जीवन का सबसे सुखमय तथा शान्तिमय काल वही था जब उसके हृदय म विनम्रता थी।

५ और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है।

६ पर जो कोई इन छोटो म से जो मुझ पर विश्वास रखते हैं एक को ठोकर खिलाए, उसके लिए भला होता, कि बडी चक्की का पाट उसके गले मे लटकाया जाता, और वह गहरे समुद्र में डुबाया जाता।

"यह किस लिए – 'जो कोई ग्रहण करता'? वहा ग्रहण करता? और 'मेरे नाम से' का क्या मतलब है?" नेख्लूदोव ने मन ही मन सवाल किया। उसे महसूस हो रहा था जैसे ये शब्द उसके पल्ले नही पड रहे ह। "और उसके गले मे वडी चक्की का पाट क्या लटकाया जाय? और गहरे समुद्र म क्या? नही, यह ठीक नही, यह वात सटीक नही है, स्पष्ट नही ह।" उसे याद आया कि जीवन मे कितनी ही वार उसन इजील को पढना शुरू किया था लेकिन इन वाक्यो की अस्पष्टता के कारण वह उसे वद कर देता रहा था। उसने सातवा, आठवा, नौवा और दसवा पद पढे। इनमे प्रलोभना का ज़िक्र था, तथा यह कि वे अवश्य ससार म आयेंगे तथा नक की आग मे दड का ज़िक्र था, जिसम लोगा को झोका जायेगा और वाल फरिश्ता की चर्चा थी जो स्वग मे परम पिता का मुखारविद देखते हैं। "कितने खेद की वात है कि यह इतना अस्पष्ट है," वह सोचने लगा, "फिर भी दिल कहता है कि इसम कोई अच्छी वात है।"

११ क्योकि मानव-पुत्र उस चीज़ की रक्षा करने आया है जो खो गयी थी, – उसन आगे पढा।

१२ तुम क्या समझते हो? यदि किसी मनुष्य की सौ भेडें हा, और उनम से एक भटक जाय, तो क्या निनानवे को छाड कर, और पहाडा पर जा कर, उस भटकी हुई को न ढूढेगा?

१३ और यदि ऐसा हो कि उसे पाय, तो मैं तुमसे सच कहता हू, कि वह उन निनानवे भेडो के लिए जो भटकी नही थी इतना आनन्द नही करेगा, जितना कि इस भेड के लिए करेगा।

१४ ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वग म है यह इच्छा नही, कि इन छोटा म से एक भी नाश हो।

"हा, पिता की इच्छा नही थी कि इनम से एक का भी नाश हो, और यहा सकडा और हजारा की सख्या म इन्सान नष्ट हो रह हैं। और इनके वचाव जान की कोई सभावना नही है," उसन सोचा और आगे पढने लगा

२१ फिर पतरस ने पास आ कर, उससे कहा, ह प्रभु, यदि मरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी वार उसे क्षमा करू, क्या सात वार तक?

२२ यीशु ने उससे कहा, मैं तुझसे यह नहीं कहता, कि सात बार,
वरन सात बार के सत्तर गुने तक।

२३ इसलिए स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिसने अपने
दासों से लेखा लेना चाहा।

२४ जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उसके सामने लाया गया
जो दस हजार तोड़े धारता था।

२५ जबकि चुकाने को उसके पास कुछ न था तो उसके स्वामी ने
कहा, कि यह और इसकी पत्नी और लड़केवाले और जो कुछ इसका है
सब बेचा जाय, और वह कर्ज चुका दिया जाय।

२६ इस पर उस दास ने गिर कर उसे प्रणाम किया, और कहा,
हे स्वामी, धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूंगा।

२७ तब उस दास के स्वामी ने तरस खा कर उसे छोड़ दिया और
उसका धार क्षमा किया।

२८ परन्तु जब वह दास बाहर निकला, तो उसके संगी दासों में से
एक उसको मिला, जो उसके सौ दीनार धारता था, उसने उसे पकड़
कर उसका गला घोटा, और कहा, जो कुछ तू धारता है भर दे।

२९ इस पर उसका संगी दास गिर कर, उससे विनती करने लगा,
कि धीरज धर मैं सब भर दूंगा।

३० उसने न माना, परंतु जा कर उसे बन्दीगृह में डाल दिया, कि
जब तक कर्ज को भर न दे, तब तक वहां रहे।

३१ उसके संगी दास यह जो हुआ था देख कर बहुत उदास हुए,
और जा कर अपने स्वामी को पूरा हाल बता दिया। वे राजा के पास
गये और उसे सारी बात बतायी।

३२ तब उसके स्वामी ने उसको बुला कर उससे कहा, हे दुष्ट दास,
जो मुझसे विनती की, तो मैंने तो तेरा वह पूरा कर्ज क्षमा किया।

३३ सो जैसे मैंने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने
संगी दास पर दया करना नहीं चाहिए था?

"तो क्या यही असल बात है?" सहसा नेख्लूदोव चिल्ला उठा।
उसके रोम रोम में से यह आवाज उठी—"हां यही है, यही है।"

नेख्लूदोव के साथ भी वही कुछ हुआ जो अक्सर उन लोगों के साथ
होता है जो आध्यात्मिक जीवन जी रहे होते हैं। जो विचार पहले अनोखा

सा, विरोधाभास से भरा, यहा तक कि मजाक सा लगा करता था, उसे जब जीवन के अनुभवो से अधिकाधिक समर्थन प्राप्त होता गया, तो सहसा वही विचार अतिसरल, तथा अटल सचाई नजर आने लगा। निश्चय ही, जिस भयानक दुष्टता से इन्सान यन्त्रणाए भाग रहे हैं उससे छुटकारा पाने का केवल एक ही साधन है कि वे भगवान के सामने हमेशा इस बात को कबूल करे कि वे कसूरवार हैं, और इसलिए दूसरो को दण्ड देने या सुधारने के योग्य नही हैं। यह बात नेख्लूदोव के सामने स्पष्ट हो गयी। उसने समझ लिया कि वह भयानक दुष्टता जिसे वह कैदखानो और बन्दीगृहो मे देखता रहा है तथा इस दुष्टता को बढावा देने वालो का आत्मविश्वास इसी बात से पैदा हुआ था कि लोग वह काम करना चाहते ह जो उनके लिए नामुमकिन है, अर्थात् स्वय बुरे होते हुए दूसरा की बुराई को दूर करना चाहते हैं। दुश्चरित्र लोग अन्य दुश्चरित्र लोगो को सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश करते हैं, और समझते हैं कि यह काम वे यान्त्रिक उपाया द्वारा सम्पन्न कर सकेगे। परिणाम यह होता है कि जरूरतमन्द और स्वार्थी लोग इस मिथ्या दण्ड तथा सुधार को अपना पेशा बना लेते हैं और स्वय भ्रष्टता की चरम सीमा तक जा पहुचते हैं, तथा जिन लोगो पर अत्याचार करते है उन्हे भी सारा वक्त दूषित करते रहते हैं। नेख्लूदाव की आखें खुल गयी। उसे साफ नजर आने लगा कि जिन विभीषिकाओ का वह देखता रहा था, उनका स्रोत क्या है, और उनका अन्त करने के लिए क्या करना होगा। यह उत्तर वही था जो ईसा ने पतरस को दिया था और जो नेख्लूदोव को स्वय नही मिल पाया था। सदा क्षमा करते रहो, सब को क्षमा करते रहो, एक बार नहीं, अनन्त बार, क्योकि कोई भी ऐसा व्यक्ति नही जो स्वय दोषी न हो, इसलिए कोई भी इस योग्य नही कि वह किसी को दण्ड दे या किसी का सुधार करे।

"लेकिन यह बात इतनी सरल ता नही हो सकती," नेख्लूदोव ने सोचा। परन्तु फिर भी उसने देखा कि यही उस प्रश्न का, न केवल सैद्धान्तिक बल्कि व्यावहारिक हल भी है, हालाकि पहले यही बात उसे बडी अजीब सी लगती थी। साधारणतया यह आपत्ति की जाती है कि बुरे काम करने वालो का क्या किया जाय? उन्हे सजा दिये बिना छोडा तो नही जा सकता। लेकिन अब यह आपत्ति नेख्लूदोव को उलझन मे नही

डालती थी। यदि दण्ड देने से जुर्म कम होते हों या जुर्म करने वाले का आचार सुधरता हो तब तो इस आपत्ति का कोई मूल्य हो सकता है, लेकिन बात इसके बिल्कुल उलट है, और यह भी स्पष्ट है कि दूसरों का चरित्र सुधारने की सामर्थ्य किन्हीं में भी नहीं है तो विवेक यही कहता है कि वह काम करना छोड़ दें जो हानिकारक, अनैतिक तथा निर्दयी है। शताब्दियों से उन लोगों को फांसी पर चढ़ाया जाता रहा है जिन्हें अपराधी समझा जाता था। तो क्या वे खत्म हो गये हैं? खत्म तो क्या होंगे, उनकी संख्या पहले से भी बढ़ गयी है। और उनको बढ़ाने वाले एक तो मुजरिम हैं जिन्हें सजायें दे कर भ्रष्ट किया जाता है और दूसरे वे वैध मुजरिम हैं—अदालतों के जज, सरकारी वकील, जाचकर्ता, जेलर इत्यादि—जो लोगों पर इन्साफ करने बैठते हैं और उन्हें सजाएं देते हैं। यह बात भी नेख्लूदोव की समझ में आ गयी कि सामान्यतया यदि समाज और उसकी व्यवस्था बनी हुई है तो इसलिए नहीं कि ये वैध मुजरिम विद्यमान हैं, जो लोगों पर इन्साफ करते और उन्हें दण्ड देते हैं वरन् इसलिए कि उनके भ्रष्टकारक प्रभाव के बावजूद इन्सानों के दिल में अब भी दया भावना है और वे एक दूसरे से प्रेम करते हैं।

इस आशा से कि शायद उसके विचारों का समर्थन उसे इंजील में मिले, नेख्लूदोव शुरू से उसे पढ़ने लगा। पढ़ते हुए वह पहाड़ पर दिये गये उपदेश वाले स्थल तक पहुंचा। सदा ही इस उपदेश का उसके मन पर गहरा असर हुआ करता था, हालांकि वह उसे सुन्दर किन्तु अव्यावहारिक लगता था, और वह समझता था कि इसमें मनुष्य से उन बातों की मांग की गयी है जो अत्यधिक दूर की और अप्राप्य हैं। परन्तु आज पहली बार इस उपदेश में उसे सरल, स्पष्ट, व्यावहारिक नियमों का बोध हुआ, जिन पर आचरण करने से (और इन पर आचरण किया जा सकता था) सामाजिक जीवन में बिल्कुल नयी स्थिति पैदा होगी, और हिंसा, जिससे नेख्लूदोव का हृदय क्रोध से भर उठता था, अपने आप खत्म हो जायेगी। इतना ही नहीं यह पृथ्वी स्वर्ग तुल्य हो जायेगी और मनुष्य महानतम प्रसाद का भोगी होगा।

ऐसे पांच नियम थे

पहला नियम (मत्ती, अध्याय ५, २१–२६) यह कि मनुष्य किसी की हत्या न करे, अपने भाई से गुस्सा तक न करे किसी को भी 'राका"

अर्थात अयोग्य न समझे। यदि किसी से उसका झगडा हो जाय तो अपनी भेंट भगवान् के चरणा म रखने स पहले, अर्थात् आराधना करने से पहले, उससे सुलह कर ले।

दूसरा नियम (मत्ती, अध्याय ५, २७–३२) कि मनुष्य परस्त्री के साथ व्यभिचार नही करे, स्त्री के सौन्दय का रसभोग तक करने की चेप्टा न करे। और जव किसी स्त्री के साथ उसका मिलाप हो जाय तो आजीवन उसके प्रति सच्चा रहे।

तीसरा नियम (मत्ती, अध्याय ५, ३३–३७) कि मनुष्य कभी भी शपथ द्वारा अपन को वाधे नही।

चौथा नियम (मत्ती, अध्याय ५ ३८–४२) कि मनुष्य किसी से भी वदला न ले, वल्कि यदि कोई एक गाल पर तमाचा मारे तो अपना दूसरा गाल उसके सामने कर दे। यदि उसे कोई हानि पहुचाये तो उस क्षमा कर दे और उसे नम्रता से सहन करे। लोगा की सेवा करने के लिए सदैव तत्पर रहे।

पाचवा नियम (मत्ती, अध्याय ५, ४३–४८) कि मनुष्य अपने शत्रुओ स कभी भी घृणा नही करे न ही उनके साथ लडे वल्कि उनसे प्रेम करे, उनकी सहायता करे, उनकी सेवा करे।

लैम्प पर आखें गाडे नेख्लूदाव वैठा था। ऐसा लगता था जसे उसके दिल की गति वन्द हो गयी हा। हमारा जीवन कितना असगत और उलझा हुआ है। उसे साफ नज़र आने लगा कि यदि लोगो का इन नियमा का पालन करना सिखाया जाय तो जीवन मे कैसा महान परिवतन आ जायेगा। उसकी आत्मा आनन्दविभोर हो उठी। इतने गहरे आनन्द का उसने पहले कभी भी अनुभव नही किया था। उसे जान पडा जस वरसो की थकान और यन्त्रणा के वाद उस सहसा आराम और आज़ादी मिली हो।

रात भर वह जागता रहा। उसके मन की भी वही स्थिति थी जो अक्सर इजील पढने वालो के मन की हुआ करती है। आज पहली वार वह उन शब्दा का पूरा अथ समझ रहा था जिन्हे पहल वह कई वार पढता जाया करता था किन्तु उनकी ओर कभी ध्यान नही देता था। इस समय ये आवश्यक महत्वपूण तया आनन्दपूण शब्द उसके लिए आकाशवाणी के समान हो रहे थे और वह इन्हे इस भाति हृदयगम कर रहा था जिस

भांति स्पंज पानी को अपने में समा लेता है। जो कुछ भी वह आज पढ़ रहा था, वह उसे परिचित लग रहा था। वे बातें जिन्हें वह जानता तो पहले से था किन्तु जिनकी सत्यता को उसने महसूस नहीं किया था और उन पर पूर्णतया विश्वास भी नहीं किया था, आज उभर कर उसकी चेतना में आ गयी थीं। आज उन्हें समर्थन प्राप्त हो रहा था। आज वह उन्हें समझ रहा था और उसे यह विश्वास भी था कि यदि मनुष्य इन नियमों का पालन करे तो उन्हें महानतम सुख की प्राप्ति होगी। आज वह यह समझ रहा था और इस पर उसकी आस्था पक्की हो गयी थी। इतना ही नहीं, वह यह भी समझता और विश्वास करता था कि प्रत्येक मनुष्य के लिए यही एकमात्र उपाय है कि वह इन नियमों पर आचरण करे, कि इसी में जीवन की एकमात्र सार्थकता निहित है, इन नियमों से तनिक भी इधर उधर होना भूल होगी जिसकी मनुष्य को फौरन सज़ा भोगनी पड़ेगी। सारे उपदेश का यही सार है और यह बात अंगूरों वाले बग़ीचे की कथा से अत्यधिक स्पष्टता तथा सजीवता से प्रमाणित होती है।

किसान यह समझे बैठे थे कि अंगूरों की जिस खेती में उनका मालिक उन्हें काम करने के लिए भेजता था वह उनकी अपनी थी, कि वहां पर जो कुछ भी था उनके लिए था, और उनका काम यही था कि वहां मौज-मेला करें, मालिक को भूले रहें और उन लोगों को मौत के घाट उतारते रहें जो उन्हें यह याद तक दिलायें कि उनका मालिक भी कहीं मौजूद है।

"क्या हम भी वही बात नहीं करते?" नेख्लूदोव ने सोचा। "जब हम यह सोचने लगते हैं कि हम ही अपने जीवन के मालिक हैं, और समझते हैं कि जीवन ऐश आराम करने के लिए है? प्रत्यक्षतः यह फ़िज़ूल बात है। हम यहां किसी की इच्छा से और किसी उद्देश्य से भेजे गये हैं। परन्तु हमने यही निश्चय कर लिया है कि हम केवल अपने सुख के लिए जीते हैं। परिणाम यह होता है कि हम भी उन किसानों की तरह दुखी होते हैं जो अपने मालिक के आदेश का पालन नहीं करते। मालिक क्या चाहता है, यह इन नियमों में बता दिया गया है। ज्यों ही मनुष्य इन नियमों को क्रियान्वित कर लेंगे, तो धरा पर स्वर्ग उतर आयेगा, और मनुष्य श्रेष्ठतम सुख को प्राप्त करेंगे।

"सबसे पहले भगवान के राज्य तथा उसके सत्य की खोज करो।

ग्रौर बाकी सारी चीज़ें तुम्हे स्वय मिलती रहगी।" परन्तु हम इन बाकी चीजा को खोजते हैं, ग्रौर, जाहिर है, इन्ह प्राप्त करने मे ग्रसमथ रहते है।

"यह है मेरे जीवन का ध्येय। मैं एक काम ग्रभी समाप्त कर ही पाया हू कि दूसरा शुरू हो गया है।"

उस रात नेख्लूदोव के लिए एक विल्कुल ही नया जीवन ग्रारम्भ हुग्रा। इसलिए नही कि उसके लिए जीवन की परिस्थितिया वदल गयी थी, वल्कि इसलिए कि उस रात के बाद जो कुछ भी वह करता उसका उसके लिए नया ग्रौर सवथा भिन्न ग्रथ होता। समय ही वतायेगा कि उसके जीवन के इस नये ग्रध्याय का ग्रन्त किस भाति होगा।

१८६६

समाप्त

पाठको से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन के बारे म आपके विचार जानकर अनुगहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमे बडी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है

प्रगति प्रकाशन,
२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को सोवियत सघ।

प्रकाशित हो चुकी है

सराफीमाविच, अ०
'तूफान' (कहानी सग्रह)

अलक्साद्र सेराफीमोविच वरिष्ठतम साहित्यकार, गोर्की के घनिष्ठ मित्र और शोलोखोव, आस्त्राव्स्की, फुरमानोव आदि अनेक प्रसिद्ध सोवियत लेखका के पहले शिक्षक है।

प्रस्तुत सग्रह म सराफामोविच की ६ कहानिया शामिल हैं "वालू", "गालीना", "तूफान" "मृत्यु अभियान", "चाटी के साये मे" और "दो मौते"।

सग्रह की पहली कहानी "वालू" की लेव तालस्तोय ने बहुत प्रशसा की थी।

पुस्तक के आरभ म लेखक के कृतित्व का सक्षिप्त परिचय दिया गया है।

प्रकाशित होनेवाली है

कोरालको, व्ला०
'अधा सगीतज्ञ' (उपन्यास)

"कीयेव के मेले म एक खास सगीतज्ञ को सुनने के लिए वडी भीड इकट्ठी हो गयी। वह अधा था, मगर उसकी सगीत प्रतिभा और जिदगी के बारे म वडी अद्भुत अफवाह थी। कहा जाता था कि उसका बचपन मे एक समृद्ध परिवार से अपहरण कर लिया गया था कुछ औरा का कहना था कि उसने स्वय कुछ रोमानी विचारा के कारण अपना घर छोड दिया था और भिखारिया के एक दल म शामिल हो गया था। कारण चाहे कुछ भी रहा हो, पर हॉल ठसाठस भरा हुआ था "

इस उपन्यास की कथावस्तु इसी अधे बालक प्योत्र पोपेल्स्की की कहानी है, जो एक विख्यात सगीतज्ञ बन जाता है। यह एक ऐसे आदमी की कहानी है, जिसने आत्मिक दृष्टि के साथ साथ सुख के अपने लक्ष्य को भी पा लिया है।

लेव तोलस्ताय और चेखोव के समकालीन व्लादीमिर कोरोलेको (१८५३–१९२१) बडी बहुमुखी प्रतिभा के धनी लेखक थ और गोर्की के पहले शिक्षक थे।

लेर्मोन्तोव, म०
कवितायें

महान रूसी कवि मिखाईल लेर्मोन्तोव (१८१४–१८४१) के काव्य से यदि आप परिचित होना और उसका रस-पान करना चाहते है, तो इस सग्रह को हाथ मे लीजिये। इसम "मत्सीरी" (वाल-मठवासी), "दानव" जैसी लम्बी कवितायें और विभिन्न वर्षो की छोटी कविताये सग्रहीत है। हमारा प्रकाशनगृह हिन्दी म पहली वार ऐसा सग्रह प्रस्तुत कर रहा है। आपके सुपरिचित कवि श्री "मधु" ने सीधे रूसी से इह हिदी म ढाला है।

प्रसिद्ध सोवियत कवि सेर्गेई नारोवचातोव ने इस सग्रह के लिए भूमिका लिखी है।